THE LIBRARY OF CONGRESS
1800

Vihāridāsa.

श्रीः ।

ब्रजचरित्र ।

Brajacaritra

जिसको

श्रीयुत ब्रह्मचारीजीमहाराजश्रीगिरधारीदास-
जीका शिष्य विहारीदास श्रीवृन्दावन निवा-
सीने परब्रह्म श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्दकी
परम अद्भुत मनरंजन दुःखभंजन मुक्ति
दायक लीलायें दोहा चौबोलोंमें
निर्मित किया ।

भगवद्भक्तोंके हितार्थ-

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुम्बई,

स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रसिद्ध किया ।

शाके १८१८ संवत् १९५३

सर्वाधिकार प्रेसाध्यक्षको दिया है ।

PK1967
.9
V48B7
Ojia
Braj

BCol Ethr—4495
1/10/77

श्रीराधाकृष्णचन्द्रजी.

धन्य है पुजारी बिहारीदासजीको जिन्होंने श्रीकृष्णचन्द्र जीकी लीला सरल छन्दोंमें गाय प्रेमियोंको आल्हादित किया जिसके पठनमात्रसे सर्वाभीष्ट सिद्ध होते हैं ॥

श्रीराधाकृष्णचन्द्रजी

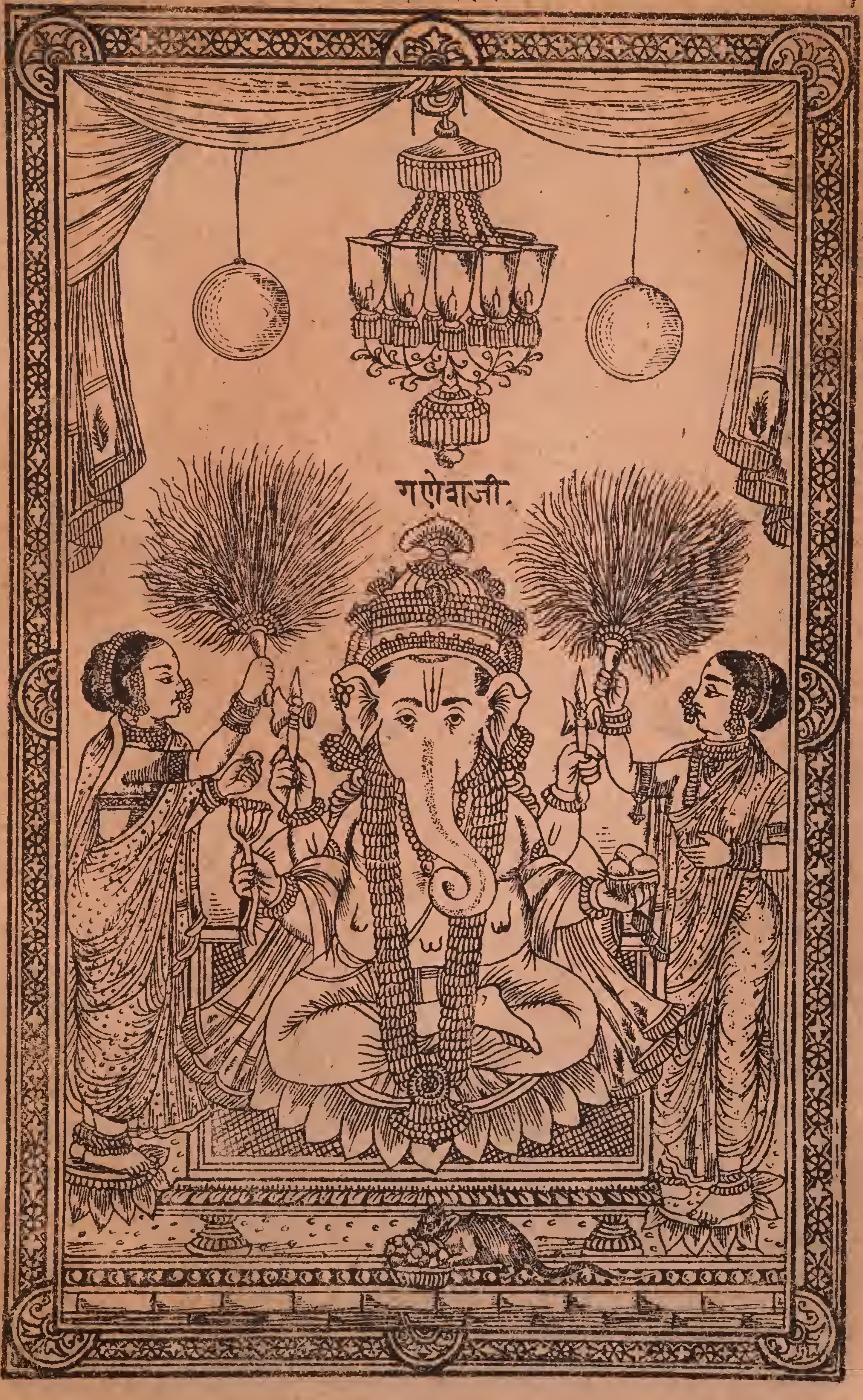
गणेशजी.

श्रोता
बिहारीदास.

पृष्ठ. ७.
कंस
वसुदेव
देवकी.
पृष्ठ ९.
कंस
नारद
पृष्ठ १२.
वसुदेव

पृष्ठ २०
नंद
श्रीकृष्ण
यशोदा
पृष्ठ २५.
पूतना
श्रीकृष्ण
यशोदा
पृष्ठ ८५.
यशोदा
श्रीकृष्ण
उखल.
पृष्ठ ८८.
यशोदा
ग्वाल
श्रीकृष्ण.

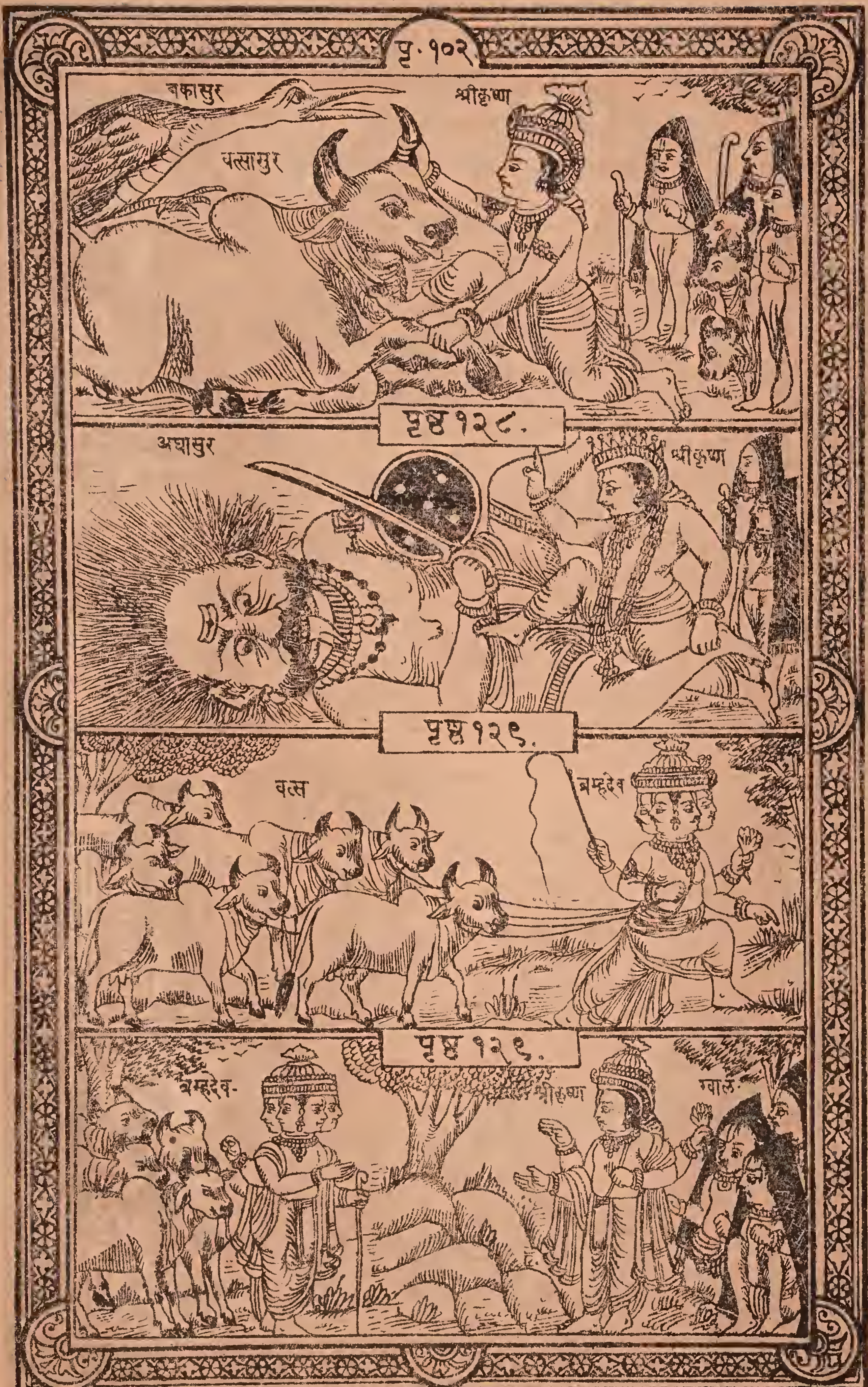
पृ. १०२
बकासुर
श्रीकृष्ण
वत्सासुर
पृष्ठ १२८.
अघासुर
श्रीकृष्ण
पृष्ठ १२९.
वत्स
ब्रम्हदेव
पृष्ठ १२९.
ब्रम्हदेव.
श्रीकृष्ण
ग्वाल.

पृ. १५०.
धेनुक
श्रीकृष्ण
पृ. १५६.
स्त्री.
श्रीकृष्ण
कालीय.
पृ. १७७.
दावा.
श्रीकृ.
पृ. १८२.
पलंब
श्रीकृष्ण

पृ·१७७
दावाग्नि·
श्रीकृष्ण
पृ·१८४
बलराम
श्रीकृष्ण
ग्वाल·
पृ·१८५
गोपी
श्रीकृष्ण·
वत्स·

पृ. २००
गोपी नग्न स्नान करितात.
द्विज.
द्विज.
पृ. २१७
द्वि. पत्न्या
पृ. २२६.
गोवर्धनपूजा.
श्रीकृष्ण.
नंद.
यशोदा.
स्त्रिया

पृ-२२६
गोवर्धन
श्रीकृष्ण
पृ-२३०.
नंद
श्रीकृ
यशोदा
पृ.२४७.
श्रीकृष्ण
इंद्र
पृ.२५७.
श्रीकृष्ण
नंद

पृ. ३४१
गोपी
राधा
श्रीकृष्ण
गोपी
पृ. ३४७
गोपी
गोपी
पृ. ३६४.
गोपीविरहकथने.
पृ. ३७३.
श्रीकृष्ण
गोपी

पृ. ४०४
रासलीला.
पृ. ४९८
विद्याधर.
श्रीकृष्ण
शंखचूड
श्रीकृष्ण
पृ. ४९९.
श्रीकृष्ण
गोपी
गोपी.

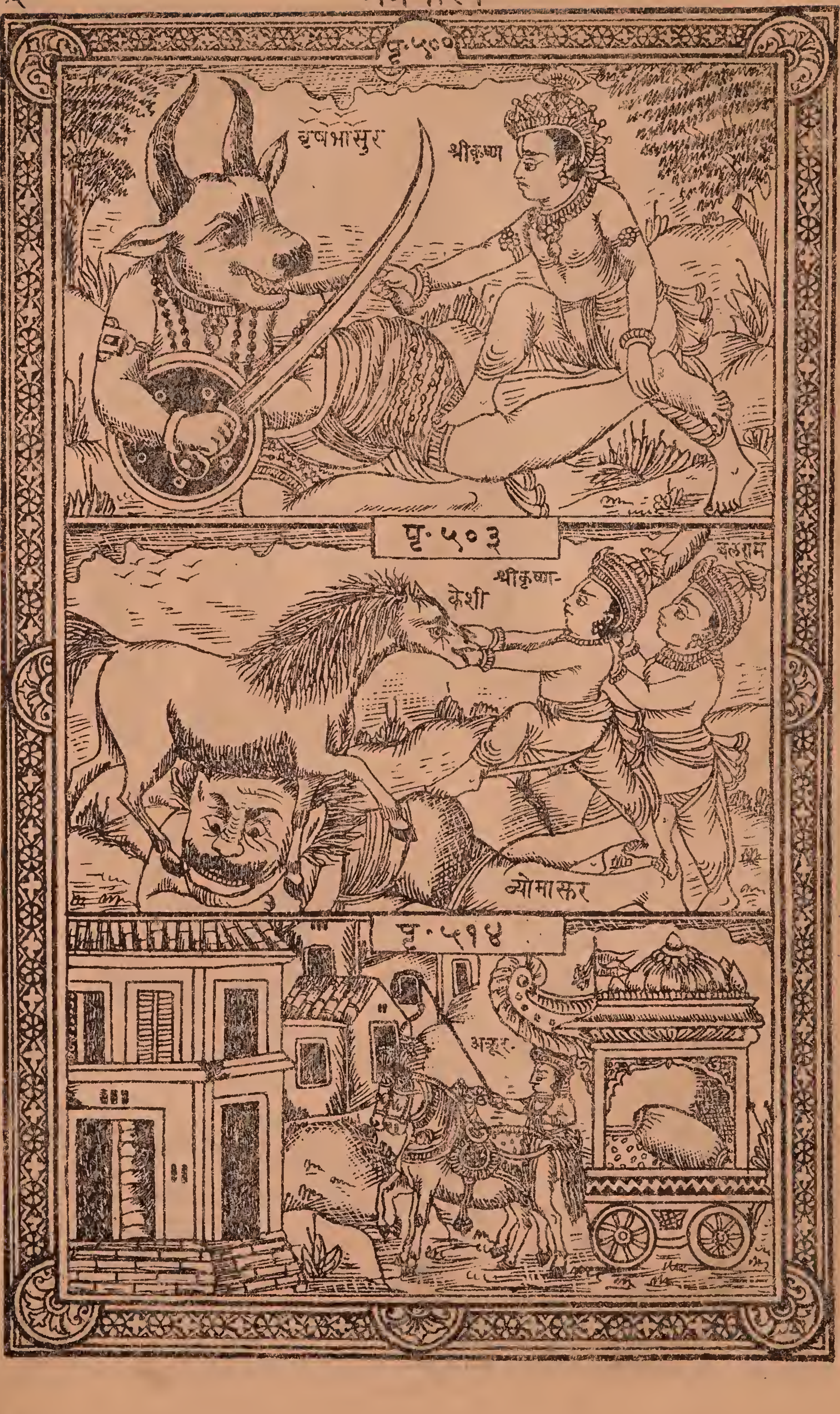
पृ. ५००
वृषभासुर
श्रीकृष्ण
पृ. ५०३
श्रीकृष्ण
बलराम
केशी
व्योमासुर
पृ. ५१४
अक्रूर

पृ.५१०
अक्रूर
नंद
श्रीकृष्ण
बलराम
पृ.५२४
अक्रूर
कंस
अक्रूर
पृ.५४५.
कुबजा
श्रीकृष्ण
कुवलयापीड
श्रीकृष्ण

पृ.५५०
बलराम
श्रीकृष्ण
कंस.
श्रीकृष्ण
उग्रसेन.
श्रीकृष्ण

रथ
अश्व
उधो
गोपी

उधो.
श्रीकृष्ण
कुब्जा

श्रीः ।

अथ ब्रजचरित्रका सूचीपत्र ।

नाम लीला	पृष्ठांक	दो.	चौ.	ला.	वा.
१ मंगला चरण	१	२०	२६		
२ कथा प्रसंग	७	३५	७०	१	
३ कुरता टोपी वर्णन लीला	२२	८	१६		
४ पूतना वध लीला	२५	६	१२	१	
५ कागासुर वध लीला	२९	९	१८		
६ तृणावर्त वध लीला	३२	७	१४		
७ अन्नप्रासन लीला	३५	१०	२०		
८ नाम करण लीला	३९	८	१६		
९ बरसगांठ लीला	४३	७	१४		
१० ब्राह्मण लीला	४५	११	२२		
११ पुरातन कथा लीला	५०	४	८	१	
१२ कर्णछेदन लीला	५२	४	८		
१३ माटीखान लीला	५३	५	१		
१४ शालिग्राम लीला	५५	३	६		
१५ न्हवावन लीला	५७	१२	२४		
१६ भोजन करन लीला	६२	३	६		
१७ पथछुड़ावन लीला	६३	१	२		
१८ चौगान खेलन लीला	६३	५	१०		
१९ माखन चोरी लीला	६५	४५	९०	०	
२० दांवरी बंधन लीला	८४	३२	६४		
२१ वृन्दावन गमन लीला	९७	१३	२६		
२२ वत्सासुर वध लीला	१०२	७	१४		
२३ धेनुदुहन लीला	१०५	५	१		
२४ मोती बोवन लीला	१०७	२	४		

नाम लीला	पृष्ठांक	दो.	चौ.	ला.	बा.
२५ बकासुर वध लीला	१०८	१२	२४		
२६ चकई भौंरा खेलन लीला	११३	३	६		
२७ राधाजीके प्रथम मिलनेकी लीला	११४	२८	५६		
२८ अघासुर वध लीला	१२६	८	१६		
२९ ब्रह्माके मोहकी लीला	१२९	२१	४२		
३० गोदोहन लीला	१३७	३१	६२		
३१ धेनुक वध लीला	१५०	१६	३२		
३२ कालीदमन लीला	१५६	५१	१०२		
३३ दावानल पान लीला	१७७	११	२२		
३४ प्रलंबासुर वध लीला	१८२	५	१०		
३५ पनघट लीला	१८४	३७	७४	१	
३६ चीरहरण लीला	२००	२४	४८	१	
३७ वृन्दावन वर्णन लीला	२११	१६	३२		
३८ द्विजपत्नी याचन लीला	२१७	२२	४४		
३९ गोवर्धन लीला	२२६	६२	१२४	१	
४० नंदएकादशी वरुण लीला	२५३	१३	२६		
४१ वैकुंठ दरशन लीला	२५८	६	१२		
अथोत्तरार्द्धम्।					
४२ दान लीला	२६०	८१	१६२	३	
४३ गोपिनके प्रे० उनमत्त अं० ली०	२९७	५४	१०८		
४४ स्नान विधि लीला	३१९	५३	१०६	१	
४५ बाटके मिलनेकी लीला	३४१	१२	२४	१	
४६ संकेतके मिलनेकी लीला	३४७	२१	४२		
४७ प्यारीजीके घर मिलनेकी लीला	३५६	२०	४०		
४८ गर्व व्याज विरह लीला	३६४	२२	४४		
४९ परस्पर अभिलाष लीला	३७३	२०	४०		
५० शृंगार वर्णन लीला	३८१	१९	३८		
५१ नैन अनुराग लीला	३८९	१२	२४		
५२ मुरली लीला	३९४	२३	४६	१	
५३ रास लीला	४०४	३७	७४		
५४ अन्तर्ध्यान लीला	४१९	२३	४६	१	

नाम लीला	पृष्ठांक	दो.	चौ.	ला.	वा.
५५ महा मंगल रासलीला	४२९	२४	४८		
५६ मान चरित लीला	४३९	४७	९४		
५७ मध्यम मानलीला	४५८	२८	५६	१	
५८ गुरुमान लीला	४७१	१८	३६		
५९ हिंडोरा वर्णन लीला	४७८	७	१४		
६० फागुन वर्णन लीला	४८१	३३	६६	१	
६१ सुदरशन शापमोचन लीला	४९५	७	१४		
६२ शंखचूड वध लीला	४९८	५	१०		
६३ वृषभासुर वध लीला	५००	७	१४		
६४ केशी वध लीला	५०३	६	१२		
६५ व्यौमासुर वध लीला	५०६	२०	४०		
६६ अक्रूर ब्रज गमन लीला	५१४	२२	४४	१	
६७ मथुरा गमन लीला	५२४	२९	५८	१	
६८ रजक वध लीला	५३७	२१	४२		
६९ मल्लयुध लीला	५४५	११	२२		
७० कंसासुर वध लीला	५५०	१५	३०		
७१ वसुदेव गृह उत्सव लीला	५५६	६	१२		
७२ कुबिजागृहप्रवेश लीला	५५६	५	१०		
७३ नन्द विदालीला	५६०	१२	२४		
७४ ब्रजकी विरह लीला	५६५	३०	६०	१	
७५ यज्ञोपवीत लीला	५७९	६	१२		
७६ उद्धवजीकी विदा लीला	५८१	१७	३४	१	
७७ ऊधौजी ब्रजगवन लीला	६०७	७४	१४८	७	
७८ ऊधौ मथुरा गवन लीला	६२७	२५	२४	३	

इति ब्रजचरित्रका सूचीपत्र समाप्त ॥

जाहिरात।

ताजिकनीलकंठी भाषाटीका।

उक्त ग्रंथका भाषानुवाद तीनो तंत्र एकत्रित कर ज्योतिर्विद पं० महीधरजीने ऐसा कठिन ग्रंथ होनेपरभी ऐसी सरल टीका तथा गूढाशयों का प्रकाश कियाहै कि जिसके द्वारा सामान्य श्रेणीके मनुष्यभी भलीभांति वर्ष जन्मपत्र फलादेश प्रश्नादि बता सक्तेहैं वैसेही शुद्धतापूर्वक टैपमें चक्र और उदाहरणों सहित उत्तम कागजमें छापी गई है जिसके देखनेसे चित्त प्रसन्न होजायगा और उत्तम विलायती कपडेकी जिल्द बाँधी गईहै, मूल्य केवल १॥ रु० मात्र है

शार्ङ्गधर वैद्यक दत्तराम चौबे कृतभाषाटीकासहित।

यह टीका आढमल्ली और गूढार्थ प्रकाशिका जो इस्की संस्कृतटीका हैं उनके अनुसार भाषाटीका करीगई है. यद्यपि इस ग्रंथकी टीका कई भिषग्वरोंने कीहैं परन्तु इस रीतिसे गूढाशयोंकी टिप्पणी समन्वितकर विस्तार पूर्वक किसीने नहींकीहै तिसपरभी मूल्य केवल तीन ३ रु० रक्खाहै विलायती कपडेकी जिल्द बँधीहै और नया छपाहै।

पातंजलि–योगदर्शन तथा सांख्यदर्शन भाषानुवाद सहित।

देखो ! इसपातंजलि सूत्र मात्रका ऐसा बहुत और रुचिर भाषानुवाद किया गया है कि पढते २ ग्रंथका आशय चित्तमें चुभ जाता है । मूल्य केवल योगदर्शनका १ रु० और सांख्यदर्शनका १॥ रु० है ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास.

“श्रीवेंकटेश्वर” छापाखाना–मुम्बई.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ ब्रजचरित्र प्रारंभः ।

दोहा—जाके गुण उरगनतही, होत गुणनकी खान ॥
वासुदेव भगवंत हरि, दिव्य सु दयानिधान ॥
जासुनाम मुखसे कहत, मिटतताप त्रयतास ॥
नंदसुवन सुन्दर सुखद, वन्दौंसो शुभरास ॥
गोप वृन्द मंडन सुभग, कमलनैन तनु श्याम ॥
पीतांबर बर बेणुधर, करहु सो मम उरधाम ॥
कृष्णाग्रज बलदेव पद, वन्दौं जगत आधार ॥
नीलांबर रेवती रमण, अभिमत फल दातार ॥
वन्दौं पद महिमातधर, श्रीगुरु कृपानिधान ॥
नरचढि भवसागर तरहिं,जासु वचन लखियान ॥
पदसरोजरज राखिशिर, वन्दौं संत कृपाल ॥
जिन निजगुण हरि वशकरे,जगहि तरत शुभमाल
परमरम्य पावन परम, पुनि वन्दौं ब्रज देश ॥
राधा नाथ विहार थल, महिमा जासु विशेष ॥
प्रथम नऊं वसुदेव पद, बहुरि देवकी माय ॥
नंद महर चरणन नमहिं, श्रीयशुमति सुखदाय ॥

चौबोला—श्रीयशुमतिसुखदायातिहारोभाग्यनजात गिनायोजी॥
साखी देत मुनीजन सब मिल वेद पुराणन गायोजी ॥
तुमते और कौन बड़भागी तुम हित हरि ब्रज आयोजी ॥
धरचो मनुजको रूप हरीसो तुमने गोद खिलायोजी ॥ १ ॥

वन्दौं श्रीसुख मात रोहिणी बलदाऊकी माताजी ॥
कीरत युत वृषभानु गोपवर चरणनशीशनवाताजी ॥
त्रिभुवन ठाकुर ठकुरानीके हौ तुम पितु अरु माताजी ॥
कृष्ण प्राण जीवन प्यारीके सुमिरत पाप नशाताजी ॥ २ ॥
दोहा–श्रीराधाके पद कमल, बार बार बलि जात ॥
होत कृष्ण यश सहजही, प्रेम सहित जोगात ॥
चौबोला–प्रेम सहित जो गात तिहारे चरण कमल बलिहारीजी ॥
ब्रज चरित्र लीलाकरनेहित उभय देह तुम धारीजी ॥
हौ तुम एकहि आद्य सनातन नहिं हरिते तुम न्यारीजी ॥
वन्दौं युगल किसोर रूप पद विहारनतन मन वारीजी ॥ १ ॥
अपर गोप गोपी गोपाला गाय बच्छ अरु ग्वालाजी ॥
जिनके सखा कृष्ण अविनाशी संग विचरे नंदलालाजी ॥
और जातजे ब्रजहि निवासी वन्दौं परम कृपालाजी ॥
मथुरापुरी नारि नर नागर गोकुल दीनदयालाजी ॥ २ ॥
दोहा–श्रीयमुना सर निरखिमन, उपजत प्रेम पुनीत ॥
जासु दरशनरकरतहीं, यमपुरको नहिं भीत ॥
चौबोला–यमपुरकोनहिं भीत यमुनके रहूं चरणमें लागाजी॥
वन्दौं जलचर जीव जितेका प्रेम सहित अनुरागाजी ॥
वन घन नग्र मही अरु पर्वत बापी कूप तड़ागाजी ॥
खग मृग गुल्म लता बंसीबट वृन्दावनादिजे बागाजी ॥ १ ॥
बंदतहूं पद कमल तुम्हारे श्रीगोवर्धन रायाजी ॥
सुरपति भेट मेटि सब ब्रजमें निजकर आप पुजायाजी ॥
श्रीयमुना तट परम पुनीता तहां हरि खेल रचायाजी ॥
वन्दौं सकल सुकृतकी राशी पुनि पुनि शीश नवायाजी ॥
दोहा–कीनो रास विलास जहां, भक्तनके हित लाग ॥

वन्दौं सो शुभ भूमि रज, सहितप्रेम अनुराग ॥
चौबोला–सहित प्रेम अनुराग तिहारी बार बार बलिजाऊंजी ॥
कीट पतंग आदि सब विनऊं जड़ चेतन्य मनाऊंजी ॥
ब्रज जन पद रज राखि शीशपरं तुमरी आज्ञा पाऊंजी ॥
पूरौ मेरी आश दयाला ब्रह्म चरित्र कछु गाऊंजी ॥ १ ॥
करन पुनीत हेत निज वाणी करिहौं चरित वखाणीजी ॥
जबलगि तुम्हरी कृपा न पावै नहिं आवत कछु गाणीजी ॥
मैं मन वच क्रम तुमरो दासा लीज्यो मनकी जाणीजी ॥
यद्यपि मति इतनी मोहिनाई करौं युक्ति कछु आणीजी ॥ २ ॥
दोहा–हरिप्रेरक ऐसो भयो, कीन्हो मनहि विचार ॥
सुनी कथा भागवतकी, सो बल उरमें धार ॥
चौबोला–सो बल उरमें धार हरीकी महिमा बहु विध गाईजी॥
श्रीपति ब्रह्माको उपदेशो सो नारदने पाईजी ॥
नारद वेदव्यास हित कारन दीनो सुयश सुनाईजी ॥
वेदव्यासजी शुकहु पढाये सो सब जगमें छाईजी ॥ १ ॥
सो रस सार सूरसागरमें सूरदासजी गायाजी ॥
वाणी रची अनेक विविधिवर मुनि जनके मन भायाजी ॥
बड़े कठोर मोहवश तेऊ सो सुनिकै हरषायाजी ॥
ताके लखे दास ब्रजवासी ब्रजविलास मन लायाजी ॥ २ ॥
दोहा–धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज, धनि धनि ब्रजको बास ॥
धनि यह रस वर्णन करयो, धनि ब्रजवासी दास ॥
चौबोला-धनि ब्रजवासी दास तिहारी कहां लगि करौं बड़ाईजी॥
लीला अमितश्याम सुन्दरकी प्रेम सहित तुम गाईजी ॥
दोहा सोरठा अधिक मनोहर छंद और चौपाईजी ॥
विछुरन मिलन मोह अरु माया प्रगटहि परत लखाईजी ॥ १ ॥

सो तो कथा अमित विस्तारा पायो जात न पाराजी ॥
ताको निरखि करौं चोबोला ये निज मतमें धाराजी ॥
ताको दोष क्षमा करियो तुम मैं हूं दास तिहाराजी ॥
मोमनकी अभिलाष पुरावो करियो मोहिं सुखाराजी ॥ २ ॥

दोहा—मोतन इतनी गम नहीं, रचौं छंद कछु तोल ॥
हरि प्रेरक ऐसो भयो, धरौं रहा चौबोल ॥

चौबोला—धरौं रहा चौबोल तहां मम निज मतिमें यह आईजी॥
एक दोहा तर दो चौबोला यह विधि गाय सुनाईजी ॥
कहूं कहूं पर कहूं लावनी अति सुन्दर सुखदाईजी ॥
एकवार्ता श्यामसुन्दरकी बिहारनके मन भाईजी ॥ १ ॥
बिन देखे पिंगलके जगमें जो कोउ छंद बनावेजी ॥
कथहि ज्ञान बिन गीता कोऊ सो नर पशू कहावैजी ॥
पिंगल अरु गीता यह दोऊ बिहारन पै नहिं आवैजी ॥
कोऊ कछू कहो किन बिहारन नाम हरीको गावैजी ॥ २ ॥

दोहा—ह्रस्व दीर्घ जानूं नहीं, दध अक्षर कहा होय ॥
हरी नाम इति लाभ हित, लोभ करों मैं दोय ॥

लोभ करौं मैं दोयं नामको निजमति में मैं चीनाजी ॥
हरि नामाक्षर लाभ दुयं हित सबै दोष शिर लीनाजी ॥
ब्रजचरित्र कछु कहूं बखानी ज्ञान गुरूजी दीनाजी ॥
बिहारन भज राधा माधवको जगमें थोराजीनाजी ॥ १ ॥
अब मैं विनय करत कवियनसों पुनि पुनि बारं बारीजी ॥
यामें चूक परीजो होई लीज्यो सुजन सुधारीजी ॥
जिहिं तिहिं बिध हरि गान करको मैं यह बुद्धि विचारीजी ॥
बिहारनयों बिनवत कवियनसों सुनियो अरज हमारीजी ॥ २ ॥

दोहा—संतनको शिरनायकै, गाऊं हरियशरीत ॥

जो ब्रजमे हरिनें कियो, सुन्दर ब्रजहिचरीत ॥
चौबोला–सुन्दर ब्रजहिचरीत हरीको प्रेम सहित मैं गाऊंजी ॥
यामें बुद्धि नहीं कछु मेरी ब्रजवासी पै पाऊं जी ॥
नामै पंडित हूं कोइ ज्ञाता कवि न सुजान कहाऊंजी ॥
ब्रजचरित्र कछु गाय सुनाऊं भजन भावमनलाऊंजी ॥ १ ॥
कर्म धर्म नहिं नीत बखानी नाम हरीका गायाजी ॥
हरिके नाम अनंत जगत्में पारकोई नहिं पायाजी ॥
ब्रजचरित्र हिरदेमें धरिके मन चंचल बहलायाजी ॥
हाथ जोर शिरनाय भूमिपर शरन गुरुनके आयाजी ॥ २ ॥
दोहा–भक्तनके हित अवतरे, करि वृन्दावन वास ॥
ब्रह्मचरितको धारिकै, पूरी सबकी आस ॥
चौबोला–पूरी सबकी आश गुरुनके चरण शरनमें आयाजी ॥
ज्यों ज्यों जीव गये शरणागत मन वांछित फल पायाजी ॥
देश देशके सेवक जे सब चरणन ध्यान लगायाजी ॥
अपर लोगमैं कहा गिनाऊं भूपति शीश नवायाजी ॥ १ ॥
वारंवार करौं मैं विनती चरणन शीश नवाऊंजी ॥
मोपर होउ दयाल कृपानिध चरण शरनमैं चाऊंजी ॥
राखो अब चरणनके माई तुम्हरो दास कहाऊंजी ॥
पूरो मनकी आश दयाला कछु यक आज्ञा पाऊंजी ॥ २ ॥
दोहा–हंस आदि वंदन करों, श्रीनिंमारक देव ॥
निवासादि आचार्य सब, करों चरणकी सेव ॥
चौबोला–करों चरणकी सेव तुम्हारे चरण कमल चित लाताजी।
मो सम दीन नहीं कोउ जगमें तुम समान नहिं दाताजी ॥
जबलगि तुम्हरी कृपा न पावै फिरत रहत भरमाताजी ॥
जापर कृपा करो तुम तबही सो शरणागत आताजी ॥ १ ॥

कृपा भई जब गुरु अपनेकी पूरी मनकी आशाजी ॥
दीनौं मंत्र सुनाय श्रवन में मेटे यमके त्रासाजी ॥
करि वृन्दावन वास हृदयमें राखि हरी सुखरासाजी ॥
जन्म सुफल होजाय तिहारो नाम बिहारी दासाजी ॥ २ ॥

दोहा–वृन्दावन में बास बस, कीने भक्त निहाल ॥
जो जाने इच्छा करी, सो पूरी तत्काल ॥

चौबोला–सो पूरी तत्काल आपकी महिमा अद्भुत भारीजी ॥
पार नहीं पायो काऊने कहत सबै ब्रह्मचारीजी ॥
श्रीनिंमार्क वंश मझारी आप भये अवतारीजी ॥
श्रीगुपाल बिन और न देख्यो नाम दास गिरिधारीजी ॥ १ ॥
प्रथमहिं राव मिले जीवाजी पुत्र जिन्होंने पायाजी ॥
बहुरौ माधवेश मिले सो पति आमेंरसुहायाजी ॥
भूपति और मिले बहुतेरे जात न मोहिं गिनायाजी ॥
जो जाकी इछाही जैसी तैसो ताने पायाजी ॥ २ ॥

दोहा–सतगुरुकी आज्ञा भई, संतनको शिरनाय ॥
बिना कृपा तिनकी भये, हरि यश गाय न जाय ॥

चौबोला–हरियश गाय न जाय सकलसंतनको शीशनवाऊंजी॥
जिनकी कृपा विघ्न सब नाशै विमल मतीमैं पाऊंजी ॥
जिनकी कृपा मोह तमनाशै ज्ञान हृदयमें चाऊंजी ॥
करौं नामको गान अरथ निज वाणी सूध कराऊंजी ॥ १ ॥
जै जै जै श्रीकुंज विहारी श्रीवृषभान दुलारीजी ॥
युगल किशोर मनोहर मंगल मूरति आनँद कारीजी ॥
रूप निधान प्रेमकी रासी भक्तनके भयहारीजी ॥
श्रीवृंदावन धाम निवासी राधा कृष्ण मुरारीजी ॥ २ ॥

अथ कथा प्रसंग वर्णन ।

दोहा—संवत सत है एकनव, चोकें आठें जाण ॥
माघ सुसुकला पक्षमें, कीनों चरित बखाण ॥

चौबोला—कीनों चरितवखाणवसंतउत्सवकोदिन अतिभारीजी॥
उडत हैं रंग गुलाल हर्षि सब गावत हैं नर नारीजी ॥
अंत नक्षत्र जान रेवती तिथि पंचमि बुधवारीजी ॥
जान कृष्णके चरित पुनीता गावत दास विहारीजी ॥ १ ॥
कहूं कथा सुन्दर सुख देनी सकल सुखनको साराजी ॥
अघहरनी वैकुंठ निसेनी पापनको जिमि आराजी ॥
श्रीकालिंदि तटया शुभ पावन मधुपुरी नग्र अपाराजी ॥
कृष्ण कृपा विन सुलभ न सोई तरसत देव विचाराजी ॥ २ ॥

दोहा — श्रीकालिंदी तट मधुपुरी, राजत सुन्दर रूप ॥
नीत निपुण पालन करैं, उग्रसेन तहां भूप ॥

चौबोला—उग्रसेन तहां भूप अनुज भ्राता गृह जाई बालाजी ॥
धरचो देवकी नाम रूप गुणकी आति सुन्दर आलाजी ॥
नृपको सुवन महा अतिपापी कंसनाम विक्रालाजी ॥
आपभयो भूपाल पिताको डारचो वंदीशालाजी ॥
तब देवक कर जोर कंससों विनती जाय सुनाई जी ॥
दिन दिन तरुण होत है कन्या करहूकहूं सगाईजी ॥
शूरसेन सुत है वसुदेऊ शीलवंत सुखदाईजी ॥
लोक वेद कर रीत कंसने दई देवकी व्याईजी ॥ २ ॥

दोहा—तबै कंस वसुदेवको, दई देवकी व्याय ॥
आप भयो रथवान तहां, पहुँचावनको जाय ॥

चौबोला-पहुँचावनको जाय कंसआति धर मनमें अभिमानाजी॥

दायज दियो अनेक भूपने हय गज बिबिध विधानाजी ॥
दासी दास दिये बहुतेरे पट भूषण विधि नानाजी ॥
वाणीभई अकाश तहां तब सो सब जगने जानाजी ॥ १ ॥
होय आठवों काल कंसको वाणी यहै सुनाईजी ॥
मिट्यो सकल आनंद हृदयको सोचरह्यो मन माईजी ॥
पहिले डारों मार देवकी लीन्हों खड्ग उठाईजी ॥
दीजै तरु[१]को खोय मूलते बहुरि कहां फल आईजी ॥ २ ॥

दोहा—तब बोले वसुदेवजी, सुनो श्री महाराज ॥
वेद विरोध न कीजिये, करो समुझके काज ॥

चौबोला—करो समुझके काज भूप यह मनमें साँच विचारोजी ॥
तिय वध वेद कहत यह वाणी होत दोष प्रति भारोजी ॥
यह तुम्हरी है बहन देवकी याको तुमजिनमारोजी ॥
याको सुवन[२] तुमहिं मैं देहौं जोहै शत्रुतिहारोजी ॥ १ ॥
मुनि जन गुरुजन हे तहां जेते बात सबन यह जानीजी ॥
कह्यो कंस सुनो वसुदेऊ बात नीक तुम ठानीजी ॥
अठवों पुत्र होय जो याके सो दीज्यो तुम आनीजी ॥
भाव विविस तब भूप कंसने मन अपनेंमें मानीजी ॥ २ ॥

दोहा—राखे तिनको नग्रमें, कछु यक दिवस बिताय ॥
प्रथम देवकी गर्भमें, भयो पुत्र तहां आय ॥

चौबोला—भयो पुत्र तहां आय देवकी लियो पतिपास बुलाईजी॥
लै वसुदेव चले तिहिं काला भूप कंस पै जाईजी ॥
बालक देखि कंस हँस दीनों याकोडर मोहिं नाईजी ॥
अठवों गर्भ शत्रु है मेरो सो तुम दीजो ल्याईजी ॥ १ ॥
तब वसुदेव कंस सों विनती करिकै क्षमा कराईजी ॥
लै बालक निज सदन[३] पधारे दंपति भये हरषाईजी ॥

१ वृक्ष। २ पुत्र। ३ घर।

तबहिं बात यह स्वर्गलोकमें नारदजी सुनि पाईजी ॥
बालक दीनो फेर कंसने भली भई यह नाईजी ॥ २ ॥
दोहा–गुण गावत गोविंदके, लिये हस्त तलवीन ॥
तब ऋषि नारद कंस पै, आये परम प्रवीन ॥
चौबोला–आये परम प्रवीन देखिकै उठ्यो कंस शिरनायाजी ॥
बहु विधि पूजाकरी ऋषीकी सिंहासन बैठायाजी ॥
समाचारजे कछु ह्वै आये ऋषि सों कहि समुझायाजी ॥
सुनि नृप वचन बिहँसि ऋषि बोले कतभूले तुम रायाजी ॥१॥
अठवों कौन सो तुम कछु जाना जासों तुम भय मानाजी ॥
सो वह प्रथमहिं आयो होई देवचरित किन जानाजी ॥
आठ लकीर खैंच गिनवाई भूपर चक्र विधानाजी ॥
यों समुझाय गये ऋषि नारद कंसासुर भयआनाजी ॥ २ ॥
दोहा–तब नृप दूत पठायकै, बालक लियो मँगाय ॥
ताही क्षण मारत भयो, डार्‌यो शिलपर जाय ॥
चौबोला–डार्‌योशिलपरजाययही विधिषटबालक नृप मारेजी।
पुत्र बधन तब देखि मात पित अतिही भये दुखारेजी ॥
कहत अहो श्रीपति असुरारी भक्तनके रखवारेजी ॥
वेगलेहु प्रभु सुरत हमारी कंस देत दुख भारेजी ॥ १ ॥
बाढ्यो पाप कंसको भारी भूमी भई दुखारीजी ॥
सह न सकी तब गोतनु धर ब्रह्मासों जाय पुकारीजी ॥
क्षिर सिंधु तट जाय सकल सुर हरिसों विनय उचारीजी ॥
धरहु मनुज तनु जाय भूमिको दीजै भार उतारीजी ॥ २ ॥
दोहा–भई गिरा नभ सिंधु तट, श्रवणन परी पुकार ॥
जाहु धरहु तुम गोप तन, मैं लेहों अवतार ॥
चौबोला–मैं लेहों अवतार भूमिपर भूको भार उतारोजी ॥

करों सहाय संतनकी पलमें दुष्टनको संहारोंजी ॥
मोहित करी तपस्या भारी सो प्रतिव्रतमैं पारोंजी ॥
मो सम पुत्र मांगि तिनलीनो सो अब कर निरवारोंजी ॥ १ ॥
तब श्रीपति हरि क्षीर सिंधुतन मन मन बात विचारीजी ॥
करी प्रगट माया निज हरिने तासों कहत मुरारीजी ॥
सप्तम गर्भ शेश मम बासा सो तू हर तहांजारीजी ॥
करि यशुमत तन बास बहुरिमैं मिलिहौं तोहि तिहिं ठारीजी२

दोहा—तब माया ब्रजको चली, कियो काज तिन आय ॥
हरयो गर्भ ले तुरतही, दियो रोहिणी जाय ॥

चौबोला—दियो रोहिणी जाय शक्तिने माया चरित उपायाजी॥
तब श्रीअविगति पुरषोत्तमनें गर्भनिवास जनायाजी ॥
सब देवन मिल करी अस्तुती जै जै कहि हरषायाजी ॥
सो कारण जान्यो नहिं काऊ मुनि जनके मन भायाजी ॥ १ ॥
निजमुख मुकुर[१] देवकी देख्यौ शरद चंद्र दरशायाजी ॥
मिट्यो तिमिर[२] भ्रम अति सुख जान्यों कंसकाल हरि आयाजी
तब यों विनती करी देवकी पतिसों कहि समुझायाजी ॥
हैं मम उदर देव भगवाना यह मोहिंपरत लखायाजी ॥ २ ॥

दोहा—अब तुम पति या पुत्र हित, करहूवेग उपाय ॥
जिहिं तिहिं विध बालकरहै, सत्य धर्मबरु जाय ॥

चौबोला—सत्यधर्म बरु जाय हमारे कुलको नाश न जावेजी ॥
ऐसोको अब हितू तुम्हारो बालक राखि दुरावेजी ॥
पाँयन परे निगड अति भारे जान कवन विधि पावेजी ॥
षट बालक वध सुमिर देवकी मनहीं मन पछितावैजी ॥ १ ॥
तात मात अति दुखित जान तब करुणासिंधु दयालाजी ॥
दुखमोचन लोचन सुखदायक प्रगट भये तिहिं कालाजी ॥

१ दर्पण। २ अंधकार।

हरि आयशु पाई सो शक्ती प्रगटी नंद घर बालाजी ॥
ताके प्रगटत भये नीद वश गोकुल गोपी ग्वालाजी ॥ २ ॥
दोहा–भादों कृष्णा अष्टमी, रोहिणि शुभ बुधवार ॥
अखिल लोकपाति अर्धनिशि, आय लियो अवतार ॥
चौबोला–आय लियो अवतार हरीनें चार भुजा दरशाईजी ॥
शीश मुकुट कुंडल कल कानन भूषण वसन सुहाईजी ॥
शंख चक्र गदा अंबुज धारे शरद चंद्र छविछाईजी ॥
अद्भुत रूप देवकी देखो पतिसों अरज सुनाईजी ॥ १ ॥
चलहु पती अब शरण हरीके देखहु नैनन आईजी ॥
दंपति परमानंद मगनमन परे चरणमें धाईजी ॥
भयो प्रेम आनंद दुहुनके रह्यौ दृगन जल छाईजी ॥
बोले गदगद वैन हरीसों राखहु प्रभु शरणाईजी ॥ २ ॥
दोहा–प्रभु तुम गुण किहिं विधि कहूं, तुम माया विस्तार ॥
निगम नेति जिहिं गावही, शेश न पावत पार ॥
चोबोला–शेश न पावत पार हरीकी भ्रूविलास अनयासाजी ॥
अखिल लोक उपजावत क्षणमें करतबहुरि तुम नाशाजी ॥
जो स्वरूप मुनि ध्यान लगावै परत नहीं कहुँ भासाजी ॥
जो सबते पर अज अविनाशी सो किम उदर निवासाजी ॥१॥
तात मातके वचन सुने तब बोले सारंगपानीजी ॥
सुनो मात मैं कहूं कथा सब पूरब जन्म कहानीजी ॥
तुम समान सुत होय हमारे तपकर तुम मन आनीजी ॥
सोमैं वचन दियो तब तुमको ता हित लीला ठानीजी ॥
दोहा–शिव ब्रह्मा सनकादि मुनि, ध्यान सकत नाहिं पाय ॥
सोमैं तुम्हरे प्रेमवश, दियो दरशनिज आय ॥
चौबोला–दियो दरशनिज आय हरीनें निजमाया फहलाईजी ॥

महा मोह उपजाय दुहुन सों कहत हरी सुखदाईजी ॥
करहु तात अब वेग उपाई नृपतें लेहु बचाईजी ॥
गोकुल हमींह देहु पहुँचाई यशुमति कन्या जाईजी ॥ १ ॥
मोहिं राखियो यशुमतिपाई कन्याको लै आनोजी ॥
सो कंन्याले कंसहिदीजे मोहिको नाहिं बतानोजी ॥
ऐसे मात पिता समुझाई कियो रूप शिशु नान्होजी ॥
देखिचरित सुन श्रीहरि केरे मात पिता सुत जानोजी ॥ २ ॥

दोहा–सुत उठाय उर लाइयो, दृगनरह्यो जलछाय ॥
कहत देवकी सुनहु पति, दे गोकुल पहुँचाय ॥

चौबोला–देगोकुलपहुँचायजबहिंलगि सुनहि न कंस दुखारोजी
मन वच क्रम नृपको पति कबहूं करिये नाहिं पत्यारोजी ॥
धीरज धरैं कवन विधि इतनो नाहिंनभाग्य हमारोजी ॥
जो ये बालक बचहि कंसते रहिहै सुयशतिहारोजी ॥ १ ॥
सोचति विकल कंस भय जननी निरखति कुँवर कन्हाईजी॥
अति अँधियारी अर्धनिशा है भट घेरे चहुँ घाईजी ॥
पाँयन परे निगड अति भारे कौन भांति तहां जाईजी ॥
घनगरजत चमकतहै चपला बरषत जल झर लाईजी ॥ २ ॥

दोहा–विकल भई सोचत अतिहि, सुमिरत यमुना नीर ॥
कहा करों कासों कहूं धरों कवन विधधीर ॥

चोबोला–धरों कवन बिधधीर कंसने तबहीं क्यों नहिं मारीजी
ऐसो सुत बिछुरत माता सों क्यों जीवै दुख भरीजी ॥
आतुर वचन सुने माताके भक्तनके हितकारीजी ॥
दीनो सोचमिटाय चरणते गिरे निगड तिहिं ठारीजी ॥ १ ॥
तब वसुदेव हरषि संकल्पी लक्ष धेनु मन माईजी ॥
पुत्र गोदलै तुरत सिधारे पाये द्वार खुलाईजी ॥ २ ॥

रखवारे सोवत सब देखे सिंह चले हरषाईजी ॥
तबहीं मघवा वृष्टि निवारी मंद समीर सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–हरिमुख चंद्र प्रकाश सम, क्षण क्षण पंथ लखाय॥
शेशनाग छाया किये, सिंहदहाडत जाय ॥
चोबोला–सिंह दहाडत जाय चरित सो बसुदेवहु नहिं जानाजी
पहुँचे जाय यमुनतट देवा जगत ईश भगवानाजी ॥
सरित देखि गंभीर अतिः तब मन में संशय आनाजी ॥
गोकुलके सन्मुख पग दीनो हरि प्रताप धर ध्यानाजी ॥ १ ॥
यमुना पति पहिंचान आपनो अति मनमें सुख पायोजी ॥
परसन हित पद प्राणपतीके ऊंचो सलिल चढ़ायोजी ॥
गुल्फ जंघ कटिलौं जल आयो हरिको ऊर्ध्व उठायोजी ॥
ज्यों ज्यों सुत वसुदेव उठावत त्यों जल ऊपर आयोजी ॥२॥
दोहा–नासालौं पहुँच्यो सलिल, दीनो पद लटकाय ॥
परसिनीर हुंकारदै, भयो गुल्फ सम आय ॥
चौबोला–भयो गुल्फ सम आय पारह्वै नंद धामपर आयेजी ॥
तहां सकल जन सोवत देखे यशुमति ढिग पौढायेजी ॥
कन्या तहां पुनीत निहारी सो उठाय लैधायेजी ॥
फिर फिर सुतको वदन निहारत चले कंस भय पायेजी ॥ १ ॥
जो संपति निगमागमगाई योगी जन नहिं पाईजी ॥
सनकादिकके सब विधि प्राना शंकर ध्यान लगाईजी ॥
शारद नारदादि यश गावैं शेश रहत रटलाईजी ॥
अहो विलोकहु भाग्य बड़ाई सो यशुमति गृह आईजी ॥ २ ॥
दोहा–वहां देवकी प्रेम वश, अति व्याकुल अकुलात ॥
बालक अरु वसुदेवको, पठये बहु पछितात ॥
चोबोला–पठये बहु पछितात देवकी उठ बैठत अकुलानीजी

बोल सकत नहिं कंसासुर भय मोचत नैनन पानीजी ॥
मत यह भेद दई कोउ जाने सुरन वीनती ठानीजी ॥
मत कोउ दुष्ट मिले मगमाईं रखवारे कोउ जानीजी ॥ १ ॥
क्यों दुरि है शशि मुख उजियारी यहै सोच जिय धारीजी ॥
किहि विधि पहुंचैंगे वह पारी मगमें यमुना न्यारीजी ॥
गोकुल पहुँचे धौं मगमाईं भई अब अधिक अवारीजी ॥
यहि विधि सोच विवस अकुलाई इक क्षण युगते भारीजी॥२ ॥

दोहा—तब पहुँचे वसुदेवजी, बूझति सुत कुशलाय ॥
किहिं विधि बालक राखियो, कहो मोहिं समुझाय ॥

चौबोला—कहो मोहिं समुझाय सुनतही कन्या तुरत दिखाईजी ॥
द्वारकपाट लगे सब आपहि बेरी पगमें आईजी ॥
कन्या रोय उठी तिहिं काला सो सबहिन सुन पाईजी ॥
सुनतहि तब व्याकुल उठ धाये कह्यो कंससों जाईजी ॥ १ ॥
सुनत उठ्यो व्याकुल चल आयो लियो खड्ग कर भारीजी ॥
तब सो कन्या बहन देवकी आगे आनि निकारीजी ॥
अहो भ्रात यह दान दीजिये मांगत गोद पसारीजी ॥
याते मृत्युः नहीं तुम्हारी मानो बात हमारीजी ॥ २ ॥

दोहा—भगनीकी वाणी सुनी, मृत्यु त्रास शठ मान ॥
यामें छलकछु होयतो, विधना गति को जान ॥

चोबोला—विधना गतिको जान कंस तब रिपुसमकन्याचीनीजी॥
कर गहि पटकन मनहिं विचारी सटक स्वर्ग चलदीनीजी ॥
दिव्य रूप तहां कियो प्रकाशा बहुरि कंससों कीनीजी ॥
अरे मन्दमति अधम अज्ञानी ममहत्या क्यों लीनीजी ॥ १ ॥
तेरोरिपु प्रगट्यो ब्रजमाईं तैं मोहिको क्यों मारीजी ॥
आयो काल निकट शठ तेरो यों कहि स्वर्ग सिधारीजी ॥

परयो देवकी चरणनजाई भयो सोच मन भारीजी ॥
मैं मारे तुम पुत्र वृथाई क्षमाकरो वहि नारीजी ॥ २ ॥
दोहा—विनतीकरि वसुदेवकी, दीने निगडकटाय ॥
भयोसोच व्याकुल अतिः, परयो सेज पर जाय ॥
चौबोला—परयोसेजपर जाय जगतही बीतगई निशिसारीजी ॥
नींद नहीं आई ताकोक्षण भयोसोच अति भारीजी ॥
असुर विमोहन सुर सुखदायक हरिके चरित अपारीजी ॥
परत नहीं भवकूप प्रेमते गावहिं नर कोऊ नारीजी ॥ १ ॥
यशुदा जब सोवत ते जागी सुतकी वोर निहारीजी ॥
देख रही मुख शशि उजियारी उर आनन्द अपारीजी ॥
गदगद कंठ न कछु कहि आवत हरषि रही नँदनारीजी ॥
आवहु कंथ पुत्र मुख देखो भाग्यवंत तुम भारीजी ॥ २ ॥
दोहा—सुने वचन नंद नारिके, आनँद उर न समाय ॥
ताक्षण नँदको सुख भयो, शारद सकहि न गाय ॥
चोबोला—शारद सकहि न गाय हरषिके नंद भवनमें आयोजी
तब यशुदा रानीने अपने सुतको बदन दिखायोजी ॥
जानत नहिं हमको किहिठाईं उर आनंद बढायोजी ॥
रोय उठे तब नँदके लाला ब्रज बासिन सुन पायोजी ॥ १ ॥
जित तित ते हरषित उठ धाये धन लूटनमनु आयेजी ॥
देत बधाई नंदमहरको लागत यशुमत पायेजी ॥
कहत लालको हमहिं दिखावो यशुमति सबन दिखायेजी ॥
अति हरषित नँदराय कह्यो अब करहु आनँद बधायेजी ॥२॥
(लावनी)कह्यो करहु आनंद बधाये अति हरषित मन नदये ॥
लगी बधाई बजन घरन घर सब नारिन मंगल गाये ॥
टेक॥सुर सिध मुनि सब परम अनंदे मुनिं गोकुल हरि आयेहैं॥

दुंदुभि बजावत मंगल गावत तियन सहित उठ धायेहैं ॥
विद्याधर किन्नर सु घर कंठ बर करत गान सचुपायेहैं ॥
गर्जत तिहिं काला मधुर रसाला धनिगाति जतन जनाये हैं ॥
बाजत करताला बरषित माला सुरतरु सुमन सुमन भाये ॥
लगी बधाई० ॥ १ ॥

सब करत किलोलैं हरषित बोले जे जे कहि सुख पाये हैं ॥
नभ महँध्वनि होई सो तो सुनि सब कोई भये सकलमन भायेहैं
संतन हितकारी असुर संहारी आवत क्षण सुख छायेहैं ॥
शिव ब्रह्मादिक सनकादि मुनीजन प्रफुलित गात सुहायेहैं ॥
गुण गावत गोविंदहरीके मनमें अति आनँद छाये॥लगीबधा०२

आनँद उर न समात भये सब मनचीते हरि ब्रज आये ॥
अति मनहरषे पुनि पुनि बरषे सुमनझरी नभ सुर लाये ॥
सुरतिय निरखि सिहात कहत मन यशुमति भाग्य बड़े पाये ॥
इन सम नाहीं सकल हम यों कहि प्रेमानँद छाये ॥
योगी जनकर योग विरागा ध्यावैं ध्यान नहीं आये ॥
लगी बधाई० ॥

धन्य यशोमति भाग्य तिहारो तियन सहित नभ सुरगावै ॥
वेद न जानें नीति बखानें सो सुतकर उरसों लावै ॥
भरे प्रेम आनंद सकल सुर लखि हरि छबि मन सुख पावै ॥
बारहिं बार कहत सब यशुमति तेरी भाग्य न कहि आवै ॥
प्रगटे गोकुलचंद हरिःसो लखि विहार जन सुख पाये ॥
लगी बधाई बजन घरन घर सब नारिन मंगल गाये ॥ ४ ॥

दोहा—गोकुलको उत्सव निरखि, रहे सदन सब भूल ॥
ब्रजवासी हरषित सकल, जन्मे मंगल मूल ॥

चौबोला—जन्मे मंगल मूल सकल ब्रज वासिनने सुन पायेजी ॥
नंद महर घर बजत बधाई यशुमति ढोटा जायेजी ॥
परमानंद मगन सब आये तब नद द्विजन बुलायेजी ॥
अति विचित्र सब द्विजन सुनाये लग्न घरी शुभ आयेजी ॥१॥
देहि नंदको सकल बधाई वेदन ध्वनी सुनाईजी ॥
तब असनान महर उठ कीनो लीनो चंदन लाईजी ॥
जाति कर्म करि पितृ जिवाये भूषण वसन सजाईजी ॥
गैया बाढी दूध मंगाई लक्ष वत्स समुदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—सकल अलंकृत साजिकै, दई लक्ष नँद गाय ॥
जविहुकोटिन वरस सुत, कह्यो द्विजन समुदाम ॥

चौबोला—कह्योद्विजनसमुदाय प्रीतिकीरबहुरिमहरनंदरायाजी॥
हित कुटुंब सब निकट बुलाये सुनत सकल चल आयाजी ॥
भूषण वसन सबन पहिराये चंदन भाल लगायाजी ॥
हुते जो कुलमें वृद्ध जिठेरे तिनको शीश नवायाजी ॥ १ ॥
वंदी मागध सूत गुणनके भरे भवन बहु आयाजी ॥
परतोसे सबको नँदराई लैलै नाम बुलायाजी ॥
नंद भरे रस देत सबनको याचक अमिच करायाजी ॥
मन वांछित सब लेत नंदसों जो जाके मन भायाजी ॥ २ ॥

दोहा—सुनि सुनि धाई ब्रज तिया, लेकर कंचन थार ॥
मंगल साज सजायके, कीने सुभग शृंगार ॥

चौबोला—कीने सुभग शृंगार उमंग मन अंजन दृगन लगाईजी ॥
मांग सिंदूर तरौना कानन रोरी रंग सुहाईजी ॥
अंगिया अंग कसी अरु उर विच विविध हार छवि छाईजी ॥
अति आनंद मगन मन फूली अंचल उडन भुलाईजी ॥ १ ॥
निज निज मेल मिली सब गावैं नंद धाम पर आईजी ॥

इक भीतर इक आंगनमाईं द्वार भीर अतिछाईजी ॥
सुख उघार सुतको दिखरायो यशुमति निकट बुलाईजी ॥
जीवहु जबलगि नभतारागण दै अशीश सुख पाईजी ॥ २ ॥
दोहा—सफल भयो ब्रज देश सब, धन्य यशोमति माय ॥
धन्यकोखि जहां राखियो, पुण्य कह्यो नहिं जाय ॥
चौबोला-पुण्य कह्यो नहिं जाय यशोदा धनिधनिभाग्य तिहाराजी
धन्य दिवस धनि लग्न रात यह धन्य घरी धनि बाराजी ॥
जहां जायो ऐसो सुत तुम यह थिर थाप्यो परिवाराजी ॥
देहिं अशीशमनाय सुरनको जीवहु नंदकुमाराजी ॥ १ ॥
परमानन्द नन्द अनुरागे लीने बसन मँगाईजी ॥
सारी सुरंग कुसुमको लहँगा मोल कहे नहिं जाईजी ॥
सिगरी बधू बोलि पहिराई जो जाके मन भाईजी ॥
फूली कमल कली सी सारी दे अशीश हरषाईजी ॥ २ ॥
दोहा—एक हर्षि गृहको चली, एकनंद ग्रह आत ॥
एक कहत है एकसों, भली सुनीमैं बात ॥
चौबोला—भली सुनी मैं बात महर यशुदाने ढोटा जायोजी ॥
नंद द्वार सखि बजत बधाई भयो सबनमन भायोजी ॥
चलें वेगि सखि देखिये सोई मन अति हरष बढ़ायोजी ॥
इकनाचत इक ढोल बजावत एकन मंगल गायोजी ॥ १ ॥
एक साथया द्वार बनावे गारि महरको गाईजी ॥
ध्वज पताक तोरन छबिछाई बंदनमाल बँधाईजी ॥
पुनि पुनि सुमन देव बरषावत फूलन गोकुल छाईजी ॥
घर घर मंगलचार भये हैं विहारन बाले बलि जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—बरन सके सो कौन कवि, नंद सदन सविचार ॥
छबिसागर त्रिभुवन धनी, लियो जहां अवतार ॥

चौबोला–लियो जहां अवतार हरीने ग्वाल वृन्द तहां आयेजी ॥
चित्र विचित्र अंग सब कीने गुंजामाल बनायेजी ॥
भूषण और अमित अंगमाई अहिरन गुंज सुहायेजी ॥
एक कहत एकन समुझाई आज बनहिं नहिं जायेजी ॥ १ ॥
सुरभिन गेरू रंग लगाये झूलन साज सजाईजी ॥
पूत नंदके घर है जायो भई सबन मन भाईजी ॥
वेगि चलौ बनि सहित समाजा कत अब गहर लगाईजी ॥
दधि माखनके माट भराये कछु यक हरदि मिलाईजी ॥ २ ॥

दोहा–केतिक गावत रागनी, ताल मृदंग बजाय ॥
निरखत नंदकुमारको, मिल मिल यूथ बनाय ॥

चौबोला–मिलमिलयूथबनायदेखिअतिनंद मगन मन माईजी ॥
हँसि हँसि सबके निकट बुलावत सुतहि दिखावत जाईजी ॥
देहिं बधाई अति अनुरागे आगे भेट रखाईजी ॥
मगन भये सब देखि श्यामको रही देह सुधि नाईजी ॥ १ ॥
मानहु उत्सव गोप शरीरा धरे रूप सब आवैंजी ॥
देह धरे आनंद मगनमन नन्द महर दरशावैंजी ॥
जन्मे आनँद कन्द कहत सुख सहसहु सुख नहिं पावैंजी ॥
इक नाचत इक गावत ठाढे इक कूदत छबि छावैंजी ॥ २ ॥

दोहा–दधि माखन छिरकत फिरैं, एकन एकहि जाय ॥
वर्षत भादौं मास सम, गोकुल कीचमचाय ॥

चौबोला–गोकुलकीचमचाय गोप सब इक आवत इक जाईजी ॥
एकन डारि मिलत गलबांहैं एकन पकरत धाईजी ॥
एकन दूध दही शिर ढोरैं एकन लागत पाईजी ॥
राजा रंक[१] गिनत कछुनाहिं अति आनँद मन माईजी ॥ १ ॥
करत गोप कौतूहल[२] जित तित गोकुल मध्य प्रवीनां[३]जी ॥

१ कंगाल। २ तमासा। ३ चतुर।

एकन लूटि नंदको लीना तिन औरनको दीनाजी ॥
एकन बोल नंदजी देहीं भूषण वसन नवीनाजी ॥
एक कहत मोहिं लाल दिखावो जिन ब्रजमें सुख कीनाजी॥२॥

दोहा—एक एकते लेत हैं, ते औरनको देत ॥
नृत्यत अति आनंद मन, बृद्धबाल सबजेत ॥

चोबोला—बृद्ध बाल सब जेत ग्वाल सब अति उदार मनमाईजी॥
गोकुलको आनंद भयो सो कापै वरण्यो जाईजी ॥
जहां परम आनंद मयश्री लियो जन्म हरि आईजी ॥
नितनव होत विलास हरी मुख निरखत लोग लुगाईजी ॥ १॥
ब्रज संपति सुख देखि भूलि रहे सुर मुनि अरु ऋषि राईजी ॥
जब ते जन्म लियो हरि आई सुख संपत ब्रज छाईजी ॥
हिय उदार सब परम प्रवीना रोग रह्यो नाहिं राईजी ॥
मुदित जहां तहँ सब ब्रजवासी हरिसों प्रेम लगाईजी ॥ २ ॥

दोहा—नन्दसदन[1] महिमा अमित, लखि सुरेशं[2] भ्रम जाय ॥
अति प्रकाश मंदिर रह्यो, फैल रही छबिछाय ॥

चोबोला--फैलरही छबिछाय गाय अरु गोपनकी अति भीराजी॥
कहुँ दधि कहुँ माखन कहुँ मेवा कहूं दूध कहुँ खीराजी ॥
खग मृग सर सरिता कमनीयाँ[3] भूमिगिरी सुख सीराजी ॥
बेली विटप फूल फल सहिता सरवर निर्मल नीराजी ॥ १ ॥
मंगल मूल भयो ब्रज सारो सुरभी सुर समुदाईजी ॥
कृष्ण जन्म आनंद बधाई तिहुँ पुरमाई छाईजी ॥
ब्रजवासिन मन अधिक उछाहा अति आनंद मन माईजी ॥
ब्रजको सुखकोसकै बखानी सुखनखानि जहां आईजी ॥ २ ॥

दोहा--सन्त कुमुदवन मोदकर, प्रगटे गोकुलचंद ॥
ब्रज जन चारु चकोर हित, तुम कुल असुर निकंद ॥

१ घर । २ इन्द्र । ३ सुंदर ।

चौबोला-तुम कुल असुर निकंदनन्दके धामअमितसुख छायोजी
याचक जन सब होत सुखारे नाना विध यश गायोजी ॥
गाँव गाँवते सुन सुन आवत मन भायो सब पायोजी ॥
पांच दिवस इहि विध सुख पायो छठौ छठीको आयोजी ॥१॥
मंदिर सकल सुबास लिपायो जहां तहां चित्र कराईजी ॥
भीती चारु सुगंध सिंचाई बंदनवार बँधायेजी ॥
जाति कुटुम्ब मित्र हितु जेते तेसब न्योत बुलायेजी ॥
रोहिण्यादि सब करत रसोंई ब्यंजन विविध बनायेजी ॥ २ ॥

दोहा—बनि बनि आवत ब्रज तिया, लालनको पहराय ॥
कुरता टोपी जरकसी, रत्नन प्रेमलगाय ॥

चौबोला—रत्नन प्रेमलगाय धरी सब कंचन थारनल्याईजी ॥
रोरी अक्षत पान मिठाई मंगल साज सजाईजी ॥
गावहिं मंगल कोकिल वाणी नन्द भवन पर आईजी ॥
करि आदर यशुदा बैठावत देखि श्याम सुख पाईजी ॥ १ ॥
वृषभानादिक गोप जितेका ब्रजवासी समुदायेजी ॥
आये नन्द महरके धामा भूषण बसन सजायेजी ॥
अति आदरकर नन्द सबनको आसनपर बैठायेजी ॥
सबके मन आनन्द नचत नट लखि हरि सुख सुख पायेजी॥२॥

दोहा—कहूं ग्वाल गावत कछू, गायन साज सजाय ॥
वंश प्रशंसा भाट कहिं, ढाढ़ी ढाढ़िन गाय ॥

चौबोला—ढाढ़ी ढाढ़िन गाय गोप गण देत तिन्हैं बहु दानाजी ॥
भूषण वसन धेनु मन माना हय गज रथ विधि नानाजी ॥
परजा सकल खिलौना ल्यावैं छबि नाहिं बनत वखानाजी ॥
धराहिं नन्दके आगे आनी राखत सब सुख मानाजी ॥ १ ॥
तिन्हें देत न्यवछावर हरिकी भरे प्रेम नँदराईजी ॥

विश्वकर्मा पलना गढिल्यायो जडे रत्न तामाईजी ॥
लागे विविध खिलौनाजामे देखत भूख नशाईजी ॥
विश्वकर्मा मनवांछित पायो लीनो नन्द रखाईजी ॥ २ ॥

अथ कुरता टोपी वर्णन लीला ॥

दोहा—तब सब गोपन नंदजी, हित सों दिये जिमाय ॥
छिरकत नाना अरगजा, दीने पान खवाय ॥

चौबोला—दीने पान खवाय तबै मंगल मय रजनी आईजी ॥
गाय उठीं सब नारि सुहाई आनँद मंगल बधाईजी ॥
कुरता टोपी पीतरंग सजि लालनको पहराईजी ॥
लै उछंग पूजन छठि बैठी हरषि यशोमति माईजी ॥ १ ॥
करि कुलको व्यवहार आरती हरिकी मात उतारीजी ॥
करत नोछावर नारि सकल मिल तन मन डारत वारीजी ॥
नेग जोग नेगिन मन भायो देत नंदकी नारीजी ॥
प्रात न्हवाय लाल पलना पर पौढाये सुखकारीजी ॥ २ ॥

दोहा—अरुण चरण कोमल अतिहि, निरखत यशुमति माय॥
मात सुकृत फल अवतरे, ब्रजवासिन सुखदाय॥

चौबोला—ब्रजवासिन सुखदाय हरीके नितनव मंगल होईजी ॥
मंगलनिधि जब ते हरि आये रहत सुखी सब कोईजी ॥
नंद सुकृत वर्षाऋतु जानो यशुमति बादर सोईजी ॥
मंद हँसन दामिन सोई मानो श्याम घटा हरि जोईजी ॥ १ ॥
ब्रज जन मोरन आनँद कारी गरज मधुर किलकारीजी ॥
दादुर गुण गावहिं सब दासा परम प्रीति उर भारीजी ॥
पलना पचरंगी छबिछाई इंद्र धनुष उपमारीजी ॥
गजमुक्तनकी लर लटकारी सो मनु जलकी धारीजी ॥ २ ॥

दोहा–ब्रज घर घर संपति भई, सोइ भूमि हरियाहिं ॥
बरषत परमानंद जल, नंदभवनके माहिं ॥
चौबोला–नंद भवनके माहिं हरीजन यह विधि प्रेम बढायाजी ॥
ध्यान भूमि दृग मग सरिता सब जन उर सिंधु समायाजी ॥
यद्यपि निशि बासर भरपावत पूरण होन न पायाजी ॥
हरि मुख शशि राका निरखत सब बढ़त लहर पुलकायाजी॥ १ ॥
कंसहि वहां नींद नहिं आई अति चिंता मनमाईजी ॥
बैठ्यो निकसि सभा उठ प्राता लीने मंत्रि बुलाईजी ॥
मेरो रिपु प्रगट्यो ब्रज माईं किमि पहिचान्यों जाईजी ॥
जाते जाय वेगि तिहिं मारो सो कछु करहु उपाईजी ॥ २ ॥
दोहा–बड़ो होय दिन दिन वहै, मेरो रिपु है सोइ ॥
करहु यत्न शीघ्रहि कछू, कोजाने कहां होइ ॥
चौबोला–कोजाने कहां होइ सुनत इक बोल्यो सन्मुख आईजी ॥
किमि डरपत इतनेके काजा असुरनके तुम राईजी ॥
धर्मकाज होवन नहिं दीजै होम होन नहिं पाईजी ॥
विप्रन साधन असुर सतावै ताहि न परहि पचाईजी ॥ १ ॥
जो वह देव होयगो सो तब आप प्रगट ह्वैजाईजी ॥
तब कोउ जाय असुर तिहिंमारै याविधि शत्रु नशाईजी ॥
एक कह्यो सुन हो महाराजा मोमनमें यह आईजी ॥
देश देशको असुर पठावो बालक रहन न पाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तिन सबहिनको वध करै, वचन न पावहि कोय ॥
इनहींमें वह होयगो, मारयो जैहै सोय ॥
चौबोला–मारयो जैहै सोय सुनतही कह्यो कंस हरषाईजी ॥
कहे मंत्र यह दोऊ नीके पठवहु असुर निकाईजी ॥
सँभरि करौ कारज सब जावो दीने असुर पठाईजी ॥

कह्यो जाउ ब्रजमें अब कोऊ बालक मारौ जाईजी ॥ १ ॥
कह्यो पूतना आयसुपाऊँ मैं कारज करआऊँजी ॥
सकल घोश शिशु जाय नशाऊँ कहोतो जीवत लाऊँजी ॥
घसि कंकोल उरोजन लाऊँ बालक जाय पियाऊँजी ॥
वशीकरण पढ़ि सबपर डारों मोहनि रूप बनाऊँजी ॥ २ ॥

दोहा—नृपको कारज मैं करौं, तबहिं पूतना नाम ॥
तुरत कंस आयसु दियो, जा तू गोकुल गाम ॥

चौबोला—जा तू गोकुल गाम ताहि दिन नन्द मधुपुरी आयेजी ॥
राज अंश कछु नृप पहिल्याये सोनृप द्वार पठायेजी ॥
समाचार बसुदेवके पाये सुनि मन हरष बढायेजी ॥
छोर बंदिते नृप तिनराखे मिलन चले हरषायेजी ॥ १ ॥
मिलन गये तिनको नंदराई मिले डारिगलबांईजी ॥
कुशल पूँछ करि बारंबारी अतिशय प्रीति बढाईजी ॥
करिकै आदर रीत प्रेम सों बैठारे नंदराईजी ॥
तब बोले नंदराय सुनो हो हरि गति जानि न जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—सुनो देव भावी प्रबल, तासों कछु न बसाय ॥
जगत भ्रमत जाके विवस, सो गति लखी नजाय ॥

चौबोला-सो गति लखी नजाय तुमहुँ अति कष्ट कंसते पायोजी।
सुनि सुनिकै अति भये दुखित मन भयो बहुत पछितायोजी ॥
आजु देखिकै चरण तिहारे नैननको सुख छायोजी ॥
सत्य वचन तुम कह्यो नंदजी यों वसुदेव सुनायोजी ॥ १ ॥
कर्म रेख नहिं जात मिटाई विधि सों नाहिं बसायोजी ॥
सुन्यो नंद सुत भयो तुम्हारे सुनि अति मन सुख पायोजी ॥
तुमको जरा आय नियराई वृद्ध बैस सुत पायोजी ॥
तब नँद हलधर जन्म सुनायो प्रथम रोहिणी जायोजी ॥ २ ॥

दोहा—कंस त्रास उरमें धसौ, उत्सव कियो दुराय ॥
सुख पायो वसुदेव सुनि, कह्यो वचन समुझाय॥

चौबोला—कह्यो वचन समुझाय सुनहु नंद यह तुमनीके जानोंजी
कंस नृपति कृत है जगमाईं सो कछु नाहिं छिपानोंजी ॥
ताते अब वे बालक दोऊ अपने करि तुम मानोजी ॥
अब तुम बेगि जाहु गोकुलको बालक नाहिं पत्यानोजी ॥१ ॥
जित तित भेजे असुर कंस के करत उपद्रव भारीजी ॥
प्रजा लोगके बालक पावत सो सब डारत मारीजी ॥
गई आज ब्रज माहिं पूतना बालक घातन हारीजी ॥
ताते वेग सदन तुम जावो करिये नाहिं अवारीजी ॥ २ ॥

अथ पूतना वध लीला ।

दोहा—वचन सुनत वसुदेवके, चले नंद अतुराय ॥
निकसतशकुनभले नहीं,भये सोच वशआय ॥

चौबोला—भये सोच वशआय नंदकेकछु यकसुधि तनमाईजी ॥
क्षिप्रचले चिंता बालककी सोचत मन मग जाईजी ॥
यहां पूतना ब्रजमें आई मोहनि रूप बनांईजी ॥
ऊपर सुभग शृंगार बनायो गरल कुचन लपटाईजी ॥ १ ॥
अतिही कपट छबीली सोहै देखत ब्रज जन आईजी ॥
इत उत ह्वै नँद धामहिं आई यशुमतिके मनभाईजी ॥
देखिरही मुख सुन्दरताई नरकै सुरकी जाईजी ॥
काकीवधू कौनकी बेटी ब्रजमें कबु न लखाईजी ॥ २ ॥

दोहा—हौं आई सुत देखने; लागत तुम्हरे पाय ॥
बिनजाने आदर कियो, आसन पर बैठाय ॥

चौबोला—आसन पर बैठाय लखत हरिपलना पर मुसकाईजी ॥

ताही समय यशोदारानी कछु गृहकाज सिधाईजी ॥
तबहि राक्षसी दुष्ट मतीसो पलनाके ढिग आईजी ॥
निरखि बदन मुख चूम हरीको लीनो गोद उठाईजी ॥ १ ॥
विष लपट्यो हरिके मुख स्तन दियो तुरत अतुराईजी ॥
लगे करन पय पान हरी तब पकरि दुहूँकर माईजी ॥
पय सँग प्राण लगे खींचन हरि भई सिथिल अकुलाईजी ॥
तब सो लगी छुड़ावन बालक सो अब छूटत नाईजी ॥ २ ॥
दोहा—परी मृतक ह्वै असुरनी, तन इक योजनताय ॥
जननी गति ताको दई, दीनी स्वर्ग पठाय ॥
चौबोला—दीनी स्वर्ग पठाय यशोमति पलनाके ढिंग आईजी ॥
पलना पर बालक नाहिं पायो त्राहि त्राहिकर धाईजी ॥
सुनत सकल धाये ब्रजवासी ढूंढत ब्रजमें जाईजी ॥
ढूंढत श्यामहि रोवत भारी व्याकुल यशुमति माईजी ॥ १ ॥
हरिताकी छाती लपटाने करत चरित असुरारीजी ॥
ढूंढत ढूंढत उरपर पाये लिये उठाय म्हतारीजी ॥
जिमि मणि गई भुवंगन पाई दुख सुख ताको भारीजी ॥
कहति बच्यो अति नंदको लाला सुखित भई ब्रजनारीजी ॥२॥
लावनी—भाग्यवंत दोऊ अति भारी नंद यशोमति महतारी ॥
बच्यो कन्हाई आज यह विधनाने करबरटारी ॥
टेक—अद्भुत रूप बना यह आई अतिहि छबीली बनि नारी॥
कपट खेल इन रच्यो ताहिते विधनाने याको मारी ॥
पुनि पुनि सबके पाँयन परिं परि कहति यशोमति महतारी ॥
तुम पंचनके पुण्य दयाते बच्यो कान्ह याते भारी ॥
अतिही कष्ट कुँवरने पायो कहि यशुमति बारं बारी ॥
बच्यो कन्हाई० ॥ १ ॥

कुलके देवन करी सहाई बिधना बहुत बचायो है ॥
कोऊ कहत नँद भाग बडेरे पुण्य न जात गिनायो है ॥
कोऊ कहत नेक सुत देरी ले उछंग सुखपायो है ॥
चूम बदन अरु लेत बलाई यशुमतिपै पहुँचायो है ॥
तबहिं नंद गोकुलमें आये देखि बकी डरपे भारी ॥
बच्यो कन्हाई० ॥ २ ॥
जो वाणी बसुदेव सुनाई सो सबही सांची पाई ॥
तहां ब्रजबासी जुरे इखटे पूछौ तिनसों नँदराई ॥
तिन सब कियो बखान सुनतही सदन गये तब नँद धाई ॥
देख्यो श्यामहिं निरखिकै तब कछु मन समता आई ॥
बदन विलोकि हरषि उर लाये तब नँद मन धीरज धारी ॥
बच्यो कन्हाई० ॥
बहुत दान हरि हाथ दिवायो अति मन हरषित नँदराई ॥
ब्रजबासिनको बुला बकीके दिये अंग सब कटवाई ॥
बाहिर एक ठौर सबकीने तब अग्नी तामें लाई ॥
अति सुगंध ता अंगते निकरी सो सगरी ब्रजमें छाई ॥
हरिहि परसि उत्तम गति पाई रहे अचंभव नर नारी ॥
बच्यो कन्हाई आज यह विधनाने करवर टारी ॥ ४ ॥
दोहा—नन्दसुवन महिमा सुनत, चरण कमल चितलाय ॥
हरि रोये तब गोदमें, दूध पियायो माय ॥
चौबोला—दूधपियायो माय हरीको पलना माहिं सुवावैजी ॥
हुलरावै दुलराय झुलावै बहुविधिलाडलडावैजी ॥
लालनके हित नींद बुलावै मधुरे सुर कछु गावैजी ॥
रीलालनको आव निदरिया तोहिंको श्यामबुलावैजी ॥ १ ॥

१ गोद। २ पूतना।

अहो देवता या कुल केरे सेवाकरों तुमारीजी ॥
जो कर कपट वकीलों आवै लीजो लाल उबारीजी ॥
वेगि बडो करदेहु विधाता प्राण पूतना हारीजी ॥
सोवत मेरो लालकन्हाई माता तन मन वारीजी ॥ २ ॥

दोहा–सोवत देखत मौन गहि, जागतते कछु गाय ॥
अंग फरकावत मगन मन, ताछबिको को पाय ॥
चौबोला–ताछबिकोको पाय हरी मुखनिरखत कर मन मोदाजी॥
यशुमति अपनो भाग्य विचारत लेत प्रेमकर गोदाँजी ॥
हुलरावत गावत मधुरे सुर हरिके बाल विनोदाजी ॥
जोसुख सुर मुनिकोउन पावत सो सुखलेत यशोदाजी ॥ १ ॥
उरलगाय चूमति मुख हरिके कबहुँकलेत उछंगाजी ॥
कबहुँ झुलावत पलना माहीं निरखि मनोहर अंगाजी ॥
दरशनको नित सुर मुनि आवैं तियन सहित लिये संगाजी ॥
कहत परस्पर सुर नरनारी हरिके अद्भुत रंगाजी ॥

दोहा–अलख अगोचर अजहरी, पुरुष पुरातन जान ॥
भेद न सुर मुनि कहिसकै, ब्रह्मावेदवखान ॥
चौबोला–ब्रह्मा वेद वखान ताहिको हुलरावत महतारीजी ॥
पूरण भई पुरातन करनी भाग्यवंत अति भारीजी ॥
मन अभिलाष बढावत हरिसों हँसत देत किलकारीजी ॥
बरषि प्रसून देव यह भाषत धन्य नंदकी नारीजी ॥ १ ॥
यशुदा नित नव लाड लडावै ब्रज जनको सुखकारीजी ॥
नितनव मंगल नंदके धामा नितनव रूप मुरारीजी ॥
जन कृपाल संतन हितकारी भक्तन हित तनु धारीजी ॥
रटत संत यह हृदय विचारी जन विहारन बलिहारीजी ॥ २ ॥

अथ कागासुर वध लीला ॥

दोहा—जब हरि मारी पूतना, सुनि डरप्यो नृप कंस ॥
प्रगट भयो ब्रज शत्रुमम, यह जानी निःसंस ॥
चौबोला—यह जानी निःसंस ताहि क्षण वस्यो हरिहि उर माईजी॥
शत्रु भाव लाग्यो भजने तिहिं विसरत इक क्षण नाईजी ॥
कागासुर नृप निकट बुलायो कह्यो ताहि समुझाईजी ॥
आवहु वेग नंद सुत मारी कीजे काज बनाईजी ॥ १ ॥
आयसुधरि शिर गर्व बढ़ायो कागहि रूप बनायोजी ॥
वेगवंत उड़ि गोकुल आयो प्रेरित काल नियरायोजी ॥
बैठ्यो नंदधाम पर आई सो हरिने लखि पायोजी ॥
ताको आवतही हरि जान्यो असुर कागवन आयोजी ॥ २ ॥
दोहा—लगी यशोमति काज गृह, हरिको सोवत जानि ॥
गयो असुर पलना निकट, चोंच चलावत तानि ॥
चौबोला—चोंच चलावत तान तबै हरि पकरि लियो करमाईजी॥
नेक मरोर कंठ हरि ताको फेंक दियो नृप पाईजी ॥
पऱ्यो जाय नृप पास उतानो ब्रजजन जान्यो न कोईजी ॥
तुरत कंस तिहिं बूझन धायो तत्र तिन नृपहि सुनाईजी ॥ १ ॥
सुनहु कंस वह बाल न होई प्रगट्यो है कोउ आईजी ॥
एक हाथसों पकरि मोहिं उन फेंक दियो इत माईजी ॥
ह्वैहै तुमरो काल अवशि वह यह मोहिं परत लखाईजी ॥
कागासुरके वचन सुने तब अति डरप्यो नृप राईजी ॥ २ ॥
दोहा—बाढ्यो सोच विशाल तरु, जम्यो जु उरमें आय ॥
सभामध्य नृप असुर सो, शिर धुनि धुनि पछिताय ॥
चौबोला-शिरधुनिधुनिपछितायब्रजाहिमेंकालप्रगटभयोआईजी॥

ताके अबहींते यह हाला कागासुरहि सुनाईजी ॥
दनुज सुता पूतना पठाई इकक्षण माहिं नशाईजी ॥
कागासुरके ऐसे हाला सोदिन दिन बढ़िजाईजी ॥ १ ॥
है कोउ बीरसो ताहि नशावै मम कारज करआईजी ॥
ऐसो कौन कहूं मैं जासों अब तिहिं जाय नशाईजी ॥
असुरनको यों नृपति सुनाई शकटा गर्ब बढ़ाईजी ॥
उठिकै पान नृपतिसों मांगे मैं मारौं अब जाईजी ॥

दोहा—कहो तो सब ब्रज को हनू, तुम प्रताप ते जाय ॥
हर्षिकंस बीरादियो, बहु विध कहि समुझाय ॥

चौबोला-बहु विधिकहि समुझाय कंसने बिदाकियोब्रजआयोजी।
इहां श्याम पलना परखेलत पद अंगुष्ठ मुखनायोजी ॥
अपने मन यह करत विचारा यह संतन मन भायोजी ॥
इनको धोवन अतिहित शंकर अपने शीशचढायोजी ॥ १ ॥
इनको रसमन मधुर जानकर धरत निरंतर ध्यानीजी ॥
पुनि इन पदके ध्यान मगनमन ब्रह्मादिक मुनिज्ञानीजी ॥
लक्ष्मी अति सुखमानत इनसों रहत सदा उरआनीजी ॥
इनपद पंकजरस अनुरागी रहत सकल सुरमानीजी ॥ २ ॥

दोहा—ऐसोधों कहारस मधुर, यह विचार ठहराय ॥
इहरस दुर्लभ मोहि अति, देखों धौमैं ताय ॥

चौबोला—देखों धौमैं ताय ताहिते पद अंगुष्ठ मुख नायोजी ॥
लेलेस्वाद मगन रस खेलत तहँ शकटासुर आयोजी ॥
पवन रूप है गोकुल आयो काऊ नाहिं लखायोजी ॥
भारे शकट नंद घरकेरे सोतिन माहिं समायोजी ॥ १ ॥
तिन में सो शठ आय समायो नंदसुवनलखि पायोजी ॥
ताको हरि इकलात चलाई गिरो शकट घहरायोजी ॥

दनुज हतन काऊ नहिं जान्यो शकटहिगिरो लखायोजी ॥
सुनत शब्द धाये ब्रजवासी नंदहु आतुर आयोजी ॥ २ ॥
दोहा–सबके मन विस्मय भयो, यशुमति लीनो धाय ॥
पलना ढिग खेलत हुते, कछुक बाल तहँ आय ॥
चौबोला–कछुक बाल तहँ आय कह्यो पलनाते लात चलाईजी॥
सो न करी परतीत काहुने बालक बुद्धि बताईजी ॥
यह कछु अति विपरीत भई है उबरचो आज कन्हाईजी ॥
यशुमति अति मन मन पछिताई कीनो देवसहाईजी ॥ १ ॥
बारबार उरसों सुतलावै निरखि नंद सुख पावैजी ॥
मेरे निधनींके धन कान्हा माता बलि बलि जावैजी ॥
ऐसे बहु विध लाड लडावै पय पियाय पौढावैजी ॥
मन्द मन्दकर ठोंक सुवावै कछुक मधुर सुर गावैजी ॥ २ ॥
दोहा–सोये श्याम सुजान हरि, चौंकि चौंकि दृगलाय ॥
लिये मात छतियां जिमि, फणि मणि उरग दुराय॥
चौबोला-फणिमणिउरगदुरायप्रातउठिनिरखिवदनसुखपायोजी।
चूमि वदन सुतको पय प्यायो आनँद उर न समायोजी ॥
कोमल घाम अजिरमें आयो सुत पलना पौढायोजी ॥
आप मथन दधि भवन सिधाई नंदहि ढिग बैठायोजी ॥ १ ॥
कमल वदन छबि रहे निहारी रहे नंद टकलाईजी ॥
चुटकी दे दे सुतहि खिलावत निरखि निरखि सुख पाईजी ॥
किलकि उठे लखि तात बदन हरि कर पद दृग अतुराईजी ॥
झपटि झटकि उलटेपर सोये त्रिभुवनपति सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–निरखि नंद टेरत महरि, सो छबि कही न जाय ॥
अतिकोमल तन सकुचि मन, आप न सकत उठाय॥

चौबोला–आप न सकत उठाय महरिको टेरत हैं नँदराईजी ॥
तजी तुरत दधि मथन मथानी शीघ्र तहाँ चलिआईजी ॥
जाने महिर गिरे सुखदाई ताते आतुर धाईजी ॥
नंदहि देखि हँसत सुतपासा तब धीरज मन पाईजी ॥ १ ॥
उलटि परचो सुत देखहु आई उठि नाहिं सकत कन्हाईजी ॥
सो छबि निरखि मात सुख पायो लीने तुरत उठाईजी ॥
उरलगाय मुख चूमनलागी आज शुभघरी आईजी ॥
डेढ मासके भये कन्हाई पिटकुरना उलटाईजी ॥ २ ॥

दोहा–चिरजीवहु मेरो कुँवर, करिहौं अनँद बधाइ ॥
नँदरानी सब ब्रजबधू, लीनी निकट बुलाइ ॥

चौबोला–लीनीनिकटबुलाय सुनतसबअतिआनँदकरधाईजी ॥
हरिको निरखि परम सुखपायो हर्षित मंगल गाईजी ॥
बांटी घर घर पान मिठाई यशुमति अतिसुखपाईजी ॥
धनि धनि ब्रजकी नारि सभागी बालचरित मन लाईजी ॥१॥
जननी अति आनंद मगन मन निरखत श्यामलगाताजी ॥
जैसे निधनी पाय महाधन मुदित रहतदिनराताजी ॥
धनि धनि ब्रजकोबास नंदधनि धन्य यशोमति माताजी ॥
रहत मगन या रसमेंतिनकी बिहरन बलि बलि जाताजी ॥२॥

अथ तृणावर्त बध लीला।

दोहा–धन्य यशोमति भाग्यतुम, त्रिभुवनपति सुतपाय ॥
पय प्यावत हरिगोदलै, बहुबिधि लाडलडाय ॥

चौबोला-बहुविधि लाडलडाय कबहुं हरिके मुख सों मुखलावैजी
कबहुं हरषित कण्ठ लगावै जिमि निधनी धनपावैजी ॥
खेलत हँसतरहो नित कान्हा कब मुख वचन सुनावैजी ॥

कब जननी कहि मोहिं बुलैहैं नंदबबा कहि आवैजी ॥ १ ॥
खेलत इत उत आंगनमाई घर बाहर फिर आवैजी ॥
अपने करते ले मुखमाईं तनक तनक कछु खावैजी ॥
कब विधि[1] यह अभिलाष पुरावै कुलके देव मनौवजी ॥
किलकत हरि यशुमतकी कनियाँ लखि जननी सुख पावैजी॥२॥
दोहा–तब पठयो नृप कंसने, तृणावर्त बलिजानि ॥
ताको आवतही लख्यो, लीनो हरि पहँचानि ॥
चौबोला-लीनो हरि पहँचानि मातपर भये श्यामअति भारीजी॥
सहि न सकी तब हरिको जननी दीनो भू बैठारीजी ॥
धनि धनि ब्रजकी भूमि सुहाई तहँ लीला विस्तारीजी ॥
आप लगी गृह काज यशोमति राखि अजिर सुखकारीजी॥ १ ॥
आयो असुर तबहिं गोकुलमें अतिशय धुंध उड़ायोजी ॥
तृणावर्त असुर महापापी वात चक्र मिस आयोजी ॥
अंध धुंध गोकुल सबकीनो हरिको आय उठायोजी ॥
लेकरि हरिको गयो अकासा धूरि धुंध ब्रज छायोजी ॥ १ ॥
दोहा–जहां तहां नर नारि सब, प्रलयकाल सम जान ॥
यशुमति दौरी अजिरमें, तहां न पायो कान्ह ॥
चौबोला–तहां न पायो कान्ह नंदको टेरत यशुमति माईजी ॥
तेरो सुत अंधबायु उडायो देखहु ब्रजमें जाईजी ॥
दौरी वेगि गुहार लगावो ब्रज जन लेहु बुलाईजी ॥
अति व्याकुल खोजत नंदरानी फिरत भवँन बिलखाईजी ॥१॥
तृणावर्तको यों हरि कीनो ग्रीव लिपट तरलाईजी ॥
कठिन शिलापर ताहि गिरायो ऊपर त्रिभुवन राईजी ॥
चूर चूर कर ताके गाँता दीने स्वर्ग पठाईजी ॥
धूरि धुंध सब तुरत विनाशा खोजत ब्रजजन आईजी ॥

१ ब्रह्मा। २ महतारी। ३ घर। ४ अँग।

दोहा–उपवनमें पाये हरी, ब्रज बनितन तहाँ आय ॥
लियो दौरि यशुमति महिर, अति हित कण्ठ लगाय ॥
चौबोला–अतिहितकंठलगायहरिहिआतुरयशुमतिपैआयेजी ॥
ह्वैगये ब्रजमें मंगलचारा घर घर आनँद बधायेजी ॥
लिये मात अति हित तब हरिको छातीसों लपटायेजी ॥
मनसी बहुतिक गाय नंद तब निरखि वदन सुख पायेजी ॥१॥
देहिं वसन भूषण मन माने अति हित नंदकी नारीजी ॥
नयो जन्म हरिको यह ह्वैरी जहां तहां कहत विचारीजी ॥
उबरचो श्याम महिर बडभागी देखहु चोट न पारीजी ॥
रोग लेहुँ बलि जाउँ कन्हाई ब्रज जनके सुखकारीजी ॥ २ ॥
दोहा–भली प्रकृती यह नहीं, सुनो यशोमति माय ॥
इकलो हरिको छांडिकै, गृहके काज सिधाय ॥
चोबोला–गृहके काज सिधाय यशोमति काज इनहुँते प्यारोजी॥
बौरी अजहूं सुरति सँभारो उबरचो सुवन तुम्हारोजी ॥
भयो पुरबलो पुण्य सहाई यशुमति सोच विचारोजी ॥
अब मैं सीख तुम्हारी मानी तजहुँ न इक पलन्यारोजी ॥ १ ॥
मोहिं कहां हो यह सुख माई रंक परी निध पाईजी ॥
अब मैं अपनों लाल चितैहौं क्षण काहू न पत्याईजी ॥
कीनी विदा सकल सनमानी यहि विधि कहि समुझाईजी ॥
यशुमति हरिको गोद खिलावै देखि देखि हरषाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कोमल श्यामल तन निरखि, बारबार पछि तात ॥
कैसे उबरचो आज हरि, तृणावर्त्तके घात ॥
चोबोला–तृणावर्त्तके घात भयो कोउ पूरव पुण्य सहाईजी ॥
कियो काज वह आय पूतना तृणावर्त्त कियो आईजी ॥
मात दुखित जिय जानि कृपाला भक्तनके सुखदाईजी ॥

बालचरित सुखदान करनलगे सुंदर कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
खेलत मात उछंग कन्हाई बालचरित सुखदाईजी ॥
जननी बेसर लटकत देखी चितवत इकटकलाईजी ॥
ताहि गहनको पाणि चलायो तब जननी उचियाईजी ॥
नहिं पहुँचे तब अति अकुलाये माता बलिबलिजाईजी ॥ २ ॥

दोहा—निकट कियो जननी वदन, हँसिहुलसे किलकार ॥
जनु युग बिज्जूबीजकी, चमकपरी द्वगझार ॥

चौबोला—चमकपरी द्वगझार प्रमुदित निरखि यशोमतिमाईजी॥
प्रेम मगन तनकी सुधिभूली लीने नंद बुलाईजी ॥
परमानंद नन्द उठिधाये सफल किये द्वगआईजी ॥
देखहु सुत मुख दंतुलि आई लीने गोद कन्हाईजी ॥ १ ॥
निरखि तात मुख हरि हँसि दीने देखत नयन सिराईजी ॥
दूधदांतकी छबि अतिदेखी सुफल भई मनसाईजी ॥
कछु दिनघट षटमास भयेहरि सुन्दर श्यामकन्हाईजी ॥
अन्न परासन बूझहु शुभदिन बिहानहिं विप्रबुलाईजी ॥ २ ॥

अथ अन्नप्रासन लीला ।

दोहा—भये परासन योगहरि, सुनि पुलके नंदराय ॥
सोसुख कापै जातकहि, प्रेमरह्यो उरछाय ॥

चौबोला—प्रेम रह्यो उरछाय प्रातही लीने विप्र बुलाईजी ॥
राशि बूझि शुभ दिवस धरायो सो दिन आछो पाईजी ॥
सखिन बोलि शुभगान करायो गारिमहरिको गाईजी ॥
और महरको नाम सुनावै जो जाके मन आईजी ॥ १ ॥
मणि कंचनके थार मँगाये बासन बहुविधि ल्याईजी ॥
नँद घरनी ब्रजवधू बुलाई जे सब जात सुहाईजी ॥

कोउ जिमनार कोऊ पकवाना खटरससोंज बनाईजी ॥
बहु प्रकारके व्यंजन ठाने स्वाद कहे नाहिं जाईजी ॥ २ ॥
दोहा–अति उज्वल व्यंजन अमित, कीने नाना भांति ॥
यशुमति नंदहि बोलि कहि, बोलहु अपनी जाति ॥
चौबोला–बोलहु अपनी जाति नंद तब अति आदरकर ल्यायेजी
आये सकल गोप अति हरषित बाहिर सब बैठायेजी ॥
भीतर गये आप नंदराई यशुमति कान्ह न्हवायेजी ॥
सुन्दर पट भूषण पहिराये मणिमयरतन जडायेजी ॥ १ ॥
तनु झंगुली शिर चौतनिसाजी करचूरा दोउ पाईजी ॥
बारबार मुख निरखि यशोमति हरिकोले तब लाईजी ॥
लै बैठे नंदराय गोद तब जानि शुभघरी आईजी ॥
लीने सदन बुलाय गोप सब आनँद उर न समाईजी ॥ २ ॥
दोहा–आ बैठे सब गोपगण, अति हर्षित सुख पाय ॥
कनक थार भरि खीर धरि, मिश्री मधुर मिलाय ॥
चौबोला–मिश्री मधुर मिलाय नंद तब हरिके मुख जुठराईजी ॥
गोपवधू लागीं सब गावन आंगन बजत बधाईजी ॥
शंख निसान भेरि सहनाई और नगारन घाईजी ॥
खटरसके व्यंजन हैं जेते हरिके अधर छुवाईजी ॥ १ ॥
तनक अधर जलपोंछि छुवायो यशुमतिपै पहुँचायोजी ॥
हर्षवंत युवती सचुपायो लैलै गोद खिलायोजी ॥
विप्रन बोलि दक्षिणा दीनी जो जाके मन भायोजी ॥
गोपन संग महर नंदराई पनवारेपर आयोजी ॥ २ ॥
दोहा–अति रुचि सब भोजन कियो, दीने पान खवाय ॥
गोपवधू पहिराय सब, दीनी सुगंध सिंचाय ॥
चौबोला–दीनीसुगंधसिंचायइहिविधिसुखविलसतब्रज साराजी॥

१ घर । २ सुवर्ण ।

निरखि श्याम मुख सुभग शरीरा आनँद रूप उदाराजी ॥
सुरसिहाय ललचाय मुनीजन कहि ब्रज भाग्य अपाराजी ॥
धन्य धन्य कहि सुमन झरी कारि प्रेम मगन मन भाराजी ॥१ ॥
नित नव हरिके मंगलचारा नित लीला छबिछावैजी ॥
शेष न पावे पार हरीको कौन कवी सो गावैजी ॥
नेति नेति जिनको श्रुतिं गावे ब्रजजन गोद खिलावैजी ॥ २ ॥
जो सुख तीनलोकमें नाहीं सो यशुमति सुख पावैजी ॥

दोहा–नित्य नयो सुखलेत है, नये नये लाडनितोन ॥
नयन ओट नहिं करत हैं, जुगवत फणि मणि जोन ॥

चौबोला-जुगवतफणिमणिजोनतनकमुखअधरअरुणताआईजी॥
तनक तनक कच घुंघरवारे कुटिल भ्रुकुटि छबिछाईजी ॥
मसि व्यंदुका तापर राजै निरखत जन सुख पाईजी ॥
नयन नासिका भाल बिसाला कल बोलत सुखदाईजी ॥ १ ॥
अल्प दशन चिबुक दर ग्रीवा तन घनश्याम मुरारीजी ॥
मात निरखि नैनन सुख पावै प्रेम विवस अति भारीजी ॥
दीठ न लगे श्यामको मेरी यों मनमाहिं विचारीजी ॥
तब अचरातर लेत छिपाई राई नोन उतारीजी ॥ २ ॥

दोहा–कबहुँ झुलावत पालनें, कबहुँ खिलावत गोद ॥
कबहुँ सुलावत पलँगपर, यशुदा सहित विनोद ॥

चौबोला–यशुदासहितविनोदआवैनितसदनसकलब्रजबामाजी॥
लै लै गोद खिलावहिं हरिको मुदित निरखि घनश्यामाजी ॥
इह विधि विहरत बाल कन्हाई कछु दिनमें अभिरामाजी ॥
माखन मांगत कुँवर कन्हाई चलत घुटनि बलधामाजी ॥ १ ॥
खेलत मणिमय आंगनमाईं देखत निजपरछाईंजी ॥
कबहुँकताको पकरन धावै जानू पाणि चलाईंजी ॥

कबहूं किलक तातमुख पेखै हँसि जननी तन धाईजी ॥
कबहुँ बुलायलेत नँदरानी तब नँदके ढिग जाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कबहुँ किलक उठ धावहीं, गिरत परत छबिछाय ॥
कबहुँ जात बलराम जह, गोपबाल समुदाय ॥
चौबोला-गोपबाल समुदाय तहां हरिजात सदनचल आवैजी ॥
माखन मांगत सैन चलावै कहन कछू नहिं पावैजी ॥
मात समुझि मथनी ते लेही माखन आनि खवावैजी ॥
खेलत खात कान्ह मणिआंगन घुटनन इत उत जावैजी ॥ १ ॥
करचूरा पग पैजनि बाजै पीत झंगुलि छबिछाईजी ॥
उदर हरि नख कटिकिंकिणि सोहै मुख छबि बरनि न जाईजी॥
बजत पैंजनी शब्द सुनतही जनमनको सुखदाईजी ॥
हरिके बालचरित्र देखि सब सुर मुनि रहत लुभाईजी ॥ २ ॥
दोहा–खेलत आंगन बालहरि, तात मात सुखदाय ॥
चलत पाणि पदकी छबी, प्रतिबिंबन निज छाय ॥
चौबोला–प्रतिबिंबननिजछांयमनहुंछबि सुभगमहीतटपाईजी ॥
किधौं जान पदकोमलतासन कमलनि सेज बिछाईजी ॥
निरखि सुभग सोभा सुखदानी लिये हर्षि तब माईजी ॥
नील जलजतन सुंदर श्यामा अति छबि परम सुहाईजी ॥१॥
अरुण तरुन नख ज्योतिबिराजै चरण कमल सुखदाईजी ॥
रुनक झुनक पद पैजनि बाजै सुनि सुर रहत लजाईजी ॥
कटिकिंकिणी जटितरबिकारी झंगुली पीत सुहाईजी ॥
कर कमलनि चूरा छबिछाजै भुज बाजू छबि पाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कठला हार जो अंगमें, बिच बिच पदिक पुवाय ॥
चारुचिबुक दुति अति बनी, गोलकपोलनि काय ॥
चौबोला–गोलकपोलनि काय अधरमधि दशनदुती प्रगटाईजी॥

मानहुं सुन्दरता सब विधिसों रूपरत्न छवि आईजी ॥
मधुर तोतरे बैन श्रवण सुनि सुर मुनि जन हरषाईजी ॥
सुनत होत चितचैन जननको समुझ परत कछुनाईजी ॥ १ ॥
नासा सुभग कमल दललोचन चंदन भाल लगायाजी ॥
भ्रुकुटी निकट मसिबिंदुछवी जनु अलिसावक सोइ आयाजी ॥
लालचोतनी शीश सुहावन नानामणिन जडायाजी ॥
बालदशाकेकच घुंघरारे निरखत जनमन भायाजी ॥ २ ॥

दोहा-मंजुल तारनकी चपल, बालदशा छविछाय ॥
चंद्रवदन मुखश्यामको, निरखि नंदसुखपाय ॥

चौबोला-निरखि नंदसुखपाय हरीको चूमि वदन उरलायोजी॥
सोसुखकापै जात बतायो ब्रज युवतिन लखि पायोजी ॥
चित्र पूतरी सी रहिठाढी प्रेममगन सुख छायोजी ॥
गृहकारजकी सुरत बिसारी युवतिन हरि मन भायोजी ॥ १ ॥
बिहारन प्रभु सबके सुखदानी प्रेमविबस जनपावैजी ॥
बाल चरित लखि सुर सनकादिक योगदशा बिसरावैजी ॥
परम पुनीत उदार हरीके बालचरित किमि गावैजी ॥
सुन्दरश्याम सुजान हरीसो संतनके मन भावैजी ॥ २ ॥

अथ नाम करण लीला ॥

दोहा-बालचरित नंदलालको, कापै वरण्यो जाय ॥
शेष कोटि शारद सहस, कल्पहिंसकाहिं न गाय ॥

चौबोला-कल्पहिंसकाहिं न गाय एकदिन मन वसुदेवके आईजी
पठये बोल गर्ग मुनि ज्ञानी करि पूजा बैठाईजी ॥
युग पद कमल शीश तबनायो सुनिये हो ऋषिराईजी ॥
तबते गोकुल नंद अवासा कंस भयो दुखदाईजी ॥ १ ॥

जाय रोहिणी कियो निवासा ताहि गर्भ श्रुत जायोजी ॥
कंस त्रासते प्रगट न कीनो नाम करण नाहिं पायोजी ॥
भयो नहीं तुम विना गुसांई ताते तुमहिं बुलायोजी ॥
ताको नाम राखि तुम आवो सुनऋषि मन हरषायोजी ॥ २ ॥

दोहा—हरषि मुनी गोकुल गये, सुनि पायो नँदराय ॥
आज भाग्य हमरो बडो, धन्य ऋषी तुम आय ॥

चौबोला—धन्य ऋषी तुम आय नंद तब धोये पद हरषाईजी ॥
अरघासन अति हितकर दीनो कृपा करी ऋषिराईजी ॥
मोसम धन्य नहीं कोउ आजू व्यंजन विविध बनाईजी ॥
अति हितकर ऋषिराय जिमाये दीने पान खवाईजी ॥ १ ॥
बहुरि महर नंदराय ऋषी सों कह्यो जोरकर दोईजी ॥
केहि कारज प्रभु आगम कीनो कहो कृपा करि सोईजी ॥
तब बोले ऋषिराय नंद सों पठयो वसुदेव मोईजी ॥
नामकरणके काज रोहिणी सुवन जन्म लियो जोईजी ॥ २ ॥

दोहा—लेआये बालक उभय, सुनत नंद हरषाय ॥
मुनि चरणन राखे दोऊ, दै अशीश ऋषिराय ॥

चौबोला—दै अशीश ऋषिराय प्रथम नंद बालिकोहाथ दिखायोजी
जन्म दिवस मुनि पास सुनायो देखि ऋषी चित लायोजी ॥
है यह शिशु सब जगत अधारा अति शुभ लक्षण जायोजी ॥
धरयो नाम तिनको बलरामा बहुरि नंद शिर नायोजी ॥ १ ॥
कहयो कि ऋषि मम भाग्यन आये तुम सर्वज्ञ सुहायेजी ॥
देखिये या बालकको हाथा मुनिवर देखि लुभायेजी ॥
प्रेममगन रुवतन पुलकाने पुनि हरि बदन लखायेजी ॥
बोले मुनिवर सुरति संभारी धनि धनि दरशन पायेजी ॥ २ ॥

दोहा–धन्य धन्य नँद पुण्य तुम, धनि यह महरि यशोद ॥
धनि धनि यह सुकृत फल्यो, धन्य खिलावत गोद ॥

चौबोला–धन्य खिलावतगोद सुनहु नंद कहूं मैं सत्य बखानीजी॥
इनको तुम सुत करि मति मानो लीज्यो निश्चय जानीजी ॥
रूप रेख जाने नहिं कोई अज अनादि सुखदानीजी ॥
सो भक्तन हित अवतरे आई निज इच्छा अनुमानीजी ॥ १ ॥
इनते बड़ो न कोय जगतमें जग करता अभिरामाजी ॥
इनके नाम अमित जगमाहीं कहूं कछू यकनामाजी ॥
इन कबहुँक वसुदेवके धामा लियो जन्म सुख श्यामाजी ॥
ताते बासुदेव इकनामा सुमिरत पावै कामाजी ॥ २ ॥

दोहा–कहिहैं इनको कृष्ण सब, सुमिरत पाप नशाय ॥
अरु ये जैसे कर्मकरि, तैसे नाम उपाय ॥

चौबोला–तैसेइ नाम उपाय दुष्टदल संतनके सुखदाईजी ॥
भूमीभार उतारन कारन प्रगट भये दोउ भाईजी ॥
तुम कबहूं तपकर यह मांगा तुमको गोद खिलाईजी ॥
ताते सुतकरि तुम यह पायो निज जायो यह नाईजी ॥ १ ॥
करिहैं ये आनंद घनेरे हरि सबके सुखदानीजी ॥
आनंदे सब ब्रजके बासी सुनी ऋषी मुख बानीजी ॥
सुनत नंद यशुमति सुख पायो परे चरण ऋषि आनीजी ॥
बहुत भेटलै आगे राखी स्तुति बहुविधि ठानीजी ॥ २ ॥

दोहा–विदाभये ऋषिराय तब, नंदभाग्य बड़ भाखि ॥
चले मधुपुरीको हरषि, हरि मूरति उर राखि ॥

चौबोला–हरि मूरति उर राखि गये वसुदेवहि जाय सुनाईजी ॥
सुनत बहुत सुख पाय ऋषीको दीनी अमित बिदाईजी ॥

यशुमति सुनत गर्गकी वानी अपनो भाग्य सिराईजी ॥
हरिको लै उरसों लपटायो अति आनन्द मनमाईजी ॥ १ ॥
रोहिणि और यशोदा निरखत श्याम राम सुखमोदाजी ॥
खंकि खंकि हरि बैठत गोदा भावत बाल विनोदाजी ॥
पुनि पुनि तुतरे बोल बुलावै लीने हित करि गोदाजी ॥
कबहुंक गावत करतारी दै सिखवत चलन यशोदाजी ॥ २ ॥
दोहा—तनक तनक भुज टेक करि, ठाढो होन सिखाय ॥
लरखरातलखि मन सुखी, पुनि पदद्वैक चलाय ॥
चौबोला-पुनि पदद्वैक चलाय मनाहिं मन यों विधनाहिं मनाईजी॥
कबधौं अपने पायन धावै यशुमति यह मन चाईजी ॥
कबहुँक छोर देत अँगनैया खेलत हैं दोउ भाईजी ॥
जिमि बछराके पाछे गैया सँगडोलत दोउ माईजी ॥ १ ॥
धौरी धूरि धूसरतवन बाल विभूषण अंगाजी ॥
अंजन रंजित दृग चपलाई निरखत लजत अनंगाजी ॥
मणि मय आंगन नंदके डोलत जिमि रवि शशि दोऊ संगाजी ॥
दहन दनुज कुल बन अनल हरि यदुकुल आनँद रंगाजी ॥२ ॥
दोहा—कबहुँक ठाढ़े होत हैं, गहि मैयाके अंग ॥
कबहुँक हुलसित चलत हैं, रामकृष्ण दोउ संग ॥
चौबोला—राम कृष्ण दोउ संग झँगुलिया चित्रविचित्र सुहावैजी॥
दमाकि उठत द्वैललितदतुलिया मासि बिंदुकमन भावैजी ॥
गहिमणि खंभडगत डय डोलैः बचन तो तरे आवैजी ॥
मथत जहां दधि नंदकि रानी गहि मथनी हरषावैजी ॥ १ ॥
मात तनक दधिदेत खवाई लेतप्रीत मुखनावैजी ॥
क्षीर समुद्र जासु रजधानी तनकदही रुचिआवैजी ॥
तनकसों वदन तनक सी दतियां तनक अधरछवि छावैजी ॥

तनक हँसन मन हरत अमोलन तनक कपोल सुहावैजी ॥ २ ॥

अथ बरसगांठ लीला ।

दोहा—तनकहि माखन तनककर, तनकअँगुरियनखाय ॥
तनक तनक भुज चरण शुभ, तनक स्वरूप बनाय ॥
चौबोला—तनक स्वरूप बनाय विलोकत सकलभवनकोआपैजी
तरहि सिंधु संसार तनकजो करे नामको जापैजी ॥
तनकहि नामलियेते जाको तनक रहत नहिंपापैजी ॥
तनक कृपाजापर हरिकरहीं मिटत सकल भवतापैजी ॥ १ ॥
वरषगांठ लालनकी आई द्वैषटमांस कन्हाईजी ॥
फूली फिरत यशोमति माई लीनी बधू बुलाईजी ॥
प्रमुदित मंगलगान करायो आंगनबजीबधाईजी ॥
मंदिरसकलसुगंध सिचांयो मोतिन चौक पुराईजी ॥
दोहा—नंदमहर फूलेफिरत, लीने गोप बुलाय ॥
द्वारनिवंदनवारबाँधि, ध्वजपताकफहराय ॥
चौबोला—ध्वजपताकफहराय पान फल फूलडार मँगवाईजी ॥
हरद दूब दधि अक्षतमाला लीनेसकल धराईजी ॥
मंगल द्रव्य सकल मँगवायो मेवा अमित मिठाईजी ॥
यशुमति कान्हहिं उबटन्हवायो पट भूषण पहराईजी ॥ १ ॥
कठला कंठ बघनखा नीको केसर तिलक लगावैजी ॥
लटकत ललित ललाट लटूरी छबि बरनी नहिं जावैजी ॥
नयन आंजि कीनो मसि बिंदा भ्रुकुटी निकट सुहावैजी ॥
करि शृंगार मुख चूम श्यामको यशुमति मन हरषावैजी ॥२॥
दोहा—नंद बोलि यशुमति कह्यो, लिये गोद सुखकंद ॥
लग्न घरी आवत चली, बोलहु भूसुर वृन्द ॥

चौबोला—बोलहु भूसुर वृंद काहिको अब तुम गहर लगाईजी ॥
विप्र वेगि काहे न बुलावत लग्न घरी टरि जाईजी ॥
नंद क्षिप्रवर विप्र बुलाये चरण धोय बैठाईजी ॥
लै उछंग लालन नंदराई बैठे चौकी आईजी ॥ १ ॥
वेद मंत्र विधि सहित पढावैं बरष गांठि जुरवावैजी ॥
मंगल तिलक लालके लावे ब्रजनारी सब आवैजी ॥
हरि दरशन प्यासी मृगनैनी गोकुल मंगल गावैजी ॥
तिलक सबहि मोहन के लावै निरखि श्याम सुख पावैजी ॥२॥

दोहा—विप्रनदै बहुदक्षिणा, बांटि मिठाई पान ॥
बारबारनेगीनको, दे धन मणि मन मान ॥

चौबोला—दे धन मणि मन मान तबै सारी पंच रंग मंगाईजी ॥
हरषित महिर बधू पहिराई दै अशीश सुख पाईजी ॥
लेति यशोमति भरि भरि गोदा गोकुल होत बधाईजी ॥
सदा श्याम जनके रखवारे बिहरन बलि बलि जाईजी ॥ १ ॥
धन्य धन्य यशोमति धन्य नंद तुम बाल विनोद सुहावैजी ॥
धन्य सुमन जिन जननके हैं जिन यह रस मन भावैजी ॥
धनि धनि ब्रजकी बालकही सुर सुमनन झरी लगावैजी ॥
धन्य धन्य नँदलाल दैत्यदलन सज्जन सुखद उपावैजी ॥ २ ॥

दोहा—लखि यशुमति सुख पात अति, चलत कान्ह द्वै पांय॥
करत हुती अभिलाष सोइ, देखति नैन निकाय ॥

चौबोला—देखति नैन निकाय बजत पदनूपुरअतिछबिछाईजी ॥
डगमगात डोलत हरि डोलैं सोछबि परम सुहाईजी ॥
बैठजात पुनि उठत तुरतही देहरि लौं चले आईजी ॥
धाम अवधि राखत अटकाई देहरि नांघि न जाईजी ॥ १ ॥
कीनी तीन पेड जिन बसुधा यशुदा देहरि नँघावैजी ॥

पकरि पाणि क्रम क्रम उतरावै लखि सुर विस्मय आवैजी ॥
कोटि ब्रह्मांडरचै पल माईं पलमें ताहि मिटावैजी ॥
ताहि खिलावति यशुमत ग्वारी नाना लाड़ लडावैजी ॥ २ ॥
दोहा–कबहुँक दे करतारि अरु, मधुर मधुर सुर गाय ॥
देखि श्याम जननी तनाहिं, गावत तारि बजाय ॥
चौपाई–गावततारि बजाय चरणनूपुर कटिकिंकिणि खासाजी॥
लखि छबि मन अभिलाषन पुरवत रहत मनहिंमें आसाजी ॥
सोभित कंठला कंठ हरीके उर हरि नख छबिरासाजी ॥
मनहुँश्याम घनमाहिं कियो है नभ शशि बिमल प्रकाशाजी॥ १॥
नचहु लेहु नवनीत लालसद काहि जननी बालि जाईजी ॥
त्रिभुवन पति नवनीत हेत तब धरतरुनकछुनपाईजी ॥
बोलनि लगे श्याम कलबानी कछुक तोतरी आईजी ॥
नंदहितात यशोदा मैया बलदाऊते भाईजी ॥ २ ॥
दोहा–माखन रोटी मातसों, उठि मांगत दोउ प्रात ॥
अचरा गहे न मानहीं, अति ठुनकत दोउ भ्रात ॥
चौबोला-अतिठुनकतदोउभ्रातसुनतिमुख मधुरवचनसुखदाईजी
ताते जननी गहर लगावत सुनि २ मनसुख पाईजी ॥
जननी मध्य सन्मुख संकर्षण पाछे श्याम कन्हाईजी ॥
मनहुँ सरस्वती संग युगपक्षी हंस मोर छबि छाईजी ॥ १ ॥
कबरी गही श्याम खिजताई मुक्तमाल बलभाईजी ॥
कीनो जननी सों झगरो मनु दुहुँ निज निज भखपाईजी ॥
यशुमति मुदित कर्मकी मोटी देखि नंद हरषाईजी ॥
यहै बात मोहन तेरी खोटी चोटी पकरत आईजी ॥ २ ॥

अथ ब्राह्मण लीला ॥

दोहा–जो चाहौ सो लेहु तुम, कहति यशोमति माय ॥

करहु कलेऊलालदोऊ, जननी बलि बलि जाय ॥
चौबोला–जननी बलि बलि जाय कलेऊ दियो मात हरषाईजी॥
खात खवावत बालनके संग हरि त्रिभुवन के राईजी ॥
जिहिं ध्यावत योगी सनकादिक करि आनन्द मनमाईजी ॥
कौतुकनिधि जगदीश हरीसो संतनके सुखदाईजी ॥ १ ॥
चलत लाल पैंजनिके बाजन हर्षित लखिनिजपाईजी ॥
विविध ग्वाल बालन संग लीने डगमग डोलत जाईजी ॥
कबहुँकदौरि द्वार लौं जावै पुनि भाजत घरमाईजी ॥
ब्राह्मण एक नंदबके आयो हरिजन वैस बुढाईजी ॥ २ ॥
दोहा--गोपनको सो पूज्य है, पुत्र जन्म सुनि आय ॥
लखि यशुमति आनन्द भई, आदर कर बैठाय ॥
चौबोला–आदरकर बैठाय धोयपद लियो जलशीश चढाईजी॥
पाक करनको भवन लिपायो जल भाजन मँगवाईजी ॥
भोजन लेहु बनाय बीनती करी यशोमति माईजी ॥
धेनु दुहाय दूध लै आई पांडे क्षीर बनाईजी ॥ १ ॥
घृतमिष्टान्न क्षीर मिश्रित कर हरिहित थार सजायोजी ॥
वेदमंत्र पढिकै हरि ध्यायो विधिवत भोग लगायोजी ॥
नैन मूंदिकै ध्यान लगायो दौरिश्याम तहां आयोजी ॥
नैन उघार विप्र जो देख्यो श्यामहिं जोवत पायोजी ॥
दोहा--अहो यशोदा आपने, सुत कृत देखो आय ॥
सिद्ध पाक सब आयके, डारचो कान्ह जुंठाय ॥
चौबोला–डाऱ्योकान्ह झुंठाय जोरकर कह्यो सुनो द्विजराईजी॥
बहुरो लीजै पाकबनाई कहति यशोमतिमाईजी ॥
बहुरि दूध मिष्टान्न मँगायो पांडे क्षीर बनाईजी ॥
जबहीं ध्यानधऱ्यो मनलाई लागे खान कन्हाईजी ॥ १ ॥

ऐसे विप्रनजेवनपावै हरिताको छूआवैजी ॥
तव यशुमति हरि पै रिसहाई तू कत विप्रखिजावैजी ॥
मैं इच्छाकर विप्रजिमाऊं जव वह पाक वनावैजी ॥
वह अपने ठाकुरहिजिमावै तू काहे जा खावैजी ॥ २ ॥

दोहा–मैयामोहिजिन दोषदे, वह मोहिंलेतबुलाय ॥
नैनमूंद कर जोरिकै, बहुविधिविनय सुनाय ॥

चौवोला–वहु विधि विनय सुनाय नामलैलै कहिमोहिं बुलावैजी
खीर खाँड यह भोग लगावो वेदमंत्रपढिध्यावैजी ॥
तव मैं रहिनसकों उठधाऊं वह करि प्रीति जिमावैजी ॥
प्रेमसहित जव मोहिं बुलावै तव नरहत वनिआवैजी ॥ १ ॥
सुनत गूढ मृदु हरिके वैना गयोभर्म सुधि आईजी ॥
खुलिगये विप्र हृदयके नैना प्रेमरह्यो उरछाईजी ॥
धनि धनि गोकुल धन्य नंद यह धन्य यशोदा माईजी ॥
धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज जहां प्रगटे त्रिभुवन राईजी ॥ २ ॥

दोहा-प्रगट भयो मम सुकृत फल, सफल जन्म प्रभु आज॥
दियो दरशमोहिं कृपा करि, दीनवंधु ब्रजराज ॥

चौवोला–दीनवंधु ब्रजराज कहत द्विज नंदके आंगन माईजी ॥
लोटत वारहि वार कहत मुख धनि त्रिभुवनके राईजी ॥
मैं अपराध कियो विन जाने पहिचाने प्रभु नाईजी ॥
यहै नाथ तुम्हरी वड़ियाई जनकी करत सहाईजी ॥ १ ॥
जे जे शरण तुम्हारी आये ते सव मुक्ति पठायेजी ॥
पतित उधारन नाम तुम्हारो अघ जारन हरि आयेजी ॥
देह धरत गो द्विज हितकारन धनि मोहिं दरश दिखायेजी ॥
हितकी चितकी जाननहारे सव जनके मन भायेजी ॥ २ ॥

दोहा—शरण शरण प्रभु शरण कहि, दियो दरश सुखकंद ॥
हँसत श्याम जननी निकट, प्रेम मगन आनंद ॥
चौबोला--प्रेम मगन आनंद जानि जन करी कृपा हितकारीजी॥
प्रेम भक्ति हरिताको दीनी दियो अभय पद भारीजी ॥
पुनि पुनि मन हरषाय कहत द्विज जै जै श्याम मुरारीजी ॥
विदा भयो घरको द्विजईशा पुलकित अंग अपारीजी ॥ १ ॥
देखि चरित चकृत भइ यशुदा परी विप्रके पाईंजी ॥
दिये रत्नमन मान दक्षिणा चले हरषि द्विजराईजी ॥
यशुमति हरिके लाड़ लड़ावै लीने गोदउठाईजी ॥
आनंदनिधि सुख सदन भयोहै चितै वदन बलिजाईजी ॥ २ ॥
दोहा—सोभा मेरे लालपै, पटतरको कोआन ॥
मेरे जीवन लाड़ले, बिहँसि कियो पय पान ॥
चौबोला—बिहँसिकियोपयपानअजिरठाढ़ीयशुमतिसुखपावैजी॥
गोदी लिये श्याम सुखदानी आनँद उर न समावैजी ॥
उदय भयो शशि शरद सुहावन शशिको मात दिखावैजी ॥
देखहु श्याम चंद्र यह आवत दृगकी ताप नशावैजी ॥ १ ॥
चितै रहे हरि इकटक लाई करते निकट बुलाईजी ॥
मैया यह मीठो कै खारो देखत मोहिं सुहाईजी ॥
देहि मँगाय निकट यह लेहों भूख लगी मैं खाईजी ॥
देहि वेगि मैं बहुत भुखानो मांगतही विरुझाईजी ॥ २ ॥
दोहा—क्यों मैं चंद्र दिखाइयो, यशुमति मन पछिताय ॥
रोवत हरि मानत नहीं, कैसे लेहुँ मनाय ॥
चौबोला—कैसे लेहुँ मनाय विविध भांतिन हरिको समुझावैजी ॥
आन बतावै आन दिखावै नाना विधि फुसलावैजी ॥
कौनी विधि समुझाऊँ श्यामहि शशि किम करमें आवैजी ॥

भूल दिखायो चंद्र आज मैं यशुमाति मन पछितावैजी ॥ १ ॥
अनहोनी नाहिं होय तात तुम चंद्र खान कहो सोईजी ॥
चंद्र खिलौना सकल जगतको याहि खात नाहिं कोईजी ॥
यहै देत नित माखन मोको क्षण क्षण देत सो तोईजी ॥
जो तुम श्याम चंद्रको खैहो बहुरि न माखन होईजी ॥
दोहा--देखत रहिये चंद्रको, हठना करौ गुपाल ॥
मधु मेवा पकवान यह, सो तुम खावो लाल ॥
चौबोला—सोतुम खावो लाल पांलागौंरिसही रिस तन छीजैजी ॥
हठ जिन करो लाल बलिजाऊँ जो चाहे सो लीजैजी ॥
खसि २ परत कान्ह कनियांते दे शशि देर न कीजैजी ॥
यशुमाति कहत मनहिं मन माई चंद्र कहांसे दीजैजी ॥ १ ॥
तब यशुमाति इक जल पुट लीन्हों ऊँचो लियो उठाईजी ॥
आहु चंद्र तोहिं लाल बुलावै ऐसे कहि बहलाईजी ॥
हाथ लियो तोहि खेलत रहि है भूपर रखि है नाईजी ॥
तब जलपुट धरणीपर राख्यो लेहु चंद्र मैं लाईजी ॥ २ ॥
दोहा—लेहु लाल यह चंद्र मैं, लीनो निकट बुलाय ॥
रोवै इतनेके लिये, तेरी श्याम बलाय ॥
चौबोला—तेरी श्याम बलाय याहि तुम देखहु लाल मुरारीजी ॥
जाकारण सुन्दर घनश्यामा कीन्हों हठ तुम भारीजी ॥
देखि श्याम मुसकाय दोउकर डारत बारहिबारीजी ॥
आवत कछू हाथमें नाहीं जल तन रहे निहारीजी ॥ १ ॥
तब जलपुटके नीचे देख्यो तहँ कछु नाहिं लखाईजी ॥
देखतहँसीं सकल ब्रजनारी लखि जननी मुसकाईजी ॥
तबहिं श्याम कछु हँसि मुसक्याने बहुरि तुरत विरुझाईजी ॥
ल्योंगोरी माँ चन्दा ल्योंगो बाहिर करके माईजी ॥ २ ॥

दोहा—मेरे कर आवत नहीं, कलबलात जल माहि ॥
बाहर काढि निकारिके, कहां सो देहि बताहि ॥
चौबोला-कहां सो देहि बताहि कह्यो यशुदा तुम सुनो कन्हाईजी।
तुम मुख लखि सकुचत है चंदा तुम तिहिं पकरन धाईजी ॥
ताते शशि भजि गयो पताला अब तुमते डर पाईजी ॥
कहत अहो हरि शरण तुम्हारी सोये हरि विरुझाईजी ॥ १ ॥
लै पौढाये सेज श्यामको हित करि यशुमति माईजी ॥
अति बिरुझाने आज हरी यह कहि कहिके पछिताईजी ॥
मधुरे सुर गावत कछु यशुदा करसों ठोक सुवाईजी ॥
चटपटाय हरि चौक परे तब उठ बैठे अतुराईजी ॥ २ ॥

अथ पुरातन कथा लीला ॥

वार्ता—यशोदा जीने अपने लाला सों कहोकि तुम पौढौ मैं एक सुन्दर कहानी कहूंगी तब श्रीकृष्ण सोये अरु हुंकारी देने लगे यशोदाजी कहने लगी ॥

दोहा—नगर एक रमणीकहै, नाम अवध त्यहि जान ॥
बडे बडे मंदिर महल, सुन्दर सुखद सुहान ॥
चौबोला—सुन्दर सुखद सुहान बहुत गली पुरके माहिं सुहानीजी
विविध भांतिके अगम अटारी रहत सुगंधि सिचानीजी ॥
भांति भांति बहु हाट बजारू अति सुन्दर मन मानीजी ॥
तहां नृपति दशरथ रजधानी तीन नारि पटरानीजी ॥ १ ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा तिन जाये सुत चारीजी ॥
राम लषण भरत रिपुहंता बल गुण रूप अपारीजी ॥
तिनमें राम एकव्रतधारी हैं जनके हितकारीजी ॥
विश्वामित्र एक ऋषिराई दनुज सतावै भारीजी ॥ २ ॥

दोहा–तिन नृप सों द्वैसुत लिये, अपनी रक्षा लाय ॥
राम लषण ऋषि ले गये, दनुजहते तिन जाय ॥
चौबोला–दनुजहते तिन जाय ऋषीने दैविद्या सुख पायेजी ॥
तहां जनक इक भूप स्वयंबर धनुषयज्ञ ठहरायेजी ॥
कन्या तासु अनूप जुरे तहां भूपति अमित सुहायेजी ॥
ऋषि ले गये कुँवर तहां दोऊ जनकराय मन भायेजी ॥ १ ॥
धनुष तोरि भूपन मुख मारे कन्या राम बिवाईजी ॥
चारहु कुँवर व्याह तहां आये बाजी अवध बधाईजी ॥
रामहिंदेन लगे नृप राजू सब अभिषेक सजाईजी ॥
ताहि समय कैकयी रानी चेरी मति बौराईजी ॥
दोहा–वचन मांगि नृप सों लियो, दीने बनहिं पठाय ॥
राम वचन पितुके सुने, नारि सहित बन जाय ॥
चौबोला–नारिसहितबनजायचलतसँगलक्ष्मणभ्राता आयोजी॥
उनके जात पिता तनु त्याज्यो भरत दरश मन लायोजी ॥
चित्रकूट गये भरत मिलन तब दैपद अवध पठायोजी ॥
युवती हेत कपट मृगकारन बनहिं राम उठ धायोजी ॥ १ ॥
रावण हरण कियो तब नारी सुनताहि नींद बिसारीजी ॥
चौंकिकह्यो लक्ष्मण धनु देहू देखि रही महतारीजी ॥
जननी मन संदेह भयो है चौंकत किम बनवारीजी ॥
कहूंदीठ खेलत लागीधौं सुपने डरयो मुरारीजी ॥ २ ॥
दोहा–बहुविधिदेव मनायपढि,मंत्रन दोषनिवारि ॥
पीवत पानी वारि पुनि, राई नोन उतारि ॥
चौबोला–राईनोन उतारि कहतिहारि करीचन्द हितआरीजी ॥
झिझकि उठ्यो है धौं ताहीते रह्यो सुरत उरधारीजी ॥
कहि नहिं सकत वेदहू महिमा बड़भागिन नँदनारीजी ॥

बिसरावति त्रयतापदुःख सब हरिको वदन निहारीजी ॥ १ ॥
प्रात नंद उठि हरि पै आये छबि देखन अतुरायेजी ॥
निशिके द्वंदनैन अनि आरत हरुवै पट उघरायेजी ॥
स्वच्छसेजते बदन प्रकाश्यो नैननद्वंद मिटायेजी ॥
धाये ब्रजजन चतुर चकोरा रहेएक टकलायेजी ॥ २ ॥

अथ कर्ण छेदनलीला।

दोहा–फूली यशुमति मन अति, कहति उठहु गोपाल ॥
जो भावै सोलेहु तुम, माखनरोटी लाल ॥
चौबोला–माखनरोटी लाल तुरत मेवा मधु मिश्री आनीजी ॥
कछु खवाय जननी तब हरिको धोयो मुखलै पानीजी ॥
देखि बदन छबि महर नंदसों कहति यशोमतिरानीजी ॥
कनछेदन अब हरिको कीजै कुंडल छबि मनजानीजी ॥ १॥
बोलविप्र शुभदिवस गिनायो जाति कुटुम बुलवायोजी ॥
कुल व्यवहार कियो सब साजा बाजो विविध बजायोजी ॥
बजी बधाई बहु विधि आंगन नारिन मंगलगायोजी ॥
सुर हरषित बरषित अति हित करि फूलन गोकुल छायोजी॥२॥
दोहा–करि मुंडन तब श्यामको, श्रवण वेद विधिलाय ॥
धरी सुपारी पानपर, गुड़ भेली मँगवाय ॥
चौबोला–गुड़भेलीमँगवायहँसतमनशिव विधिसुर समुदाईजी ॥
अतिही कोमल श्रवणन बेधन मात न सकत लखाईजी ॥
भरि सींक रोचन देत श्रवणन निकट करि चतुराईजी ॥
द्वैदुर मँगाये कनकके कहि छेदहु आतुर आईजी ॥ १ ॥
देखत रोवत जननीलीने हँसती गोपकुमारीजी ॥
हँसत नंद सब युवती गावें लिये सदन महतारीजी ॥
कहति सुर वनिता परस्पर धनि धनि ब्रजकी ग्वारीजी ॥

नहीं इनकी किंकरी सम हम सकल सुर नारीजी ॥ २ ॥
दोहा—करति निछावर ब्रजवधू, धन मणि भूषण चीर ॥
सकल अशीशत नंदसुत, जहँ तहँ याचक भीर ॥
चौबोला—जहँ तहँ याचकभीरनंदसबब्रजबनितन पहिरावैजी ॥
आनँद उर न समाय उमँगि जनु बारि चहूंदिश जावैजी ॥
मंगल मूरति हरिसुत जाके नित नव मंगल भावैजी ॥
सोई सुख उपजात हरी जिहिं मात पिता सुख पावैजी॥ १॥
जाको भेद वेद नहिं पावै सो हरि कान छिदावैजी ॥
निज भक्तन हित नर तनु धारी बालचरित उपजावैजी ॥
नंद भवन भूषण मन भावै हरि अपने रंग गावैजी ॥
तनक तनक चरणन सों नाचे रीझ विविध सुख पावैजी ॥२॥
दोहा—मंदमंद नूपुर छबि, बाजत परम सुहाय ॥
कबहुँक भुजा उठायके, गायन लेत बुलाय ॥
चौबोला—गायन लेत बुलाय कबहुँ हरि लै माखन मुखखाईजी॥
कबहुँ खंब प्रतिबिंब खवावैं सो छबि बरणि न जाईजी ॥
तासों कहत लेत क्यों नाईं डार देत महिमाईजी ॥
उर आनंद करति अति भारी देखति यशुमति माईजी ॥१॥
हरषित जननी मुख चुंमनकर लीने गोद उठाईजी ॥
परमानंद मगन महतारी सो सुख कहत न आईजी ॥
कौतुकनिधि भगवान करत यह चरित सकल सुखदाईजी ॥
सुन्दरश्याम सुजान हरीपर विहारन बलि बलि जाईजी ॥२॥

अथ माटीखान लीला ॥

दोहा—खेलत हैं हरि द्वारपर, संग गोपके बाल ॥
अति बालक भोरे सकल, प्रीति करत नँदलाल ॥

चौबोला–प्रीति करत नंदलाल एक सम सकलबैस अतिबारीजी
करत बाललीला सुखदाई देत परस्पर गारीजी ॥
गावत हँसत देत किलकारी देखि सुखी महतारीजी ॥
निरखि रूप सब ब्रज जन मोहे कोटिं काम बलिहारीजी ॥ १॥
तन पुलकित अति गदगद बानी निरखि महरि मन माईजी ॥
तबहिं श्याम घनमाटी खाई मात सांटि लै धाईजी ॥
उगलहुवेगि बदनते माटी नाहिं तो सांटि लगाईजी ॥
पकरी भुजा श्यामकी जाई मानत नाहिं कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–झुठवत हौ नितग्वाल सब, अब कहा कहिये बात ॥
तब मोहन लँगराइ करि, मैं माटी नहिं खात ॥

चौबोला–मैं माटी नहिं खात झूठही मोको लोग लगाईजी॥
कहा कहत मैया तू मोसों मैं माटी नहिं खाईजी ॥
झूठ कहत तोसों सब आई माटि न मोहिं सुहाईजी ॥
नहिं मानत जो मात देखि तोहिं दिखराऊं मुँहु बाईजी ॥१॥
नयन मूंदि माता ढिग ठाढे दीनो मुखहि उघारीजी ॥
तनकी सुरतिरही नहिं तनकौ देखि चरित नँदनारीजी ॥
त्रिभुवन सब मुखमें दरशायो नभ शशि रवि तिहिं ठारीजी ॥
सागर सरिता गिरि चतुरानन सुर सुरेश त्रिपुरारीजी ॥

दोहा–सकल लोक यम काल सब, महि मंडल अगजाल ॥
देखि चरित यशुमति रही, डारि सांटि तिहिकाल ॥

चौबोला–डारिसांटितिहिकालमूंद मुख दीने नयन उघारीजी॥
मैया मैं माटी नहिं खाई ऐसे कहत मुरारीजी ॥
यशुदा चरित भई कहि नँद सों प्रभुके चरित अपारीजी ॥
हरिकी कथा नजात बखानी माटी मिस सुखकारीजी ॥ १ ॥
स्वर्ग पाताल धरणि बन बागा तीन लोक दिखराईजी ॥

सुर नर असुर विपुल खग नाना अपर सृष्टिता माईजी ॥
देख्यो सकल वदनके माहीं मोको परत लखाईजी ॥
जो कछु कही गर्ग ऋषिवाणी सो सांची ह्वै आईजी ॥ २ ॥
दोहा–नंद कहत सुन बावरी, हरि अतिकोमलगात ॥
लै सांटी धावत वृथा, पुनिपाछे पछितात ॥
चौबोला–पुनिपाछे पछितातको जानैं अचरज तेरी बाताजी ॥
रामश्याम खेलत हँसत यह कुशलरहो दोउभ्राताजी ॥
मैं तेरी बलिजात कन्हाई कहति श्याम सों माताजी ॥
मैं अजान रिस बीचनजानी वृथा क्रोधकरि ताताजी ॥ १ ॥
जरहुहाथ जिन सांटि उठाई बहुरि आंख दिखराईजी ॥
मधु मेवा पकवान छांडिकै तुम माटी किमखाईजी ॥
कहति नंदसों यशुदारानी दुहो लालकी गाईजी ॥
कजरीको पयपियो गुपाला जिमि चोटी बढिजाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सब लरकन में श्री अधिक,वेग वैस बलआय ॥
मात वचन सुनिकैं हरषि,ज्यों त्यों करि पयप्याय ॥
चौबोला–ज्योंत्योंकरि पयप्याय खिनकपीवै खिन इतउतधाईजी॥
देखि देखि मुख हँसत यशोदा मनमनहरषबढाईजी ॥
मैयाकब बाढेगी चोटी अबलों बढि नाहिं पाईजी ॥
तूजो कहत ही बलिलों ह्वै है गुहत गोडलौं जाईजी ॥ १ ॥
केतीबेर भई पयपिवत चोटी बाढत नाईजी ॥
कहि कहि झूठी बात निताहिनित दूधपियावत माईजी ॥
सुनि सुनि भोरी बात श्यामकी यशुमति मन सुख पाईजी ॥
सुन्दर श्याम सुजान हरी पर बिहारन बलि बलि जाईजी ॥२॥

अथ शालिग्राम लीला ॥

दोहा–भोर महर यमुना गये, दरशन करि सुखपाय ॥

करि स्नान तब नंदजी, पूजा हित जलल्याय ॥
चौबोला–पूजाहित जलल्याय धोयपद गये मंदिर नंदराईजी ॥
करी दंडवत अतिहि प्रेम सों मन मन प्रीति बढाईजी ॥
स्थललीप पात्र सब धोये पूजा सोंज सजाईजी ॥
कुँवर कान्ह खेलतते आये देखि रहे चितलाईजी ॥ १ ॥
बिधिवत देव न्हवाय नंद तब चंदन पुहुप चढायेजी ॥
भूषण बसन अलंकृत कीन्हे धूपदीप करि ध्यायेजी ॥
पट अंतर दे भोग लगायो चरणन शीश नवायेजी ॥
तबहीं श्याम बिहँसि उठ बोले जो तुम भोग लगायेजी ॥
दोहा–जो तुम भोग लगाइयो, सो तो देव न खाय ॥
सुनत बचन हरि वदन तन, चितै रहे नँदराय ॥
चौबोला–चितै रहे नँदराय कहत नंद योंनहिं कहिये बाताजी॥
देवनको कर जोर मनावो कुशल रहैं जिंहिं गाताजी ॥
हँसतश्याम सुखदाइ हरीको नंद स्वरूप न पाताजी ॥
रह्यो तिनहिं सुतमान्य हरी सो अखिल भवनके दाताजी ॥१॥
देखत जननि तहां दुर ठाढ़ी प्रेम मगनमन माईजी ॥
बैठे नंद समाधि चढाई लीला रची कन्हाईजी ॥
शालिग्राम मेल मुख लीन्हों बैठे मौन लगाईजी ॥
ध्यान विसर्ज्जन करि नंद देख्यो आगे ठाकुर नाईंजी ॥ २ ॥
दोहा–नंदराय खोजत चकित, इष्ट देव नहिं पाय ॥
किन धौं लियो चुरायकै, अति अचरज रह्यो आय ॥
चौबोला-अति अचरज रह्यो आय बिहँसित जाने हरिमुख माईजी
देखत महरि महर मुसकाने दंपति मन हरषाईजी ॥
सुनहु तात जननी बलि जाई उगलहु देव कन्हाईजी ॥
मुखते काढि दियो ब्रजनाथा लियो देव नँदराईजी ॥ १ ॥

देखि देखि सुर सिद्ध भुलाने मात पिता हरषावैजी ॥
बिहरत जहां ब्रह्म अबिनाशी धनि ब्रज कहिय न जावैजी ॥
परते पर जो निर्गुण रूपा अलख लखन नहिं आवैजी ॥
सो ब्रज भक्तन प्रेम बिवस हरि लीला अमित उपावैजी ॥ २॥

अथ न्हवावन लीला ॥

दोहा–निशि दिन जात न जानहीं, प्रेम मगन पितु मात ॥
सुनत वचन देखत दरश, क्योंहूं मन न अघात ॥
चौबोला–क्योंहूं मन न अघात न्हवावन कह्यो यशोमति माईजी
लोट गये हरि मानत नाहीं लै उबटन गहिवाईजी ॥
मैं बलि उठहु न्हवाऊं प्यारे न्हावहु लाल कन्हाईजी ॥
फुसलावत सुत श्याम कन्हाई उबटन धरत चुराईजी ॥ १ ॥
मैं बलि ऐसो हठ नहिं कीजे जो चाहै सो लीजैजी ॥
ऐसो को जो तोहिं खिजावै रोवत झंगुली भीजैजी ॥
अतिरिसते मैं बलि तनु छीजे कोमल अंग पसीजैजी ॥
बरजत ही बरजत बिरुझाने करत क्रोध मनखीजैजी ॥ २ ॥
दोहा–धरत धरत धरणी परत, गहि जननीके चीर ॥
तोरत भूषण अंगके, फोरत भाजनसीर ॥
चौबोला–फोरत भाजनसीर तप्तजल धऱ्यो यशोमति माईजी॥
मानत नाहिं ताहि लखित्रासे महरि बांह धरल्याईजी ॥
गिरत परत गये भाजि मातसों करि दुचिती सुखदाईजी ॥
नेक निकटलागत नहिं मोहन मानत बातेंनाईजी ॥ १ ॥
श्याम भेद कहि कहि समुझाये तब पुचकारे माताजी ॥
नहिं आवहुतो जानिहो मोहन मैं बलि आवहु ताताजी ॥
तुम मेरी रिसको हरि जानो मानहुँ मेरी बाताजी ॥

जो नहिं आवहु मदन गुपाला बांधों तुम्हरो गाताजी ॥ २ ॥
दोहा–उतते आये नंदजी, किनमेरोलाल खिजाय ॥
लै पहुँचाये मातपै, लीने कंठलगाय ॥
चौबोला–लीने कंठ लगाय कहत नंद कत हरिपैरिसहाईजी ॥
लिये लगाय हिये नँदरानी क्योंहुं यत्नकरिपाईजी ॥
उबटन हरिके अंगलगायो पुनितातो जलल्याईजी ॥
दिये न्हवाय वदन शशिधोयो अंग अंगोछत माईजी ॥ १ ॥
अंजन दोऊदृगन भरिदीनों भोंपर चाप बनाईजी ॥
सब अंगके भूषण मँगवाये लालनको पहराईजी ॥
ऐसीरिश नहिं कीजै मोहन अब कछु खाहु कन्हाईजी ॥
तब तुतराय कहो कहाहैरी मोहिं भावै सोइ खाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कहति मात या वचनपर, मैया बलि बलि जाय ॥
जोइ जोइ भावै लालको, सोइ सोइ ल्यावत माय ॥
चौबोला–सोइ सोइ ल्यावत मात किये मैं बहु पकवान मिठाईजी
सो सब कहूं बखान जो भावै सो तुम कहो कन्हाईजी ॥
सद्माखन अरु दही जमायो तुम हित अति औटाईजी ॥
खोवा औट्यो मधुर मलाई मिश्री पीस मिलाईजी ॥ १ ॥
अरप्योसार अति सरस सँवारी सोंठ मिरच रुचि कारीजी ॥
खीर बरा करिकै दधि बोरे चन्द अमीते भारीजी ॥
खुरमा और जलेबी बौरी जो रुचि होय तुम्हारीजी ॥
अरु लाडू बहु भांति सँवारे कोमल मधुर सुधारीजी ॥ २ ॥
दोहा–अरु गूंझा पूरनपुरी, अति सवाद ताहोय ॥
बाबर घेवर घृत पके, मिश्री मिश्रितसोय ॥
चौबोला–मिश्री मिश्रित सोय सुन्दर मालपुवा करि ल्याईजी ॥
तत्त तुरत रोहिणि कर आने तुम्हरे हेतु बनाईजी ॥

सरस सँवारी दाल मसूरी सीरा पुरी बनाईजी ॥
पूरी सुनिकै हरि हिय हरषे तब जेवन रुचि आईजी ॥ १ ॥
सुनत तुरत तब मात यशोदा हार्षि थार लैआईजी ॥
बलदाऊको टेर बुलायो तबै महर नँदराईजी ॥
खटरसके पकवान जे बरने प्रथम यशोदामाईजी ॥
परसिधरे सब थार हर्षि तब जेवत दोऊ भाईजी ॥ २ ॥

दोहा—जेवत एकहि थार दोउ, लखि जननी सुखपाय ॥
शीतल जल यशुमति हारि, भरिझारी लै आय ॥

चौबोला—भरिझारी लै आय दोऊ तब जेवत अति हरषाईजी॥
तब जननी हँसि चुरू भराई दीनो मुख पखराईजी ॥
रचिरचि उजरे पान खवाये अधर अरुणता आईजी ॥
उबरी सो सब झूठन हरिकी दास बिहारी पाईजी ॥ १ ॥
सखा वृंद प्रिय द्वार पुकारे खेलन आहु गुपालाजी ॥
त्रसित दरश रस चातकदासा बरसहु दरश दयालाजी ॥
विनय वचन सुनि हर्षि कृपाला चले मनोहर चालाजी ॥
कमल नयन उरबाहु विसाला ललित चरणकर लालाजी ॥२॥

दोहा—चन्द्र बदन राजत सुभग, सुन्दर छबि घनश्याम ॥
अंग अंग भूषण ललित, शोभित आति अभिराम ॥

चौ०-सोभितअतिअभिरामनिरखिछबिथकितसकलसुरवृन्दाजी
निहचल चखत चकोर भये जनु तकत शरदको चंदाजी ॥
उमँग मिले सबको हरि जाई ग्वालन अति आनंदाजी ॥
क्रीडत बालक वृंद मिले जिमि उडगण शशि सुख कंदाजी॥१
खेलत दूर गये कहुँ कान्हा सखन संग चले जावैजी ॥
बहुत अबेर भई है श्यामहिं अब कब धौं घर आवैजी ॥
नंदहि तात मात मोहिं कानन योंहीं सुनत सुहावैजी ॥

मन अवसेर करत महतारी पलक ओट नहिं चावैजी ॥ २ ॥
दोहा—देखति द्वार गलीनमें, सुतमुख दरशनकाज ॥
खेलतते आये हरि, दौरि मिले ब्रजराज ॥
चौबोला—दौरि मिले ब्रजराज कहतिकत खेलन दूर नजाईजी ॥
मैं बलि तुम अबहीं अति नान्हा मानों बात कन्हाईजी ॥
आज एक वन हाऊ आयो सो वह मैं सुनि पाईजी ॥
इकलरिका भजि आयो तिन सब कह्यो मोहिं समुझाईजी ॥१॥
वह तौ पकरिलेतहै तिनको लरिका करि जो पावैजी ॥
चलहु भाजि चलिये हरि धामहिं बलिको मात बुलावैजी ॥
कनियां करि लै आई यशुदा दोउभैया छवि छावैजी ॥
बडभागिन यशुदा नंदरानी बहु बिधि लाडलडावैजी ॥ २ ॥
दोहा—रूप रेख जाके नहीं, विधि हर अंत नपाय ॥
हाऊ सों डरपायतिहिं, यशुमति राखति स्वाय ॥
चौबोला—यशुमतिराखतिस्वायभाववशरहतहरी भगवानाजी ॥
जैसे भजै ताहि हरि तैसे भक्तनको सुख खानाजी ॥
ब्रज बीथिन खेलत मनमोहन सखा संग ले कान्हाजी ॥
और गोप बालक बहु बारे एक बैस सब नान्हाजी ॥ १ ॥
बाल विनोद मोद मनदीने नाना रंग उपावैजी ॥
तारी मारि हाथ परभाजे होड लगाकरि धावैजी ॥
बरजत बलि हरि तूमति दौरे गिरहि चोट लग जावैजी ॥
तब हरि कह्यो दौरिमैं जानूं लखि बलि तन मुसकावैजी ॥ २ ॥
दोहा—श्रीदामा मम जोट है, तासों होड लगाय ॥
तब बोल्यो श्री दामयों, भाजहुमारि कन्हाय ॥
चौबोला—भाजहु मारि कन्हाय कही तब भाजे हरिदेतारीजी ॥
धन्यो धाय तबहीं श्रीदामा पकरि लिये बनवारीजी ॥

तब हरि कह्यो बच्यो नाहिं तोई अब तारी फिरमारीजी ॥
ऐसे कहि हरिताहि रिसाने देत दिवावतगारीजी ॥ १ ॥
बोल उठे बलराम कह्यो तब इनके बाप न माईजी ॥
हार जीत जानत नहिं काऊ लरकन पाप लगाईजी ॥
ये हैं तनके श्याम झूठही झगरत खेलमझाईजी ॥
रूठि चले हरि धामदेखि उठ पूछति यशुदाआईजी ॥ २ ॥

दोहा—क्यों उदास घरआइयो, किन मेरो लालखिजाय ॥
मैया दाऊ दुख दियो, कहत मोल तुम आय ॥

चौबोला—कहत मोल तुम आय करहु कहा अबयारिशके माईजी
मैं नहिं खेलनजाउँ दुवारे लरिका मोहिं खिजाईजी ॥
पुनि पुनि कहत कौन तेरी मैया कौन तात को भाईजी ॥
तुम कारे किम यशुदा गोरी गोरेही नंदराईजी ॥ १ ॥
मोसों कहत देवकीजायो लै वसुदेवहि आयोजी ॥
मोल कछुक वसुदेवहि दीनों तापलटे रखवायोजी ॥
ऐसे कहि कहि मोहिं खिजायो लरकन सबन सिखायोजी ॥
मोहिंको दाऊमारनधावै अरु मोहिं बहुत डरायोजी ॥ २ ॥

दोहा—सुनहु श्याम बलरामजी, झूठहि तोहिं खिजाय ॥
गोधनकी सौंहै मोहि, तुम सुत मैं तेरी माय ॥

चौबोला—तुम सुत मैं तेरी माय पाछे नंद सुनत बात हरषाईजी॥
लीने गोद उठाय हर्षि मन सुन्दर हरि सुखदाईजी ॥
सुनि मन हर्ष श्याम तब कीनो बलहि धरचो नँदराईजी ॥
करत चरित जनके सुखदायक लीला कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
भोजनके समये नँदराई सुरत करे दोउ भाईजी ॥
कह्यो बुलाय लेहु दोउ भैया मोसँग जेवैं आईजी ॥
खेलत बहुत बेरभई आजू उन बिन मैं नाहिं खाईजी ॥

यशुमति सुनत चली अतुराई खोजत ब्रजमें जाईजी ॥ २ ॥

अथ भोजनकरन लीला।

दोहा–कहति बोल लेवहु कोऊ, खेलत धौं कित जाय ॥
जेवन सिद्ध सिरातहै,उन बिन नंद न खाय ॥

चौबोला–उन बिन नंद नखाय यशोमति खोजत टेर लगाईजी ॥
आये खेलतते दोउ भाई हरिजनके सुखदाईजी ॥
चलहु तात भोजन अब कीजै मैं तुम्हरी बलिजाईजी ॥
जेवनको बैठे नंदराई तुम बिन सोउ न खाईजी ॥ १ ॥
परस्यो थार धरयो मग हेरत मैं तुम फिरत बुलाईजी ॥
दौरि चलो आगे गोपाला कहति यशोमति माईजी ॥
सोराजा जो आगे आई दौरहु दोऊ भाईजी ॥
तौ हँसिहैं तोहिं ग्वाल कन्हाई जो आगे बल जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–आये दौरहि श्याम तब, तुरतहि पांय पखार ॥
बैठे जेवन नंदके, सँग दोऊ सुकमार ॥

चौबोला–संग दोऊ सुकुमार कछुक खावत कछुकर लपटाईजी
सुभग सांवरे गात बाललीला कछु मनमें भाईजी ॥
बड़ो कौर मेलत मुख माईं मिरच दशनतर आईजी ॥
तीक्षण लगी नैन भरि आये रोवत बाहिर जाईजी ॥ १ ॥
रोहिणि फूंक देत मुख माईं उरसों लिये लगाईजी ॥
मधुर ग्रास लै तात निहोरे लै बैठे फुसलाईजी ॥
जेवत कान्ह नंदकी कनियां छबि निरखत दोउ माईजी ॥
बेसनके व्यंजन विधिनाना बहु पकवान मिठाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मूंगहरे सुन्दर अति, हरदी हींग मिलाय ॥
दालचनाकी पीत रंग, उज्ज्वल भात पसाय ॥

चौबोला—उज्ज्वल भात पसाय रोटी पतरी कनक मिलाईजी ॥
आम आदि बहु भांति अथाने जेवत दोऊ भाईजी ॥
मिश्री दधि ओदन मिश्रितकर लेत श्याम करनाईजी ॥
आपुन खात नंद मुख नावैं सो छबि बरनि न जाईजी ॥ १ ॥
भोजन कर अचवन तब कीनो लै झारी भरि आनीजी ॥
अपने करते यशुदा हरिको धोयो मुख ले पानीजी ॥
भाग्य यशोमति महरनंदके को कहि सकत बखानीजी ॥
बाल रूप जिनके घर माहीं रह्यो ब्रह्म रुचि मानीजी ॥ २ ॥

अथ पयछुडावन लीला ॥

दोहा—बैठे कनियां मातकी, पियत दूध हँसि कान्ह ॥
बारबार यशुमति कहत, छुडवत स्तनपान ॥

चौबोला—छुडवत स्तनपान श्याम तुम सुनहू परम दयालाजी॥
मेरो कह्यो लाल अब मानो दूधन पियहु गोपालाजी ॥
दूध पियत देखत लरिका सब हँसत सकल यह ग्वालाजी ॥
जैहैं दांत बिगर सब तेरे परहिं पीत रंग लालाजी ॥ १ ॥
आये सखा बुलावन तबहीं खेलहु जाहु कन्हाईजी ॥
यह सुनि हर्षि उठे बनवारी दे चौगान बताईजी ॥
मथनीके पाछे कहि दीनों हर्षि श्याम लियो जाईजी ॥
लै चौगान बटा तब आगे मिले सखन हरषाईजी ॥ २ ॥

अथ चौगान खेलन लीला ॥

दोहा—कहत सखनसों हँसि हरी, खेलोगे किहिं ठांय ॥
खेलन बने निकासपर, हर्षि चले सब जाय ॥

चौबोला-हर्षि चले सब जाय कान्ह हलधरकी अति शुभजोरीजी॥
श्रीदामा अरु सुबल आदि सब मिले सखा इक ठौरीजी ॥

और सखनके वृंद बांट लिये जोट बना दोउ ओरीजी ॥
अति आनंद नंदनंदन तब दियो बटाके टोरीजी ॥ १ ॥
बटा मारि चौगाननिफेरे इत उतते सब धावैंजी ॥
आप आपनी जीत विचारें मारि बटा टरकावैंजी ॥
जम्यों खेल अति मगन कन्हाई सुरगण मनहिं लुभावैजी ॥
जीतत सखा श्याम जब जाने तब हारि रुगटी खावैजी ॥ २ ॥

दोहा—कहत सखा सब सुनो हरि, रुगटिन कौन खिलाय ॥
श्रीदामासों हारि तुम, झूंठहि सौगँद खाय ॥

चौबोला—झूंठहि सौगंद खाय खेलमें को काऊको सैयांजी ॥
अब हम सब तुम संग न खेलैं कहा भयो नंद सैयांजी ॥
ताते तुम गर्वित मनमाहीं बसत तुम्हारी छैयांजी ॥
अति अधिकार जनावत ताते अधिक तुम्हारे गैयांजी ॥ १ ॥
भये सखा सब रिसकर न्यारे संग न खेलें तोरीजी ॥
दियो दान तब पीठ चढाई चली नहीं कछु जोरीजी ॥
जाके गुण गण अगम अतीता निगम न पावत ओरीजी ॥
सोप्रभु खेलत ग्वालनके सँग बँधे प्रेमकी डोरीजी ॥ २ ॥

दोहा—जननी टेरत श्यामको, खेलत भई अबेर ॥
सांझ समय नहिं खेलिये, आवहु धाम सबेर ॥

चौबोला—आवहु धाम सबेर सांझ भइ आवहु सदन कन्हाईजी ॥
बहुरि खेलियो होत सकारे आप बांह गहिल्याईजी ॥
सुभग श्याम तन रज लपटानी झारति यशुदा माईजी ॥
बोललिये यशुमत बलरामहि दोउ भइयन लैआईजी ॥ १ ॥
धूरि झारि तातो जल ल्याई दिये दोउ भ्रात न्हवाईजी ॥
सरस वसन तन पोंछि सँवारे घर भीतर लैआईजी ॥
करहु बियारू कछु दोउ भाई बहुरि तुम्हैं पौढाईजी ॥

सीरा पूरी सरस सँवारी बहु पकवान मिठाईजी ॥ २ ॥
दोहा–परसि धरे सब थार मे, दोउ भैया मिलखाय ॥
मिश्रीमिश्रित दूध कर, ल्यावति रोहिणि माय ॥
चौबोला–ल्यावति रोहिणिमाय प्रीतिकरिदोऊ भ्रातजिमावैजी॥
देखि देखि दोउ मात सिहावत लखि छबि मनसुखपावैजी ॥
खात खात मोहन अलसाने बारबार जमुहावैजी ॥
आलससों करकौर उठावत नैननींद झुकिआवैजी ॥ १ ॥
उठहु लाल जननी तब बोली धोयो मुख हित माईजी ॥
लेपौढाये सेज दोऊ सुत राम श्याम दोउ भाईजी ॥
सोये दोउ सुख सेज भवनमें बल अरु कुँवर कन्हाईजी ॥
सोचति गुण हरिके मनमाहीं यशुमति अति हरषाईजी ॥ २ ॥
दोहा–माखन मोहनको प्रिय, जागत जबसोइरीत ॥
मैं यह जानति श्यामको, अतिही प्रियनवनीत ॥
चौबोला–अतिही प्रियनवनीत मथनिले हरि हितदधिहमथावैजी
अतिहित कारि माखन सदकाढत जबलगि उठनहिं पावैजी ॥
भोरभयो जागहु नँदनंदन सँगके सखा बुलावैजी ॥
पक्षी तरुताजि चहुँ दिश धावैं सुरभी बच्छपियावैजी ॥ १ ॥
चन्द मलिन उडुगण द्युतिनाशी अब रविकिरण निकारीजी ॥
गूंजत मधुपलतालगि भूले कुमुदिन समखिले बारीजी ॥
दरशन हित सब ब्रजजनआये मुदित सकल नरनारीजी ॥
सुनि जननीके वचन कृपाला खोले दृग बनवारीजी ॥ २ ॥

अथ माखन चोरी लीला ॥

दोहा–हँसत उठे संतन सुखद, मुख छबि देखति माइ ॥
हरि कछु करहु कलेउ अब, माखन रोटी ल्याइ ॥

चौबोला—माखन रोटी ल्याइ तनक देरी मेरे करमाईजी ॥
कछु मेवाधर साथ सुनतही तुरत मातलै आईजी ॥
श्याम राम दोउ करत कलेऊ ब्रज जीवन सुखदाईजी ॥
चार पदारथ हाथ हरीसो अखिल लोकके राईजी ॥ १ ॥
मैयारी मोहिं माखन भावै और न कछु रुचिं आवैजी ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई सो मोको नहिं भावैजी ॥
ब्रज युवती इक पाछे ठाढी हरिके वचन सुहावैजी ॥
मन मन कहि कबहूं मेरे घर माखन खावत पावैजी ॥ ३ ॥

दोहा—जा बैठे मथनी निकट, करसों काढि निखाय ॥
मैं देखौं वर दूरि छिप, कैसे मोघर जाय ॥

चौबोला—कैसे मो घर जाय हरी अंतर्यामी मन आईजी ॥
ग्वालनि मनकी प्रीति पिछानी गये श्याम सुखदाईजी ॥
ठाढे भये जाय द्वारे पर इत उत कोऊ नाईजी ॥
तब बैठे ताके घर माई सो ग्वालिन लखि पाईजी ॥ १ ॥
रही दबकि दुर दीठ लगाई बैठे मथनी पाईजी ॥
देखी माखन भरी कमोरी खान लगे हरषाईजी ॥
चितै रहे मणि खंभ हरी तब निज अपनी परछाईजी ॥
जानिं दूसरो ग्वाल ताहिसों सकुचे हरि मन माईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहतलेहु आधो तुमहुँ, तासों करत सयान ॥
भलो बन्यो है संग अब, हम तुम येक समान ॥

चौबोला—हम तुम एक समान आज मैं प्रथमहिं चोरीठानीजी॥
तुमको देखि बहुत सुख पायो तुम हम एक समानीजी ॥
अब तुम मेरे सँगनित आवो काहुअनाहिजनानीजी ॥
सुनि २ हरिके मुखकी वानी उमँगी ग्वालि सयानीजी ॥ १ ॥
श्याम चौंकि मुख तासु निहारी भाजचले ब्रजखोरीजी ॥

अतिआनंद ग्वालि मनमाईं पूँछति अरु इक गोरीजी ॥
कहातोहिं अति आनँद हैरी गई वस्तु मिलि तोरीजी ॥
गदगद कंठ पुलकितनतेरो देख्यो सोइ कहोरीजी ॥ २ ॥
दोहा–तनन्यारो मन एक है, भेद हमें तुमेंनाहिं ॥
सुन सखि मैं सुख देखियो, सोतोहिंदेहुँ सुनाहिं ॥
चौबोला–सो तोहिदेहुँ सुनाहिं यशोमतिसुत सुन्दरसुखदाईजी।
आयो आज हमारे चोरी सोमैं दुर लखिपाईजी ॥
खंभनिकट मथनीको माखन लियो निकारनि खाईजी ॥
मैं भीतर दुर देखन लागी मोहन छबि मनभाईजी ॥ १ ॥
देखिखंभ प्रतिबिंब हरी तब मन कछु सकुचे श्यामाजी ॥
अर्धभाग तिहिंदेन कह्यो हरि प्रगटकरो जिननामाजी ॥
तब नरह्यो मनधीर हँसी मैं सुनत वचन अभिरामाजी ॥
मनमेरो हरलीनो आली यशुमति सुत सुखधामाजी ॥ २ ॥
दोहा–मोहिं देखि भाजे हरी, सो छबि बरणि नजाय ॥
सुने चरित हरिके सखी, रह्यो प्रेम उर छाय ॥
चौबोला–रह्यो प्रेम उर छाय कहति मनमें देखन नाहिं पाईजी ॥
सुने चरित हरिके अभिरामा सो अभिलाष बढाईजी ॥
हरि अंतर्यामी सब जाने ताके मनकी पाईजी ॥
इहि विधि माखन प्रथम चुरायो करी ग्वालिन मन भाईजी ॥१॥
भक्त वत्सल संतन हितकारी पुनि मनमें यह आईजी ॥
माखन चोर नाम कहवाऊं अब या ब्रजके माईजी ॥
बाल रूप मोहिं यशुमति जाने ग्वालिन प्रेम सुहाईजी ॥
मित्र भाव करि सखा बखाने प्रीति रीत मन लाईजी ॥ २ ॥
दोहा–मन भाई सबकी करों, इन हित गोकुल आय ॥
भक्त कृपा अंबुज अली, यह विचार ठहराय ॥

चौबोला-यह विचार ठहराय सखा सब लीने निकट बुलाईजी ॥
तिनसों हँसि हँसि कहत कन्हाई बात कहों तुम पाईजी ॥
माखन खैये चोरि सबै मिल सब ब्रज घर घर माईजी ॥
कीजै बाल विहार कहत हरि मेरे मन यह आईजी ॥ १ ॥
सुनि हरषे सब ग्वाल परस्पर देत सखा सब तारीजी ॥
तुम बिन यह विधि कौन विचारै भली कही वनवारीजी ॥
चले सखालै माखन चोरी भोरे बैस सब बारीजी ॥
देख्यो झांकि झरोखाओरी मथित एक दधि ग्वारीजी ॥ २ ॥

दोहा-मथनीमें जान्यो मठा, माखन सों लपटात ॥
ग्वालिन गई कमोरि हित, तब पाई हरिघात ॥

चौबोला-तब पाई हरि घात सखन लै गये ताके घर माईजी ॥
दधि माखन सबहिन मिल खायो रह्यो नेक नहिं राईजी ॥
छूछू मटकी छांडि सिधाये हँसत द्वार सब जाईजी ॥
आय गई बाला तिन घरते निकसत लखे कन्हाईजी ॥ १ ॥
दधि माखन कर मुख लपटान्यो सो कछु जान न पाईजी ॥
देखि रही हँसि मुखकी सोभा सुन्दर रूप कन्हाईजी ॥
चमकि गये हरि सखन समेता गई ग्वालि घर माईजी ॥
देखी जाय मथनियां रीती चकित भई अधिकाईजी ॥ २ ॥

दोहा-मन हरलीनो साँवरो, मोहन मदन गुपाल ॥
जान लियो तब ग्वालनी, यह सब हरिके ख्याल ॥

चौबोला-यह सब हरिके ख्याल मगन भइ आनँद उर न समावैजी
घर घर प्रगट भई यह बाता सखा संग लै जावैजी ॥
नंदसुवन ब्रजराज हरीसो चोरी माखन खावैजी ॥
धरिहो माखन राखि हरी हित ब्रजातिय ध्यान लगावैजी ॥१॥
कहति परस्पर ग्वालि सयानी मोहन रूप लुभाईजी ॥

माखन खान देह गोपालहि मतिबरजो कोउ माईजी ॥
तुम जानति हरि कछु नहिं जानत वे स्याने अधिकाईजी ॥
कोऊ कहति पकरि जो पाऊं तौ गहि कंठ लगाईजी ॥ २ ॥

दोहा—जो मेरे आवहिं हरी, माखन देहुँ खवाय ॥
एक कहति मैं पकरिकै, छांडूंनाच नचाय ॥

चौबोला-छांडूं नाच नचाय कहति कोउ जो हरिको गहि पाईजी ॥
तौ हरिको करधरिकै तबहीं यशुमति पै लैजाईजी ॥
इक कहि आज हमारे आये देखत गये पराईजी ॥
यहि विधि प्रेम मगन ब्रजबाला निशिदिन ध्यान कन्हाईजी ॥१॥
गये श्याम सूने ग्वालिन घर सखन द्वार बैठायोजी ॥
देख्यो भीतर जाय कन्हाई राख्यो माखन पायोजी ॥
सदमाखन देख्यो हरि तबहीं अति मन हरषबढायोजी ॥
सखा बुलाये दैदै सैनन माखन सब मिल खायोजी ॥ २ ॥

दोहा—कछु संशय मनमें कियो, इत उत चितवतजात ॥
उठि उठि झांकत द्वारतन, बांटतदधि अरुखात ॥

चौबोला—बांटतदधिअरुखात लखतसोग्वालिन ओटछिपाईजी॥
मगन भई हरिके रसमाई आनँद उर न समाईजी ॥
लीन्ही बोलि सखी ढिग औरै ताहि दिखावत जाईजी ॥
उठि अवलोकि ओट ह्वैठाढी सोभा परम सुहाईजी ॥ १ ॥
किहिं विधिहै दधि लेत कन्हाई सखन देत अरु खावैजी ॥
बदन समीप पाणि शुभ राजत माखन अति छबि छावैजी ॥
गिर गिर परत बदनते ऊपर दधिकी बूंद सुहावैजी ॥
मनहुँ प्रलय जल आगम बरसत इन्दु किरणबरसावैजी ॥ २ ॥

दोहा—मुखछबिदेखत श्यामकी, थकित भईब्रजनारि ॥
कहत बनत नहिं काहुते, रहत हृदयमें धारि ॥

चौबोला—रहत हृदय में धारि बाललीला लखि अति सुखपाईजी
भई सिथिल ब्रजबाम निरखि छबि तनकीसुरत भुलाईजी ॥
बरजनको स्फुरत नहिं वाणी भई मगन मनमाईजी ॥
गये ठगोरी लाय कन्हाई रह्यो प्रेमउर छाईजी ॥ १ ॥
विश्वभरन पोखन करनहारि कल्पतरोवर नामाजी ॥
सो प्रभु दधिचोरी कर खावैं प्रेमबिबस घनश्यामाजी ॥
ब्रज में नित उठ करत बिहारा घर घर सुखके धामाजी ॥
ब्रजजन प्राण आधार हरीसो पुरवत जन मन कामाजी ॥ २ ॥

दोहा—श्याम गये इक ग्वालिघर, पकरलिये गोपाल ॥
बहुत अचगरी करत तुम, अब कहां जैहोलाल ॥

चौबोला—अब कहांजैहोलाल दिवस निशिमोकोबहुतखिजाईजी
दधि माखन मेरो सब खायो कीनी बहुत ढिठाईजी ॥
दोउभुज पकरि कह्यो कित जैहो दधिदे छूटनपाईजी ॥
ताके मुखतन चितै कन्हाई कह्यो वचन मुसकाईजी ॥ १ ॥
तेरी सों मैं छुयो नराई सखा गये सबखाईजी ॥
चितवनमें तनमन उरझान्यो रही ग्वालि सुखपाईजी ॥
सुनत मनोहर हरिकी बतियां लीने कंठलगाईजी ॥
बैठोलालखाहु दधि माखत मैं तुम्हरी बलि जाईजी ॥

दोहा—गई ग्वालि दधि लेन तब, गये श्याम ब्रज खोरि ॥
रही ठगीसी ग्वालनी, लीन्हों मन हरि चोरि ॥

चौबोला-लीन्हों मन हरि चोरि श्याम तब और ग्वालिघरआयेजी
देख्यो जाय द्वार नहिं कोऊ भीतर भवन सिधायेजी ॥
माखन काढि निसंक खान लगे मन अति हरष बढायेजी ॥
ग्वालिन आवति जानी घर तन तब उठ ओट छिपायेजी ॥१॥
घरमें आय ग्वालिनी भीतर मथनीके ढिग आईजी ॥

भाजनरीतो देखि चकित भई चितवत इत उत माईजी ॥
अबहिं गई आई इन पाँयन माखन किन लियो खाईजी ॥
भीतर गई तहां हरि पाये पकरे कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–हरि सरमे निज नाम ले, कछुक नैन भरे आय ॥
देखि वदन छबि ग्वालनी, जान दिये सुखपाय ॥
चौबोला–जान दिये सुखपाय भयो आनंद सो उर न समाईजी॥
कहन चली अति परम हुलासा नंद भवनपर आईजी ॥
जो तुम सुनहु यशोमति माई हँसि हो सुनि लरकाईजी ॥
आज गयो चोरी मेरे घर तुम्हरो कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
जब मैं कह्यो भवनमें कोहै तब निज नाम बतायोजी ॥
लगेलेन लोचन भर आंसू तब मैं कंठ लगायोजी ॥
सुनत श्याम तब रोहिणि कनियां सकुचि मंद मुसकायोजी ॥
ग्वालिन हँसि हरिको डरपावत चोर पकर मैं पायोजी ॥ २ ॥
दोहा–करों नोयकी दाँवरी, बांधो अपने धाम ॥
लाय लिये उर रोहिणी, बांध सकै को श्याम ॥
बांध सकै को श्याम चरित सुन यशुमति मन हरषाईजी ॥
ऐसे काज न करहु लालरे सुनहू कुँवर कन्हाईजी ॥
पुनि इक गेहें गये नँदलाला द्वारे ग्वालि लखाईजी ॥
ऐसी बुद्धि उपाय फांदपरे हरि पिछवारे जाईजी ॥ १ ॥
भांडे मूंदत धरत उतारत माखन देख्यो जाईजी ॥
लगे खान मनु आप जमायो अति रुचि हरष बढाईजी ॥
आहट सुनि युवती घरआई देखे कुँवर कन्हाईजी ॥
अँधियारे घर श्याम गये दुरि मटुकी ओट छिपाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सकल जीव उर बसतसो, कीन्हों कछुक प्रकास ॥
ग्वालिन हेराति श्यामको, ढूंढत सकल अवास ॥

चौबो०-ढूंडत सकल अबास कहाति मन देख्यो अबहिं गुपालाजी
कितहि गयो पछितात मनहिंमन जानै हरिके ख्यालाजी ॥
परिगये दीठ ओट मथनीके सुन्दर श्याम दयालाजी ॥
तबहीं ग्वालिन भुज गहि लीनो अब कित जैहौ लालाजी॥१॥
कहो कहा चाहत तुम डोलौ धाम अँधेरे माईजी ॥
बूझे बदन दुरावत काहू सूधे चितवत नाईजी ॥
दधि मथनीमें हाथ तिहारो कहा करिहो चतुराईजी ॥
सखा नहीं कोउ साथ तुम्हारे कहो कैसी बनि आईजी ॥ २ ॥
दोहा-मैं जान्यो घर आपनो, ताते निकसो आय॥
दधि भीतर चेंटी लखी, काढन लाग्योताय ॥
चौबोला-काढन लाग्योताय सुनतमुख ग्वालिनमनमुसकानीजी
तुम हौ रतिनागर मनमोहन नागरता हम जानीजी ॥
उर लगाय मुख चुंबनकीनो विदा किये सुखदानीजी ॥
उरहन मिस यशुमति ढिग आई हरिकें प्रेम लुभानीजी॥ १ ॥
सुनहु महँरि निज सुतकी करनी अतिही ढीठ कन्हाईजी ॥
नित प्रति करत दूध दधि हानी कहां लगिकान्यरखाईजी ॥
मैं अपने मंदिर अँधियारे माखन धरचो दुराईजी ॥
सोऊ हूँढ लियो हरि जाई नेकहु डरपतनाईजी ॥ २ ॥
दोहा--बूझे उत्तर तुरत ही, दीनो मोहिं बताय ॥
चेंटी काढनको कह्यो, मथनीमें करनाय ॥
चौबोला--मथनीमें करनाय बात यह ग्वालिन मुख सुन पाईजी॥
हँसिकै बोध कियो नँदरानी सुनहू कुँवर कन्हाईजी ॥
परघर काहे जात ललारे बरजाति यशुमति माईजी ॥
मम लोचन आगे तुम खेलौ लीजे सखन बुलाईजी ॥ १ ॥
तुमरे बालविनोद देख सुख मेरो हियो सिराईजी ॥

मोपैलीजै श्याम खाहु सो जो रुचि होय कन्हाईजी ॥
सब कछु तेरे धाम लेहु तुम परघर जाय बलाईजी ॥
माखन मांग्यो कुँवर कन्हाई मुदित मात लै आईजी ॥ २ ॥
दोहा–लगी खवावन मात कहि, दे मेरे करमाय ॥
दियो हाथ दोना तुरत, चले खात हरषाय ॥
चौबोला-चले खात हरषाय सखन संग लखि ब्रजजन सुखछायेजी
यमुना जात लखी इक ग्वाली ताके घर हरि आयेजी ॥
गये भवन ताके मनमोहन बालक संग सुहायेजी ॥
लखे तहँ शिशु दोय अयाने देखत भीर डरायेजी ॥ १ ॥
इत उत देखो गोरस नाहीं ऊंचे शिखर लखायोजी ॥
तब मनमोहन रच्यो उपाऊ तहँ ऊखल औंधायोजी ॥
तापर एक सखा बैठारचो तापर आपुन आयोजी ॥
इह विधि गोरस लियो उतारी सब मिल भोग लगायोजी ॥२॥
दोहा–दूध दियो ढरकाय सब, बछरा दिये निकासि ॥
लरिकनको डरपाय तब, चले अग्र सुखरासि ॥
चौबोला–चले अग्र सुखरासि ग्वालनी देखि सखा गये दौरीजी
फँसि भीतर मोहन परे आई रोकिलई तिन पौरीजी ॥
रोष भरी मुख बात प्रेममय भरी मगन सो गोरीजी ॥
कहति महरके तात जात कित करि माखनकी चोरीजी ॥ १ ॥
तब हरि ताकें मुख तन देख्यो ग्वालिन अधिक रिसाईजी ॥
ग्वालिन अति रिशभई श्यामको पकरि महरि परल्याईजी ॥
मानो महरि कह्यो तुम मेरो अति उतपात मचाईजी ॥
ग्वाल कंध चढि छीके परते गोरस लीनो जाईजी ॥ २ ॥
लावनी ॥
अरज तुम सुनो नंदरानी, करत हरि गोरसकी हानी ॥

टेक–गोरसमेरो सबहिन मिलखायो,दूध सबभूपरढरकायो ॥
सोवत शिशु चोंथि जगाआयो, गोरस ऊपरते छिरकायो ॥
और सब कहत मैं सकुचानी, करत हरिगोरसकीहानी॥ १ ॥
तुम्हें कहा अंगहि दिखराई, हैं गुण बडे श्याम माई ॥
सकुचि ह्यांलरिका ह्वै जाई, बाहिर फिर प्रगटत तरुनाई ॥
बात कछु परत नहीं जानी, करत हरि० ॥ २ ॥
बरजती क्यों नाहिं सुत तेरो, कहा कहूँ नित प्रतिको झेरो ॥
गोरसकहूं धरौं दूर नेरो, चोर सब लेत सुवन तेरो ॥
ताऊपर बछरा बगरानी, करत हरि गोरस की हानी ॥ ३ ॥
बछर सब फिरत बनाहिंमाई, चोरिते अधिकाहि चतुराई ॥
महरि हम इनते हारिपाई, कहांलगि गुणन कहूँ माई ॥
विहारन हरिछबि मनमानी, करत हरि गोरस की हानी ॥४॥

दोहा–सुनत ग्वालनीके वचन,यशुमति हरितन देखि ॥
भय सकोचयुतमुखनिरखि, कोमलललिताविशेखिं ॥

चौबोला-कोमल ललित विशेखि देखि काहि झूंठहिना मलगावैजी
पांच वरसको मेरा लाला कहा चोरीकर पावैजी ॥
चोरी मेरे सुतहि लगावै इहमिस देखन आवैजी ॥
खेलत रहत भवन में मेरो कब यह चोरी जावैजी ॥ १ ॥
छींके बँधे भवन अति ऊंचे हाथ कवन विधिनायोजी ॥
कौन वेग इतनो ह्वै आयो कब तेरो गोरस खायोजी ॥
हाथ नचावत आवत दौरी कहत जोई मन भायोजी ॥
बिहँसत चली ग्वालिन निज धामहिं निरखि श्याम सुख पायोजी

दोहा–घरही माखन बहुतहै, कबहूं नेक न खाय ॥
बरजति यशुमति श्यामको, मैं बालि जिन कहुँजाय ॥

चौबोला–मैं बालि जिन कहुँजाय तिहारे कारण षटरस नानाजी॥

करि राखे पकवान मिठाई मेवा विविध विधानाजी ॥
इतो उपाय करत तू जाई परघर काहे कान्हाजी ॥
ब्रजकी बाढ़ी ग्वालि गँवारी बोलत मुख मनमानाजी ॥१॥
नाहिं कछु लाज न कानि बिचारैं कहत सोई मन आईजी ॥
नित उठ आवत प्रात चली इत झूंठहि दोष लगाईजी ॥
सन्मुख बादत शंक तजी उन बिकटाहि बात बनाईजी ॥
दूध दही तेरे बहुतेरो सो तुम खाहु कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बुरो मानि हैं नंद सुनि, तू कित चोरी जाय ॥
दूध दही तेरे घनो, दूध तनो लख गाय ॥

चौबोला—दूध तनो लख गाय हरीको चोरी माखन भायोजी ॥
कैसे रहै प्रेमके बाँधे ग्वालिनके घर आयोजी ॥
इक ग्वालिन घर मांझ अँधेरे श्यामल तन दरशायोजी ॥
कछुक धरयो गोरस तहां पायो प्रथम सो भोगलगायोजी ॥१॥
कियो प्रगट दीपक गृह ग्वाली देखे श्याम कन्हाईजी ॥
भुजा चार धर दरश दिखायो ग्वालिन अचरज पाईजी ॥
दधि माखनकी बूंद सुहाई हरि उर पर छबिछाईजी ॥
मानहुँ यमुना जलके माई उडुगणकी परछांईजी ॥ २ ॥

दोहा—इह छबि निरखत ग्वालनी, द्विभुज भये नंदलाल ॥
चकित बिलोकितहर्षि मन, देखि चरित ब्रजबाल ॥

चौबोला—देखि चरित ब्रज बाल कन्हाई अद्भुत छबिदरशाईजी॥
यह जाग्रत कै स्वप्न विशेखो कै मो मन भ्रमछाईजी ॥
गदगद कंठ रोमांचक फूली प्रेम मगन पुलकाईजी ॥
मन हरलीनो रूप दिखाई निकसिगये सुखदाईजी ॥ १ ॥
देखि श्यामके चरित उदारा ब्रज नारी सुख पावैजी ॥
होंय हमारे पुरुष हरी यह मांगति विधिहि मनावैजी ॥

घर घर करत बिलास मनोहर नाना भेष दिखावैजी ॥
ब्रज जन परमहुलास हरीके चरित कहत नहिं आवैजी ॥ २ ॥
दोहा–लखी श्याम इक ग्वालनी, मथती गोरसप्रात ॥
बेनी ढरकत पीठपर, उर अंचल फहरात ॥
चौबोला–उर अंचल फहरात यौबनके मदमाती इठलाईजी ॥
थर थरात मथनी दोऊ कर करषत रजू सुहाईजी ॥
गोरे अंग दिननकी थोरी मोरति अंग छबि छाईजी ॥
मढी उरोजन[1] अंगिया गाढी मानहुँ काम सजाईजी ॥ १ ॥
रीझ रहे लखि नंददुलारे खेलत ताके द्वारीजी ॥
फिर चितई ग्वालिन द्वारे तन दृष्टिपरे बनवारीजी ॥
बोलि लिये हरिबे सूने घर लावत उरसों ग्वारीजी ॥
उमँग अंग अंगिया उरदरकी[2] तनकी सुरत बिसारीजी ॥ २ ॥
दोहा–तबहीं सुन्दर श्याम घन, तरुण[3] भये तिहिंकाल ॥
सो छबि देखी ग्वालनी, बहुरि भये शिशुलाल[4] ॥
चौबोला–बहुरि भये शिशुलाल हरीके कौतुक[5] अति सुखदाईजी
देखि रही मति गति बिसराई आनँद उर न समाईजी ॥
माखन ले तब श्याम सुन्दरको अपने हाथ खवाईजी ॥
अति आनंद उमँगमन मांई तनकी सुरत भुलाईजी ॥ १ ॥
माखन खाय रिझाय तीयको रसिक शिरोमणि श्यामाजी ॥
छबिसागर नागर नँद नंदन आये अपने धामाजी ॥
बिन देखे क्षण रह्योनजाई नंदसुवन अभिरामाजी ॥
उरहनके मिस ग्वालि सयानी चली नंद गृह बामाजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनहु महरि हरिके गुणन, कहा कहुँ कहीनजाय ॥
भाजत चोली फारिकै, माखन खाय दुराय ॥
चौबोला–माखन खाय दुराय कह्यो तब बोल उठे बनवारीजी॥

१ स्तन। २ हृदय। ३ युवा। ४ बालक। ५ तमासा।

झूंठहि बात लगावत आई ये सब ब्रज की नारीजी ॥
खेलत ते मोहिं लियो बुलाई भुज भरि उर मोहिंधारीजी ॥
मेरे कर अपने उर डारी आपुन चोली फारीजी ॥ १ ॥
माखन आपहि मोहिं खवायो मैं कब मांट ढुराईजी ॥
अति भोरी सुनि हरिकी बानी तब यशुमति रिसहाईजी ॥
जानतिहों जो कटाक्ष तिहारो भोरो बाल कन्हाईजी ॥
दैदै दगा बुलावत ताही करत सोई मन भाईजी ॥ २ ॥
दोहा—बोलि बोलि निज निज भवन, भेटति भरि भरि अंग ॥
मेरे भोरे बालको, ग्वालिन निलज निसंक ॥
चौबोला-ग्वालिन निलज निसंक ता ऊपर उर नख घात बतावैजी
आपुन अति भोरी बनिआई कान्हे दोष लगावैजी ॥
बिना भीतही चित्र बनावै नित उरहन लैधावैजी ॥
श्यामहिं दीठ लगावत आई मिसकरि करि इत आवैजी ॥ १ ॥
अजहूं रोय रोय पय[1] मांगत मेरो बाल कन्हाईजी ॥
हरिके संग फिरत इठलाती तू जोबनमें छाईजी ॥
ग्वालिन सुनत यशोमति बैना रही मौन सकुचाईजी ॥
आनन[2] रोष प्रीति उरमाई उत्तर कह्यो न जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—उत्तर कछू न आवही, चली भवन[3] सुख पाय ॥
यशुमति बरजाति श्यामको, तू कत परघर जाय ॥
चौबोला—तू कत परघर जाय यह सब गोरसके मद छाईजी ॥
फिरत ढीठ ग्वालिन इतराती अटपटिबात बनाईजी ॥
नित उठ उरहन देत भोरही कहत सोइ मन भाईजी ॥
मोपै मांगिलेत किन सोई जो तुमरी रुचि आईजी ॥ १ ॥
सुख उपजावहु मोरे गाता मधुरे वचन सुनाईजी ॥
अपनेही आंगनमें खेलो सखन संग दोउ भाईजी ॥

१ दूध। २ मुख। ३ घर।

मोहिं सुखदीजे लाल आपने बालबिनोद दिखाईजी ॥
सुन्दर श्याम सुजान हरीपर कोटिकाम बलिजाईजी ॥ २ ॥
दोहा–करत बाललीला ललित, गोप बाल लैसाथ ॥
मथुरा जावति ग्वालनी, सोचितई ब्रजनाथ ॥
चौबोला–सोचितई ब्रजनाथ बैठरहे हरि पिछवारे जाईजी ॥
सखासंगले नंददुलारे करत चरित सुखदाईजी ॥
कहति परोसनसों समुझाई सुनत सो कुँवर कन्हाईजी ॥
बेचनजात सखी मैं गोरस घरतन चितयो माईजी ॥ १ ॥
सदमाखन द्वैमाट धरचो है कहति तोय समुझाईजी ॥
नंद सुवन आवै नहिं आली और कछूडरनाईजी ॥
यों कहि चली ग्वालिनी जबहीं गये श्याम घरमाईजी ॥
ग्वालिन कछु आहट सुनपायो सो पुनि फिर घर आईजी ॥२॥
दोहा–देखिसखा सबभजिगये, पकरिलिये नँदलाल ॥
औरन दीने जान मैं, तुमकित जातगुपाल ॥
चौबो०-तुमकितजात गुपालश्यामको भुजापकरिगहिलीन्होजी
कहति यशोदहि देखहु आई बहुत रोष तुम कीन्होजी ॥
उरहन देत सदा रिशमानो अब अपनो सुतचीन्होंजी ॥
वही उरहनो नित्य कहतिसो आज सत्य करदीन्होजी ॥ १ ॥
बांहपकरिकै आज श्यामको मैं तुमरे ढिग ल्याईजी ॥
हरि भेटे यशुमति ढिंग खेलत ग्वालिन अचरज पाईजी ॥
यशुमति सुनि ग्वालिनकी वाणी देखति सुतको आईजी ॥
देखि यशोमति अति रिसयानी ह्वैगई सुता पराईजी ॥ २ ॥
दोहा–तेरे आँखि न मतिहिये, बदन देखि पहिचान ॥
देखहु री याकी गती, कन्याको कहकान्ह ॥
चौबोला–कन्याको कह कान्ह गही तू बांह कौनको ल्याईजी ॥

खेलत मेरे धाम कन्हाई कहति कहा तू आईजी ॥
रही बाल हरिको मुख जोई समुझि मनहिं पछिताईजी ॥
बांह पकरिमैं घरते ल्याई कीन्हे चरित कन्हाईजी ॥ १ ॥
जातबने न कछू कहि आवै रही ग्वालि सकुचाईजी ॥
महरि कहति चलिजाहु यहां ते बात तिहारीपाईजी ॥
हरिके चरित कहा कोउ जाने ग्वालिन मन मुसकाईजी ॥
हरिते हारि चली गृह ग्वाली जीते श्याम कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बहुरि गये इक ग्वालि घर, मन मोहन घनश्याम ॥
सखन सहित हरषित भये, सूनो पायो धाम ॥

चौबोला—सूनो पायो धाम हरीने चोरी माखन खायोजी ॥
भाजन डारे फोरि दही सब भूमीपर ढरकायोजी ॥
सोवत लरिकन चोंथि जगायो मही छिरकडरायोजी ॥
बहुत दिननको चिकनो चोखो बड़ो मांट लखि पायोजी ॥ १ ॥
सोऊ फोरि टूक करडारे हँसि निकसे रंग भीनेजी ॥
आय गई ग्वालिन तिहिं काला निकसत हरिको चीनेजी ॥
रोवत बाल महीसों बोरे मांट टूक कर दीनेजी ॥
भुजा पकरि लेजाय महरि ढिग हरिको ठाढे कीनेजी ॥ २ ॥

दोहा—कहति ग्वालिनी रिसभरी, सुनहु महरि ममबात ॥
बिन त्यागे नहिं पतरहै, अब हम ब्रज तजिजात ॥

चौबोला—अब हम ब्रज ततिजात मेरे घर कैसो हाल मचायोजी
सुनहु महरि लक्षण सुत केरे कहा अनरीति सिखायोजी ॥
माखन खाय मही ढरकायो लरिकन चोंथि जगायोजी ॥
बासन फोरि धरे सब घरके पूत अनोखो जायोजी ॥ १ ॥
घीको माट युगनको राख्यो सोऊ फोरि बहायोजी ॥
चलो दिखाऊं घरको हाला बरजहु अपनो जायोजी ॥

करत फिरत उतपात काहिको यशुमति सुत समुझायोजी ॥
नित उठ उरहन देत ग्वालिनी कहत सोई मन भायोजी ॥२॥
दोहा—चोर नाम प्रगटाइयो, बड़े बापके पूत ॥
नाम धरावत तातको, उपज्यो पूत सपूत ॥
चौबोला—उपज्यो पूत सपूत श्यामको यशुमति बहु समुझायोजी
भय समेत मातासों बोले नैन नीरभर आयोजी ॥
मेरे ख्याल परी हैं सगरी झूंठहि नाम लगायोजी ॥
यशुमति रोवत देखि श्यामको वदन पोंछि उरलायोजी ॥१॥
कहति सबै युवतिन यह भावै नित उठ उरहन ल्यावैजी ॥
झूठहि कहि कहि मोहिं सुनावें मेरो बाल खिजावैजी ॥
कबहिं जात तेरे दरवाजे कब तेरे माखन खावैजी ॥
धनमाती इतराती डोलै तोहिं लाज नाहिं आवैजी ॥ २ ॥
दोहा—मेरो कान्हा तनक सों, ताहि रुवावति आय ॥
मोघर सब प्रभुको दियो, कब तेरे घर जाय ॥
चौबोला—कब तेरे घर जाय कहा भयो घरहि गयो बिन जानीजी
छुयो तनक दधि बालक भोरे कहा इतनी रिस आनीजी ॥
ग्वालिन सुनि यशुमतिकी बानी तुम उलटी रिस मानीजी ॥
नित उठि होय जासुकी हानी कहै तुमहिं नँदरानीजी ॥ १ ॥
लेहु आपनो गाम महरि यह तुम कछु औरहि लाईजी ॥
जहां बसे न रहत पत अपनी तजन कह्यो सो ठाईजी ॥
पूतहि देत पठाय भडहाई करत घरन घर माईजी ॥
कोबसिये ऐसे नगर अब उरहन देत रिसाईजी ॥ २ ॥
दोहा—सखन भीर लेजात घर, आप खाय सोखाय ॥
जो कछु गोरस घर रहै, सो सब देत ढुराय ॥
चौपाई—सो सब देत ढुराय कहांलौं सहैं नित्यकी हानीजी ॥

कवलौं करैं नंदकी कानी वहुत अचकरी ठानीजी ॥
इक दिन मेरे मंदिर आयो देखत बदन दुरानीजी ॥
जब मैं सन्मुख पकरन धाई तबके गुणन बखानीजी ॥
भाजरह्यो दुरि देखत जाई मैं पौढी घर माईजी ॥
हरै हरै आये सिरहाने चोटी बांधि पराईजी ॥
सुन मैयायाके गुण मोसों झूंठ कहत तोहिं आईजी ॥
खेलतते मोहिं लियो बुलाई दधिकी चेंटि कढाईजी ॥ २ ॥

दोहा–टहल करौं याके सदन, यह पति संग सोजाय ॥
सुनत वचन यशुमति हँसी, ग्वालिन रहीलजाय ॥

चौबोला–ग्वालिन रही लजाय महरिसों कहत मनहिं सकुचावैजी
हैं भोरे के श्याने मोहन कैसे वैन सुनावैजी ॥
करत फिरत उतपात घरन घर दूध दही ढरकावैजी ॥
नित उठ खेलत फागसि मोहन गरियावत न लजावैजी ॥ १ ॥
बाहर तरुण किसोर लखावै बचन कहत मन भायोजी ॥
इहां होत शिशु भोर देखि हम यह अचरज कछु पायोजी ॥
योंकहि गई ग्वालिनी धामहिं यशुमति सुत समुझायोजी ॥
घर गोरस तेरे बहुतेरो तू कत खात परायोजी ॥ २ ॥

दोहा–लघु दीरघ जानत नहीं, झूंठहि झगरति आय ॥
दूध दही तेरे घनो, सो तू क्योंनहिं खाय ॥

चौबोला–सोतूक्योंनहिंखाय कहतिकत माखन खात चुराईजी॥
छांडि देहु अब यह लरिकाई बरजति यशुमति माईजी ॥
यों कहि जननी कंठ लगायो हरषे श्याम कन्हाईजी ॥
खेलन गये बहुरि नँदलाला किये ख्याल सोइ जाईजी ॥ १ ॥
अपर ग्वालि उरहनलै आई यशुमति पर रिसहाईजी ॥
तेरेकान्ह मेरो माखन खायो सखनसहित अभिजाईजी ॥

यमुना गई भरनमैं पानी सूने घरकोउनांईजी ॥
गयो भवन में खोलि किवारी माखन लीनों खाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बारेकद्वै बरजोघनो, मानतनाहिं कन्हाय ॥
कीन्हो अतिही लाडिलो[1], बहुतिकलाडलडाय ॥

चौबोला–बहुतिकलाडलडाय यशोदा पूतअनोखोजायोजी ॥
सुनि ग्वालिनके वैन यशोमति पुनि हरिको समुझायोजी ॥
लैसटिया दिखराय कहत भई सीखतनाहिं सिखायोजी ॥
मेरे रहत जहां तहां ढरको माखन खात परायोजी ॥ १ ॥
नित नित मथियत सहंस[2]मथानी ल्यो माखन मनभायोजी ॥
कितने अहिर जियत घर मेरे बेच खात जिन चायोजी ॥
पूत कहावत नंद महरको चोरहि नाम धरायोजी ॥
मैया मैं माखन नहिं खायो सखन बदन लपटायोजी ॥ २ ॥

दोहा–भोजन अति ऊंचेधरे, मनमें सोच विचार ॥
मैं यहनान्हों हाथसों, किहिंविधि लियो उतार ॥

चौबोला–कहिविधिलियोउतार दधिमुख पोछतकहतकन्हाईजी
दोना पाछे पीठ दुरायो कहत वचन भयपाईजी ॥
डारि सांटि यशुमति मुसिकाई लाये उर सुखदाईजी ॥
बालविनोद[3] मोद मन मोह्यो निरखि वदन हरषाईजी ॥ १ ॥
भक्ताधीन वेदयश गावै भक्त प्रताप बतायोजी ॥
यशुमतिको सुख निरखि अगाधा ब्रह्म समादि भुलायोजी ॥
धनि ब्रजवासी धनि ब्रजगैया धनि धनि भाग्य सुहायोजी ॥
जिनको माखन चोर हरीने नित उठ घर घर खायोजी ॥ २ ॥

दोहा–ब्रज चरित्र हरिको निरखि, रहे सकल सुरभूल ॥
धन्य धन्य ब्रज धन्य कहि, हरषित बरसहिं फूल ॥

१ दुलारा । २ हज़ार । ३ क्रीडा ।

चौबोला–हरषित बरसहिं फूल कहति इक आई औरहि गोरीजी
सुनहु यशोमति सुतकी करनी करत हरी बरजोरीजी ॥
माखन खाय मही ढरकायो भाजे भाजन फोरीजी ॥
सखा संग कीने इक ठोरी फिरत सांकरी खोरीजी ॥ १ ॥
बाट घाट कोउ चलन न पावे दै दै गारि बुलावैजी ॥
कहां लगि कीजे नित उठ झगरो गोरस वचनहिं पावैजी ॥
ऐसी विधि बसिये ब्रजकोरी घर घर सोर मचावैजी ॥
सुनत गोपिका की रिस बानी नँदरानी समुझावैजी ॥ २ ॥

दोहा–बकत बकत तोसों थकी, नेकहु नाहिं डरात ॥
षटरस सब घर में धरे, सो तू क्यों नहिं खात ॥

चौबोला–सो तू क्यों नहिं खात घरहि घर चोरीको किमजावैजी।
देत उरहनो ग्वालि सदाई कहति सोई मनभावैजी ॥
मोको कृपण कहति सब आई सुतहू नाहिं अघावैजी ॥
सुनि सुनि लाजन मरति सदा मैं तू नहिं नेक डरावैजी ॥ १ ॥
अबतोहिं राखों बांधि ललारे ऐसे वचन सुनावैजी ॥
कहे देत तोसोंरी आली अब तेरे घर आवैजी ॥
मेरी सों याहि मारियो धरिके जब तेरो माखन खावैजी ॥
सांटिन मार करो पहुनाई तू मोहिं भोत खिजावैजी ॥ २ ॥

दोहा–कह्यो अजहुँ तू मानले, तू घर घर मति जाय ॥
जननी रिस लखि श्याम कहि, कहूं न जैहों माय ॥

चौबोला–कहूं न जैहों माय कही यों तुरताहि बाहेर आयेजी ॥
खेलन निकरे नँदकेलाला सखा संग छविछायेजी ॥
तबहीं ग्वालि और इक आई यशुदहि वचन सुनाईजी ॥
सुनहु महरि सुत भलो पढ़ायो घर घर सोर मचायेजी ॥ १ ॥
मारि भजत काऊके लरिका फरका खोल बहाईजी ॥

काऊके घर करत भठ्याई काऊको माखन खाईजी ॥
गारी देत सकुच नहिं माने झगरत मेंगमें आईजी ॥
और कहा गुण कहूं श्यामके तुमसों कहत लजाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कछु टोनासों पढतहै, जोइ सोइ कहत कन्हाय ॥
ओढत मस्तक पीत पट, दैअंचल मुसक्याय ॥
चौबोला—दैअंचल मुसक्याय यशोदा कहत तुम्हें सकुचाईजी ॥
तेरो मुख लखि हरि इहां कैसे सकुचि तनकह्वैजाईजी ॥
नेक दिखावहु आंखि अबहिंते ऐसे ढंग भले नाईजी ॥
कबलगिराखें कान तुम्हारी मानत नाहिं कन्हाईजी ॥ १ ॥
यशुमति सुनि हरिके गुण गाथा रिसकारि सांटिउठाईजी ॥
कहति जो ऐसे रिसमें पाऊं तो अब तुमहिं दिखाईजी ॥
कैसे हाल करौं हरिकेरे लागे तात कन्हाईजी ॥
छांडूं नहीं आज बिनमारे बहुत गये इतराईजी ॥ २ ॥

अथ दांवरी बंधन लीला ॥

दोहा—इहि अंतर आई सखी, बांहगहे हरिल्याइ ॥
भलौ महरि सुत जाइयो, चोली हार दिखाइ ॥
चौबोला—चोली हार दिखाइ कह्यो किन नहीं कठिन करिपायोजी
किन नहिं सुतको लाड़ लडायो तुमहिं अनोखोजायोजी ॥
बरजति नाहिं न नेक कन्हाई तेरो कछु अधिकायोजी ॥
यशुमति हरिको भुज गहिलीनो कहति सोई ढंग लायोजी॥१॥
हरुवै साँटिया ढ्वैकलगाई बांह पकरि गहिल्याईजी ॥
आज बांधि मेटों लँगराई को करि लेत सहाईजी ॥
इत उत रजु खोजत नंदरानी भुजा गहे बितताईजी ॥
हरि जननी उर कोपनिहारी मन मन हँसत कन्हाईजी ॥ २ ॥

१ राह। २ देख। ३ उत्पन्न किया। ४ पकड़।

दोहा—अग्नि प्रेरि त्रिभुवन धनी, दियो क्षीर उफनाय॥
यशुमति लखि तजि हरिभुजा, लगी सँभारनजाय॥
चौबोला—लगी सँभारन जाय हरीनें इहिविधि भुजा छुडाईजी॥
माखन अपने मुख लपटायो गोरस दियो ढराईजी॥
जानि जननि अभिलाष कन्हाई रिस में रिस उपजाईजी॥
देखि श्यामके चरित पकरिकै बांधति यशुमति माईजी॥ १॥
गर्बजानि नहिं दाम समाई द्वै अंगुर घटजाईजी॥
पुनि पुनि यशुमति और मँगाई हरिके छोटी आईजी॥
देखि यशोमति अति रिसवाढ़ी ग्वालिनि मन पछिताईजी॥
देखि सखी यशुमति बौरानी बांधति हरिकी बाईजी॥ २॥
दोहा—त्रिभुवन पति जानन नहीं, जिनसब विघ्ननशाय॥
अखिललोक है उदरमें, बांधति यशुमतिताय॥
चौबोला-बांधतियशुमतितायब्रह्मशिवसनकादिकमुनिज्ञानीजी।
धरत निरंतर ध्यान दिवस निशि इनहुँ न महिमाजानीजी॥
जल थल जिनकी ज्योति समानी कहीगर्ग मुनिबानीजी॥
मुखमें त्रिभुवन दियो दिखाई तहुं परतीत न आनीजी॥ १॥
तिनहिं देखि बांधत नँदरानी सो हरि सुखके कन्दाजी॥
अचरज कथा नजात बखानी कहति सखिन मिल ब्रन्दाजी॥
आप बंधावत प्रेम बिवस ह्वै भक्तन छोरत फन्दाजी॥
बदत वेद वाणी विदित यह भक्तबछल नँदनन्दाजी॥ २॥
दोहा—यमलार्जुन सुरति करि, जननी अति रिस जानि॥
जन हित गये बँधाय प्रभु, दीनबंधु सुखदानि॥
चौबोला—दीनबंधु सुखदानि मातके मनकी रुचि पहिचानीजी॥
आप बँधायो सारंगपानी भक्तनके सुखदानीजी॥
बांधों तोहिं सके को छोरी कहति यशोमति रानीजी॥

हरि लखि वदन नैन जल ढोरे ले रजु ऊखल सानीजी ॥ १ ॥
यह सुनि ब्रज युवती उठि धाई लखि हरिको मुसकावैजी ॥
बहुरि श्याम अब माखन चोरी कोउअ न छोरन पावैजी ॥
ऊखल बांधि यशोमति डोरी मारन सँटिया ल्यावैजी ॥
सांटी देखि ग्वालि पछितानी बिकल भई अकुलावैजी ॥ २ ॥

दोहा–यशुमति सों ग्वालिन कह्यो, सुतपर कहा रिसाय ॥
कहा भयो भोरे बालसों, ढरक गयो महिमाय ॥

चौबोला–ढरक गयो महिमाय हरी हित घर घर दही वहायोजी॥
तू बांधाति हरि भुजा कहारी यह तोहि कौन सिखायोजी ॥
ऐसी तोहिं बूझिये नाईं गोरस हित दुख पायोजी ॥
चूकपरी हमते यह भोरे उरहन आय सुनायोजी ॥ १ ॥
बारबार जोवत मुख तेरो हुचकिन रोवत श्यामाजी ॥
वज्रहुते तेरो हियो यह कठिन अहो नंदवामाजी ॥
छोर उदरते दांवरि हरिपर कत रिस करत निकामाजी ॥
डारि कठिन करसांटि श्यामको लैकिन अपने धामाजी ॥ २ ॥

दोहा–जाहु चली अपने भवन, कीनों ढीठ कन्हाइ ॥
बंधन छोरनको चली, मति बरजो कोउ माइ ॥

चौबोला–मति बरजो कोउ माइ सौंह अपने बाबाकी खाईजी ॥
अब न पत्याऊं श्यामको कबहूं राखों नित अटकाईजी ॥
देखि चुकी मैं इनके ख्यालै उपजे पूत कन्हाईजी ॥
राख्यो पय औटाय देव हित कोरे मांट जमाईजी ॥ १ ॥
जावन दियो न पूजन पाई दीनो भूमि ढुराईजी ॥
तिहिं घर देव पितर कहो काके प्रगटे कुँवर कन्हाईजी ॥
दधि कारण बांधन सुत दौरी कहति ग्वालि इक आईजी ॥
इतनी रिस बालकपै कीनी यह सिख कौन सिखाईजी ॥ २ ॥

दोहा–जोहै अतिही अचकरो, तऊ कोसको जाय ॥
देखि नेक हरिको बदन, कैसे डरत कन्हाइ ॥
चौबोला–कैसे डरत कन्हाइ सर्व तजि निरखहु यशुमति माईजी
को जाने किहि पुण्य बसाई प्रगटे नँद घर आईजी ॥
कहो जितो माखन मैं ल्याऊं घरते अबही जाईजी ॥
जिहिं कारण कीनी रिस हरिपै सँटिया डारति नाईजी ॥ १ ॥
देखि डरात तोहिते कैसे हेम कमल जनु छाईजी ॥
वेगि छोर बंधन हठ त्यागी लैउठाय उर लाईजी ॥
माखन मोहिं देत है आनी बड़ि बड़ि बात बनाईजी ॥
मानो मेरे घर कछुनाई तब नाहिं कहत लजाईजी ॥२॥
दोहा–ढोटा तुमहिं बधाइयो, लियो ज्ञान मैं पाय ॥
रिसमें बांह गहाय अरु, दियो उरहनो आय ॥
चौबोला–दियो उरहनो आय सुनी तब बोली अरु ब्रजनारीजी॥
देखहु यशुमति सुतहि निहारी शशि मुख आनँदकारीजी ॥
मुख छबि कोटि मदन बलिहारी साहकि चोर बिहारीजी ॥
बालक हरि अबही कहा जानें नाहिंन तरुण मुरारीजी ॥ १ ॥
श्रमित भ्रमित जो त्रास ताहिते चपल सजलदृग कोरीजी ॥
मनहुँ मीन बंसी बीधे तब करत सलिल झक झोरीजी ॥
छोर उदरते बेगि दाँवरी कहति और इक गोरीजी ॥
कहारिस करत श्याम पर ऐसी मानहु यशुमति भोरीजी ॥ २ ॥
दोहा–कठिनाहियो तेरो अती, कहति ग्वालि इक आय ॥
ऐसो दधि माखन कहा, जिहिं बांधति हरिलाय ॥
चौबोला-जिहिं बांधति हरिलाय श्यामको शंकर ध्यान लगावैजी
सुर सपने नहिं देखन पावै शेशसहसमुख ध्यावैजी ॥

१ शीघ्र । २ पानी । ३ देवता ।

निगमनहूं खोजत नहिं पावै तू दे तारि नचावैजी ॥
घर बैठे तेरे निध आई ताते तू इतरावैजी ॥ १ ॥
काऊको सुत रोवत देखी लेति धाय उरलाईजी ॥
अब ये कित सीखी चतुराई निज सुतसों कठिनाईजी ॥
कहति एक देखहु नंदरानी कबके बँधे कन्हाईजी ॥
गयो क्षुधाते मुख कुम्हलाई अति कोमल सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बीतगई युगयाम अब, घाम निकट रहिआय ॥
तू लागी गृह काजको, तोहिं दया नहिंमाय ॥

चौबोला—तोहिं दया नहिं माय यशोदा जाय काज गृहकीनाजी॥
यशुमति नेक न हृदय विचारो कहारोष उरलीनाजी ॥
जलजलोल लोचन सजल हैं भये त्रास ते दीनाजी ॥
चितवत है हरि बदन तिहारो मनमोहन आधीनाजी ॥ १ ॥
केतिक गोरस हानि यशोदा तैं इतनो दुख पायोजी ॥
वार दीजिये प्राण हरीपर गोरस कौन चलायोजी ॥
हरिको देखि सखा इक धायो बलिसों जाय सुनायोजी ॥
अहो राम तुमरो लघु भैया यशुमति बांधि रखायोजी ॥ २ ॥

दोहा—मारचो लरिका काउको, सो तहां जाय पुकारि ॥
बांध्यो हरि छोरत नहीं, सब कहि कहि पचिहारि ॥

चौबोला-सब कहि कहि पचिहारि सोई मैं तुमको आयजनाईजी॥
हलधर सुनत तुरत उठिधाये मात जानि डर पाईजी ॥
हरिहि देखि लोचन भरि आये भलि दोउ भुजा बंधाईजी ॥
ऊखल सों बांधे हरि देखे हलधर कहत सुनाईजी ॥ १ ॥
मैं बरज्यो कइ बेर कन्हाई अजहुँ छांडि लँगराईजी ॥
दोउ करजोर कहतरी मैया क्यों बांध्यो मेरो भाईजी ॥
श्यामहि छोर बांधि वर मोहीं तोहिं कहा कहूं माईजी ॥

ताके भुज मोहिं बँधे दिखाये मेरो प्राण कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–छुवतो और जोनेककहु, ताहि देखतो आय ॥
तू जननी अब कहा कहूं, तोसों नाहिं बसाय ॥

चौबोला–तोसों नाहिं बसाय पुण्यते तेरे वश हरि आयोजी ॥
गोरस हित बांधतहै हरिको तू पहिचान न पायोजी ॥
करन देहु इनकी पहुनाई यशुमति वचन सुनायोजी ॥
माखन खात परायो जाई चोर नाम प्रगटायोजी ॥ १ ॥
तुमही कहो कमी किहिकेरी नवनिध मोघर माईजी ॥
हों हारी बरजत दिन राती मेरी मानत नाईजी ॥
कहा करों हरि बहुत खिजाई डीठहि भयो कन्हाईजी ॥
मेरो कह्यो तनक नहिं माने अपनी टेक चलाईजी ॥ २ ॥

दोहा–भोर होत उरहन लिये, ब्रज युवती नित आय ॥
घर नहिं रहत क्षणेकहू, जहां तहां सोर मचाय ॥

चौबोला–जहां तहां सोर मचाय तुम हुँ मोहिं दोष देतहो आईजी
कान्हरते तोहिं माखन प्यारो यह तुम नीक सुनाईजी ॥
तोहिं तजों अरु कहूं कौनते को मेरे मान रखाईजी ॥
उरहन देत झूंठ सब तोहीं तेरीसों सुनमाईजी ॥ १ ॥
दधि माखन पय कान्हर कोहै कान्हाकी सब गाईजी ॥
मोऊको बल है कान्हरको तू नहिं जानत माईजी ॥
बलदाऊकी बात सुनी तब यशुमाते मन हरषाईजी ॥
जानतहों मैं चरित तुम्हारे एक मते दोउभाईजी ॥ २ ॥

दोहा–हरिहि देखि हलधर हँसे, तुम्हरीगतिको पाय ॥
होत प्रेमबश भक्तके, हाथबिकावत आय ॥

चौबोला–हाथबिकावतआय तुम्हेंको छोरन बांधन हाराजी ॥

तुम छोरत बांधत संसारा तुम गति अपरम पाराजी ॥
कारण करत करत मनमाने यशुमति नंददुलाराजी ॥
असुर संहारन जनदुखमोचन राजिवनैन उदाराजी ॥ १ ॥
भक्तनके वश रहत सदाई ताते कछुन बसाईजी ॥
हरि मन कहत सदा ये मेरे यमलार्जुन दोउभाईजी ॥
परसि विटप अब देहुँ गिराई इनहित भुज बँधवाईजी ॥
अबहीं आज इन्हैं मैं तारों देहों शाप मिटाईजी ॥ २ ॥

दोहा—यह मिसकरि बंधन तजों, मेटों दुख तत्काल ॥
भक्तवत्सल हरिदीनहित, करुणासिंधुकृपाल ॥

चौबोला—करुणासिंधुकृपाल भक्तआधीन वेदयशगायोजी ॥
पावन पतितहिनाम कहावै जन हित तनधारि आयोजी ॥
विहारन प्रभुनिज भक्तनके हित दांवरि आप बँधायोजी ॥
तादिनते दामोदर हरिको प्रगट नाम कहायोजी ॥ १ ॥
जन रंजन भंजन विपतीके नँदनंदन घनश्यामाजी ॥
पाप शाप त्रयताप सकल दुख मेटन जिनको नामाजी ॥
बाहिर छांड़ि श्यामगृह भीतर लगी काज नँदबामाजी ॥
कहत वचन रस रिस लपटाने फिरत बिराने धामाजी ॥२॥

दोहा—षटरस सब घर आपने, सो तनकहु नाहिं खाय ॥
फोरत भाजन काहुके, मारत लरिकन जाय ॥

चौबोला—मारत लरिकन जाय रहो तुमहूँ हलधर चुप धारीजी॥
इनकी मेटन देहु उपाधी करत उपद्रव भारीजी ॥
ऊखल बँधे देखि मन मोहन कहति सकल ब्रजनारीजी ॥
कान्हहुँ ते तोहिं माखन प्यारो तरसत है बनवारीजी ॥ १ ॥
डारि देहु मथनी नँदरानी हरिकी भुजा पिराईजी ॥
दूध दही हरि पै सब वारो जीवन प्राण कन्हाईजी ॥

जाहु सबै तुम युवति सयानी कहति यशोमति माईजी ॥
मैंखीजति लरकहि गुणकाजे दधिकी कौन चलाईजी ॥ २ ॥
दोहा–युवति चली बिरुझाय सब, कहत यशोदहि पोच ॥
मूरख सों कहिये कहा, करत प्रेम वश सोच ॥
चौबोला-करत प्रेम वश सोच कहत चलीं हम हरिपर बलिजाईजी
अति कठोर मानत है नाहीं यशुमति नाम धराईजी ॥
युवती घरन गईं सब जानी तब हरिके मन आईजी ॥
यमलार्जुन पै गये कन्हाई मातकाज अटकाईजी ॥
परसत पात उठे झहराई शब्द अघात सुनाईजी ॥
उखरे मूल सहित अरराई दीने धरणि गिराईजी ॥
भये चकित सब ब्रजके बासी तनुकी सुरत भुलाईजी ॥
कोउ भूमि कोउ तकत अकासा धारि एक त्रास लखाईजी ॥२॥
दोहा–धनदतनय प्रगटतभये, इहि अंतर दोउ भाइ ॥
ऋषि नारदके शापते, भये वृक्ष ब्रज आइ ॥
चौबोला–भये वृक्ष ब्रज आइ हरीके परसत निजगति पाईजी ॥
भये पुनीत मिटी जड़ताई सुखित भये दोउ भाईजी ॥
तिन्हें कृपालु अनुग्रहकीनी चारि भुजा दरशाईजी ॥
देखि दरश अति पुलकि शरीरा परे चरणमें आईजी ॥ १ ॥
बार बार पद रज शिरधारी स्तुति जोर सुनाईजी ॥
सगुण रूप सुन्दर हरिं धार्‌यो भक्तनकेहित आईजी ॥
जो स्वरूप निगमागम गायो पार कोऊ नाहिं पाईजी ॥
सो धनि गोकुल प्रगटे आई धनि यशुमति उरलाईजी ॥ २ ॥
दोहा–धनि ब्रज गोपी गोपगण, धनि माखन धनि गाय ॥
धनि लीला गोबिंदकी, चोरी माखन खाय ॥
चौबोला–चोरी माखन खाय धन्य सखी उरहन आयसुनायोजी॥

धन्य यशोमति राख्यो बांधी जाहि वेद नहिं पायोजी ॥
धन्य तरु सो जासु ऊखल धन्य सुजन गढिल्यायोजी ॥
धन्य धन्य तृण सो जाकी रजु श्याम भुजन बँधवायोजी ॥ १ ॥
धन्य ऋषी धनि शाप दियो है अती अनुग्रह कीनाजी ॥
जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ दरश तुम दीनाजी ॥
अब कृपाकरि देहु प्रभुवर रहे चरण लवलीनाजी ॥
जहांजन्महीं कर्मवश तहां एक तुम्हें रति चीनाजी ॥ २ ॥

दोहा–बारबार पदनाय शिर, विनती प्रभुहिसुनाय ॥
प्रेममगन निरखतबदन, हर्षसहित दोउभाय ॥

चौबोला–हर्ष सहित दोउभाय साधुकहिभक्तिदान तिनपाईजी
हर्ष गये निज पुर दोउभाई बिदाकिये सुखदाईजी ॥
वृक्ष शब्द सुनि यशुमति धाई लखे न कुँवर कन्हाईजी ॥
परे विटप महिलखि अकुलाई श्याम चपे तरु जाईजी ॥
बांधे हरि मैं परम अभागी आरत महरि पुकारीजी ॥
सुनत सोर ब्रजजन उठधाये आये नंददुवारीजी ॥
देखिगिरे तरुबरहि डराने ढूँढत श्यामहिं भारीजी ॥
गिरेकवन विधि विटप अपारा रहे विचार विचारीजी ॥ २ ॥

दोहा–लखे बीच दोउ तरुन हरि, ऊखलसों लपटाय ॥
धाय लिये भुजछोरके, ब्रजयुवती उरलाय ॥

चौबोला–ब्रजयुवती उरलाय कहतिसब बडभागीनंदराईजी ॥
यशुमति हू अति भागबड़ेरी बच्यो श्याम सुखदाईजी ॥
कबहूँ बांधत मारत कबहूं दोष देत सब आईजी ॥
नैननीर भरि दौरि यशोदा लिये श्याम उरलाईजी ॥ १ ॥
जरहु सो रिस जिन तुमको बांध्यो कहति यशोमति माईजी ॥
जरहु हाथ जिन जेवरि सांधी मेरे प्राण कन्हाईजी ॥

नंद मोहिं कहिहैं कहा आजु देखि वृक्ष तब आईजी ॥
कुशल रहौ अब भ्रात दोऊ तुम मैं ले मरहुँ बलाईजी ॥ २ ॥
दोहा–अति सभीत उर मातके, रहे श्याम लपटाय ॥
यशुमति मन पछितात अति, बार बार बलिजाय ॥
चौबोला–बार बार बलिजाय युवति सब लैलै उरसोंलाईजी ॥
निरखि वदन तन मन सुखपावै आनँद उर न समाईजी ॥
कैसे बच्यो अगम तरुमाहीं यह कहि कहि पछिताईजी ॥
बड़ी आयु है हरिकी आली विधि करलेतसहाईजी ॥ १ ॥
प्रथम पूतना मारन आई पय पीवतहि नशाईजी ॥
तृणावर्त लै गयो उड़ाई गिरयो शिलापर आईजी ॥
कागासुर आवत नहिं जान्यो भज्यो जीवलैजाईजी ॥
शकटासुर पलना ढिग आयो तिहिंका दियो गिराईजी ॥ २ ॥
दोहा–कौन कौन करबर टरी, ऊखल बांधे माय ॥
बहुते उबरयो आजु हरि, गिरे वृक्ष भहराय ॥
चौबोला–गिरे वृक्ष भहराय सबहिमिल सोचरहे मनमाईजी ॥
पुण्य नंदके बच्यो कन्हाई कीनी विधिहि सहाईजी ॥
भुजपर बंधन चिह्न निहारी युवति कहत सब आईजी ॥
ये गुण हैं सब यशुमति तेरे सकुचि महर पछिताईजी ॥ १ ॥
तबहिं नंद आये घर अपने दोउ तरु गिरे निहारीजी ॥
श्याम चपत बाचे सुनि ये तब देत महरिको गारीजी ॥
बांधत है बिन काजहि मेरे हरिबारे सुख भारीजी ॥
कुशल करी विधि आज बचायो गिरे वृक्ष दोऊ भारीजी॥ २ ॥
दोहा–तबहिं तात कहि धाय हरि, लिये नंद सुख पाय ॥
प्रेम पुलक लोचन भरे, चूम वदन उरलाय ॥
चौबोला–चूम वदन उरलाय लाल मेरे पर तन मन वारीजी ॥

काहेको बांध्यो महतारी विधना करवर टारीजी ॥
कैसे गिरे वृक्ष अति भारी चली न तनक बयारीजी ॥
बारबार सोचत नँदराई तैं कछु लख्यो मुरारीजी ॥ १ ॥
श्याम कह्यो मैं कछू न देख्यों रह्योमैं ओट छिपाईजी ॥
कहत नंद हरि वदन निहारी कीनी विधिहि सहाईजी ॥
द्विज चरणन लैलै सुतनायो दीनी बहुतिक गाईजी ॥
देहिं अशीश विप्र सुखपाई सुनि हरषे नँदराईजी ॥ २ ॥

दोहा–गये श्याम जननी निकट, हर्षि लिये उरलाइ ॥
काको धौं मुख देखियो, भूखो रह्यो कन्हाइ ॥

चौबोला–भूखो रह्यो कन्हाइ भोरही उरहन ल्याई ग्वारीजी ॥
ये सब कियो पसारो इनहीं दुख पायो सुत भारीजी ॥
पहिले कह्यो रोहिणीसों तुम करो तुरत जिवनारीजी ॥
ग्वाल बाल सब बोललिये तब बैठे श्याम मुरारीजी ॥ १ ॥
भूख लगी मोको बहुतेरी वेगि ल्याव री माईजी ॥
आज न खायो प्रात यशोदा योंकहि मन हरषाईजी ॥
रोहिणि रही चितै यशुमति तन शिर धुनि धुनि पछिताईजी ॥
परसहु हरिहि विलंब न लावो देवहु वेगि खवाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बहु व्यंजन पकवान अति,को कवि बरणेपार ॥
श्याम सखा हलधर सहित, जेवत नंदकुमार ॥

चौबोला–जेवत नंदकुमार जोइ जोइ व्यंजन जननी ल्याईजी ॥
तनक तनक मोहन सब चाखत बालिको बांटत जाईजी ॥
श्याम कह्यो अब मात अघान्यो सुनतहि जल लैआईजी ॥
अचवन करि अचये दोउ भाई सुख पायो दोउ माईजी ॥ १ ॥
सहित सुगंध पान हरि लीने ग्वालन बांट खवावैजी ॥
भ्राता सहित आप हरिखाये अधर अरुण छबि छावैजी ॥

निरखत बदन मुकुरके माई बिहारन बलि बलि जावैजी ॥
भोजन करत भयो सुखजेतो शारद पार न पावैजी ॥ २ ॥
दोहा–जो सुखहै नँद भवनमें, सो न कहूं सुख आन ॥
सुख यशुमति अरु नंदको, कोकबि सकै बखान ॥
चौबोला-कोकबि सकै बखान सुखहिकी खान हरी तहां आयोजी
कोटि ब्रह्मांड कोटि सो इक इक रोम विराट सुहायोजी ॥
सो अपने भुजदंड हर्षिकै यशुमति गोद खिलायोजी ॥
अबतुम जिनकहुँ जाउ लालरे यशुमतियों समुझायोजी ॥ १ ॥
अपनेहीं आंगन में खेलो जननी वचन सुनावैजी ॥
कहत चोर ब्रज बनितातोही सुनत लाज मोहिं आवैजी ॥
तब बांधति मारतिमैं तोहीं यह कहि कहि समुझावैजी ॥
हलधर आज कहतहो मोहीं झूठहिनाम लगावैजी ॥ २ ॥
दोहा–चोरनामनहिं फिरतअब, कहति ग्वालिइकआय ॥
मैं काके चोरीगयो, झूंठ कहत तोहिं माय ॥
चौबोला–झूंठ कहत तोहिंमाय जबहिमैं खेलों बाहिर जाईजी ॥
चितै रहत सब मेरी घाई तब मोहिंलेत बुलाईजी ॥
चूम वदन उरसों मोहिलावैं अपने घरके माईजी ॥
माखन मोहिं खवावत निजकर आपुन विधिहिमनाईजी ॥ १ ॥
देखति जबहिं लेत मोहिं टेरी कहुं तेरी सौं खाईजी ॥
यशुमति निरख वदन मुसकानी उनकि बात मैं पाईजी ॥
टेरलेत सब सखा तुम्हारे अरु बोलहु बलभाईजी ॥
सुखदीजै मेरे नैननको खेलहु घर अँगनाईजी ॥ २ ॥
दोहा–बोललिये हलधर सखा, सुनताहि आये धाय ॥
कहत सबनसोंमुदित हरि, खेलहिं आंखमुदाय ॥
चौबोला–खेलहिं आंख मुँदाय कह्योबलि कापैआंखिमुदाईजी॥

हर्षितकरयो हरिजननि यशोदे सुनि सबके मन आईजी ॥
हरि अपनी तब आंखि मुँदाई जहां तहां रहे लुकाईजी ॥
कानि लागि जननी समुझाये हैं घरमें बलि भाईजी ॥ १ ॥
श्रीदामाको चोर बनैहौं आवनदो बलभाईजी ॥
इत उतते सब बालक आये छुवत यशोदहि धाईजी ॥
श्याम छुवनके कारण धावत छुवन कोऊ नाहिं पाईजी ॥
धाये सुबल छुवन तब श्यामा श्रीदामा छुयो जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—छुवो श्रीदामा श्याम धरि, ल्याये जननी वोर ॥
हँसि बोले सबरे सखा, भयो श्रीदामा चोर ॥

चौबोला—भयो श्रीदामा चोर सुनी तब यशुमति मन हरषावेजी
जीत्यो मेरो पूत कन्हैया यह कहि सबन सुनावैजी ॥
जाकी माया जगत खिलावै ब्रह्मा पार न पावेजी ॥
ताहि यशोदा खेल खिलावै बालक जिमि फुसलावेजी ॥ १ ॥
पंच तत्त्व चोखान लोकत्रय बसत जासु उरमाईजी ॥
सो बालक ह्वै खेलत है हरि यशुदाके घर आईजी ॥
ज्योति रूप जगधाम हरीसो दुर्ल्लभ जप तप पाईजी ॥
धनि सो ब्रजके लोग हरीको जानत बाल कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहति भई यशुमति महरि, भई लाल अब रात ॥
करहु बियारू अब कछू, बहुरि खेलियो प्रात ॥

चौबोला-बहुरि खेलियो प्रात कह्यो हरि मोको रुचि नाहिं माईजी
तू कहि भोजन कहा बनायो सो सब कहि समुझाईजी ॥
बेसन मिली कनककी पूरी कोमल उज्ज्वल ताईजी ॥
रोहिणि तुम्हरे हेतु कन्हाई ताती तुरत बनाईजी ॥ १ ॥
निबुआ आम करील अथानो जासों रुची तुम्हारीजी ॥
मेरे नैननको सुखदीजै करहू बलि सँग व्यारीजी ॥

तनक तनकधरि कंचन थारी लै आई महतारीजी ॥
श्याम राम मिल करत बियारी रहि दोउ मात निहारीजी॥ २॥
दोहा—खात खात आलस भये, मुखजँभात लखिमाय ॥
जल अचवा मुखधोय तब, बांह पकरि पौढाय ॥
चौबोला—बांहपकरि पौढाय सोवत हरिश्यामराम दोउभाईजी॥
हरुवै पांय पलोटत जननी बोलन देत न काईजी ॥
सोये श्याम सुजान पलँगपर सुखसों रात बिताईजी ॥
बहुरि कलेऊकरन समय हरि प्रात जगाये माईजी ॥ १ ॥
माखन रोटी श्यामसुन्दरको दियो प्रात महतारीजी ॥
मुदित रहत दिन रात यशोदा हरिके चरित निहारीजी ॥
महरि महर बतरात परस्पर रहे बिचार बिचारीजी ॥
जबते जन्म भयो हरिकेरो होत उपद्रव भारीजी ॥ २ ॥

अथ वृन्दावनगमन लीला ॥

दोहा—अकस्मात तरुवर गिरे, कीनी विधिहिसहाय ॥
अब गोकुल तजिदीजिये, बसिये अंतहि जाय ॥
चौबोला—बसिये अंतहि जाय नंद सब लीने गोप बुलाईजी ॥
समाचारगये सबन सुनाये सुनत वचन मन भाईजी ॥
सबहीके मनमें यह आई बसिये अंतहि जाईजी ॥
हैइक ठाम बहुत शुभकारी कही नंद समझाईजी ॥ १ ॥
वृन्दावन गोवर्धन पासा जहां गोप सुखपावैंजी ॥
तहँ सबको सब भांति सुपासा वनमें धेनु चरावैंजी ॥
चलबेको शुभ दिवस धरायो यह सबके मन भावैजी ॥
पांच बरषके मदन गुपाला वृन्दाबन सब जावैजी ॥ २ ॥
दोहा—शकट सौंज सब साजकै, गोबर्धन दियो हँकाय ॥

---

१ सोनेकी थारी। २ वृक्ष-यमलार्जुन। ३ गाड़ा।

चले गोप गोपी सकल, वृन्दावन समुदाय॥
चौबोला—वृन्दावन समुदाय गये सब दिये शकट छुरवाईजी॥
सबके मनमें बसत सांवरो बसे वृन्दावन आईजी॥
परम कुशल सब बसत वृन्दावन मगन गोपमन माईजी॥
चरत हरित तृण जाय बनहिंमें बच्छ सहित सब गाईजी॥१॥
हलधर धेनु चरावनजावें लखि हरि अति हरषाईजी॥
प्रात चले सब गाय चरावन कह्यो मातसों जाईजी॥
मैंहूं गाय चरावन जैहों डरिहौं बनमें नाईजी॥
मना मनसुखा हलधर भैया इनके संग चराईजी॥२॥
दोहा—ग्वालनके संग यमुन तट, वंसीबटकी छाउँ॥
तेरीसों तहां खेलहों यमुनमैं नहिं न्हाउँ॥
चौबो०—यमुनामैं नहिं न्हाउँ सुनी तब यशुमति बचन सुनावैजी
देखहु अपनी वोर ललारे यों कहि कहि समुझावैजी॥
तनक पाँय चलिहो किहि भांती गैया बनमें धावेजी॥
प्रात जात गैयन लै चारन सांझ होत तब आवेजी॥१॥
तुम्हरो कमल वदन मुरझैहै रैंगत पांय पिराईजी॥
तेरी सों मोहिं घाम न लागत भूखहु लागत नाईजी॥
कह्यो कान्ह मानत नहिं काऊ अपनी टेक चलाईजी॥
ग्वाल बाल बलराम बनहिंको चले चरावन गाईजी॥२॥
दोहा—गोधन करि आगे लिये, हेरी टेर सुनाय॥
सुनत टेर लरिकानकी, गये दौरि रुचिलाय॥
चौबोला-गये दौरि रुचिलाय इताहि उत खोजति यशुमति माईजी
दृष्टि न परे श्याम बनवारी सोच रही अधिकाईजी॥
बनतन जान्यो जात कन्हाई टेरति पाछे धाईजी॥
जात चले गायन सँग धावत बलिको टेरत जाईजी॥१॥

पाछे जननी आवत जानी फिर चितये भय पाईजी ॥
हलधर आवत जानि कन्हाई ठाढे भये समुदाईजी ॥
ठाढे भये गई तहां जननी धरी धाय दोउ बाईजी ॥
कह्यो बली सँग जानदे मेरे वेगहि ऐहैं भाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बलि सों यह जननी कह्यो, देखत रहियोयाय ॥
भ्रात संग बनको गयो, यहै कहति घर आय ॥

चौबोला–यहै कहति घर आय हरीने अपनी टेकचलाईजी ॥
आजजाय देखहिं बनमाई कहा धर्‌यो तिहिं ठाईजी ॥
माखन रोटी अरु जलझारी शीतल छाक बनाईजी ॥
दई वेगही ग्वाल संगले यशुमति वनहिं पठाईजी ॥ १ ॥
पंच सुधारस कलपतरुः है चिन्तामणि सुरगाईजी ॥
खात छाकसो ग्वालनके सँग यह हरिके मन आईजी ॥
वृंदावन खेलत नँदलाला रहे परम सुखपाईजी ॥
जहां तहां ग्वालन सँग डोलत कहत सुनहु बलि भाईजी ॥ २ ॥

दोहा–नितप्राति ल्याहु लिवाय मोहि, तुमसंगचारनगाय ॥
मैं यहां पायो बहुत सुख, आवनदेत न माय ॥

चौबोला–आवनदेत नमाय कह्यो तुम तव मोहि पठयो माईजी॥
कालि कवन विधि आवन पैहों कहत तुम्हें समुझाईजी ॥
सोवत बोल लीजियो मोहीं नंदकि सोंह दिवाईजी ॥
पुनि पुनि विनय करत हरि बलिसों सखनसमेत सुनाईजी॥१॥
संध्या समय निकट अब आई घरको चलहु कन्हाईजी ॥
गैयन घेर करी इकठोरी चले सदन समुदाईजी ॥
ग्वालन संग बनहिंते मोहन आवत धेनु चराईजी ॥
जिहिं जिहिं भांति ग्वाल मुखभाषत सुनत सोहरि मनलाईजी२॥

दोहा–मोर मुकुट बनमालउर, कटिपटपीतसुहाय ॥

गोपदरजछबि बदन पर, आवत गायचराय ॥
चौबोला–आवत गाय चराय बदनपर छूटी अलक सुहावैजी ॥
नंदसुवन ब्रज प्राण धनू हरि सखन सहित घर आवैजी ॥
देखत नंद यशोदा ठाढे ब्रज तिय लखि हरषावैजी ॥
गायन संग श्याम जब आये जननी बलि बलि जावैजी ॥ १ ॥
आज गयो हरि गाय चरावन मैं बलि लघु लघुपायोजी ॥
तुम्हैं देखि मैं अति सुख पायो मो कारण कछु ल्यायोजी ॥
आंचर सों सब अंगरज झारी वदन पोंछि उरलायेजी ॥
माखन रोटी अरु मधु मेवा खाउ सोई मन भायेजी ॥ २ ॥
दोहा–दिय जिमाय दोऊ भ्रात जब, तब जननी बलिजाय॥
कहत मातसों हँसि हरी, नितहि चरैहोंगाय ॥
चौबोला–नितहि चरैहौं गाय मैयामैं बनमें अति सुख पाऊंजी॥
तेरे कहे घरहि नहिं रहिहौं नित प्रति वनको जाऊंजी ॥
ग्वाल बाल गायनके संगमें नेकहु नाहिं डराऊंजी ॥
जागत रहिहौं कहत कन्हाई सौंह नंदकी खाऊंजी ॥ १ ॥
सोय रहो तुम श्याम सुजाना कहति मात पुचकारीजी ॥
प्रातहि जान कहतहो बनको मैं तुमपर बलिहारीजी ॥
प्रात देन बनजानं कह्यो जब सोये श्याम मुरारीजी ॥
श्रमित जान वन गवन हरीके दाबत पग महतारीजी ॥ २ ॥
दोहा–ज्यों त्यों हरि मन बोध करि, सोय रहे अलसाइ ॥
सांझहिते लागे कहन, प्रात होत बनजाइ ॥
चौबोला–प्रात होत बन जाइ आज बलि संग ले गये लिवाईजी॥
अब तो सोय रह्यो कहि ऐसे प्रात होत बन जाईजी ॥
नंद कहत बलिके संग जावे आवन दे फिर धाईजी ॥
भोर होत यशुमति कहि प्यारे जागहु कुवँर कन्हाईजी ॥ १ ॥

शशि[1] मलीन रविकिरण[2] प्रकासी उडुगण[3] द्युति[4] मुरझाईजी ॥
सुनहु शब्द बोलत खगनाना खोलहु नैननिकाईजी ॥
सुनत श्याम जननीकी बानी जाग उठे सुखदाईजी ॥
ल्याई माखन रोटी मैया खावहु कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बाल सखा टेरत खरे, आये तबके द्वार ॥
खेलहु ब्रज भीतर हरी, दूरि जाहुजिन बहार ॥

चौबोला—दूरि जाहु जिन बहार कह्यो उत टेरउठे बलि भाईजी ॥
ग्वाल बाल जावत सब बनको आवहु धाय कन्हाईजी ॥
श्याम जोर दोउ हाथ मातसों हाहा करि कह्यो माईजी ॥
जै हों ग्वालन साथ चरावन वृन्दावन मैं गाईजी ॥ १ ॥
जैहों गाय चरावन मैया टेरत हैं बलभाईजी ॥
वनफल तोरि देत हैं मोहीं आपुन घेरत गाईजी ॥
जै हौं और ग्वाल संग नाहीं वनमें मोहिं खिजाईजी ॥
मैं अपने दाऊ संग रहिहौं देखि बनहिं सुख पाईजी ॥ २ ॥

दोहा—आगे दे ल्यावत मोहिं, बनते बलिरी माय ॥
यशुमति बलिको टेर कहो, हरिके गुण समुझाय ॥

चौबोला—हरिके गुण समुझाय कहे तब बोले हलधर भाईजी॥
जानदेहि मोसंग कन्हाई तू किमि बरजति माईजी ॥
तू काहे डरपत मन माहीं जान देति क्यों नाईजी ॥
हँसी महरि सुनि बलिकी बानी जावहु संग लिवाईजी ॥ १ ॥
तुमहूं कहत चारुके रुखकी मैं तुम्हरी बलिजाईजी ॥
अति आनंद भयो हरि धायो गये खिरक दोउ भाईजी ॥
धाय धाय भेटत ग्वालनसों उर अति हरष बढाईजी ॥
पठयो मैया मोहिं बनहिंको चलहिं चरावन गाईजी ॥ २ ॥

---

१ चन्द्र। २ सूर्य्य। ३ नक्षत्र। ४ प्रकाश।

दोहा–चलहु श्याम वृन्दाविपिन, कहत सखा सुखपाय ॥
यमुनाके तट खेलिहैं, बंसीबटकी छांय ॥
चौबोला–बंसीबटकी छांय मिले सब गाय चरावन जावैजी ॥
सखा संग सोहत मनभावन करत सोई मन आवैजी ॥
ग्वाल बाल सब कछुक सयाने हरिहि अयान लखावैजी ॥
गाय बच्छ अरु गोपनके सुत तिन माधि श्याम सुहावैजी ॥ १ ॥
छोंडि कहूं जिन जावहु मोहन कहत सखा समुझाईजी ॥
वृन्दावन अति सघन निवासा जैहो भूलि कन्हाईजी ॥
सुनत श्याम घन तिनकी वाणी हँसे मनहिं मन माईजी ॥
बनहिं डरात बहुत मैं भैया संग तजो कहुँ नांईजी ॥ २ ॥
दोहा–खेलत हरिसंग सखनके, हरष बढाये जात ॥
गावत कोउ नाचत कोऊ, कूदत कोउ हरषात ॥
चौबो०–कूदत कोउ हरषात देखि हरि निजमनअति सुखपायेजी
हँसत सखनसों देगलबांहीं आनँद उर न समायेजी ॥
आज यशोमति हरषपठायो भली करी मोहिंल्यायेजी ॥
इहि विधि गोधनलै सब ग्वालन यमुनातट पहुँचायेजी ॥ १ ॥
दई धेनु बगराय बनहिंसब चरित हरित तृणजाईजी ॥
गायचरावत नंद सुवन हरि ग्वालन संग कन्हाईजी ॥
उरमुक्तनकी माल विराजत मुकुट किलटकसुहाईजी ॥
हाथलकुटिया लाल हरीके डोलत बनके माईजी ॥ २ ॥

अथ वत्सासुरवध लीला।

दोहा–सखनसहित खेलत हरी, यमुना के तटजाय ॥
वत्सासुरनृपकंसने, दीनो तुरत पठाय ॥
चौबोला–दीनो तुरत पठायवत्सह्वै बछरनआयसमायोजी ॥
कृष्णताहि आवत ही जान्यो असुर वत्स ह्वै आयोजी ॥

तुमयाको जानत हो भैया बलिको ताहिं दिखायोजी ॥
वह तो असुर वत्स है आयो मारन कंस पठायोजी ॥ १ ॥
हलधर हू देख्यो धर ध्याना साँच कहत तुमभाईजी ॥
बछरा घेर करो इकठोरी हँसि हँसि कहत कन्हाईजी ॥
ल्याये घेरि वत्स सब ग्वाला वह नाहिं घिरवत आईजी ॥
बारबार हरि वोरनिहारे दाँव तकतमनमाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तुमते यह आवत नहीं, मैं याको लेआत ॥
हाथ लकुटियाले हरी, ताके सन्मुखजात ॥

चौबोला–ताके सन्मुख जात हरीको जबहिं जुदोकर पायोजी ॥
मारन चल्यो श्यामको तबहीं प्रेरित काल नियरायोजी ॥
कीनो कोप असुर मन भारी हरिके सन्मुख धायोजी ॥
सुरपुर योग भयो बत्सासुर जबते सन्मुख आयोजी ॥ १ ॥
धाय श्याम पकरचो जब ताको गहि द्वैपांय फिरायोजी ॥
परचो धरणि तब असुर प्रगट भयो फेर श्वास नहिं आयोजी ॥
अधम असुर तनुत्याग कियो तब सुरपुर ताहि पठायोजी ॥
गगन सहित अनुराग भरे सब सुरन सुमन झरलायोजी ॥

दोहा–चकित कृष्ण बलदेखि तब, धाय परे सब ग्वाल ॥
कहत परम आनँद भरे, धन्य धन्य नँदलाल ॥

चौबोला–धन्य धन्य नँदलाल कहत सब देखितअचरज पाईजी ॥
कहत हरी हम आज बचाये धनि धनि कुँवर कन्हाईजी ॥
यह तौ असुर भयानक आयो हम नहिं जान्योकाईजी ॥
आज सबनिधरिकै यह खातो कौन मारतो याईजी ॥ १ ॥
असुर निकंदन नाम सुनायो हरषित हरि उरलाईजी ॥
कहत ग्वाल तुम धन्य कन्हाई धनि ब्रज प्रगटे आईजी ॥
यह ऐसो तुम अति सुकमारा किहिं विधि भुजा फिराईजी ॥

सबहीके देखत पलमाईं मारचो डरे तुम नाईंजी ॥ २ ॥
दोहा–अबलों हमजाने नहीं, बडन बड़े तुम आय ॥
कोउ बनधात लगात कोउ, वनमाला पहिराय ॥
चौबोला–वनमाला पहिराय कोऊ कुंडल शिर मुकट सँभारेजी॥
अलकावलि कोऊ तिलक सुधारे तन मन हरि परवारेजी ॥
जानु भुजनपर कोउ बलिहारे कोऊ वदन निहारेजी ॥
वनफल तोरि धरत कोउ आगे खाहुनीक यह प्यारेजी ॥ १ ॥
इहि विधि हरिको पूजि सबै मिल ग्वाल बाल हरषावेजी ॥
सांझ निकट आवत जब जानी तब सब धेनु बुलावेजी ॥
परममुदित मन सखन सहित हरि असुर मार घर आवेजी ॥
गावत शब्द रसाल निरख छबि विहारन बलि बलि जावेजी॥२॥
दोहा–मोर मुकुट कटि पीतपट, हँसत चलत गति मन्द ॥
सखन मध्य शोभित हरी, जनु उडुगण विचचन्द ॥
चौबोला-जनु उडुगण बिचचन्द लकुटकर कुंडल परम सुहावेजी
कोटि चंद्र हरि मुखकी सोभा निरखि मदन बलि जावेजी ॥
कुटिल अलक भुजनैन विसाला गोपदरज छबिछावेजी ॥
बलि मोहन बनते बनि आवें लखिब्रज जन सुख पावेजी ॥ १ ॥
सखन सहित हरि धामहिं आयो यशुमति कंठ लगायोजी ॥
कहत ग्वाल सुन यशुमति मैया बडो बीर सुत जायोजी ॥
वत्स रूप इक दानव वनमें बछरन आय समायोजी ॥
हम ताको कछु जान न पायो हरिको मारन धायोजी ॥ २ ॥
दोहा–क्षणहींमें मारचो हरी, पटक्यो ताहि फिराय ॥
भाग्य हमारेते इहां, प्रगटे हरि ब्रजआय ॥
चौबोला–प्रगटे हरि ब्रज आय सखन सब विधिवत बात सुनाईजी
यशुमति सब वे पाँयन परि परि बार बार पछिताईजी ॥

भयो महरि उर त्रास¹ कहति यह उबरचो आय कन्हाईजी ॥
मैंन बिगारचो कासु ताहिते कीनी विधिहि² सहाईजी ॥ १ ॥
यशुदा सोच करत तू जाको कीनो ख्याल कन्हाईजी ॥
पर्वत तुल्य बिकट तनु ताको सो मारचो क्षणमाईजी ॥
तुम्हरी रक्षाको यह नाई सबको रक्षक आईजी ॥
याके चरण कमल चितलैये बार बार बलिजाईजी ॥ २ ॥

दोहा—ग्वालनके मुखते सुनी, ब्रजजन रहे निहारि ॥
लीला सागर साँवरो, मोहे सब नर नारि ॥

चौबोला—मोहे सब नर नारि मातसों हँसि हरि वचन सुनायोजी॥
देख्यो मैं वृन्दावन जाई निरखि बहुत सुख पायोजी ॥
अति रमणीक³ भूमि द्रुमनीके⁴ कुंज सघन छवि छायोजी ॥
अति कोमल तृण हरित तहां मैं वछर चरा घर आयोजी ॥१॥
सखन संग खेलत वटछांई डरलागत मोहिं नाईजी ॥
मुदित⁵ सुनत हरिकी मृदुवानी रोहिणि यशुमति माईजी ॥
मोहिं लियो मन हरि जननीको मधुरे वचन सुनाईजी ॥
बत्सासुरको सोचहियेते मेटि दियो क्षणमाईजी ॥ २ ॥

अथ धेनुदुहन लीला ॥

दोहा—जहां तहां हर्षित गोपगण, लगे दुहन सबगाय ॥
गाय दुहन चाहत सिखन, गये तहां हरिधाय ॥

चौबोला—गये तहां हरि धाय लखे सब धेनु दुहत तब जाईजी॥
कहत मोहिं सिखवो गोपालन दुहिहौं मैं अब गाईजी ॥
धेनु दुहनके काज कन्हाई बैठ गये तिन पाईजी ॥
कैसे दोय पगन अटकावत कैसे लेथन लाईजी ॥ १ ॥
घुटरुन गहैत⁶ दोहनी कैसे मोहिंको देहु बताईजी ॥

१ भय। २ ब्रह्मा। ३ सुहावन। ४ वृक्ष। ५ प्रसन्न। ६ पकरत।

कैसे धार दूधकी होई सो सब देहु सिखाईजी ॥
कहत ग्वाल तुम सुनहु कन्हाई आज बेर भइ भाईजी ॥
तुमको सिखहैं दुहन सकारे अब कहुँ चोट लगाईजी ॥ २ ॥
दोहा—श्याम कह्यो सब सखनसों, दुहो जिन नंद दुहाइ ॥
टेर लीजियो मोहिं तुम, मैं दुहिहौं निजगाइ ॥
चौबोला—मैंदुहिहौं निजगाइ दुष्ट दल संतनके सुखदाईजी ॥
ठाढे गैयन मांझ कन्हाई टेरति यशुमति माईजी ॥
आवहु कान्ह सांझकी बिरियां ऐसे कहत सुनाईजी ॥
लरिकाई कछु छांडत नाहीं आ सोवहु घर माईजी ॥
आये हरि यह सुनत तुरतही लिये मात अँकवाईजी ॥
लै पौढाये सेजपरमहित अजिर चांदनी छाईजी ॥
कहत कहत कछु बात सोयरहे भये नींदवश आईजी ॥
कहति यशोमति मातसोय रह्यो हरि आंगनके माईजी ॥ २ ॥
दोहा—दोउ जननी भीतर लिये, सेजहि सहित उठाय ॥
अतिहि नींदवश सोरह्यो, कहति यशोमतिमाय ॥
चौबोला—कहति यशोमति माय नेकनहिं बैठतथिरघरमाईजी॥
खेलनमें मन रहत सदाई घरहू आवत नाईजी ॥
रोहिणि कहति हारि गयो खेलत सोवन देहु कन्हाईजी ॥
माताहरुवै पवन ढुरावे निरखि वदन बलिजाईजी ॥ १ ॥
प्रात जगावत नंदकिरानी उठहु श्याम सुखदाईजी ॥
शशिमलीन उडुगणद्युतिनाशी कुमुदिन रहिसकुचाईजी ॥
बारबार टेरत सबग्वाला सांझहि सोंह दिवाईजी ॥
रांभति गाय बच्छ हितलागी होत अबार कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—आरत वत्स पुकारहीं, दुहत नहीं तुम गाय ॥
जोवत मग यह ग्वाल सब, ठाढे प्रेम बढाय ॥

चौबोला—ठाढे प्रेम बढाय सुनतही तुरत उठे सुखदाईजी ॥
धेनु दुहन सीखन मन चाहत मोहन कुँवर कन्हाईजी ॥
कहत तनकसी देखि दोहनी बेगिल्यावरीमाईजी ॥
जात दोहन सखिनमें गैया देहैं तात सिखाईजी ॥ १ ॥
रोहिणि तुरत दोहनी ल्याई ब्रजबधु देखन आईजी ॥
अटपट आसन बैठ कन्हाई ले गोथन कर माईजी ॥
धार अनतहीं जात निहारी हँसे तात अरु माईजी ॥
चितै चोर चित हरि हँसिलीने बिहारन बलिबलि जाईजी ॥२॥

दोहा—यशुमति अति उत्सव कियो, सो नहिं वरण्यो जाय ॥
विप्रन लिये बुलाय तिन, दई बहूतिक गाय ॥

चौबोला—दई बहूतिक गाय गावति सब मंगल ब्रजकी नारीजी
दुही गाय संतन हितकारी हरि जनके दुखहारीजी ॥
बैठे प्रमुदित गोप अथाई मन आनँद नँदभारीजी ॥
लिये गोद सुन्दर घनश्यामा ब्रज जीवन बनवारीजी ॥ १ ॥
आयो तहां एक वनज्यारो मोतिनको व्यापारीजी ॥
तिहिं लखि अटके नंदकुमारा देकहि बारहिबारीजी ॥
दीरघ मोल कहो व्यापारी तासों कहत मुरारीजी ॥
कर पर राखिरहे हरि मोती सुनि पुनि ज्योति निहारीजी ॥२॥

अथ मोतीबोवन लीला।

दोहा—लै मोती हरि घरगये, बये अजिर बलबीर ॥
आलबाल थलरोपितहँ पुनि पुनि सींचतनीर ॥

चौबोला—पुनिपुनिसींचतनीरकरतकहा कहतियशोमतिमाईजी
ये करता सबही जग केरे सो यह जानति नाईजी ॥
भये तुरत शाखादल तामे यशुमति आंगन माईजी ॥
ब्रह्मादिक सब करत विचारा फलत न बार लगाईजी ॥ १ ॥

नंदभवन हरि मुक्त जमाये ब्रजजन हार बनावैजी ॥
सब गुण समरथ सब गुणशीला विहारन कहत न आवैजी ॥
क्षणमें जासु प्रगट करिमाया कोटि ब्रह्मांड रचावैजी ॥
नंद अजिर सो ख्याल बनावे ब्रह्मा पार न पावैजी ॥ २ ॥
दोहा–कोउअ न महिमा कहिसकै, निर्गुण सगुण वपुधार ॥
रचै नाश पालन करै, सो ब्रज करत विहार ॥
चौबोला-सोब्रजकरतविहारविरंचिशिवमुनिजनध्यानलगायोजी
ताहि यशोमति गोद खिलावै भाग्य नजात गिनायोजी ॥
अगम अगोचर लीलाधारी सो वृन्दावन आयोजी ॥
बड़े भाग्य ब्रजबासिन केरे जिन संग हरि सुख पायोजी ॥ १ ॥
धनि धनि ब्रज नर नारि धन्य नँद धन्य यशोदा माईजी ॥
ब्रह्म सच्चिदानंद सो विहरत जिनके आंगन माईजी ॥
धन्य धन्य ब्रज बागवनहिं सब जहां चरावत गाईजी ॥
सकल सुरन शिर मुकुट मणीहरि कहि कहि देव सिहाईजी॥२॥

अथ बकासुरवध लीला ॥

दोहा–प्रात उठे हलधर हरी, गाय चरावन जात ॥
देखति छबि ब्रजसुन्दरी, कहति परस्पर बात ॥
चौबोला–कहति परस्पर बात देखि सखि ब्रजते बनहिं सिधावैजी
बलि मोहन ग्वालन सँग मोहीं सोछबि कहत न आवैजी ॥
रोहिणि सुतछबि गौर यशोदा सुत छबि श्याम सुहावैजी ॥
ओढे नील पीत पटदोऊ लखि छबि मदन लजावैजी ॥ १ ॥
मानहुँ युगल मिले घन दामिन जोरत नात मिलाईजी ॥
शीश मुकुट कुंडल काननमें झलक कपोलन छाईजी ॥
सखन मध्य सोहत नँदलाला मंद हँसन सुखदाईजी ॥
कटि किंकिणि करलकुट सुहावै लखि मन लेत चुराईजी ॥२॥

दोहा–रहीं थकित लखि हरि छबी, सब मिल ब्रजकी बाम ॥
गये वनहिं हलधर हरी, विहरत वन घनश्याम ॥
चौबोला–विहरत वन घनश्याम बनहिं में फिरत चरावत गाईजी
हलधर श्याम सखा इक ठाईं करत खेल बनमाईजी ॥
करत विहार विविध वन नाना बालकेलि सुखदाईजी ॥
कबहुँक सखन संग मिल गावैं कबहुँक वेणु बजाईजी ॥ १ ॥
धौरी धूमर नाम सुनावे गैयन टेर बुलावैजी ॥
सुन्दर श्याम जलद तनु सोहै कबहुँक मोर नचावैजी ॥
गर्जत मुरली घोर परम आनंदहि जल बरसावैजी ॥
खेलत खेल विविध मनभावन सखन सहित छबि छावैजी ॥२॥
दोहा–तृषित जानि गैयनकह्यो, चलहुयमुनगोपाल ॥
टेरिलेहुसुरभी सकल, सुनतहि ल्यायेग्वाल ॥
चौबोला–सुनतहिल्याये ग्वाल घेरि सब गोधन दिये हँकाईजी॥
ग्वालन गमन यमुनतट कीनों गैयन घेरत जाईजी ॥
तहां बकासुर छलकर आयो माया रूप बनाईजी ॥
एक चोंच भूतलमें लाई एक अकाश समाईजी ॥ १ ॥
मगमें बैठ्यो वदन पसारी देखत ग्वाल डरायेजी ॥
बालकजात हुते जे आगे सो पाछे फिर धायेजी ॥
कहत भये सब हरिसों आई आगे एकबलायेजी ॥
ऐसो देख्यो कबहूं नाहीं नित प्रति बन हम आयेजी ॥ २ ॥
दोहा–आयो बकासुर जानहरि,कहत मनहिं बलबीर ॥
अबहिं याहिमैं मारिहों, चोंचहि डारों चीर ॥
चौबोला–चोंचहि डारों चीर हरीके ऐसे मनमें आईजी ॥
आगे भये कहत सब ग्वाला कित तुम जात कन्हाईजी ॥
बचे केति उतपातते तबहूं मानत हौ डर नाईजी ॥

हम बरजत तुम मानत नाईं चले जात अतुराईजी ॥ १ ॥
चलहु सकलमिल करिहैं नाशा हरि मुख वचन सुनायोजी ॥
हरिके संगगये सब ग्वाला निकट जाय लखि पायोजी ॥
ताके निकट गये सब जबहीं हरि मुख माहिंउठायोजी ॥
जान्यो असुरकाजमैंकीनो वदन मूँद हरषायोजी ॥ २ ॥
दोहा–ग्वाल पुकारे जाय सब, बलि सों कहत सुनाय ॥
हम बरजत हरि हठ गये, लिये लील बक धाय ॥
चौबोला–लिये लील बक धाय हरीको चरित जानि नहिं पायोजी
उपजी आग असुर मुख माहीं तब मन अति पछितायोजी ॥
लाग्यो जरन भयो अति व्याकुल उगलतही बनि आयोजी ॥
बहुरो पकरनको मुख बायो तब हरि चीर बहायोजी ॥ १ ॥
ग्वालन देखि कहत बलरामा मारचो असुर कन्हाईजी ॥
टेर उठे उत कुँवर कन्हाई आहु सखा सब धाईजी ॥
बक विदारि हरि सखन बुलावत कहत आहु अतुराईजी ॥
चोंच फारि मारचो मैं असुरहि तुमहूं करहु सहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनत श्यामके वचनवर, गये सखा सब धाय ॥
पुनि पुनि भेटत पुलकतन, निरखि नैन सुखपाय ॥
चौबोला-निरखि नैन सुखपाय परस्पर कहत सखा सुन प्यारेजी
ये कोऊ ब्रज प्रगटे आइ आये भाग्य हमारेजी ॥
इन्हें नाहिं कोउ घात करैया असुरनि मारन हारेजी ॥
जबते इन्हें यशोमति जाये केतिक असुर पछारेजी ॥ १ ॥
तृणा पूतना शकटा मारे तब हते बाल कन्हाईजी ॥
हम देखत वत्सासुर मारचो याकी कौन चलाईजी ॥
इनके गुण कछु कहत न आवे वृथा डरत हम भाईजी ॥
धनि यशुमति जिन इनको जायो धनि हम सखा कहाईजी २॥

दोहा—बकहि मारि सुन्दर हरी, यमुनाके तट आय ॥
सुरभिन नीर पियाय तब, सखन सहित सब न्हाय ॥
चौबो०-सखन सहित सब न्हाय घस्यो बन धात चित्र तन लाईजी
मोर मुकुट माथे धरलीनों संतनके सुखदाईजी ॥
बनमाला रचि सखन बनाई प्रेम सहित पहिराईजी ॥
बन फल मधुर गोप ले आये खावहु कहत कन्हाईजी ॥ १ ॥
बलि मोहन घरको चले आवत जानि सांझकी बेरीजी ॥
लीनी गैंयां घेरि सखन सब मुरलीकी धुनि टेरीजी ॥
चले बजावत बैन सकल मिल ग्वालन गावत हेरीजी ॥
ब्रजजन प्राण अधार साँवरो अंग छबिन की टेरीजी ॥ २ ॥
दोहा—सुनि मुरलीकी टेर सब, धाई ब्रजकी बाल ॥
कहत परस्पर लखि अली, आवतहैं नँदलाल ॥
चौबोला—आवतहैं नँदलाल नाना रंग सुमनन माल सुहाईजी ॥
श्यामहिये छबि देत बिसाला सो छबि बरनि न जाईजी ॥
मोरपक्ष शिर मुकुट बिराजै मुरली टेर सुनाईजी ॥
भ्रुकुटी विकट नीक सुखदाई तिलक रेख छबिछाईजी ॥ १ ॥
कुंडल लोल अलक घुँघुरारी आते छबि कहत न आवैजी ॥
मंद हँसनि घन दामिन जैसे दुरि दुरि पुनि प्रगटावैजी ॥
तन घनश्याम कमल दल नैना बोलत परम सुहावैजी ॥
नटवर रूप श्याम अपने मुख मधुरे सुर कछु गावैजी ॥ २ ॥
दोहा—गुंजमाल चोरत मनहिं, चंदन खौरि सुहाय ॥
या छबिपर बलिजाइये, देख श्याम सुखपाय ॥
चौबोला--देख श्याम सुखपाय हरी हलधर आये दोउ भाईजी ॥
सांझ समय बनते चले आवत आये धेनु चराईजी ॥
बत्स सुरत करि पयश्रव बाढीं रांभतिधाई गाईजी ॥

आवत श्याम घरहि अति हरषित कहति यशोमति माईजी॥१॥
इतनी कहत श्याम घर आये दौरि मात उरलायेजी॥
ब्रज लरिका सब तुरतहिधाये शीशमहरि पदनायेजी॥
ऐसो पूत धन्य तुम जायो गुण कछु जात न गायेजी॥
आज सकल मिल धेनु चरावन यमुना तीर सिधायेजी॥२॥

दोहा–तहां असुर बन खगतनूं, बैठ रह्यो मुखबाय॥
एक चोंच महि पर धरी, एक अकास लगाय॥

चौबोला–एक अकास लगाय तहां हम बरजतही हरिधायोजी
ताके मुखमें जाय समायो तब हम अति भयपायोजी॥
अति व्याकुल हम भये निराशा बलिसोंजाय सुनायोजी॥
चोंच फारि तिहि मार गिरायो कैसे बाहिर आयोजी॥१॥
सुनत नंद यशुमति ब्रजनारी हरितन रहे निहारीजी॥
यशुदा कहत कहाकोउ जाने विधना करबरटारीजी॥
नित प्रति होय आनकी आनै होत उपद्रव भारीजी॥
भयो आज कोउ सुकृत हहाई विधिकी गति कछु न्यारीजी॥२॥

दोहा–जन्म भयो है श्यामको, तबते यहै उपाधि॥
कहासरचोहमरेयतन, विधिगतिअगमअगाधि॥

चौबोला-विधिगतिअगमअगाधियशोदाकहतिकहतनहिंआवैजी
विधना सहाय करत है हरिकी को मेरे पछितावैजी॥
प्रेमसलिल लोचन भर आये ले बलाय उरलावैजी॥
मैंबलि जाउँ कहति कछु खावहु तूकत गाय चरावैजी॥१॥
नंदमहरसे पिता तुम्हारे मोसी मात बलिजाईजी॥
खेलत खातरहो अपने घर दधि पकवान मिठाईजी॥
निरखि वदन सुनि वचन तुम्हारे मेरो हियो सिराईजी॥
बोले मधुर मातसों बानी भक्तनके सुखदाईजी॥२॥

दोहा–मैया बन नहिं जायहैं, ग्वालघिरावत गाय ॥
दौरत पांयपिरात तब, बैठ रहों तरुछाय ॥
चौबोला–बैठरहों तरुछांय नमानें बूझदेखि बलिभाईजी ॥
देहि आपनी सोंह दिवाई सांच कहत मैं माईजी ॥ २ ॥
यह सुनतहि यशुमति रिसयानी ग्वालन गारि सुनाईजी ॥
मैं पठवत लरिकहि बनजाई आवहि मन बहलाईजी ॥ १ ॥
अबहीं मेरो मोहन गैया जानहिं कहा चराईजी ॥
अति बारो मेरो सुत कान्हा मारत ताहि रिगाईजी ॥
कोउ न जानत चरित श्यामके हरि जनके सुखदाईजी ॥
मोहि लियो हरि मन जननीको मधुरे वचन सुनाईजी ॥ २ ॥

अथ चकई भौंरा खेलनकी लीला ॥

दोहा–कछुक खाय सोये हरी, प्रात जगाये माय ॥
कियो कलेऊ तब कछू, जननी सों कह्यो आय ॥

चौबोला–जननी सों कह्यो आय चकइ भौंरा दे कहत मुरारीजी
खेलत रहिहौं ब्रजकी खोरी तब बोली महतारीजी ॥
आरेमें राखे कहि दीनो तुमहीं लेहु निकारीजी ॥
ल्याये तुरत निकारि मगन भये सुन्दर रंग निहारीजी ॥ १ ॥
बारबार हरषित मुख भाषे तो बिन राखे कोरीजी ॥
बिहँसि चले फेरत चक डोरी खेलन ब्रजकी खोरीजी ॥
जैसेइ आप सखा सब तैसे सुन्दर सब इक जोरीजी ॥
निरखि निरखि छबि गोप किशोरी वारवार तृण तोरीजी ॥२॥
दोहा–सबके मन मोहन बसे, चितवत ब्रजकी बाल ॥
सबके मन यह बासना, होंय पती नँदलाल ॥
चौबोला–होंय पती नँदलाल सकल गोपिनके मन यह भाईजी॥

सबके मनकी रुचि पहिचानी भक्तनके सुखदाईजी ॥
कोऊ कौने भाव हरीको रटहि जो मन चित लाईजी ॥
तो प्रगटत ताको हरि तैसे प्रभु त्रिभुवनके राईजी ॥ १ ॥
भक्तवत्सल भगवान हरी सों संतनके सुखदाईजी ॥
नारि पुरुष कोऊ किन होऊ रहत प्रेम बशमाईजी ॥
गोपिनके यह ध्यान सदाई बिसरत इक क्षण नाईजी ॥
हरि उनके मनकी रुचि जानी करत बात मन भाईजी ॥ २ ॥

दोहा–खेलतमें टोकत हरी, मारग रोकत जाय ॥
चकई भौंरा डोरिलै, भूषणसों अरझाय ॥

चौबोला–भूषण सों अरझाय काऊ सो हँसि हँसि वदन फिराईजी
काऊ सों दृग वदन मरोरत काऊ सों मुसकाईजी ॥
अँखियांदे मटकाय हँसत अरु सबको देत हँसाईजी ॥
युवतिनके मन बसे कन्हाई देखे बिन न सुहाईजी ॥ १ ॥
हरिको खेलत माँझ खिजावें गारी गाय सुनावेजी ॥
गेंद उरोजनमाहिं दुरावे यहि विधि अंग छुवावेजी ॥
कंचुकि फारि आपही लेहीं यशुदहि जाय बतावेजी ॥
चलहु तुम्हें बोलत नँदरानी भुजगहि हरिहि डरावेजी ॥ २ ॥

अथ राधाजूके प्रथम मिलनेकी लीला ॥

दोहा–जों ब्रजबंनितननेहवश, आनँद घन छविरास ॥
रसिक पुरंदर सांवरो, ब्रज में करत बिलास ॥

चौबोला-ब्रज में करत बिलास खेलन ब्रज निकसे कुँवर कन्हाईजी
मेघ श्याम तन पीत पिछौरी अति छवि परम सुहाईजी ॥
मोरपंख शिर मुकुट बिराजै कुंडलकी छवि छाईजी ॥
दशनदमक दामिन द्युति थोरी निरखत मदन लजाईजी ॥१॥

गये यमुनके तट मनमोहन संग सखा कोउ नाईजी ॥
औचक दृष्टि परी तहँ राधा रूप गुणन अधिकाईजी ॥
नील बसन तनकी छबि गोरी रोरी भाॅल[1] लगाईजी ॥
बेनी पीठ ढरत झकझोरी दिन थोरेकी जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—अॅनुपम[2] छबि लखि छकि रहे, रीझे श्याम कन्हाइ ॥
संगलरिकिनी देखि तब, चितै रहे टकलाइ ॥
चौबोला-चितै रहे टकलाइ नैन नैनन मिलपरी ठगोरीजी ॥
बूझत श्याम कौन तुम गोरी दीसत हो अति भोरीजी ॥
रहत कहां काकी हो बेटी देखि नहीं ब्रज खोरीजी ॥
काहेको हम ब्रजतन आवें खेलत अपनी पोरीजी ॥ १ ॥
सुनत रहत श्रॅवणनि[3] नँद ढोटा ब्रजके माँहिं सदाईजी ॥
दधि माखन चोरीकर खावत घर घर ब्रजमें जाईजी ॥
तुम्हरो कहा चोर हमलेहैं बिहँसित कह्यो कन्हाईजी ॥
आवहु किन ब्रज मांझ हमारे खेलहु संगनित आईजी ॥ २ ॥
दोहा—पूरब प्रीत नजानहीं, रसिक शिरोमणि नाम ॥
बिहारन भोरी राधिका, भुरे लई घनश्याम ॥
चौबोला-भुरे लई घनश्याम प्रथमहीं प्रीति दुहुन मन मानीजी ॥
गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटानी कहत श्याम सुखदानीजी ॥
खेलन कबहुँ हमारे आवो मन में जिन सकुचानीजी ॥
दूर नहीं कछु सदनॅ[4] हमारो टेरत सुनिं हो बानीजी ॥ १ ॥
लीज्यो मोहिं टेर नँद पौरीं कान्ह नाम सुन गोरीजी ॥
ताते साथ कीजियत हमहूं दीसत सूधी भोरीजी ॥
तुम्हें बबा वृषभानु दुहाई आवहु हमरी वोरीजी ॥
गैया गिनानि नंद जब ऐहैं तब मिलिहैं तिहिं ठोरीजी ॥ २ ॥

१ माथा। २ जिसकी उपमा नहो। ३ कान। ४ घर।

दोहा–खिरक मांझ मैं पायहों, ऐहों दुहावन गाइ ॥
रसिक शिरोमणि लाड़ली, इम संकेत बुलाइ ॥
चौबोला–इम संकेत बुलाइ हरीकी गूढ बात सुन पाईजी ॥
मनहीं मन प्यारी मुसकाई श्याम हँसे मन माईजी ॥
गुप्त प्रीति परगट नहिं कीनी दोउअन हृदय दुराईजी ॥
मन मोहन अरु प्यारी जावत घरको नैन चलाईजी ॥ १ ॥
मनमें डरइयो श्याम सलोनो चली सदन सुकुमारीजी ॥
जानी भई अबार ताहिते मान त्रास अतिभारीजी ॥
कोजैहै खेलन इनके घर कहति सखिनसों प्यारीजी ॥
चलहु वेगि अपने घर आली भैइत बहुत अबारीजी ॥ २ ॥
दोहा–हृदय प्रेम अंतर सुखी, कहत सखिनसों जात ॥
गई भवन कीरति कुँवरि, पूछति तासों मात ॥
चौबोला–पूछति तासों मात अबेलौं कहां अवार लगाईजी ॥
गैया खिरक देखि मैं आई यों जननी समुझाईजी ॥
ऐसे कहि माता वहकाई अंतर बसे कन्हाईजी ॥
बिरह बिकल तन गृह न सुहावै श्याम मोहनी लाईजी ॥ १ ॥
चंचल चित्त पुलक तन आवै खान पान नहिं भावैजी ॥
मात पिताको मानति त्रासा नैनानि दरशनचावैजी ॥
कहति दोहनी देरी मैया ऐसे वचन सुनावैजी ॥
घरि इक लगहि जो गाय दुहावत तो तू जिन उत आवैजी॥२॥
दोहा–लई मातसों दोहनी, चली दुहावन गाय ॥
मन अटको नँदलालसों, गई खिरक समुहाय ॥
चौबोला–गई खिरक समुहाय कहतिकब देखों कुँवरकन्हाईजी॥
खिरकमिलन मोसों कहि दीनो लीनो मनहिं चुराईजी ॥
देखे जाय तहां हरि नाहीं भई चकित मन माईजी ॥

कबहुँ कहत कबहूं उत डोलत बोलत मुख कछु नाईजी ॥ १ ॥
देखे नंद संग हरि आवत लखि मन अति हरषाईजी ॥
देखी श्याम राधिका ठाढी लीनी निकट बुलाईजी ॥
कह्यो महर लखि खेलहु दोऊ दूर जाहु कहुँ नाईजी ॥
सुनि वृषभानु सुता इत आई साथ खिलाहु कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—देखतिं रहियो श्याम तन, मारहि जिनको उगाय ॥
नंद बबाकी बात सुनि, कहति लाडिली आय ॥

चौबोला—कहति लाडिली आय महरदीने मोहिको सँभराईजी॥
राधे बांह गही हँसि हरिकी जान देत कहुँ नाईजी ॥
कहति तुम्हें कहुँ जान न देहों जैहो तौ गहिल्याईजी ॥
मेरी बांह छाँड़दे राधा करत श्याम चतुराईजी ॥ १ ॥
खिजहि महर हम परकहुँ आई सुनहु बात नँदनन्दाजी ॥
तुमरी बाँह न तजों कन्हाई दोउ मन अति आनन्दाजी ॥
परम नागरी कुँवरि राधिका अति नागर ब्रजचन्दाजी ॥
करत आपनी घात दोऊ मिल बँधे प्रेमके फन्दाजी ॥ २ ॥

दोहा—ब्रजचरित्र हित तनुधरे, समुझि पुरातननेह ॥
युगलबिहारी कुंजके, चलन चहत बनगेह ॥

चौबोला—चलन चहत बनगेह कन्हाई दीनी घटाउठाईजी ॥
गरज मेघ बादर तिहिंकाला भूमि चहूं दिश छाईजी ॥
पवन झकोर चली झकझोरी चपला चमक सुहाईजी ॥
है गइभूमि सकल अँधियारी तैसी तरुकी छाईजी ॥ १ ॥
डरेदेखि अति कुँवर कन्हाई लखि बोले नँदराईजी ॥
कान्है संगलिये घरजारी श्यामघटा झुकिआईजी ॥
लिये बाँह गहि कुँवर कन्हाई चले युगल हरषाईजी ॥
नवल राधिका नवल बिहारी पुलक अंग छबिछाईजी ॥ २ ॥

दोहा–नवलनेह नव रंगमन, नवल कुंज नव भार ॥
नवल सुगंधी तरु सुमन, गुंजतभवेर अपार ॥
चौबोला–गुंजत भवँर अपार सुभगयमुनाजल पवनझकोरेजी॥
उठत श्याम छवि कुंजहिलोरे लखि मन होत न थोरेजी ॥
बनज विपुल बहु रंगसुहावन चारुपुलिन चहुँ वोरेजी ॥
गये युगल तह रसिक रसीले यमुना तट शुभ ठोरैजी ॥ १ ॥
विहरत विविध विलास बनहिंमें युगलरूप छबि छावैजी ॥
गुण गावत मुनि वेद शेश शिव ब्रह्मा पार न पावैजी ॥
बन विहार नँदलाल कियो सो आति शुभ कहत न आवैजी ॥
वेद भेद पावत नहिं जाको कौन कवी सो गावैजी ॥ २ ॥
दोहा–चले सदन हरि कुंजते, प्यारीगेह पठाय ॥
ताकी सारी आपले, दियो पीतपटताय ॥
चौबोला–दियो पीत पटताय बादर सब जहां तहां दिये उड़ाईजी
आये सदन श्याम सुखदाई लखि यशुमति हरषाईजी ॥
ओढे देख शीशपर सारी मनधौं कहति कहां पाईजी ॥
पीत पिछोरी कहां गमाई तब यशुमति मन आईजी ॥ १ ॥
ब्रज युवती भुरये यह जानी आंख पिछानी माईजी ॥
पूँछति हँसि हरिसों नँदरानी तरुणिन बुद्धि सिखाईजी ॥
पीत पिछौरी कितहि बिसारी सारी कहां ते आईजी ॥
जानि लई जननी हरिजानी तब इक बुद्धि उपाईजी ॥ २ ॥
दोहा–गैयाले यमुना गयो, तहां भराति पनिहारि ॥
बिडुरिगाय जिततित चलीं, भाजिगई सब नारि ॥
चौबोला–भाजि गई सब नारिं पिछोरी ले भाजी इक नारीजी ॥
बहुत बचाई बंसी ताकी हौंले भाज्यो सारीजी ॥
मैं पहिंचानत वाय पिछौरी ले भाजी सो ग्वारीजी ॥

घरले आवत जाय मैयामैं ऐसे कहत मुरारीजी ॥ १ ॥
पीताम्बर ताको हरिकीनो हरि गति जानि न जाईजी ॥
कहत कि ले आयो मैं जाई मात दिखायो आईजी ॥
राधागई सदन समुहाई दोहनि दूध भराईजी ॥
परमप्रीति हरि बसन दुरायो जननी द्वार बुलाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहति और की औरही, जननी देखति दौरि ॥
उरलगाय कहने लगी, दीठलगी कहुँठौरि ॥

चौबोला—दीठलगी कहुँ ठौरि बूझती नेह विकल ह्वै माईजी ॥
कहाभयो राधा तोंहि प्यारी जातें गइ मुरझाईजी ॥
अबहीं खरक गईतूनीके कौनव्यथा ह्वै आईजी ॥
एक लरिकनी संगही मेरे अहि कारेतिहिं खाईजी ॥ १ ॥
मुर्छे परी वह धरणि मझारी मैं डरपी जियभारीजी ॥
श्याम बरन इक ढोटा नंदको कहत ताहि बनवारीजी ॥
जानति नाहिं कौनकी बारी कछु पढिके उन झारीजी ॥
अब कछु नीके नेकभयोरी सुनि डरपी महतारीजी ॥ २ ॥

दोहा—अतिप्रबीन[1] श्री राधिका, दईमात[2] समुझाय ॥
सुन जननी राधा वचन, उरसों लईलगाय ॥

चौबोला—उरसों लई लगाय कहति यह बिधना[3] आज बचाईजी॥
एक सुता द्वै तात कठिन पारि देवन द्वारेपाईजी ॥
बची सर्पते कुँवरि लाडिली भईआज कुशलाईजी ॥
घरनाहिं रहत फिरत भइ हिरनी खिजी कुँवरि सों माईजी ॥१॥
कितनो कहत तोहिंमैं हारी दूरकहूं जिनजावैजी ॥
हैलरिकनी सबनघरमाहीं तू नाहिं नेक डरावैजी ॥
कबहुं खरक कबहूं बनमाहीं कबहुं यमुनतट धावैजी ॥

१ चतुर। २ माता। ३ करतार।

चितै अकाश फिरत पगधरनी बात कहत खिजलावैजी ॥ २ ॥

दोहा–कुशल करी कुल देव अब, विषते लई बचाय ॥
शीतल जलले तुरतही, दीनी मात न्हवाय ॥

चौबोला–दीनी मात न्हवाय बारही बार कहत कछुखारीजी ॥
अब कहुँ खेलन दूर न जारी मान कह्यो मेरी प्यारीजी ॥
यह सुनि हँसत मनहिं मन प्यारी हृदय ध्यान बनवारीजी ॥
कहति दूर अब कहूँ न जैहौं खेलहुँ घरहि मँझारीजी ॥ १ ॥
तिनके चरित कहा कोउ जाने शिव विधि पात न पाराजी ॥
जनरंजन भंजन विपतीके राधानंद कुमाराजी ॥
गुप्त प्रगट लीला हरि ठानी ब्रजमें युगल बिहाराजी ॥
देख बालछबि अति सुन्दर सब गुरुजन होत सुखाराजी॥२॥

दोहा–नव किसोर चित चोर तिय, असुर लखत विकराल ॥
सर्व रूप सब घट बसत, सब विधि करन कृपाल ॥

चौबोला–सब बिधि करनकृपाल सर्वते परे सकल घटमाईजी॥
सर्वोपरि सब गुणके लायक हरी सकल फलदाईजी ॥
सर्व आदि हरि अंतर्यामी जनकी करत सहाईजी ॥
मायाब्रह्म कृष्ण अरु राधा अगम अगाधि सदाईजी ॥ १ ॥
बसे श्याम श्यामा उर माहीं देखे बिन न सुहाईजी ॥
खेलन मिस वृषभानुकिशोरी नंद महर घर आईजी ॥
टेरत मधुर वचन सुखदाई घरहैं कुँवर कन्हाईजी ॥
सुनत श्याम कोकिल समवानी जानि लई मन माईजी ॥ २ ॥

दोहा–कहत रहे कछु मातसों, सो सब गये बिसार ॥
तू पहिचानतमाय इन, कहत बारही बार ॥

चौबोला–कहत बारही बार कालहमैं गैलभूलगयो माईजी ॥
बांह पकरिमोको इन आन्यो दीनो घर पहुँचाईजी ॥

तो सकुचति आवत इतनाहीं मैं दे सौंहबुलाईजी ॥
अति नागर जननी हिरदे में दियो प्रेम उपजाईजी ॥ १ ॥
कहति मात हरिसों मन हर्षित भीतरलेहु बुलाईजी ॥
लखि प्यारी आनंद भयो हरिके चले लेन सुखदाईजी ॥
नैनसैन मिल दोउ सुखपायो बिरहाकिताप नशाईजी ॥
भये मगन दोउ रूप निहारी अति आनंद मनमाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहत श्याम इत आउ किन, तुमको मात बुलाय ॥
बांह पकरि ल्याये दई, जननी ढिग बैठाय ॥

चौबोला—जननी ढिग बैठाय हरषि मन यशुमति रही निहारीजी
बूझति नंद महर की रानी हँसि हँसि बारहि बारीजी ॥
ब्रजमें तोहिं न कबहुँ निहारी कौन गांव तेरो प्यारीजी ॥
कहा नाम है तेरो कोहै तात कौन महतारीजी ॥ १ ॥
भूलिगयो हो काल्ह कन्हाई भली करी तू ल्याईजी ॥
धन्यकोख जिन तोको धारी धन्य घरी जिहिं जाईजी ॥
देख रूप यशुदा अभिलाषी विनती प्रभुहि सुनाईजी ॥
बारबार पूँछति नंदरानी कौन महरकी जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—मैं बेटी ब्रषभानुकी, तुमको जानति माय ॥
बहुत बार मिलनो भयो, यमुनाके तटआय ॥

चौबोला—यमुनाके तट आय जानलई वहतो बडी छिनारीजी
हैं लंगर बृषभानु सदाके हरषि कह्यो नँदरानीजी ॥
करी कछू बाबा लँगराई बोल उठी यों प्यारीजी ॥
ऐसे समरथ कब उन पाई हँसि यशुमति उर धारीजी ॥ १ ॥
कहति महिर कीरति हम जोरी यशुमति कुँवरि शृँगारीजी ॥
अब कीजतहों चोटी तेरी कर कंगई निरवारीजी ॥
लैसुमनासुत ओंछ सवारे मोतिनमांग सुधारीजी ॥

माँगपारि वेनी रचि गूंथी निजकर नंदकी नारीजी ॥ २ ॥
दोहा–गोरे मुख वेंदीदई, सो छवि कहिय नजाय ॥
सारी सुरंग निकारिनई, अपने हाथउठाय ॥
चौबोला–अपने हाथ उठाय चामरितिल मेवा बतासेल्याईजी॥
कुँवरि गोद भरि विनये देवा जोरी विधिहिबनाईजी ॥
कह्यो कान्हसँग खेलहु जाई सुनिराधा हरषाईजी ॥
सुन्दर श्याम सुन्दरी प्यारी खेलत आंगनमांईजी ॥ १ ॥
छबिसिंधू दोउ परमअगाधा नंद अबास सुहावैजी ॥
देखरूपकोटिकमदन रति घनदामिनहु लजावैजी ॥
यशुमति दंपति रूपनिहारी आनँद उर नसमावैजी ॥
जो अभिलाषा मनमें आई सोइ भाव दरशावैजी ॥ २ ॥
दोहा–खेलत दोउ झगरनलगे, भरे परम अहलाद ॥
मानहुँ घन अरु दामिनी, करत परस्पर वाद ॥
चौबोला–करतपरस्परबाद अमितछबिअमित वचनरसछाईजी
युगलकिसोर विहार देख मन यशुमति अति हरषाईजी ॥
जात महरि सों कहि सुकुमारी अपने सदन सिधाईजी ॥
यशुमति निरखि कह्यो हरषाई खेल्यो करि नित आईजी ॥१॥
बोल उठे मोहन सुन राधा कत सकुचाति मन माईजी ॥
मैं बोलत तू आवत नाहीं जननी सों सकुचाईजी ॥
तोहिं देखि मैया सुख पावै कितो कारि छोह बुलाईजी ॥
सुनि मोहनके वचन सयानी चितै रही मुसकाईजी ॥ २ ॥
दोहा–विहँसि चली वृषभानुजा, हरि मूरतिउरराखि ॥
कहां हुतीरी राधिका, बूझति जननी भाखि ॥
चौबोला–बूझति जननी भाखि मांगकिन बेनीगूंथबनाईजी ॥
बेंदी भाल लाल किन दीनी किन तेरी गोदभराईजी ॥

खेलत रही नंदके द्वारे यशुमति मोहिं बुलाईजी ॥
जब तहां जाय निकट मैं बैठी तब मोहिं लखि हरषाईजी॥ १ ॥
बूझौनाम तेरो बाबाको मेरो बूझ सुखपाईजी ॥
मोहिंचितै पुनि सुतहि निहारी बिनती प्रभुहि सुनाईजी ॥
मेरे शिर वेनी गुहि दीनी वेंदी लाल लगाईजी ॥
सारीनई मँगाय यशोदा अपने कर पहराईजी ॥ २ ॥
दोहा—विधना सों विनती करी, तिलचामरि दे गोद ॥
तोहिं विहँसिगारीदई, उरकरिके अतिमोद ॥
चौबोला—उर करिकै अति मोदकह्योतोहिंहरषि नंदकीनारीजी॥
वह जैसी तैसी मैं जानी कह्यो अधिक छिनारीजी ॥
तोहिंनामधरि कह्यो बबाको वृषभानुहि दूतारीजी ॥
जबसैं कह्यो ठग्यो कबु तुमहूं तबमोहिंहँसि उरधारीजी ॥ १ ॥
सुनि कीरति राधाकी बातैं भोरी शिशूलखाईजी ॥
बेटी दाँव आपनो लीनो नीक ज्वाबदे आईजी ॥
जो कछुमोहिंकहयो नँदघरनी सो वह करत सदाईजी ॥
हँसि हँसिकीराति कहत सुभाई मनमें अति सुखपाईजी ॥ २ ॥
दोहा—फेरि फेरि यशुदा वचन, बूझति शिशुते माय ॥
सुनि बरसाने की त्रिया, यशुदहिगारी गाय ॥
चौबोला—यशुदहिगारी गाय सुनी बातें कीरति मुसुकाईजी ॥
नंदरानीके जियकी जानी चाहति करन सगाईजी ॥
मेरी सुता विमल चपलासी मेघ श्याम सुतताईजी ॥
बाढ्यो उर आनंद हुलासा कीरति पति ढिग आईजी ॥ १ ॥
समुझिगई कीरति पति पासा आनँद उर नसमावैजी ॥
बातें सब परगट करदीनी प्रीत कि रीत जनावैजी ॥
भये दोऊ आनंद मगन अति सो सुख कहत न आवैजी ॥

नित्य दूलह श्याम श्यामा चार[1] वेद यशगावैजी ॥ २ ॥
दोहा–युगल किसोर स्वरूप धर, वृन्दावन रसखान ॥
नवदुलहिन दूलहसदा, राधा श्याम सुजान ॥
चौबोला–राधा श्याम सुजान वृंदावन दूलह दुलहिन चारैजी॥
गावत नित्य बिहार शेष शिव ब्रह्मा पार न पारैजी ॥
कहत यशोमति सों हरि प्यारे रहत खिलौना डारैजी ॥
राधा जिन लैजाय चुराई आवत सांझ सवारैजी ॥ १ ॥
चितै रहति मुरलीकी घाई मेरो प्राण ता माईजी ॥
तेरे भाये नेक नमाता राखहि वेग उठाईजी ॥
बलहूको पतियाव न माई भीतर राखि छिपाईजी ॥
कहति मात हँसि लालन मेरे कोले जाय चुराईजी ॥ २ ॥
दोहा–नेक नामताको सुनो, ब्रज ते बासनशाय ॥
बिन देखेका सोकहै, लेसो कौन बताय ॥
चौबोला–ले सो कौन बताय आवतही राधाई लेजावैजी ॥
फिर तू री पाछे पछितैहै सो फिर नाहिं बतावैजी ॥
मांगो तब पुनि देहि निकारी अब किन वेग[2] उठावैजी ॥
जननी हरिकी बतियां भोरी सुनि सुनि मन सुख पावैजी॥१॥
बिरुझाने नहिं मानत मोहन जानति यशुमत माईजी ॥
महरि खिलौना जानि हरीके राखे तुरत उठाईजी ॥
भौंरा चकई और मुरलिया गेंद बटा सबल्याईजी ॥
बिहारन प्रभुके अमित खिलौना नाम कहे नहिं जाईजी ॥ २॥
दोहा–कहति यशोमति श्याम सों, पियहु दूध कछुआय ॥
आज प्रात गैया दुही, सोइ दूध प्यामाय ॥
चौबोला–सोइ दूध प्यामाय और मोहिं नेकहु नाहिं सुहाईजी ॥

१ ऋग्, यजु, साम, अथर्वण । २ शीघ्र ।

जो तू कोटि यत्न करि प्यावे नहिं पीवतमैं राईजी ॥
यह धोरीको दूध कन्हाई मात सौंह करि ल्याईजी ॥
तुमते और कौन मोहिं प्यारो राख्यो निज औटाईजी ॥ १ ॥
तातो जानि वदन नहिं लावे फूंकि फूंकि पय प्यावेजी ॥
पय पीवत मोहन अलसाने तब जननी पौढावेजी ॥
उठहु लाल तुम्हरी बलिजाऊं प्रातहि मात जगावेजी ॥
भोर भयो जागहु मेरे प्यारे संगके ग्वाल बुलावेजी ॥ २ ॥

दोहा–हरहु प्यास लोचन हरी, अपनो वदन दिखाय ॥
करहु कलेऊ भ्रात दोउ, पुनि खेलो तुम जाय ॥

चौबोला–पुनि खेलो तुम जाय लेहु अरु जो तुमरी रुचि आईजी
सखा वृंद सब लेहु बुलाई जागहु कुँवर कन्हाईजी ॥
तब हँसि चितये सेजते मोहन उठे श्याम सुखदाईजी ॥
यशुमति जलझारी भरल्याई धोयो मुख निज माईजी ॥ १ ॥
द्वारेते सब सखा बुलाये देखि दरश सुख पायेजी ॥
कियो कलेऊ कछु दोउभाई अरु सब सखा जिमायेजी ॥
गैयन लै बन चले गुवाला मोहन संग सुहायेजी ॥
घर घरके बछरन लै आये चले बनहिं समुहायेजी ॥

दोहा–चलहु श्याम वृन्दाविपिन, कहत सखा समुदाय ॥
बंसीबट यमुना निकट, खेलैंगे तहां जाय ॥

चौबोला–खेलैंगे तहां जाय भली कहि हँसि बोले सुखदाईजी ॥
कोउ टेरत कोउ घेरत धाई शृंगी वेणु बजाईजी ॥
कोउ सुरभी गण गोर चलावत कोउ मिल हेरी गाईजी ॥
हेरी टेर सुनत कह्यो मोहन मोहिंको देहु सिखाईजी ॥ १ ॥
हरि ग्वालन सँग टेर उठाई हँसे सकल नहिं आईजी ॥
अब कै लेहु फेर नहिं आवै तब हँसियो सब भाईजी ॥

गावत खेलत हँसत चले सब सखा वृंद छबि छाईजी ॥
पहुंचे सब वृन्दावन जाई सखन सहित सुखदाईजी ॥२॥

अथ अघासुरवध लीला।

दोहा–दीन बंधु दुष्टन दलन, हरि त्रिभुवनकेराइ ॥
सर्व अंग सुन्दर सुखद, फिरत चरावत गाय ॥
चौबोला–फिरत चरावत गाय तहां अघ आयो गर्व बढाईजी ॥
कंसराय करि कोप पठायो प्रेरित काल नियराईजी ॥
ताके एक बहन द्वै भैया मारे प्रथम कन्हाईजी ॥
एक पूतना जो ब्रजआई बत्सासुर बकभाईजी ॥ १ ॥
तिनको वैर असुर उर धरिकै यह मनमाहिं विचारीजी ॥
आज राजको कारज कीजे भैयन वैर समारीजी ॥
गिरि समान अजगर तनुकीनो बैठ्यो वदन पसारीजी ॥
बन घन नदी रची मुखमाहीं माया कृत अति भारीजी ॥ २ ॥
दोहा–वाही मग निकसे हरी, गाय बच्छ सब ग्वाल ॥
कपट रूप यह असुरहै, जान लियो नँदलाल ॥
चौबोला–जानलियो नँदलाल याहिमैं तुरतहि आज नशाईजी॥
असुर मार भूभार उतारों मन मन कहत कन्हाईजी ॥
ग्वालन अहि पर्वत करि जान्यों वदन कंदरापाईजी ॥
गाय बच्छ पैठे सब धाई देखत तृण हरियाईजी ॥ १ ॥
गाय बच्छ ग्वालन सहित सब तामुख गये समाईजी ॥
कहत परस्पर आज बनहिं में सुरभी चरहिं अघाईजी ॥
असुर सकोरयो वदन तबहिं सब आयगये मुखमाईजी ॥
मानो घन घेरी निशा तहां अंधकार गयो छाईजी ॥ २ ॥
दोहा–अति अकुलाने सकल तब, गाय बच्छ सब ग्वाल ॥
कहत परे कित आय हम, त्राहि त्राहि नँदलाल ॥

चौबोला-त्राहि त्राहि नँदलाल हमारे प्राण गये इहिबारीजी ॥
तुम बिन कौन उबारन हारा लीजे खबर हमारीजी ॥
श्रवण सुनत हरि आतुर वाणी तब चिंता उर धारीजी ॥
पैठे आप अघा मुख जाई भक्तनके दुखहारीजी ॥ १ ॥
अघा असुर उर अति हरषाई लीने होठ मिलाईजी ॥
विद्याधर मुनिवर गंधर्वा भये सोच मन माईजी ॥
अविगत गति भक्तन हितकारी तब इक बुद्धि उपाईजी ॥
मुखते देह दुगुण धरि ताके रूंधे श्वास कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा-सक्यो न असुर सँभारि तब, अतिशय करी पुकार ॥
फूट गयो शिरताहि मग, निकसि ज्योति उजियार ॥

चौ०-निकसि ज्योति उजियार ज्योति सोई स्वर्गलोकको धाईजी॥
बहुरि व ज्योति स्वर्ग ते आई हरिके माहिं समाईजी ॥
अघ मुखते निकरे बाहिर तब सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
कहत सखन आवहु निकसि सब मैं कर लेहुँसहाईजी ॥ १ ॥
गाय बच्छ व्याकुल भये भारी अति डरपे सब ग्वालाजी ॥
जहां तहां हरषे वचन सुनतही मिट्यो तिमिर तिहिं कालाजी॥
बच्छ सहित बाहर सब आये देखे श्याम दयालाजी ॥
हम अज्ञान वृथाभय पावत सहाय हमाहिं नँदलालाजी ॥ २ ॥

दोहा-धन्य कान्ह धनि मात पितु, जिन जाये तुम लाल ॥
गिरि समान मारयो असुर, हौ असुरनके काल ॥

चौबोला-हौ असुरनके काल सुनत कह्यो तुम सब करी सहाईजी
तब मैं मारयो असुर अन्याई हँसि हँसि कहत कन्हाईजी ॥
जो तुम मेरे संग न होते मरतो मोसों नाईजी ॥
देखि अघासुर वध सुरजानी हर्षि सुमन झरि लाईजी ॥ १ ॥
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा गावत गुण हरषाईजी ॥

अघा असुरकी करत बड़ाई हरि माधि ज्योति समाईजी ॥
करत अनेक यत्न मुनि ज्ञानी अंतकाल हरि पाईजी ॥
सो हरि अंतकाल जगपावन बसे अघामुख माईजी ॥ २ ॥
दोहा-जै जै जै प्रभु जगतहित, जगत्राता जगदीश ॥
जाको मारणहूं प्रगट, तारन विश्वावीस ॥
चौबोला-तारन विश्वावीस जैजैकहि हरषि सुमन बरषावैजी॥
अति आनँद निरखत हरि मूरति ग्वाल गाय सुखपावैजी ॥
तबहिं सखनसों बिहँसि कन्हाई ऐसे वचन सुनावैजी ॥
चलहु सकल वंसीबट तहँ अब छाक सबनकी आवैजी ॥ १ ॥
बछरा हांकलेहु अगवाई भोजन करिहैं जाईजी ॥
चले हरषि तहँते बलबीरा वंसीबट समुहाईजी ॥
वंसीबट अति सुभग सुहावन चहुँदिश लता सुहाईजी ॥
चरत बच्छ सब वनके माहीं हरि बैठे बट छाईजी ॥ २ ॥
दोहा-चोर पास बालक सकल, मध्यश्याम सुखदाइ ॥
मोरमुकुटकुंडल सुभग, कोटि काम बलिजाइ ॥
चौबोला-कोटिकाम बलिजाइलकुटकर बाहुबिसालसुहाईजी ॥
गुंजनके आभूषणकीने सो छबि वरनि नजाईजी ॥
सखावृन्द सब सुन्दर सोहत निरखत मदन लजाईजी ॥
करत परस्पर हास विलासा प्रेममगन मनमाईजी ॥ १ ॥
तहां छाक सबके घर घरते आई भारे भरि भाराजी ॥
यशुमति अपने सुतको पठये व्यंजन बहुत प्रकाराजी ॥
छाक पठाई मात कहत हरि हँसि हँसि बारहिबारीजी ॥
सबमिलि भोजन करिये भाई कहत सखन बनवारीजी ॥ २ ॥
दोहा-बन भोजन विधि करत हरि, छाक धरी इकठोर ॥
दोना बहुत पलाशके, ल्याये ग्वाला तोर ॥

चौबोला—ल्याये ग्वाला तोर कछुक फल राखत बनके ल्याईजी
अतिसुन्दर सोभित विधिनाना स्वाद न बरने जाईजी ॥
बैठे मंडल जोर गुपाला मध्य श्याम सुखदाईजी ॥
व्यंजन अमित प्रकार रसाला परसत ग्वाल सुहाईजी ॥ १ ॥
मुरली मुकुट कांखतर लीनो खानलगे अभिरामाजी ॥
मधु मंगल परसैन सुदामा सुबल सुखम श्रीदामाजी ॥
अपर अनेक गोपसुत लीने जेवत मिल बनधामाजी ॥
लेत परस्पर कौर छिनाई देत कबहुँ घनश्यामाजी ॥ २ ॥

अथ ब्रह्माके मोहकी लीला।

दोहा—कबहूँ काउअ देन कह, कबहुँक लेत छिनाय ॥
खट्टे मीठे स्वाद कहि, करत केल सुखपाय ॥

चौबोला—करत केल सुख पाय देखत सुर चढे विमानन माईजी॥
लखि कौतुक हरिके चकृत भये गये विरांचिके पाईजी ॥
कह्यो ब्रह्मसों जाय सकल सुर तुम जो कहत हरि ताईजी ॥
छोर छोर कर खात कौर निज ग्वालन संग कन्हाईजी ॥ १ ॥
हरिमाया मोहे सब प्राणी कहा ब्रह्मा मुनि ज्ञानीजी ॥
सुनि विरंचि सुरगणकी बानी भयो मोह मनमानीजी ॥
गोकुल जन्म कौन यह आयो मैं कछु भेव न जानीजी ॥
परचौले देखों अब बालक बछरा सब हर आनीजी ॥ २ ॥

दोहा—जो येईश भगवान हैं, तो लेहैं मँगवाय ॥
यह विचार मन विधि चल्यो, वृन्दावन समुहाय ॥

चौबोला—वृन्दावन समुहाय चल्यो विधि देख्यो बन तहँजाईजी
पुहुप लता द्रुम परम सुहावन यमुना तट मन भाईजी ॥
अति रमणीक कदम चहुँपासा बंसीबटकी छांईजी ॥

गोप मंडली मंडन मोहन जेंवत कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
देखि विरंचि चकित भ्रमछायो हरे बच्छातिन आईजी ॥
हरि अंतर्यामी सब जानी विधिके मनकी पाईजी ॥
तब पठये द्वैग्वाल कन्हाई घेरहु बछरा जाईजी ॥
इत उत फिरत ग्वाल तहां डोले बछरा पावत नाईजी ॥ २ ॥

दोहा—ग्वाल सकल बनढूंढिकै, फिर आये हरिपाहिं ॥
गये बच्छ बहु दूर कहुँ, खोजहु पावत नाहिं ॥

चौबोला--खोजहु पावत नाहिं रहो तुम यों हँसि कह्यो कन्हाईजी
मैंधौं देखों जाय बनहिंमें चले आप बहराईजी ॥
जब गये दूर बनहिं जगत्राता बालक विधि लिये आईजी ॥
प्रभु लीलाकी गम कछु नाहीं गर्वित विधि पुरजाईजी ॥ १ ॥
राखे बाल बच्छ इक ठोरी निजमाया बशमाईजी ॥
गुणसागर नागर बंसीबट आये कुँवर कन्हाईजी ॥
दीनबंधु भक्तनहितकारी यह उरबुद्धि उपाईजी ॥
मात पिता दुख पावहिं जो ब्रज बाल बच्छ नहिं जाईजी॥ २ ॥

दोहा—बाल बच्छ विधि ले गयो, हरि मन कियो विचार ॥
याविध दुख टारन करौं, रूप सबनके धार ॥

चौबोला-रूप सबनके धार वैसई रूप वैस गुण माईजी ॥
वैसी बुद्धि पराक्रम शीला पहिचाने नहिं जाईजी ॥
रंग रेख जैसो जिहिं मांईं अंग अंतर कछु नाईजी ॥
बोलन हँसन चलन चतुराई टेरन फेरन राईजी ॥ १ ॥
मारन ऊधारन सब कारन सब समरथ सुखदानीजी ॥
तदपि जानि निज दास विरंची करी तासुकी कानीजी ॥
मन भायो ताको हरि कीनो अपनो कर विधि जानीजी ॥
अनजाने ढीठो इन कीनी यह हरि निज मन मानीजी ॥ २ ॥

दोहा—कह्यो श्याम सब सखनसों, घेरहु बछराजाय ॥
सांझ भई ब्रजको चलैं, हर्षि चले समुदाय ॥
चौबोला—हर्षि चले समुदाय हरीके चहुँदिश सखा सुहावेंजी ॥
मध्य श्याम बछरन अगुआये चले सकल ब्रज आवेंजी ॥
वेणु विसाल रसाल बजावत अपने रंगनि गावेंजी ॥
रांभति गाय बच्छ हित लागी ब्रज जन देखन धावेंजी ॥ १ ॥
मोर मुकुट कुंडल बनमाला सुन्दर नैन सुहाईजी ॥
गोपदरज मुखपर छबिछाई मनहुँ चंद अमि आईजी ॥
ब्रज बनिता सब तन मन वारत निरखत रूप लुभाईजी ॥
पहुँचे ब्रजहि श्याम सुन्दरबर सब निज निज घर माईजी॥ २ ॥
दोहा—ग्वाल बाल बछरा हरषि, लिये मात उरलाय ॥
कृष्णचरित जानत नहीं, प्रीति करत अधिकाय ॥
चौबोला-प्रीति करत अधिकाय यशोमति हरिसों वचन सुनावैंजी
बनहिं रात कतकरत ललारे वेग घरहि किन आवैंजी ॥
मैं घर चलों सबेर बनहिंते सखा अबेर लगावैंजी ॥
देखि अगम बन डरोंरी मैया वे मोहिं वहुत डरावैंजी ॥ १ ॥
हरिकी बलि बलि जात यशोदा बार बार पछिताईजी ॥
ल्यावहिं गाय चरायवेहि सब तुम जिन जाहु कन्हाईजी ॥
यह सुनके हँसि कहत मुरारी अब बन जात बलाईजी ॥
लागी भूख बहुत मोहिंहैरी तुरतहि देहि जिमाईजी ॥ २ ॥
दोहा—लेआई माखन तुरत, तबलों खाहु कन्हाय ॥
है जल तप्तहि घामको, तेल परसि ल्यो न्हाय ॥
चौबोला—तेल परसिलो न्हाय जाते सब बनको श्रम मिटजाईजी
भोजन करहु बहुर दोउभाई कहत यशोमति माईजी ॥
तब जननी गहि बांह न्हवाये बालिको लियो बुलाईजी ॥

परमप्रीति परसतहै माई जेंवत दोऊ भाईजी ॥ १ ॥
जेंइ उठे अचवन तब कीने बिरा रोहिणी ल्याईजी ॥
जान उनींदे सेज बिछाई पौढाये दोऊ भाईजी ॥
श्याम राम सोवत दोउ भाई सुखपावत दोउ माईजी ॥
अघ मारचो विधि गर्व नवायो यह कोउ जान न पाईजी॥२॥

दोहा—बाल वत्स नौकृत तिन्हैं, ब्रज बनिता अरु धेनु ॥
पूरब प्रीतिहुते अधिक, करत रहत दिन रैनु ॥

चौबोला—करत रहत दिन रैनु सच्चिदानंद हरि ब्रज माईजी ॥
लगे देन सुख घरन घरहि प्रभु भक्तनके सुखदाईजी ॥
तब विरंचिके मन यह आई देखों ब्रजको जाईजी ॥
ह्वैहैं करत विलाप कलापा बिन बच्छा सब गाईजी ॥ १ ॥
आय विरंचि तुरत तहां देख्यो कौतुक घर घर माईजी ॥
जहां तहां दुहत गाय पशु पालक बालक खेलत पाईजी ॥
देखि विरंचि चकित मन माई हैं ब्रजके वह नाईजी ॥
मैं विधिना सब सृष्टि उपाई यह धौं किनाहिं बनाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कै मोई भ्रममें परचो, हैं हरि लखे न जाय ॥
अंतर्यामी जान प्रभु, यह सब लिये मँगाय ॥

चौ०-यह सब लिये मँगाय अतिहि संभ्रम विधि ज्ञानभुलायाजी।
गयो बहुरि निज लोकहि धाई बाल बच्छ तहां पायाजी ॥
देखे बाल बच्छ जहँ राखे चकित बहुरि ब्रज आयाजी ॥
क्षण भूतल क्षण लोक सिधावै दोऊ ठौर लखायाजी ॥ १ ॥
बरस दिवस यहि भांति बितायो विधि अति भ्रम मन आनाजी॥
मोह विकल अति देखत विधिको सुन्दर श्याम सुजानाजी ॥
प्रगट कियो जन जान आपनो विधिके उर में ज्ञानाजी ॥
हृदय भयो तब शुद्ध लखत हरि ये पूरण भगवानाजी ॥ २ ॥

दोहा–धृकधृक मेरी बुद्धि यह, हरिको नहिं पहिचान ॥
मैं मतिहीन न जानिये, मोह विवस छलठान ॥
चौबोला–मोह विवस छलठान यह अपराधबहुत बनिआयोजी
निज अज्ञान न प्रभुको चीनां विधि मन अति पछितायोजी ॥
भई गिलानी अति जियमाई मन मन बहुत डरायोजी ॥
भयो सोच उरमांझ विशेषी प्रभु परताप लखायोजी ॥ १ ॥
बालक वत्स सहित सब जेते हरिके रूप लखावैजी ॥
शिव ब्रह्मादिक देव जितेका स्तुति जोर सुनावैजी ॥
चरण कमल वंदन प्रभु केरे गंधर्व जन गुण गावैजी ॥
देखि चकित चित भर्मनशायो कृष्ण ब्रह्म दरशावैजी ॥ २ ॥
दोहा–शरण शरण कहि शरणकहि, परचो चरणमेंजाय ॥
अन जाने ढीठोकरी, क्षमिये त्रिभुवनराय ॥
चौबोला–क्षमिये त्रिभुवनराय तिहारी गति कछुपरत न जानीजी
तुमरी माया मांझ भुलानो ढीठो तुम सों ठानीजी ॥
चूकपरी मोते निज भोरे क्षमा करो सुखदानीजी ॥
मैं अपराधी हीन मतीकर परचो मोह वशआनीजी ॥ १ ॥
नाथ न बने तुम्हें मुख मोरे तुम बिन और न केवाजी ॥
मैं ब्रह्मा प्रभु कियो तुम्हारो कहा जानूं तुम भेवाजी ॥
आदि सनातन अजित अजहि हरि तुम देवनके देवाजी ॥
मोसमकोटिन ब्रह्मा तुमरी करत चरण नितसेवाजी ॥ २ ॥
दोहा–बिनजाने जनते बने, सो प्रभु मानतनाहिं ॥
ज्यों शिशु अज्ञानदोष उर,जननी मानत नाहिं ॥
चौबोला–जननी मानत नाहिं पोषताको बहुलाडलड़ाईजी ॥
विकसित चित्त अंकले भरही गिरत धराणि उरलाईजी ॥
तैसेई प्रभु मोको कीजे क्षमिय दोष शरणाईजी ॥

तुमजाने विनजीव सदाई उतपति परलै माईजी ॥ १ ॥
तुम करि कृपा जनावहु जाई सो जाने प्रभुताईजी ॥
मैं विधि एक लोक को साईं जिमि कृमि[1] गूलर माईजी ॥
तुमरे रोम रोम प्रति गाता कोटि ब्रह्मांड निकाईजी ॥
कोटि खद्योत[2] प्रकाश कराई रवि सम होय सो नाईजी ॥२॥
दोहा—अब प्रभु वेग सँभारिये, क्षमिय नाथ अपराध ॥
तुम अविगतिकोजानहीं, हौं प्रभुअगमअगाध ॥
चौबोला—हौं प्रभुअगमअगाधकियोछलमेंविधिअतिअज्ञानीजी॥
करिये विरदकी लाज हरी तुम ममकृत दोष नमानीजी ॥
अब मोहिं शरण राखिये स्वामी दीनबंधु सुखदानीजी ॥
शरण शरण कहि विधि भयमानी कही दीन बहुबानीजी ॥१॥
तब नाहिं बालवच्छ कछु देखे कृष्ण रूपदरशायोजी ॥
कृपाकरी तब श्री ब्रजनाथा हस्तकमल शिरलायोजी ॥
अभय कियो सब सोच मिटायो विधि मन अतिसुखपायोजी ॥
बार बार पद कमल निहोरी करि स्तुति हरषायोजी ॥ २ ॥
दोहा—ज्योति रूप उर पुर बसत, जगतधाम सुख श्याम ॥
अगम निगम नाहिं पावहीं, सो खेलत नँदधाम ॥
चौबोला-सो खेलत नँदधाम अनल[3] जल धरणि पवन नभ[4] काईजी
पांच तत्त्व मिल जगत उपाया अमित भांति प्रभुताईजी ॥
काल डरत जाके भयभारी बांधे ऊखल माईजी ॥
जगकरता पालन संहरता विश्व भरन सुखदाईजी ॥ १ ॥
ते गैयन सँग ग्वालन माहीं ब्रजमें झूंठन खाईजी ॥
बडे भाग्य ब्रज वासिन केरे जिनके रहत बसाईजी ॥
जिनके प्रेम रहत हरि घेरे धनि ब्रजवासी गाईजी ॥

१ कीड़ा-भुनगा । २ जुगनू । ३ अग्नि । ४ आकाश ।

एक ब्रह्म अनीह अविगति फँसे घरनि घरमाईजी॥ २॥
दोहा—धनि बसुदेवहि देवकी, जिनहिं पुत्र करि पाय॥
धन्य यशोमति नंद तुम, हित करि गोद खिलाय॥
चौ०-हित करि गोद खिलाय ग्वाल धनि जिन संग बछरा चरायाजी
चार मुखहि मैं कहा बरनों शेष सहस मुख गायाजी॥
धनि धनि बालक बच्छ जिनहिते नाथ दरश मैं पायाजी॥
परसि चरण सरोज मस्तक सकल पाप नशायाजी॥ १॥
ब्रजको बास देहु प्रभु मोहीं यहै आश मन माईजी॥
रेणु तृण द्रुम लता खग मृग जो तुम्हरे मन आईजी॥
नित्य ब्रजलीला तुम्हारी तुम अनुग्रह पाईजी॥
महत श्रीबृन्दाविपिनको अमित सकत नहिं गाईजी॥ २॥
दोहा—लोक न मोहिं सुहात अब, आन करो विधिकाय॥
मोहिं ग्वालनको भ्रत करौ, दीजिय झूंठनखाय॥
चौबोला—दीजिय झूंठन खाय नाथ यह बरमांगत बलबीराजी॥
ह्वै रहों वृन्दाविपिन रेणुका परसहुँ चरण समीराजी॥
करि स्तुति गदगद मुख वाणी दृगजल पुलक शरीराजी॥
परचो चरण पंकजमें बहु विधि अतिशयप्रेम अधीराजी॥ १॥
तब हँसि बोले गर्वप्रहारी भक्तनके हितकारीजी॥
जाहु आपने धाम विरंची मानहु बात हमारीजी॥
और काहि अब करौं विधाता कर्म धर्म दातारीजी॥
तुमते है यह सब संसारा मम माया अति भारीजी॥ २॥
दोहा—ब्रजकी करहु प्रदक्षिणा, मम आयसु तुमपाय॥
तनके पाप नशाय सब, करहु लोक सुखजाय॥
चौबोला करहु लोक सुख जाय हरी उर हार विधिय पहरायोजी॥
बिदा कियो उर सोच मिटायो विधि अति मन सुख पायोजी॥

पाय प्रसाद हरषि मुखचारी प्रभु आयसु शिरनायोजी ॥
ब्रज दाहिन फिर पाप नशाये बालबत्स सब ल्यायोजी ॥ १ ॥
बार बार चरणन शिरनायो विधि निजलोक सिधायोजी ॥
ग्वालन कछु यह भेव न पायो वही समय दरशायोजी ॥
हरिसों कहत बिलम कहांलाई तुम बिन हम नहिं खायोजी ॥
तुम सब जेवन मांझ भुलाने वत्स दूर ते ल्यायोजी ॥ २ ॥

दोहा—खोजत खोजत थक रह्यो, पाये दूरहि जाय ॥
सो ये अब तुमरे निकट, दीने सब मैं ल्याय ॥

चौबोला-दीने सब मैं ल्याय सखनसों कह्यो श्याम सुखदाईजी ॥
तब सुचते ह्वै रुचि सों ग्वाला रहे सकल मिल खाईजी ॥
भोजन कियो सखन सँग रुचिसों सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
जल अचयो धोये वदन सब यमुनाके तट जाईजी ॥ १ ॥
संध्या समय चले घर ग्वाला मध्य श्याम नँदलालाजी ॥
कांधिनपर छीके धरलीने उर गुंजनकी मालाजी ॥
जन जन भृंग बजावत जाई ब्रज आवत गोपालाजी ॥
घर आये ब्रज मोहन लाला कहत यशोदहि ग्वालाजी ॥ २ ॥

दोहा—अहो महरि बन जायके, मारयो असुर कन्हाइ ॥
सर्प रूप निगिले सकल, कीनी सबकि सहाइ ॥

चौबोला-कीनी सबकी सहाय गिरि कंदरसम रह्यो मुखबाईजी॥
हम देखत तिहिं ठौर हरीने डारयो तुरत नशाईजी ॥
याके बल हम वदनन काऊ फिरत सकल वनमांईजी ॥
जीते असुर बनहिंजे आये हरयो कबहूं नाईजी ॥ १ ॥
बीते बरस कहत ग्वाला अघ आजहि हन्यो सुनावेजी ॥
यह प्रभु लीला अपरमपारा पार न कोऊ पावेजी ॥
मैं बरजत बन जात कन्हाई यशुमति यों समुझावेजी ॥

केती करवरते प्रभु राख्यो तबहूं नाहिं डरावैजी ॥ २ ॥
दोहा-अति विचित्र गतिईशकी, बातन जानीजाय ॥
मानतनींहमेरो कह्यो, खिजतियशोमतिमाय ॥
चौबोला-खिजति यशोमति मायकहतहरिअबबनमेंनहिंजाईजी
प्रभुकी लीला कहत न आवै सुर नर असुर लुभाईजी ॥
पयपीवत पूतना नशाई पटक्यो शिलातृणाईजी ॥
तीन लोक मुखमें दिखरायो दिये वृक्ष ढरकाईजी ॥ १ ॥
बत्स बका अघ बनमें मारे विधिको गर्व नशायोजी ॥
यशुमति यह पुरषारथ देखी तापर हरि समुझायोजी ॥
अघा मार आये नँदलाला घर घर ग्वाल सुनायोजी ॥
सुनि सुनि धाई ब्रजकी नारी निरख श्याम सुख पायोजी ॥२॥
दोहा-मन मन यह सबही कहत, इन सम नहिं कोउ आन॥
ब्रजके राखनहार यह, हैं हमरे पतिप्रान ॥
चौबोला-हैं हमरे पतिप्राण कहति इक सुनहू सखी सयानीजी ॥
हैं हरि जगतपती हम जानी आपुस में बतरानीजी ॥
लहत परम सुख हरिहि निहारी प्रेम मगन मन मानीजी ॥
भोजन मांगत यशुमति पासा ब्रज मोहन सुखदानीजी ॥ १ ॥
खाउ लाल तुमको जो भावे कहति यशोमतिमाईजी ॥
सद माखन व्यंजन विधि नाना जो तुमरी रुचि पाईजी ॥
माखन रोटी देरी मैया और न मोहिं सुहाईजी ॥
खात हँसत मिल संग सखनके रुचि कर कुँवर कन्हाईजी॥२ ॥
दोहा-हँसि बोले हरि मातसों, दुहनी दे मोहिं माय ॥
नंद बबा सिखयोजु मोहिं; मैं दुहिहौं निज गाय ॥
चौबोला-मैं दुहिहौं निज गाय धोरि धूमारि अरु काजरि गाईजी
तुरताहि दुहि ल्याऊं दे मैया ग्वालनते अधिकाईजी ॥

भयो मोहिं बल माखन खाई अब मैं नाहिं डराईजी ॥
तोहिं नहीं पतियारो आवे बूझ देख बलभाईजी ॥ १ ॥
भोरे भाव देखि हँसि माता उरलाये सुखदाईजी ॥
कहति कहां इतनी बुधि पाई हर्षित लेत बलाईजी ॥
लई दोहनी दई मात तब दोहन जात कन्हाईजी ॥
बछरा छोरि तुरत थनलायो लखि जननी हरषाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सखा कहत सब परस्पर, हमहूंते बडियात ॥
दुहन देहु मोहिं कछुक दिन, देखैंको अधिकात ॥

चौबोला-देखैंको अधिकात जबहिं लगि एक दुहो तब ताईजी ॥
दश न दुहों तो नंद दुहाई हँसि हँसि कहत कन्हाईजी ॥
सखा कहत सब झूंठहि मोहन नंद दुहाई खाईजी ॥
प्रात साथ हम तुम मिल दुहिहैं देखेको अधिकाईजी ॥ १ ॥
भली कही यह बात सखा तुम कह्यो कान्ह हरषाईजी ॥
हम तुम होड लगाके भाई प्रात दुहैंगे गाईजी ॥
श्रीव्रषभानु कुँवरि मन माई श्यामहिं विसरत नाईजी ॥
दरश लालसा द्दगन न थोरी देखे बिन न सुहाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुरत श्याम दरशन करी, उठी प्रात चलिजात ॥
जात किते राधा कुँवरि, पूछति कीरति मात ॥

चौबोला–पूँछति कीरति मात कह्यो मैं जात दुहावन गाईजी ॥
दुहत सबेरे गाय गुवाला ताते भोरहि जाईजी ॥
काल्ह तनकमैं बिलम लगाई उठे अहीर रिसाईजी ॥
गईं गाय सब बच्छ पियाई रीती दोहनि ल्याईजी ॥ १ ॥
तुमहूं खिजन लगी तब ताते जात तोहिं कहि माईजी ॥
ऐसे कहि जननी समुझाई चली ब्रजहि समुहाईजी ॥
नंद सदन आई हरि प्यारी दुहत तहां हरि गाईजी ॥

दोउन परस्पर लखि सुख पायो निरखत छवि हरषाईजी ॥२॥
दोहा—राधेहि यशुमति देखि तब, लीनी निकट बुलाय ॥
दंपतिको सुख देखिकै, मुदित यशोमति माय ॥
चौ०-मुदित यशोमति माय युगल लखि अति हरषितमनमाईजी
मथन कह्यो दधि श्रीराधा सों हर्षि यशोमति माईजी ॥
भान कि सौंहं दई तब राधा उठी मथन हरषाईजी ॥
नेत पाणि मन अति अनुरागी माट बिलोवत जाईजी ॥ १ ॥
वैसिय भई श्याम मति भोरी राधा तन टक लाईजी ॥
वृषभहि सों बछरा लेलावत बिसर गये कित गाईजी ॥
दंपति दशा देखि नँदरानी चकित भई मन माईजी ॥
राधा सों कहि प्रगट जनाई किन तोहिं मथन सिखाईजी ॥ २॥
दोहा—निज घर ऐसेहि मथतकै, मोघर आय भुलाइ ॥
मैं नाहिं मथन कियो कबूं, तुम मोहिंसौंह दिवाइ ॥
चौबोला—तुम मोहिं सौंह दिवाइ यशोदा मैं मथ जानत नाईजी॥
तुमरो वचन सकी नाहिं त्यागी तबइ मथनमैं आईजी ॥
तब नँद घरनी मथन सिखायो लखाति प्रिया मन लाईजी ॥
बछरा पद अटकाय लखत हरि दुहन गाय बिसराईजी ॥ १ ॥
दुहनी श्याम मांगि तब लीनी तुरत सखा दइ ल्याईजी ॥
कहत दुहो हरि करो बड़ाई हँसत सखा समुदाईजी ॥
बोले सखा सकल मिल हरिसों कहां तुम रहे लुछाईजी ॥
सुनत सखनकी बात न मोहन प्यारी तन चितलाईजी ॥ २ ॥
दोहा—रहे श्याम इक टक निरखि, प्रिया वदन दृगलाय ॥
भूल गये सब चतुरता, देह दशा बिसराय ॥
चौबोला—देह दशा बिसराय देखि राधे तन यशुमति हेरोजी ॥
यह ढंग हेरी प्यारी तेरे बिसर गयो सुत मेरोजी ॥

ऐसो हाल मथत दधि कीनो भयो हरि चित्र चितेरोजी ॥
नैननिगति लखि खंजन लाजै चंद्रबदन मुख तेरोजी ॥ १ ॥
चपलाहूते चमकतहैरी देखत श्याम लुभाईजी ॥
मेरो कह्यो सुनत कछु नांईं कहा गुणत मनमाईजी ॥
इकटक दीठ तहींते लाई तनकी सुरत भुलाईजी ॥
अबहीं बहुत होतहै तोईं ऐसे ढंगन लगाईजी ॥ २ ॥

दोहा—ऐसे ढंग जिन लावरी, काज नहीं तोहिं धाम ॥
चितयो मतिहि करै इतो, खेलहु मिल सँग श्याम ॥

चौबोला—खेलहुमिल सँगश्याम राधिका कैतू इत मतिआवैजी॥
धेनु दुहनदे मेरे श्यामहिं जिन ऐसे ढंग लावैजी ॥
देखत तोहिं श्याम सुधिजावै तूसुधि बुधि विसरावैजी ॥
सूधे रहि जो ह्यां तू आवै यह ढंग मोहिं न भावैजी ॥ १ ॥
करत अचकरी तू इत आई यह मोहिं नाहिं सुहाईजी ॥
सूधे खेल श्याम संगहिल मिल कहेदेत समुझाईजी ॥
सीखदई प्यारीको ऐसे यशुमति महरि रिसाईजी ॥
बोली प्रिया वचन अति मोमें कछु यक मन सुधि आईजी॥२॥

दोहा—अपनोसुतबरजत नहीं, नित उठ मोहिं बुलात ॥
बिनदेखे मोते कहत, नेकहु नाहिं सुहात ॥

चौबोला—नेकहुनाहिं सुहात कहत तब छोह लगत सुनबानीजी
तब आवतिमैं इहां महरानी अपने मन सुख मानीजी ॥
मुखपावति आवति मैं ताते तुम कछु औरहि ठानीजी ॥
यशुमति सुनि प्यारीकी बातें भोरे भावलखानीजी ॥ १ ॥
प्यारी मनते रोष मिटावत बांह पकरि उरलावैजी ॥
हँसति कहति मैं तोसों प्यारी तूजिन मन दुखपावैजी ॥

१ बिजुली । २ गाय । ३ पुत्र ।

मैं जैसी तेरी महतारी यों यशुमति समुझावैजी ॥
सुनियत महरि सुघर अधिकाई गृह तोहिकाज सिखावैजी ॥२॥
दोहा–सुनि यशुमतिके वचन वर, बोली भोरीबात ॥
टहलकरत मोहिंकोलखै, खिजतमाय सों तात ॥
चौबोला–खिजत मायसों तात यशोमति सुनि राधा सुखपाईजी
श्री वृषभानु लाडिली जानी यशुदा मन हरषाईजी ॥
अति सप्रेम दुलराय कही तब लई बहुरि उरलाईजी ॥
श्री राधाके चितते शीघ्रहि दीनो क्षोभ मिटाईजी ॥ १ ॥
हरि प्यारीकी ये चतुराई कापै बरनी जाईजी ॥
बातनहीं यशुमति भरमाई लीनी सहज सुभाईजी ॥
कहत सखा हरिसों मुसकाई कहा तुम दुहत कन्हाईजी ॥
काल्ह दुहत हे होड लगाई बिसरे आज बड़ाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कम्पत कर दुहनी गिरत, वृषभहि बछरालाइ ॥
सुनि ग्वालनके वचनबर, सकुचे कुँवर कन्हाइ ॥
चौबोला–सकुचे कुँवर कन्हाइ बछर तब दीने खरक चलाईजी॥
आय मात सों कहत कन्हाई टेरत मोहिं बलिभाईजी ॥
मुरली मुकुट देहि पट मेरो सुनि आऊं तहां जाईजी ॥
जननी हरषि तुरत सब दीने लीने कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
चारु पीत पट कटि लपटाई मुरली मधुर बजाईजी ॥
मुरलीमें कहि प्यारी प्यारी गये बुलाय कन्हाईजी ॥
लखि प्यारी हरिकी चतुराई यशुदहि कहत सुनाईजी ॥
जाति घरहिमें प्रातहि आई खरक दुहावन गाईजी ॥ २ ॥
दोहा–खरक ग्वाल पायो नहीं, खोजतिमैं इतआइ ॥
इहां अजिर गैया दुहत, देखे कुँवर कन्हाइ ॥
चौबोला–देखे कुँवर कन्हाइ तनक कर देखरही चितलाईजी ॥

सने प्रेमरसबचन प्रियाके सुनि अति सरल सुभाईजी ॥
कहति कुँवरि सों जान घरहिको यशुमति मन हरषाईजी ॥
हमरो मिलन महरिसों कहियो खेल्यो करि नित आईजी॥१॥
मन हर लीनों कुँवर कन्हाई चली कुँवरि हरषाईजी ॥
गई खरक कर दोहनि लीने चितवत इत उत जाईजी ॥
तहां सखि मिली बहुत सो बूझति कहां अकेली आईजी ॥
प्रात दुहावन मात पठाई मिल्यो ग्वाल कोउ नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–ग्वाल बुलावन इत गई, जात दुहावन गाय ॥
बोल उठे हरि हम दुहैं, दोहनियो इत आय ॥

चौबोला–दोहनियो इत आय हरीने दोहनि देन बुलाईजी ॥
सुनत गई प्यारी हरषाई देखति सखि समुदाईजी ॥
कहत सखी सब मन मुसकाई कहां इन प्रीति लगाईजी ॥
बरसाने यह ब्रजहि कन्हाई कहां दुहावन आईजी ॥
हरि मुख लखि वृषभानु किसोरी प्रेम विबस सुधि नाईजी ॥
मोहन लई दोहनी करते प्रिया प्रीति रस छाईजी ॥
धेनु दुहावत प्यारी हित करि दोहत कुँवर कन्हाईजी ॥
सो सुखकापै जात कह्यो तहां लखति सखी हरषाईजी ॥ २ ॥

दोहा–गोथन लीनो हाथ हरि, बछरा पद अटकाय ॥
दूधधार छाँडत छलन, प्रिया वदन हगलाय ॥

चौ०–प्रिया वदन हगलाय दुहत हरि धेनु सो अति छबिछाईजी॥
प्यारी पास दुहावत ठाढी सो छबि कहत न आईजी ॥
प्यारी तन इक धार पखारे एक दोहनी माईजी ॥
हरि करते पयधार छुड़ाई लसत पिया मुख जाईजी ॥ १ ॥
मनहुं मयंक कलंक पखारी शोभित चंद्र सुधारीजी ॥
कैधौं पयनिधि खोरि चंद्र सुधा लसत कलंक बिडारीजी ॥

लसत नील पट कनक किनारी मोरति मुख हँसि प्यारीजी ॥
होत हिये थोरे नहिं दोऊ बिलमत युगल निहारीजी ॥ २ ॥
दोहा–भरे युगल आनन्द मन, मिलन चहत शकटारि ॥
हाव भाव दंपति भरे, देखति ब्रजकी नारि ॥
चौबोला–देखति ब्रजकी नारि लाडिली हरिपै धेनु दुहाईजी ॥
बिलसत ब्रज विलास मोहनसों तीनलोक सुख नाईजी ॥
दुही कुँवर नँदलाल हर्षि जब श्रीराधाकी गाईजी ॥
दुहनी देत न हँसाति प्रिया तब मांगति हाहा खाईजी ॥ १ ॥
ज्यों ज्यों प्रिया हाहा करि मांगत त्यों त्यों हँसत कन्हाईजी ॥
उरझे प्रेम दोऊ बिवस अति सो सुख बरनि न जाईजी ॥
फिर हाहाकर कहत कन्हाई देहों नंद दुहाईजी ॥
फिर हाहा करि हँसी लाडिली दोहनि दइ सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–हाव भाव करि मन हरयो, कुँवरि विदा हरि कीन ॥
यह छबि निरखि हँसी सखी, चली अग्र परबीन ॥
चौबोला–चली अग्रपरबीन लाडिली हरिको निरखतजावैजी ॥
चलन चहत पगपरत न घरको मनमोहन मन भावैजी ॥
अंतर नेक न हरिसों चावे पुरजन ते सरमावेजी ॥
धिक यह लाज कहति मन माहीं दरशन हानि करावेजी ॥ १ ॥
कछु दिन ज्यों त्यों और बिताऊं दूरिकरो दुखदाईजी ॥
यह विचार मनमें ठहरायो चली सदन हरषाईजी ॥
मुरि मुरि नँदनंदनतन हेरत विरह व्यथातन छाईजी ॥
आगे धरत परत पगनाहीं मन मन मोहन माईंजी ॥ २ ॥
दोहा–चितवत उत हरि खरकते, प्यारी तन मनलाय ॥
भये दृगनकी ओट दोउ, गये सदन सुखपाय ॥

१ दोनों । २ कृष्ण । ३ आंखैं ।

चौबोला—गये सदन सुखपाय राधिका आवति सखियन जानीजी
कहन चहति प्यारी सों सब मिल मन अति आनँद मानीजी ॥
हरषि सबै ठीढी भइ मगमें प्रेम मगन मुसकानीजी ॥
बूझति सखी सबै राधासों कहहु न कुँवरि सयानीजी ॥ १ ॥
और अहीर मिल्यो कोउ नाहीं हरि पै गाय दुहाईजी ॥
यह सुनि चकित भई मति भोरी गिरी धरणि मुरझाईजी ॥
देखि सखी सब आतुर धाईं लइ उठाय उरलाईजी ॥
क्यों नागरी गिरी मुरझाई दोहनि भूमि गिराईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहति सखिन सों लाडिली, मोहिंकारे अहिखाइ ॥
देखि सकल व्याकुल भईं, आपुसमें बतराइ ॥

चौबोला—आपुसमें बतराइ अबहिं यह देखतनीके आईजी ॥
कहा भयो कारे कित खाई देख्यो अहि कहुँ नाईजी ॥
यह तो कारो कुँवर कन्हाई हम कहुँ फूंकलगाईजी ॥
ताकी मुर मुसकन विष याके रोम रोम रह्यो छाईजी ॥ १ ॥
तन मन हगन साँवरो छायो देह गेह विसराईजी ॥
सब सखियन मिल यह ठहराई प्रिया सदन पहुँचाईजी ॥
लेहु महरि यह सुता आपनी देखहु शीघ्रहि आईजी ॥
कहुँ कारे याको डसिखाई गिरी धरणि मुरझाईजी ॥ २ ॥

दोहा—वेगयत्न याको करो, ल्यावहु गुणी बुलाय ॥
ज्यों त्यों हम ल्याई यहां, गयो वदन कुम्हिलाय ॥

चौबोला-गयो वदन कुम्हिलाय सुनतही उठी मात अकुलाईजी
रोवति धाय कंठ लपटाई कहा व्यथा भइ आईजी ॥
प्रात उठी नीके गइ घरते बरजति मानत नाईजी ॥
अतिहि हठीली कह्यो न माने सोइ करत मन भाईजी ॥ १ ॥
डरी मात लखि अंग झुराये शिथिल खेद जल छावैजी ॥

महरि नगरके गुणी बुलाये सुनत सकल उठ आवैजी ॥
थके सकल कछु भेव न पावैं पढि पढ़ि मंत्र जगावैजी ॥
गारुडि हारि रहे मनमाहीं कीरति मन पछितावैजी ॥ २ ॥
दोहा–फिर फिर बूझति सखिन सों, कहो मोहिं समुझाइ ॥
कहत सखी सब महरिसों, हम सब यह लखिपाइ ॥
चौबोला–हम सब यह लखिपाइ आगे हम पाछेते यह आईजी ॥
गिरी धरणि दुहनी ढरकाई तब हम बूझन धाईजी ॥
यही कह्योकारे मोहिं खाई तब हम लई उठाईजी ॥
सो कारो हमहूं पुनि देख्यो लग्यो अधिक विषयाईजी ॥ १ ॥
मानलेहु यह बात हमारी तुमसों कहत जनाईजी ॥
बडो गारडू है ब्रज माहीं नँदको कुँवर कन्हाईजी ॥
देखतही विष जाय वेग तुम ल्यावहु ताहि बुलाईजी ॥
हम सबको यह सांच आय वे तुरतहि लेहिं जिवाईजी ॥ २ ॥
दोहा–गुणी न ऐसो और कोऊ, जैसो कुँवर कन्हाइ ॥
देखौ धौं तुम बात यह एकहि मंत्र जिवाइ ॥
चौ०–एकहि मंत्र जिवाई कीरति यह सखियन मुख सुन पाईजी॥
अपने मनमें सांची मानी सोचरही मन माईजी ॥
इक दिन राधाहू यह वाणी मोहिंको आय सुनाईजी ॥
कीरति चली नंदके धामा यशुमतिके ढिग आईजी॥ १ ॥
अहो गारडू सुवन तुम्हारो यशुदहि कहत सुनाईजी ॥
मेरी सुता लाडिली गोरी विह्वल विकल मुरझाईजी ॥
प्रातहि खरक दुहावन आई तहां कहुँ कारे खाईजी ॥
यह यशहै है वड़ो तिहारो पठवहु नेक कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कीरतिसों यशुमति कह्यो, भइ तुम महरि अयान ॥
मंत्र यंत्र जाने कहा, षटहि बरसको कान्ह ॥

चौबो०—षटहि बरसको कान्ह तुमहिंको दीनीकिन बहकाईजी ॥
यह तुम बूझो गुणिन बुलाई बालक अबहिं कन्हाईजी ॥
मैं चकृत सुन वचन तिहारो अचरज बात सुनाईजी ॥
श्याम भयो कब गारुड मेरो तुम अति आतुर आईजी ॥ १ ॥
अबलौं सुनी न कान कहूं यह गारडु भयो कन्हाईजी ॥
बालक अति अज्ञान अबहि यह मंत्र यंत्र कहां पाईजी ॥
महरि गारडू कुँवरकन्हाई राधा मोहिं सुनाईजी ॥
एकलरिकनी कारे खाई तुरतहि श्याम जिवाईजी ॥ २ ॥

दोहा—मैं आई आतुर इहां, पठवहु नेक कन्हाइ ॥
ममकुँवरी व्याकुल अती, देहैं श्याम जिवाइ ॥

चौबोला—देहैं श्याम जिवाइ यशोदा बडो धर्मयश पाईजी ॥
वेग बुलाय श्यामको दीजै यशुमति सुन मुसकाईजी ॥
अबहिं हती मेरे घरआई कब कारे कहां खाईजी ॥
है राधा मोहन कछु कारण चुपहि रही मनमाईजी ॥ १ ॥
वहां सखी ललतादिक आई सब मिल करत विचाराजी ॥
याहिडसी बन्सीधरकारे चितवन विषकी झाराजी ॥
प्रेम प्रीति दोउ डारतजारा गुणी सकल पचिहाराजी ॥
यह विष जाय तबहिं वे आवैं मोहन नन्दकुमाराजी ॥ २ ॥

दोहा—सखी एक हरि पै गई, तिन सब कह्यो बखान ॥
अहो महरके लाडले मोहन श्याम सुजान ॥

चौबोला—मोहन श्याम सुजान दुहुन यह कित सीखेचतुराईजी॥
आज भोरही खरक मांझ जिन तुमते गाय दुहाईजी ॥
वेग विलोकहु तासु दशा अब तुम निज नैनन जाईजी ॥
अहो अनोखे गाय दुहैया भली दुही तुम गाईजी ॥ १ ॥
घरलौं कुँवरि जान नहिं पाई गिरीधरणि मुरझाईजी ॥

देखत संग सखी सब धाईं ज्यों त्यों गृह पहुँचाईजी ॥
सो अब तनुकी सुधि न सँभारी परी विकल विलखाईजी ॥
सकसकात तनु खेदबहाई क्षण क्षण लेत जँभाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहति मोहिं कारेडसी, कियो यत्न गुणि लागि ॥
ताहि नहीं उपचार कछु, तुम्हरे नामते जागि ॥

चौबोला—तुम्हरे नामते जागि तबहिं सब सखियन मोहिं पठाईजी
यह विष तुम्हरो निश्चय जानी हमको परत लखाईजी ॥
यह कारो अहि रूप तुम्हारो मुसकन विष लगाईजी ॥
वेग चलो जिन गहर लगावो चाहो ताहि जिवाईजी ॥ १ ॥
दरश दिखाय हरो तुम पीरा विरह विकल विलखाईजी ॥
तुम अश्वनीकुमार कन्हाई चलहु न लेहु जिवाईजी ॥
टेर कहत हम सुनियो कानन नजरदीठ नहिं जाईजी ॥
नहिं जावहि तो देहिं प्राण सब नंद द्वार पर आईजी ॥ २ ॥

दोहा—घरनि महर वृषभानुकी, व्याकुल जननी तास ॥
वेग जाय सुधि लीजिये, गई यशोमति पास ॥

चौबोला—गई यशोमति पास कीरती आगम सुनत कन्हाईजी॥
कीनी बिदा सखी मुसकाई चले सदन सुखदाईजी ॥
जो कहुँ डसी भुजंगम प्यारी तो हम लेहिं जिवाईजी ॥
ऐसे कहि हरि निज गृह आये लीने मात बुलाईजी ॥ १ ॥
तुम जानत कछु मंत्र कन्हाई बूझति यशुमति माईजी ॥
कीरति महिर बुलावन आई राधेहि कारेखाईजी ॥
कुँवरि जिवावहु झारहुजाई ह्वैहै अधिक बड़ाईजी ॥
गारुड भयो भले सुत जानी आप श्रवण सुन पाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बोले जननी सों हरी, एक मंत्र मोहिं आत ॥
अहि काट्यो दृष्टिहु परे, मोपै मरन नपात ॥

चौबोला–मोपै मरन न पात सुनतही जानत कहत कन्हाईजी ॥
देवहु प्यारी जाय जिवाई मिलिहै तुमहिं भलाईजी ॥
मात वचन सुनि कीरतिके सँग चले श्याम सुखदाईजी ॥
चली महरि हरि संग लिवाई भानपुरा समुहाईजी ॥ १ ॥
देखीजाय लाडिली जननी अतिहि गई कुम्हलाईजी ॥
शिथल अंग व्याकुल अतिजानी लीनी कंठ लगाईजी ॥
लैके महरि कुँवरिको हरिके परी चरणमें आईजी ॥
अति व्याकुल यह सुता हमारी मोहन देहु जिवाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनी कुँवरि श्रवणन[1] यह, आये श्याम सुजान ॥
धन्य धन्य कहि आपको, हृदय हरष रहिमान ॥
चौबोला–हृदय हरष रहिमान रोम तनु[2] प्रगटहि खेद बढाईजी॥
विह्वल[3] देखि जनानि अकुलाई लखि मन हँसत कन्हाईजी ॥
अंतर भाव भेद हरिजाने भक्तनके सुखदाईजी ॥
जब कछु पढिकै कुँवर कन्हाई मुरली अंग छुवाईजी ॥ १ ॥
तब दृग[4] खोले कुँवरि लाडिली देखे श्याम कन्हाईजी ॥
समुझि सकुचि सब वसन सँभारे देखतिदृग सुखपाईजी ॥
बूझति बात मात सों प्यारी आज कहाहै माईजी ॥
जननी कहति हरषिं उरलाई तोहिंको श्याम जिवाईजी ॥ २ ॥
दोहा–बड़ी आज करवर टरी, करति लाज तू काय ॥
यों कहि अति अनुराग[5] भरि, परी श्यामके पाय ॥
चौबोला–परी श्यामके पाँय यह यश बडो कियो सुखदाईजी॥
सुता हमारी मरत जिवाई धनि तुम कुँवर कन्हाईजी ॥
उर लगाय मुख चुंबन करिकै पुनि २ लेत बलाईजी ॥
धन्यकोख यशुमति रानीकी जहां अवतरे आईजी ॥ १ ॥

---

१ कान। २ शरीर। ३ दुःखित। ४ नेत्र। ५ स्नेह।

कह्यो खान घनश्यामसों कीरति मेवा मिश्री ल्याईजी ॥
बिदा किये देपान हरषि हरि चले शयन सुखदाईजी ॥
महरि मनहिं मनमें अनुमानी जोरी विधिहि बनाईजी ॥
ब्रज घर घर यह खबर चलाई गारुड बडो कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–एक सखी हरिसों कह्यो, भले गारडू राय ॥
प्रगट्यो गारडु नाम अब; लीनी मरत जिवाय ॥
चौ०–लीनी मरत जिवाय मात मन कहति मेरो अति बारोजी॥
अब धो कौन करै निरबारौ है ब्रजको रखवारोजी ॥
जान्यो कठिन बसत ब्रज कारो यह मंतर न बिसारोजी ॥
फिर कारो कहुँ करै पसारो लैहैं नाम तुम्हारोजी ॥ १ ॥
यह गारुडी कहां तुम पाई प्यारी मरत जिवाईजी ॥
अब हम जानी बात तुम्हारी जावहु सदन कन्हाईजी ॥
हँसि वशकीनी घोस कुमारी रसिक मुकुट मणिराईजी ॥
विवस भई सब ब्रजकी बाला गये सदन सुखदाईजी ॥
दोहा–कारो सुत नँदरायको, जाकी लीला नित्त ॥
तिनहीं को हरि डसत है, जिनको उज्ज्वल चित्त ॥
चौ०-जिनको उज्ज्वल चित्त धन्य ब्रज धनि धनि ब्रजकी बालाजी
बिहारन धनि सब ब्रजकी गाई धन्य ग्वाल गोपालाजी ॥
दुहत चरावत हरि हितकारी जिनके सँग नँदलालाजी ॥
प्रात होत बल मोहनलाला गाय बच्छ सँग ग्वालाजी ॥ १ ॥
चले चरावन वन मनमोहन सखा संग लिये गाईजी ॥
देखति मुदित सकल ब्रजनारी जात बनहिं सुखदाईजी ॥
गैया बगर गई बनमाहीं हरि ठाढे तरु छाईजी ॥
सखा लिये सँग सुबल सुदामा खेलत दोऊ भाईजी ॥ २ ॥
दोहा–गुण गावत श्रीकृष्णके, चारत गैया ग्वाल ॥

करत खेल नाना रँगन, गये बन सघन बिसाल ॥
चौबोला—गये बन सघन विसाल कोऊलै गैयन घेरत धाईजी ॥
कोऊले बछरन बिलगावत टेरत कोऊ गाईजी ॥
आप अकेले रहे कन्हाई हलधरहू सँग नाईजी ॥
सखा रहे कित बन बिलमाई मन मन कहत कन्हाईजी ॥१ ॥
गये दूर कहुँ सुनियत नाहीं रांभत बछरा गाईजी ॥
आलस गात जानि मनमोहन बैठे तरुकी छाईजी ॥
सखा वृन्द लीने बलरामा गाय बच्छ समुदाईजी ॥
वृन्दावन घन छांडि सकल मिल गये ताल वनमाईजी ॥ २ ॥

अथ धेनुकवध लीला।

दोहा—देखि भूमि सुन्दर परम, मन हरषे सब ग्वाल ॥
अति रसभर मीठे मधुर, फरे विपुल तरु ताल ॥
चौबोला—फरे विपुल तरु ताल तहां सब गोधन दिये बगराईजी
लगे खान फल मन हरषाई ग्वाल सखा समुदाईजी ॥
अचयो बलरस ताल रसाला अति आनँद उरमाईजी ॥
कह्यो सखन सों कहां कन्हाई सुरत श्यामकी आईजी ॥ १ ॥
चलहु वेग जहां कुँवर कन्हाई बछरन घेरहु जाईजी ॥
बनमें श्याम अकेले जानी हलधरके मन आईजी ॥
टेर दई सब ग्वाल बुलाये आतुर घेरहु गाईजी ॥
तहां असुर इक धेनुक नामा खर स्वरूप बनमाईजी ॥ २ ॥
दोहा—सोयो तरुकी छांयमें, महाबली विकराल ॥
सुनत सोर धायो तुरत, मनहुँ भयंकर काल ॥
चौबोला—मनहुँ भयंकर काल देख सब बालको टेरि सुनायोजी ॥
भाजे जित तित भयके मारे निज निज प्राण बचायोजी ॥
असुर महाबल गर्व बढायो बलिके सन्मुख आयोजी ॥

देखि असुरमन अति रिस करिकै बलिको मारन धायोजी ॥१॥
बलि सँभारि उठ कोप कियो मन चले असुर समुहाईजी ॥
अग्रज भ्राता श्यामसुन्दरको तिहुँ पुर जासु बड़ाईजी ॥
बलिको आवत जान असुर जब मन इक बुद्धि उपाईजी ॥
आय भयो ठाढो सन्मुख तब बलिपर चपर चलाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मारनको धायो असुर, बलि मन तामस आइ ॥
चरण चलाये असुर तब, गहि लीने दोउपांइ ॥

चौबोला–गहिलीने दोउ पाँइ फेरि पटक्यो तरुतालहि लाईजी॥
भयो प्राणविन तरुहि गिराई चली नहीं चतुराईजी ॥
उठ्यो सकल बन घनघहराई तरु टूटे अरराईजी ॥
और बहुत धेनुकपरिवारा दीनेमारगिराईजी ॥ १ ॥
मार्‌यो असुर महा दुखदाई ग्वालन करी बडाईजी ॥
आये सब वृन्दावन माहीं श्यामहिं टेरलगाईजी ॥
चढि चढि द्रुमन पुकारत ग्वाला आवहु श्याम कन्हाईजी ॥
आवहु मधुर बजावहुवेणू ल्याये घेर सबगाईजी ॥ २ ॥

दोहा–अति कोमल तुम्हरे चरण, वनजिन डोलहुलाल ॥
ऐसे टेरत श्मामको, तृषित भये सब ग्वाल ॥

चौबोला–तृषितभये सब ग्वाल तहांकहुंबिछुर रहेबाले वीराजी
गाय बच्छ सब ग्वाल सकल मिल गये यमुनके तीराजी ॥
गोप गाय अचवत भये सबही कालीदहको नीराजी ॥
निकसत सब व्याकुलभये जहांतहां विसरे सुरत शरीराजी १॥
जहँ तहँ रहे लगी विषझारा परे सकल मुरझाईजी ॥
भये मनो बिनप्राण ताहि क्षण ग्वाल बच्छ सब गाईजी ॥
हरिठाढे वंशीवटछाई मनहीं कहत कन्हाईजी ॥
अबहि रहे सब संग चरावत निकासि गये बन माईजी ॥

दोहा—गोरांभन ग्वालन वचन, परत न मोंहिं सुनाइ ॥
टेरत हैं हरि सखनको, तरुचढि हेरत गाइ ॥
चौबोला—तरुचढिहेरतगाइ आहट कछु सुनि कालीदहधाईजी
शोधलेत उत चले कन्हाई ढूँढत बनमे जाईजी ॥
गाय ग्वाल सब मुर्छित पाये जानि लई सुखदाईजी ॥
अहिकाली ह्यां आय समान्यो रहत गरुड भयपाईजी ॥ १ ॥
अचयो इन ताको विष पानी विषते मुर्छा आईजी ॥
अमीदृष्टि प्रभु सकल निहारे उठे तुरत हरषाईजी ॥
देखि कृष्णको अति सुख पायो मिले सकल उठधाईजी ॥
तुम सब मोंहिं छोड़िकै आये बोले हरि मुसकाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कित इत निकसे आय तुम, मैं ढूंढत बनताल ॥
खोजलेत आयो इहां, देखे सब बेहाल ॥
चौबोला—देखे सब बेहाल तुम्हें कहा भयो यहां जंजालाजी ॥
उठे एकही बार बहुरि तुम गाय बच्छ अरु ग्वालाजी ॥
देखि मोंहिं अचरज भयो भारी कियो कहा यह ख्यालाजी ॥
सुनि हरि वचन परम सुखदाई कहत सुनो नँदलालाजी ॥ १ ॥
अचयो तृषित यमुन जल आई गिरे सब तट अकुलाईजी ॥
कारण कछु जान्यो हम नाहीं गये प्राण क्षणमाईजी ॥
यह हम जानी कुँवर कन्हाई तुमहिं जिवाये आईजी ॥
हो तुम ब्रजजनके रखवारे जहां तहां होत सहाईजी ॥ २ ॥
दोहा—बलदाऊकी सुरत करि, चलहु आपने धाम ॥
सखा बोलल्याये बलहि, हँसे देखके श्याम ॥
चौबोला—हँसे देखके श्याम कहत बलि कहां तुमगये कन्हाईजी
रहे अकेले वनमें भैया हम ढूंढे सब ठाईजी ॥
चलहु वेग अब घरको भाई लै आगे सब गाईजी ॥

हेरी देत चले सब ग्वाला हरि गुण गावत जाईजी ॥ १ ॥
गोधन आगेदिये चलाई सखन मध्य दोउ भाईजी ॥
चले ब्रजहि ब्रजजन सुखदाई निरखत मदन लजाईजी ॥
सुनि मुरलीकीटेर सुन्दरी निरखनको उठ धाईजी ॥
आवत बनते धेनु चराई लखति सखा मन लाईजी ॥ २ ॥

दोहा–निरखनको मनभावतो, सुन्दर हरि ब्रजराज ॥
लाज साज सब छांडिकै, धाई तज गृह काज ॥

चौबोला–धाई तज गृहकाज कहति वे आवत हैं दोउभाईजी ॥
सुबल सुदाम श्रीदामा गोहन अपर सखा समुदाईजी ॥
शीश मुकुट कटि कछनी काछे मेघ श्याम छबि छाईजी ॥
कमल वदन करवेणु बजावैं गौरी राग सुहाईजी ॥ १ ॥
भ्रुकुटि विसाल कमल दल नैना गोपदरज छवि छाँईजी ॥
श्रवणनि कुंडल अधिक सुहावन कोटि मदन बलि जाईजी ॥
निरखति मुदित सकल ब्रजबाला घर आये सुखदाईजी ॥
ब्रजजीवन बलि मोहन छबि लखि जननी लेत बलाईजी ॥ ८ ॥

दोहा–यशुमति सों ग्वालन कह्यो, धनि बलि मोहनभाइ ॥
नरतनु धरकोउदेव इन, लियो जन्म ब्रजआइ ॥

चौबोला–लियो जन्म ब्रज आइ यहीहैं सब ब्रजके रखवारेजी ॥
गाय गोपके राखनहारे जीवन प्राण हमारेजी ॥
गर्धव रूप असुर बलिमारयो अरु वहुदनुजबिडारेजी ॥
हम सब यमुना तट मुरझाये सबको श्याम उबारेजी ॥ १ ॥
अब हम काऊते नाहिं डरपत येहैं हमाहिं सहाईजी ॥
बलि मोहनके बल हम डोलत बन बन चारत गाईजी ॥
जब हरि होत सहाय हमारी गाढ परत तब आईजी ॥
यशुमति उभय कुँवर ये तेरे चिरजीवो दोउ भाईजी ॥ २ ॥

दोहा–यशुमति सुनि ग्वालन बचन, गर्ग कही सुधि पाय ॥
कहति मनहिं हरिचरित लखि, प्रगटे देवकोउ आय ॥
चौबो०-प्रगटे देवकोउ आय कहति धनि धनि ये ब्रजमें आयेजी ॥
धन्य धन्य हम सुत करि पाये यशुमतिके मनभायेजी ॥
अतुलित कर्म दुहुँनके जानी दोउ जननी सुख पायेजी ॥
श्याम राम दोऊ नँदरानी हर्ष सहित उर लायेजी ॥ १ ॥
भूखे जानि न्हवाये जननी दीने तुरत जिमाईजी ॥
भोजन करि अचये दोभाई लिये पान सुखदाईजी ॥
पौढे सेज दास हितकारी बिहारन बलि बलि जाईजी ॥
चिन्तामणि हरिजन सुखदाई कालीकी सुधि आईजी ॥ २ ॥
दोहा–विषधर इहां नीको नहीं, वृन्दाबनके पास ॥
यमुनाजल निर्मल करों, कालिहि देहुँ निकास ॥
चौबोला–कालिहि देहुँ निकास मनहिमन ऐसे कहत कन्हाईजी॥
यह मनहीं मन करत विचारा भये नींद वश आईजी ॥
यशुमति हरिको सोवत जानी लगी काजगृह जाईजी ॥
खरे न बोलन देती काउअ घरमें यशुमति माईजी ॥ १ ॥
बलि मोहन सोवत सुखदाई मत कहुँ ये जगि आवेजी ॥
शिव सनकादि दिवस निशि ध्यावे अंत कबहुँ नाहिं पावेजी ॥
ब्रह्म सनातन आनँद खानी नन्द अबास सुहावेजी ॥
देख्यो नंद श्यामको सोवत श्रमित जानि मन लावेजी ॥ २ ॥
दोहा–आप हठीले ये दोऊ, मोहन अरु बलिवीर ॥
करसों पोंछत सुभग तन, करत प्रेमकी पीर ॥
चौबोला-करत प्रेमकी पीर तहां निज पलका लियो मंगाईजी ॥
सोये हरिके ढिंग नँदराई अति आनँद मन माईजी ॥

१ दिन। २ रात। ३ घर। ४ हाथ।

यशुमतिहू पौढ़ी जब अति सुख अर्ध निशा ह्वै आईजी ॥
जाग उठे तब कुँवर कन्हाई कहां गईरी माईजी ॥ १ ॥
सँग सोवत बलरामहिं जान्यो अतिहि श्याम अकुलायोजी ॥
जागे नँद अरु महरि यशोदा तुरतहि गोद उठायोजी ॥
काहे झिझकि उठ्यो मन मोहन दीपक जोर दिखायोजी ॥
सपने गिरचो यमुन जल जाई जनुकिन मोहिं गिरायोजी ॥२॥

दोहा–नित प्रति मैं बरजत रहों, तू हठि यमुना जाय ॥
सुधि रहिगई है न्हानकी, जिन हो लाल डराय ॥

चौबोला-जिन हो लाल डराय संग तब ले पौढे नँदराईजी ॥
किहिं कारण जित तित फिर डोलत वृन्दावन तू जाईजी ॥
अब तू वृन्दा बन जिन जावै तहां धौ रहत बलाईजी ॥
सोये दंपति बीच कन्हाई नींद तुरत ही आईजी ॥ १ ॥
सपनों सुनि जननी अकुलाई नंदहि कहत सुनाईजी ॥
या ब्रजके जीवन दोउ भाई देख्यो स्वप्न कन्हाईजी ॥
यहै यत्न इनको अब कीजै जाय न चारन गाईजी ॥
गृह संपति बहु प्रभुकी दीनी इनते कौन सवाईजी ॥ २ ॥

दोहा–हँसी करत सब गोपगण, ये गउचारन जात ॥
दंपति आपुसमें कहत, बीत गई सबरात ॥

चौबोला–बीत गई सब रात सबे तारागणगये छिपाईजी ॥
गयो तिमिर अंबुज विकसाये कुमुदनि गइ सकुचाईजी ॥
भूलगये सब सोच समाजा यशुमति काज सिधाईजी ॥
प्रातस्नान यमुन नित जावत चले न्हान नँदराईजी ॥ १ ॥
मथन हार ग्वालिन सब जागी जहां तहां मथत सुहाईजी ॥
हरि प्यारी गैयनको हितकारि राख्यो दधिहि जमाईजी ॥
सोहरि हित माखनके काजै मथति यशोमति माईजी ॥

सद्[1]माखन निज पाणि मथन करि धरयो मथनियांमाईजी॥२॥
दोहा-राखतिमाखन श्याम हित, बडभागिन नँदनारि॥
लगी जगावन भोरही, उठहु श्याम बनवारि॥
चौ०-उठहु श्याम बनवारि प्रगट भयो र[2]विहि किरणमहिछाईजी
खोलदेहुदृग कमल कन्हाई मैं तुम्हरी बलिजाईजी॥
सखा द्वार सब तुमहिं बुलावत तुमहित आये धाईजी॥
उठि तिनको मिलकै सुख दीजै करहु कलेउ कन्हाईजी॥१॥
तब हरि उठिकै दरशन दीनों जननी लेत बलाईजी॥
दाऊजी कहि श्याम पुकारे नीलाम्बर उघराईजी॥
मानों घनतें शशि भयो न्यारो मुख छबि सुन्दरताईजी॥
हँसत उठे सुन्दर दोउ भाई गौर श्याम छबि छाईजी॥२॥
दोहा-शयन भ[3]वनते निकसि हरि, बाहर आये श्याम॥
लखि जननी दोऊ सुखी, सुन्दर छबि अभिरा[4]म॥
चौबोला-सुन्दर छबि अभिराम दुहुन कर दतवन दीने माईजी
चौकी बैठ मुखारी कीनी हँसि हँसि दोऊ भाईजी॥
मातन निज निज कर मुख धोये आलस दिये मिटाईजी॥
अचरन सों मुख कमल अँगोछे लाये उर सुख पाईजी॥१॥
कर कलेउ कहुँ जावहु दोऊ कहति यशोमति माईजी॥
मथ्यो मधुर मीठेमैं माखन मिश्री पीस मिलाईजी॥
माखन रोटी दई मातकर जेवत दोऊ भाईजी॥
अरु मेवा पकवान मिठाई लेहु सोई रुचि आईजी॥२॥

अथ कालीदमन लीला॥

दोहा-प्रभुकै मनकी जानिकै, करमन परमहुलास॥
ऋषि नारद मथुरापुरी, गये कंसके पास॥

१ ताजा। २ सूर्य्य। ३ घर। ४ आनन्ददायक।

चौबोला—गये कंसके पास देखिकै उठ्यो भूप शिर नाईजी ॥
करी दंडवत आसन दीनो कृपा करी ऋषिराईजी ॥
नारद कह्यो कुशल नृपराई लखत सोच मन माईजी ॥
तुम प्रताप मुनि कुशल सदाई एकहि सोच गुसाईजी ॥ १ ॥
येदोउ ब्रजमें नन्दकुमारा मोहिं अवतार लखाईजी ॥
कहत जिन्हैं बलराम कन्हाई तिनकी गति नहिं पाईजी ॥
प्रथम पूतना दई पठाई सो नहिं पाछी आईजी ॥
तृणावर्तसे दैत्यपठाये दीने तुरत नशाईजी ॥ २ ॥

दोहा—उनते नहिं कारज सरयो, मुनि मोहिं आवतिलाज ॥
किहिं विधि मारों नन्दसुत, कहो मोहिं ऋषिराज ॥

चौबोला—कहो मोहिं ऋषिराज जानतमुनि हरिकेगुणमनमाईजी
सुनत वचन नृपके ऋषि नारद रहे मनहिं मुसकाईजी ॥
सत्यकही तुम बात भूप यह कहत ऋषी समुझाईजी ॥
ये दोऊ अवतार प्रगट भये इन गति जानि न जाईजी ॥ १ ॥
प्रगट भये ब्रजमें यह आई हैं यह तुम्हरे कालाजी ॥
तुम इनको राखो मतिदोऊ नंद गोपके बालाजी ॥
एक बात मेरे मन आवै करहु कंस भूपालाजी ॥
काली अही रहत यमुना तहां बिकसे कमल विसालाजी ॥ २॥

दोहा—फूल मँगावहु तहांते, देवहु दूत पठाय ॥
जायकहै ब्रजमें सबन, नंदहि दे डरपाय ॥

चौबोला—नंदहिदे डरपाय सुनत यह ब्रजके लोग डरावैजी ॥
ये बातें वेहू सुनपावै तिनपै साहिय न जावैजी ॥
जैहैं अवशि फूलके काजे तहां अहि घात चलावैजी ॥
भलो मंत्र मुनि मोहिं बतायो ऐसे कंस सुनावैजी ॥ १ ॥
धनि धनि कहि पुनि पुनि शिरनायो हर्षि चले ऋषिराईजी ॥

तबहिं कंस इक दूत बुलायो दीनों ब्रजहि पठाईजी ॥
दीनो ताको पत्र लिखाई कहियो नँद सों जाईजी ॥
कोटि कमल कालीदह केरे कालिह देहु पहुँचाईजी ॥ २ ॥

दोहा–नृपति मँगाये काज हित, बनिहैं तुम्हें पठाय ॥
चल्यो दूत आतुर ब्रजहि, जान्यो कुँवर कन्हाय ॥

चौबोला-जान्यो कुँवर कन्हाय आप रहे बनहिं पठाये ग्वालाजी
बिहारन हरि जनके सुखदाई ब्रजजीवन नँदलालाजी ॥
दूतहि आवत जान हरी तब, भक्तनके रछपालाजी ॥
सुन्दर श्याम सुजान खेलत हरि संग गोपके बालाजी ॥ १ ॥
आये नंद यमुन जलन्हाई तबहिं छींक भई बाईजी ॥
महर मलीन भये मन माई रहे सोच वश आईजी ॥
तबहीं चल्यो दूत ब्रज आयो घरहि मिले नँदराईजी ॥
बोलि लिये पाती कर दीनी नृपके वचन सुनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कालीदहके फूलले, कालहि देहु पठाय ॥
जो नहिं फूल पठाय हो, ब्रजकोउरहन न पाय ॥

चौबोला–ब्रज कोउ रहन न पाय गोप नँद उपनँद ये समुदाईजी॥
डारों मार न राखों एकहु दीनी दूत सुनाईजी ॥
जो नाहिं कालिह कमल आवें तो दोउ सुत बांध मँगाईजी ॥
यह सुनि नन्दगये मुरझाई लीने गोप बुलाईजी ॥ १ ॥
और गोप आये जेते सब देखत दूत डराईजी ॥
तिन सबको सब बात सुनाई परी आय कठिनाईजी ॥
कोटि कमल कालीदह माई कौन निकासे जाईजी ॥
कह्यो कालिह मैं फूल न पाई दोउ सुत बांध मँगाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मेरे सुत दोउ नृपति उर, खटकत हैं दिनरात ॥
आज कही सो बात यह, बलि मोहन पर घात ॥

चौबोला—बलि मोहनपरघात कालिहनृप चढि हैं ब्रजपरधाईजी
कोराखै कित जाय भाजि अब बन्यो मरन यह आईजी ॥
सोच श्याम बलिको उरमांई अपने जियको नाईजी ॥
अब उवार दीसतनहिं कोई राखैं इनहिं छिपाईजी ॥ १ ॥
रहै सदन बलि मोहन मोंहि बरु बांधो किन नृपराईजी ॥
नंद वचन सुनि ब्रजवासिनके अधिक उदासीछाईजी ॥
काहू पै कछु कहत नआवै रहे त्रसित मुरझाईजी ॥
मानहुँ चित्र लिखे से ठाढे ब्रजवासी समुदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—नन्दघरनिब्रजनारि सब, जुरमिल करति विचार ॥
अति व्याकुल मनमाहिं सब, रहींनैनजलडार ॥

चौबोला—रहीं नैन जलडार बसत ब्रज जन्महिं गयो सिराईजी ॥
इहि विधि कंस न कबहुँ रिसान्यो करी आज कठिनाईजी ॥
कालीदहके फूल मँगाये को अब ल्यावै जाईजी ॥
भये कंस भय बहुत दुखारे रहेसोचमें छाईजी ॥ १ ॥
कोऊ कहत शरण चलो नृपके अरु कछु नाहिं उपाईजी ॥
ऐसे मिल सब कहत चलहु अब देहु नृपहिं धन जाईजी ॥
यहै सोच में परे सकल मिल चलत न और बसाईजी ॥
घर घर यहै विचार करत सब नन्द भवन ब्रज माईजी ॥

दोहा—खेलत ते आये घरहिं, अंतर्यामी जानि ॥
दृग भरि लिये लगाय उर, देखतही नँदरानि ॥

चौबोला—देखतही नँदरानि मात तन चितये हरि सुखदाईजी
बूझत कत रोवत दुखपाई कहति काय नहिं माईजी ॥
बूझहु जाय तातसों मोहन मैं तुम्हरी बलि जाईजी ॥
तुमहीं काज कंस अकुलावत जिन कहुँ जाहु कन्हाईजी ॥ १ ॥
जाय तातको सोच मिटावो मधुरे वचन सुनाईजी ॥

जान्यो मात पिता दुख पायो गये जहां नँदराईजी ॥
तात दुखित कत तुम अरु माई बूझत कुँवर कन्हाईजी ॥
मोसों बात कहो किन सोई कहा सोच रह्यो छाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कहा कहूं तुमते हरी, लिये गोद बैठाय ॥
जबते तुमरो जन्म है, तबते नृप अकुलाय ॥
चौबोला—तबते नृप अकुलायकेतिइक दीने दैत्य पठाईजी ॥
कुलके देवन करी सहाई लीने तुमहिं बचाईजी ॥
प्रथमहिं अधम पूतना आई शकट तृणा दुखदाईजी ॥
वत्स बका अघ बन में आये कीनी बिधिहि सहाईजी ॥ १ ॥
कालीदहके फूल कोटि अब मांगे हैं नृपराईजी ॥
सब ते परी कठिन यह आई कोकारि लेत सहाईजी ॥
जो नहिं आवैं फूल लिख्यो नृप दीनो पत्र पठाईजी ॥
करों ब्रजहि निर्मूलतेरे सुत दोउअन बांधि मँगाईजी ॥ २ ॥
दोहा—बाबा तुम दुख पातकत, अबलोंकीनिसहाय ॥
रहत ब्रजहिसो देवता, अबहूँ करिहैं आय ॥
चौबोला—अबहूं करिहैं आयलियो जिन सबही ठौर बचाईजी ॥
करलेहैं अब सोइ सहाई मतिडरपौ मन माईजी ॥
सोई कंसहि फूलपठावै ब्रजकोसोच मिटाईजी ॥
सोईकेशगहि कंसहिमारे भूको भार नशाईजी ॥ १ ॥
सब मिल सोई देव मनावो डारो सोच मिटाईजी ॥
सुनत महरि हरि मुखकी बानी भये सुखित नँदराईजी ॥
इष्टदेव को शीशनवायो जहां तहां करी सहाईजी ॥
शरण शरण प्रभु शरण तुम्हारी करहुसहाय पुनि आईजी॥२॥
दोहा—ऐसे विनवत नंदजी, पुनि पुनि देवमनाय ॥
मात पितहि ढंगलायहारि, चले खेलन हरषाय ॥

चौबोला–चले खेलन हरषाय सखनमधि पहुँचे कुँवरकन्हाईजी
कह्यो खेलिये गेंद मँगाई सकल सखन समुझाईजी ॥
श्रीदामा यह सुनत तुरतही गयो धाम निजधाईजी ॥
अपनि गेंदलै आय घरहिते दीनीहरिको आईजी ॥ १ ॥
बाहिर घोष निकास जाय तहां चलो खेलिये भाईजी ॥
खेलन बनहिं गेंद जहां नीके तहांकोउ आय न जाईजी ॥
सखन संगले बाहिर जाई खेलन लगे कन्हाईजी ॥
इक मारत इक भाजत जाई इक रोकत मगमाईजी ॥ २ ॥

दोहा–नाना रंग किलकारिकर, मारत आपुसमाहि ॥
मार भजत जहि गेंद जो, सो मारत पुनि ताहि ॥

चौबोला–सो मारत पुनि ताहि खेलत हरि सखन संग गोपालाजी
यमुना तट तन लीने जाई खेलकरत सब ग्वालाजी ॥
आपुन जात कमलको लालन सखालिये सब ख्यालाजी ॥
कोजाने यह हरिके ख्याला पहुँचे तट नँदलालाजी ॥ १ ॥
श्याम सखा तन गेंद चलाई मोरयो अंग बचाईजी ॥
परी गेंद यमुनाजल माई बिगरयो खेल तहांईजी ॥
पकरी धाय फेंट श्रीदामा देवहु गेंद कन्हाईजी ॥
जान बूझ तुम गेंद बहाई सोइ गेंद देल्याईजी ॥ १ ॥

दोहा–सखा हँसे सब तारिदे, भली करी तुम कान्ह ॥
दीनी गेंद बहाय जल, देहु श्रीदामाहिं आन ॥

चौबोला-देहु श्रीदामाहिं आन सखा सब हरिसों कहत सुनाईजी ॥
शिव ब्रह्मा मुनि पार नपावै सुरन मुकुट मणिराईजी ॥
झगरत सखा गेंदके काजै अविगति जानि न जाईजी ॥
छांडि देहु मम फेंट श्रीदामा कहत श्याम सुखदाईजी ॥ १ ॥
फेंट न गहो कहो मैं तासों देहों गेंद मँगाईजी ॥

छोटो बड़ो न जानत काऊ करत बराबर आईजी ॥
हम काहेको तुमहिं बराबर उपजे नँद घर माईजी ॥
ऐसे अब हम गये बिलाई तुमहिं बराबर नाईजी ॥ २ ॥

दोहा—हम तुम एकहि जोटहैं, तुमते मैं नडराइ ॥
बनहिं मँगाये गेंद अब, चलिये नाहिं धुताइ ॥

चौबोला—चलिये नाहिं धुताइ बहुरि तू करत बराबरि आईजी
तू नहिं जानत मेरी धुताई जानत देत भुलाईजी ॥
प्रथम पूतना शकटा मारयो तृणावर्त दुखदाईजी ॥
वत्स बकासुरवनके माई मारे जानत नाईजी ॥ १ ॥
अब मारौं पुनि देखत तोई जानत मेरी धुताईजी ॥
तुम मारे सो सत्य कन्हाई हमहीं कहा डराईजी ॥
कंस कमल अब देहु तबहिं तुम हमहिं मारियो आईजी ॥
कल्हहि परि है जानि पकरि जब कंस बाँधले जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बहुत अचकरी कर रहे, देत फूल किनल्याय ॥
सांच कहत श्रीदाम मैं, फूलकाज इहां आय ॥

चौबोला—फूलकाज इहां आय देख तोहिं अबहीं ल्यायबताऊंजी
जाके भय तू मोहिं डरावत केश पकरि ढरकाऊंजी ॥
देखोगे तुम देखत मारों नेकहु नाहिं डराऊंजी ॥
कोटि कमल तिहिं आज पठाऊं ब्रजको त्रास नशाऊंजी ॥ १ ॥
कालीदह जल पियत मरे सब सो काली गहि ल्याईजी ॥
लीनी रिस करि फेट छुड़ाई चढे कदम पर धाईजी ॥
श्रीदामाके डर हरि भागे कहत सखा समुदाईजी ॥
रोय चल्यो श्रीदामा घरको कहत महरिसों जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—लेहु गेंदमैं ल्यातहों, कहत श्याम सुखदाइ ॥
यह कहि नटवर रूप हरि, कूद परे जलजाय ॥

चौबोला–कूद परे जलजाय पुकारे सखा सकल हाय हाईजी ॥
भये श्याम बिन बहुत दुखारे रोवत ब्रजतन जाईजी ॥
कोमल तन अति सुभग साँवरो नटवर रूप बनाईजी ॥
जलमें पैठ गये तहां मोहन जहां सोवत अहिराईजी ॥ १ ॥
भूखे ह्वै हैं जानि हरी अब इहिं अन्तर हरिमाईजी ॥
मोसों भोजन मांगि हैं मोहन खेलत ते अब आईजी ॥
यशुमति चली रसोई कारण तबहिं छींक भइ बाईजी ॥
ठिठकरही उरसोचत ठाढी भली भई यह नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–आय अजिर ठाढीभई, चली सो दोष मिटाय ॥
मंजारी सन्मुख फिरी, बहुरि फिरी घरआय ॥

चौबोला-बहुरिफिरी घरआय व्याकुलभई निकरिद्वारलों जाईजी
कहा धौं खेलत हैं मेरे बारे कहति यशोमति माईजी ॥
बांये काग दाहिने खरखर सुनि व्याकुल फिर आईजी ॥
खिन बाहिर खिन आँगन माहीं टेरति मनहिं कन्हाईजी॥ १ ॥
तबहीं चले नंद घर आये दहिने रोय सुनायोजी ॥
सन्मुख गररी करत लराई शिरते काग उडायोजी ॥
आये घरहि यशोदहि देखी अतिहि सोच उरछायोजी ॥
बूझत यशोदहि नंद डराई काहे मुख मुरझायोजी ॥ २ ॥

दोहा–चली रसोई कारने, छींक भई मोहिआज ॥
मंजारी इतते चली, निकरी इतको भाज ॥

चौबोला–निकरी इतको भाज तबहिंते सोच रही मनमाईजी ॥
समुझि कंस नृप पोच मेरे मन त्रास रह्यो अति आईजी ॥
नंद कहत पैठत घर माहीं मोहिं शकुन भले नाईजी ॥
आज कहा यह समुझि न जाई कित बलराम कन्हाईजी ॥ १ ॥
महरि महर मन त्रास जनायो खोजत हरिको जाईजी ॥

सखा सकल इहि अंतर रोवत देखे आवत धाईजी ॥
महरि महरसों आय जनाई बूड़े यमुन कन्हाईजी ॥
सुनि दंपति बूझत अकुलाई कहा कहो समुझाईजी ॥ २ ॥
दोहा–खेलत कदम चढे तबै, कूदपरे जलजाय ॥
कीनो सपनो सत्य हरि, सुनत गिरी मुरझाय ॥
चौबोला–सुनत गिरी मुरझाय रोवत तट यमुनाके नँदराईजी॥
बालक सब नंदहि सँगधाये चले बतावन जाईजी ॥
ब्रजवासिन यह बात सुनी तब उठधाये बिलखाईजी ॥
कहां पऱ्यो गिर कुँवर कन्हाई दीनी ठौर बताईजी ॥ १ ॥
त्राहि त्राहि करि नंद पुकारे गिरे धरणि मुरझाईजी ॥
लोटत अति व्याकुल धरणी पर परन चले जलधाईजी ॥
कहत श्याम तुम अति दुख दीनो मोको बैस बुढाईजी ॥
दीन वचन सुन नंदमहरके रोवत लोग लुगाईजी ॥ २ ॥
दोहा–हरि तुम ब्रज सूनो कियो, कहत सकल अकुलाय ॥
ताक्षण सबको दुख भयो, सो दुख कह्यो नजाय ॥
चौबोला-सो दुख कह्यो नजाय गोप सब कहत नँदहि समुझाईजी
बन्यो मरण सबहीको आई सुनहु महर नँदराईजी ॥
हरि बिनको जीवै ब्रजमाहीं जीवन प्राण कन्हाईजी ॥
मोह मगन अति श्यामसुन्दरको टेरति यशुमति माईजी ॥ १ ॥
माखन धऱ्यो खाउ किन आई कहां तुम बेरलगाईजी ॥
अति कोमल तुमरे मुख योगू जेंवहु लेहुँ बलाईजी ॥
धौरी दूध धऱ्यो औटाई तुमहिं दुही जे गाईजी ॥
सदमाखन अति हित मैं राख्यो आजगये नहिं खाईजी ॥ २ ॥
दोहा–प्रातहि दिये जगायउठ, करिदँतवन दोउभाइ ॥
गये निहाराति पंथमें, खेलत देरलगाइ ॥

चौबोला–खेलत देर लगाइ आय अब बैठो संगदोउ भाईजी ॥
तुम जेवहु मैं लेहुँ बलाई कहति यशोमति माईजी ॥
सोकसिंधुबूडी नँदरानी तनुकी सुधि बुधि नाईजी ॥
श्याम श्याम कहि टेरति व्याकुल आवहु वेग कन्हाईजी॥ १ ॥
ब्रजयुवती सुनि वचन महरिके भरे प्रेम आधीराजी ॥
अकुलानी रोवत सबठाढी बढी कठिन उर पीराजी ॥
बरजति यशुदहि कहिकहि ग्वालिन नीके हैं बलबीराजी ॥
सुत वियोग विकराल मातके वहत दृगनते नीराजी ॥ २ ॥

दोहा–जब कछु तनु में सुधिभई, देखे लोग लुगाइ ॥
तब जानी हरि दहगिरे, पुत्र पुत्र करिधाइ ॥

चौबोला–पुत्र पुत्र करिधाइ युवति सब यशुदहि पकरतजाईजी॥
श्याम वियोग व्यथा तनु छाई व्याकुल हरिकी माईजी ॥
कान्ह कान्ह कहि सकल पुकारत मारत कर[1] उर[2] लाईजी ॥
अति व्याकुल यमुना तट जाई गिरी धरणि[3] मुरझाईजी ॥ १ ॥
मुर्छे परी तनु दशा बिसारी उर हरि मूर्ति समाईजी ॥
ब्रजबासी सब उठे पुकारी कहा करत जल माईजी ॥
संकटमें तुम लेत बचाई अबहूँ करहु सहाईजी ॥
मात पिता रोवत दुख पाई आवहु वेग कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–आय गये बलराम तब, व्याकुल देखी माय ॥
नाक मूंद जल सींचकैं, जननी टेर लगाय ॥

चौबोला–जननी टेर लगाय बारही बार कहतरी माईजी ॥
भयो चेत तब बलितन हेर्यो उर लाये सुख पाईजी ॥
कहत उठी बलरामसों जननी बनहिं तज्यो लघु भाईजी॥
श्याम तुमहिं बिन रहत नहीं क्षण तुमते क्यों रहो जाईजी॥१॥

---

१ हाथ । २ हृदय । ३ पृथ्वी ।

कहति लेआवहु श्यामको जाई मगन सोच रस माईजी ॥
भूखेह्वैहैं ल्यावहुजाई आजगये नहिं खाईजी ॥
कबहुँ कहत बन गये कन्हाई कबहूँ कहत घर माईजी ॥
कित खेलत घर तनकि न आवत आवहु लाल कन्हाईजी ॥२॥
दोहा–मोहविकल जननी लखी, हलधर कहत सुनाय ॥
नीकेहैं हरि धीरधर, कतरोवत दुख पाय ॥
चौबोला–कतरोवत दुख पाय मात तू जिन मनमें भय ल्यावैजी॥
मंति डरपै अपने जिय माई हलधर बोध करावैजी ॥
तेरीसों मैं कहत पुकारी लहन मरनमैं आवैजी ॥
जिन काली भयहोत दुखारी ऐसे कहि समुझावैजी ॥ १ ॥
प्रथमाहिं बकी कपटकर आई तब हते बाल कन्हाईजी ॥
शकटा तृणावर्त पुनि आयो डारे तुरत नशाईजी ॥
वत्स बका अघ बनमें मारे बिष जल लिये बचाईजी ॥
नाग नाथ ल्यावहिं अब नृपको देहैं कमल पठाईजी ॥ २ ॥
दोहा–मोहिं दुहाई नन्दकी, अबहीं आवत श्याम ॥
नाग नाथ लैआवहीं, तौ कहियो बलराम ॥
चौबोला–तो कहियो बलराम सुने हलधरके बैन सिहाईजी ॥
जो कछुकरै सो होय हरी अब भयो चैन मन माईजी ॥
बांह पकरि वलिको बैठायो लैबलाय उर लाईजी ॥
अति कोमल तन धरे कन्हाई गये जहां अहिराईजी ॥ १ ॥
हरिको देखि उरगकी नारी निरखि रही मनलाईजी ॥
कहति कौन तू काको जायो आवत कत इत धाईजी ॥
बारहि बार कहति अकुलाई बेग भाग किन जाईजी ॥
देखै नाग जागके जबहीं होय भस्म क्षण माईजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनत नाग नारी वचन, बोले त्रिभुवन राय ॥

पठियोहै मोहिं कंस नृप, तू यहि देहि जगाय ॥
चौबोला–तू यहि देहि जगाय सुनतही नागिन वचन सुनावैजी ॥
एक फूंकमें तू जरजैहै कहा यहि कंस बतावैजी ॥
अजहूं भाज कह्यो कर मेरो तेरो रूप सुहावैजी ॥
मरो कंस जिन तोहिं पठायो तू कत मरने आवैजी ॥ १ ॥
बालक जानि दया अति मेरे मात पितन दुख होईजी ॥
अरी बावरी याहि सर्पते कहा डरावत मोईजी ॥
जैसो मैं बालक तोहिं लागत अबहिं दिखाऊं तोईजी ॥
तू किन देहि जगाय याहि अब लियो बहुत दिन सोईजी ॥२॥
दोहा–देखों धौं याके बलहि, तू किन देहि जगाय ॥
ले जैहों इहि नाथ ब्रज, यापर कमल लदाय ॥
चौबोला–यापर कमललदाय सुनतही अहिकी नारि रिसाईजी॥
छोटे वदन कहत बडिबानी काल निकट रह्यो आईजी ॥
खगपति सों सरवर इन ठानी तू नाथन कह पाईजी ॥
देखतही ह्वै है जरछारा तू बपुरो क्षण माईजी ॥ १ ॥
बपुरो मोहिं कहति अहिनारी कहत तोहिं समुझाईजी ॥
एकहिं लात खसम तुव मारों तू बपुरी ह्वै जाईजी ॥
सोवत काउ मारियेनाई रीति सदा चलि आईजी ॥
देखौं मैं याकी मनसाई तू पति देहि जगाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जो यह बूझी मरनकी, आय गई है तोहि ॥
तो तू लेत जगाय किन, कहा कहत है मोहिं ॥
चौबोला–कहा कहत है मोहिं सुनतही हरि इक बुद्धि उपाईजी
दाबी चरण पूंछ अहिकेरी उठ्यो उरग अकुलाईजी ॥
आयो गरुड़ जानि भय कीनो सन्मुख लखे कन्हाईजी ॥
अतिहि क्रोध करि गर्व बढायो झपट्यो हरितन धाईजी ॥ १ ॥

दाँव लात लाग्यो अहि करने सहसों फन फटकाराजी ॥
बारबार फुंकार करत अति डारत मुख विषभाराजी ॥
जात फेन उतरात विषहिते जरत यमुन जल साराजी ॥
अहिमद मोचन नाम श्यामको परसत नाहिं विषझाराजी ॥२॥
दोहा–कियो युद्ध बहु उरग तब, मुरे न नेकहु कान्ह ॥
कहति परस्पर नागिनी, यह बालक बलवान ॥
चौबो०-यह बालक बलवान यमुन जल विषज्वाला जरचोजाईजी
याके अंग न परसत तनुको यह अचरजलखि पाईजी ॥
मंत्र यंत्र जानत कछु बालक विष लागतयाहिं नाईजी ॥
सहसों फनन करत अहिघाता बच्यो पुण्य पितु माईजी ॥१॥
तब अहिराज श्याम तन देख्यो इन मेरी पूंछ दबाईजी ॥
अतिहि क्रोध करि हरिके अंग सों लिपटचो आतुर धाईजी ॥
कहत करी इन बहुत खुटाई नख शिख गयो लपटाईजी ॥
दियो दाव हरि अहिको जानी कौतुकनिधि सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तेहिं अवसर सुर सिद्ध मुनि, व्याकुल भये ब्रजआय॥
हरिको रूप निहार मन, उरग नारि पछिताय ॥
चौबोला–उरग नारि पछिताय कहति यह आयो गर्व बढ़ाईजी॥
काल विवस पग इतहि चलायो हरिगति जानि न जाईजी ॥
काली हरिके अंगलपटायो गर्व कियो मनमाईजी ॥
कहत मोहिं जानत नाहिं काहे मैं सर्पनको राईजी ॥ १ ॥
भंजन गर्व गोपाल अहीके गर्व वचन सुन पायाजी ॥
कीनो बपुष विसाल हरी तब बिकल भयो अहिरायाजी ॥
जबहिं श्याम तनु अति विस्तारचो टूटत अंग अकुलायाजी ॥
शरण शरण प्रभु तुम नाहिं जाने नाथ शरण मैं आयाजी॥ २ ॥

१ सर्प-काली । २ देवता । ३ देह ।

दोहा–शरण आपनी राखिये, देहु जीव प्रभुदान ॥
दीन वचन अहिके सुने सकुच गये भगवान ॥
चौबोला–सकुच गये भगवान यहै वाणी गजराजसुनाईजी ॥
गरुड छांडि ताके हित धाये भक्तनके सुखदाईजी ॥
यहै वचन सुन द्रुपदसुताको दीनो बसनबढाईजी ॥
यहै वचन सुन लाक्षागृहते पांडवलिये बचाईजी ॥ १ ॥
यह वाणी सहि जात न श्यामहिं करुणासिंधु दयालाजी ॥
लीनो अंग सकोच देखअति व्याकुल अहि नँदलालाजी ॥
पगसों चापि नाक धर फोरी लइकर डोर गुपालाजी ॥
कूदचढे हरि ताके शीशा मन मन सोचत व्यालाजी ॥ २ ॥
दोहा–मैं यह विधि पै सुनि हती, ह्वै हैं ब्रज अवतार ॥
सोगोकुल हरि अवतरे, मैं जान्यों निरधार ॥
चौबोला–मैं जान्यों निरधार ब्रजहिमैं लियो जन्मसुखकारीजी॥
वारवार पछितात कहत मन किये घातमैं भारीजी ॥
रह्यो दीन ह्वै सकुचि अहीमन स्तुति करन विचारीजी ॥
देख्यो व्याल विहाल कृपाला दियोदरश बनवारीजी ॥ १ ॥
देख दरश मन हरष बढायो तब बोल्यो अहिराईजी ॥
मैं अपराध कियो विनजाने क्षमाकरो सुखदाईजी ॥
तामस योनि कीट विषसान्यों तुमगति जानि न जाईजी ॥
अबकीनो प्रभुमोहिं सनाथा दियोदरश निज आईजी ॥ २ ॥
दोहा–अशरणको तुम शरणहो, कहत वेद सब भाषि ॥
सब अपराध क्षमाकरो, लीजै शरणहिंराखि ॥
चौबोला–लीजै शरणहिंराखि आज प्रभु धनियह शीशहमाराजी
जापर चरण दिये तुमनाथा धनि मम भाग्य अपाराजी ॥
अब ये चरण परसि प्रभु तेरे मिटेदोष दुखसाराजी ॥

रहत रमाउर धारि प्रीतिकरि येपद कमल तुम्हाराजी ॥ १ ॥
शिव विरंचि सनकादिक ध्यावैं रटत समाधि लगाईजी ॥
जे पद कमल सलिल सुरसरिता तीनलोक सुखदाईजी ॥
तेनिजपद पंकज रजपरसित ऋषि पत्नी गति पाईजी ॥
सुर नर मुनि वंदित पद पावन संतरहत रट लाईजी ॥ २ ॥

दोहा—श्री वृन्दावन सो चरण, फिरत चरावत गाइ ॥
विहारन प्रभुजन दुख हरण, भक्तनकें सुखदाइ ॥

चौबोला—भक्तनके सुखदाइ जे पद पंकज परमसुहायाजी ॥
ते प्रभु आजुसुलभ करिपाये करी कृपा यदुरायाजी ॥
गरुड त्रासते इत भजिआयो भलि मोहिं गरुड सतायाजी ॥
जाते दरश भयो प्रभुतेरो सबभयतापनशायाजी ॥ १ ॥
गही नाथ मम प्रभुनिजहाथा आज सनाथ कहायोजी ॥
सुनत दीन काली की वाणी हरि मनमें सुख पायो जी ॥
फन प्रति चरण सरोज छुवाये सब संताप नशायोजी ॥
तब ब्रजनाथ भक्त हितकारी यह मनमाहिं उपायोजी ॥ २ ॥

दोहा—कमल भार यापैधरो, काली ब्रजहिंदिखाय ॥
ह्वै हैं ब्रजके जन दुखित, करों सुखी अबजाय ॥

चौबोला—करों सुखी अबजाय कंसको देवहुँ कमल पठाईजी ॥
काल्ह चढे गो ब्रजपर आई कहत मनहिं यदुराईजी ॥
लीने अहि पर कमल लदाई चले ब्रजहि सुखदाईजी ॥
लियो नाथ गहि अहि उचकाई फन पर कुँवर कन्हाईजी ॥१॥
उरग नारि कर जोर सकल मिल हरिके सन्मुख आईजी ॥
करत विनय अति दीन वचन ह्वै पतिहित हरिहि सुनाईजी ॥
उठी लहर अति मगन प्रेमकी इत यशुमति उरमाईजी ॥
कहति रोय बलराम सों जननी कान्हर आयोनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कहत राम तब मात सों, आवत अबहिं कन्हाय ॥
नेक धीरधर आत हरि, यह सुनि लईबलाय ॥
चौबोला–यह सुनि लई बलाय कहति पुनि मोहन आयोनाईजी
झूंठहि मोहिं प्रमोद करावत कहति यशोमति माईजी ॥
भई बिना सुत व्याकुल माई कहा मेरो लाल कन्हाईजी ॥
गिरिधरणि व्याकुल मुरझाई रोवति सखि समुंदाईजी ॥ १ ॥
कहत कहा मोहन नँदलाला ब्रजबासी अकुलाईजी ॥
तुम बिन यह गति भई हमारी आवहु धाय कन्हाईजी ॥
प्रातहिते जल माँझ समाने तुम बिन क्षण युग जाईजी ॥
धृक जीवन तुम बिन मन मोहन को बसिये ब्रज माईजी ॥ २ ॥
दोहा–व्याकुल रोवत नंदजी, मनु फँणि मणी गमाइ ॥
यशुमति धावत परन जल, राखति सखि गहिबाइ ॥
चौबोला–राखति सखि गहिबाई हलधर कहत सबन समुझाईजी
बिना श्यामकोउ धीर न पावे व्याकुल लोग लुगाईजी ॥
कहत यशोमति नंदहि धृकधृक बारहि बार सुनाईजी ॥
और केतिक दिन जीवोगे अब मरो किन मोहिं नशाईजी ॥१॥
ऐसे दुखमें मरन भलो है कर देखहु मन ज्ञानाजी ॥
मूर्छि परे सुनि तियकी बानी भये नंद बिन प्रानाजी ॥
तबहिं धाय बलि पिता जगायो समुझावत विधिनानाजी ॥
वृथा मरत काहे सब रोई मरत नहीं कहुँ कान्हाजी ॥ २ ॥
दोहा–ब्रजबासिन सों कहत बलि, राखहु दृढ विश्वास ॥
सदा करत अविगति पुरुष, रमा सहित जल बास ॥
चौबोला–रमा सहित जलबास करत हरि मानलेहु ममबानीजी
आवत श्याम धीर उरआनो सत्य लेहु तुम मानीजी ॥

---

१ अत्यानंद । २ सम्पूर्ण । ३ सर्प ।

यमुनाके भीतर तिहिं काला उछल उच्यो तब पानीजी ॥
बोले आतुर हो बलरामा वे आवत सुखदानीजी ॥ १ ॥
सुनत वचन लखि सब उठ आये यमुनाके तट धाईजी ॥
कोऊ जल कोउ बाहर ठाढे दरश आश मनमाईजी ॥
प्रगट भये जल ते तिहिं काला व्रज जीवन सुखदाईजी ॥
कमल भार कालीपर लीने नटवर भेष बनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–भये सुखी व्रज लोग सब, हरि मुख चंद निहारि ॥
निरखि श्यामको रूपबर, मगन सकल नरनारि ॥

चौबोला–मगन सकल नरनारि मनहुं सब बूडत नौकापाईजी
भयो जो सुख लखि मात पिताको सोकोउ सकहि न गाईजी ॥
गद्गद कंठ पुलक तनु हरषित रह्यो नैन जल छाईजी ॥
इकटक लखत चकित सब हरितन मिलन आश मन लाईजी॥ १॥
निर्तत अहि फण प्रति मन मोहन चंदन खौर लगाईजी ॥
श्रवण कुंडल चपल लोचन मुकुट लटक छवि छाईजी ॥
पीत बसन कटि काछनि शोभित मोतिन माल सुहाईजी ॥
नृत्य तांडव करत फण प्रति दुंदुभी देव बजाईजी ॥ २ ॥

दोहा–जै जै ध्वनि भई गगनते, सुरन सुमन बरसाय॥
गावत गुण गंधर्व गुनि, ताने ताल मिलाय ॥

चौबोला–ताने ताल मिलाय उरगकी नारिन स्तुति गाईजी ॥
नाथ अब अपराध क्षमिये दीजै पति सुखदाईजी ॥
राखे निज पद याके शीशा इने बडाई पाईजी ॥
ऐसी बड़ाई औरको प्रभु दई कबहुँ तुम नाईजी ॥ १ ॥
शेष इक ब्रह्मांड शिरधर मन अति गर्व बढायोजी ॥
कोटि कोटि ब्रह्मांड तुम तन इन ये अधिक उठायोजी ॥
सुर असुर नर नाग खग मृग यह सब आप उपायोजी ॥

क्षमिये अब अपराध अहीके शरण तुम्हारी आयोजी ॥ २ ॥
दोहा–सुन अहिनारिनके वचन, करुणामय यदुराय ॥
उतर परे अहि शीशते, यमुनाके तट आय ॥
यमुनाके तट आय श्यामको निरखत सब टकलाईजी ॥
कालीको आयसु हरिदीनी तटपर कमल धराईजी ॥
करहु बास निर्भय सदाई उरगद्वीप तुम जाईजी ॥
तब काली कहि सुनहु कृपाला तुमबाहन धरखाईजी ॥ १ ॥
धनि ऋषि शाप दियो है ताही आय सकत इहांनाईजी ॥
तब मैं भाजि बच्यो इत आई नातरलेतो खाईजी ॥
चरण चिह्नलखि तब फण मेरे परि हैं तव पद आईजी ॥
तूमति अब खगपति भयमाने करहुद्वीप सुखजाईजी ॥ २ ॥
दोहा–और बड़ो सुख कौन है, परस्यो पद सुखदाइ ॥
जे पद भजन प्रतापते, लियो प्रह्लाद बचाइ ॥
चौबोला–लियो प्रह्लाद बचाइ सोई पद चिह्न मेरे शिरमाईजी ॥
जन्मजन्मकोभयो सुखारी अंग अंग सुखपाईजी ॥
उर्गिन सहित नायपद माथा उरगद्वीपको जाईजी ॥
जै जै ध्वनि नभ सुरन बखानी धनि जनके सुखदाईजी ॥ १ ॥
शरण राखि काली अहिलीनो जलते काढि पठायोजी ॥
कठिन गरुडकी त्रास मिटाई चरण चिह्न प्रगटायोजी ॥
धन्य धन्य प्रभु धन्यकही सुर मुदित सुमन झरलायोजी ॥
गये देव निज निज सदन सब हृदय परम सुखपायोजी ॥ ३॥
दोहा–सुरगण सुरलोकन गये, द्वीपपठायो व्याल ॥
विहारनहरि जनके सुखद, आयेनिकसिगोपाल ॥
चौबोला–आये निकसि गोपाल मिले सब धाय धाय उरलाईजी
विरहताप तनुकी सब नाशी निरखतही सुखदाईजी ॥

माता दौरि कंठ लपटाये गद्गद बैन सुनाईजी ॥
नैननीर अति प्रेम अधीरा उरलाये हरिमाईजी ॥ १ ॥
लेतबलाय दोउ करजननी कहि मेरे लाल कन्हाईजी ॥
गये प्राण मानहुँ फिर आये धाय मिले नँदराईजी ॥
नये जन्म आये मनमोहन कहत नंद पछिताईजी ॥
बार बार उरसों लपटायो जियकी ताप नशाईजी ॥ २ ॥
दोहा—मिले रोहिणी सों हरी, प्रेमाकुल लखिताहि ॥
निरखि वदन यशुमति कह्यो, बरजति मानत नाहिं ॥
चौबोला—बरजतिं मानत नाहिं लाल तुम यमुनातीर न जाईजी
तुम बरजे मानत नहिं काऊ करत सोई मन भाईजी ॥
मैंनिश सपने मांझ डरायो सोई प्रगट भयो आईजी ॥
कंस कमलके फूल मँगाये दिये ब्रजलोग डराईजी ॥ १ ॥
आयो यमुना तीर खेलत इहां संग गोपके बालाजी ॥
डारि दियो काऊ दह माई देखतही सब ग्वालाजी ॥
जाय तहां डरप्योमैं भारी देख्यो अहि विकरालाजी ॥
किन पठयो तोको किहि काजै पूछो मोहिं तिहि व्यालाजी॥२॥
दोहा—कमल काज आयो इहां, पठयो मोहिं नृपराइ ॥
तब मैं यह अहि सों कह्यो, सुनतहि उठ्योरिसाइ ॥
चौबो०-सुनतहि उठ्योरिसाइ लियो मोहिं फनपर तुरत चढ़ाईजी
कमल लिये निज पीठलदाई आप गयो पहुँचाईजी ॥
ऐसे जननी बोध करायो सुनत सकल सुख पाईजी ॥
लैलै हरिको उरसों लायो बिरहकी शूल मिटाईजी ॥ १ ॥
श्याम बिना बहु तै दुख पायो सो सब ताप नशाईजी ॥
लखे सखा सब आरत बाढे मिलन चहत मनमाईजी ॥
गये दौरि तिन पास कन्हाई मिले सब कंठ लगाईजी ॥

कहत सखा धनि धन्य कन्हाई कहि सोइ करी तुम भाईजी॥२॥
दोहा–हौ तुम सब ब्रजके सुखद, हति हौ कंस लइजान॥
कहा भयो जो बालहो, हो तुम अति बलवान॥
चौबोला-हो तुम अति बलवान छोटो भलो यदपि सिंहको जाईजी
कहा काज गजराजहिं मोटो नाहक देह बढाईजी॥
तुमहिं गये हमपर रिस करि हरि सो सब देहु भुलाईजी॥
सुनतहि वचन श्याम हँसि दीने मिले बहुरि हरषाईजी॥१॥
मिले विहँसि दोऊ मनमांई हलधर कुँवर कन्हाईजी॥
भेद नहीं जानत यह कोऊ निरखत लोग लुगाईजी॥
धनि बलराम कही तुम सोई करी श्याम सुखदाईजी॥
कहत नंद सों कुँवर कन्हाई मेरे मन यह आईजी॥२॥
दोहा–आज बसैं सब यमुन तट, अति रमणीक सुहाइ॥
यहांकीजिये आज सुख, प्रात होत घर जाइ॥
चौबोला–प्रात होत घर जाइ कंसको दीजे कमल पठाईजी॥
सुनहु तात अब बिलम न कीजे दीजे शकटसजाईजी॥
गोप जाय पहुँचावहु नाहीं चढि हैं ब्रजपर आईजी॥
यह सुनि नंद बहुत सुख पायो ब्रज बासिन मनभाईजी॥
तुरत ग्वाल बहु घरहि पठाये भोजन लिये मँगाईजी॥
भोजन कियो बहुतसुख पाई यमुना तटै समुदाईजी॥
नंदराय तब शकट मँगाये दीने कमल लदाईजी॥
बहुत भाँर दधि घृतके अहिरन काँवरलई सजाईजी॥२॥
दोहा–अपनी सर जे गोपहौ, ताहि कह्यो समुझाय॥
तिनहिं संग करिनृपति ढिंग, पठादियो नँदराय॥
चौबोला–पठादियो नंदराय कंसको दीनो पत्र लिखाईजी॥

१ ऐरावत हाथी। २ सुंदर। ३ किनारा। ४ कांवरि।

कहियो मेरी ओर ते बहु विधि नृपसों ऐसे जाईजी ॥
गयो कमलके काज कालीदह मेरो कुँवर कन्हाईजी ॥
तुम परतापते राजन काली आप गयो पहुँचाईजी ॥ १ ॥
कोटि कमल नृप माँग पठाये तीनकोटि धरेल्याईजी ॥
आयसु होय तो देहुँ पठाई राखे जलहि सजाईजी ॥
तब गोपन सों कुँवर कन्हाई बोलउठे मुसकाईजी ॥
नृपसों लीजो नामहमारो कियो काज मैं जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कमल शकट दधि घृतलिये, चले गोप सबजाय ॥
नृपति पौरि पहुँचाय तब, दीनी खबर जनाय ॥

दीनी खबर जनाय पौरिया तुरतहि भीतर धायोजी ॥
समाचार सब नृपहि सुनाये सुनत कंस भय पायोजी ॥
सुनत बात यह मनहिं डरायो आतुर तहां चल आयोजी ॥
देखे शकट भीर अतिभारी सुधबुध सबहि भुलायोजी ॥ १ ॥
कमल देख नृप अतिहि डरायो लगे व्याल मनु आईजी ॥
नंद विनय सब गोपन भाषी पत्र दियो नँदराईजी ॥
गोपन कह्यो बहुरि नृपराई यह कह्यो कुँवर कन्हाईजी ॥
कियो राजको काज हमहिं यह कालीदहमें जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–नृप हमको जानत नहीं, कहियो मेरो नाम ॥
दीने कमल पठाय अब, और कहो कछु काम ॥

चौबोला–और कहो कछु काम गोप तब हरि संदेश सुनायोजी॥
भीतर गयो नरेश मनहिंमन अतिशय सोच बढायोजी ॥
मनहीं मन यह करत विचारा यासों नाहिं बसायोजी ॥
दैत्य गयेते सबहि नशाये कालीते बचि आयोजी ॥ १ ॥
ताहीपर लिये कमल लदाई दीने शकट पठाईजी ॥
कबहुँ कहत गोपनको मारो यह मनमाहिं उपाईजी ॥

फेर कछुक मनमाहिं विचारत करत न कछु बनिआईजी ॥
पुनि संभारि धीरज उरकीनो लीनो गोप बुलाईजी ॥ २ ॥
दोहा—हृदय दुखित ऊपर सुखी, दीने तब पहिराय ॥
सिरोपाव नँदको दियो, कहियो नँदसोंजाय ॥
चौबोला—कहियो नँदसो जाय तेरे सुत दोउ बलराम कन्हाईजी
एक दिवस देखिहौं बुलाई कह्यो कंस नृपराईजी ॥
यह कहि बिदा किये सब ग्वाला लीने कमल रखाईजी ॥
रह्यो काठ ज्यों भीतरही घुन मनहीं मन पछिताईजी ॥ १ ॥
तब दावानल बोल पठायो कह्यो ताहि समुझाईजी ॥
देखौं मैं तेरे बलहीको जातू ब्रजके माईजी ॥
जार कीजियो छार ब्रजहि सब ब्रजबासी समुदाईजी ॥
बचहिं न नंद कुमार वे दोऊ कीजो काज बनाईजी ॥ २ ॥

अथ दावानल पानलीला ॥

दोहा—दावानल चल्यो गर्व करि, नृपकी आयसुमान ॥
करों भस्म क्षण एकमें, सहित गोप नँदकान्ह ॥
चौबोला—सहित गोपनँद कान्ह नृपतिको आज काजकरोंजाईजी
जे कहुँ एक ठौर सब पावें वचन नं कोऊ पाईजी ॥
इहां गोप यमुना तट आये नृपहिं कमल पहुँचाईजी ॥
नंद तुरत सब निकट बुलाये सुनतहि आये धाईजी ॥ १ ॥
गोपन कही नंदसों आई लिये नृप कमल रखाईजी ॥
दियो हर्षि तुमको पहरायो लियो नँदशीश चढाईजी ॥
अपने सब पहराव दिखाये लखे नंद सुख पाईजी ॥
हरिको नाम सुन्यो नृपराई कीनो काज कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—इकदिन बल मोहन दोऊ, देखहुँ यहां बुलाय ॥
मम सुतबुलवत कंसनृप, सुनि हरषे नँदराय ॥

चौबोला–सुनि हरषे नँदराय बुलैहैं नृप बलराम कन्हाईजी ॥
सब नर नारि हर्षि मन माई कहि कहि बात सिहाईजी ॥
हँसि हँसिकै यह बात रामसों कहत श्याम सुखदाईजी ॥
नृप हम तुम देखनकेकाजे कह्यो बुलावन भाईजी ॥ १ ॥
इक सुख हरि अहिते बचि आये ब्रजजन परमहुलासाजी ॥
द्वितिये कमल पठाये नृपको मिटी कंसकी त्रासाजी ॥
यहि विधि ब्रजजन अति सुखपायो खान पान सुखरासाजी ॥
सोये निशि सब यमुनातीरा हृदय राखि हरि आसाजी ॥ २ ॥

दोहा–दावानल आयो असुर, चाहत ब्रजहि जराय ॥
देखे सब इकठोरही, मनअति हरषबढाय ॥

चौबोला–मन अति हरषबढाय चहूँ दिश दावानल प्रगटाईजी ॥
अतिहि प्रचंड पवन झकझोरी जरत चहूं दिश आईजी ॥
दशहुँ दिशाते घेरत आवै खग मृग जीवजराईजी ॥
जागपरे सब ब्रज नर नारी कवन दिवारी लाईजी ॥ १ ॥
भये चकित सब अतिहि डराये दीसत मग कहुँ नाईजी ॥
चहत चलन भजिनाहिं निकासू सोच रहे समुदाईजी ॥
आयगईदौं अतिहि निकट अब चलो यमुनतट जाईजी ॥
अब न देखियतकहूँ उबारा अनल चहूँ दिश छाईजी ॥ २ ॥

दोहा–ब्रजकेलोग डरे अतिः, व्याकुल सब अकुलाय ॥
जरे सकल यह मन कहत, दीसत नाहिं उपाय ॥

चौबोला–दीसत नाहिं उपाय देखि सब अतिशयरहे डराईजी॥
भईधरणि नभज्वाला पूरण धुंधचहूँ दिश छाईजी ॥
लपटत झपटत जरत तरूतर गिरत सकल महिपाईजी ॥
उठत शब्द आघातचहूँ दिश बढत झरत झहराईजी ॥ १ ॥
फटत फूलफल परत रलत सब जरतलता झहराईजी ॥

काँस चटकत बाँस फटकत ज्वाला नभतन जाईजी ॥
हिरण मोर बराह बन पशु विकल पंथ ना पाईजी ॥
जरत जहां तहां जीव खग सब व्याकुल जिततित धाईजी ॥२॥
दोहा—दावानल अति क्रोधकर, लियोदशहुँ दिशघेर ॥
उठी अनल ज्वाला प्रबल, मानहुँ अचल सुमेर ॥
चौबोला—मानहुँ अचल सुमेर धूम सब गगनअंधेरी छाईजी ॥
तडितमाल जनु सघन घनीअति बिच बिच ज्वाल लखाईजी ॥
भये देखि ब्रजलोग दुखारे आये हरि शरणाईजी ॥
जरत सकल ब्रजलेहु बचाई करहू श्याम सहाईजी ॥ १ ॥
तृणा शकट बक अघ तुम मारे कंसकि त्रास मिटाईजी ॥
जहांजहां गाढ परी अति आई तहां तहां करी सहाईजी ॥
अब हरि यत्नकछू सो कीजै लीजे हमहिं बचाईजी ॥
व्याकुल नंद गोप मनमाहीं करत न कछु बन आईजी ॥ २ ॥
दोहा—कहत यशोमति सबनसों, दईपरचो है ख्याल ॥
नानारूप बनायके, आये असुर कराल ॥
चौबोला—आये असुर कराल कोऊ खग कोऊ पशुबने आईजी ॥
कोऊ पवन रूप ह्वै आयो भयो कोउ पुण्य सहाईजी ॥
आज उरगते बच्यो कन्हाई नृपकी त्रास नशाईजी ॥
अब यह बाढी अग्नि अपारा को अब लेत बचाईजी ॥ १ ॥
मोहिंलखि परत उबार न कोऊ बचहिं किमिहिं दोउ लालाजी ॥
सुनि जननीके वचन कृपाला लखि ब्रजके सब हालाजी ॥
कह्यो हरी सबधीरजधारो मति डरपो लखि ज्वालाजी ॥
हरिके चरित कहा कोउ जाने कौतुकनिधि गोपालाजी ॥ २ ॥
दोहा—दुख सुख जिनको ख्यालहै, भक्तनको सुखदाय ॥
तब हरि कह्यो डरो मति, सब मिल देव मनाय ॥

चौबोला–सब मिल देव मनाय जिनाहिंने सहाय करी अब तांईजी
सोई करिहै सहाय सदाई हरि हँसि आंख मुँदाईजी ॥
करि गये अग्नि पान मुख माई ह्वैगइ शीतलताईजी ॥
रह्यो न अग्नि लेस कहुँ राई तब हरि आंख खुलाईजी ॥ १ ॥
सुनतहि तुरत सबन दृग खोले देखत गोपी ग्वालैजी ॥
देखि चकित सब ब्रजनर नारी कहत धन्य नँदलालैजी ॥
धरणि अकास बराबर ज्वाला लपट झपट विकरालैजी ॥
नहिं बरण्यो नाहिं सीचोजाई कहां गई दौंहालैजी ॥ २ ॥

दोहा–हम काऊ जानी नहीं, कैसे अग्नि बुझाइ ॥
खूब मनोहर कमल मुख, तब हँसि कह्यो कन्हाइ ॥

चौ०-तब हँसि कह्यो कन्हाइ तृणहिकी प्रथम आग उठे ज्वालाजी
फिर तिहि बुझत बिलंब न लागत सुनत सुखित भये ग्वालाजी॥
जीव जंतु खग मृगहि जिवाये भये सुखित ततकालाजी ॥
द्रुम[1] बेली तृण हरित भये सब प्रफुलित वन भयो हालाजी॥१॥
ताहि कहो डर कौनको होई श्याम करतहैं सहाईजी ॥
पांच[2] तत्त्व उनहींके कीने यह न बड़ाई ताईजी ॥
कहति परस्पर[3] ब्रजकी नारी है बडो वीर कन्हाईजी ॥
यह सखि जांनतहै कछु टोनो दीसत अति सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–नाथ्यो नाग पतालमें, ल्यायो कमल लदाय ॥
नृपति कंस मांगे कमल, दीने ताहि पठाय ॥

चौबोला–दीने ताहि पठाय दावानल घेरलई ब्रज सारीजी ॥
नैन मुँदाय कहाधौं कीन्हो रही न तनक अँगारीजी ॥
येउतपात मिटैं उनहींपै और कौन सों टारीजी ॥
यह कोउ सखी बड़ो अवतारीहै यह जग करतारीजी ॥ १ ॥

१ वृक्ष । २ पृथ्वी, नभ, तेज, पवन, पानी । ३ आपसमें ।

लखि हरिचरित यशोमति माई दोउ कर लेत बलाईजी ॥
निरखत मुदित[1] महर नँदराई रहे गोप सुख पाईजी ॥
कहत देव मुनि अति अनुरागा[2] ब्रजजन भाग्य बड़ाईजी ॥
जिनके संग नित नवरस लीला करत श्याम सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–एक दिवस निशि यमुन तट, वस सब गोपी ग्वाल ॥
होत प्रात निज निज सदन, आये सहित गुपाल ॥

चौबोला–आये सहित गोपाल हरी सब ब्रजजनके सुखदाईजी ॥
विलसत विविध बिलास ब्रजहिमें बलि अरु कुँवर कन्हाईजी ॥
संतन प्राण अधार श्यामपर विहारन बलि बलि जाईजी ॥
हरि ब्रजजनके दुख बिसरावत करत सबन मन भाईजी ॥ १ ॥
तुरत सकल ब्रज लोग भुलाये कब नृप कमल मँगायेजी ॥
कब हरि यमुना जलहि समाये नाग नाथ कब ल्यायेजी ॥
कब दावानल जारन आयो निशि दिन कहां बितायेजी ॥
नहिं जानत कछु नंद यशोदा बालचरित मन भायेजी ॥ २ ॥

दोहा–माखन मांगत मात सों, सुन्दर श्याम सुजान ॥
नँदरानी आतुर मथत, सद माखन रुचिमान॥

चौबोला–सदमाखन रुचिमान जाउँ बल भूख लगी तुम भारीजी
बातन लावत सुतहिं दुलारी सुनत बात बनवारीजी ॥
झूंठहिं देत हुँकारी जननी भूल रही सुधसारीजी ॥
तबलौं मथि दधि माखन कीनो दियो सुतहि महतारीजी ॥१॥
माखन रोटी खात कन्हाई अपने कर सुखकारीजी ॥
करत प्रशंसा मधुर सुनत तब प्रफुल्लित अति महतारीजी ॥
दुर्लभ शिव सनकादि मुनी सुर सो प्रभु अलेख[3] अपारीजी ॥
ताको सुतकर मानति यशुमति धन्य नंदकी नारीजी ॥ २ ॥

---

१ प्रसन्न । २ स्नेह । ३ जो देखनेमें न आवे ।

अथ प्रलम्बासुरवध लीला ॥

दोहा–नितनव लीला करत हरि, तात मात सुखदाय ॥
निरखत हरिको चंद्र मुख, नर नारी सुखपाय ॥
चौबोला–नरनारी सुखपाय एकदिन श्याम राम दोउ भाईजी ॥
खेलत सखन संग बनजाई ग्वाल बाल समुदाईजी ॥
नाना विधि सब करत किलोलैं वाणी विविध सुनाईजी ॥
कबहूं मोर हंसकीनांई बोलत हरि सुखदाईजी ॥ १ ॥
कबहुँक मधुरे सुर कछु गावें हरि मुख वेणु बजाईजी ॥
कबहूं चढत द्रुमनपर धाई कूदत डार नवाईजी ॥
नाना विधिके खेलन खेलैं बाल विनोद सुहाईजी ॥
तहां प्रलम्ब असुर इक आयो दीनों कंस पठाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कपट रूप धारि गोपतन, मिल्यो सखनमधि आय ॥
ग्वालन काउ न जानियो, चीन लियो हरिताय ॥
चौबोला-चीन लियो हरिताय बलहिको दियो जनाय गुपालाजी
ताय हतनको रच्यो उपाई सखन खिलावत ख्यालाजी ॥
सखा बुलाये निकट सबहिं हरि तिन्हैं कह्यो नँदलालाजी ॥
फल बुझाय अब खेलिये भाई भये मुदित सुनि ग्वालाजी ॥१॥
सखा लिये सब बांट हरीने द्वै बालक कर राईजी ॥
आधे एक दिशाभये ठाढे आधे एक दिशाईजी ॥
निज निज जोटिजुरे सब हलधर दनुज जोटिजुरे आईजी ॥
हारे सोले पीठ चढाई ऐसे होड लगाईजी ॥ २ ॥
दोहा–भांडीर बन जाय तब, फिर ल्यावे यहिठाम ॥
फलको नाम बुझन लगे, बूझ दियो बलराम ॥
चौबोला–बूझ दियो बलराम सखा सब निजनिज जोटचढाईजी
चढे दनुज बल धींच मरोरी चले बनहिं समुहाईजी ॥

भांडीर बन पहुँचे जाई फिरे सब ठाम छुवाईजी ॥
असुर चल्यो ले बलिको आगे देह दनुज प्रगटाईजी ॥ १ ॥
जब बलराम मुष्टि इक मारी बिकस्यो शिर तिहिं ठाईजी ॥
उतर परे तब श्रीबलबीरा देखत सुर समुदाईजी ॥
भई गगनते जैजै बाणी फूलन झरी लगाईजी ॥
मुदित सकल सुर मुनि मनमांई स्तुति बलहिं सुनाईजी ॥ २ ॥

दोहा—ग्वाल बाल चकृत सबै, दौरि गये बलपास ॥
मृतक असुर तनु देखिकै, अतिमन कियो हुलास ॥

चौ०—अतिमन कियो हुलास कहत धनिधनि बलराम कन्हाईजी
धन्य तुम्हारे मात पितनको जिन जाये दोउ भाईजी ॥
बड़ो काम तुम कियो कपटतनु मार्‌यो असुर अन्याईजी ॥
यह शठगोप भेसबन आयो हमकाउ जान्यो नाईजी ॥ १ ॥
जो ये शठ कहुँ मार्‌यो न जातो लरिकन लेतो खाईजी ॥
हौ तुम बडे बीर दोउ भ्राता जहां तहां होत सहाईजी ॥
बनके दुष्ट सकल तुम मारे हौ हमको सुखदाईजी ॥
जासु भीत बलराम कन्हाई ताहि कहा डरभाईजी ॥ २ ॥

दोहा—देत बड़ाई बलहिको, ग्वाल बाल समुदाय ॥
आय मिले तहां श्याम तब, देखत हँसे कन्हाय ॥

चौबोला—देखत हँसे कन्हाय दुष्टदल राम श्याम सुख दाईजी
सखन सहित बल मोहन लाला घर आये दोउ भाईजी ॥
ग्वालन कही आय सब बाता सुनि ब्रज जन हरषाईजी ॥
करत सकल बलराम बड़ाई लिये मात उरलाईजी ॥ १ ॥
बलिमोहन दोउ वीर निहारी दोउ जननी बलि जाईजी ॥
भूखे जानि बनाहिंते आये भोजन दिये जिमाईजी ॥
सुत सनेह अति मगन यशोमति निशि दिन जानति नाईजी ॥

जो सुख लहत नंद घरनी सो शारद सकहि न गाईजी ॥ २ ॥

अथ पनघट लीला ॥

दोहा–ब्रजजन हरि सँग सुखलहत, निशि दिन परमहुलास॥
बाट घाट गृह बन सघन, विलसत विविध विलास ॥

चौबोला–विलसत विविध विलास पनघट यमुनातीर कन्हाईजी
ठाढे श्याम कदमकी छाई गोप बाल समुदाईजी ॥
सखा वृन्द चहुँ ओर विराजत कोटि काम बलिजाईजी ॥
सुरंग खोर केसर छबिछाई मुकुटकी लटक सुहाईजी ॥ १ ॥
कुंडल झलक अलक घुंघरारी कंठी कंठ सुहाईजी ॥
चटकीली लटकी बनमाला सो मन लेत चुराईजी ॥
मुक्तमाल मणि माल सुहाई उर विसाल परछाईजी ॥
मुर मुसकान मोहनी जियकी अधर अरुणता आईजी ॥ २ ॥

दोहा–चटकीलोकटि पीतपट, छुद्र घंटिका सोय ॥
भुज विसाल भूषण छये, करचूरा शुभदोय ॥

चौबोला–करचूरा शुभदोय तनघन सुन्दर श्याम सुहायेजी ॥
हँसि हँसि कहत सखन सों बैना सुनत ग्वाल सुखपायेजी ॥
भूषण सहित चरण अति सुन्दर कनकलकुट लपटायेजी ॥
गहि द्रुमडारी तिरछे ठाढे अंग अनूप बनायेजी ॥ ३ ॥
कबहुँ बजावत अधरन पर धर कर मुरली धुनिघोराजी ॥
निकट बुलावत बनमृगनको कबहुँ नचावत मोराजी ॥
रहे गगन घन छाय सुखद सब अति शीतल चहुँ वोराजी ॥
वर्षाऋतुको पाय मगन मन निरखत नंद किशोराजी ॥ २ ॥

दोहा–हरित भूमि चहुँ ओर शुभ, मनहुँ मसन्द बिछाइ ॥
वहत समीर सुधीर अति, शीतल सुगँध सुहाइ ॥

चौ०–शीतल सुगंध सुहाइ वहत जल यमुना अति छविछाईजी॥
परत भँवर जहँ तहँ अतिरूरी निरखत कुँवर कन्हाईजी॥
या छवि सों पनघट हरि ठाढे संग ग्वाल समुदाईजी॥
यमुना जलतिय भरन न जाई भीर देखि सकुचाईजी॥ १॥
हरिके गुण मनमें सब जानत रोकतहै मगमाईजी॥
ताते जाय सकत कोउ नाई दरश आशमनं माईजी॥
सबके अंतर्यामि कन्हाई उनके मनकी पाईजी॥
तब इक बुद्धिरची नँदलाला रसिक शिरोमणि राईजी॥ २॥

दोहा–सखा बिठाये तरुन तर, दीनी भीर मिटाय॥
आप रहे द्रुम ओट छिप, युवतिन नाहिं लखाय॥

चौ०–युवतिन नाहिं लखाय आवत इक युवती श्याम लखाईजी
आप रहे द्रुम ओट छिपाई सो यमुना तट आईजी॥
नागरि तब जल भर्यो हिलोरी धरिशिर घरहिं सिधाईजी॥
पाछे ते चित चोर कन्हाई गागरि दई ढुराईजी॥ १॥
गही चतुर ग्वालिन भुज हरिकी कनकलकुटगहि पाईजी॥
सबसों तुम करि रहे ढिठाई तैसेइ मोहिं लगाईजी॥
देनलगे तब हरि हँसि गागरि लेति ग्वालि सो नाईजी॥
जल भर देहु लकुट जब देहों रीती लेहों नाईजी॥ २॥

दोहा–कहा जो तुम नँद सुवन हो, सुनहू कुँवर कन्हाइ॥
हमहुँ सुता बड़े गोपकी; तुमते नाहिं डराइ॥

चौबोला–तुमते नाहिं डराइ एकही गांव बास बनवारीजी॥
मैं नहिं सहिहौं कही तुम्हारी औरनसी नहिं नारीजी॥
एक कहो तो दश मैं कहिहों मैं नहिं डरपन हारीजी॥
यह सुनि हँसिदीने नँदलाला चोर्यो चित हितकारीजी॥ १॥
कहत लकुटिया देरी मेरी मैं भरदेहों पानीजी॥

देखत रूप सुनत मृदुबानी ग्वालिन सुरत भुलानीजी ॥
लागी हृदय मदनकी सांटी प्रेम मगन मगनानीजी ॥
करते लकुट गिरत नहिं जानी सब चित चेत हिरानीजी ॥२॥
दोहा—तब घट भरि हरि भावते, दीनो शीश उठाय ॥
नेकहु सुधितातन नहीं, चली ब्रजहि समुहाय ॥
चौबोला—चली ब्रजहि समुहाय कियो दृग बासश्याम सुखदाईजी
जित देखे तितही घनश्यामा पंथहु दीसत नाईजी ॥
उतते आय कहति इक ग्वाली कहा तू रही भुलाईजी ॥
सूधे पंथ चलत है नाईं कहा सोच मन माईजी ॥ १ ॥
अबहीं हँसति भरन जल आई कहा तू चली गँमाईजी ॥
तासों कहति देखि सुनि आली श्याम मोहनी लाईजी ॥
मैं जल भरन अकेली आई गागरि कृष्ण ढुराईजी ॥
तब मैं कनकलकुटगहि लीनी वे चितये मुसकाईजी ॥ २ ॥
दोहा—वहै हँसनि मोमन बसी, सुधि बुधि गई भुलाय ॥
कहा कहों तोसों सखी, हरि मनरह्यो समाय ॥
चौबोला—हरि मनरह्यो समाय साँवरो बस्यो दृगनके माईजी ॥
और कछू मोहिं दीसतनाहीं रोम रोम रह्यो छाईजी ॥
सुनत बात वह ग्वालि सयानी आप विलोकन चाईजी ॥
ताहिबांहगहि घर पहुँचाई आप भरन जल आईजी ॥ १ ॥
देख्यो जाय श्याम तहां नाई सोच रही मनमाईजी ॥
हरि देखत तरु ओट छिपाने ग्वालनिमन दुख पाईजी ॥
चलीनीर भरिगागरि शिरधरि बारबार पछिताईजी ॥
कहति मनहिं मन हरि नहिं देखे चली बिचारति जाईजी॥ २ ॥
दोहा—देखि ग्वालनी विकल अति, मनके जाननहार ॥
आय अचानक निकटही, प्रगटे नंदकुमार ॥

चौबोला–प्रगटे नंदकुमार गहिलीनी अंकम भर उरलाईजी ॥
ताके तनुकी तपत निवारी भक्तनके सुखदाईजी ॥
तातन चितै कह्यो तूकोरी कबहूँ नाहिं लखाईजी ॥
मनहरलीनोरूप दिखाई भये तरु ओट कन्हाईजी ॥ १ ॥
मिलिहरिसों सुख पायो ग्वाली देखे कुँवर कन्हाईजी ॥
नहिं जानतिमैं को कित आई सुधि बुधि सब बिसराईजी ॥
घरको पंथ भूलिगई नागरि इत उत डोलति जाईजी ॥
और सखी इत उतते आई सो तिन निकट बुलाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बूझत सखि वा ग्वालिसों, कहा मगरही भुलाय ॥
भयो चेत तब कछुकतन, कहनलगी सो ताय ॥

चौबोला–कहन लगी सो ताय श्यामरंग मिल्यो ढुटौनाआईजी
तिन मोपर कछु कीनो टोना तबते मोहिं सुधिनाईजी ॥
मैंभारि गागरि शीश उठाई उन मोहिं अंकमलाईजी ॥
मोसों कह्यो कौनतू गोरी देखिनहीं ब्रजमाईजी ॥ १ ॥
ऐसे कहि चितयो हँसिमोतन मैं लखि रही लुभाईजी ॥
तबहिं भयो अंतर कहुँ मोते मेरो चितहि चुराईजी ॥
कही सखी सों बात ग्वालनी लाजसाज विसराईजी ॥
भईजलधि[2] की बूंदजिमीसो सुनत बात हरषाईजी ॥ २ ॥

दोहा–चली आप यमुना भरन, सावधान करिताइ ॥
देख श्यामसखि आवती, भये तरु[3]ओट कन्हाइ ॥

चौबोला–भये तरु ओट कन्हाइ तासुतन रहे श्यामटकलाईजी
गोरे वदन चूनरी सारी लहँगाछवि अधिकाईजी ॥
हाथन चूरी चारु[4] विराजत कंकन अति छवि छाईजी ॥
सहज शृँगार उरोजनसोहै अंग अनूप सुहाईजी ॥ १ ॥

---

१ पास । २ समुद्र । ३ पेड़ । ४ सुंदर ।

ग्वालिन हरिको देखे नाहीं जानि गये बनमाईजी ॥
जल भर चली मनहिं पछिताई गागरि शीश उठाईजी ॥
औचक श्याम गही लट आई कहां चली अतुराईजी ॥
परस अंग उरसों करलायो ग्वालिनमन हरषाईजी ॥ २ ॥
दोहा—ऊपर रिस भीतरसुखी, कहति छाड़ि लटकान्ह ॥
उर परसत सकुचत नहीं, औरनसी जिन जान ॥
चौबोला—औरनसी जिन जान देखिहै व्रज युवतीकोउ आईजी ॥
हाहा हरि मैं पाँयन लागों तुमको नंद दुहाईजी ॥
इतनेहीको मोहिं बावरी नंद किसौंह दिवाईजी ॥
देखत बदन तनकमैं ताते पहिचानत तोहिंनाईजी ॥ १ ॥
यों कहि श्याम छांड़ि लट दीनी वशकीनी मुसकाईजी ॥
चली भवन हरि मन हरिलीनो बसिगये हगन कन्हाईजी ॥
पगद्वै चलत ठिठक रहजाई भूली मग जिहि आईजी ॥
रहे मनहिंमें श्याम समाई सुधि बुधि सब बिसराईजी ॥ २ ॥
दोहा—गृह गुरजनकी सुरति करि, मनमें गई लजाय ॥
ज्यों त्यों करि पहुँची गृह, रहे श्याम मन भाय ॥
चौबोला—रहे श्याय मन भाय सखी सब संगकी बूझति आईजी॥
कहा यमुना तट देर लगाई कहां रही अब ताईजी ॥
औरहि दशा भईहै तेरी कहै न हमहिं सुनाईजी ॥
कहा कहोंरी तुमसों आली मोही मोहिं कन्हाईजी ॥ १ ॥
सुनहु सखीरी वा यमुना तट भई सो दशा हमारीजी ॥
लेगगरी शिर मारग डगरी मिले तहां बनवारीजी ॥
औचक आय गही लट मेरी कह्यो कौन तू प्यारीजी ॥
मैं मृदु वचन अमोल सुनतही ताकी ओर निहारीजी ॥ २ ॥
दोहा—जकी थकीसी ह्वै रही, उन परस्यो मोगात ॥

प्रफुलित हिय सुनि ग्वालनी, मन मोहनकी बात ॥
चौबोला–मनमोहनकी बात लाज तज दीनी सबन सुनाईजी ॥
सुनत बात सब सखी सयानी आप विलोकन चाईजी ॥
इक क्षण श्याम न विसरत काऊ सुनतहिये हरषाईजी ॥
घर घरते धाईं सब नागरि लेले गागरि आईंजी ॥ १ ॥
चलीं यमुना तट अति अतुराई देख्यो कुँवर कन्हाईजी ॥
मोर मुकुट कटि कछनी काछे कुंडल लटक सुहाईजी ॥
पीत बसन लखि तडितै लजाई अधँर अरुणता आईजी ॥
देखत कह्यो सखिन ढिग जाई ठगतहो नारि पराईजी ॥ २ ॥
दोहा–कहा तुम्हारो ठग लियो, कैसे ठग पहिचान ॥
कौन ठग्यो कहो कब हमहिं, हमको किमि ठग जान॥
चौबोला-हमको किमि ठग जान कहा ठग्यो सो तुम देहु बताईजी
कहो नाम धरि तब हम जाने बोले कुँवर कन्हाईजी ॥
सरवस ठगत पलकके माहीं ठग्योसो जानत नाईजी ॥
ठगके लक्षण हमहिं बतावहु कैसे ठग ठहराईजी ॥ १ ॥
ठग लक्षण हमपै सुनलीजे फांसी मृदु मुसकानैजी ॥
रूप ठगोरी तुमहिं ठगतहो ब्रज तिय मन धन प्रानैजी ॥
फिरत विकल बेहाल तजी सब लोक लाज कुल कानैजी ॥
ठगी नंदके लाल विदित भई तिहुँ पुरमें सब जानैजी ॥ २ ॥
दोहा–तुम सब चितहि चुरातहो, तैसे हमहिं लगाय ॥
अपने लक्षण औरसों, कहत हो प्रगटै जनाय ॥
चौबोला-कहतहो प्रगट जनाय तिहूंपुर बात प्रगट यह होईजी ॥
ब्रजतिय ठगत नंदको लाला जानत यह सब कोईजी ॥
यह नाहिं कहाति कहत सब कोऊ सुर वेदहु नाहिं गोईजी ॥

१ देखना। २ बिजली। ३ ओठ। ४ जाहिर।

तीन लोक को ठाकुरजोई ब्रजतिय वश कियो सोईजी ॥ १ ॥
यह सुनि सब ग्वालिन मुसकाईं कहति श्याम सो ओईजी ॥
हरि तुम बात उलटि यह ठानी नागरता हम पाईजी ॥
अतिहि कान्ह तुम करत ढिठाई छांड़ि देहु लँगराईजी ॥
काहूलट गहि करत अचकरी काहुको नीर ढराईजी ॥२॥

दोहा—काउअ अंकम भरत हो, परसत हो उरआय ॥
ब्रजके लोगन पै हमैं, नीकी विधिहिं हँसाय ॥

चौबोला-नीकी विधिहिं हँसाय तिहारे भय कोउ जाय न आवैजी
बाट घाट डरपत सब आवत तुमको देखि डरावैजी ॥
बहुत अचकरी अब तुम ठानी नीर नकोउ भर पावेजी ॥
कहो तो यशुदहिं जाय सुनावें फिर ऊखल बँधवावेजी ॥ १ ॥
यह सुनि उठे हरी रिस करिकै इँडरी लई छिनाईजी ॥
कहो जाय सब अबहिं मातसों लीजो मोहिं बँधाईजी ॥
मोहिं कहति ठगचोर आय सब आप साह बनि आईजी ॥
डारी गगरी फोर कहत अब करहू चुगली जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—युवति कहति सब श्याम सों, इँडुरी देहु कन्हाइ ॥
गहिलेजै हैं मात पै, डरिहैं नेकहुँ नाइ ॥

चौबोला—डरिहैं नेकहु नाइ तुमहिं गहि यशुमति पैलेजाईजी ॥
बाट घाट तुम करत अचकरी डरतहो नाहिं कन्हाईजी ॥
इँडुरीले फोरी सब गगरी बरजे मानत नाईजी ॥
तब हरि चढे कदम पर जाई इँडुरी जलहि बहाईजी ॥ १ ॥
बदन सकोरत भौंह मरोरत मुरि मुरिके मुसकाईजी ॥
कहत कहो मैया सों जाई लीजो मोहिं बुलाईजी ॥
तुम सब जुर मिल मारन धाई तब मैं इँडुरी बहाईजी ॥
ऐसो तुम मोको करपायो मानहु मोलहि ल्याईजी ॥ २ ॥

दोहा–यह सुनि युवती कहत सब, हरिसों मन मुसकाय ॥
कहत यशोदहि जाय हम, लेहैं तुमहिं बुलाय ॥
चौबोला–लेहैं तुमहिं बुलाय वेहि दिन विसरे कुँवर कन्हाईजी॥
बांधे मात ऊखरी गोहन तब हम करी सहाईजी ॥
यहँई रहियो जैयो जिन कहुँ तुमको नंद दुहाईजी ॥
कान्हैं सोंहदिवाय ग्वालिं सब नंदधाम पर आईजी ॥ १ ॥
ऊपररिस अंतरहि सुखी सब ले उरहन तहां आईजी ॥
सद माखन जहां हरिको हितकरं मथति यशोमति माईजी ॥
तिहिं अंतर ब्रजवाम सकल चलि आवत भीर लखाईजी ॥
मैं जानत हरि इनहिं खिजाई ताते उरहन ल्याईजी ॥ २ ॥
दोहा–कहत युवति सब रिसभरी, यशुदहि आय सुनाय ॥
ढीठ कियो ऐसो सुवन, बरजति नाहिं कन्हाय ॥
चौबोला-बरजति नाहिं कन्हाय यमुन जल भरन न कोऊपावेजी
रोकत घाट करत कुलकानी कहत सोई मन आवेजी ॥
काऊकी गगरी ढरकावे इँडुरी जलहि बहावेजी ॥
काऊको घट डारत फोरी गरियावत न लजावेजी ॥
महरि कहत तुमसों सकुचावे तुम गुण जानति नाईजी ॥
अब नाहिन ब्रजवास हमारो अचकरि करत कन्हाईजी ॥
नेक नहीं समुझत मनमाई तुम बरजत हो नाईजी ॥
कहा करौं सो तुमहिं कहोरी कहाति यशोमाति माईजी ॥ २ ॥
दोहा–गहिपाऊं ह्यां श्यामको, देऊं तुमहिं दिखाय ॥
तुमहूं जानत हो गुणन, बांध्यो ऊखललाय ॥
चौबोला–बांध्यो ऊखल लाय मारन लगी तबमैं अपनो बालैजी
बरज्यो मोहिं कह्यो जब सबहीं छांडि देहु गोपालेजी ॥
अब घर आवे तबहिं श्यामके करों फेर सोइ हालेजी ॥

लरकाईं ते करत अचकरी मैं जानति नँदलालेजी ॥ ३ ॥
अब जो पकरन जाउँ श्यामको ताहि गहन कहां पाईजी ॥
सुनताहिं मेरो नामको जाने कितहूंको भजि जाईजी ॥
यह अपराध क्षमो सब हमको ऐसे कहि समुझाईजी ॥
इहिं विधि युवती बोध कराई सबको घरन पठाईजी ॥

लावनी।

सब घरन चलीं ब्रजवाम धामनिज आवत कुँवर कन्हाई ॥
भइ भेट मगहिके बीच देखि हरि सकुचे निजमनमाई ॥
मनहीं मन रहे लजाय ग्वालि सब हरिसों कहत सुनाई ॥
हमजाय यशोमति पास तिहारी कीनी बहुत बड़ाई ॥
घरजावहु कुँवर कन्हाई, तुम बोलत यशुमति माई,
करिहैं तुम्हरी पहुनाई, यह सुनत वचन हरि हँसे
कह्यो समुझाय लेहुँ मैं माई ॥ सब घरन चलीं० ॥ १ ॥

देखी घर भीतर जाय सखिनहित रिस भरी यशुमतिमाई ॥
भीतरहि बनावै पाक रोहिणी तासों कहत सुनाई ॥
हरवे हरवे हरि जाय सुनत सब बातें चित मन लाई ॥
यहि कहत गयो कितभाज आज कब ऐहैं घरहिकन्हाई ॥
यों यशुमति वचन सुनावै, पनघट कूं रोकतजावै,
यमुना जल भरन न पावै, बेटी बहुनदे गारि तबहिं वे दौरी सब
यहां आई ॥ सब घरन चलीं० ॥ २ ॥
कीनी हरि उनकी छेर तबहिं वे जुर मिल सब ह्यां आई ॥
हाहा करिकै समुझाय सबनको निज निज सदन पठाई ॥
गागरि सब डारी फोर इँडुरिया दीनी जलहि बहाई ॥
ऐसे नित पनघट जात करत उत्पात डरत मन नाई ॥

यह कहति यशोमति माई, अब कित धौंगयो पराई,
आयो नहिं कुँवर कन्हाई, जाति पांतिसों कहा लंगराई, मारे
हुमानत नाई ॥ सब घरनचलीं० ॥ ३ ॥

यह सुनतहि बोले श्याम मात सों पाछे ते भयपाई ॥
तुम सुनो मात मेरी बात कहत यों मधुर वचन सुखदाई ॥
मारनहीं जानत मोहिं गुणन भरी उनको जानतनाई ॥
को जाने उनके चरित मोहिं खेलत ते लेत बुलाई ॥
यमुना जल भरने जावे, मोहिं अपने निकट बुलावे,
वे कहत सोई मन आवे, सब मनमें अति आनंद कहत तोहिं
झूंठी बात बनाई ॥ सब घरन चलीं ब्रजबाम धाम निज आवत
कुँवर कन्हाई ॥ ४ ॥

दोहा—मटकत गगरी गिरपरै, मेरो नाम लगाइ ॥
फिर चितई देखे हरी, सुन्दर श्याम कन्हाइ ॥

चौबोला—सुन्दर श्याम कन्हाइ देखकही काहे बात बनावैजी ॥
मैं कहा तोको जानत नाहीं रहत मैं याही गावैजी ॥
तुरतहि भूलगई रिसभारी हरि मुख देखत भावैजी ॥
कहत कि उरहन ले सब आवें झूंठहि नाम लगावैजी ॥ १ ॥
मैं जानति गुण उन सबहीके बातें कहत बनाईजी ॥
वे सब तरुण फिरत मदमाती मेरो बाल कन्हाईजी ॥
इठलाती डोलत हैं जहां तहां भर यौवनमें छाईजी ॥
अब उरहन वे आवहिं ले तो नीकी देहुँ बिदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—मैं बरजत मानत नहीं, तूकत उन ढिगजात ॥
वे सब ढीठ गुवालनी, लावत झूंठी बात ॥

चौबोला—लावत झूंठी बात कही यह चूमि वदन उरलाईजी ॥

मनमोहन मन हरष बढ़ायो मगन यशोमति माईजी ॥
पनघट रोकत कुँवर कन्हाई घर घर बात जनाईजी ॥
श्याम वरण नटवर बपुकाछे मुरली मधुर बजाईजी ॥ १ ॥
करत अचकरी जो मन भावै यमुना भरन न पावैजी ॥
बैठत आप कमदकी डारी दै दै गारि बुलावैजी ॥
काऊकी गगरी गहि फोरै इँडुरी जलहि बहावैजी ॥
काऊको घट भूमि ढुरावै काऊ अंकमलावैजी ॥ २ ॥

दोहा–काऊसों मन लावही; काऊ चित्त चुराय ॥
ब्रज युवती सुनि सुनि सकल, देखनको उठ धाय ॥

चौबोला–देखनको उठ धाय दरश बिन तिनसों रहो न जाईजी॥
कोउ बरजे कोउ कहत कोटि विधि सबके ध्यान कन्हाईजी ॥
मन क्रम वचन तिन्हें रति हरिसों घर अँगना न सुहाईजी ॥
नँद नंदन क्षण बिसरत नाहीं सोवत जागत माईजी ॥ १ ॥
ब्रज युवतिनके हेतु करत हरि यह लीला सब श्यामाजी ॥
कृष्ण भजे जो जो जिहिं भावै तिहि तैसे सुखधामाजी ॥
चिंतत फलदायक हरिजनके चिंतामणि जिहि नामाजी ॥
सदा हरी जैसेको तैसे सबहीको सब ठामाजी ॥ २ ॥

दोहा–यह जुसुनी कीरति कुँवरि, पनघट कुँवर कन्हाय॥
देखनको हुलस्यो हियो, सखियन कहत बुलाय ॥

चौ०–सखियन कहत बुलाय चलहु सब ल्यावैं यमुनापानीजी॥
सुनत बात यह सब हरषानी चलबेको अतुरानीजी ॥
इक इक कलस सबन गहि लीने चलीं यमुन समुहानीजी ॥
देखे तहां कुँवर नँदलाला सुन्दर सुखके दानीजी ॥ १ ॥
प्यारी मन अति हर्ष बढाये देखी प्रिया कन्हाईजी ॥
भरयो नीर प्यारी मुसकाई देखत हरि टक लाईजी ॥

चली घरहि यमुना जल भरके गागरि शीश उठाईजी ॥
मंद मंद गति चलत सुहाई मोहन मोहनी लाईजी ॥ २ ॥
दोहा–विबस भये प्यारी रसहि, चले संग उठ धाय ॥
सखिन बीच चलि नागरी, गागरि शीश सुहाय ॥
चौबोला-गागरि शीश सुहाय लटक अति नकबेसर छबिछाईजी॥
बदन बिंदु आड दिये केसर मोतिन मांग भराईजी ॥
लोचन लोल बिसाल सुभग अति मुरि मुरि चितवत जाईजी ॥
भ्रुकुटी धनुष कटाक्ष शर सोहै हरि दृग मृगन लगाईजी ॥ १ ॥
मानहुँ सेना सजी कामकी अंग अंग छबिछावैजी ॥
ठठक चलत हरिको मन हरही अंचल ध्वज फहरावैजी ॥
रीझे श्याम निरख छबि प्यारी संगहि संग चले जावैजी ॥
कबहुँ रहत पाछे चितलाई कबहुँक आगे आवैजी ॥ २ ॥
दोहा–प्यारिहि निज अभिलाष हित, नाना भाव बतात ॥
कनक लकुट करमें गही, पंथ सँवारत जात ॥
चौबोला–पंथ सँवारत जात प्रियाकी जहांपर छांह लखावैजी ॥
तहां मिलावत निज तनु छाई तब मन अति सुख पावैजी ॥
छबि निरखत तनु वारि जनावै पटले शीश फिरावैजी ॥
कबहुँ श्याम पाछे रहजावै निरखत कुँवरि सिहावैजी ॥ १ ॥
गागरि ताकि कांकरी मारै उचटि अंगपर आवैजी ॥
ओढ पीतपट शीश नवावै इहि मिस ढिग ह्वै आवैजी ॥
प्यारी अपने चित अनुमाने मोहित भाव बतावैजी ॥
सखियन मध्य नागरी जावै लग्न लगन नहिं पावैजी ॥ २ ॥
दोहा–सखित सहित मोही प्रिया, कीन्हों चरित कन्हाय ॥
मिस करि निकसे निकट ह्वै, निरख बदन मुसकाय ॥

१ चाल। २ नथुनी। ३ नेत्र। ४ पकड़े। ५ बहाना। ६ मुख।

चौ०-निरख बदन मुसकाय सबहिको दियो काम उपजाईजी ॥
भई विबस तब सब सुकुमारी अँगिया अँग दरकाईजी ॥
सुधि बुधि बिसरी सबहि देहकी मोहीं कुँवर कन्हाईजी ॥
पहुँची जाय घरन सब निज निज मन अटक्यो हरि माईजी॥१॥
पुनि पुनि उर यह करत विचारा कैसे मिलहिं कन्हाईजी ॥
गागरि राखि घरन सब निज निज पुनि प्यारी ढिग आईजी ॥
चलहु यमुन जल ल्यावें प्यारी यों सब कहत सुनाईजी ॥
तिनको उत्तर देत न राधा रहे मन श्याम समाईजी ॥ २ ॥

दोहा-रही ठगीसी सोच मन, हगन प्रेम जल छाय ॥
कहा भयो तोको प्रिया, बूझति सखि समुदाय ॥

चौ०-बूझति सखि समुदाय सोचाति कहा हमते क्योंन कहोरीजी
काऊ लियो छीन कछु तेरो लियो चोरके चोरीजी ॥
उत्तर देत हमें क्यों नाहीं बूझति तोय निहोरीजी ॥
गहि गहि भुजा कहत सब गोरी यमुना चलहु किसोरीजी॥१॥
तब सखियन वृषभानु किसोरी बैठारी सब जोरैजी ॥
हरिके चरित कहन तब लागी हगन प्रेम जल ढोरैजी ॥
कहो सखी कैसे चलिये अब वा यमुनाकी ओरेजी ॥
गैल न छांडत छैल साँवरो रसिया नन्द किसोरेजी ॥ २ ॥

दोहा-यह शंका डरपत हियो, धरहि न कोऊ नाम ॥
वह चंचल मानत नहीं, एक भांतिको गाम ॥

चौबोला-एक भांतिको गाम देखि मोहिं मेरे संग उठ धावैजी ॥
आवत मेरे निकट आप अरु मेरी छांह मिलावैजी ॥
अरु मोहिं सन्मुख आय जुहारै देखत चितहि चुरावैजी ॥
आगे चलत लकुट करलेही पंथ समारत जावैजी ॥ १ ॥
सोवह अतिहि निहोरे मोहीं फिर चितवत मुसकावैजी ॥

गागरि शीश उठाय चलूं मैं वह चलजोरे आवैजी ॥
तब घटमें वह कांकरि मारे उचटि अंगपर जावैजी ॥
मेरे उर अंचल फहरावै सो वह देखि सिहावैजी ॥ २ ॥

दोहा—शीश फिरावत पीतपट, कर फेरत तन लाय ॥
छबि अपनी दरशायके, मेरो चितहि चुराय ॥

चौबोला—मेरो चितहि चुराय कबहिमें देखो कुँवर कन्हाईजी ॥
नेक नहीं दृग इत उत फेरे रहत एक टकलाईजी ॥
जहां जात मेरी परछाईं मिलवत तहां निजछाईजी ॥
जब लगिलागन पावत नाईं तब लगि अति अकुलाईजी ॥ १॥
भरत अंक बरजोर देखि मोहिं सोते अंग छुवावैजी ॥
सकुचत अति मन मेरो आली अरु कुलकानि सतावैजी ॥
ब्रजघर घर यह सोर श्यामको ताते अति भय आवैजी ॥
चितवत वह चित चोर सखी तब बिबस प्राण ह्वै जावैजी ॥२॥

दोहा—सांपछछूंदर गतिभई, कहिये कहा बखानि ॥
घरते निकसत बनत नहिं, लोकलाजकुलकानि ॥

चौबोला—कोकलाज कुलकानि सतावे घरमें रह्यो न जाईजी ॥
तनघर मन जहां कुँवरकन्हाई रहत उतहि बिलमाईजी ॥
कितो करों आवत इतनाहीं वध्यो पीत पट माईजी ॥
करिहौं प्रीति श्याम सँग सांची अबतो यह मनआईजी ॥ १ ॥
कुल मर्याद जाहु किन सोई हँसो लोग सबकोईजी ॥
होयजीवकी हानि लाभ कहा कहो सखी सो सोईजी ॥
सोनो कहा कान जिहिं टूटें अंजन आंधो होईजी ॥
कहा कांच संग्रहते होई जो अमोल मणि खोईजी ॥ २ ॥

दोहा—कांच किराचि जिमिकानिकुल, चिंतामणीकन्हाय ॥
कहालेउँ कहा तजहुँसो कहो मोहि समुझाय ॥

चौबोला–कहो मोहिं समुझाय मोहिंवह मृदुमुसकानिसुहावैजी
हरदी चूनो सन्यो रंगसो न्यारो होन न पावैजी ॥
प्रतिब्रतराखौं श्याम सुन्दरते लोक लाज नहिंभावैजी ॥
भलो बुरो कहहू किनकोई यह मेरे मन आवैजी ॥ १ ॥
हरि अनुराग सिंधु मन मानी गोपिन प्रिया निहारीजी ॥
गद्गद कंठ पुलकतनु नैनन बहत प्रेमजल धारीजी ॥
भई प्रेम वश गोपकुमारी सब कुल कानि बिसारीजी ॥
बारहिबार कहत ब्रजनारी धनि वृषभानु दुलारीजी ॥ २ ॥
दोहा–तैंजाने भलिभांति हरि, सत्य कहत हमतोय ॥
मनमोहन मोहत मनहिं, तिय लखि सब वश होय ॥
चौबोला–तियलखि सब वशहोयश्यामके अंगअंग छबिछावैजी
निरखत कोटि काम दुतिलाजै शोभा वरणि न जावैजी ॥
सुभग श्याम दोउ पाणि पकरके जब मुखवेणु बजावैजी ॥
तब यह दशाहोत सबहीकी जड चैतन्य भुलावैजी ॥ १ ॥
वंसी शब्द सुनत सब मोहे बनमृग धाये आवैजी ॥
होत विवस सब खगहि मौनगहि नेक न अंगडुलावैजी ॥
वत्स पिवत पयनाहिं तृणहिं गहि दंत धेनु रह जावैजी ॥
यमुना वहिवेते रहजावै जलचर वाहिर आवैजी ॥ २ ॥
दोहा–जड चेतन चेतन जडंहि, सुनत होत कलवैन ॥
कैविष कैमदकै अमी, किधौंभरचो रसमैन ॥
चौबोला–किधोंभरचोरसमैन सुनत धुनिगृहवनकछुनसुहाईजी
चकित थकितही सब रहजाई गृहकारज विसराईजी ॥
बाटघाट जहांमिलत कन्हाई मोहत रूप दिखाईजी ॥
नई नई छबि अंगके माहीं झलकावत क्षणमाईजी ॥ १ ॥
नंदसुवन सम सुन्दरको है ऐसो कौन सुहावैजी ॥

यह सखि सबहींके मनभावै देखत ही सुख छावैजी ॥
लोकलाज कुल कौने कामहिं जो सुन्दर वर पावैजी ॥
बिना भागपावत नहिं इनको यह मोहिं अगम लखावैजी ॥ २॥
दोहा–सुकृत बिना नाहिं पातइन, कह्यो मुनि सुन नँदराय॥
तुमहूँ इन हित तपकियो, तब तुम सुत करपाय ॥
चौबोला–तब तुम सुतकर पाय कह्योमुनि तातेमोमनआवैजी॥
कीजै जो सबके मनभावै हरिसों मिलन उपावैजी ॥
तपकीजे हरिके हितलागी पुजिये शिव वर पावैजी ॥
और कामना सकल नशावै नन्दसुवन वरचावैजी ॥ १ ॥
जप तप संयम नेम कियेते प्रभु प्रगटत पाषानेजी ॥
ताते सब तप कीजिये हरि हित और उपाव न आनेजी ॥
कीजे यह दृढनेम प्रात उठ चलिये यमुना न्हानैजी ॥
पूजाहिं शिवकरि प्रेम प्रीतितो पावहिं वरपतिं कान्हैजी ॥ २ ॥
दोहा–तपकरि योगी जनरटैं, मनवांछित फलपाय ॥
सकल कामना देत शिव, कहत वेदयहगाय ॥
चौबोला–कहत वेद यह गाय हमहुँ अब यह बांछित मनठानीजी
नंदसुवन पद कमल सनेहा रहे सदाचित आनीजी ॥
सुनत सप्रेम सखीकी बानी भानुसुता मनमानीजी ॥
यहै मंत्र सबके मनमान्यो धनि धनि ताहि बखानीजी ॥ १ ॥
कहति सबै कीजै सखि सोई मिलहिं श्याम सुखदाईजी ॥
वृथा जन्म नाहिं खोवें आली यह हमरे मनभाईजी ॥
यहै मंत्र सबने दृढकीनो प्रीति श्याम सों लाईजी ॥
धन्य धन्य ब्रज गोपकुमारी जिनके पतिहि कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा--धनि धनि ब्रजकी गोपिका, धनि वृषभानु कुमारि ॥
मन बच क्रम हरि हितलगी, लोकलाज सबडारि ॥

चौबोला–लोकलाज सब डारि हरी बिन नेकहु नाहिं सुहावेजी॥
निशिदिन श्याम दरशमन करहीं और कछू नाहिं चावेजी ॥
इक क्षण श्याम न उरते टरहीं नेम धर्म मन भावेजी ॥
जिनको यश शारद श्रुतिगावे विहारन बलि बलि जावेजी ॥१॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्त किये सम यों हरि सो मन लावेजी ॥
सदा एक तुरिया रहित भइ और नकछु मन भावेजी ॥
ऐसो कौन प्रवीन कवी सो प्रेम सखिनको गावेजी ॥
हरि छबि जल मनमीन भई सब बिछुरन पल नहिं चावेजी॥२॥

अथ चीरहरण लीला ॥

दोहा–भवन रवन विसराय सब, रटत हरी ब्रजबाल ॥
यहै वासना मन चहै, होयँ पती नँदलाल ॥

चौबोला–होंय पती नँदलाल वासना यह सब उरमें धारीजी ॥
हरिके हेत तपहि मन लायो धनि ब्रज गोप कुमारीजी ॥
षट दशसहस गोपकी कन्या करन लगीं तपभारीजी ॥
कृपाभई तब हरिको साधे भोग उपाधि विसारीजी ॥ १ ॥
प्रातकाल यमुना जल न्हावें जलमें याम वितावेजी ॥
जपहिं उमापति हरि वृषकेतू श्यामसुन्दर वरचावेजी ॥
नैन मूंदकै ध्यान लगावें शीत भीत नहिं ल्यावेजी ॥
बार बार यह कहत मनावे कान्ह कुँवर वरपावेजी ॥ २ ॥

दोहा–जलते बहुरि निकसि तब, पूजहिं शिवको जाय ॥
चन्दन बिल्व पत्र जल, अक्षत सुमन चढाय ॥

चौबोला-अक्षत सुमन चढाय प्रीतिकर सब मिलशिवहि मनावेजी।
धूपदीप करि स्तुति गावें पुनि पुनि विनय सुनावेजी ॥
करहिं स्तुति गान बहुविधि जोर पाणि शिर नावेजी ॥

---

१ वेद चार प्रकारके । ऋग्, यजु, साम, अथर्वण ।

बारहि बार नवायमस्तक प्रेम सहित शिवध्यावेजी ॥ १ ॥
जय महेश कृपालु उमापति आनंद निधि सुखकारीजी ॥
कैलास पती कल्याण अग जग सकल सृष्टि अधिकारीजी ॥
जटाजूट त्रिपुंड्रशशि शुभ गंगरहे शिरधारींजी ॥
कमल नैन विसाल सुन्दर कुंडल अति छबि भारीजी ॥ २ ॥

दोहा—नील कण्ठ भूषण भुजंग, भस्मी अंग विसाल ॥
अर्धंगा गौरी सुभग, उर मुंडनकी माल ॥

चौबोला—उर रुंडनकी माल पंचमुख त्रिलोचन छबि छाईजी ॥
कामप्रद सुखधाम शंकर देहो सोच मिटाईजी ॥
भगवान भव भय हरण हर भूतादि पती शिवराईजी ॥
प्रणत जन पूरण मनोरथ जगतपती सुखदाईजी ॥ १ ॥
वृषभ वाहन त्रिपुर अरिशिव मृगछाला मन भावेजी ॥
शूल पाणि त्रिशूल मूलनि कर त्रिशूल सुहावेजी ॥
सुर असुर नर नाग वन्दित मन बाछित फल पावैजी ॥
पूजते पद कमल प्रभु अब कृष्ण पती हम चावेजी ॥ २ ॥

दोहा—तुम सर्वज्ञ सुजान शिव, जानत जन मन पीर ॥
परमदानदीजैहमें, सुन्दर बर बलबीर ॥

चौबोला—सुन्दर बर बलवीर चाहति सब मागति हम तुम पाईजी
कृष्ण कमल पद ध्यान हमारे रहे सदा उरमाईजी ॥
इहि विधि ब्रजतियनेम निबाहे शिवको पूजि मनाईजी ॥
नित प्रति प्रात यमुन जल न्हावे प्रीतिरीत मन लाईजी ॥ १ ॥
सबितासों बहु भांति निहोरे गोद पसार मनावैजी ॥
तेजराशि दिनमणि जगस्वामी जगत चक्षु सब गावैजी ॥
प्रणत मनोरथ पूरणकारी ऐसे विनय सुनावैजी ॥
काम हमारे तनहिं जरावै नंद सुवन बर भावैजी ॥ २ ॥

दोहा–कृपा करो बर दीजिये, हो तुम दीनदयाल ॥
यह बर अब हम सबचहैं, होय पती नँदलाल ॥
चौबोला–होय पती नँदलाल ऐसे हरिके हित सब ब्रजनारीजी॥
कराहिं नेम व्रत तप तनु धारी चाहत बर बनवारीजी ॥
गेह देहकी सुरत बिसारी कृषतनु भईं सुकुमारीजी ॥
बरस दिवस यों करत बिहानों जानी जन हितकारीजी ॥ १ ॥
मोहित शिव पूजत ब्रजनारी कामना सकल बिसारीजी ॥
सकल भावके हरिहैं ज्ञाता सकल देव सुखकारीजी ॥
देखी नेम प्रेममय सबही गोपिनको बनवारीजी ॥
भये प्रसन्न कृपालु आप मन हारि जनके हितकारीजी ॥ २ ॥
दोहा–भये जलहिंमें प्रगट हरि, जहँ सब ब्रजतिय न्हात ॥
नव किसोर बर बपुधरे, सुन्दर श्यामलगात ॥
चौ०-सुन्दर श्यामलगात प्रगट भये न्हात जहां गोप कुमारीजी॥
मींजत पीठ सबनके पाछे लीला करत मुरारीजी ॥
चकित भईं पाछे फिर हेरचो देखे श्री बनवारीजी ॥
व्रत फल प्रगटे कुंजबिहारी मगन भईं ब्रजनारीजी ॥ १ ॥
नवल किसोर ध्यान मन लायो सोई रूप दिखायोजी ॥
दृष्टि परतही सकल लजानी जल में अंग दुरायोजी ॥
हरिको सब अपने ढिंग जानें भेद न काऊपायोजी ॥
कहाति लाज लागत नाहिं तुमको नग्न देखने आयोजी ॥ २ ॥
दोहा–हँसि निकसे मन भावते, चीरहार लिये जाय ॥
हांक दई तब शपथ दे, वसन न लेहु कन्हाय ॥
चौबोला–बसन न लेहु कन्हाय कही तब डारे वसन कन्हाईजी॥
गोपिन तुरत दौरिकै लीने सब मन अति सुखपाईजी ॥
चीर फटे भूषण सब टूटे लेत न छांड़े जाईजी ॥

बसन अभूषण पहरन लागी आपुस माहिं लजाईजी ॥ १ ॥
यह कहिकहि पछितात सकल मिल ढीठो करत कन्हाईजी ॥
अन्तर्गति आनंद अतीशय झूंठहिं सब खिजलाईजी ॥
कान्ह करत लँगराइ सखी अब लोगन कहत सुनाईजी ॥
कहति चलो कहिये सब मिलके यशुमतिके ढिग जाईजी ॥२॥

दोहा–चलीं यशोमति पै सकल, प्रेम विवस सुधिनाहिं ॥
पुलक अंग अँगियादरकि, भूषण ले कर माहिं ॥

चौबोला-भूषण ले कर माहिं चलीं सब यह मिस उरहन ल्याईजी
चीर फार नख घात बनाये यशुमतिके ढिग आईजी ॥
देखो महरि श्यामके ये गुण कीन्हे हाल कन्हाईजी ॥
चोली चीर हार दिखराये अरु यों कहत सुनाईजी ॥ १ ॥
ढीठ भयो अति कुँवर कन्हाई और सुनो इक माईजी ॥
बिनावसन हम न्हात जहां सब मींजत पीठ कन्हाईजी ॥
उर उघारि कहा तुमहिं दिखावें और कहत सकुचाईजी ॥
भयो श्याम इहिलायक धों कब महरि कहत मन माईजी॥ २ ॥

दोहा–सुन युवतिनके वचनवर, हँसि बोली नँदनारि ॥
बात कहो जोनीबहै, वृथा बढावत रारि ॥

वृथा बढावतरारि कान्हको झूंठहि लावति नामाजी ॥
चोरी रही छिनारी लावत बैठरहो निज धामाजी ॥
तुम चाहति हो गगन तुरैया गहन सकल मिल बामाजी ॥
सो कैसे कर पावहु अब तुम तुम लायक नाहिं श्यामाजी ॥१॥
मैं बूझी सब बात तुम्हारी सुनो सकल ब्रजबालाजी ॥
वृथा फिरत इठलात मष्ट करो सुनिहैं गोपी ग्वालाजी ॥
इहि अंतर हरि आय गये घर शीश मुकुट बनमालाजी ॥
अति कोमल तनु भूषण सोहैं बाल भेष नँदलालाजी ॥ २ ॥

दोहा—जननी लीनी बाँह गहि, कहति सबनरसरोष ॥
देखहुरी तुम सब इन्हें, इनहिं लगावत दोष ॥
चौबोला—इनहिं लगावत दोष देखहू समुझि लाज उर धारोजी॥
इनहींके नख उरहिं दिखावत जान्यो भाव तुम्हारोजी ॥
मेरो कान्ह अबहिं अति बारो तुम कोउ और निहारोजी ॥
कहति ग्वालनी महरि हमारे उलट दोष शिरडारोजी ॥ १ ॥
देन उरहनो तुमको आई नीकी दई विदाईजी ॥
देखहुरी यह भाव कन्हाई आपुसमें बतराईजी ॥
यमुना तीर मिले तबकी वह कहां गई तरुणाईजी ॥
इनके गुण ऐसेको जानें औरहि देह बनाईजी ॥ २ ॥
दोहा—घर आवत नन्हा भये, ऐसे तनुके चोर ॥
देखि चरित नँदलालके, भई बाल मतिभोर ॥
चौबोला-भईबालमति भोर कहतकछुसुधिबुधिमनाथिरनाईजी ॥
सकुची बहुरि संभारि विबसमें अपनी ओर लखाईजी ॥
चली घरन ब्रजनारि निरख कर सुंदररूप कन्हाईजी ॥
गई घरन ब्रज गोपकुमारी चित हरि लियो चुराईजी ॥ १ ॥
नेक न मनलागत घरमाई धामकाज सुधिनाईजी ॥
माता पिताको डरनहिं मानत रहत मगनमन माईजी ॥
प्रातहोत सब गोपकुमारी यमुनाके तट आईजी ॥
मोर मुकुट शोभित तनु चन्दन देखे कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—मकराकृत कुंडल सुभग, पीतबसनबनमाल ॥
दरश देखि शीतल भई, सब मिल ब्रजकी बाल ॥
चौबोला-सब मिल ब्रजकी बाल कहतयहआपुसमेंसबग्वालीजी॥
यमुनातट ठाढे मनमोहन चलहिं कवनविध आलीजी ॥
कौनभांति कर यमुना न्हावै मोहन करत कुचालीजी ॥

कैसे करि हम बसनउतारें देखत हैं बनमालीजी ॥ १ ॥
मींजत पीठ औचकहि आवै बसन लेत भजिजावैजी ॥
कहो फेर कैसे तब पावैं काल्हघाट नहिं आवैजी ॥
कहत सकुचकी बात उपर मन मन आनंद बढावैजी ॥
अंतर्गतिकी हरि सब जाने गोपिनको यह भावैजी ॥ २ ॥

दोहा–लज्जान्तर युवती करत, जानी कुँवर कन्हाय ॥
अंतर भलो न प्रेममें, सो अबदेहु मिटाय ॥

चौबोला–सो अब देहु मिटाय हरी तब यह मन बात उपाईजी ॥
ये जल भीतर न्हात उघारी देहुँ इन्हें समुझाईजी ॥
जो जलमें तिय नांगी न्हावे होत दोष अधिकाईजी ॥
नांगी परपति सन्मुख आवै तबहिं दोष यह जाईजी ॥ १ ॥
सो इनको यह दूषण टारों देहों लाज मिटाईजी ॥
करों आज इनसों विधि सोई यह हरिके मन भाईजी ॥
जो कछु चूकदासते होई आप सुधारत आईजी ॥
भजेंहिं निरंतर हरिको भावे अंतर नांहि सुहाईजी ॥ २ ॥

दोहा–अन्तर तजि हरिको भजे, वेद संत सोइ गाय ॥
बसन हरो इक बार सब, यह मन कियो उपाय ॥

चौबोला-यह मन कियो उपाय प्रभू तब सबकी दृष्टि चुराईजी॥
कदम वृक्ष चढ़ रहे लुकाई दृष्टिं परे कहुँ नाईजी ॥
जब गोपिन हरि देखेनाई हेराति इत उत माईजी ॥
जाने सदन गये नँदलाला न्हान यमुन तट आईजी ॥ १ ॥
धरे उतारि वसन भूषण सब यमुनाके तट माईजी ॥
नग्न होय स्नान करनहित बैठी जल ढिग आईजी ॥
पैठि कराति स्नान सकल मिल ग्रीवालों जल माईजी ॥
कनक कंज फूले मनु सुन्दर मुख छबि बरनि न जाईजी॥ २ ॥

दोहा—बार बार बूडत जलहि, प्रेम न हृदय समात ॥
शिवसों विनती करपुनी, रविको जोरतिहाथ ॥
चौबोला-रविको जोरति हाथ कामना[1] यहमन करि सब ध्यावेजी॥
नँदनंदनको पति करि पावें रविसों विनय सुनावेजी ॥
कामातुर सब गोपकुमारी हरिसों ध्यान लगावेजी ॥
मूंदहिं नैन दरश चितलावैं शब्द श्रवण सुख चावेजी ॥ १ ॥
भुज जोरत अंकम हित लागी प्रेम मगन ब्रजबालाजी ॥
प्रभु अंतर्यामी[2] सब जानें देखत मदन गुपालाजी ॥
धन्य धन्य ब्रज बाल करत ये मोहित तपहि विसालाजी ॥
क्षण क्षणकी सेवा हरिमानी लखी प्रीति नँदलालाजी ॥ २ ॥
दोहा—मोहिं विरद राखे बनै, काहु भाव कोउ ध्याय ॥
मम[3] कारण बहु श्रम कियो, अब दुख देहुँ मिटाय ॥
चौबोला—अब दुख देहुँ मिटाय समुझि जन पीरा दया उपाईजी
उतरे तरुते श्रीबलबीरा हरिजनके सुखदाईजी ॥
प्रेम मगन युवती सब न्हावें रहीं ध्यान मन लाईजी ॥
हरि तब भूषण वसन लिये सब चढे कदमपर जाईजी ॥ १ ॥
सोरहसहस बधुनके लीने बसन अभूषण साराजी ॥
ले राखे सब तरुके ऊपर हरे एकही बाराजी ॥
करचो कदम तरु अति विस्तारा फूले सुमन[4] अपाराजी ॥
लैलै वसन डार अटकाये भूषण जहँ तहँ न्याराजी ॥ २ ॥
दोहा—पाटम्बर सारी विविध, नीलाम्बर छविभार ॥
श्वेत पीत नाना रँगन, धरे कदमकी डार ॥
चौबोला—धरे कदमकी डार देखि मन रही वसंत सिहाईजी ॥
सो तरु शाखा परम सुहायो जहँ बैठे सुखदाईजी ॥

---

१ अभिलाष । २ हृदयकी बात जान न हार । ३ मेरे । ४ फूल ।

देखत कदम चढे नँदलाला बसन विना सब न्हाईजी ॥
ध्यान करतते जब सब जागीं तब जल बाहिर आईजी ॥ १ ॥
जलते निकारि आय तट देख्यो बसन अभूषण नाईजी ॥
इत उत देखि चकित भईँभारी सकुचि जलहिपै आईजी ॥
नाभि प्रयंत नीरमें ठाढी उरसों भुजा लगाईजी ॥
कपत शीतते अति अकुलाई बार बार पछिताईजी ॥ २ ॥

लावनी।

ऐसो को भूषण बसन सबनके हरे एकही बारी ॥
तबते सब लिये चुराय वाय कछू लागी नेक अवारी ॥
नेकहु नहिं लागी देर अबहिं हम राखे तुरत उतारी ॥
जानति हम मन यह बात सबन सब लीने कुंज बिहारी ॥
येसबके मनमें आई, निश्चयही लिये कन्हाई, मन मन सब रही लजाई ॥ दीन होय तब युवति पुकारीं जावे श्याम बलिहारी ॥
ऐसो को भूषण बसन० ॥ १ ॥

बिनती सुनिलीजे नाथ दरश अब दीजै आय दिखाई ॥
अम्बर हरि हमरे देहु मरत हम जलमें सकल जड़ाई ॥
थर थर कंपत ब्रजनारि देख नहिं सके श्याम सुखदाई ॥
कहा कहति मोहिं ब्रज वाम कदमते बोले कुँवर कन्हाई ॥
कत जलमें मरत जडाई, तुम लेहु बसन यहां आई, यों कहत श्याम सुखदाई ॥ तुम पट भूषण धर तीर बिसर गई मैं कीनी रखवारी ॥ ऐसो को भूषण बसन० ॥ २ ॥

अब रखवारी कछु देहु बसन तुम लेहु आय यहां सारी ॥
ऐसे जब हरि मुख सुन्यो सुनत ही मगन भई सुकुमारी ॥
धारचो कछु उरमें धीर नीरमें ठाढी सब ब्रजनारी ॥

सब हरि चरित्रको देखि हरषभई लखे कदम की डारी ॥
सब आपुसमें बतराई, देखो हरिकी चतुराई, यह हम पर घात उपाई ॥ हम सब जलके बीच उघारी मांगत है रखवारी ॥ ऐसो को भूषण बसन० ॥ ३ ॥

तब हँसि बोली ब्रजबाल लाल तुम सुनहू कुँवर कन्हाई ॥
यह रखवारीकी बात आप निज हमको कहा सुनाई ॥
तन मन धन अर्पण कियो तुम्हें सो तुम कहा जानत नाई ॥
मन दियो हमारो तुम्में रहत सो तुमरे पास सदाई ॥
तुम सुनहु श्याम सुखरासी, लखि हैं कोऊ ब्रजवासी, निज जानि आपनी दासी ॥ विनती सुन लीजे नाथ हमारे अंबर देहु मुरारी ॥ ऐसो को भूषण बसन० ॥ ४ ॥

दोहा—जो तन मन मोको दियो, यों हँसि कह्यो कन्हाय ॥
तो मानो मेरो कह्यो, लेहु बसन यहां आय ॥

चौबोला—लेहु बसन यहां आय कहतहों सुनहू कुँवर कन्हाईजी
नग्न कौन विधि आवें नारी कहा अनरीत चलाईजी ॥
हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई कैसे देह दिखाईजी ॥
यह माति आप कहांधौ पाई तुम जो आज सुनाईजी ॥ १ ॥
पुरुष जात यह कहत न कबहूं ऐसी जिनहिं सुनावोजी ॥
कहत श्याम जो नगन न आवो तो अंबर नहिं पावोजी ॥
जो तन मन दीनों तुम मोको तोकत लाज रखावोजी ॥
मान लेहु तुम मेरो भाष्यो अन्तर दूर बहावोजी ॥ २ ॥

दोहा—शीत सहत हो काह तुम, लाजहिं देहु बहाय ॥
जल ते निकसो जोरकर, विनती मोहिं सुनाय ॥

चौबो०-विनती मोहिं सुनाय अबहिं ज्यों रविसों विनय उचारीजी
त्योंहीं सन्मुख मोहिं निहोरो मानहुँ बात हमारीजी ॥

यह सुनि सकल हँसीं ब्रजनारी ऐसी कहो न मुरारीजी ॥
हाहा लागहिं पाँयतिहारे पाप होत अति भारीजी ॥ १ ॥
छाँडि देहु यह टेक कन्हाई लीजै भूषण साराजी ॥
शीत मरत हम जलके माहीं दीजे वसन हमाराजी ॥
जोतिय अंग पुरुष कहुँ देखे दूषण होत अपाराजी ॥
नारिनग्न नहिं देखिये मोहन सुनहू नन्ददुलाराजी ॥ २ ॥

दोहा–तुमको दया न आवही, हो तुम निठुर कन्हाइ ॥
सोइ करो जो सोहही, तुम पटतर कोउ नाइ ॥

चौबोला–तुम पटतर कोउ नाइ आजते हम सब दासतिहारीजी
कैसे अंग दिखावैं नारी हठ न करो बनवारीजी ॥
अंग दिखाये भूषण पैहो नातर रहो उघारीजी ॥
थोरेहीमें भलो मनावो मानहुँ बात हमारीजी ॥ १ ॥
कत अंतर राखतिहो हमसों बार बार समुझाईजी ॥
यह दूषण लागहि सब हमको लेहु वसन यहां आईजी ॥
मोहित तप कीनो तुम भारी अब कत मनहिं लजाईजी ॥
मैं अंतर्यामी सबजानी करिहौं तुम मन भाईजी ॥ २ ॥

दोहा–पूरण तप तुम्हरो भयो, लाज देहु सब डारि ॥
सुनि यह मोहनके वचन, मगन भई ब्रजनारि ॥

चौबोला–मगन भई ब्रजनारि तबहिं सब मिल यह बात उपाईजी
अबतो टेकपरे बनवारी करिहैं मनकी भाईजी ॥
कहति परस्पर मिल सब गोपी हरि हठ छांडत नाईजी ॥
बसन बिना कैसे बनि हैं अब कौन भाँति घरजाईजी ॥ १ ॥
चलो लीजिये चीर सखीरी और उपावहि नाईजी ॥
मनमोहन बलबीर कछू जो सुनो सो कहत कन्हाईजी ॥
यह विचार जल बाहर आई बैठी तटहि लजाईजी ॥

बारबार हरि निकट बुलाई तबहिं अधिक सरमाईजी ॥ २ ॥
दोहा–हाहा हठ नहिं कीजिये, देहु हमारे चीर ॥
मानेंगी उपकार हम, बहुत है शीतसमीर ॥
चौबोला–बहुतहै शीत समीर नाथ तुम हम सब दासतिहारीजी
हम सबकी पत हाथ तुम्हारे राखि लेहु बनवारीजी ॥
छांडहु लाज करहु ममबानी ऐसे कहत मुरारीजी ॥
देहों तुमको नन्ददुहाई आवहु यहां मिल सारीजी ॥ १ ॥
पहिरो बसन आय इत सबही देवहु लाजबहाईजी ॥
तब सबहिन यह मनमें जानी करिहैं हरि मनभाईजी ॥
कर कुच अंग ढांकि भईं ठाढी बदन नवाये आईजी ॥
गईं कदम तर कहति श्यामसों देवहु बसन कन्हाईजी ॥
दोहा–हाथ जोरि विनती करी, बोले तब घनश्याम ॥
जो कहिहो करिहैं सबै, हँसि बोलीं ब्रजबाम ॥
चौबोला–हँसि बोलीं ब्रजबाम हमहुँ कबूलैहैं दाँव बगाईजी ॥
उभय कमल कर जोर सकल मिल हरिसों विनय सुनाईजी ॥
मांगति सकल निहोरि कहति सब दीजे बसन कन्हाईजी ॥
रीझे लखि गोपिनकी प्रीती भक्तनके सुखदाईजी ॥ १ ॥
निश्चय भक्ति देखि हरि बोले धन्य धन्य ब्रजनारीजी ॥
देखि निरंतर गोप कुमारी दिये बसन बनवारीजी ॥
अति आतुर सब पहिरन लागीं प्रेम प्रीति सुकुमारीजी ॥
तब हँसि बोले कुंजविहारी मैं पति तुम मेरी प्यारीजी ॥
दोहा–कह्यो हमारो मान अब, अंतर देहु मिटाय ॥
शरद रात तुम आश सब, मैं पुरहों निज आय ॥
चौबोला–मैं पुरहों निज आश सबनकी लेहों अंकम मालाजी ॥
अब तप करि तुम मति तनुगारो कहत नंदके लालाजी ॥

विरह ताप तनुको हरलीनो करसों परसि गुपालाजी॥
विदा करी हँसि नंदकेलाला सदन गई ब्रज बालाजी ॥ १ ॥
मन मन कहत कृष्ण वर पायो गोपी अति हरषाईजी॥
विहारन हरि जनके सुखदाई आयें सदन कन्हाईजी॥
इहि विधि हरि सब ब्रजकि तियनसों सुन्दर प्रीति बढ़ाईजी॥
ब्रजविलास बिलसत विधि नाना अखिल लोकके राईजी॥ २॥

अथ वृन्दावन वर्णन लीला॥

दोहा—सब विधि करि सब विधि सुखद, सुन्दर घन सुखकन्द॥
मुदित सकल ब्रज गोपगण, निरखत गोकुल चन्द॥
चौबो०-निरखत गोकुल चन्द हरिहि लखि मात पिता सुखपावेजी
बालभाव बहु लाड लडावे आनँद उर न समावेजी॥
नवल किशोर सुभग तनु श्यामा निरखन ब्रजतिय आवेजी॥
ग्वाल बाल सब सम करि मानें प्रीति रीति मन लावेजी॥ १॥
नित उठ गाय चरावन जावें खेलत ब्रज नँदलालाजी॥
इक दिन सोवत सदन कृपाला आये बुलावन ग्वालाजी॥
कहत सखा चलो गाय चरावन जननि कह्यो उठो लालाजी॥
उठहु तात मैया बल जाई टेरत बलि अरु ग्वालाजी॥ २॥

दोहा—दरश दिखा सुख दीजिये, करहु कलेऊ लाल॥
भई बेर बनको अबै, अब मति सोउ गुपाल॥
चौबोला—अब मतिसोउ गुपाल सुनत हरि सोवतमें अलसावेजी॥
सुनत बात आलस मनमाई उठन मनाहिं मन चावेजी॥
कबहूं वसन ढांकि मुख सोवे कबहुँ उघार लखावेजी॥
खेलत नैन पलक झुकि आवे लखि जननी सुख पावेजी॥ १॥
उठो लाल जननी जब बोली तब चितये सुखदाईजी॥

पटगहि पुनि पुनि फेरत मुखपर उठे तुरत हरषाईजी॥
कबके टेरत ग्वाल कहत सब आवहु कुँवर कन्हाईजी॥
चलहु बनाहिं नँद नंद बेग अब आगे निकस गईं गाईजी॥२॥
दोहा—यह सुनि हरि तुरतहिं उठे, झारी लई मँगाय॥
दुहुँ भैयन दतवन कियो, पोछे मुख निज माय॥
चौबोला-पोछे मुख निजमाय कहति कछु करहु कलेउ कन्हाईजी
एक थार दोउ सुत बैठारे परसाति यशुमति माईजी॥
दधि माखन रोटी अरु मेवा मिल जेवत दोउ भाईजी॥
परसत बैठी निकट यशोदा अतिहि मोद मन माईजी॥१॥
मात प्रेमते अति तृपताये कर अचवन दोउ भाईजी॥
द्वारे टेर उठ्यो इक ग्वाला चलहु वनाहिं सुखदाईजी॥
बल मोहन आवहु दोउ भाई बनाहिं गईं सब गाईजी॥
ग्वाल वचन सुनि अति अतुराये तुरत उठे दोउ भाईजी॥२॥
दोहा—मुरलि लकुट पट लै हरी, चले वनहिं मनलाय॥
केतिक दूर गैया गईं, ग्वालहिं बूझत जाय॥
चौबोला—ग्वालहिं बूझत जाय कछुक बन पहुँची ह्वै हैं जाईजी
कछु मगहीमें जात कन्हाई सुनत चले हरषाईजी॥
बन पहुँचत सुरभी लइजाई बल मोहन दोउ धाईजी॥
कहत सखन सों जात कितहिं तुम हमहूं पहुँचे आईजी॥१॥
हम जेवन लागे दोउ भाई तुम आये अतुराईजी॥
अब हम दूर चरे हैं गैया तुम सँग रहत बलाईजी॥
यह सुनि सखा धाय सब आये हरिको अंकम लाईजी॥
तुम हो सबहिनके सुखदाई हमें मति तजहु कन्हाईजी॥२॥
दोहा—आज चलहु हरि कुमुद बन, शीतल सघन सुहाइ॥
सुनत कह्यो हरि हरषि मन, नीक कही यह भाइ॥

चौबोला–नीक कही यहभाइ सबहिंकी गाय करो इक ठोरीजी ॥
लैलै नाम गाय सब टेरत धूमरि राती धोरीजी ॥
कबरी पियरी गौरी कजरी खैरी फुलही भोरीजी ॥
रौची मोडी लीली कपली लाखी नैनी चोरीजी ॥ १ ॥
ऐसे सुरभी[१] टेर बुलाई चले कुमुद बन धाईजी ॥
तब बलि कह्यो दूरमति जाहू लरिहैं यशुमति माईजी ॥
बलिको कह्यो मान सुखदाई लीने सबन बुलाईजी ॥
कहत सबन समुझाय हरी अब कौन कुमुद बन जाईजी ॥२॥

दोहा–बुरो मानि हैं नंद सुन, और यशोमति माय ॥
चलिये वृन्दावन सुखद, ल्यावहु गाय फिराय ॥

चौबो०-ल्यावहु गाय फिराय यमुन तट सुरभी चरत अघाईजी
फेरीं गाय ग्वाल सब धाये श्याम चले अगवाईजी ॥
जात चले वृन्दावन मोहन संग सखा समुदाईजी ॥
करत कुलाहल[३] आनँद भारी पहुँचे सब बन माईजी ॥ १ ॥
सुरभी गण चहुँ दिश बगराई कहत सखा हरषायेजी ॥
जादिन अघहत श्याम सिधाये तादिन ते अब आयेजी ॥
बहत मनोहर त्रिविधि[४] बयारी देखत बन सुख पायेजी ॥
देखत श्याम सखन सँग लीने विटप चहूं दिश छायेजी ॥ २ ॥

दोहा–नव किशलयदल सुमन मनु, वसंत शृंगार बनाइ ॥
मधुर मिष्ट सुन्दर अमित, फलके डारि सुहाइ ॥

चौबोला–फलके डारि सुहाइ मनहुं सब देखि श्याम सुखपाईजी
देत भेट तरु शीश नवाई हरिके सन्मुख आईजी ॥
गुंजत भँवर पुंज छबिपाई स्तुति मनहुँ सुनाईजी ॥
जहँ तहँ थकित मनहुँ अनुरागे ठाढे एकहिं पाईजी ॥ १ ॥

---

१ गाय। २ बहुत। ३ हल्ला। ४ शीतल, मंद, सुगंध समीर।

वेली विविध ललित सब लपटीं फूल रही शुभकारीजी ॥
सोभित सहित शृँगार किये जिमि निज निज पति संग नारीजी॥
मंद पवन लागत कबहूं तब हाल उठत सब डारीजी ॥
बारबार पुलकित मनहूं सब आनँद उर अति भारीजी ॥ २ ॥

दोहा—कुंज पुंज मंजुल सुखद, शीतल सुगंध सुहाय ॥
हरि विश्रामहिं हेतु जनु, रचे विचित्र बनाय ॥

चौबोला—रचे विचित्र बनाय बोलत कल खगबहु रंग सुहावेजी॥
कीर कपोत कोकिला संगे मनहुं अनँद भरे गावेजी ॥
मधुर सुरन बाजत जनु बाजे तरुदल पवनाहिं लावेजी ॥
क्रीडत मर्कट शुभगति लीने मनु नटकला दिखावेजी ॥ १ ॥
मनहुँ तमासगीर सब ठाढे मृग गण चितवत आईजी ॥
पाय श्यामघन हित बनराई करी मनु अनँद बधाईजी ॥
बनसोभा कछु बरनि नजाई रहत बसंत सदाईजी ॥
जहां सुभाव काल गुण नाहीं वैर भाव नाहिं राईजी ॥ २ ॥

दोहा—सदा एक रस रहतहै, परम सुखनकी रास ॥
चिंतामणि मय भूमि शुभ, कोमल विमल प्रकास ॥

चौ०-कोमल विमल प्रकाश बनहिको को कवि बरन बतावैजी ॥
शेष महेश गणेश ब्रह्म सुर पार न कोऊ पावैजी ॥
श्रीवृन्दावन धाम सुखदकी महिमा कहत न आवैजी ॥ १ ॥
देखि श्याम वन भये सुखारी बैठे तरुतर जाईजी ॥
वृन्दावनकी करत बड़ाई बलिसों कहत सुनाईजी ॥
मैं यह वन देखत सुख पाऊँ लागत अति सुखदाईजी ॥
सुरतरु धेनु रमा बैकुंठहु याहि देखि बिसराईजी ॥ २ ॥

दोहा—यह यमुना तट सुभग अति, सुरभी सुखद चराय ॥
यह सुख मोहिं त्रिभुवन नहीं, ताते तनु धर आय ॥

चौबोला–ताते तनु धर आय दाऊ तुम सत्य रहो उर धारीजी ॥
यह वृन्दाबन जड़ माति जानो है यह अति सुखकारीजी ॥
चितवनमें आनँद की राशी भक्त जनन भयहारीजी ॥
परमधाम मम परम सुहावन पावन पावन कारीजी ॥
जे तरु वृन्दाबनके माईं कल्पवृक्ष सर नाईंजी ॥
कल्पवृक्षके तरुतर जावै मांगत तब फल दाईंजी ॥
वृन्दाबन तरु चिन्तत जोई प्रेम भक्ति सो पाईंजी ॥
जाके वशमें रहत सदाई तजि अपनी प्रभुताईजी ॥ २ ॥

दोहा–वृन्दाबन अनुराग नर, प्रेम भक्ति सो लहत ॥
श्रीमुख बरण्यो श्यामजू, वृन्दाबनको महत ॥

चौबोला–वृन्दाबनको महत सुनत मन बलदाऊ सुख पावैजी॥
सखावृन्द सुनि श्रीमुख बाणी आनँद उर न समावैजी ॥
चितवत हरि मुख पलक बिसारी जिमि चकोर शशि चावैजी॥
निज लीला हरि प्रगट जनावै आपुसमें बतरावैजी ॥ १ ॥
पुनि पुनि पुलक कहत हरषाई हरिसों विनय सुनाईजी ॥
बार बार तुमको करजोरे हमे माति तजहु कन्हाईजी ॥
जहां जहां तुम तनु धारि आवै तहां तहां चरण छुवाईजी ॥
ब्रजते तुम्हें न टारों भैया हँसि बोले सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तुम मेरे मन भातहो, मैं तुमते सुख पात ॥
या ब्रज सम त्रिभुवन नहीं, ब्रज तज अंत न जात ॥

चौबोला–ब्रज तज अंत न जात तुम्हारे हेत वेद यह धारीजी ॥
तुमते ब्रजलीला विस्तारी कहत सखन बनवारीजी ॥
हैयह ब्रजमोको अति प्यारो रहत न मैं ब्रज टारीजी ॥
ऐसे गुप्त बात ग्वालनसों हँसि हँसि कहत मुरारीजी ॥ १ ॥
सखा वृन्द सुनि हरिकी वाणी रहे सकल हरषाईजी ॥

प्रेम पुलकि तनु मुदित मनहिं मन देह दशा बिसराईजी ॥
धनि ब्रज धनि वृन्दाविपिनहीं धनि तुम कुँवर कन्हाईजी ॥
हम सब अज्ञ न जानत नाहीं तुम्हरे गुण सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा-तुम प्रभु हम सब दासहैं, हो तुम हमरे नाथ ॥
कबधों गोप तनु धारिहो, दुर्लभ तुमरो साथ ॥

चौबोला-दुर्लभ तुमरो साथ नजाने बहुरि अहो सुखदाईजी ॥
कब तुम फिरिहो सुरभिनसाथा लिये लकुट करमाईजी ॥
कब धौं फिर ऐसे सुख देहो खैहो छाक छिनाईजी ॥
बलि बलि जैहैं श्याम तुम्हारी विनती सुनहु कन्हाईजी ॥ १ ॥
सुन्दर मुरली नेक बजावहु अधर सुधारसवारीजी ॥
तुम्हें नंदकी सौंह दिवावें मानहुँ अरज हमारीजी ॥
तुमरे मुख यह बाजत नीकी हमरी जीवन प्यारीजी ॥
सुनत सखनकी कोमल वाणी भक्तनके हितकारीजी ॥ २ ॥

दोहा-भक्त वत्स प्रभु दीनहित, गुण गंभीर कृपाल ॥
भये प्रसन्न जन हितहरी, चितये नैन बिसाल ॥

चौ०-चितये नैन बिसाल लकुटको निकट धरचो सुखकारीजी ॥
पाछे मुरलीको गहि लीनी मन अति हरष मुरारीजी ॥
पकर दुहूँकर अधर धरी तब मुरली टेरउचारीजी ॥
मोहि लियो चर अचर जलहि थल नन्दसुवन बनवारीजी ॥ १ ॥
भई थकित गतिपै यमुना जल कियो शयन नँदलालाजी ॥
रहे जहाँ तहँ चित्र लिखेसे खग मृग मौन बिहालाजी ॥
उपजावत हैं राग रागनी गावत हैं देतालाजी ॥
सखा वृन्द सुनि तन मन वारत निरख रहे छबि ग्वालाजी ॥ २ ॥

दोहा-देत परमसुख सखनको, सुन्दर श्याम सुजान ॥
धन्य धन्य कहि ग्वालसब, वारत तन मन प्राण ॥

चौबोला–वारत तन मन प्रान सखनको ऐसे श्याम रिझावैंजी ॥
हँसत ग्वाल दे तारि मुरलिमें नाम सबनको गावैंजी ॥
लेत हमारो नाम कन्हाई आपुसमें वतरावैंजी ॥
ऐसे हमको गाय सुनावो यों हरि सबनसुनावैंजी ॥ १ ॥
लै मुरली तिनके कर दीनी अति मनहरषि कन्हाईजी ॥
लेले निजकर सकल बजावत हरिके स्वरनहिं आईजी ॥
आसपास सोहत सब बालक मध्य श्याम सुखदाईजी ॥
हँसि हँसि सबके चितहि चुरावत अति आनँद मनमाईजी॥२॥

दोहा–जो स्वरगायो आपहरि, सोनकाउ पै आय ॥
कहत सखा सो कोन है, हरि सम सकै बजाय ॥

चौबोला–हरि सम[2] सकै बजाय जासु शिव ब्रह्मा ध्यानलगावैंजी
सहसाननित[3] नव गुण गावैं शारदपार न पावैंजी ॥
सुर मुनि कोऊ पार न पावै सो हरि वेणु बजावैंजी ॥
विहारन हरिजनके हितकारी भक्तवत्सल कहावैंजी ॥ १ ॥
कारण करण अनंत गुणहिं हरि निगमनेति जिहिंगावैंजी ॥
सो ग्वालन सँग वेणु बजावै देखहु भक्त प्रभावैंजी ॥
वृन्दावन की रेणुवाञ्छित ब्रह्मादिक ललचावैंजी ॥
तहां श्याम सुख देत सखन सँग नित उठ धेनु चरावैंजी ॥ २ ॥

अथ द्विजपत्नी याचनलीला।

दोहा–विहरत वृन्दावन हरी, लीला विविध बनाय ॥
कबहुँ सखन सँगगावहीं, कबहूँ वेणु बजाय ॥

चौबोला–कबहुँक वेणु बजाय कबहुँ हरि गैयन घेरत धाईजी ॥
कबहुँक यमुनाके तट जावै खेलत कुँवर कन्हाईजी ॥
करत कुलाहल आनँद भारी देत गारि हरषाईजी ॥

---

१ मित्र। २ बराबर। ३ शेषनाग।

ऐसे लीला करत अपारा ग्वालन भूख लगाईजी ॥ १ ॥
कहत भये सब हरिसों आई क्षुधालागि अधिकाईजी ॥
यह सुनि प्रभु भक्तन हितकारी निज मन बातउपाईजी ॥
सुनि सुनि मेरे गुणगण गाना द्विजपत्नी मनलाईजी ॥
तिनको दरशन आज दिखाऊं करिहौं तिन मन भाईजी ॥ २ ॥

दोहा—तब हरि ग्वालन सों कह्यो, करत यज्ञद्विजआय ॥
तिनके निकटहि जाय तुम, यों कहियो समुझाय ॥

चौबोला-यों कहियो समुझाय तुमाहिं ढिंग हमकोकृष्णपठायेजी
यहि विधि कहियो जाय सबनसों भोजन मांगन आयेजी ॥
यह सुनि ग्वाल गये तहां सबही जहां विप्रसमुदायेजी ॥
यज्ञ करत अहमितलीन्हे सब विद्याको बल पायेजी ॥ १ ॥
ग्वालन करी प्रणाम द्विजनको यह कर जोर सुनाईजी ॥
मांग्यो है भोजन तुम पाहीं पठये कुँवर कन्हाईजी ॥
आये इतहि चरावन गाई राम कृष्ण दोउ भाईजी ॥
ते कछु आजभये हैं भूखे सुनि द्विजगये सुखाईजी ॥ २ ॥

दोहा—करीरसोई यज्ञहित, अहिरन कौन खवाय ॥
फिरेग्वालद्विजवचनसुनि, कहीश्यामसोंआय ॥

चौबोला—कही श्याम सों आय सुनतही बोले कृष्णमुरारीजी ॥
ये द्विज कर्म धर्म लपटाने कहत बलहि बनवारीजी ॥
तब ग्वालनसों कह्यो कन्हाई जाउ जहां वे नारीजी ॥
उनको है दृढभक्ति हमारी सुनि हैं बात तुम्हारीजी ॥ १ ॥
उन सों मांगो जाय कहो यों भूखे भये कन्हाईजी ॥
तब द्विजनारिनढिग सब आये हाथ जोर शिरनाईजी ॥
कह्यो राम अरु कुँवर कन्हाई भूखे हैं दोउ भाईजी ॥
मांग्यो है कछु भोजन तुमसों कहो सो कहि हैं जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुनि ग्वालनके वचन सब, हर्षिंउठीं द्विजबाम[1] ॥
कहति हमारोभाग्यधनि, भोजन माग्यो श्याम॥
चौबो०-भोजनमांग्योश्यामकरतरहींसुनिनिताजिनकोध्यानाजी॥
तिनको भोजन ले सब चालीं सफल जन्म निज जानाजी ॥
षटरस व्यंजन विविध विधाना अमित भांति पकवानाजी ॥
खीरखांड माखन सिखरन दधि अरु मेवा विधि नानाजी॥ १ ॥
कहँ लग वरणों कहूँ प्रकारा प्रेमसहित द्विजनारीजी ॥
बहुतिक ग्वालनके करदीने भरि भरि कंचन थारीजी ॥
उपजी प्रीति हृदय अतिगाढी नैनन दरशमुरारीजी ॥
चलीं पतिनकी कानि बिसारी निरखन गोप विहारीजी ॥ २ ॥
दोहा–ग्वालन सों पूछतिचली, कित हैं कुँवर कन्हाइ ॥
जिनके पति जो घरहते, जानदेत सो नाइ ॥
चौबोला–जानदेत सो नाइ कहत कित जात चली अतुराईजी॥
लोकलाजतनु दशा भुलाई सुधि बुधि सब बिसराईजी ॥
तिनसों कहत भईं ते नारी हमको श्याम बुलाईजी ॥
मांग्यो है भोजन उन हमसों जात देन उन पाईजी ॥ १ ॥
तिनको दरश देखि हम आवें बहुरि तुम्हारे पासेजी ॥
यह सुनि पति अति क्रोधभये तब तिन्हैं दिखायो त्रासैजी[2] ॥
कहत कि तुम कित भई बावरी बैठति नाहिं अवासैजी[3] ॥
जिनके उर नँदलाल बसे हैं श्याम सुन्दर सुखरासैजी ॥ २ ॥
दोहा–बसे लकुट[4] मुरली लिये जिनके उर नँदलाल ॥
कौन भांति रोकी रुकैं, तिनहि नभययमकाल ॥
चौबो०-तिनहिं नभययमकाल कहतिपतिकहाहमपरतुमतीजैजी
कहारोक अपयश शिरलेहो वृथा विलम्ब न कीजैजी ॥

१ ब्राह्मणोंकी स्त्री। २ भय। ३ घर। ४ छड़ी।

त्रिभुवन पति प्रभु मदन गुपालहि हमहिं देखने दीजैजी ॥
हाहा दान देहु यह स्वामी मानि हमारी लीजैजी ॥ १ ॥
वेहैं यज्ञ पुरुषभगवाना अन्तर्यामि कन्हाईजी ॥
करत यज्ञ विधि तिन्हैं विसारी तुमसब मति विसराईजी ॥
बीतत जात अवधि दरशनकी कहँ लग कहुँ समुझाईजी ॥
जो तुम स्वामी मानत नाहीं तो कहैं सत्य सुनाईजी ॥ २ ॥

दोहा—मन तो मिल्यो नँदलाल सों, कत रोकत हौ खाल ॥
लेहु सँभारहु देह यह, को राखै जंजाल ॥

चौबोला—को राखै जंजाल जासु तुम अपनी रहे बनाईजी ॥
नहिं राखों यह देह हरीके रहिहों चरणन माईजी ॥
जो निहचै नहिं श्याम सन्देहा वृथा देह किम पाईजी ॥
देखोंगी छबि हरिकी सुन्दर सबसों आगे जाईजी ॥ १ ॥
पतिकी कानि मिटाय तीयसो देह गेह तजि जावेजी ॥
प्रथमहिं पहुँची ते सब आगे जो द्विज रोक रखावेजी ॥
कठिन प्रेमको पंथहि कहिये तहाँ नेम कहां आवेजी ॥
कहत सकल यह ग्रंथ साध जहँ नेम तहँ प्रेम न आवेजी ॥२॥

दोहा—लेले भाजन द्विजतिया, पहुँचीं सब बनजाइ ॥
ठाढे भुजगहि सखन सँग, नटवर भेष कन्हाइ ॥

चौबोला-नटवर भेष कन्हाइ मुरलिकर कमल नैन छबिछावेजी॥
मोर मुकुट वैजंतीमाला लखत तियन मनभावेजी ॥
कुंडल अलक तिलक झलकाई निरखत मदन लजावेजी ॥
मुख मृदुहँसनि लसत पट पीरो निरखि नैन सुख पावेजी ॥१॥
भोजन लै हरि आगे राखे धनि धनि भाग्य उचारीजी ॥
वचनन करि तिनको सनमानी अति हित कर बनवारीजी ॥
तिनसों बहुरो कह्यो कन्हाई गृह पति तजि कहा धारीजी ॥

कहियत विप्र वेद अधिकारी हो तुम तिनकी नारीजी ॥ २ ॥
दोहा—यज्ञ करत वे वनहिंमें, तुम बिन यज्ञ न होय ॥
पति आयसु मान्यो नहीं, भलो कियो नाहिं कोय ॥
चौ०-भलो कियो नाहिं कोय पतिनकी आयसु तुमहिं मिटाईजी
पतिको प्रभु करि जो तिय माने चार पदारथ पाईजी ॥
पतिहि देवता कहिये तिनको वेद कहत यह गाईजी ॥
जाहु सकल अब निज निज पति ढिग समुझि लेहु मनमाईजी॥
कर्म धर्म हम जानत नाहीं सुनहु श्याम अभिरामाजी ॥
द्विजतिय परम सुजान जोरकर बोलीं वचन ललामाजी ॥
तुमहीं सकल जगतके स्वामी अंतर्यामी नामाजी ॥
यज्ञपुरुष तुमहीं सुखधामा तुमहीं पूरण कामाजी ॥ २ ॥
दोहा—तुमको ध्यावै यज्ञ करि, चार पदारथ पाइ ॥
सकल धर्म मय शरण यह, जीवनको सुखदाइ ॥
चौबोला-जीवनको सुखदाइ यहै हम पतियन मुख सुनपाईजी ॥
कहत वेद इतिहास बखानी शारद नारद गाईजी ॥
यह दूषण नाहिं हमें गुसाँईं ताते शरणों आईजी ॥
तुम माया वश पती भुलाने पहिचाने प्रभु नाईजी ॥ १ ॥
तिनको दोष क्षमा प्रभु कीजे यह हरि अरज हमारीजी ॥
हमको शरण आपनी लीजै हम सब दासि तिहारीजी ॥
अपने चरण शरण रख लीजे अब जिन राखो न्यारीजी ॥
सुनि प्रभु द्विजपत्निनकी बानी हरषे मन बनवारीजी ॥
दोहा—धन्य धन्य हित करि कह्यो, भोजन लीनो कान्ह ॥
दे अपनी दृढ भक्ति हरि, तिन्हें कह्यो घर जान ॥
चौबोला—तिन्हें कह्यो घर जान सबनको बिदा करी जगनाथाजी॥
ह्वैहैं शुद्ध तुम्हारे स्वामी चलीं सकल मिल साथाजी ॥

पाय भक्ति वरदान चलीं घर हरि आयसु धरि माथाजी ॥
चलीं हर्षि तिय सदन मगन मन राखि हृदय ब्रजनाथाजी ॥
नँद नंदनकी करत बड़ाई द्विजपत्नी घर आईजी ॥
देखत तिन्हें विप्र समुदाई शुद्ध विमल मति पाईजी ॥
धन्य धन्य कहि तियन बखानी आपन धृक बताईजी ॥
जिनके हेत यज्ञ हम कीनो भोजन दीनो नाईजी ॥ २ ॥
दोहा—हम विद्या अभिमानकर, अविगति गति किम पाय ॥
पारब्रह्म प्रभु दीनहित, जन हित प्रगटे आय ॥
चौबोला—जनहित प्रगटे आय हरीको हम पहिचाने नाईजी ॥
बार बार धृक धृक है मोको कहत सकल मनमाईजी ॥
हैं यह तिय अतिशय बड़भागी जिनको ध्यान कन्हाईजी ॥
ब्रह्मादिक खोजतहैं जाईं ताइ देखि यह आईजी ॥ १ ॥
ऐसे बहु विध तियन सराई पुनि पुनि बारम्बाराजी ॥
आदर कर लीनी घर माहीं अति आनँद द्विज साराजी ॥
प्रेम प्रीति कर जो हरि ध्यावे सो उतरे भवपाराजी ॥
नर नारी कछु नाहिं बिचारा प्रभुको प्रेमहिं प्याराजी ॥ २ ॥
दोहा—भावतियन को धारि उर, तब हरि कृपानिकेत ॥
सखन सहित भोजन करत, रुचिसोंप्रीतिसमेत॥
चौबोला—रुचिसोंप्रीति समेत जेवतसब सो छबिबरनिनजावैजी॥
करत परस्पर हासबिलासा छीन छीन हरिखावैजी ॥
अति रुचि भोजन कियो कन्हाई सखा वृन्द सुख पावैजी ॥
वनमें फिरत चरावत गैया कबहुँक इत उत धावैजी ॥ १ ॥
भये सखा सगरे इकठौरी चरत वनहिंमें गाईजी ॥
दुपहर घाम जान मनमाई देखि सघन घन छाईजी ॥
बैठे ग्वाल बाल चहुँ डरियां सो छबि बरणि न जाईजी ॥

मध्य श्याम सुन्दर सुखदाई जिमि शशि उडुगण माईजी ॥२॥
दोहा–मोर मुकुट कटि काछनी, कर मुरली वनमाल ॥
कोटि काम लज्जित निरखि, सुन्दर घन नँदलाल ॥
चौबोला–सुन्दर घन नँदलाल कबहुँ हरि मुरली मधुर बजावेंजी
कबहुँ सखन संग सारंग गावें नाना भाव बतावेजी ॥
कोऊ ताल बजावत नीके आनँद उर न समावेजी ॥
कोऊ सखा नृत्यको करहीं ततकारी कोउ लावेजी ॥ १ ॥
मगन देख सुरवृन्द करत हरि केल सो बनहिं कन्हाईजी ॥
कहत धन्य ये ब्रजके बासी बिहरत जहँ सुखदाईजी ॥
धनि वृन्दावन चन्द्र धन्य यह बिटप भूमि छबि छाईजी ॥
धन्य धन्य ब्रज कहि सुर रीझत हर्षि सुमन झरि लाईजी ॥२॥
दोहा–वन विहार हरिको निरखि, मनमन देख सिहाहिं ॥
हम न भये द्रुम लता तृण, श्री वृन्दावन माहिं ॥
चौबोला–श्री वृन्दावनमाहिंखेलतहरितहाँ सबसखाबुलायेजी ॥
खेलहिमें सब रहे भुलाई निकसगई कितगायेजी ॥
गैयांकितहिचरत को जाने यह सुनि खेलभुलायेजी ॥
जित तित हेरनको सब धाये ले गैयां सब आयेजी ॥ १ ॥
जेसुरभी आई नहिं जानी चरत सघन बनमाईजी ॥
तिनको तरुचढि कान्ह बुलाई मुरली टेर सुनाईजी ॥
ऐसी गैयां श्याम सधाई मुरली सुनि सब आईजी ॥
जब जब गैंयन श्याम बुलाई हूंहूं करि सब धाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तिनपर कर फेरत हरी, ले पट झारि गुपाल ॥
करत प्यार तिनसों, अती हस्तकमलप्रतिपाल ॥
चौबोला–हस्त कमल प्रतिपाल हरीको निरखि गायसुखपावैजी

१ नक्षत्र। २ आनंद। ३ वृक्ष। ४ देवता।

तिनके भाग्य कहत नाहिं आवै लखि सुरधेनु सिहावैंजी ॥
जब हरि गैयन करसों परसे कामधेनु तरसावैंजी ॥
कामधेनु यह कहत काहु विधि हमहुँ जन्म ब्रजपावैंजी ॥ १ ॥
चारत त्रिभुवन नाथ जिनहिंको धनि धनि ब्रजकी गाईंजी ॥
झारत पोंछत दुहत नितहिनित अपने हाथ कन्हाईंजी ॥
कामधेनु ब्रजधेनु लखतही मनहीं मन पछिताईंजी ॥
हरि कर पंकज हमहुँ परसती हम न भईं ब्रजमाईंजी ॥ २ ॥

दोहा—नानाविधि लीला करत, बनमें ललित कन्हाइ ॥
वृन्दावन बीत्यो दिवस, भई सांझ नियराइ ॥

चौबोला—भई सांझ नियराइ चलहु घर सबसों कहत कन्हैयाजी॥
गाय घेर आगे करलेहू चलहु वेग अब भैयाजी ॥
चलहू वेग विलंब न लावो भयो अब सांझ समैयाजी ॥
भली कही यह बात कहत सब आगे करलइ गैयाजी ॥ १ ॥
बनते निकरि चले सब ग्वाला आवत ब्रजहिं कन्हाईंजी ॥
सुरभी वृन्द गोप बालक सँग अति आनँद मनमाईंजी ॥
अधर अनूप मुरलि सुर गावे गौरी राग बजाईंजी ॥
सुनत श्रवण ब्रज सुंदरि धाईं गृहकारज विसराईंजी ॥ २ ॥

दोहा—कहति परस्पर सकल मिल, वे आवत नँदलाल ॥
देखि सुभग छवि श्यामकी, मगन भईं ब्रजबाल ॥

चौ०-मगन भईं ब्रज बाल पूरण शशि उदित श्याम छबिछाईंजी
कुमुदिनसर फूलीं ब्रजबनिता आनँद उर न समाईंजी ॥
नैन चकोर रहे टकलाई विरहकी ताप मिटाईंजी ॥
कहति सकल ब्रजबाम प्रेममय अति आनँद मनमाईंजी ॥१॥
देखहु सखि यशुमति सुतसोभा छवि अनूप सुखदाईंजी ॥
श्यामलतनु पटपीत सुहायो मोर मुकुट छवि छाईंजी ॥

कुंडल ललित सुभगकर मुरली उर बन माल सुहाईजी ॥
भ्रुकुटी बिकट नैनरतनारे सो छबिबरनि न जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—गोपदरज छबि छावही, नटवरभेष सुहाय ॥
एक कहति देखहुसखी, लेतहै मनहिं चुराय ॥
चौबोला—लेत है मनहिं चुराय सुनतही सखी सकलहरषाईजी॥
निरखत हरि मुख छबि सुखपाई आनँद उर नसमाईजी ॥
गौर श्याम सुन्दर दोउ भाई सखावृन्द समुदाईजी ॥
कृपादृष्टि हरि सबन निहारत जन हितजन सुखदाईजी ॥ १ ॥
कहत परस्पर युवति सयानी धनि धनि सखि यह मोरेजी ॥
कियो मुकुट जिनकी पांखनको नटवर नंदकिसोरेजी ॥
धनि धनि सखि यह बांस जासुकी बजनमुरलि घनघोरेजी ॥
हरि पूरत निजसांस ताहि मधि को पुनीत अब औरेजी ॥ २ ॥
दोहा—गये सदन निज निज सखा, घर आये दोउभाइ ॥
देखि मगन दोउ मात मन, लीन्हें कंठलगाइ ॥
चौबोला—लीन्हे कंठ लगाय काहेहरि आज अबार लगाईजी ॥
यह कहि बारबार बलिजावत मगन यशोमति माईजी ॥
रोहिणिसों कह्यो यशुमति माई भूखे हैं दोउभाईजी ॥
तुम भोजनकी करहु तयारी मैं दोउ देत न्हवाईजी ॥ १ ॥
निकट लिये मुरली करलीनी धरी लकुट बनवारीजी ॥
नीलांबर पीतांबर लीने दीनो मुकुट मुरारीजी ॥
प्राण समान यशोमति जानी राखे सदन समारीजी ॥
छोरति अंग भूषण महतारी मुक्तामाल उतारीजी ॥ २ ॥
दोहा—कटि किंकिन भुज बन्द भुज, छोरति निरखत गात ॥
अति प्रसन्न यशुमति महर, आनँद उर न समात ॥
चौबोला—आनँद उर न समात दोउनके झारति अंग उर लाईजी

और नकोऊ टहल करैया तुम चेरे दोउ भाईजी ॥
जब तुम रहे लाल अति नन्हा तब मैं लियो बसाईजी ॥
सुनि हँसि हँसि हरि बलिसों बोले झूंठ कहत यह माईजी ॥ १ ॥
सांच झूंठकी बातरी मैया यह तो जानिनजाईजी ॥
मैं चेरी हँसि हँसि कहति तब यशुमति लेत बलाईजी ॥
सुमनासुत अंगन परसायो उष्णशीत जल ल्याईजी ॥
प्रेम प्रीति दोउ सुतहि न्हवाये पोंछति अंग सुख पाईजी ॥ २ ॥

दोहा—षटरस व्यंजन सरस ले, दीने मातजिमाइ ॥
अति रुचि सों भोजन कियो, राम श्याम दोउ भाइ॥

चौबोला—राम श्याम दोउभाइ दुहुँनहित झारी भरिले आईजी॥
अचवन करि मुखधोय उठे तब रोहिणि बीरा ल्याईजी ॥
बीराखाय मुदित दोउभाई विहारन लेत बलाईजी ॥
यशुमतिके सुख कौन गिनावे शारद सकहि न गाईजी ॥ १ ॥
धन्य धन्य धनि यशुमति माई महिमा कहत न आवैजी ॥
ब्रह्म सनातन है प्रभु जोई सोई पुत्र कहावेजी ॥
जो प्रभु सकल विश्वके स्वामी विधि हर पार न पावैजी ॥
विश्वंभर निजनाम ताहिको यशुमति गोद खिलावैजी ॥ २ ॥

अथ गोवर्धन लीला ॥

दोहा—रहत मगन गुण श्यामके, निशिदिन आठोयाम ॥
महरि महरके प्राण धन, मोहन सुन्दर श्याम ॥

चौबोला--मोहन सुन्दर श्याम यशोमति हरिक्षण विसरत नाईजी
निशि दिन जात न जानति नाहीं मगन प्रेम मन माईजी ॥
देव पितर सब काल भुलाने रहत सकल सुख पाईजी ॥
कातिक सुदि परवा जब होई पूजत इंद्र सदाईजी ॥ १ ॥

ताकी सुधि बुधि सबन भुलाई सबके ध्यान कन्हाईजी ॥
सो तिथि अति समीप जब आई यशुमति मन परखाईजी ॥
कहत नंद सों नँदकीरानी सुरपति भेट भुलाईजी ॥
जाकी कृपा बसत ब्रज माई कमी कछूकी नाईजी ॥ २ ॥
दोहा—दूध दही माखन मही, सकल वस्तु घरमाइ ॥
सहस मथानी मथतानित, नौलख दूधतगाइ ॥
चौबोला—नौलख दूधतगाइ उनहिंकी कृपा नवौ निधि पाईजी ॥
जिनकी कृपा पुत्र हम पाये दीने विघ्न नशाईजी ॥
भई सकल[1] ब्रज मांझ बडाई कुशल रहो दोउ भाईजी ॥
गोप गाय ब्रजके रखवारे सुरपति[2] देव सदाईजी ॥ १ ॥
तिनकी तुम सब सुरत भुलाने दिवस[3] पाँच रहे आईजी ॥
इंद्र यज्ञकी करहु चडाई गोपन लेहु बुलाईजी ॥
कहत महरि सों नंद सुरत तुम भलि यह मोहिं दिवाईजी ॥
भूलि गये हम इंद्रदेवको काज मोह वश माईजी ॥ २ ॥
दोहा—विनय करत सुररायसों, हाथ जोर नँदराय ॥
क्षमा कीजियो मोहिं प्रभु, तुमको गयो भुलाय ॥
चौबोला—तुमको गयो भुलाय कहत नँद सब उपनंद बुलायेजी
श्री वृषभानु सहित सब आये सुनत तुरत उठधायेजी ॥
महर महर मिल शीश नवाये देखि नंद सुख पायेजी ॥
अति आदर सबहिनको कीनो सादर सब बैठायेजी ॥ १ ॥
कंस कछू मांग्यो तो नाहीं आपुसमें बतरायेजी ॥
राज अंश उनको जो होई विन मांगे दे आयेजी ॥
बूझत नंदहि सब सकुचाये कौने काज बुलायेजी ॥
मैं तुमको इहि काज बुलाये नंद सबन समुझायेजी ॥ २ ॥

---

१ सब। २ इन्द्र। ३ उदिन।

दोहा–सुरपति पूजाके दिवस, पहुँचे समिपहि आय ॥
मैं भूल्यो नृपकाजमें, तुमहूं गये भुलाय ॥
चौबोला–तुमहूं गये भुलाय रह्यो मैं राज काज लपटाईजी ॥
निशि दिन लोभहि मांझ भुलान्यो मोहिं सुरत नहिं आईजी ॥
इंद्र यज्ञकी सुरत भुलाई दिन समीप गये आईजी ॥
ताते अब सब करहु चडाई इंद्र यज्ञ सुखदाईजी ॥ १ ॥
सुरपतिको हम सदा मनावें तिनकी सुरत भुलाईजी ॥
देवकाजजिय जानि गोप सब रहे सकल हरषाईजी ॥
हम सब भूले सुरपति पूजा यों कहि रहे पछिताईजी ॥
कहत नंद सों सकल गोप मिल भलि यह सुरत दिवाईजी॥२॥
दोहा–क्षमा करावत पाप सब, सुरपतिको शिरनाय ॥
गये गोप निज निज सदन, अति मन हरष बढ़ाय ॥
चौबोला–अति मन हरष वढाय पूजा विध करनलगे सबजाईजी
जिहिं जिहिं भांति सदा चल आई विधिवश सोंजसजाईजी ॥
अमित भांति पकवान मिठाई करत घरन घर माईजी ॥
नंद महर घर बजत बधाई गावति नारि सुहाईजी ॥ १ ॥
नेवज करत यशोदा रानी आठो सिद्ध मँगाईजी ॥
वेसन मैदाके पकवाना करत धरत विधि लाईजी ॥
घृत मिष्टान्न सबै परिपूरण मिश्रीपाक बनाईजी ॥
विविध भांति पकवान मिठाई नाम कहे नहिं जाईजी ॥ २ ॥
दोहा–और नारि ब्रजकी सबै, घृत पकवान बनाहि ॥
चढीं कढाई जहँ तहां, यशुमति जात सिराहि ॥
चौ०–यशुमति जात सिराहि मांगति जो रोहिणि सो पहुँचावैजी
महरि सबनकी ओर निहारै पृथक पृथक रखवावैजी ॥
सौंति सौंति अति नेम प्रेम सों धरत अछूतजावेजी ॥

श्याम कहूं परसे नहिं भोजन यों मन माहिं डरावैजी ॥ १ ॥
सुरपति पूजा जानि जीयमें शंक करत मन माईजी ॥
सब देवनको देव हरी सो यशुमति जानति नाईजी ॥
खेलत ते संतन सुखदाई आये सदन कन्हाईजी ॥
जननी कहति यहां जनि आवो लरकन देव डराईजी ॥ २ ॥

दोहा–आंगनही ठाढे रहे, मन मन हँसत कन्हाइ ॥
मैया ऐसो देवको, इतनो भोजन खाइ ॥

इतनो भोजन खाय सुनतही खीज कहतहै माईजी ॥
ऐसी बात न कहो कन्हाई खेलहु बाहिर जाईजी ॥
बालकको अपराध क्षमावै पुनि पुनि देव मनाईजी ॥
युवति कहत हरिचले रिसाई गये श्याम अनखाईजी ॥ १ ॥
देव काज कहा जाने मोहन जानदेहु कहां जावैजी ॥
छूहै कहूँ श्याम यह भोजन जिन कहुँ इंद्र रिसावैजी ॥
और नहीं हम काउअ जाने इंद्रहि सदामनावैजी ॥
राम श्यामको कुशल राखियो इंद्रहि विनय सुनावैजी ॥ २ ॥

दोहा–कृपा करो सुरराय तुम, तुम सम देव न आन ॥
ऐसे सुरपति यज्ञ हित, यशुमति करत बिधान ॥

चौबोला–यशुमति करत बिधान गये हरि जहां बैठे नँदराईजी ॥
ब्रजके जे उपनंद तहां सब जुरे नंद ढिग आईजी ॥
करत बात विधि इंद्र यज्ञकी बैठे अति सुखपाईजी ॥
पुहुप माल मंडली विराजत दीपमाल सजवाईजी ॥ १ ॥
ढोल निसान बाजने बाजे मुदित ग्वाल समुदाईजी ॥
आभूषण पहराय गोप सब चित्र विचित्र बनाईजी ॥
सात बरषके कुँवर कन्हाई खेलत ग्वालन माईजी ॥
द्वारन युवती चित्र बनावैं गावत मंगल बधाईजी ॥ २ ॥

दोहा—सथिया रचि पुनि थापकर, पूजा करत विधान ॥
पूजा देखी श्याम तब, हँसे देखिकै कान्ह ॥
चौबोला—हँसे देखिकै कान्ह मोआगे सुरपति पूजा ठानेजी ॥
मोते और देवको दूजा वह मोको नहिं जानेजी ॥
ब्रजबासी मोको नहिं जाने सुरपतिको यह मानैजी ॥
अब यह मेटों यज्ञ बिहाने लियो बहुत दिन यानेजी ॥ १ ॥
ब्रजबासिनपै आप पुजाऊं नाम धरों गिरिरायेजी ॥
गये नंद ढिग कुँवर कन्हाई यह विचार ठहरायेजी ॥
हरषि नंद कनियां बैठाये बदन चूम उर लायेजी ॥
तब हरि बोले नंद महरसों मधुर मंद मुसकायेजी ॥ २ ॥
दोहा—करत पुजाई कौनकी, बाबा मोहिं बताय ॥
काहेको पूजत सबै, कौन देव सो जाय ॥
चौबोला—कौन देव सो जाय बतावो मैं नहिं जानत बाईजी ॥
नंद कह्यो तब सुनहु कन्हाई इंद्र सबनके राईजी ॥
तिनको पूजत गोप सदाहै कुलमें रीति चलाईजी ॥
ताते तिन्हें पूजिये मोहन कुशल रहो दोउ भाईजी ॥ १ ॥
या पूजाते जल वे बरसत हो प्रसन्न सुरराईजी ॥
तृण अनाज उपजतहै जाते गाय गोप सुखदाईजी ॥
याते सदा यज्ञ यह कीजे सुखी रहत सब गाईजी ॥
तब हरि कह्यो सुनहु नँद ताता तुम यह बात सुनाईजी ॥ २ ॥
दोहा—जहां इन्द्र पूजत नहीं, तहँ बरसत किम जाय ॥
सुने वचन नंद श्यामके, उत्तर देत न आय ॥
चौबोला—उत्तर देत न आय हरी जब ऐसी बात सुनाईजी ॥
मनहिं कहत अति चतुर कन्हाई इतनी बुधि कहां पाईजी ॥
देवकाज कहा जाने नन्हा है अति बाल कन्हाईजी ॥

जाहु सदन अब वेग श्याम तुम हरषि कह्यो नँदराईजी ॥ १ ॥
ऐसे में जिन जाहु कहूं तुम भीर बड़ीहै लालैजी ॥
कितधौं आवत जात कोउ कहुँ फिरत गोप गण ग्वालैजी ॥
मेरे पलकापर तुम जावो सोयँ रहो गोपालैजी ॥
पाछेतेही निकट तुम्हारे आवत मैं अब हालैजी ॥ २ ॥

दोहा–तब हरि मन इक बुद्धि करि, और गोप ढिग जाय ॥
तिन्हें कह्यो समुझाययों, मोहिं निशि सपनो आय ॥

चौ०-मोहिं निशि सपनो आय पुरुष इक अति पुनीत सुखदाईजी
चार भुजा तनु सुभग शृँगारू देहैं दरश दिखाईजी ॥
इन्द्रहि पूजे कहा बड़ाई मोहिं कह्यो समुझाईजी ॥
गिरि गोवर्धन प्रगट दिखाऊं पूजहु तिनको जाईजी ॥ १ ॥
तुम आगे भोजन सब खैहै अपनो रूप दिखाईजी ॥
चार पदारथके ये दाता अन धन कौन चलाईजी ॥
ऐसे देव छांडि घरमाई पूजत इन्द्र वृथाईजी ॥
कोटि इन्द्र ये क्षणमें मारें क्षणहीं कोटि उपाईजी ॥ २ ॥

दोहा–गोबर्धन सम दूसरो, और न कोऊ देव ॥
मोमनहूं ये आवहीं, करहु गिरीकी सेव ॥

चौबोला–करहु गिरीकी सेव गोवर्धनहैं सब सुखके दाताजी ॥
चकित गोप हरि वचन सुनतहीं कहत अकथ यह बाताजी ॥
सुने न अबलौं देव कहूं हम प्रगटहोयके खाताजी ॥
सोचत सब उपनंद नन्दमिल सुनि अचरजकी बाताजी ॥
कहा कहत नँदलाल सुपनकी बात समुझि नाहिं जाईजी ॥
सुनि यह बात सबन ब्रजपाई देख्यो सुपन कन्हाईजी ॥
सुरपति पूजादेत मिटाई गिरिकी करत बडाईजी ॥
कोऊ कहत कान्ह कह सांची कोउक सांच न आईजी ॥

दोहा—कोउ कहत बालक हरी, जानें कहा पुजाय ॥
कोउइन्द्रकोउकहत कछु, बातसमुझिनहिं जाय ॥
चौबोला—बात समुझि नहिं जाय कहत बलि[1]गोपनसोंसमुझाईजी
को महिमा जाने अविनाशी हरि जनके सुखदाईजी ॥
इनको तुम बालक मति जानो करो सो कहत कन्हाईजी ॥
नंद निकट जे गोप सयाने कहत सकल हरषाईजी ॥ १ ॥
कीजै सोई कहत कन्हाई यों नंदको समुझावैजी ॥
मेरेहू मनमें यह आवै यों नँद सबन सुनावैजी ॥
मोहिं भरोसो है यह हरिको स्वप्नझूंठनाहिं जावैजी ॥
कालीको सुपनो हरि देख्यो तबते सांचहि आवैजी ॥ २ ॥
दोहा—ताते जोई कीजिये, कान्ह कहत सोइ बात ॥
सब ब्रजवासी पूजिये, गोवर्धन चल प्रात ॥
चौबोला—गोवर्धन चल प्रात पूजिये यहै बात ठहराईजी ॥
कौन भांति गिरि[2] पूजन कीजै कहो कान्ह समुझाईजी ॥
हार्षे श्याम यों कहत सबनसों जो तुम सोंज बनाईजी ॥
सब व्यंजन पकवान मिठाई शकट[3]न लेहुभराईजी ॥ १ ॥
नाचत गावत सहित हुलासा चलहु सकल गिरिराईजी ॥
तहाँ जाय गिरिवरहि मनावो पूजहु भोगलगाईजी ॥
मुँहमांगे तुमको फलदेहै भोजन लेहैं खाईजी ॥
मेरो कह्यो सत्य तुम मानो स्वप्न न जात वृथाईजी ॥ २ ॥
दोहा—देखहु परच्यो निजनयन, तब मोहिं सांच बताय ॥
जो चाहो ब्रजकोभलो, तो पूजो गिरिराय ॥
चौबोला—तो पूजो गिरिराय श्याम यों दीनों सबनसुनाईजी ॥
सबहिन बात मानसोइ लीनी भये सुखी मन माईजी ॥

---

१ बलराम । २ पर्वत । ३ गाड़न ।

कहत सकल मिल अति हरषाई चलहु श्याम गिरिराईजी ॥
करत गोपगण परम हुलासा घर घर आनँदबधाईजी ॥ १ ॥
मिलत परस्पर अंकमलाई शकट सोंजसजदीनेजी ॥
बहु व्यंजन पकवान मिठाई अमित भांतिके कीनेजी ॥
रस गोरस मेवा विधि नाना मधुर सुमिष्ट नवीनेजी ॥
षटरस व्यंजन किये यज्ञहित सो सबहिन सजलीनेजी ॥ २ ॥

दोहा–कछु शकटन कछु काँवरन, षटरसके सब भोग ॥
लेले गिरि पूजनचले, गृह गृहते ब्रजलोग ॥

चौबोला-गृह गृहते ब्रजलोग चले सब आनँद उर न समावैजी ॥
नंदमहरकें घरकी सामा नाम कहत नहिं आवैजी ॥
सहस शकट पकवान मिठाई गोरस भार भरावैजी ॥
नंद सदन ते ले सबग्वाला गोवर्धन को जावैजी ॥ १ ॥
नाना विधि पटभूषण साजे ब्रजगोपन समुदाईजी ॥
नंद महर उपनंद जितेका चलेहर्षि गिरिराईजी ॥
सुभग शृंगार किये दोउ भाई बलि अरु कुँवर कन्हाईजी ॥
सखा वृन्द सोहत सँग सुन्दर निरखत मदन लजाईजी ॥ २ ॥

लावनी।

पूजन सब गिरिको चले गोप मन हरषित आनँद भारी ॥
सामा सब लई सजाय सबन निज निज धरि कंचन थारी ॥
लिये चन्दन धूप सुगंध सुमन अक्षत अरु पान सुपारी ॥
दीपक विधि लई सजायधरी सुन्दर निर्मल जलझारीजी ॥
ऐसे सब सोंज सजाई, रोहिणि अरु यशुमति माई,
अरु ब्रजकी नारि बुलाई ॥ सबमनमें अति आनंद चली शुभगा
वति मंगल चारी ॥ पूजन० ॥ १ ॥

वृषभानुपुराले आदि सकल ब्रजके सब लोग लुगाई ॥
श्री राधा भानु कुँवारि संग सखियनकी भीर सुहाई ॥
पट भूषण नाना रंगकिये नवसत शृंगार बनाई ॥
कीरति रानीके संग नारि सब यूथ यूथ मिल आई ॥
सबके मनमेंयहआई, देखेंगी कुँवर कन्हाई, मनमें रहेश्यामसमाई॥
कब देखैं शीघ्रहि जाय सबन मन लगी प्रीति अति भारी ॥
पूजन० ॥ २ ॥

सब परम मुदित ब्रजवाम बसे मन श्रीनटवरबनवारी ॥
यों कहत मनहिंमन माहिं देखि हैं हरि छबि आनँदकारी ॥
मुखचन्द्र छबी मृगनैन सुघर बोलत कोकिल समसारी ॥
नवयौबनमें भरपूररहीं छकि सब ब्रज गोपकुमारी ॥
सबके मनमोहन भावैं, चालिगोवर्धनको जावैं, भई भीर मगहु नहिं पावैं ॥ चली जात हरषाय मगनमन भरी प्रेमर सनारी ॥ पूजन० ॥ ३ ॥

सब सखा वृन्द ले साथ जात गोवर्धन कुँवर कन्हाई ॥
सब करत केलि मगमाहिं गोप गण ताल मृदंग बजाई ॥
नाचत कोउ गावत जात भीरते मारग पावत नाई ॥
कोउ शकटन सोंजसमार एकको एकहिं लेत बुलाई ॥
सब ब्रजकी गोप कुमारी, भरीं प्रेम मगन रससारी, निरखत छबि कुंज बिहारी॥सुनत न कोऊ बात परस्पर होत कुलाहल भारी॥
पूजन सब गिरिको चले, गोप मन हरषित आनँदभारी ॥ ४ ॥

दोहा-सबको मन हरिमें बस्यो, गोवर्धन मग जात ॥
देखत कौतुक श्यामके, आनँद उर न समात ॥

चौबोला·आनँद उर न समात गोपगण हरिको देखि सिहावेजी ॥
ब्रज बासिनकी भीर सुहाई उपमा कहत न आवेजी ॥

नन्द महर उपनन्द सकल अरु राम श्याम दोउ जावेजी ॥
पहुँचे सब गोवर्धन जाई निरखि शिखर सुख पावेजी ॥ १ ॥
उतरे सहित समाज चहूंदिश ब्रजवासी समुदाईजी ॥
सोभित मध्य गिरी गोवर्धन सो छबि परम सुहाईजी ॥
चहुँ दिश फेरकोस चौरासी घेर लिये गिरिराईजी ॥
लगे चहूं दिश चारु बजारा अति छबि कहत न आईजी ॥ २ ॥

दोहा—वस्तु वरणि नहिं जावही, बिनहीं मोलबिकात ॥
गावहिं मंगल युवति सब, नटवा नाच दिखात ॥

चौबोला—नटवानाच दिखात देख सब रहे गोप हरषाईजी ॥
भये प्रसन्न देखि गिरिराई आनँद उरन समाईजी ॥
बूझत पूजन विधि नँदराई कहहू कुँवर कन्हाईजी ॥
यज्ञ आरंभ करहु हरि बोले लीजे विप्र बुलाईजी ॥ १ ॥
पूछ वेद विधि तिनसों लीजे पूजहु सब गिरिराईजी ॥
तबहिं विप्र नँदराय बुलाये लिय आदर बैठाईजी ॥
यज्ञ आरंभ कियो तब विप्रन हरिकी आयसु पाईजी ॥
परम रुचिर वेदिका बनाई साम वेद ध्वनि गाईजी ॥ २ ॥

दोहा—देखनको धाये सबै, ब्रजके जेनर बाम ॥
भयो देवता गिरि बड़ो, ताहि पुजावत श्याम ॥

चौबोला-ताहि पुजावत श्याम गोप सब देखि हृदय हरषावेजी ॥
करत जोइ नँदलाल करत सो देखि देखि मन लावेजी ॥
पंचामृत बहु कलस भराये गिरिको शिखर न्हवावेजी ॥
बहुरो ले गंगाजल डारचो चंदन तिलक चढावेजी ॥ १ ॥
भूषण वसन विचित्र चढाये सुमन माल पहराईजी ॥
धूपदीप कारि आरति साजी झालर घंट बजाईजी ॥
करत वेद ध्वनि विप्र सुहाये देखत सुर समुदाईजी ॥

सुरपति पूजा कृष्ण मिटाई थाप्यो ब्रज गिरिराईजी ॥ २ ॥
दोहा—देखि इन्द्र मन गर्व करि, गोपनपर रिसहाय ॥
पूजत गिरि मोहिं तजि यह, देहों गिरिहिबहाय ॥
चौबोला—देहों गिरिहिं बहाय गोप सब ब्रजकोउ रहन न पाईजी
देखो तब को करत सहाई यह विचार ठहराईजी ॥
देखी मैं सब इनकी करनी मरन काल बुधि आईजी ॥
सुपनेको सुख लेत मनाई पूजत गिरि मनलाईजी ॥ १ ॥
श्याम कह्यो तब नन्द महरसों भोजन लेहु मँगाईजी ॥
गिरि आगे सब राखहु ल्याई अर्पहु विनय सुनाईजी ॥
ल्यावहु भोजन गिरिके आगे कहत सबन नँदराईजी ॥
सामग्री जोहती भोगकी लीनी सब रखवाईजी ॥ २ ॥
दोहा—विविध मिठाई पाक सब, अमित भांति पकवान ॥
षटरसके व्यंजन बहुत, नाना भांति संधान ॥
चौबोला-नाना भांति संधान मेवा मधु बहु प्रकारकी त्यारीजी॥
सुन्दर सरस[१] एकते एका मधुर मिष्ट रुचिकारीजी ॥
खीर आदि बहु भांति रसोई भर धरि कंचन[२] थारीजी ॥
मूंग भात अरु बरा पकौरी कोरी दधिकी न्यारीजी ॥ १ ॥
कियो अन्नको कोट सुहावन ऐसोइ गिरी सुहावेजी ॥
परसि परसि गिरि आगे राखत जिहिं विधि श्याम बतावेजी ॥
जिमि पूजत गिरि कुँवर कन्हाई तिमि सब पूजत जावेजी ॥
गिरि गोवर्धनके चहुँ ओरी अन्न कोट छबि छावेजी ॥ २ ॥
दोहा—ठौर ठौर वेदी रची, अन्न कोट चहुँपास ॥
तिन मधि गोवर्धन गिरी, राजत[३] अति शुभरास ॥
चौबोला--राजत अति शुभरास अनूँपम[४] गिरिछबि परमसुहाईजी

१ श्रेष्ठ। २ सोना। ३ सोभित। ४ जिसकी उपमा नहीं।

सुन्दर रूप मनोहर मानहु खान छबीकी आईजी ॥
गिरि गोवर्धन राय सुभगकी छबि बरनी नहिं जाईजी ॥
बिहारन जनकोलखत सुहावन ध्यान परम सुखदाईजी ॥ १ ॥
महिमा अमित अपार गिरीकी को कवि बरन बतावैजी ॥
जिहिं पूजत करतार ब्रह्म शिव शारद पार न पावैजी ॥
तीनयामदिन गयो प्रातते गोपन भोग सजावैजी ॥
कहत नंद हँसि श्याम सुन्दर सों कहहु गिरिः अब खावैजी॥२॥

दोहा–कहत सबन समुझाय हरि, अर्पहु घंट बजाय ॥
दीन वचन मुखते कहो, मनकी खुटक मिटाय ॥

चौबोला–मनकी खुटक मिटाय मूंद दृग रहो ध्यान मन लाईजी
प्रेम सहित कर जोर मनावो विनवहु सब गिरिराईजी ॥
हरि गोपन पूजा सिखरावे आपुन आप पुजाईजी ॥
जिनपर कृपा करत मनमोहन तिनपर टहल कराईजी ॥ १ ॥
हरिको कह्यो मान सब लीनो बहुविधि गिरिहि मनायोजी ॥
तब प्रगटे गोवर्धन नाथा यज्ञ पुरुष श्रुति गायोजी ॥
सहसभुजातनु श्याम तमाला मोर मुकुट छवि छायोजी ॥
नख शिख भूषण परम अनूपम अंग अंग दरशायोजी ॥

दोहा–देखि कहत ब्रजलोग सब, दियो दरश गिरिराय ॥
जै जै जै कहि सुर सकल, हर्षि सुमन झरिलाय ॥

चौबोला–हर्षि सुमनझरि लाय गोप गण देखि२सुखपावैजी ॥
सहसों भुजा पसारि गिरीसो सबको भोजन खावैजी ॥
देखत ब्रजकी नारि मगन मन हरि चरित्र मनभावैजी ॥
कहत मुदित सबलोग लुगाई हरि सम गिरिहिसुहावैजी ॥ १ ॥
जैसे कान्ह श्यामतनु सोहै तैसेही गिरिराईजी ॥
तैसेइ कुंडल तैसी माला तैसी दृग चपलाईजी ॥

तैसोइ मुकुट पीतपट तैसो नखशिख रूप कन्हाईजी॥
द्वैभुजहरिके सोभित गिरिके सहस भुजा अधिकाईजी॥ २॥
दोहा–देखि दरश गिरिरायके, यशुमति अरु नँदराय॥
बड़ो देव हमको मिल्यो, दियो दरश निज आय॥
चौबोला–दियो दरशनिज आय ऐसो कहूं देखनमें नहिं आवैजी
जीवन जन्म सफल कर लेख्यो मनहीं मन हरषावैजी॥
ललिता राधेहि यों समुझावै मोहिं यह बात लखावैजी॥
यह लीला सब श्याम बनावै जेवत आप जिमावैजी॥ १॥
मैं जानी हरिकी चतुराई इन्द्रभेट बलिखावैजी॥
मेरी बात मानतू राधा इनके गुणको पावैजी॥
इतहि नन्दको करगहिराजत गोपन सों बतरावैजी॥
उत आपहि धरि सहस भुजा हरि रुचि रुचि भोगलगावैजी॥२॥
दोहा–मुदित विलोकत श्याम छवि, श्रीराधा सुखपाय॥
नितनव करत विनोद ब्रज, भक्तनके सुखदाय॥
चौबोला–भक्तनके सुखदाय इतहिं हरि गोपन सों बतरायोजी॥
उत सबहिंनको भोजन खायो रुचि करि भोग लगायोजी॥
ग्वालिन एक बिलोवनहारी भान सदन रखि आयोजी॥
जासुनाम बदरीला तानें घर ते भोग लगायोजी॥ १॥
प्रेम सहित बहु विनय सुनाई अन्तर्यामि कन्हाईजी॥
ऐसे प्रीति क्षुधित बनवारी लीनो भुजहिं बढ़ाईजी॥
भोजन करत परम रुचि मानी यह लीला ठहराईजी॥
कहत नंद सो कुँवर कन्हाई मैं जो कही सोइ आईजी॥ २॥
दोहा–देखी मेरी सांच तुम, जाने अब गिरिराय॥
खायो भोजन सबहिंको, दियो दरश निज आय॥
चौबोला–दियो दरश निज आय तुम्हारी भक्ति भावमन भाईजी

इन तुमरी पूजा सब मानी भये प्रसन्न गिरि राईजी ॥
अब तुम मांग्यो चाहो जोई मांगिलेहु सो चाईजी ॥
नन्द कहत तुम धन्य श्याम यह पूजा हमहिं बताईजी ॥ १ ॥
प्रीति रीत मन जान सबहिंको लीनो भोजन खाईजी ॥
तब बोले गिरिराय नंद सों ह्वै प्रसन्नन मन माईजी ॥
लेहु नंद वरदान तुम्हारे मन बांछित जो चाईजी ॥
बहुत करी तुम भक्ति हमारी सो मेरे मन भाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तुम समान सेवक नहीं, पूज्यो मोहिं मनलाय ॥
इन्हें कुशल राखो सदा, राम श्याम दोउ भाय ॥

चौबोला–राम श्याम दोउ भाइ दोउनकी मैंहों सदा सहाईजी ॥
मैंहीं इनको सुपन दिखायो सुरपति भेट मिटाईजी ॥
अब जो तुमपर इन्द्र रिसावै जल बरसै ब्रज आईजी ॥
कान्ह कहै सोई तुम करियो डरियो जिन मनमाईजी ॥ १ ॥
अब तुम मम प्रसादले खावो करहु बास घर जाईजी ॥
और कछू भय मन जिन ल्यावो ब्रजमें बसहु सदाईजी ॥
यह सुनि चकित[३] सकल नर नारी भोजन कियो कन्हाईजी ॥
कहत सकल मिल आन देव कोउ ऐसे परछत नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–नन्द कह्यो मांगों कहा, दरश देख भयो निहाल ॥
सकल सिद्धि तुम्हरो दियो, करुणासिंध दयाल ॥

चौबोला–करुणासिंध दयाल नाथ तुम मैंहूं दास तुम्हाराजी ॥
मोह विबस प्रभु तुमहिं न जाने यह अज्ञान हमाराजी ॥
नाथ तुमहिं बिसार भूलमैं फिरचो देवनके द्वाराजी ॥
पूजा जानहिं कहा तुम्हारी हम अहीर गँवाराजी ॥ १ ॥
आपहि स्वप्न दिखायो हरिको करी कृपा गिरिराईजी ॥

---

१ बराबर। २ मेरा। ३ दुचित्ते।

बालकसो तुम दई बडाई लीनों प्रभु अपनाईजी ॥
अब हमैं डर नहिं काऊको शरण तुम्हारी पाईजी ॥
कहा करसकै हमारो नाथा सुरपति ब्रजपर आईजी ॥ २ ॥
दोहा–तुमहीं सबके ईशहो, करता हरता नाथ ॥
कोटि कोटि ब्रह्मांड प्रभु, रोम प्रती तुम गात ॥
चौबोला–रोम प्रती तुम गात नाथमैं शरण तिहारी आयोजी ॥
राम श्यामको कुशल राखियो यह हमरे मन चायोजी ॥
दोऊ सुत ले चरणन राख्यो नंदहु शीश नवायोजी ॥
विहँस गिरी तब दोउअन मस्तक हस्त कमल परसायोजी ॥ १ ॥
नन्द गोप उपनन्द श्रीवृषभानु आदि सब आवेजी ॥
बारबार गिरिके चरणनमें परत प्रीति मन लावेजी ॥
दे प्रसाद निज पाणि गिरी जब तब मन सब सुख पावेजी ॥
जाहु सकल तुम घर अब निज निज यों गिरिराय सुनावेजी॥२॥
दोहा–कह्यो कृष्ण अब चलहु घर, कहत गिरी घरजान ॥
भली भांति पूजाकरी, सब गिरि लीनी मान ॥
चौबोला–सब गिरि लीनी मान दोउकर जोररहे शिरनाईजी ॥
भक्ति भाव सबके मनबाढी विनवत सब गिरिराईजी ॥
हरिकीनी गिरिकी परिकरमा परशि चरण सुख पाईजी ॥
देखि कहत सुरगण समुदाई धनि ब्रजलोग लुगाईजी ॥ १ ॥
धन्य नन्दको सुकृत पुरातन धनि पर्वत गिरिराईजी ॥
करत प्रशंसा सुर मुनि पुनि पुनि हर्षि सुमन झरिलाईजी ॥
निज निज लोकन देव सिधाये ब्रजवासी घर जाईजी ॥
मुदित सकल ब्रजलोग लुगाई गिरिकी करत बड़ाईजी ॥
दोहा–धन्य धन्य यशुमति महरि, जिन ऐसो सुतजाय ॥
बड़ो देवता गिरिह मैं, दीनों प्रगट बताय ॥

चौबोला—दीनो प्रगट बताय कहत सब ब्रजवासी सुखपावैजी ॥
ग्वाल गोप सब परमसुखारे सब गिरिके गुणगावैजी ॥
वर्ष वर्ष प्रति इन्द्रहि पूजत कबहुँ न दरश दिखावैजी ॥
प्रगट देत दरशन गिरिराई सबके आगे खावैजी ॥ १ ॥
सबके मन यह बात गिरीकी परम हरष नरनारीजी ॥
खेलत नित नवख्याल नन्द गृह भक्तनके हितकारीजी ॥
दुष्टनके उर शाल सुरन मुनि हरिजनके दुखहारीजी ॥
इन्द्रदेखि गोवर्धन पूजा कियो क्रोध मन भारीजी ॥ २ ॥

दोहा—ब्रजवासिन विसराय मोहिं, पूज्यो सब गिरिजाय ॥
नेक न संका उरकरी, दीनी कानि मिटाय ॥

चौबो०-दीनी कानि मिटाय तेतीसहि कोटि सुरनको राईजी ॥
मेघवर्त सब मेरे पायक देहों अबहि चडाईजी ॥
कियो अहीरन मम अपमाना कहाधौं मनमें आईजी ॥
जानबूझि इन मोहिं भुलायो गिरिपै भेट चढाईजी ॥ १ ॥
काहू इने दिये बहकाई मरण काल बुधि आईजी ॥
तुरत इन्हें अब देहुँ सजाई को तब कराहि सहाईजी ॥
ब्रजजन मार पताल पठाऊं पर्वत खोद बहाईजी ॥
फूलि फूलि भोजन जिन खायो चिह्न न राखो राईजी ॥ २ ॥

दोहा—सकल गोप पूजाकरी, बड़ो देवता जान ॥
देहों ब्रजहि बहाय सब, कीनो मम अपमान ॥

चौबोला—कीनो मम अपमान जान मन कियो क्रोध सुरराईजी ॥
प्रलयकालके मेघ सबनको लीने तुरत बुलाईजी ॥
ब्रजपर बरसहु जाय तुरत तुम तिन्हें कह्यो समुझाईजी ॥
बोरहु सब ब्रज लोक गोप सब पर्वत प्रथम बहाईजी ॥ १ ॥
मोसों अहिरन करी ढिठाई पूजा गिरिहि चढाईजी ॥

ताकारण मैं तुमहिं बुलाये लेवहु सैन सजाईजी ॥
गिरि समेत ब्रज देहु बहाई खोज रहन नहिं राईजी ॥
कापर क्रोध करत प्रभु ऐसे कहत मेघ शिरनाईजी ॥ २ ॥

दोहा—आयसु तुम्हरी पाय हम, जावें ब्रजपर धाय ॥
पर्वत खोद बहाय सब, देहैं नाम मिटाय ॥

चौबोला—देहैं नाम मिटाय होत प्रभु प्रलय हमारे पानीजी ॥
रहत अक्षयबट तनक निसानी ब्रजकी कौन चलानीजी ॥
आप क्षमा कीजे सुरराई हम करिहैं महमानीजी ॥
यह सुनि इन्द्र बहुत हरषायो दियो पान सुख मानीजी ॥ १ ॥
चले मेघ सब शीश नवाई आये ब्रजपर धाईजी ॥
क्षणहींमें रबि गगन छिपाने नेक विलंब नाहिं लाईजी ॥
कीनों शब्द गरज घन भारी घटा भयानक आईजी ॥
आई घटा डरावन कारी कज्जलते अधिकाईजी ॥ २ ॥

दोहा—चहुँ दिश लीनो घेर ब्रज, पवन प्रबल झकझोर ॥
गरज गरज घन घोर अति, चपला चमकत जोर ॥

चौबोला-चपला चमकत जोर देखि सब नर अरु नारि डराईजी
गये जे बन गायन ले ते फिर आये घरको धाईजी ॥
अंध धुंध भयो अतिभारी पंथहु दीसतनाईजी ॥
ब्रजके नर अरु नारि जहां तहां राखतवस्तु उठाईजी ॥ १ ॥
बरसत उमड घुमड घहराई फिरत मेघकी मालाजी ॥
टेरत सुतको मात पितू सब अपने अपने बालाजी ॥
बितराने डोलत सब जित तित ब्रज जन सकल बेहालाजी ॥
देखि देखि मन माहिं हँसत हरि करत श्याम यह ख्यालाजी॥२॥

दोहा—अति व्याकुल नर नारि सब, पुरखन गारि सुनाय ॥
सुरपति निजकुल देवताजि, पूज्यो गिरिकोजाय ॥

चौबोला–पूज्यो गिरिको जाय दियोफल ह्वै प्रसन्न गिरिराईजी॥
लेहु सकल अब गोद पसारी फिर पूजो गिरिजाईजी॥
चल्यो विचारि कोप सुरराई देहे ब्रजहि बहाईजी॥
जो ये बड़ोदेव गिरिराई तो किन लेत बचाईजी॥ १॥
नन्दसुवन पूजा यह ठानी ताते चल्यो रिसाईजी॥
कहति यशोमति सों ब्रजनारी यह कहा कियो कन्हाईजी॥
सुरपति है कुलदेव हमारो ब्रजते दियो मिटाईजी॥
चल्यो आप ब्रज ऊपरधाई गिरिकिन करत सहाईजी॥ २॥

दोहा–घन गर्जत तरजत अती, ब्रजजन देखि डराय॥
विकल सकल भय मन करत, लरकन लेत उठाय॥

चौबोला–लरकन लेत उठाय गोपगण आपुसमें बतरावैजी॥
कहत बन्यो अब मरन संयोगू उबरन नाहिं उपावैजी॥
देखि देखि ब्रजकी दशा सब नन्द महर पछितावैजी॥
कियो निरादर सुरपतिको हम यों मन माहिं डरावैजी॥ १॥
सोचत मनहिं महर नँदराई लिये निकट दोउ भाईजी॥
रहे अतिहि पछिताय सकल मिल जुरे गोप तहां आईजी॥
कहत कृष्ण सों सब ब्रजवासी सुनहु श्याम सुखदाईजी॥
तुमतो सुरपति यज्ञ मिटायो दीनो गिरि पुजवाईजी॥ २॥

दोहा–इन्द्र मान खंडन कियो, तुमरे कहे कन्हाय॥
ताते सुरपति रिसभयो, दीने मेघ पठाय॥

चौबोला–दीने मेघ पठाय मेघ सो बरसत वाके पायकजी॥
बरसत अति जल जोर बूंदसो लागत अति दुखदायकजी॥
भीतर गाय गोप दुख पावैं बूडमरत घरि मायकजी॥
राखिलेहु अब ब्रजकेनायक तुम दुखमेटनलायकजी॥ १॥
दावानलते राखे जैसे अब राखो जगत्यारनजी॥

बकी विनाशन शकट संहारन तृण वत्सासुर मारनजी ॥
अघमर्दन बकबदन विदारन तुम ब्रजके दुखटारनजी ॥
दीजे अभय वेग नँदलाला बरसत मेघ अपारनजी ॥ २ ॥
दोहा–राखि लेहु अब ब्रजहरी, भक्तनके सुखदाय ॥
जब जब गाढपरीहमैं, तब तब करी सहाय ॥
चौबोला–तब तब करी सहाय इही अवसर प्रभु करहु सहाईजी॥
देखि विकल ब्रज लोग हरी सब ब्रजजनके सुखदाईजी ॥
धरहु धीर उरडरहु मती तुम बोले विहँसि कन्हाईजी ॥
चलहु सकल मिल गिरिके पाहीं धरहु ध्यान मन लाईजी ॥ १ ॥
रहिहै सुरपति मन पछिताई करिहै गिरिहि सहाईजी ॥
यह कहि हरि गोवर्धन आये लीने सबन बुलाईजी ॥
गाय वत्स ब्रज लोग लुगाई गये सकल सँग धाईजी ॥
सबहिनके देखत नँदलाला लीनो गिरिहि उठाईजी ॥ २ ॥
दोहा–छिगुलिछोर लियो वामकर, तब हरि कह्यो सुनाय ॥
आवहु तुम सब याहि तर, गिरि कर लईसहाय ॥
चौबोला–गिरि कर लई सहाय नर अरु नारि गोप सब गाईजी ॥
भये सकल क्षण माहिं सुखारे देखत अचरज पाईजी ॥
चकित कहत सब लोग लुगाई धनि तुम कुँवर कन्हाईजी ॥
परसत चरण धाय सब हरिके उर आनन्द बढाईजी ॥ १ ॥
किहिं विधिकरी सहाय गिरीने यों हरि वचन सुनायोजी ॥
भक्तनहित हरि गिरी उठायो गिरिधर नाम धरायोजी ॥
गिरिधर नाम पर्‌यो तबहीं ते करगिरिराज उठायोजी ॥
देखे अति व्याकुल सब ब्रजजन सबको सोच मिटायोजी ॥ २ ॥
दोहा–सकल गोप जैजै करत, आनँद उर न समाय ॥
तिन मधि ठाढो साँवरो धर नखपर गिरिराय ॥

चौबोला—धर नखपर गिरिराय अखंडित बरसत मूसलधारीजी॥
अंध धुंध आकास चहूंदिश पवन चलत अति भारीजी॥
वज्रनीर गंभीर पुनि पुनि गरज गिरी पर डारीजी॥
करत अती उतपात ब्रजहिपर मेघ भयानक कारीजी॥ १॥
बार बार चपेला चमकत अति चकचौंधति चहुँघाईजी॥
अरर अरर आकासहिते जल डारत घन घहराईजी॥
कीन्हो गिरिहि अती विस्तारा हरिजनके सुखदाईजी॥
सब ब्रजलियो बचाय हरीने बूंद न भूपेर आईजी॥ २॥

दोहा—कहत गोप भय पायमन, नीके धरहु कन्हाय॥
अतिकोमल तुम्हरी भुजा, महा प्रबल गिरिराय॥

चौबोला-महाप्रबल गिरिरायगिरिहि कहुँ धीरकवन विधिआवैजी
महा भार गिरि कोमल बाहीं देखि नन्द पछितावैजी॥
दाबत भुजा यशोमति माई बार बार बलिजावैजी॥
देखि भार अति मन पछितावै पुनि पुनि गिरिहि मनावैजी॥१॥
करियो गिरि हरिकी रखवारी अपनो भार सँभारीजी॥
पैंय पकवान मिठाई मेवा सेवा करिहौं तुम्हारीजी॥
मात पितहि हरि देख दुखारी बुद्धि रची बनवारीजी॥
तुमहूं सब मिल करहु सहाई नंदहि कहत मुरारीजी॥ २॥

दोहा—लै लै लकुट लगाय सब, सोच मनहिं जिनल्याय॥
आप भयो गिरि सहाय अब, कह्यो मुहिलेहु उठाय॥

चौ०—कह्योमुहिंलेहु उठाय सुनत सब जहँ तहँ लकुटलगाईजी॥
कहत श्याम तब नन्द महरसों भलो लियो उचकाईजी॥
देखि देखि लीला हँसत तहां ढिग ठाढे बलिभाईजी॥
करत चरित भक्तनहितकारी कौतुक निधि सुखदाईजी॥ १॥

१ बिजली। २ पृथ्वीपर। ३ दूध। ४ तमाशा।

सात दिवस बीते इहि भांती निशि दिन झरी लगाईजी ॥
कोप कोप डारत जलधारा ब्रजमें बूंद न आईजी ॥
जलत जलद जल बीचहि अंबर वैसोइ गिरिः सुहाईजी ॥
घर जल पवन अनल नभ जाको कहा करिहै सुरराईजी ॥२ ॥

दोहा–गयो बीत द्वैगुण सलिल, रह्यो एक गुण आय ॥
भये जलद राते सकल, कहन लगे पछिताय ॥

चौबोला–कहन लगे पछिताय बात सब आपुसमें बतराईजी ॥
पठये हमें इन्द्रदे आदर ब्रजपर बरसहु जाईजी ॥
कह्यो देहु ब्रजजाय बहाई कहिहैं कहा अब भाईजी ॥
ब्रजमें बूंद न जात प्रलय जल बरसे हम सब आईजी ॥ १ ॥
भये मेघ मनमें अति कादर किहिं बिधि बदन दिखाईजी ॥
कहत मेघ सुनहू सुरराई तुमसों कहत लजाईजी ॥
कैमारौ कैशरण उबारो ब्रजपर नाहिं बसाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सात दिवस परलै सलिल, हम बरसे ब्रजजाय ॥
ब्रजबासिन भाये नहीं, निदरचो हमैं बनाय ॥

चौबोला–निदरचो हमें बनाय बूंद इक पहुँचि न ब्रजमें जाईजी॥
कहत लगत लज्जा हमें भारी यह कछु जानि न जाईजी ॥
यह सुनि चकित भयो सुरराई बूझत मेघ बुलाईजी ॥
कहा भयो परलैको पानी ब्रजकी बात न पाईजी ॥ १ ॥
पर्वतमें कोउहै अवतारा सुरपति मनाहिं उपाईजी ॥
तब सुरेश सब देव बुलाये सुनतहि आये धाईजी ॥
कौन काज सुरराज बुलाये कहत देव शिरनाईजी ॥
तबहीं देवनसों सुरराई ब्रजकी बात चलाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मोहिं मेट थाप्यो गिरिः, तबमैं मनहि रिसाय॥
दीने मेघ पठाय सब, आवहु ब्रजहि बहाय ॥

चौबोला–आवहु ब्रजहि बहाय ते वरसे महाप्रलय जल जाईजी॥
ब्रजमें नीर न पहुँच्यो राई सो कछु बात न पाईजी॥
आये मेघ हार सब रोई कारण देहु बताईजी॥
देवन कह्यो सुनहु सुरराई ब्रजहरि प्रगटे आईजी॥ १॥
तुम जानत प्रभु भूमि हरीपै दुखित पुकारी जाईजी॥
कह्यो लेन अवतार हरी तब सो विहरत ब्रज आईजी॥
मैं भूल्यो जानो नाहिं हरिको कहत इन्द्र पछिताईजी॥
भयकर मन व्याकुल भयो भारी कीनी बहुत ढिठाइजी॥ २॥

दोहा–मैं सुरपति जिनको कियो,तिन आगे बलिचाय॥
रवि आगे खद्योत जिमि, भई बुद्धि मम आय॥

चौबोला–भई बुद्धि मम आय करी मैं यह बहुतहि अधिकाईजी
कहा करों अब मन पछितावै दीसत नाहिं उपाईजी॥
ब्रजहि चलो नहिं आन उपाई कह्यो सुरन समुझाईजी॥
वेहैं प्रभू दयाल कृपाला क्षमा करहिं सुखदाईजी॥ १॥
सुनि विचार कीनों सुरराई मन मन रह्यो लजाईजी॥
तदपि वे स्वामी मैं दासा करिहैं कृपा कन्हाईजी॥
शरण गये जोहोय सो होई बनत न वदन छिपाईजी॥
यह विचार मनमें ठहरायो चल्यो शरण सुरराईजी॥ २॥

दोहा–कामधेनु करि अग्र तब, सुरन सहित ब्रजजाय॥
अति सोचत मन सुरपती, आगे परत न पाँय॥

चौबोला–आगे परत न पाँय जगतके पतिसों करी ढिठाईजी॥
कहिहौं कहा वदन दिखराई सोचत मन सुरराईजी॥
शरण शरण कहि अति उताल जब चरणन परिहों जाईजी॥
शरणागत पालन विरद तब तजिहैं नाहिं कन्हाईजी॥ १॥
करिहैं कृपा कृपालु प्रभू जब दीन वचन सुनिकानीजी॥

सुरनायक आये ब्रजही तब यहै कहत अनुमानीजी ॥
देखि सुरनकी भीर अहीरा अति मनमें भय जानीजी ॥
दौरि कृष्णसों जाय सुनायो इन्द्र सैन सज आनीजी ॥
दोहा—कहत श्याम हँसि मतिडरो, गिरि ताजि जनि कहुँजाय ॥
ब्रजबाहर सैना तजी, चल्यो आप निज धाय ॥
चौ-चल्यो आप निज धाय सकुच मन गयो कृष्ण शरणाईजी॥
कछुक दुखित मन कछुक हुलासा पर्यो चरणमें जाईजी ॥
धाय पर्यो चरणनमें जाई कृपासिंधु शरणाईजी ॥
बिसर्यो तुमहिं तुम्हारी माया तुम बिन और न सहाईजी॥१॥
शरण शरण पुनि पुनि कहि वाणी रह्यो चरण शिरनाईजी ॥
राखि राखि त्रिभुवनके राई चूक परी अधिकाईजी ॥
मैं अपराध कियो विन जानी क्षमा करहु सुखदाईजी ॥
जो बालक पितु सों बिरुझावे लेतहिं गोद उठाईजी ॥ २ ॥
दोहा—ऐसेहिं मोहिं करो प्रभू, जगत ईश जगतात ॥
जैसे सुतपर करत हित,अति सनेह पितुमात ॥
चौबोला—अति सनेह पितु मात सुनत प्रभु दीनबंधु सुखदाईजी
अभय कियो करधरे माथ हरि उठा लियो गहिबाईजी ॥
देखि दीनता अतिहिं इन्द्रकी लीनों हृदय लगाईजी ॥
बारबार परसत प्रभु चरणन शिर नहिं सकत उठाईजी ॥ १ ॥
कहत इन्द्र सों कुँवर कन्हाई कत सकुचत मन माईजी ॥
मैं तुमसों कीनी अधिकाई पूजा तुम्हरी खाईजी ॥
भली करी ब्रज बरसे पानी मैं कछु नाहिं रिसाईजी ॥
अनजाने तुम करी ढिठाई मति डरपहु सुरराईजी ॥ २ ॥
दोहा—कहा भयो मेघ पठादिये, मैं ब्रजलियो बचाहिं ॥
तुम कछु उर में जिनडरो, मैं तुम पररिस नाहिं ॥

चौबोला-मैं तुमपर रिस नाहिं भली करी ब्रज देखन तुम आयेजी
तुमहिं देखि मैं अति सुख पायो मेरे मन में भायेजी ॥
अब अपने मन सोच मिटावो सुनि सुर[1] अति सुख पायेजी ॥
सुनि हरि वचन देव कहि जय जय हर्षि सुमन[2] बरसायेजी ॥ १ ॥
पुलकि अंग मुख गदगद वाणी धनि जनके सुखदाईजी ॥
अशरण शरण तुम्हारो बानों लीला तुमहिं बनाईजी ॥
धन्य धन्य सब ब्रजके बासी जिनके प्रेम बसाईजी ॥
प्रभुहिं देखि अनुकूल भयो मन धीरधरयो सुरराईजी ॥ २ ॥
दोहा–मिटी त्रास उरते तहूँ, यह कहि कहि पछितात ॥
कहत बारही बार प्रभु, तुमगति जानि न जात ॥
चौबोला-तुमगति जानि न जातमैं भूल्यो हरि पैचाने नाईजी ॥
प्रभु आगे चाहोंमैं पूजा मोते मंद कोउ नाईजी ॥
अहो नाथ तुम प्रभुमैं दासा क्षमा करहु सुखदाईजी ॥
कोटिन इन्द्र तुम्हारे गा[3]ता मेरी कौन चलाईजी ॥ १ ॥
मैं अपराध कियो यहभारी राखहु वोर निहारीजी ॥
दीनबंधु तुम जन हितकारी कह सब वेद पुकारीजी ॥
कृपाकरी प्रभु दरशन पाये आजाहिं भयो सुखारीजी ॥
ये दिन वृथा गये बिनकाजा जाने नाहिं मुरारीजी ॥ २ ॥
दोहा–धन्य प्रभू गिरिवर धरयो, भक्तनके हितकार ॥
दैत्य दलन[4] संतन सुखद, गोद्विज हित अवतार ॥
चौबोला–गोद्विज हित अवतार प्रभू अब विनती सुनहु हमारीजी
अब गिरिवर धरणीपर धरिये करो कृपा गिरिधारीजी ॥
सुनि विनती हरि भये सुखारी गिरिवर धरयो उतारीजी ॥
सुरन सहित सुरराय अनंदे स्तुति जोर उचारीजी ॥ १ ॥

१ देवता। २ फूल। ३ शरीर। ४ नाशक।

धेनू आगे राखि सुरपती सन्मुख स्तुति गाईजी ॥
नाम गोविंद राखि हरीको बंदत पद शिरनाईजी ॥
जै कृपालु मुकुंद माधव अविगतिगति नहिं पाईजी ॥
गोपपति राजीवलोचन भक्त जनन सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–वासुदेव भगवंत हरि, कंस काल ब्रजराज ॥
हरण भवभय भारमही, मद मोचन अहिराज ॥

चौबोला–मद मोचन अहिराजबकी अरु तृणावर्त अति भारीजी
वत्सा वका अघासुर हारी शकटा भंजन कारीजी ॥
अतिहिं दुष्ट अरिष्ट धेनुक असुर वंश संहारीजी ॥
चोर माखन खात घर घर भंजन तरु दुखहारीजी ॥ १ ॥
योगी जन जप तपकरि ध्यावें निशि दिन ध्यान लगाईजी ॥
धनि ब्रजवासिन प्रेम विबस हरि ब्रज में प्रगटे आईजी ॥
धन्य गोकुल धन्य यमुना वृन्दावन सुख दाईजी ॥
धन्य गोपी गोप यशुदा नन्द अरु गिरिराईजी ॥ २ ॥

दोहा–करि स्तुति मन हर्षिअति, परचो इन्द्र प्रभु पाय ॥
ह्वै प्रसन्न सुर धेनुयुत, विदा कियो यदुराय ॥

चौबोला–विदा कियो यदुराय सुरपती गयो लोक शिरनाईजी॥
ब्रजजन परमानंद चकित सब निरखत कुँवर कन्हाईजी ॥
कहत गोप सब आपुसमाई इन समान कोउ नाईजी ॥
सात बरसको बालकको बल इतनो कहांते आईजी ॥ १ ॥
है यह पारब्रह्म भगवाना करत चरित सुखदाईजी ॥
दैत्य किते छल कारि कारि आये दीने सकल नशाईजी ॥
इन्द्र मेटि गिरिवरहिं पुजायो निज स्वरूप प्रगटाईजी ॥
इन्द्र प्रलय घन दिये पठाई ते बरसे ब्रज आईजी ॥ २ ॥

दोहा–सात दिवस वरसे सलिल, गिरि कीनो विस्तार ॥
लीने गोप बचाय सब, नखपर गिरिवर धार ॥
चौबोला–नखपर गिरिवरधार बूंद इक पहुँचि नब्रजमें आईजी॥
लीने सब ब्रज लोग बचाई कीन्ही सहाय कन्हाईजी ॥
हार मानसुर पतिहि डरायो आयो हरि शरणाईजी ॥
कामधेनु देवनको ल्यायो अभय कियो सुखदाईजी ॥ १ ॥
मानुषसों यह होय न करनी अचरज कहत न आईजी ॥
परे गोप हरि चरणन आई धनि तुम कुँवर कन्हाईजी ॥
हम तुमको जानत नहिं स्वामी तुम त्रिभुवनके राईजी ॥
ब्रजवासिन सुख देनकाज तुम प्रगटे ब्रजमें आईजी ॥ २ ॥
दोहा–परत विपत जहँ तहँ हमें, तुम कर लेत सहाय ॥
विषते जलते अनलते, लीने हमें बचाय ॥
चौबोला–लीने हमें बचाय विचारति सब ठाढीं ब्रजनारीजी ॥
प्रेम उमँगिमन आनँद भारी कहति धन्य बनवारीजी ॥
कैसे गिरिवर लियो उठाई कोमल तनु सुखकारीजी ॥
लेतधरत जान्यो नहिं काऊ धनि धनि कृष्ण मुरारीजी ॥ १ ॥
सात दिवस प्रलय जलडारचो परचो चरणमें आईजी ॥
कहत सखा धनि धन्य कन्हाई लीनो गिरिहि उठाईजी ॥
यह करतूत करत तुम कैसे केतिकबल तुम माईजी ॥
हम सँग सदा रहतहो ऐसे चारत हो नित गाईजी ॥ २ ॥
दोहा–चरण गहे यशुमति महरि, चूमि वदन उरलाय ॥
अति स्नेह भरि नैनजल, पुनि पुनि लेतबलाय ॥
चौबोला–पुनि पुनि लेतबलाय लालतुम कैसेगिरिहिउठायोजी॥
अति कोमल भुज तुम दिनसाता किहिं विधि गिरि ठहरायोजी॥
हँसि माता सों कहत कन्हाई मैं न कछू श्रमपायोजी ॥

तेरी सों मैया सुनमोसों नेक छुवत उठ आयोजी ॥ १ ॥
अब पूजो बहुरो गिरिराई सबसों कहत कन्हाईजी ॥
बूडतते ब्रजराखि लियो गिरि कीनी बहुत सहाईजी ॥
बहुरोगिरि पूज्यो ब्रजवासिन अति मनहरष बढाईजी ॥
दिये दान बहु विप्रबुलाई अतिहरषित नँदराईजी ॥ २ ॥

दोहा—पान मिठाई दूध दधि, रोरी सुमननहार ॥
रोहिणिअरु यशुमतिमहरि, सजिसजिल्याईथार ॥

चौबोला—सजिसजिल्याई थारहरीके तिलककियोमहतारीजी ॥
पुलकि प्रेम परिपूरण गाता अति मन आनँद भारीजी ॥
बहुतक द्रव्य नौछावरकीनों उरलाये सुखकारीजी ॥
ब्रजतिय हरिके तिलक लगावैं फूलमाल गरडारीजी ॥ ३ ॥
सुमनहार हरिको पहरावहिं इहि मिस अंग छुवावैजी ॥
निरखिवदन छवि विधिहि मनावैं ब्रज तिययहमनचावैजी ॥
होय हमारो पति गिरिधारी मन मोहन मन भावैजी ॥
निशि दिन ध्यान धरत ब्रज वनिता औरन आन उपावैजी॥२॥

दोहा—यहै कामना सबनमन, होय पती नँदलाल ॥
निरखि वदन छवि श्यामकी, अति प्रसन्न ब्रजबाल ॥

चौबोला—अति प्रसन्न ब्रजबाल कह्योतब नंद सों कुँवरकन्हाईजी
सुनहुतात अब बात हमारी विनवहु श्री गिरिराईजी ॥
चलिये अब सब निज निज धामा यह सुनि सब शिरनाईजी ॥
चले ब्रजहिमन हरष बढ़ाई घर आये समुदाईजी ॥ १ ॥
ब्रज घर घर आनंद भये सब गावति मंगलचारीजी ॥
आये सुरपतिजीत हरिः ब्रज श्री गिरिधर बनवारीजी ॥
ब्रज मंगल ब्रज मोद सुखद ब्रज आभूषण गिरिधारीजी ॥
नितनव करत विनोद ब्रजहि हरि विहारन जन हितकारीजी२

अथ नंद एकादशी वरुण लीला।

दोहा–इन्द्रजीत आये घरहि, हलधर नन्द कुमार॥
मुदित गोप आनंद मन, घर घर मंगलचार॥
चौबोला–घरघरमंगलचारताहिदिन तिहिदशमी शुभकारीजी॥
कातिक शुधि एकादशि आई मन वांछित फल कारीजी॥
भक्ति मुक्तिदायक अति पावन पाप नशावन हारीजी॥
नन्द एकादशि व्रत प्रतिपाले विधिवत धर्म सँभारीजी॥ १॥
प्रथमहिं दशमी संयम कीनो भोर एकादशि आईजी॥
निराहार निर्जल दृढनेमा कियो वर्त नँदराईजी॥
भजन करत सब दिवस बितायो और न कछु मन लाईजी॥
निशि जागरण करन विधि मानी प्रभु मंदिरमें जाईजी॥ २॥
दोहा–विविध सुगंध सिचाय जहँ, पाटम्बर बिछवाय॥
बांधी वंदनवार तहँ, सुमनमाल लटकाय॥
चौबोला–सुमनमाल लटकाय चौकचारु बहु रंग सुहायाजी॥
सिंहासन जहँ राख्यो रूरो प्रेम सहित नँदरायाजी॥
शालिगराम तहाँ पधराये भूषण वसन सजायाजी॥
धूप दीप नैवेद्यकरी अरु प्रभुपर पुहुप चढ़ायाजी॥ १॥
करी आरती अतिहि प्रेमसों घंटा शंख बजाईजी॥
प्रभुपद नायो माथ प्रदक्षिणा करी चार नँदराईजी॥
तुम त्रिभुवनके नाथ जोरकर स्तुति प्रभुहि सुनाईजी॥
आदर सहितकरी नंद पूजा प्रेम भक्ति उरमाईजी॥ २॥
दोहा–तीन याम यामिनिगई, करचो भजन मन लाय॥
यशुदाहि नंद बुलाय तब, कह्यो वचन समुझाय॥
चौबोला–कह्यो वचन समुझाय द्वादशी एकहि दण्ड बताईजी॥

१ पवित्र। २ सुन्दर। ३ फेरा। ४ पहर। ५ राति।

तुम पारन विधि करहु सवाँरी मैं जावत न्हाआईजी ॥
ले झारी धोती करमाहीं चले न्हान नंदराईजी ॥
गये नंद यमुनाके तीरा संग तहां कोउ नाईजी ॥ १ ॥
भरि झारी यमुना जललीनो देह कृत्य कियो जाईजी ॥
ले माटी कर चरण पखारे धोयो मुख नँदराईजी ॥
अचमन ले बैठे नँदपानी वरुण दूत गहि बाईजी ॥
नंदहि लेगये पकरि पताला दियो वरुणके पाईजी ॥ २ ॥

दोहा–जान्यो ताता कृष्णको, मगनभयो जलराय ॥
अंतर्यामी श्याम घन, नन्दलेन अब आय ॥

चौ०-नंद लेन अब आय हरष अति प्रेम पुलकि सुख मानेजी ॥
नन्दहि ल्याये दूत हमारे भली भई इन आनेजी ॥
निगम नेति श्रुति जिहि नित गावैं जाहि धरत मुनि ध्यानेजी ॥
ऐहैं सोप्रभु कृपानिधाना धनि धनि भाग्य बखानेजी ॥ १ ॥
हर्ष सहित नंदहि जलराया महलन भीतर ल्यायेजी ॥
धीरजदे राखे नँदनीके सादर वचन सुनायेजी ॥
रानिन सहित नंदको देख्यो जन्म सफल करपायेजी ॥
कहतकि धनि धनि भाग्य हमारे नंद हमारे आयेजी ॥ २ ॥

दोहा–जिनके सुत त्रैलोक्य धनि, सुर नर मुनि सुखदाय ॥
करुणामय आवत अबै, जोवत मग जलराय ॥

चौबोला-जोवत मग जलराय सोच उत यशुमतिके उर छायेजी ॥
भई वेर आये नँद नाहीं आजु कहां बिलमायेजी ॥
खबर लेन जब ग्वाल पठाये यमुना तट नाहिं पायेजी ॥
झारी धोती तटपर देखी ग्वाल मनहिं घबरायेजी ॥ १ ॥
इत उत खोज ग्वाल फिर आये कह्यो महरिसों आईजी ॥
झारी धोती तटपर पाई सुनत महर मुरझाईजी ॥

निसा अकेले आज सिधाये लीने जलचर खाईजी ॥
अति व्याकुल यशुमति भय पाई रोयउठी अकुलाईजी ॥ २ ॥
दोहा—सुनि धाये ब्रज लोग सब, नंदहि खोजत जाय ॥
नन्द नन्द टेरत सबै; नहिं पावत नँदराय ॥
चौबोला—नहिं पावत नँदराय ढूंढि रहे ब्रजवासी समुदायेजी ॥
बन घन यमुना तट सब देख्यो नन्द नहीं कहुँ पायेजी ॥
सोवत ते हरि हलधर भाई दोउ जननी ढिग आयेजी ॥
रोवत मात देखि दुख पाये पूछत अति अकुलायेजी ॥ १ ॥
कत रोवतरी यशुमति मैया पूँछत हैं दोउ भाईजी ॥
यमुना तट कहुँ नंदहिराये कहति यशोमति माईजी ॥
यह सुनि हरि बोले सुन माता आवत हैं नँदराईजी ॥
मत रोवे मैं जात बुलावन अबहीं ल्यावत जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—सकल लोक व्यापक हरिः, अंतर्यामी नाम ॥
वरुण प्रीति प्रभु जानिमन, नन्द लेन गये श्याम ॥
चौबो०-नन्द लेन गये श्याम वरुणके लोकहिं तुरत सिधायेजी॥
सुनत वरुण आतुर उठधायो कहत धन्य हरि आयेजी ॥
देखत दरश परमसुख पायो चरणन शीश नवायेजी ॥
त्रिभुवनपति मम धाम सिधाये अति आनँद हरषायेजी ॥ १ ॥
महलन बंदनवार बँधाई पाटम्बर बिछवायेजी ॥
रत्न जटित सिंहासन धारयो तापर हरि बैठायेजी ॥
धोवत पद प्रभुके जलराया निजकर प्रीति बढ़ायेजी ॥
जेपद रहत रमाउर धारे ते पद जल पतियायेजी ॥ २ ॥
दोहा—विविध भांति प्रभु पूजिके, वरुण कह्यो शिरनाय ॥
कृपासिंधु अति कृपा करि, दियो दरश मोहिंआय ॥
चौबो-दियो दरश मोहिं आय कियोमैं दोष सो उर जिनआनोजी

क्षमा समुद्र अगाध करो क्षमा निज जन अपनो मानोजी ॥
जल रक्षक जे दूत कृपाला जिनहिं नन्द गहि आनोजी ॥
ये कारजमैं उनको दीनो तिन्हें नन्द नहिं जानोजी ॥ १ ॥
वेहैं सकल दंड अधिकारी कियो पाप उनभारीजी ॥
भाये वे मेरे मन जाते दियो दरश बनवारीजी ॥
देखिनाथ शुभ दरश तुम्हारो मैं मान्यो उपकारीजी ॥
अब प्रभु हम सब शरण तुम्हारी राखि लेहु गिरिधारीजी ॥२॥
दोहा–परीं चरण रानी सकल, बडभागिन मन जान ॥
वरुण सहित अनुराग[1] मन, स्तुति करत बखान ॥
चौ०-स्तुति करत बखान धन्य नंद धनि यशुमति महतारीजी ॥
धनि धनि तुमहिं खिलावत गोदै बड़भागिन अति भारीजी ॥
पूरण ब्रह्म जहां अवतारी धनि ब्रजके नर नारीजी ॥
गुणातीत[2] अविगति अविनाशी[3] विहरत ब्रज सुखकारीजी ॥१॥
शेष सहसमुख वर्णतजाई शिव ब्रह्मा रटलायाजी ॥
रानिन सहित करी स्तुती पुनि पुनि शीशनवायाजी ॥
नंदके ढिंगले गयो लिवाई प्रभुको जब जलराईजी ॥
शशि मुख देखि श्यामको तबहीं नंद महर हरषायाजी ॥ २ ॥
दोहा–रहे मुदित चकृत चितै, लखि प्रभुकी प्रभुताय ॥
भयो आय अवतार यह, कहत मनहिं नँदराय ॥
चौबोला–कहत मनहिं नंदराय मनहिं मन मगन भये नँदराईजी
ब्रह्म करत मोसदन विहारा आनँद उर न समाईजी ॥
वरुणहिं दै जलराय बडाई हरिजनके सुखदाईजी ॥
चलहु तात ब्रजकहि हँसि दीने करगहि कुँवर कन्हाईजी ॥१॥
करचो प्रणाम वरुण सुखपाई नन्द श्याम ब्रज आयेजी ॥

१ प्रीति। २ गुणोंसेपरे। ३ नाशरहित।

नन्द आय ब्रजको जब देख्यो तब सब स्वप्न लखायेजी ॥
देखि नन्दको ब्रज नर नारी गयो दुःख सुख पायेजी ॥
बूझत नन्दहिगोप सयाने कितहि गये नाहिं आयेजी ॥ २ ॥

दोहा–थके खोज ब्रजलोग सब, तुमविनभये बेहाल ॥
नन्द कह्यो एकादशी, कियो वर्त मैं काल ॥

चौबोला–कियो वर्तमैं काल्ह आज यह द्वादशि थोरीआईजी ॥
रैनि अछत गयो यमुना न्हानें कटिलों जलके माईजी ॥
ले गये वरुण लोकको मोहीं वरुण दूत गहिबाईजी ॥
ल्याये मोहिं गुपाल छुड़ाई वरुण लोकते जाईजी ॥ १ ॥
ये कोउ उत्तम पुरुष विसाला प्रगटे ब्रजके माईजी ॥
कोटि भांति वरणी जलराई महिमा कहिय न जाईजी ॥
इनको तुम सब नर मति जानो सांच कहत मैं भाईजी ॥
भयो अधीन बहुत जलराई परयो चरणमें आईजी ॥ २ ॥

दोहा–पूजे पद रानिन सहित, जानि जगतपतिईश ॥
पुनि पुनि विनय सुनाय सब, धरे चरणमें शीश ॥

चौबोला–धरे चरणमें शीश सुनत सब नर नारी सुखमानीजी ॥
कहत भये हम सकल सनाथा हरिकी महिमा जानीजी ॥
यशुमाति सुनत चकित नँदबानी कहत ये अकथ कहानीजी ॥
कहत नंद सों यशुदा रानी हरि माया अरुझांनीजी ॥ १ ॥
मोबरजत निशिन्हान सिधाये भयो कोउ पुण्यसहाईजी ॥
ल्याये नन्दहि खोज कन्हाई लिये श्याम उरलाईजी ॥
विप्रन बोल दियो बहुदाना बाँटे पान मिठाईजी ॥
बाजी नन्द अबास बधाई गावति नारि सुहाईजी ॥ २ ॥

दोहा–विविध बधाई नन्दघर, गावत मंगलचार ॥
ध्वज पताक तोरन कलस, बांधी बंदनवार ॥

चौबोला–बांधी बंदनवार देखि नंद यशुदहि कहत बुलाईजी॥
तूकत करत वधाई भोरी जिनके सहाय कन्हाईजी॥
जाको त्रिभुवन पतिसों ताता मंगल ताहि सदाईजी॥
कही गर्ग मुनि वाणी जोई सोइ सोइ प्रगट लखाईजी॥ १॥
इनते समरथ और न कोई ये सब सुखके राजाजी॥
विहारन सब आनन्द मगन मन राखत हरिकी आशाजी॥
धन्य धन्य नर नारि कहत सब अति मन परम हुलासाजी॥
श्री वैकुंठ निवासि हरी सों हम सँग करत विलासाजी॥ २॥

अथ वैकुंठदर्शन लीला।

दोहा–कहत सकल ब्रजलोग यह, करमन परमहुलास॥
कैसो है वैकुंठसो, जहँ हरि करत निवास॥
चौबोला–जहँ हरि करत निवास तहाँ कछु जन्ममरणभयनाईजी
जाको वेद पुराण बखाने जहँ हरि रहत सदाईजी॥
जो हरि हमहिं दिखावे सोई तो बड़भाग्य कहाईजी॥
यह मनसा सबके मन आई जानलई सुखदाईजी॥ १॥
तबहिं कृपा करि सब ब्रजलोका वैकुंठहि पहुँचायेजी॥
धर्म धाम जो वेदन गायो दिव्य दृष्टि दिखरायेजी॥
पुर वैकुंठ अनूप विसाला देखत ग्वाल भुलायेजी॥
भूमि वज्रमणि द्युति छविछाई परम प्रकाश सुहायेजी॥ २॥
दोहा–वापी कूप तडाग तट, विविध नगन बँधवाय॥
रत्न जटित सोभासरस, रहत हैं देवलुभाय॥
चौबोला–रहत हैं देवलुभाय फूले बहु रंग कमल भरिभाराजी॥
करत शब्द खग गुंजत भृंगा रहत सकल सुखसाराजी॥
कल्पवृक्षके बाग वनहिं जहां सुमन सुगंध अपाराजी॥

खँग मृँग जे सब तहां निवासी दिव्यस्वरूप उदाराजी ॥ १ ॥
चिंतामणि मय खचित सकल जहां मंदिर वरणि न जाईजी ॥
जैसी जाकी मनो भावना तैसो ताहि लखाईजी ॥
सकल चतुर्भुज जहँके स्वामी शुद्ध सतोगुण ताईजी ॥
रमा सहित प्रभु तहां निवासी राजत हरि सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—अविनाशी सुन्दर सुखद, भूषण वसन अपार ॥
वदन प्रकाश सुहावने, कोटि चंद्र बलिहार ॥

चौबो०-कोटि चंद्र बलिहार जटित मणिशीश मुकुट छविछाईजी
भूषण वसन अनूपम राजत छबि बरणी नहिं जाईजी ॥
दिव्यपारषद चमर ढुरावैं देखत ग्वाल लुभाईजी ॥
जान्यो प्रभु प्रतापतिहिंकाला लँखि प्रभुकी प्रभुताईजी ॥ १ ॥
शंख चक्र गदा अंबुँज धारे चारहि भुजा सुहाईजी ॥
दुइ भुज हरिको रूप नहीं अरु लकुट मुरलि करमाईजी ॥
गुंजहार कटिकाछनि नाहीं मोरपंख शिरनाईजी ॥
नहीं भेष नटवर गोपाला ग्वालन विस्मय आईजी ॥ २ ॥

दोहा—सोई रूप उपासना, विन देखे नँदलाल ॥
अकुलाने हँग सबनके, देखनको तिहिंकाल ॥

चौ०—देखनको तिहिंकाल सबनमन मुरलीधर ब्रजकान्हाजी ॥
नटवर भेष गुपाल सोई सब ब्रजवासिनके ध्यानाजी ॥
यद्दपि उपासन रूप यह है अमित रूप भगवानाजी ॥
विरह विवस हरि ब्रजजन जाने तुरत सबन ब्रज आनाजी ॥ १ ॥
रहे चकित शशि वदन निहारी देखि श्याम सुख पायोजी ॥
कहां गये हम कैसे आये सब मन अचरज आयोजी ॥
कहत परस्पर सब ब्रजवासी स्वप्न समान लखायोजी ॥

१ पक्षी। २ हरिण। ३ देख। ४ कमल। ५ आंखैं।

यह चरित्र सब मोहन करहीं पुर वैकुंठ दिखायोजी ॥ २ ॥
दोहा–विलसत हमरे ब्रह्म संग, कहत गोप सुखपाय ॥
धनि धनि हमरे भाग्य कहि, प्रभु पद परसत धाय ॥
चौबोला–प्रभुपद परसतधाय हँसत हरि सब सों कहत कन्हाईजी
रहे कहा तुम सकल भुलाई लख्यो कहा कहुँ जाईजी ॥
आज कहा देख्यो नँदलाला सो सब कहत सुनाईजी ॥
भूतल नाग पताल तिहारो देतहो तुमहिं दिखाईजी ॥ १ ॥
यह सुनि श्याम मंद मुसकाई दीने मोह भुलाईजी ॥
करत चरित विचित्र प्रभू सब ब्रजवासिनके माईजी ॥
लखि लखि शिव ब्रह्मादिक सुर मुनि निज निज मनहिं सिहाईजी।
अति आनंद ब्रजलोग हरीके लखत चरित सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सबको सब सुख योगहै, विहारन नन्दकुमार ॥
सदा श्याम भक्तन सुखद, भक्तनहित अवतार ॥
चौबोला–भक्तनहित अवतार संकटमें जहँ जब जन दुखपावैजी॥
तहां प्रगट तिनको निस्तारे वेद सकल यह गावैजी ॥
दुख भीतर जो सुमिरन करहीं जिनको दरश दिखावैजी ॥
दुख सुखमें वाईको ध्यावे तिनहि न हरि विसरावैजी ॥ १ ॥
देव दनुज खग मृग नर नारी भक्त विवस सुखदाईजी ॥
चितदे भजे भाव जो जैसे तैसेहि ताहि लखाईजी ॥
ब्रह्मा आदि कीटके माही हरि जल थल सब ठाईजी ॥
वेद पुराण साखि सब बोले भाव विवस सँग धाईजी ॥ २ ॥

अथ दानलीला ॥

दोहा–काम भाव ब्रज गोपिकन, ध्यायो नंदकुमार ॥
मन वच क्रम हरि सों लगी, लोक लाज दैडार ॥

चौबोला–लोकलाज दैडार एकक्षण हरिको विसरत नाईंजी ॥
भवन काज चित हरिपैवारे निशिदिन ध्यान कन्हाईजी ॥
गोरसलै निकसैं ब्रजमाहीं जिताहि श्याम तित जाईजी ॥
तिनके मनकी प्रीति विचारी रीझे जन सुखदाईजी ॥ १ ॥
नवसत साज शृँगार किये तनु गोरसले ब्रजनारीजी ॥
बेचहिं दधि इहि मगनित आवें मोसों प्रीति अपारीजी ॥
करौं दान दधिकी यह लीला अब इन संग बिदारीजी ॥
हरि ब्रज मोहन नंद लाडिले यह मन माहिं विचारीजी ॥ २ ॥

दोहा–दानी नाम धराय निज, युवतिन सुख उपजाय ॥
रचि इक लीला दानकी, भक्तनकी सुखदाय ॥

चौबोला–भक्तनकी सुखदाय रचौं अब लीला परम सुहाईजी ॥
श्याम सखन तब लिये बुलाई कहत सबन समुझाईजी ॥
ब्रज युवती नित गोरस ल्यावैं या मारग ह्वै जाईजी ॥
गोरस खाय जान तब दीजै तिनको लेहु खिजाईजी ॥ १ ॥
यह सुनि सखा उठे हरषाई भलि यह बात सिखाईजी ॥
कहत श्याम दधि दान लगायो हँसत सखा समुदाईजी ॥
आवति नित ग्वालिनि इहि बाटा घेरहु ग्वालन जाईजी ॥
रहो तरुनकी ओट लुकाई कह्यो श्याम समुझाईजी ॥ २ ॥

दोहा–दधिले आवति ग्वालिनी; जान नहीं कोउ पाय ॥
घेरयो मग बैठे सखा, ठगको ठाँव बनाय ॥

चौबोला–ठगको ठाँव बनाय सखा सब बैठे बनके माईजी ॥
उतते बनि बनिं ग्वालि नबेली दधि बेचनको आईजी ॥
हँसत परस्पर आपुसमाई चलीं सकल हरषाईजी ॥
घेर लई चहुँ ओर सखन तब सब मन मांझ डराईजी ॥ १ ॥
चकित रहीं चहुँओर निहारी देखि अचानक भीराजी ॥

कितते आये यह सब ग्वाला सरमीं कछुक शरीराजी ॥
संकित ह्वै ठाढी भई ग्वालिन लिखि मनु चित्र चतीराजी ॥
कछू बदनते वचन न बोले हाथ पाँय भये धीराजी ॥ २ ॥
दोहा—हँसि ग्वालन कह्यो मति डरो, जिन कहुँ जावहु भाज॥
इहां चोर ठग कछु नहीं, अभय कान्हको राज ॥
चौ०-अभय कान्हको राज आवत मग मति डरपो वनमाईजी ॥
दधिको दान लगत सो दीजै बहुरि सकल घर जाईजी ॥
नाम कान्हको जब सुन पायो युवती सब हरषाईजी ॥
बोलीं हँसि तब सब ब्रजबाला कहांप्रभु कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
चोरी करि नहिं पेट अघायो दानकि रीत चलाईजी ॥
तब अति बालक हते कन्हाई सही जो करि लरिकाईजी ॥
होहु जो कछु वा धोखे माई परिहै समुझ क्षण माईजी ॥
प्रगटभये तब कुँवर कन्हाई बोले हरि मुसकाईजी ॥ २ ॥
दोहा—तबतो हम लरिका हुते, सही बात अनजान ॥
सोधोखे अब मेटिकै, छाँड़िदेहु अभिमान ॥
चौबोला—छाँडिदेहु अभिमान माँगत हम दान देतहो नाईजी॥
कहत नन्दकी आनकिये मैं बिन दिये जान न पाईजी ॥
तब बोलीं ग्वालिन मुसकाई तुम डरतजी ढिठाईजी ॥
नंदहुते कछु तुम्हें कन्हाई भयो जु तप अधिकाईजी ॥ १ ॥
कालहि चोर चोर दधि खाते धरन लगी भजे जाईजी ॥
रातहि भयो स्वप्न कछु आई प्रातहि भई ठकुराईजी ॥
भली कही नहिं ग्वालिन वाणी तुम यह बात न पाईजी ॥
पिता रचित धन धाम जुहोई पुत्र काज सो आईजी ॥ २ ॥
दोहा—तुमसी प्रजा बसाय हम, ठाकुर क्यों न कहाय ॥
कहहु कान्ह बातें सँभारि, कहाते ग्वालि झहराय ॥

चौबोला–कहति ग्वालि झहराय ऐसेको वसहीं छांह तिहारीजी॥
कंस नृपतिके सव कहलावैं बसैं इक गाँव मझारीजी॥
जो तुम याहींते गरभाने तजिहैं गांव सवारीजी॥
यह सुनि हँसि बोले बनवारी कहा कहत यह ग्वारीजी॥ १॥
गांव हमारो छांड़ि ग्वालनी बसिहौ कापुर माईजी॥
ऐसोको तिहुँलोकहि माई सो मेरे वश नाईजी॥
कहा गनती में कंस बिचारो जाके हम कहवाईजी॥
रार बढावतिहो विन काजे दानदेतहो नाईजी॥ २॥

दोहा–बड़ी बात छोटे वदन, सँभारि कहो नँदलाल॥
तीन लोक अरु कंस वश, कियो तुमहिं किहि काल॥

चौ०-कियो तुमहिं किहि काल यह तुम बात कह्यो तिनमाईजी॥
जो कोउ तुमको जानत नाईं कहो तिन्हें तुम जाईजी॥
हम इन बातन भयनाहिं मानें जानत तुमहिं कन्हाईजी॥
हमसों लीजो दान सवाई थैली लेहु मँगाईजी॥ १॥
पीताम्बर बोझन फटजैहै तब पाछे पछिताईजी॥
ऐसे कहि ग्वालनि मुसकाईं तब बोले सुखदाईजी॥
तू ग्वालिन हमको कहा जानै झूँठ कहत हम नाईजी॥
झूँठीहौ तुमहीं सब ग्वालिन बिनहीं काज रिसाईजी॥ २॥

दोहा–कह्यो हमारो मान ल्यो, लेखो करद्यो दान॥
छोरलेहुँ दधि नंद सौं, तुम्हें देहुँ नाहिं जान॥

चौ०–तुम्हें देहुँ नहिं जान सुनत सब बोलीं ग्वालि रिसाईजी॥
काहेको इठलात कन्हाई छांड़ि देहु लरिकाईजी॥
चलहु कान्ह पहली परपाटी कहा नइ रीत चलाईजी॥
जानि पाय है कंस भुवाला पुनि परिहै कठिनाईजी॥ १॥
बीतन लाग्यो याम युगहिं अब हँसी घरी द्वै चारीजी॥

बाढि जाय यह बात सकल ब्रज वन में रोकी नारीजी ॥
कहा कंस कहि मोहिं सुनायो जावहु वेग पुकारीजी ॥
मेरी लरिकाई नाहिं जानत लरिका कहत हो ग्वारीजी ॥ २ ॥

दोहा—स्वर्ग पठाई पूतना, तृणावर्त महिड़ार ॥
वत्सा वका अघाहने, करपर गिरिवर धार ॥

चौबोला—करपर गिरिवर धार ऐसी है यह मेरी लरिकाईजी ॥
जान बूझ तुम देत भुलाई तुम कहा जानति नाईजी ॥
देत दिवावत हो तुम गारी हँसी करत तुम आईजी ॥
आपहि बैठी हो वनमाई बात जान मन भाईजी ॥ १ ॥
चोरी सदा बेच दधि जावो दान देत हो नाईजी ॥
सबदिवसनको लेहुँ चुकाई आज पकरि मैं पाईजी ॥
बधे असुर सो सुनी बडाई कीनी भली कन्हाईजी ॥
गिरि धारचो बलखाय हमारे बात तुम्हारी पाईजी ॥ २ ॥

दोहा—मांगि लेहु दधि खाउसो, दान सुनत उठे दाह ॥
हमें कहत हो चोरटी, आप भये हो साह ॥

चौ०—आप भये हो साह बड़े भये चोरी करत कन्हाईजी ॥
हमको होत अवार लेहु दधि हम तुम्हरी बलि जाईजी ॥
लिये दानको नाम कन्हाई बूंद न पैहो राईजी ॥
यह तुम मोको कहा सुनाई गोरस लेहुँ छिनाईजी ॥ १ ॥
जोबनरूप अंग जो तुमरो सो तुम काय छिपावोजी ॥
कंचनभार युवति तुम सगरी या मारग नित आवोजी ॥
दही मही मोको दिखरावो जोबन क्यों न बतावोजी ॥
अंग अंगको दान गिनावो लेखो करहिं चुकावोजी ॥ २ ॥

दोहा—तुम ऐसे दानी भये, कहति ग्वालि झहराय ॥
दान चुकावत अंगको, रूपहिं दीठ लगाय ॥

चौबोला–रूपहिं दीठ लगाय जान परी अब प्रगटी तरुणाई[1]जी॥
यशुमति सों हम कहिहैं जाई कान्हहिं ज्वानी आईजी॥
उर आनँद ऊपर रिस करिकै मटकी शीश उठाईजी॥
तब हरि पीताम्बर कटि कसिकै अंचलपट धर्यो जाईजी॥१॥
रिस करि मटुकी लई छिनाई गोरस दियो लुटाईजी॥
गहि[2] गहि भुजा सबन झककोरी नोगरि तोर बगाईजी॥
कहत कह्यो मानत हो नाहीं ढीठ भई हो आईजी॥
दान देत झगरो हठि ठानत जोबन जोर दिखाईजी॥ २॥

दोहा–जननी नहीं पत्याय है, आवोगी पछिताय॥
निबहौगी पुनि काल्ह किम, जो कहिहो घरजाय॥

चौबोला–जो कहि हौ घरजाय कहत हो फारे वसन कन्हाईजी॥
भये श्याम तुम निपट दुलारे बोलत हो मन आईजी॥
तापर मांगत जोबन दाना कहुँ कानन सुनि नाईजी॥
दधि माखन सब लियो छिनाई कहिहैं यशोदहि जाईजी॥ १॥
यह कहि ग्वालिन चली रिसाई अबहीं पकरि मँगावेजी॥
गई उरहनो ले सब गोरी हरि मन मन मुसकावेजी॥
कहा महिर सुतको सिखरायो यशुदहिं जाय सुनावेजी॥
रोकत युवतिनको बनमाहीं जोवन दान चुकावेजी॥ २॥

दोहा–गहिगहि आंचर पटझटक, तोरे भूषण कान्ह॥
दधि माखन सब लूटिकै, मांगत जोबन दान॥

चौबोला–माँगत जोबन दान ऐसोको भयो महर कुल माईजी॥
जोबन दान लेत है अरिकै प्रगटे पूत कन्हाईजी॥
कहां लगि पीपर बनदे दाहिन नित उठ सहिय न जाईजी॥
कैसे गोरस[3] बेचन जावें हरि पै जान न पाईजी॥ १॥

---

१ जवानी। २ पकड़ पकड़। ३ दूध, दधि।

सुनत वचन ग्वालिनके मुखके बोली यशुमति मातैजी ॥
मैं जानी तुमरे सब मनकी उर अंतरकी बातैजी ॥
कहति श्याम अब ढीठ भयो है आप फिरत इतरातैजी ॥
उरहनको दौरीं सब डोलत उरलगाय नख घातैजी ॥ २ ॥

लावनी।

दशहिं वरसको कुँवर कन्हैया तुम जोवन तरुणाई हो ॥
दोष लगावै श्यामको देन उरहनो आई हो ॥
टेक–दोष लगावति श्यामहिं आई कैसे कहि आवत बानी॥
लाज न आवै हरिपर फिरत सबै तुम मडरानी ॥
जाहु सबै बैठो घरमाहीं फिरत कहा हो इठलानी ॥
सब मैं जानी करत हो तुम सब मिल आना कानी ॥
अहो महरि ऐसो नहिं कीजै तुम उलटी रिसहाईहो ॥
दोषलगावै० ॥ १ ॥
सुत वैसो मग चलन न देही लूटलेत है वरजोरी ॥
खीजकरत हो यशोमति तुम अपने सुतकी वोरी ॥
ताजि हैं आजहि गाँव तिहारो ऐसे ब्रज बसियेकोरी ॥
बहुरि न सुनियो हमारो नाम महिर या ब्रजतोरी ॥
ऐसे कहा कहत डर पाई बसत नहीं कहुँ जाई हो ॥
दोषलगावै० ॥ २ ॥
मेरो कहा कंछू घटजैहै झूंठी बात सहैंकारी ॥
कोपतियावै बात यह झूंठ कहत तुम मिलसारी ॥
तुमबांधति आकाशहि जोबन सबहिनआवत दिनचारी ॥
कराहें न ऐसी हरी यह वृथा बढावति हो रारी ॥
हम झूंठी नाहिं भाषत यशुमति तुम मानत क्योंनाईहो ॥
दोषलगावै० ॥ ३ ॥

जो तुम हम न पत्याय यशोदा बूझदेखि अंतहिजाई ॥
कहा बड़ाई तेरे लालाकी सब ब्रजमें छाई ॥
हठ कर टेक आपनी ठानों सुतकर मन जानति नाई ॥
दशगायनकी कहा बड़ाई अहिर जात एकहि माई ॥
विहारनसखी कहत यशुमति सों बरजत नाहिंकन्हाईहो ॥
दोषलगावै० ॥ ४ ॥

दोहा—महाढीठमानत नहीं, बन कुंजनमें जाय ॥
सखा संगले साँवरो, झगरत मगमें आय ॥

चौबोला—झगरत मगमें आय नेकहू मानत संका नाईजी ॥
सोइ करत जो कछु मनमानें हरिते नाहिं वसाईजी ॥
यह सुनि कहत नंदकी नारी गैयन कहा गिनाईजी ॥
मोहिं रिस है अनमिली बातकी जीत कि कौन चलाईजी ॥ १ ॥
कहां बसत तुम कहां कन्हाई कब घेरी मगमाईजी ॥
सुनिहैं कहूँ तिहारेनाहू कहत लाज नहिं आईजी ॥
तुम नहिं अपनी वोर निहारो मेरो बाल कन्हाईजी ॥
ऐसी बात कहतहो आई झूठी सहिय न जाईजी ॥ २ ॥

लावनी।

सहि जात न झूंठी बात आय तुम कहत हो बात बनाई ॥
धनि धन्य कही तुम आय सुनी मैं रहि मनमाहिं लजाई ॥
माखन माँगत हरि रोय ताहि तुम दोष देत हो आई ॥
विनकाजहि लावति दोष ईश सों नेकहु डरपति नाई ॥
मनुबीसहि बरस कन्हाई, तुम कहत हो ऐसी आई,
मैं सुनि यह अचरजपाई ॥ सुनहु महरि तुम बात हमारी हरि सीखे चतुराई ॥ सहि जातन० ॥ १ ॥

बालकही हरि बन जात आत तब तेरे धाम कन्हाई ॥ जब बन कुंजनमें जात तबहिं प्रगटावत हैं तरुणाई ॥ यह है अचरजकी बात यशोमति तुम्हरे सांच न आई ॥ तुम देखहु बनमें जाय एक दिन तरुकी ओट छपाई ॥ बरस हैं दशके वीस कन्हाई, निज देखहु नैननजाई, सुनि बोली यशुमति माई ॥ दीठ लगावति हो घर आई दश अरु वीस बताई ॥ सहि जातन० ॥ २ ॥

तुम आवत मेरे धाम श्याम को दीठ लगावत ग्वारी ॥ अब जाहु घरन ब्रजवाम बात मैं जानी सकल तिहारी ॥ यह जरहु तुम्हारी आँख श्यामको सकत हो नाहिं निहारी ॥ आपहि छेरतहो जाय आय सब मोसों कहत पुकारी ॥ मोकों यह आय सुनाई, ढीठहि अब भयो कन्हाई, कहतहु कछु लाज न आई ॥ तब बोलीं सब वाम यशोमति कहा कहो हम आई ॥ सहि जात न० ॥ ३ ॥

कीनी निजसुतकी कानि गारि तुम कोटिन हमें सुनाई ॥ जीवहु युग युग ब्रजमाहिं श्याम कहा हमको है प्रियनाई ॥ कहाकरे खिजाई बहुत तबहिं हम तुम सों कहत दुखाई ॥ कीनो नीको तुम बोध दोष उलटो हमें दियो लगाई ॥ सुतको तुम वरजति नाई, हम पर रिस करत सदाई, हम कही सो सांच न आई ॥ तुम कही अपपटी बात आय यों कहति यशोमति माई ॥ सहिजात न झूंठी बात आय तुम कहत हो बातवनाई ॥ ४ ॥

दोहा—मोको यह भावै नहीं, तरुणिन यहै सुहात ॥
तुम तरुणी हरि तरुण नहिं, कहो समुझिकैबात ॥

चौबोला–कहो समुझि कै बात ऐसी यहमोहिं कहो जिनआईजी
सुनत वचन यशुमतिके ग्वालिन निज निज धाम सिधाईजी ॥
यह यशुमति गोपिनको झगरो कृष्ण प्रेम रह्यो छाईजी ॥
कहत सुनत भक्तन सुखदाई विहारन जीवन गाईजी ॥ १ ॥
मोहन दधिको दान लगायो ब्रज घर घर सुनपाईजी ॥
जैहैं दधिलै जहां कन्हाई सब मन रुचि उपजाईजी ॥
यह अभिलाष सबन मन आई प्रगट न काहु जनाईजी ॥
श्याम सखनको लिये बुलाई कह्यो सबन समुझाईजी ॥ २ ॥
दोहा–वृंदावन मग घेरहैं, उठहू कालहसवार ॥
यमुनाके तट लुकरहो, चढि चढिके तरुडार ॥
चौबोला–चढि चढिके तरुडार रहो छिप ऐहैं मिलसब ग्वारीजी॥
नित प्रति दधि बेचनको जावैं या मारग मिल सारीजी ॥
राधा चन्द्रावलिको यूथा कैयक गोप कुमारीजी ॥
ललितादिकंनागरी बरूथा घेरलेहु सब नारीजी ॥ १ ॥
भली कही यह बात कन्हाई कहत सखा हरषाईजी ॥
कालिह उठैंगे प्रात चलहु घर भई सांझ अब भाईजी ॥
मात पितनको अति सुखदीनो सब निज निज घरजाईजी ॥
रुचि सों भोजन खाय कछुक तब सोये सब सुखपाईजी ॥ २ ॥
दोहा–प्रात उठे सब गोप सुत, जहँ तहँ खोल किवाँरि ॥
ग्वालनकी बानी सुनी, जागे कृष्ण मुरारि ॥
चौबोला–जागे कृष्ण मुरारि टेरत सखा नन्द द्वारपर आईजी॥
आवहु उठ घनश्याम कन्हाई कहा अबेर लगाईजी ॥
ग्वाल वचन सुनि यशुमतिं माई दिये जगाय कन्हाईजी ॥
मात वचन सुनि कुँवर कन्हाई उठे शीघ्र अतुराईजी ॥ १ ॥
लैपट पीत मुकुट शिर धारयो मुरली लै कर माईजी ॥

सखन सहित यमुना तट आये कहत श्याम हरषाईजी ॥
भली करी उठ प्रातहि आये लीनो मोहिं बुलाईजी ॥
आवत ह्वैहैं अब ब्रजभामिन लैलै दधि समुदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—मनमें अति आनंद करि, हँसे सखा देतारि ॥
कहत सखन सों हँसि हरी, जाय चढो द्रुमडारि ॥

चौबोला—जाय चढ़ो द्रुम डारि मूंद मुख बैठरहो सब जाईजी ॥
जिहिं विधि युवती कोउअ नजाने तिहिं विधि रहहु छिपाईजी॥
युवती गण सब बनहिं मँझारी जब जानो सब आईजी ॥
कूद परो तब सबहि द्रुमनते दैदै नंद दुहाईजी ॥ १ ॥
कीजै मुरली शृंग ध्वनी सब शंख शब्द घहराईजी ॥
जासों युवती गण बनमाई डरन जाँय अकुलाईजी ॥
घेर सखन इहि विधि डरपावो बहुरि कहो समुझाईजी ॥
नितहि हमारे मारग आवै बेंचतहो दधि जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—आज जान नाहिं पायहो, जैहो दान चुकाय ॥
ऐसे हरि समुझायके, मनकी प्रीति बढ़ाय ॥

चौबोला-मनकी प्रीति बढाय पावत सुखमें लखिकै ब्रजबालाजी॥
तुमसों नाहिंन कछू दुराऊं कहत सखन गोपालाजी ॥
इहि मारग बेचन दधि जावै घेर लेहु सब ग्वालाजी ॥
आवतह्वैहैं सब ब्रजबाला कहत सखन नँदलालाजी ॥ १ ॥
सबकी सुरत श्यामकी बोरी प्रात उठीं ब्रजनारीजी ॥
अंग अंग आभूषण साजे दृगन दीप सुत धारीजी ॥
चित्र विचित्र वसन तनु धारे अंगिया सुभग सवांरीजी ॥
बेंदी भाल मांग मोतिनकी अंग छबी अतिभारीजी ॥ २ ॥

दोहा—दशनदमक अधरन अरुण, नासा बेसर धारि ॥
गोरे मुख छबि वसन नव, नवयोबन ब्रजनारि ॥

चौबोला—नवयोवन ब्रजनारि चलीं सब सुखमा बढी अपारीजी॥
ब्रजके खेडे जाय भईं हैं सब भामिनें इक ठारीजी॥
निजनिज यूथ बनाय चलीं सब दधि मटुकी शिरधारीजी॥
बेचन दही चलीं ब्रजनारी षटदशसहस गुवारीजी॥ १॥
सबके मन मगे मिलहिं कन्हाई कहत न काउ जनाईजी॥
करत जायँ गुणगान बिहारी पगनूपुर छबिछाईजी॥
हरि जानी युवती सब आवत कह्यो सखन समुझाईजी॥
सुनत श्यामके मुखके बैना चढे द्रुमन सब जाईजी॥ २॥

दोहा—पंच सहस जे सखाते, जहँ तहँ रहे लुकाइ॥
कछुक ग्वाल सँग राखि हरि, आगे गये कन्हाइ॥

चौबोला—आगे गये कन्हाइ जायकै घेरयो मग बनवारीजी॥
लैलै करन सुमनकी सांटी मन आनंद अपारीजी॥
इहि अन्तर आईं ब्रजनारी देख्यो बन कछु भारीजी॥
पाछे तेहीं लईं हँकारी कहां जात हो ग्वारीजी॥ १॥
एक संग जुर भईं सब ठाढी चितवत चकित अधीराजी॥
मुकुट शीश तनु चित्रित चंदन दृष्टिपरे बलवीराजी॥
लीने सखा संग मगरोंके ठाढे यमुना तीराजी॥
ठटकि रहीं युवती तिहिं ठाई लखि ग्वालनकी भीराजी॥ २॥

दोहा—कहत वचन मुख भय सहित, भयो हर्ष उरमाहिं॥
मगमें ठाढो साँवरो, आगे जैहै नाहिं॥

चौबोला—आगे जैहैं नाहिं कहति कोउ चलत सखी क्योंनाईजी
कोऊ कहति घरहि फिर जै हैं हम नाहिं आगे जाईजी॥
कोउ कहत कहा करैं कन्हाई इनते कहा डराईजी॥
कोऊ कहति लूटलै कालहै हमको कुँवर कन्हाईजी॥ १॥

१ शोभा। २ स्त्री। ३ झुंड। ४ रास्ता।

माँगत है गोरसको दाना भयो अति ढीठ कन्हाईजी॥
सुनि ऐसे मोहनके ख्याला फिरीं घरन समुहाईजी॥
तब हरि ग्वालन सैन बताई कूदहु सब झहराईजी॥
जात फिरी युवती घर गावहिं घेरहु जान न पाईजी॥॥ २॥

दोहा—तब सब ग्वालन चहुँ दिशा, तरुनहिलाई डार॥
शंख शृंग मुरली ध्वनी, शब्द कियो इकबार॥

चौबोला—शब्द कियो इक बार चकित सबतबचितईचहुँघाईजी
डारन डारन देखे ग्वाला तब मनमाहिं डराईजी॥
कूद कूद तरु तरुते धाये घेर लईं सब जाईजी॥
कहत नितहि दधिबेचन जावो आज पकर हम पाईजी॥ १॥
दान लगत यहां श्यामसुन्दरको सो सब देहु चुकाईजी॥
अबतो देहैं जान तबहिं हम तुमको नंददुहाईजी॥
दधि लेजात प्रात तुम नितही आवत सांझ सदाईजी॥
दान मारि नित जात करत तुम भली बात यह नाईजी॥ २॥

दोहा—ठाढे यमुना तीर हरि, जावहु दान चुकाय॥
यह सुनि हँसि ग्वालिन कह्यो, नई सुनोरी आय॥

चौबोला—नई सुनोरी आय कन्हाई दधिपर दान लगायाजी॥
यह नई रीत चलावन कारन जननी सिखै पठायाजी॥
यमुना तट ते श्याम पठाये सखा लेन सोइ आयाजी॥
सूधे अपने मारग जाहू काहे सब इतरायाजी॥ १॥
सूधे मांगि लेत किन सोई दधि माखन कोउ खावोजी॥
बांधत कहा अकासहिं डोरी इन बातन कछु पावोजी॥
दान बजार हाटमें पावो कान्है जाय सुनावोजी॥
बोले सखा सुनोरी ग्वारी कहा तुम हमहिं डरावोजी॥ २॥

दोहा–गांव बसेको सुख यहै, संक न मानति काय ॥
मांगत अपनो दान हम, कहति मांगकिन खाय ॥
चौबोला–कहति मांग किन खाय हाट अरु बाटहि कहाबतावोजी
अपनो दान तुमहुं सों चाहैं सो अब तुमहुँ चुकावोजी ॥
लेखो करि तुम श्याम सुन्दरको देहु दान तब जावोजी ॥
फेर न बूझत बात कोऊ तुम नित प्रति जावो आवोजी ॥ १ ॥
तुमको कैसो दान कहा सो मांगत कौन कन्हाईजी ॥
परिहै जान क्षणकमें अबहीं युवतिन बन अटकाईजी ॥
संग सखनकी भीर सुहाई आये हरि सुखदाईजी ॥
बोल उठी नागरि सब हरिसों मानतहौ तुम नाईजी ॥
दोहा–बनमें रोकत हो तियन, जैहै बात यहदूर ॥
कोपठये कहाँ छापहै, कि आपहि भये हुजूर ॥
चौबोला–आपहि भये हुजूर वैसीही चलहु श्याम तुमचालाजी
चलत बाप तुम्हरो जिहिं चाला सो तुम चलहु गोपालाजी ॥
वृथा रारि कहाकरत बनहिंमें छाँडिदेहु मगलालाजी ॥
विनादानदीने नाहिं जैहो सुनहु सकल ब्रजबालाजी ॥ १ ॥
नहिं जानत मोको दधिदानी उघटत मात पिताईजी ॥
सब दिवसनको लेहुँ चुकाई नित प्रति जात चुराईजी ॥
माँगत छाप कहा दिखराऊं काको नाम बताईजी ॥
ऐसो को मोको नहिं जानत तुम इक मानत नाईजी ॥ २ ॥
दोहा–नीके हम जानत तुम्हें गोद खिलाये कान्ह ॥
वेदिन सब विसराय अब, भये जगाती आन ॥
चौबोला–भये जगाती आन करहु सो जो सदैव निभि आवैजी
हम नितही दधि बेचन आवैं ऐसी सही न जावैजी ॥
अजहूं मांगि लेहु दधि देहैं खावहु हम सुख पावैंजी ॥

दान वचन तुम कहा सुनायो यह मैं नाहिं सुहावैजी ॥ १ ॥
होत अवार जान अब दीजै कहा नइ रीत चलाईजी ॥
गोरस लेत प्रात सब कोई बहुरि धरचो यह जाईजी ॥
जब देहो तबही सब जैहो बिन दिये जान न पाईजी ॥
तुमसों लेन बहुतहै हमको सो अब देहु सुनाईजी ॥ २ ॥
दोहा—नित आवति हमरी डगर, जात चुराये दान ॥
दिन दिनको लेखो भरो, तबहीं देहों जान ॥
चौबोला—तबहीं देहों जान ऐसो तुम हठ ना करहु कन्हाईजी ॥
वनमें रोकत नारि पराई पुनि परिहै कठिनाईजी ॥
आये दान पहर तुम कापै सो हमें देहु बताईजी ॥
सबको राजा कंस विराजै तुम घरहीके राईजी ॥ १ ॥
बहुरि सँभारि अबहिं पर जैहैं जो नेकहु सुन पैहेंजी ॥
करत अचकरी यह तुम मोहन बात दूर लौं जैहेंजी ॥
हम गुहरावें जाय कंससों तुमको पकरि बुलैहैंजी ॥
ऐसी विधि जो करन लगेहौ को या ब्रजमें रैहैंजी ॥ २ ॥
दोहा—लिये सखा सँगसेतके, करत फिरत उतपात ॥
कठिन कंसको राज्यहै, नेकहु नाहिं डरात ॥
चौबोला—नेकहु नाहिं डरात सुनत यह उठे श्याम रिसहाईजी॥
लीनो कछु दधि छीन कह्यो अरु मानति हो तुम नाईजी ॥
बसन छोर तरु सों अटकाये वासन दिये ढुराईजी ॥
कहत जाय कंसहि गुहरावो लीजो मोहिं बुलाईजी ॥ १ ॥
मोको कहा कंस दिखरावो मारों पलमें वाईजी ॥
अब तो मोसों वैरबढायो करिहौं मनकी भाईजी ॥
मेरे हठ क्यों निबहन पैहो देखों कैसे जाईजी ॥
गोरसबेच बहुरि हम ऐहैं देखत रहियो कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बोले ज्वाब न देहिंगी, रहिहैं नाहिं डराय ॥
सुनि ऐहैं गृहते जनहिं, बहुरि सँभारि न जाय ॥
चौबोला–बहुरि सँभारि न जाय नेकहू गोरस देहैं नाईजी ॥
ऐसेही देखत तुम रहियो फिर पाछे पछिताईजी ॥
धरिकै यशुमति पै ले जैहैं तहां कछु ज्वाब न आईजी ॥
हम पै दान न पैहो नेकहु मानहु बात कन्हाईजी ॥ १ ॥
गृह जन कहा बतावहि मोको कंसहि लेहु बुलाईजी ॥
देखतही तुम सबके मारों पूजा करहुँ बनाईजी ॥
अब मैं हूं अरु तुम सबही हो देखों कैसे जाईजी ॥
सूधे दान देतहो नाई बात करत अनखाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जो कंसहि मानत नहीं, तो तुम घरके राय ॥
सिंहासन बैठत नहीं, क्यों बनचारत गाय ॥
चौबोला–क्यों बनचारत गाय मोरको मुकुटहि देहु उतारीजी॥
नृपति क्रीटमाथे पर लीजे गुंजै माल किमधारीजी ॥
नृप भूषण किन करत शृँगारा छत्र चमर शिर ढारीजी ॥
तजहु मुरलि अब नौबत बाजै हम लखि होयँ सुखारीजी॥ १ ॥
हमहूं यह लखिकै सुख लेहैं सब तुम्हरे कहवावैजी ॥
झगरत कहा दहीके काजै देखिलाजहमें आवैजी ॥
ओछी बुद्धि तुम्हारी तियकी तुम्हें रजधानी भावैजी ॥
मेरो दासन दास कहावै सो सपने नहिं चावैजी ॥ २ ॥
दोहा–सदा राज मेरो ब्रजहि, अरु काकी ठकुराइ ॥
तुम्हें राज लागत बड़ो, मम प्रभुता नहिं पाइ ॥
चौबोला-मम प्रभुता नहिं पाइ कहत हो जानत तुम्हें कन्हाईजी ॥
काहेको अब मुख अपने ते कीजे बहुत बडाईजी ॥

१ रंच। २ राजा। ३ घुँघची।

कांधे कामरलेकर लकुटी फिरत चरावत गाईजी ॥
करत कहाहो बड़ि बडिबातें देखी है ठकुराईजी ॥ १ ॥
यह कमरी कमरी तुम जानो जितनी बुद्धि तुम्हारीजी ॥
यापरवारों चीर पाटम्बर तीन लोक सुखकारीजी ॥
ब्रह्मा भूल्यो जाय निहारी सो निंदित तुम ग्वारीजी ॥
कमरीके बल असुर संहारों संत उधारन हारीजी ॥ २ ॥

दोहा–कमरी सब सुख योगहै, जाति पांति सुखदाइ ॥
सुनत हँसीं ब्रजबाल सब, सांची कही कन्हाइ ॥

चौबोला–सांची कही कन्हाइ धन्य धनि यह कमरी तुम धारोजी
सब विधि तुम्हें निभाहन हारी याको जिनहिं विसारोजी ॥
यहै सेज करि भूमि बिछावो यहै ओढि गउ चारोजी ॥
याही ते वर्षा जल टारो शिशिर शीत निरवारोजी ॥ १ ॥
यहै उठगनी शीश बनावो लेतहो घाम बचाईजी ॥
यहै सिखावति सब परपाटी गृह सब ठाठ बनाईजी ॥
हम जो कहन चहतही तुमसों सो तुम आय सुनाईजी ॥
कीनी जात प्रगट तुम अपनी युवतिन खूब हँसाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तापर मांगत दान दधि, रोकत बनाहिं मझार ॥
तुम्हें न छाजत पीतपट, कामरि ओढनहार ॥

चौ०-कामरि ओढनहार कहत मोहिं सुनहु बात सब ग्वारीजी ॥
उपमा कहत सत्य यह जगमें बालक अरु जे नारीजी ॥
इनसों बहुत हेतु नाहिं कीजे मूँड चढ़त पुचकारीजी ॥
जो मनकरै सोई करडारै सो गुण तुमकरो सारीजी ॥ १ ॥
बात करत में तुम इठलावो कहत आनकी आनैजी ॥
सदा छाछकी बेचन हारी हमको तुम कहा जानेजी ॥
सुनहु कान्ह हम तुमको जानत नन्दसुवन पहिचानेजी ॥

गाय चरावत बन बन डोले दुहत धेनु सोउ जानैजी ॥ २ ॥
दोहा–पुनि जानत चोरी करी, घर घर मखान खाय ॥
जान परी यह बात अब, दानी भये कन्हाय ॥
चौबोला–दानी भये कन्हाय और सुने बांधे यशुमति माईजी ॥
ऊखलसों दोऊ भुज सांदे सो किन कहत कन्हाईजी ॥
तब सहाय करि हमहिं बचायो बंधन आय छुड़ाईजी ॥
जानत रहत यहै ब्रंजमाई दूर बसत कहुँ नाईजी ॥ १ ॥
हँसी लगत सुन बात बावरी कहति कहा तुम आईजी ॥
कब जन्मत हमको तुम देख्यो कोहै मात पिताईजी ॥
कब चोरी पकरचो तुम हमको कबै चराई गाईजी ॥
दुही गाय किन कहो कौनकी कब बांधे हममाईजी २ ॥
दोहा–तुम जानति मोहिं नंदसुत, नंद कहाँते आहि ॥
मैं अविनाशी अवगती, सब माया वश माहिं ॥
चौबोला–सब माया वशमाहिं सुनत सब कहति सखी हरषाईजी
ऐसेहू गुण जानत मोहन बात तुम्हारी पाईजी ॥
जैसे निदरचो तुम सब काहू तैसेहि मात पिताईजी ॥
तुमको यशुमति महरि न जाये कहांते आये कन्हाईजी ॥ १ ॥
घर घर माखन चोरचो नाहीं नाहिं बाँधे महतारीजी ॥
हाहा करि हम नाहिं छुड़ाये सांच कहो बनवारीजी ॥
नहीं गाय तुम दुही हमारी झूंठी बात तुम्हारीजी ॥
कर्म धर्मके मैं वशनाहीं भक्तन हित अवतारीजी ॥ २ ॥
दोहा–योग यज्ञ नहिं मनधरौं, दीन वचन सुनधाउँ ॥
भावाधीन सबमें रहों, काऊ ते न डराउँ ॥
चौबोला–काऊ ते न डराऊं ब्रह्मा अरु कीट आदिके माईजी ॥
व्यापक हौं समान सब ठाईं तुम जानति हो नाईजी ॥

कहां कहांकी बातें कहि कहि कहा हमें डर पाईजी ॥
बार बार कहि बोध करावो स्वर्ग पताल बताईजी ॥ १ ॥
जो लायक कोउ होय आपके तासों जाय सुनावोजी ॥
कौन प्रकृती[1] परी तियनको बनमें रोक रखावोजी ॥
केतिक दधिको दान कन्हाई जाकारण अटकावोजी ॥
दधि माखन सबही तुम लेहू रीती हमाहिं पठावोजी ॥ २ ॥
दोहा–जो तुम याहीमें सुखी, रीतिहिं[2] देहों जान ॥
दधि माखन मैं कहा करों, द्यो सकल वणिजको दान ॥
चौ०-सकल वणिजको दान देहु सोइ नितहि बणिज तुमलावोजी
लेखो करि सब मोहिं चुकावो तब अपने घर जावोजी ॥
अब ऐसे कैसे घर जैहो जब लग दान चुकावोजी ॥
करत बणिज तुम नये बनाये नितहिं जगात[3] चुरावोजी ॥ १ ॥
सुनि बानी हरि नागर नटकी युवतिनके मन भाईजी ॥
बोलीं हरिसों सब मुसकाई अति आनँद मन माईजी ॥
ऐसे कहो बणिजको अटके भूले कहा कन्हाईजी ॥
कहा माँगत दधि दान कन्हाई हम मन माँझ लजाईजी ॥ २ ॥
दोहा–बणिजहेत रोकी हमें, सुनहु श्याम सुखरास ॥
हँसि बोली राधा कुँवरि, कहा बणिज हमपास ॥
चौबोला–कहा बणिज हमपास कहो किन धरिके नाम बताईजी
कहो बणिज युवती कहुँ करहीं भूले कितहिं कन्हाईजी ॥
सो हमको तुम देहु बताई किन सो लियो चुकाईजी ॥
लैलै नाम बतावहु तुमहीं बूझति कहा हम पाईजी ॥ १ ॥
तुम जानति मैंहूं कछु जानो मालसो नाहिं छिपाईजी ॥
डारि देहु जापर जो लागे फिर मांगत कोउ नाईजी ॥

१ स्वभाव। २ खाली। ३ कर।

इतनेहीको लरत वृथाई समुझि लेहु मन माईजी ॥
कहति परस्पर ग्वालि सयानी बात श्यामकी पाईजी ॥ २ ॥
दोहा–इनहीं सों बूझो कोऊ, सुनहु बतावें सोय ॥
गूढवचन हरि वदनते, सुनत सबन सुख होय ॥
चौबोला–सुनत सबनसुख होय जनावतिकोऊकाउअनाईजी ॥
लोक लाज डर सबकोउमानें रहीं मनहिं सुखपाईजी ॥
जानहिं सब हरि रसिक पुरंदर सुन्दरि सब हरषाईजी ॥
तब बोलीं हँसिकै ब्रजबाला तुमहीं कहहु कन्हाईजी ॥ १ ॥
कहा माल देख्यो हम पाई जिहिं कारण अटकाईजी ॥
बैलल्दाये देखी हमको बूझत तुमहिं कन्हाईजी ॥
गिरी छुहारा दाख लायची लौंग जायफलल्याईजी ॥
कहा लादे हम जातचली हैं सो किन भाषि सुनाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जाकी देहिं जगात हम, दीजै वणिज वताइ ॥
जो अब वेग कहो नहीं, तुमको नन्द दुहाइ ॥
चौ०-तुमको नन्ददुहाइ कहतितुम कहा मोहिं वणिजवतावोजी ॥
लौंग मिरच कहि कहि बहकावो मालसो नाहिंसुनावोजी ॥
तुमतो माल गयंदलदायो महिष वृषभ दिखरावोजी ॥
बडे मोलकी बस्तु जो होई दुरत न कोउ दुरावोजी ॥ १ ॥
देहो दान जान जब पैहो मोसों कहा छिपाईजी ॥
दधिको दान मेटि यह ठानी जानपरी चतुराईजी ॥
देतीं दही कछुक हम छोहन खाते कुँवर कन्हाईजी ॥
इन बातन अब खोयो सोऊ यह कहि सब मुसुकाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सूधे दान नदेहुगी, हो तुम बड़ी प्रवीन ॥
उठ गहि भुजा झकोर कह्यो, लेहों गोरस छीन ॥
चौबोला–लेहों गोरज छीन कहत हरि सुनहु सकल ब्रजनारीजी॥

झटक पीतपट कहति लाडिली भये तुम ढीठ मुरारीजी ॥
हरि रिस करि अंकम गहिलीनी प्रेम प्रीति उर भारीजी ॥
टूट गई प्यारी उर माला तब घेरे बनवारीजी ॥ १ ॥
गहि गहि अंकमलेत सबनको झगरत रिसहि बढाईजी ॥
हँसत सखा सब देकर तारी पकरे गये कन्हाईजी ॥
हांक दई तबहीं नँदलाला लीने सखा बुलाईजी ॥
धाय परे सब ग्वाल सखिनसों लीने श्याम छुड़ाईजी ॥ २ ॥

दोहा–रिस करि बोले ग्वाल सब, कहत सखिन झहराय ॥
भई ढीठ मानत नहीं, जानति नाहिं कन्हाइ ॥

चौ०-जानहि नाहिं कन्हाइ सखिनसों कहत सकल मिलग्वालाजी
देहों ज्वाब देवको चीन्हों बोली सब ब्रजबालाजी ॥
बन भीतर रोकी सब नारी कियो हमें जंजालाजी ॥
बड़े सुधरमा आप कहावत तुम अरु ये नँदलालाजी ॥ १ ॥
ऐसी साख सखनकी भरिकै जीत नृपति तुम ऐहैंजी ॥
तजहु ख्याल लरिकाई तबकी अब न तुम्हारी सैहैंजी ॥
जो युवतिनको हाथ लगैहो कियो आपनो पैहोजी ॥
अरु ये बात घरन सुन पैहैं मात पिता कहा कैहैंजी ॥ २ ॥

दोहा–तोरचो मुक्ताहार हरि, कहा कैहैं घरजाय ॥
आपन भोरी बनतहो, हरिको दोष लगाय ॥

चौबोला–हरिको दोष लगाय जबहिं तुम झपटी पीत पिछोरीजी
तब उन मोतिनकी लरतोरी करन लगीं तुम जोरीजी ॥
माँग्यो दान श्यामने अपनो तुम लरवेको दोरीजी ॥
देहो दान जबहिं जैहो नहिं ठाढी रहो यहि ठोरीजी ॥
झक झोरा झोरी तुम करि करि हरिको लेत डराईजी ॥
मोहनकी सर और दूसरो को त्रिभुवनके माईजी ॥

नन्द नँदन ब्रजराज सदाई तुम सब जानति नाईजी ॥
जानत हम सबनीके इनको कहा तुम करत बड़ाईजी ॥ २ ॥

दोहा–नृपति त्रास[1] वसुदेवजी, ल्याये आधीरात ॥
प्रतिपारे[2] यशुमति महरि, अब ये बात बनात ॥

चौबोला--अब ये बात बनात आये हैं अति शुभ घरके माईजी॥
काउअ बदत ताहिते नाई गये श्याम इतराईजी ॥
कहत ग्वाल हम ढीठ कही यों श्याम हिं झगरत आईजी ॥
इतनेपर मानत नहिं हारी लाखन गारि सुनाईजी ॥ १ ॥
बहुत सही हम बात तुम्हारी झगरति हो तुम ग्वारीजी ॥
अब लों तुम यह बात न जानी दधिदानी बनवारीजी ॥
अब नहिं छोडों नन्द दुहाई बोल उठे गिरिधारीजी ॥
अब तो दान आपनो लेहों जान देहुँ तब प्यारीजी ॥ २ ॥

दोहा–कहा बात तुम कहत हो, माँगत कहा कन्हाइ ॥
फिर फिर कहि कहि नन्द सों, हमहिं डरावत आइ॥

चौबोला–हमहिं डरावत आइ डरावहु जो तुम तेहि डराईजी॥
यहां डरावत कौने आई हम तुमते घटनाईजी ॥
तोरचो मुक्ताहार हमारो कैहैं यशोदहिजाईजी ॥
इतनो धन कहां पावोगे अब परिहै खबर कन्हाईजी ॥ १ ॥
एक हार मोहिं कहा बतावो भूषण कहा दुराईजी ॥
मोतिनमांग जडाऊ टीकी कर्ण फूल छबि छाईजी ॥
कंठलरी दुलरी तिलरीगर तापरहार सुहाईजी ॥
सुभग हमेल बिजोटा बाजू मुंदरी नगन जडाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सोभा सगरे अंगकी, सबको नाम बताय ॥
यामें तुम्हरो बांटहै, कहति ग्वालि इक आय ॥

---

१ भय । २ पालन ।

चौबोला-कहति ग्वालि इकआय भूषणहु देख न सकत कन्हाईजी
थाई लिये भये घटवारे घेरत हो मगमाईजी ॥
आपनहूं कछु दई घटाई यशुमतिके नँदराईजी ॥
आई पहरि जितो हम नाहीं दूनो है घर माईजी ॥ १ ॥
देखि परत कछु बहुत लुभाने सूनो बनहिं लखाईजी ॥
बाँट कहा तोलों सब मेरो जोलों न दान चुकाईजी ॥
भूषण मोको कहा गिनावो बहुत वस्तु तुम पाईजी ॥
मानो मैं कहा जानत नाईं सो किन देत बताईजी ॥ २ ॥

दोहा-समुझि लेहिंगे बाँट पुनि, लेहों सबको दान ॥
मैं तुमसों सांची कहत, देहों तबहीं जान ॥

चौबोला-देहों तबहीं जान कहत हों काहे बात बनावोजी ॥
युवतिनमें अब भये उजागर जिनहिं अधिक इतरावोजी ॥
नित प्रति गाय चरावन जावो छाक मांगतुमखावोजी ॥
हाथ लकटिया काँधे कामरि बछरन पाछे धावोजी ॥ १ ॥
आप पीत पट कटि कसि आये यों कहा बडे कहावोजी ॥
भये कछुक अब नवल सुजाना तब यह दान लगावोजी ॥
देहो दानकि झगराति हो तुम कहा बहु बात बनावोजी ॥
तापाछे तुम हमहिं निदरियो प्रथमहिं दान चुकावोजी ॥ २ ॥

दोहा-कहति कहा निदरे तुम्हें, सहजहिबात सुनाइ ॥
आदिहिते जानत तुम्हें दाननहमें सुहाइ ॥

चौबोला-दान न हमें सुहाय कहत चली करिकरिकैरिसग्वारीजी
दधि मटुकी माथे धर लीनी तब जानी बनवारीजी ॥
तब हरि गहि अंचल झटकारी जात कहां वणिजारीजी ॥
विनादान क्यों होत निभाहू वणिज करत तुम भारीजी ॥ १ ॥
नाम तुम्हारे सकल वणिजको सबमैं देहुँ बताईजी ॥

देहु दान तुम मोहिं सकल मिल देखहु सब ठहराईजी ॥
एक होय तो छांडि दीजिये सब क्यों छोड्योजाईजी ॥
तुम विचार देखो सब अपने यहै बात मनमाईजी ॥ २ ॥

दोहा–लिये जात एती वस्तु, दान देत खिजराय ॥
मत्त गयंद तुरंग सो, कैसे दुरत दुराय ॥

चौबोला–कैसे दुरत दुराय हंस अरु मोर केहरि मृग ल्याईजी ॥
कनक कलस मदरससों भरिये सो किम रहत दुराईजी ॥
चमर सुगंध कपोत कीर बर कोकिल धनुष धराईजी ॥
कैसे निबहैं दान बिना यह एतो धन तुम पाईजी ॥ १ ॥
सुनि यह चकित कहति ब्रजबाला कहा तुम श्याम बतायेजी॥
तिनको नाम लेतहो सो हम सपने नाहिं लखायेजी ॥
कहां तुरंगम गज हम पाहीं कब इन कलस गढायेजी ॥
मानसरोवर हंस रहतहैं चमर धनुष कहांपायेजी ॥ २ ॥

दोहा–येसब हमपै कहाँहै, सोतुम देहु बताय ॥
जहाँ होय तहँ तहांते, लीजै दान चुकाय ॥

चौबोला-लीजै दान चुकाय कह्यो तब कहत श्याम समुझाईजी
कर विचार देखो मनमाई इतनो सब तुम पाईजी ॥
अपने सब तुम अंग निहारो जोबन रूप सवाईजी ॥
करहु निबेरो वेग सबै अब कहा अबेर लगाईजी ॥ १ ॥
कहौ तुमहुँ कछु हमहूं कैहैं जाहु घरन समुदाईजी ॥
जान्यो अब आपनो वणिज तुम दीजै दान चुकाईजी ॥
जो कछु धोखो होय मनहिंमें कहौ फेर समुझाईजी ॥
चमर चिकुरभ्रू धनुष कटाक्षी मृग दृगशर कजराईजी ॥ २ ॥

दोहा–कंठ कपोत कोकिल शब्द, कीर नासिका बोर ॥
अधर सधरविद्रुम सोई, पट घूँघटहै मोर ॥

चौ०–पट घूंघट है मोर उरोजन कंचन कलस लखावेजी ॥
जोवन मदरस भरे विचारो कटिकेहरि छबि छावेजी ॥
हंस गयंद चाल छबि सोई सोरभ अंग सुहावेजी ॥
इतनो है सब बणिज तिहारो दान दियो नहिं जावेजी ॥ १ ॥
लेहों दान देहुगी जैसे धीरज धरिहौं नाईजी ॥
यह सुनि हँसि बोलीं ब्रजबाला बात तुम्हारी पाईजी ॥
माँगत ऐसो दान कन्हाई जान परी तरुनाईजी ॥
याही लालच अंक भरत हो गहत हो आंचर आईजी ॥ २ ॥

दोहा–याही लालच फिरत हो, सखा लिये बनसंग ॥
घेरत हो युवतीनको, प्रकट्यो अंग अनंग ॥

चौबोला–प्रगट्यो अंग अनंग समुझि मन बैठरहो घर जावोजी ॥
कहि कहि हमसों ऐसी बातें जिन मरियाद घटावोजी ॥
यह सुनि बिहँसि कह्यो बनमाली कत हमपर रिसहावोजी ॥
सूधे हम इक बात बखानी तुम कत सोर मचावोजी ॥ १ ॥
कबहूं जोइ सोइ करत विवादा कत मर्याद घटावोजी ॥
प्रातहिंते झगरति बिनकाजे दान चुका घर जावोजी ॥
बेटी बहू बड़े घरकी हो कत विलंब बन लावोजी ॥
हरि तुम कबते भये सयाने उलटो दोष लगावोजी ॥

दोहा–बूझी तुमसों हम कही, तुम उलटे सतराय ॥
कहिये बात बिचारके, तुम सर्वज्ञ कहाय ॥

चौबोला–तुम सर्वज्ञ कहाय प्रगट कहि ऐसो दानसुनावैजी ॥
हमरो ब्रज उपहास करावै ब्रजके लोग हँसावैजी ॥
तुमाहिंलाज कै हमें कन्हाई बात घरन यह जावैजी ॥
जाति पांतिके सबहिं हँसैंगे जो ब्रजमें सुन पावैजी ॥ १ ॥
कहियो प्रातफेर जब आवें जानदेहु गोपालाजी ॥

सुनहु ग्वालनी बात हमारी बोल उठ्यो इक ग्वालाजी ॥
कतहि लजात बावरी इनसों करहु प्रीति सब बालाजी ॥
हरि संग करहु विहार नवलतुम नवलहि श्री नँदलालाजी॥२॥
दोहा—भलो मनावो कान्हको, हँसन देहु संसारि ॥
कहवावत हो श्याम तुम, सुनबोलीं ब्रजनारि ॥
चौबोला—सुनि बोलीं ब्रजनारि आपहू कहत हो हरिमनआईजी
तापर जोइ सोइ सखन सिखावत ऐसे भये हो कन्हाईजी ॥
बनमें सबन घेर बैठारी करत श्याम लँगराईजी ॥
भूलि गये वे दिवस कन्हाई माखन खात चुराईजी ॥ १ ॥
उरडरायघरको भजिजाते खिजत नैन भरे आईजी ॥
बांधे ऊखल जबहिं यशोदा कीनी हमहिं सहाईजी ॥
अब भये बड़े बड़ी चतुराई जोबन दान सुनाईजी ॥
कैसी भई कहा हम जानें तबहिं हती लरकाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कब मैया बाँधे हमें, कबखायो दधि चोर ॥
नेकहुताकी सुधि नहीं, तबहिं हती मति भोर॥
चौबोला—तबहिं हती मति भोर भलो अरु बुरो ज्ञान कछुनाईजी
अपनो पर कछु समुझत नाहीं खेलत रहत सदाईजी ॥
अपनी सुरत करत नहिं तबकी यमुनाके तट न्हाईजी ॥
सबके जबमैं बसन अभूषण दीने कदम चढाईजी ॥ १ ॥
बिना बसन तुम तब सब नागी जलमें रही छिपाईजी ॥
दिये बसन मैं तब सबहिंनके पुनि पुनि हाहा खाईजी ॥
बिना बसन जब बाहिर आई सब मोहिं विनय सुनाईजी ॥
कैसी भांति भई तब सबकी सो तुम सुधि बिसराईजी ॥ २ ॥
दोहा—मोहिं कहति चोरचो दही, बांधे ऊखल माय ॥
तबहिं सहाय करी हमैं, लीने जाय छुड़ाय ॥

चौबोला–लीने जाय छुड़ाय सखिन सों पहली बात सुनाईजी॥
सुनिकै हँसि सकुंर्ची ब्रजनारी मनहीं गई लजाईजी ॥
कहति भये अति निलज कन्हाई कहत मैं लाज न आईजी ॥
जाहु चले लोगनके आगे झूंठी बात बनाईजी ॥ १ ॥
करत हँसी तुम सखन सुनाई कहिहैं ये घर जाईजी ॥
झूंठी बात कहा हम जानैं हम तो सांचि सुनाईजी ॥
जैसी भांति भजे मोहिं कोई मानत तैसो ताईजी ॥
मम हित तप किम कियो तुमहिं मैं झूंठो परत लखाईजी ॥

दोहा–जो तुम अपने मन चहो, सो मैं लीनो जान ॥
अब निष्ठुर मन करत हो, देति नहीं किमदान ॥

चौबोला–देति नहीं किमदान कहत हो यह नहिं हमें सुहाईजी
भली बुरी अरु जो कछु कहिहो सो सहि लेहिं कन्हाईजी ॥
सुनिये मोहनलाल हमें अब छांडि देहु घर जाईजी ॥
मात पिता खीजि हैं सब हम पर भई बेर वन माईजी ॥ १ ॥
काहे को तुम करत अवारी दधि वेचहु घरजावोजी ॥
मैं कहा करों तुमैं यह भावै लेखो करन चुकावोजी ॥
शुद्ध स्वभाव समुझि सब कोई करलेखो समुझावोजी ॥
जबहीमैं तुमसों सोइ लेहों तबहिं जान तुम पावोजी ॥ २ ॥

दोहा–कहा ये हठ लागे हरी, माँगत कहा कन्हाइ ॥
बात कछू समुझत नहीं, कहा लेखो समुझाइ ॥

चौबोला–कहालेखो समुझाइ निपटही परे हमारेख्यालाजी ॥
इन बातन कहा पावत लाला मानहु मदन गोपालाजी ॥
अब तुम निपट करी बहुताई हँसि हैं गोपी ग्वालाजी ॥
घरते लीजो दान उघाई जानदेहु नँदलालाजी ॥ १ ॥

---

१ सरमाई। २ देख।

अब तुम सब यह कियो जो लेखो सो विचार मैं पायोजी ॥
करकंकनदर्पण दिखरायो ऐसो ज्ञान सिखायोजी ॥
काहि न तुम्हें जानमैं देहों नीको बोधकरायोजी ॥
आपभई तुम चतुर सकल मिल मोहिं गँवार बनायोजी ॥ २ ॥

दोहा–हम ठाढे ह्वै ह्वै घरन, उगहत फिरि हैं दान ॥
फेरि कहां पाऊं तुम्हें, घरन नदेहों जान ॥

चौ०–घरन न देहों जान नृपतिको मैं कहा ज्वाब बताईजी ॥
भली भई नृप मान्यो तुमहूं चलो कंसपै जाईजी ॥
तबते लेन कहतहो दानहिं कहि कहि नन्द दुहाईजी ॥
हम अबलों जानी घरहीके दानी कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
नृपते दान पहिरि तुम आये दीने कंस पठाईजी ॥
सुनि हरि ये गोपिनके बैना हँसे कछुक मुसकाईजी ॥
सो छबि निरख कहति ब्रजनारी कहा तुम हँसे कन्हाईजी ॥
सोई कहो मनहिं जो आई तुमको नंद दुहाईजी ॥ २ ॥

दोहा–गोधनकी तुमें सौंहहै, सांची कहो कन्हाइ ॥
रीझे धौं खीजे कछू, हँसे कहा मुसकाइ ॥

चौबोला–हँसे कहा मुसकाइ सुनत यह अधिक हँसे गोपालाजी॥
कहत श्रीदामासों नँदलाला देखहु इनके ख्यालाजी ॥
यह अचरज इनको तुम हेरो कहति हँसे कहा लालाजी ॥
ताते हँसी अधिक मोहिं आवे सोंह देत ब्रजबालाजी ॥ १ ॥
तब श्रीदामा सकल तियनसों बोल उठे मुसकाईजी ॥
हँसत श्याम तुमते इहि कारण पूँछति सोंह दिवाईजी ॥
हमहिं दिवावत सोंह हँसहु किन तुम तिय मिल समुदाईजी ॥
यहै तुम्हारी बान तियनकी थोरेमें खिसिआईजी ॥ २ ॥

दोहा—सहज हँसत नाहिं सकुचिये, जिनहींसौंह दिवाय ॥
वेदानी प्रभु सबहिके, मांगत कबके आय ॥
मांगत कबके आय जानत हम हैं ये कुँवर कन्हाईजी ॥
प्रभु तुम्हरे मुख अब सुन पाई जानि परी प्रभुताईजी ॥
होत नहीं प्रभुता इहि भांती घेरतहो बन माईजी ॥
ये ठाकुर तुमरी सिवकाई देखो प्रभु हम आईजी ॥ १ ॥
दधि लूट्यो अरु भूषण तोरे कही सोइ मन आईजी ॥
जो कछु बच्यो सोउ अब लीजै क्यों हुँ जान हमपाईजी ॥
देहु दान तबहीं तुम जैहो बोले कुँवर कन्हाईजी ॥
आयोहूं पठयो मैं जाको देहुँ ज्वाब कहा जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—अबहीं पठवै बोल मोहिं, तव सन्मुखको जाय ॥
तुमहिं करो घर जाय सुख, नृपकि गारिको खाय ॥
चौबोला-नृपकी गारिको खाय नृपति बर जब मोहिंदे अटकाईजी
तब पुनि तुम विन कौन छुड़ावै तुमहिं कहांते ल्याईजी ॥
लेत नाम मुखते नृपबरको जामुख निदरचो ताईजी ॥
आपुनतो नृप अरु नृपकोहै अब कहा समुझे कन्हाईजी ॥१ ॥
ऐसी तुम्हें बूझिये नाहीं तुम नृपके कहवाईजी ॥
जिहिं मुख निदरे तिहिं मुख वंदे भले श्याम बलिजाईजी ॥
जब हम कंस दुहाई दीनी तब उलटे रिसहाईजी ॥
अबै कहा नृपकी सुधि आई ऐसे डरे कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कंस त्रास हम कब कियो, बात न जानी जाय ॥
कब हम शीश नवाइयो, कहति कहा तुम आय ॥
चौ०-कहति कहा तुम आय कंस कहि कहा मोहिं डरपावतजी॥
कहा त्रास ताको उर आनै सुनत हँसी मोहिं आवतजी ॥
तुम्हरे मनहिं बात यह भावे कंसके हम कहवावतजी ॥

तो तुम कहो कौन नृपजाके ताके आप कहावतजी ॥ १ ॥
वाको नाम हमहुँ सुनि पावें ताकेइ हम कहवाईजी ॥
दूजो और कंसते कोहै तीन लोकके माईजी ॥
सो नृप वसत कहां सोउ जानें हमहूं तापै जाईजी ॥
यह सुनि हम अब अति डरपाई झूंठहिं हमहिं डराईजी ॥ २ ॥

दोहा–जानृपके हम हैं अरी, को नहिं जानत ताहि ॥
जड चेतन नर नारि सब, तीन भुवन वशजाय ॥

चौबोला-तीन भुवन वशजाय नृपति सो वसत सुमनपुर माईजी
तिन पठयो मोहिं देकर बीरा सब जानत है वाईजी ॥
सुनत गूढ मोहनकी बानी बोलीं सब हरषाईजी ॥
जात तुम्हारे नृपकी जानी अबलों कहां छिपाईजी ॥ १ ॥
जैसे तुम तैसे हैं वोऊ एक रूप गुण दोऊजी ॥
यह अनुमान कियो हम मनमें भये एक दिन दोऊजी ॥
भलो बन्यो अब संग समाजा मिले तुमहिं से सोऊजी ॥
चोरी ठगी निपुण गुण दोऊ या पटतर नाहिं कोऊजी ॥ २ ॥

दोहा–ठगत फिरति ठगनी तुमहिं, बोलति नाहिं सँभारि ॥
आवत मुख सोई कहत, भई ढीठ तुम नारि ॥

चौबोला-भई ढीठ तुमनारि अपन गुण औरन मांझि लगावोजी ॥
जाति जनावति दै दै गारी दान देत सतरावोजी ॥
तुम भये कान्ह सुधर्मा भारी ठगनी हमें बतावोजी ॥
अपने नृपसों कहो हमारी चुगली जाय सुनावोजी ॥ १ ॥
राजा बड़े जान हम पाये ल्यावहु धौंस चढाईजी ॥
तव हमहूं नृपपै सब जैहैं देखहिंको नृपताईजी ॥
तुमतो ठग आछे बने हो वनमें रोक रखाईजी ॥
हमें कहो काको ठगलीनों को हम मार बहाईजी ॥ २ ॥

दोहा-मंत्र यंत्र टोना ठगी, तुमहू जानत श्याम ॥
आपन ठग औरन कहत, ठगत फिरतसबवाम ॥
चौबोला-ठगत फिरत सब वाम बैठरहो बाततुम्हारीपाईजी ॥
यह ज्वानी हम पर चढ़ि आई बातें बहुत बनाईजी ॥
हमनहिं मानें बिलग तिहारो कहो सोई मन आईजी ॥
मैं कहाकरों दोष नहिंमेरो मोहिं पठयो नृपराईजी ॥ १ ॥
आवत हों या मारग नितही जोबन रूप भरायाजी ॥
लोचन दूतनजाय सुनाई तब नृप मोहिं बुलायाजी ॥
बैठ्यो सिंहासन तरुणाई शैशव महलनरायाजी ॥
तुरतहि मोहिं दान पहरायो तुम्हरे पास पठायाजी ॥ २ ॥
दोहा-तिनको नाम अनंग है, उनको दान चुकाय ॥
तिनकी आनहिं कहत हौं, देहु दान तब जाय ॥
चौबोला-देहु दान तब जाय बात यह हरिके मुखसुनपाईजी ॥
प्रेमसिंधु युवती मगनानी रहींथकित हरषाईजी ॥
काम नृपतिकी फिरी दुहाई अटक्यो जोबन आईजी ॥
को हम कहां रहति कहां आई सुधि बुधि सब बिसराईजी ॥१॥
नैन मूंदके ध्यान लगायो त्रसत मदन डर पाईजी ॥
लीजै सरबस दान शरण हम श्याम तिहारी आईजी ॥
देह दशा भूलीं सब बाला ऐसे कहि मनमाईजी ॥
यह धन तुमहित संचियो मोहन लेहु श्याम बलिजाईजी ॥

लावनी।

अहो श्याम सुन्दर ब्रजराज हरी सुख दाई ॥
जोवन अरु रूप चहै सो लेहु कन्हाई ॥
टेक-ऐसे सब ध्यान लगाय रहीं मनमाई ॥
बिनवतहैं बारंबार प्रेममें छाई ॥

अंतर्यामी भगवान मनहिंकी पाई ॥
मनहींमें सबसों मिले न देर लगाई ॥
खुलगये नैन सबहीके देह सुधिआई॥जोबनअ०॥१॥
देखे सन्मुख नँदलाल श्याम सुखदानी ॥
हम ठाढी बनके माहिं सुरत उर आनी ॥
लखि अचरज कीसी बात मनहिं सकुचानी ॥
कहां हती अबहिंलों नाहिं न कछु हम जानी ॥
ऐसी विधि मन हर लियो हरी यदुराई॥जोबनअरु० २
ह्वै रहीं ठगीसी कहा कहत नँदलाला ॥
कछु भई खुशी मन माहिं कि सोच विशाला ॥
सब दूर करो संकोच अहो ब्रजबाला ॥
परगट सब देहु सुनाय भयो कहा हाला ॥
बहुर न अब रोकत कोय तुम्हें बनमाई॥जोबनअ० ३
रोकै हमको बन माहिं ऐसो कोउ नाई ॥
हमको तो रोकनहारहि तुमहिं कन्हाई ॥
टोना डारत हो शीश करो मन भाई ॥
बरजोरी नृप बर काम कि देत दुहाई ॥
तुमको कहा परी यह बानि अहो सुखदाई ॥
जोबनअरु रूपहि चहै सो लेहु कन्हाई ॥ ४ ॥

दोहा–कैसेहु कृपा करो हरी, सब अपने घर जाय ॥
दान निवेरहु जाहु घर, बहुरि न रोंकों काय ॥

चौबोला–बहुरि न रोंकों काइ जानतहो मैंहूं करलेखो सबजी ॥
तुमहूं आप समुझि सब देखो जैहों दान दिये तबजी ॥
पिछलो देहु निवेर आज सब पुनि दीजो चाहे जबजी ॥
अब मैं भली कहतहौं तुमसों जो मानो मेरी अबजी ॥ १ ॥

को जाने हरि चरित तिहारे सुनहू कुँवर कन्हाईजी ॥
अजहूँ दान नहीं तुम पायो हम सरबस अपनाईजी ॥
लेखो करलीजै मनभायो खाउ हमहुँ सुख पाईजी ॥
सखन सहित अब खावहु मोहन सद माखन हम ल्याईजी ॥२॥

दोहा–सुख पावैं सब देखिकै, लीजै दान उघाय ॥
अबदधि दानी नाम यह, प्रगट करैं हम जाय ॥

चौ०–प्रगट करैं हम जाय खाउ दधि हम तुमरी बलिजाईजी ॥
तब हरि हँसि सब सखन बुलाये बैठे सब मिल आईजी ॥
दोना बहु पलाशके ल्याये लिये सबन करमाईजी ॥
सुन्दर हरि सुन्दर सब ग्वाला परसति ग्वालिन ल्याईजी ॥ १ ॥
भक्त भावके हाथ विकाने ग्वालनके सँग खावैजी ॥
निज निज मटुकिनते सब ग्वारी परसति करन सुहावैजी ॥
श्याम पतूखिनते करनावैं निरखि ग्वालि सुख पावैजी ॥
धन्य धन्य आपुनको जानी जन्मसफल कहि खावैजी ॥

दोहा–कहति धन्य माखन मही, हितकर खात मुरारि ॥
तन मन वारति श्यामपर, अति आनँद ब्रजनारि ॥

चौबोला–अतिआनँद ब्रजनारि प्यारी सों माँगत कुँवर कन्हाईजी
देखैं तुमरो कैसो लागत देवहु नेक चखाईजी ॥
तुमरे दधिको स्वाद न पायो औरनको लियो खाईजी ॥
श्रीवृषभानु कुँवरि अति हितकर दधि ल्याई मुसकाईजी ॥१॥
अपने कर अधरन परसि तब दीनो विहँसि खवाईजी ॥
अलप चितै मोहन विहँसे तब प्यारी तन मुसकाईजी ॥
मीठो है यह अधिक सबनतें मधुरे कह्यो सुनाईजी ॥
प्रेम विवस नाहिं नेक अघाये हरिजनके सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–गोपिनके हित खाइयो, माखन मोहनलाल ॥

परमहर्षि आनंद मन, परसति सब ब्रजबाल ॥
चौ०-परसतिसब ब्रजबाल ग्वालनसंग हँसि हँसि हरिदधि खावैजी
परमहर्ष सबके मन माहीं आनँद उर न समावैजी ॥
हँसत परस्पर सखा सयाने मीठो स्वाद बतावैजी ॥
हरि हँसि सबके चितहि चुरावै परमानँद उपजावैजी ॥ १ ॥
विलसत ब्रज विलास बनवारी दधि दानी कहवावैजी ॥
सुरगण तियन सहित नभमाई निरखि निरखि बलिजावैजी ॥
धनि धनि ब्रजकी युवति सभागी जिन पै हरि दधिखावैजी ॥
जाकारण शिव ध्यान लगावै शेष सहस मुख गावैजी ॥ २ ॥
दोहा–मन बुधि वचन अगोचरे, पार नहीं कोउ पाय ॥
निगमनेतिनहिं पावही, नारदादि यशगाय ॥
चौबोला–नारदादि यशगाय अविगती अविनाशी कहवावैजी ॥
सो प्रभु ब्रजमें प्रगट विलासी जाहि मुनीजन ध्यावैजी ॥
योगी जप तप नेम संयम कर समाधि लगावैजी ॥
रूप रेख वर्णन नहिं जाके आदि अंत नाहिं पावैजी ॥ १ ॥
पूरण ब्रह्म वश्य भक्तनके गोपी वल्लभ नावैजी ॥
कोटि कोटि ब्रह्मांड जाके रोम प्रति श्रुति गावैजी ॥
कीट ब्रह्म पर्यंत जल थल आप सबै उपजावैजी ॥
सो हरि निज भक्तनके कारण लीला अमित उपावैजी ॥ २ ॥
दोहा–करता हरता आपही, आपहि पालनहार ॥
खात सोई माखन मही, गोपिन प्राण अधार ॥
चौबोला–गोपिन प्राण अधार धन्य ब्रज पावनभूमि सुहाईजी ॥
दूध दही माखन मही तहाँ माँगत दान कन्हाईजी ॥
धन्य ब्रज इकपलक को सुख औ त्रिभुवनमें नाईजी ॥
कहत सुर मुनि हर्षि पुनि पुनि सुमननझरी लगाईजी ॥ १ ॥

कान्ह गोपी ग्वाल एकही एकहि बहुत नधारीजी ॥
भक्तजनन हित विरद जासुको लीला बहु विस्तारीजी ॥
नित्य निगमागम कहत है ब्रजविलास शुभकारीजी ॥
विहारन सदा यह यशगावै कर आनँद मनभारीजी ॥ २ ॥

दोहा–दान चरित गोपालको, अति विचित्र रसखान ॥
वेद भेद पावे नहीं, कबि किमि सकै बखान ॥

चौबो०–कबि किमि सकै बखान दान कोउ सुजनसुनें अरुगावेजी
प्रेम भक्ति वरदान हरी सो बिहारन सोई पावेजी ॥
ब्रजललना यों हरिय सुनावे दधि माखन हम ल्यावेजी ॥
मटुकिनते लै लै हम देहीं खाहु हमहुँ सुख पावेजी ॥ १ ॥
गोरस बहुत हमारे घर घर लीजे दान कन्हाईजी ॥
यह जो दान आजको पायो सो तुम लीनो खाईजी ॥
लेहु सबै अपनो कर लेखो फेर न पैहो राईजी ॥
श्याम कह्यो अब भई हमारी ले हैं जब मन चाईजी ॥ २ ॥

दोहा–प्रीति भई हम तुमनसों, मांगिलेहिं जबचाय ॥
बाट घाट कछु डरनहीं, निधरक बेचहु जाय ॥

चौबोला–निधरक बेचहु जाय ग्वालनी भई श्याम बशमाईजी ॥
घरको जात बनत है नाईं चकित भई समुदाईजी ॥
कहति एकसों एक विचारी कहा कियो कुँवर कन्हाईजी ॥
दान लियोकै मन हर लीनो यह तो बदी हम नाईजी ॥ १ ॥
बूझनको उमँगी सबबाला मोहन सों यह बातेजी ॥
निकट जात रहिजात सकुचि मन बहुरि मगन ह्वै जातेजी ॥
कहिये कैसे श्याम सों जाई मनहीं मन सकुचातेजी ॥
प्रेम विबस तरुणी सब ठाढ़ी करत बात नहिं आतेजी ॥ २ ॥

दोहा–ढीठो बहुत कियो हमहिं, सुनहु श्याम सुखरास ॥

क्षमा करो सो चूक अब, हम सब तुम्हरी दास ॥
चौबोला-हम सब तुम्हरी दास खिजावत हम तुमको हितजानीजी
सो कछु तुम उरमें जिन आनो कही कटुक हम बानीजी ॥
कछु रिस हमरे उरमें नाहीं अति आनंद रहिमानीजी ॥
दधिको दान और जो जानो सब तुम्हरो सुखदानीजी ॥ १ ॥
अहो श्याम तुम यह कहा कीनो मन हमरो हरिलीनोजी ॥
हम तुम सों कछु भेद न राख्यो तुम जो कह्यो सोइकीनोजी ॥
यह करनी तुमहीं अब जानो भली बुरी सब चीनोजी ॥
हम तुमसों अंतर नहिं राख्यो सरबस तुमको दीनोजी ॥ २ ॥
दोहा–अंतर्यामी हो हरिः, वेद भरत सब साखि ॥
सुनहु बात युवती सबै, तुमहित घेरी राखि ॥
चौबोला–तुमहित घेरी राखि तुमहिंते दूर नहोत सदाईजी ॥
रहत तुम्हारे निकट सदा मैं तजत एक क्षण नाईजी ॥
तुम कारण वैकुंठ तजो मैं प्रगट्यो हों ब्रज आईजी ॥
वृंदावन तुम्हरो मिलन सो यह न विसारयो जाईजी ॥ १ ॥
एक प्राण द्वै देह जानियो यामें अंतर नाईजी ॥
यह न नयो अब नेह कछू तुम भूलतकत ब्रज आईजी ॥
अब घर जाहु दान मैं पायो करलेखो निबटाईजी ॥
हँसि हँसि यह भाषत बनवारी कहत भई समुदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तन मन बिन किमि जाइँघर, कहत कहा ब्रजराज ॥
सब तन पर मनहीं बसत, जो कछु करै सो काज ॥
चौ०-जो कछु करै सो काज सोतोमन निकट आपराखिलीनाजी॥
घरको जान कवन बिधि होई अहो श्याम कहा कीनाजी ॥
चलत नहीं पग नैन विहीना इन्द्री मन आधीनाजी ॥
जोतुम प्रीति करी मनमोहन तो दुबिधा क्यों दीनाजी ॥ १ ॥

यहतो तुम जानत ब्रजनाथा मन बिन घर किमि जाईजी ॥
मन भीतरमें बास बनायो राखति मोहिं तहांईजी ॥
तजहु अजहुँ मैं जाउँ दोष यह तुमरो मेरो नाईजी ॥
लेहु आपनो मन घर जाऊं लोक लाज तुम्हें आईजी ॥ २ ॥
दोहा—जाते घटती होय निज, तज दीजै सो बात ॥
दीनो मनमें बास तब, अब मन क्यों पछितात ॥
चौ०-अब मन क्यों पछितात तुमहिं यह जो मन दीनों मोईजी॥
तोमैं ह्वै जैहों अब न्यारो जो लेहो मन सोईजी ॥
सदा हमारे मनमें बसिये क्षण न्यारे जिन होईजी ॥
तुमहिं बिना धृक मन अरु धृक घर धृक कुल लज्जा जोईजी॥१॥
धृक तुम प्रेम बिना पितु माता धृक सुत पति व्यवहाराजी ॥
धृक जीवन तुम बिन संसारा तुम बिन धृक सुख साराजी ॥
धृक रसना तुम गुण नाहिं गावै धृक दृग तुमन निहाराजी ॥
धृक श्रुति तुम्हरी कथा नभावै धृक मन तुमन विचाराजी॥२॥
दोहा—धृक श्वासा तुम बिन बहै, निशि दिन तुमबिनजाहि॥
तन मन धन तुम बिनवृथा,सबधृक जहँ तुमनाहि ॥
चौबोला—सबधृकजहँ तुमनाहिं कबहुँसब घरहिजानमनधारेजी॥
कबहुँक हरिकी ओर निहारे हरि पर तन मन वारेजी ॥
दधि भाजनले शिर पर धारे कबहुँकभूमि उतारेजी ॥
रीती मटुकिन में कछु नाहीं यह मनमाहिं विचारेजी ॥ १ ॥
विहँसिकह्यो तब कुँवरकन्हाई अब तुम सब घर जाईजी ॥
सकुचत पीछे दानहिं को तुम मैं सब लेहुँ निभाईजी ॥
सखन सहित हरि बनहिं सिधारे ऐसे वचन सुनाईजी ॥
युवतिन दान मनाय सबनको लेगये चित्त चुराईजी ॥ २ ॥

इति पूर्वार्द्ध समाप्त।

श्रीः ।

ब्रजचरित्र ।

उत्तरार्द्ध प्रारंभः ।

अथ गोपिनके प्रेमकी उन्मत्त अवस्था लीला ॥

दोहा—रीती मटुकी शिरधरी, चलीं सकल ब्रजबाम ॥
एक एककी सुधि नहीं, नहीं सुरत धन धाम ॥

चौबोला—नहीं सुरत धन धाम जड अरु चेतन जानति नाईजी
बन गृह कछू विचार न जानें फिरति बनहिंके माईजी ॥
आप सहित भूलीं सब कोऊ कुल मर्याद भुलाईजी ॥
बेचत दही बनहिंमें डोलें लेहु दधिक हम जाईजी ॥ १ ॥
कहत द्रुमन बोलत क्यों नाई लेहो दधिके जाईजी ॥
तरु तरु सों पूँछत यहि भांती फिरत प्रेमरस छाईजी ॥
मिलत परस्पर बिबस निहारी कहत बनहिं क्यों आईजी ॥
तिन्हें कहत अपनी सुधिनाई समुझति नाहिं मन माईजी ॥२॥

दोहा—भरीं प्रेमरस ब्रज वधू, तनुकी दशा बिसारि ॥
रीते भाजन धारि शिर, डोलति बनहिं मँझारि ॥

चौबोला-डोलति बनहिं मँझारि कबहुँ चलीं यमुनाके तटजाईजी
फिरत कबहुँ कुंजनके माई बंसीबटतन आईजी ॥
ठाढी ह्वै तहँ हरिहि बुलावैं आवहु कुँवर कन्हाईजी ॥
लीजे गोरस दान हरी अब कितधौं रहे हो छिपाईजी ॥ १ ॥
तुम्हरे डर हम जांत नहीं हैं तुम दधि लेत छिनाईजी ॥
लेवहु अपनो दान हरी अब पुनि उठिहो रिसहाईजी ॥
हमें न देहो जान घरहि अब सब ठाढी बनमाईजी ॥

बैठ गईं मटुकी धर सबही जानति घर ते आईंजी ॥ २ ॥
दोहा–ऐहैं हरि सँग सखनले, चुकैहैं दधिको दान ॥
दधिहिदुरावति ओट करि, दीठ परी तबआन॥
चौबोला–दीठ परी तब आन रीतिही मटुकी सबन निहारीजी ॥
गईं भ्रमहिं उरमें सबनारी परी सोच वश भारीजी ॥
गोरस ढरकायो कहुँ आली जहँ तहँ बूझति ग्वारीजी ॥
कोऊ कहति कान्ह ढरकायो खायो तब बनवारीजी ॥ १ ॥
कबकी यहां आइ हम आली भई सुरत तनु माईंजी ॥
सकुच गईं कछु गुरुजन डरते प्रातहिते हम आईंजी ॥
रही कहां तबते बन माईं सुरत हमें कछु नाईंजी ॥
जब हरि सखन संग दधिखायो गये वनहिं सुखदाईंजी ॥ २ ॥
दोहा–तबलोंकीतो सुधि हमें,पुनि कहाभईजो नाहिं ॥
डारि ठगोरी शशिहरि, गये श्याम वनमाहिं ॥
चौबोला–गये श्याम बनमाहिं दान दधिलीनोकुँवरकन्हाईजी ॥
तनु सुधि विसरगई तबहीते मृदु मुसकन मनभाईंजी ॥
मन हरलीनो कुँवर कन्हाई उन विनरहो नजाईंजी ॥
ऐसे कहि ब्रज वाम सकल मिल चलीं घरन समुदाईंजी ॥ १ ॥
मन हरिसों तनु घरहि चलावै मत्त गयंद ज्यों जावैजी ॥
श्याम रूपरस मदसोइ भारो महावत कानि मिटावैजी ॥
कर्म नेह बंधन सोइ तोरयो मुरे न कुंजमुरावैजी ॥
गुरुजन उर अंकम सुधि आवै तब घर पगहि चलावैजी ॥ २ ॥
दोहा–गईं सदन ब्रज बाम सब, हरि बिन नाहिं सुहाय ॥
बूझत गुरुजन बात तब, औरहि और बताय ॥
चौबोला–औरहि और बताय लरत सब देगारी समुझावैजी ॥
श्रवण शब्द हरि पूरे दोऊ और न बात सुहावैजी ॥

मात पिता बहु त्रास दिखावै नेक न मनमें ल्यावैजी ॥
बार बार जननी समुझावै काहे हमहिं लजावैजी ॥ १ ॥
जित तित तुम काहेको डोलो क्यों कुलकानि मिटाईजी ॥
दधि बेचो सूधे घर आवो काहे विलम लगाईजी ॥
बूझे ज्वाब देतहो नाई बसी कहा मन माईजी ॥
ऐसे सिखवत मात पितासों करति कानि कछु नाईजी ॥ २ ॥

दोहा—लागत हैं तिनके वचन, उरमें बाण समान ॥
धृक धृक इनकी बुद्धिको, तिन्हैं कहति मन जान ॥

चौबोला--तिन्हैं कहति मन जान इनहिंको हरिकी प्रीतिनभावैजी
जाहि प्रिये नहिं कुँवर कन्हाई सो मुख विधि न दिखावैजी ॥
गुरुजनको निदरति मन माइ विधि सों विनय सुनावैजी ॥
विसरत श्याम न सोवत जागत नेक न मन घरलावैजी ॥ १ ॥
नैन श्याम दरशन रस अटके श्रवण[2] शब्द रस छावैजी ॥
रसना[3] श्याम विना नहिं बोलै मन चंचल सँग जावैजी ॥
नासा[4] अंग सुगंध लुभानी सुरति सो रूप समावैजी ॥
जितहि श्याम सुन्दर सुखरासी तितहि चलन पगचावैजी ॥२॥

दोहा—लोकलाज[1] कुलकानितजि, रँगी श्याम रँग माहिं ॥
प्रातचलीं ब्रज लै दधिहिं, इन्द्री मन वशनाहिं ॥

चौबोला—इन्द्री मन वशनाहिं गोरस लै चलीं सकल ब्रज बालेजी
रसनामें अटक्यो हरि को यश धर उर ध्यान विशालेजी ॥
दधिको नाम भूल गईंबाला कहति लेहु गोपालेजी ॥
व्याप गई उरमाहिं दशोदिश भीजीरस नँदलालेजी ॥ १ ॥
फँसीतीय खग[5] वृंदाहि ज्यों सब हरि छबि लटकन जारीजी ॥
तरफरात तामहिं परीं सब निकसि सकत नहिं ग्वारीजी ॥

---

१ लज्जा। २ कान। ३ जिह्वा। ४ नाक। ५ पक्षी।

पान किये जिमि बारुणि तनमें बोलत मुख न सँभारीजी ॥
परत चरण डगमग जित तितही बिथुरीं अलक लिलारीजी॥२॥
दोहा–अलबल बोलति वदन ते, दधि बेचाति ब्रजजाय ॥
गोरस लेन बुलावहीं, सुनत नहीं कोउताय ॥
चौ०-सुनत नहीं कोउ ताय कबहुँ कछु चेत होत तिहिं कालाजी॥
गोरस लेत आज कोउ नाई आज कहा यह हालाजी ॥
बोल उठत पुनि लेहु गुपालहि अटक्यो मन सोइ ख्यालाजी ॥
लेहु लेहु कोऊ बनमाली कहत फिरति यों बालाजी ॥ १ ॥
कोऊ कहत श्याम बनवारी कोउ कहत गिरिधारीजी ॥
कोऊ कहत दान कोउ लीनो तुमहीं कियो मुरारीजी ॥
देह गेहकी सुरत विसारी दधि मटुकी शिरधारीजी ॥
जाहि देहकी सुधि कछु होई सो दधि नाम उचारीजी ॥ २ ॥
दोहा–इहि विधि दधि बेचाति सबै, गइ बिनमोल विकाय ॥
हरि बिन और न भावही, कितनो कोउ समुझाय ॥
चौबोला-कितनो कोउ समुझाय दरश बिनभइँभोरीमतिवामाजी
अन्तरलगी सुरतकी डोरी विसर गई धन धामाजी ॥
प्रगट्यो पूरण नेह सबन उर जित देखें तित श्यामाजी ॥
समुझाई समुझत नाहीं सब सिख देथाक्यो ग्रामाजी ॥ १ ॥
कृष्ण प्रेमरसमद मतवारी मगन सकल ब्रजनारीजी ॥
कोऊ तिनमें नाहिं अदूरी प्रेम मगन मन सारीजी ॥
कहं लगि सबको प्रेम बखानू एक दशा सब ग्वारीजी ॥
तिनमें श्री वृषभानु दुलारी सकल शिरोमणि प्यारीजी ॥ २ ॥
दोहा–कहूँ कथा तिनकी अबै, रहि हरिसोंमन लाइ ॥
दधि भाजन माथे धरे, लेहु श्याम कहिजाइ ॥
चौबोला–लेहुश्यामकहिजाइ बुझतिकोउतिन्हैंऔरसखिआईजी

वेचत कहा फिरत तू ग्वारी सो हमें देहु बताईजी ॥
प्रातहिते लीने दधि डोले मुखते कहत कन्हाईजी ॥
कहा कहत यह हमें बतावो दे निज बात सुनाईजी ॥ १ ॥
उफनततक्र चुवत अँगमाई ताकी सुधि तोहिं नाईजी ॥
इतते उत उतते इतआई बुधि मर्याद मिटाईजी ॥
मैं जानी यह बात मनहिंमें तो मन हरचो कन्हाईजी ॥
तिन्हें कहति मोहिं भवन नंदको कहां सो देहु बताईजी ॥ २ ॥

दोहा–कहां बसत वहु साँवरो, मोहन नंदकुमार ॥
कहूं अंत ब्रजही रहत, कि याही गांव मझार ॥

चौबोला–याही गांव मझार खोजति मैं जाको नामकन्हाईजी ॥
मोहिं देहु नँद सदन बताई बहुत दूरते आईजी ॥
नंदहिके द्वारेपर ठाढी बूझति भ्रमता छाईजी ॥
मन बँध गयो प्रेमकी फांसी कुलकी कानि मिटाईजी ॥ १ ॥
हरिकी प्यारीकी अति प्यारी एक सखी तहँ आईजी ॥
प्यारीको निज ढिग बैठारी कहति वचन समुझाईजी ॥
अहो राधिका कुँवरि सयानी क्यों ऐसी बउराईजी ॥
ऐसे प्रगट प्रेम नहिं कीजै धीरज धरम नमाईजी ॥ २ ॥

दोहा–हँसिहैं लखि ब्रजलोग सब, दई डारितैं लाज ॥
मात पिता गुरुजनतजे, भ्रमत फिराति किहि काज ॥

चौ०-भ्रमत फिराति किहि काज तोहि पायो धन प्रेम कन्हाईजी॥
रखिये गुप्त न प्रगट जनाई समुझ देखि मनमाईजी ॥
ऐसी तोय बूझिये नाई कहति तोय समुझाईजी ॥
अजहूं चेति कहति मैं ताही बात तेरे हित चाईजी ॥ १ ॥
कृष्ण प्रेम धन तुम यह पायो प्रगट न कीजै प्यारीजी ॥
ज्यों फणि मणि दुबकात गोप त्यों राखिय उरमें धारीजी ॥

पायो नागर नेह लाड़िली तू पति नागरि नारीजी ॥
तोकत देति उघारि सबै अब कहिहैं तोहिं गँवारीजी ॥ २ ॥
दोहा–जोमैं तोते कहतहों, तू सुनिहै कैनाहिं ॥
देहै ज्वाब कछू मोहीं, कै कछु कहिहै नाहिं ॥
चौबोला–कैकछु कैहै नाहिं वचन मुख मौनगहे रहजाईजी ॥
घर अपने जैहै कि नजैहै कहा बसी मन आईजी ॥
ब्रजमें प्रगटीहै यह बाता लोगन मुख सुन पाईजी ॥
मानेंगी मम वचन कि नाई कै फिरिहै ब्रज माईजी ॥ १ ॥
जो ये प्रीति श्याम सों जोरी लाज किये नहिं जाईजी ॥
ध्यान श्यामको धर उर माई फिरति कहा भरमाईजी ॥
मुखतौ खोलि सुनहु मम वानी कछु तुम कहौ सुनाईजी ॥
कहा कहत मोसोंरी आली मोमन लियो कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जबते कछु न सुहावही, जित देखों तित श्याम ॥
अबलों नहिं जानति कछू, कहा कहति मोहिंबाम ॥
चौबोला-कहा कहति मोहिं बाम कहाँ गृह कौन पिता को माईजी
कहा दुर्जन को गुरुजन भ्राता सो कछु जानति नाईजी ॥
कहा लाज कहा कानि बड़ाई कहा कहति कित आईजी ॥
वार वार तू कहत कहारी मैं समुझति नहिं काईजी ॥ १ ॥
मन मेरो हरलीनो आली वा नँदके बनवारीजी ॥
रहत न मेरी आन देतहो कियो यत्न मैं भारीजी ॥
दोष बतावत मेरो तू यह कही न बात विचारीजी ॥
हाथ नहीं मन मेरो आली को सुने सीख तिहारीजी ॥ २ ॥
दोहा–सब इन्द्रिनको मन धनी, इन्द्री मनको अंग ॥
सो हरलीनो श्यामने, गइ इन्द्री मन संग ॥
चौबोला–गइ इन्द्री मन संग मेरे अब वशमें कोऊ नाईजी ॥

नहिं आवत इतकोय रहत वे हरिके पास सदाईजी ॥
नैन दरशके लोभ लुभाने श्रवण शब्द रस माईजी ॥
अब ये फिरत न मेरे फेरे थकी मैं सबन मनाईजी ॥ १ ॥
कौन करै घूंघट पट छाई मेरे कर वश नाईजी ॥
अब तो प्रगट भई जगजानी मोहन हाथ विकाईजी ॥
जग उपहास करो बहुतेरो अबतो मन यह आईजी ॥
कै लघुता कै होउ बडाई वसे उर श्याम कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—मेरो मन हरिसों मिल्यो, तज्यो सकल निजकाज ॥
नाच कछो तब सुन सखी, कहा घूंघट पटलाज ॥

चौबोला-कहा घूंघट पटलाज मेरे मन अब तो ऐसी आईजी ॥
मिलिहौं हरिसों ज्यों पयपानी यह मेरे मन भाईजी ॥
मेरो मन हरि संग बस्यो अब लोक लाज विसराईजी ॥
भो जहाजको काग ठोर कहुँ और न दीसत ताईजी ॥ १ ॥
मौन गही पुनि नागरि तबहीं ऐसे सखिय सुनाईजी ॥
मगन भई रस श्याम सुन्दरके देह दशा विसराईजी ॥
जाय परचो मन वाई ख्यालहि बोलति लेहु कन्हाईजी ॥
कहति सखी सों कहां श्याम सो मोहिं बतावहु वाईजी ॥ २ ॥

दोहा—वेग मिलावहु साँवरो, देवहु मोहिं बताइ ॥
विरह विकल बाला अती, मन हर लियो कन्हाइ ॥

चौबो०—मन हर लियो कन्हाइ शीशपर दधि मटुकी धरल्याईजी
द्वारे आय नन्दके डोले टेराति लेहु कन्हाईजी ॥
इत उत जात तहीं फिर आवै लेहु श्याम दधि आईजी ॥
चली बनहिं खोजत बनवारी विवस भई भ्रम पाईजी ॥ १ ॥
तन मन हरिके अर्पण कीनों फिरत विकल बन प्यारीजी ॥
कीनों दीपक प्रेम प्रकाशा लाज तिमर सब टारीजी ॥

रोम रोम में रमे कन्हाई तनु[1]की दशा[2] विसारीजी ॥
प्रेम अवधि ब्रजगोप कुमारी गावत वेद पुकारीजी ॥ २ ॥
दोहा–कृष्ण राधिकाके चरित, अति पवित्र रसखान ॥
कहत सुनत भव[2] भय हरण, रसिक जननके प्रान ॥
चौबोला–रसिक जननके प्रान हरीसो रसिक शिरोमणिराईजी॥
रसलीला जो ब्रजमें कीनी कहों सो अब सुखदाईजी ॥
देखि दशा राधाकी ग्वाली शिक्षादेन जो आईजी ॥
चकित रही मनमाँझ विचारी श्याम ठगोरी लाईजी ॥ १ ॥
गई सखी सो हरिपैधाई कहति सुनो सुखदाईजी ॥
ढूंढत फिरत तुम्हें इक नारी रूपवंत अधिकाईजी ॥
पहिरे नीलांबर अति सोहै मुखछवि वरनि नजाईजी ॥
प्रातहिते लीने दधि डोलै कहति न लेहु कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–भ्रमत २ व्याकुल भई, वंसीवट तन जाइ ॥
मन वच क्रम वाको लग्यो, तुम में प्राणकन्हाइ ॥
चौबोला–तुम में प्राण कन्हाइ कबहुँ हरि ताहिमिलोसुखदाईजी
तुम विन विरह विकल अतिबाला मिलहूवेग[3] कन्हाईजी ॥
सुनत श्याम मन हरष बढायो साँची प्रीति लखाईजी ॥
हरि हँसि विदा सखीको कीनी आप दरश दियो जाईजी॥ १ ॥
मिले प्रेम हर्षित दोऊ तब राधा कुँवर कन्हाईजी॥
जनु तनु धर शृंगार विराजत कुंज सदन छवि छाईजी ॥
श्यामा अरु घनश्याम निरख छवि कोटि काम वलिजाईजी ॥
विहारन जन उर वसो कृपा करि युगल किसोर सदाईजी ॥२॥
दोहा–सोहत कुंज कुटी हरी, जिमि दामिनि[4] घनश्याम ॥
विरह ताप तनुको गयो, बोली हरिसों वाम ॥

१ देह। २ संसार। ३ शीघ्र। ४ बिजली।

चौबोला-बोली हरिसों बाम कहा कहों तुमसों कुँवर कन्हाईजी ॥
कही कछू नाहिं जात कहत मैं लजत मनहिंके माईजी ॥
होत चवाव सकल ब्रज माई सुनत सही नहिं जाईजी ॥
जादिन तुम गैया दुहिदीनी तब मैं हाहा खाईजी ॥ १ ॥
सहज गही बहियां तुम मेरी मैं हँसि सहज सुभावैजी ॥
करत चवाव सकल ब्रज वनिता गृह मारग जहां जावैजी ॥
राधा कृष्ण एकहैं दोऊ सबकोउ यहै सुनावैजी ॥
यह सुनि घर गुरुजन दुखपावै तब मोहिं त्रास दिखावैजी ॥२॥
दोहा-निकसत द्वारे जबहि तुम, तब सब रहत लुभाय ॥
मोहिं देखि निंदाति तुम्हें, सो मोहिं सही नजाय ॥
चौबोला-सोमोहिं सही न जाय धृक जन जिनको तुम प्रिय नाईजी
हितकर तुमको जानत नाहीं कहा भयो नेमनिभाईजी ॥
मैं लीनो दृढ़ नेम तिहारो सुनहु श्याम सुखदाईजी ॥
यहै पतिव्रत पारिहों मोहन तुम पद प्रीति सदाईजी ॥ १ ॥
वचन सुने नाहिं जात कन्हाई तुम बिन कासों कैयेजी ॥
ताते विनय करत मनमोहन वा पैंडे जिनऐयेजी ॥
जो आवो तो मोहिं न जनावो मुरली ध्वनि न सुनैयेजी ॥
मुरली ध्वनि सुनि सुनहु कन्हाई मोते रह्यो न जैयेजी ॥ २ ॥
दोहा-प्रेमाकुल सुनि प्रिय वचन, हँसि बोले बनवारि ॥
तुम मोते न्यारी नहीं, सांच कहत ब्रजनारि ॥
चौबोला-सांच कहत ब्रजनारि कहो किन वे नहिं जानत काईजी
बात नहीं पहिंचानत अपनी उन सब सुरत भुलाईजी ॥
प्रकृती पुरुष उभय लीला हित हम यह देह बनाईजी ॥
भेद न घट पानी तुम हमते नेकहु न्यारीनाईजी ॥ १ ॥
जल थल जहां तहां तनु धारों तजत तुम्हें नहिं न्यारीजी ॥

तुम तजि रहत नहीं कहुँ न्यारो सुनहू भानदुलारीजी ॥
देह धरेको यही विचारा रखिये कुल व्यवहारीजी ॥
मात पिता गुरुजन डर कीजै लोकलाज रहौ धारीजी ॥ २ ॥

दोहा–प्रीति पुरातन जानि उर, जाहु प्रिया अब धाम ॥
प्रगट न कीजे बात यह, कहत बिहँसिकै श्याम ॥

चौ०-कहत बिहँसिकै श्याम मगन भई सुनत श्यामकी बानीजी॥
भयो हियेमें चैन जियेमें प्रीति पुरातन जानीजी ॥
तब जान्यो हरि पति मैं नारी अति आनँद मन मानीजी ॥
हरिकी महिमा जानि कहति मन पूरब बात भुलानीजी ॥ १ ॥
युग युग प्रभु लीला विस्तारी जानलई मन माईजी ॥
हरि तन चितै अल्प मुसकाई आनँद उर न समाईजी ॥
कहति सुनहु प्रिय अंतर्यामी हो तुम जगके साईंजी ॥
मात पिता गुरु जन हितु भाई कहा इन नाथ सिराईजी ॥ २॥

दोहा–जो करता औरै सुनो, तो पतियाऊं ताय ॥
अरु ये प्रीतहि जगतकी, सोमोमन नहिं भाय ॥

चौबोला–सो मो मन नहिं भाय कैसे हरि औरन सों मन लाईजी॥
जो जाको सो ताको जाने और न मोहिं सुहाईजी ॥
यह सुनि हरिप्यारी उर लाई बहु विधि कर समुझाईजी ॥
तनु धरि लोक वेद विधि कीजै प्रीति करो मनचाईजी ॥ १ ॥
कहत श्याम प्यारी घर जावो तुमको भई अवारीजी ॥
प्रीति पुरातन राखि हृदय तुम करिये जग व्यवहारीजी ॥
परम प्रेम उर लाय लाडिली घर पठई हरि प्यारीजी ॥
फिर फिर चितवत जात श्याम तन चली घरहि सुकुमारीजी२

दोहा–चली किशोरी लूट सुख, गजगति चलन सुहाय ॥
रहे रीझ हरि निरखि छबि, प्यारी तन मनलाय ॥

चौबोला—प्यारी तन मन लाय रहे हरिं प्यारी मनहिं सिहावैजी॥
सुख भर चली लूट सी पाई कहति मनहिं कछु जावैजी॥
प्रगट न करों सखिनसों यह धन यह विचार ठहरावैजी॥
कृष्ण प्रेम धन गुप्त दुराऊं यों मन माहिं उपावैजी॥ १॥
श्याम कह्यो सोई चित धरिहौं प्रीति न प्रगट जनाईजी॥
ऐसे मनहिं विचारत जावै तहां सखी इक आईजी॥
अंग अंग छवि लखि मुसकाई प्यारी कहत सुनाईजी॥
कहा फूलीसी आवति राधा आज रूप अधिकाईजी॥ २॥

दोहा—कहति कछू तुम मनहिं मन, भौंह मरोरति आइ॥
सफल मनोरथ तैं कियो, हरिके सँग बनजाइ॥

चौबोला—हरिके सँग बनजाइ किये अंग रंगभीने दरशाईजी॥
हमसों सो सब बात उघारो दुरत न गंध चुराईजी॥
फिरत हुती व्याकुल तू अबहीं हरि दरशन कहां पाईजी॥
धनि धनि तेरो भागरी आली कहां मिले सुखदाईजी॥ १॥
योगी जन जप तप करि ध्यावैं नहिं पावतहैं जाईजी॥
तैं कैसे करि लाडिलि प्यारी वशकरि पायोताईजी॥
कहा कहति सखि भई बावरी यह कहा बात सुनाईजी॥
तू हँसि कहति सुने जो कोई ताको सांच लखाईजी॥ २॥

दोहा—चकित होत अचरज सुनत, कहा कहति तू मोय॥
गुरुजनमें कैसे निभैं, तैं जो कही सो होय॥

चौबोला—तैं जो कही सोहोय कबहुँ कछु तुमते बात दुराईजी॥
मैं दुराव करिहौं सखि तोते यह तेरे मनभाईजी॥
को नँदनन्द कहत तू जाको मैं नहिं देख्यो ताईजी॥
कै गोरो कै वरण साँवरो रहत कहा ब्रज माईजी॥ १॥

---

१ सकुच। २ छिपा। ३ दुःखित।

जाहु चली जानति मैं तोको कहा भुरावत आईजी ॥
अबहीं फिरत हुती बौराई आजहिं पढ़ि चतुराईजी ॥
याही ब्रज हम तुम अरु वोऊ जानत दूर कहाईजी ॥
परिहो कबहूं फंद हमारे करिहैं जुहार बनाईजी ॥ २ ॥

दोहा—निपुण भई उनके मिले, वह सुधि गई भुलाय ॥
आवतहै बन कुंजते, बातें कहत बनाय ॥

चौबोला—बातें कहत बनाय रीझे हरि दीसत अंग पुलकानीजी॥
सगबगीसी ह्वै रही कहा है मोसों करत सयानीजी ॥
हँसत कहति कैधौं सतबानी यह कछु मैं नहिं जानीजी ॥
तोहिं सोंह मेरी जो दुरावै बहुरि कहौ सोइ बानीजी ॥ १ ॥
तैं देख्यो कै किनहुँ सुनाई भाव कछू लखपाईजी ॥
ऐसी कहति और जो कोऊ सुनती उत्तर आईजी ॥
बूझति मोहिं लगावत ताईं सपनहुँ देख्यों नाईंजी ॥
ऐसी मोहिं कहो जिन कोऊ झूंठी सहिय न जाईंजी ॥ २ ॥

दोहा—बहुरि न तोसों बोलहों, उचटावति मन आय ॥
तोते औ मोहिंकौन प्रिय, कैहों हितकी ताय ॥

चौबोला—कैहों हितकी ताय तोय यह मन परतीत नआईजी ॥
मैं राखति तोते कछु गोई कबहूं बात दुराईजी ॥
चतुर सखी मनमें यह जानी मोते नाहिं छिपाईजी ॥
त्रास भई याके मनमाई ताते कहति यह नाईजी ॥ १ ॥
तब यह कही हँसाति मैं तोसों तू कत मन दुख पाईजी ॥
मानी तेरी बात हमहुँ अब कहां वे कुँवर कन्हाईजी ॥
बसत कौनधों गाम मँझारी हमहूं जानति नाईंजी ॥
भई सयानी आज लाड़िली हम आगेकी जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—तैं नहिं हरि कबहूं लखे, हँसत कह्यो घर जाय ॥

सकुच सहित तब लाडिली, गई घरहि समुहाय ॥
चौ०-गई घरहि समुहाय जननि तब कहति कहां हति प्यारीजी ॥
डोलति फिरति कहां तू जाई अजहुँ कहा तू बारीजी ॥
घर तोहिं तनक देखियत नाहीं फिरतह बनहिं मँझारीजी ॥
आज तोहिं धिरवतहों प्यारी श्याम संग जिन जारीजी ॥ १ ॥
सूधे मारग जात नहीं किन क्यों उपहास करावैजी ॥
वृथा करत मैया रिस मोसों को यह बात चलावैजी ॥
ऐसीको जो गढी विधाता श्याम संग सो जावैजी ॥
कौने बात कही यह तोसों मुहिं किन नाम बतावैजी ॥ २ ॥
दोहा-धन्य भ्रात धनि मात पित, ऐसी बात लगाय ॥
मैं बरजति मानत नहीं, तू परघर किम जाय ॥
चौ०-तू परघर किम जाय श्याम अरु श्यामा सब ब्रजमाईजी ॥
ह्वैरहे लाज लगत तोहिं नाहीं कहा बसी मन आईजी ॥
बड़े महरकी सुता कहावति क्यों पितु मात लजाईजी ॥
कहा कहतरी माय मोहिं अब खेलन जैहों नाईजी ॥ १ ॥
यहै अनोखी बातरि माता मोपै सहिय न जाईजी ॥
सब गोपनकी सकल लरिकनी घर घर खेलत नाईजी ॥
तिनके मात पिता कहा नाई तू मोपर रिसहाईजी ॥
अबहींतो मेरीहै बारी कहति मात मनभाईजी ॥ २ ॥
दाहो-कहाभयो तनु बढि गयो, गई नहीं लरकाइ ॥
कहतहैं श्यामा श्याम सब, झूँठहि बात उड़ाइ ॥
चौबोला-झूँठहि बात उड़ाइ खेलतही देखि कहत बिन जानीजी॥
अबहींतो बालकहैं दोऊ यों कीरति मन आनीजी ॥
सुनत सुता मुख रिसकी बानी मनहीं मन मुसकानीजी ॥
परबोधति उरसों रिस टारी लावति उर हित मानीजी ॥ १ ॥

खेलनको मैं बरजति नाईं खेलहु गाम मझारीजी ॥
श्याम संग सुनि होत दुखारी लोग लगावत गारीजी ॥
जाते कुलको दूषण होई सो नाहिं कीजै प्यारीजी ॥
अब राधा तू भई सयानी दूर कहूं जिन जारीजी ॥ २ ॥

दोहा–जननीके मुख वचन सुनि, श्रीवृषभानु कुमारि ॥
मनहीं विनवत श्यामको, सुनहू कृष्ण मुरारि ॥

चौबोला–सुनहू कृष्ण मुरारि मात पितु मानत यह मन माईजी॥
जगत् ईश भगवान आपको ये कोउ जानत नाईजी ॥
लेत तुम्हारो नाम तबहिं मैं रहत मनहिं सकुचाईजी ॥
तुम विमुखन में क्यों रैहौं अब यहै समुझि पछिताईजी ॥१॥
क्यों विषखाय सुधा जिन चाख्यो को कुलकानि रखाईजी ॥
जिन्हैं नाथ तुम पद दृढ प्रेमा सो किमि नेम निभाईजी ॥
अहो श्याम मैं मन क्रम बानी तुमरे हाथ विकाईजी ॥
ऐसे कृष्ण हृदयमें आनी जननिय कहत सुनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कहा कहतरी मोहिं अब, अकथ बात यह माय ॥
अब हरि संग न खेलि हों, जा कारण रिसहाय ॥

चौबोला–जा कारण रिसहाइ अरी अब हरि संग जैहों नाईजी ॥
आवन दे बाबाघर माई कैहौं यह उन पाईजी ॥
देति गारि मोहिं श्याम लगाई ऐसे भये कन्हाईजी ॥
काल्ह सखिन सँग जात चली मैं मिले गलीके माईजी ॥ १ ॥
लागे कहन बँसुरिया मेरी तू लेगई चुराईजी ॥
छाठि आठे मोसों है जिनसों मोहिं लगावति ताईजी ॥
सुनि सुनि कर राधाकी बानी जननी मन मुसकाईजी ॥
कहाति मनहिं मन यह अबहींलों लरिकाई गई नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बारेहीके ढँग सबै, अपनी टेक चलाइ ॥

काप जाय मनाइ पुनि, अब जैहै मचलाइ ॥
चौबोला–अब जैहै मचलाइ जानि जिय हारि मान रहिमाईजी
बोलि लई हँसिकै दुलराई कहि मेरी रिसहाईजी ॥
रही चकित सोभालखिचितसों हित करि कंठ लगाईजी ॥
परमचतुर वृषभानु दुलारी या विधि करि चतुराईजी ॥ १ ॥
राखि लई चतुराइ मातको बातनहीं भरमाईजी ॥
कृष्ण प्रेम धन पाय छिपायो सखियन ते न जनाईजी ॥
जैसे कृपण महाधन पावे राखत गुप्त दुराईजी ॥
सखी मिली जो मारगमें जिन कह्यो सखिनसों जाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनहु सखी राधा चरित, करी आज उनघात ॥
वृन्दावन ते आवती, अति मनमें हरषात ॥
चौबोला–अति मनमें हरषात औरही भाव अंग छबि छाईजी ॥
श्यामहिं मिली भई मन भाई सो उन बात दुराईजी ॥
मोको देखतही हँसि दीनी मैंहूं तब मुसकाईजी ॥
जब मैं कही मिले हरि तोसों तब मोपर रिसहाईजी ॥ १ ॥
मोसों कहन लगी तब प्यारी नाम कौनको श्यामैजी ॥
है गोरो कै वरण साँवरो वसत कौनसे ग्रामैजी ॥
मैं तो जानति नाहिं सखी तू लेत कौनको नामैजी ॥
लखे नहीं कबहूं सपनेमें हँसी करत कहा वामैजी ॥ २ ॥
दोहा–ऐसे टेढी भौंह करि, चितई नैन चढ़ाइ ॥
और कहो तो लरतिरी, वह डरपति नाहिं काइ ॥
चौबो०-वह डरपति नाहिं काइ तबहि मैं यह कहि घरहि पठाईजी
मैं झूंठी तू सांचि भईरी जिन प्यारी रिसहाईजी ॥
दोऊ एक भये अब जाई हम ते बात दुराईजी ॥
घर धौं जाय कहा अब कैहै तहँ कहा बुद्धि उपाईजी ॥ १ ॥

सुनकै बात सखी मुसकाई देखनको अतुराईजी ॥
कहति सबै जबहीं हम जैहैं देहैं प्रगट¹ जनाईजी ॥
दूध दूध पानी सों पानी रहत न बात छिपाईजी ॥
कैसे हमसों बात छिपैहै देखतही लज जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–अपनो भेद न कहैगी, सुनिहो तहँ सब बाम ॥
चलहु लखहु² वाके चरित, राधा जाको नाम ॥

चौबोला–राधा जाको नाम मैं बूझी करिकै बहु चतुराईजी ॥
नेकहु थाह न वाकी पाई उन नहिं बात जनाईजी ॥
बड़े गुरूकी बुद्धि पढ़ी उन वह काऊ न पत्याईजी ॥
एको बात न मनिहै कबहूं सो सो सोगँद खाईजी ॥ १ ॥
सुनत वचन वाके बदनहि ते रहिहो सब पछिताईजी ॥
बातन वैर बढाय हो आली अब जैहैं रिसहाईजी ॥
कहा वैर हमसों वह करिहै देहैं सांच सुनाईजी ॥
औरन सों जो करति नटाई तो जानति चतुराईजी ॥ २ ॥

दोहा–जानी वाकी बात सब, हम ते रही चुराइ ॥
परिहै हमरे फंद जब, दूर करैं लँगराइ ॥

चौबोला–दूर करैं लँगराइ आज वह हमते भेद न कैहैजी ॥
तो पुनि कैसेकै निभहैगी वैर किये कहा पैहैजी ॥
है निधरक कैधौं डर वाको घरहि देखि चलि ऐहैजी ॥
बूझे बात कहाधौं कैहै मिलिहै कै दुर जैहैजी ॥ १ ॥
रिस करिहै कैधों हँसि बोलै कहै कि बात दुराईजी ॥
यह कहि चली सकल मिल आली सहज किधौं गरबाईजी ॥
गईनिकट³ राधाके जबहीं प्यारी आत लखाईजी ॥
ये सब मोपर रिस करआई तब इक बुद्धि उपाईजी ॥ २ ॥

१ जाहिर । २ देखहु । ३ पास ।

दोहा—काऊको कीनो नहीं, आदर करि चतुराइ॥
मौन गही बोलत नहीं, बैठरही निठुराइ॥
चौबोला—बैठ रही निठुराइ सखी तब बैठी सब ढिंग जाईजी॥
कहन लगीं तब सब आपुसमें औराहि बात चलाईजी॥
राधा चतुर चतुर सब आली चतुर चतुर मिलि आईजी॥
उनतो गही मौन निठुराई इन लखिलई चतुराईजी॥ १॥
मूंहां चूहीं करन लगीं तब सब मिल आपुस माईजी॥
कहा आज इन मौन लयोरी बूझहु तुम कोउ याईजी॥
अहो मौन व्रत किन सिखरायो बूझति सखि मुसकाईजी॥
धनि वह गुरू मंत्र जिनदीनों जिन यह बुद्धि सिखाईजी॥ २॥
दोहा—कालिह और परभातही, भई और तत्काल॥
सुनि धाई हम सकल मिल, चकित भईलखिहाल॥
चौबोला—चकित भई लखि हाल मौनको कहा फलदेहुबताईजी
मंत्र लियो तब हम न बुलाई हम सँग भइतरुणाईजी॥
अब तुमहींको करैं गुरू हम द्यो उपदेश सुनाईजी॥
करैं तुम्हें आदेश सकल मिल हमहूं मौन रखाईजी॥ १॥
भई चतुर राधा तू प्यारी हमको करी अयानीजी॥
लगी करन ऐसी विधि प्यारी अबतो भई तू ज्ञानीजी॥
रहत एक संग हम तू प्यारी आजहि भई बिरानीजी॥
कहा भयो तोहिं किन सिखरायो नईरीत कहा आनीजी॥ २॥
दोहा—और कहैं तासों लरैं, हम कहिहैं हितकेरि॥
सुनतकुमारि सखियन वचन, हँसीकरतये मेरि॥
चौबोला—हँसी करत ये मेरि निठुर ह्वै बोली सब तन हेरीजी॥
तुम प्रीतम के वैरन मेरी कहो सखी तुम येरीजी॥
कही नहीं उन मोहिं भली यह और दशा भइ तेरीजी॥

मैंरहि चकित सुनत ये बानी कह्यो तुम युगलमिलेरीजी ॥ १ ॥
मेरे अंग छबि और बताई तब मैं बहुत दुखाईजी ॥
जिनको मैं सपनें नहिं जानूं तिनको नाम बताईजी ॥
तुमहीं कहो सखी सब मोसों मैं कछु बात दुराईजी ॥
कहां रहत मैं कहां कन्हाई करत चवाव लुगाईजी ॥ २ ॥

दोहा—और कहै तो मोहिं कछु, नहिं व्यापै मनमाहिं ॥
तुमहिं कहो यह बात जो, तो दुख होय किनाहिं ॥

चौबोला—तो दुख होय कि नाहिं जबहिमैं कीनो आदरनाईजी॥
सुनि प्यारीकी बात सखी सब चितै रहीं मुसकाईजी ॥
हमतो कह्यो तुम्हैं कछु नाई कहति एक यो आईजी ॥
ताहीपर होती रिसहाई जिन यह बात चलाईजी ॥ १ ॥
तब ते हमसों नाहिं जनाई हमहूं लरती ताईजी ॥
क्यों सखि प्यारिय दोष लगावे झूंठी बात बनाईजी ॥
सपनेहूं यह जानति नाई तू जो कहति कन्हाईजी ॥
भेदाहि भेद कहत सब बातैं देत सैन मुसकाईजी ॥ २ ॥

दोहा—सबके मनकी जानि तब, प्यारी कह्यो सुनाय ॥
कौन कौनको मुख गहों, कहो जाय जो भाय ॥

चौबोला—कहो जाय जो भाय मनहिंते गढि गढि बात बनावैजी॥
झूंठीको सांची ठहरावै कत हम लाजन आवैजी ॥
विना भीतहीं चित्र बनावै झूंठी सहिय न जावैजी ॥
सुनि सुनि बोल सबनके मुखके मौन रहन मन चावैजी ॥ १ ॥
वृथा झेर करत यह मोसों कहि कहि झूंठी बाताजी ॥
भलो नहीं उपहास सखीरी मैं सकुचत दिन राताजी ॥
भलो और याते सखि कहा है मिले श्यामसुखदाताजी ॥
सुनियत हैं अभिराम नन्दको अति शुभ श्यामलगाताजी ॥२॥

दोहा—जिनको नामहिं लेत यह, कैसे कुँवर कन्हाइ ॥
नयनन भर देखे नहीं, रहत सदा ब्रजमाइ ॥
चौबोला—रहत सदा ब्रजमाइ बात इक तुमसों कहत लजाईजी
इक दिन मोहिं दिखावहु उनको कैसे कुँवर कन्हाईजी ॥
देखोंधौं कैसे हैं तिनको तुम सब मोहिं लगाईजी ॥
सुनि वृषभानुसुताकी बानी सखी सबै मुसकाईजी ॥ १ ॥
सुनि प्यारी तू सीख हमारी कह न देहु कोउकाईजी ॥
तोको झूंठ कहे कहा पैहैं आपन पाप कमाईजी ॥
नेह सुगंधन दुरत दुराई यह नाहिं रहत छिपाईजी ॥
ते काहेको लखे कन्हाई खरकनगाय दुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा--राधाकी बानी सुनी, कहति सखी मुसकाइ ॥
रहत सदा ब्रज गाममें, इन नहिं लखे कन्हाइ ॥
चौबोला—इन नाहिं लखे कन्हाइ हमहिं जो सुनी रही सो नाईजी
ऐसेहि वायु वही ब्रजमाई झूंठहि बात उड़ाईजी ॥
सुनि प्यारी अब तोहिं दिखैहैं सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
जबहीं तोहिं बतैहैं आली तब ए हैं सुखदाईजी ॥ १ ॥
तब तू चीन्ह लीजियो उनको कहति लखे मैंनेहैंजी ॥
हैं कैसे कारे कै गोरे भोरे की अति चतुरेहैंजी ॥
तेरे हित बाँसुरी बजे हैं तोहिं देखि सुख पैहैंजी ॥
नाना भाव करैंगे जबहीं तबहीं तोहिं बतैहैंजी ॥ २ ॥
दोहा—तुमहुँ चतुर वेऊ चतुर, हर्षि कहति सब वाम ॥
चिरजीवहु जोरी सदा, राधा अरु घनश्याम ॥
चौबोला—राधा अरु घनश्याम फंदमें परिहो कबहूं आईजी ॥
तबहीं देहिं चिन्हाय कन्हाई दूरि करैं लँगराईजी ॥
सुनत व्यंग्य सखियनकी बानी प्यारी मन मुसकाईजी ॥

सखियन ते ऐसे हँसि भाषी राखिलई चतुराईजी ॥ १ ॥
जो तुम जियमें ऐसी जानी तो अब कहा वसाईजी ॥
मेरी बात प्रतीत नमानी सांच तुम्हें नहिं आईजी ॥
जो अब मोहिं श्याम सँग पावो तो कीजो मनभाईजी ॥
कान्हपीतपट वेसर मेरी लीजो तुरत छिनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–यह सुनिकै सब हँसि उठीं, प्यारी वदन निहारि ॥
आईही अति गर्वकरि, चलीं सखी घर हारि ॥

चौबोला–चलीं सखी घर हारि परस्पर आपुसमें बतरावैजी ॥
परिहै कबहूं फंद हमारे तबहीं याय सुनावैजी ॥
तीसहु दिन जो चोर चुरावै साहएक दिन पावैजी ॥
बोली एक सखी तिन माहीं इनको भेद न आवैजी ॥ १ ॥
दूर धरो मनते यह आली बैठ रहो घर जाईजी ॥
अति बरबोल गई कहा कीनो निठुर भई बतराईजी ॥
वहनाहिं फंद तुम्हारे आवै वाके छंदन पाईजी ॥
वह सबहीमें बड़ी सयानी सीख लई चतुराईजी ॥ ॥ २ ॥

दोहा–अपर सखी बोली सुनो, लीक खैंच कहुँ तोय ॥
भेद कियो अब लाड़िली, हमहूँको रिस होय ॥

चौबोला–हमहूँको रिस होय हमें मन तबलगिधीर नहोईजी ॥
जब लगि चोर पकर नहिं पैहैं रहिहैं निशि दिन जोईजी ॥
श्यामा श्याम देखिहैं दोऊ अब सखि हम सब कोईजी ॥
ताही दिन तिनको हम लरिहैं जा दिन मिलिहैं दोईजी ॥१॥
सब ब्रज गोपिनके जुवती है बात यहै मन आनैजी ॥
हरि राधा दोउ रहत मिले अब निशि बासर यह ध्यानैजी ॥
सबहिनके मुख बात जहाँ तहँ और कछू नहिं जानैजी ॥
सुता महर वृषभानुकि राधा नन्दमहरको कान्हैजी ॥ २ ॥

दोहा—करी प्रीति नँदलाल सों, हम जानति सब ताइ ॥
यहै कहति सब गोपिका, हमते बात दुराइ ॥
चौ०-हमते बात दुराइ तबहिं तो सहज स्वभाव लखाईजी ॥
अब हरि संग करी चतुराई सो किमि रहत छिपाईजी ॥
आज मौनधर कियो दुराऊ पुनि किहिं भांति निभाईजी ॥
दिन द्वै चारटार अब तुम कहुँ सोर करो जिन जाईजी ॥ १ ॥
करन देहु इनको लँगराई आप प्रगट ह्वै जाईजी ॥
तब इक सखी कहति यह आई कहा कहत तू माईजी ॥
तुम जु कहत वह जानत नाई हम वाके नख माईजी ॥
सात बरसते प्रीति लगाई आज जान तुम पाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कबधौं पीवत मीन जल, लखि पावत नहिं कोउ ॥
हरिके ढँग सीखे उनहिं, बारहबानी दोउ ॥
चौबोला—बारहबानी दोउ ऐसे सब कहति दुहुँनके हालाजी ॥
और न बात सुहाय बसे मन राधा अरु नँदलालाजी ॥
यह रस जान अनूप विहारन प्रभुको प्रेम विसालाजी ॥
करिके कृष्ण स्वरूप होय रहीं सब तरुणी ब्रजबालाजी ॥ १ ॥
श्रीराधा प्रातहि तहँ आई जहँ सब जुरी अथाईजी ॥
आवति लखि सबरहीं चुपाई देखि बदन सकुचाईजी ॥
करत हुतीं उनहींकी बातें तासे अधिक लजाईजी ॥
अति आदर करिकै बैठारी कह्यो आज कहा आईजी ॥ ॥ २ ॥
दोहा—कहा हमारी सुधिलई, बड़ी कृपा करि आइ ॥
तुम आदर करती अधिक, कहा नई मैं आइ ॥
चौबोला—कहा नई मैं आइ अनोखी आजहि आई न्यारीजी ॥
मैंतो आवत जात सदाई तुम यह कहत कहारीजी ॥

१ छिपाइ। २ अवाकू। ३ सभा।

बैठनको नहिं कहैं कहारी कहा कहति तू प्यारीजी ॥
तू आई करि कृपा हमारे हमहुँ मौन रहेंधारीजी ॥ १ ॥
करी तरक तुम मोसों जानी हँसि बोली यों प्यारीजी ॥
तादिनको बदलो यह लीनों मोसों चोट उतारीजी ॥
यह सुनि हँसीं सकल ब्रजनारी कहन लगीं सुन प्यारीजी ॥
दाँव चोट हम जानत नाहीं तुमहीं जानन हारीजी ॥ २ ॥

दोहा—दाँव घात जानति तुम्हें, हमतो सूध स्वभाव ॥
तोहिं मान आई सदा, मानति तैसेइ भाव ॥

चौबोला—मानति तैसेइ भाव तादिनकी तुम राखी मनलाईजी ॥
मान लई तेरी कही सब हम डारी बिसराईजी ॥
चोर करै चोरीकी बातैं ज्ञानी ज्ञान बताईजी ॥
सुनि यह कुँवरि मनहिं मुसकाई कह्यो सखि सांच सुनाईजी ॥१॥
जैसी जाके मनमें भाई बात करत मुख वाईजी ॥
मैं तो साँच कही तुमसोंरी कैसे कुँवर कन्हाईजी ॥
हरषि सखिन तब उरसोंलाई कहति कहां रिसहाईजी ॥
हँसति कहति तोसोंरी तू अब मनहिं विलग क्यों ल्याईजी ॥२॥

दोहा—तुमहीं हरिको नाम कहि, हम कछु कह्यो सुनाइ ॥
जब हरि सँग मोको लखो, तब कहियो मन भाइ ॥

चौबोला—तब कहियो मन भाइ कैसेहूं चलहु यमुन सब अन्हाईजी
कै मोसों अब फेर लरोगी बूझति मैं तुम पाईजी ॥
यहै बात गठबंधन कीनी भूलहुँ कबहूं नाईजी ॥
चलहु न्हान कबकी मैं आई गहि गहि भुजा उठाईजी ॥ १ ॥
लेसखियन सुकुमार किशोरी न्हान यमुनको जावैजी ॥
चलीं न्हान यमुना सब आली सब मन अति सुखपावैजी ॥
नवनागर शुभ सब मृगनैनी रूप कहत नहिं आवैजी ॥

कृष्ण प्रेमरस एक मती सब आनँद उर न समावैजी ॥ २ ॥

अथ स्नान विधि लीला ॥

दोहा–गईं यमुन सब सुन्दरी, कनक बरन नव अंग ॥
करत परस्पर कौतुहल, हास विलास उमंग ॥

चौबोला–हास विलास उमंग गईं तट यमुना गोप कुमारीजी ॥
सँग सोहत वृषभानु दुलारी सकल शिरोमणि प्यारीजी ॥
बैठीं सलिल न्हान अतुराई देखि श्याम जल भारीजी ॥
विहरति जलविहार सुखकारी श्यामा सह सब नारीजी ॥ १ ॥
कंठ प्रमाण नीरमें ठाढीं सो छबि बरनि न जाईजी ॥
करत विविध विधिहास विलासा एकन एक सुहाईजी ॥
लैलै जल कर माहिं परस्पर डारति सब हरषाईजी ॥
मानो शशि सेना सजि आये लरत जलज जल माईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुनत तहाँ आये हरी, जहँ क्रीडत ब्रजबाल ॥
कोटि काम सोभा हरण, सुंदर श्री नँदलाल ॥

चौबो०–सुन्दर श्रीनँदलाल निरख रहे विहरति सखिमिल संगैजी
कबहुँ मधुर कल वेणु बजावें गावत तान तरंगैजी ॥
काछे नटवर भेष विसाला चित्रत चन्दन अंगैजी ॥
ठाढे वोट कदमकी आई कीने अंगनि भंगैजी ॥ १ ॥
ब्रजतिय मन चातक शुभकारी नव घनश्याम कन्हाईजी ॥
ध्यान काम पूरण सकल मन नख शिख अति सुखदाईजी ॥
पद नख इन्दु प्रभा द्युतिहारी चरण कमल छबि छाईजी ॥
जानु जंघ अति सुभग सुहाई रंभा लखितलजाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कटि कछनी अरु पीतपट, केसर पटतर नाइ ॥
छुद्रावलि छबि छावही, नाभि वरणि नहिं जाइ ॥

चौबोला—नाभि वरणि नहिंजाइ सुभग उर मोतिनमाल सुहाईजी
विच रोमावलि झलक विसाला सो छबि वरणि न जाईजी ॥
मनहुँ गंग बिच यमुना आई मिलि त्रयधार बहाईजी ॥
बाहु दंड दोऊ तट सुन्दर शोभित अति सुखदाईजी ॥ १ ॥
बनमाला तरु तीर सुहाई फूलि रहे सुखदाईजी ॥
कंबु कंठ त्रियरेख सुहावन तीन भुवन छविपाईजी ॥
चिबुक चारु सुभग मनमोहे मुख छबि अति मन भाईजी ॥
अधर दशन छबि वरणि नजाई तडितबिंब छबि छाईजी ॥२॥

दोहा—शुकनासाखंजन नयन, भ्रुकुटि काम कोदंड ॥
मणि कुंडल रवि छबि हरण, सोहत शीश शिखंड ॥

चौबो०-सोहत शीश शिखंड निरख हरि उपमागई लजाईजी ॥
पटतर को पहुँची नाहीं तब जहँ तहँ देत दिखाईजी ॥
भूमि कोऊ वन कोउ जल माई हरि लखि रहीं छिपाईजी ॥
कोटि मदन पुनि पुनि बलिहारै मुकुट किलटकसुहाईजी ॥ १ ॥
कुंडल निरखि भ्रमत रविडोलै तबहुँ नधीरज आवैजी ॥
अलक नासिका कर पदशोभा अलि शुक कमल लजावैजी ॥
लखि सकुचात रहत बन कहही कबि हमें वृथा बतावैजी ॥
दशनदमक दामिनी लजानी क्षण दुर क्षण प्रगटावैजी ॥ २ ॥

दोहा—सधर अधर लखि अरुणता, विद्रुम बिंबलजाय ॥
गगन रह्यो शशि वदन लखि, घटत घटत नितजाय ॥

चौ०-घटत घटत नितजाय कंठशुभ लखिअति मनसकुचाईजी ॥
रहत शंख जल माहिं छिपाई सकत न बाहिर आईजी ॥
बाहु देखि अहि बंबि समाने कटि लखि केहरि धाईजी ॥
जग गति गुलफ निरख सरमावै सकत न आंखि उठाईजी ॥१॥
दीनी पटतर मेटि मुरारी निज इच्छा वपुधारीजी ॥

अनुपम छबिकवि कहै कवन विधि बिन उपमा आधाराजी ॥
ब्रज तिय मोहन मन हरण हरि सुन्दर नन्दकुमाराजी ॥
अधर मनोहर वैन मधुर सुर बाजत सुखद अपाराजी ॥ २ ॥
दोहा–जल विहार करि बाल सब, तब निकसीं जल तीर ॥
जानु जंघ जललोंरहीं, चूवत अचरननीर ॥
चौ०-चूवत अचरन नीर परे तट दृष्टिहि कुँवर कन्हाईजी ॥
ठाढ़े कदम विटपकी छाईं अनुपम छबि दरशाईजी ॥
प्यारी निरखत रूप लुभानी मति गति सब विसराईजी ॥
दरशन हानि सही नहिं जाई लाज सखिनकी आईजी ॥ १ ॥
मनहिं ज्ञान करि यह अनुमानी आज लेहिं सखि जानीजी ॥
जान गई सब अली सयानी जानहिं भई अयानीजी ॥
बहुरो न्हान लगीं सब पानी कर रहिं आना कानीजी ॥
प्यारी कबहूं श्याम निहारे सखिन देखि जिय जानीजी ॥ २ ॥
दोहा–मेरीदिशि चितवत नहीं, न्हात सकल ब्रजबाल ॥
तब मन बात विचार यह, देखि लेहुँ नँदलाल ॥
चौ०–देखि लेहुँ नँदलाल बहुरि कब मिलिहैं नन्द किसोरेजी ॥
ललकि लगीं अँखियां हठि दोऊ चितवत हरिकी ओरेजी ॥
निरखत श्यामा श्याम छबीको होतनहीं मन थोरेजी ॥
नैन बदन सोभित मनु जैसे द्वै शशि चारु चकोरैजी ॥ १ ॥
रूप माधुरी अमिरस सोई पीवत दोउ मन लाईजी ॥
विवस भये अति मन दोउनके तृप्तहोत कोउ नाईजी ॥
यद्यपि सकुच सखिनकी आई तदपि रुकी नाराईजी ॥
उमँग गई सरिताकी नाई श्यामसिंधुके माईजी ॥ २ ॥
दोहा–भरीं सलिल अनुराग उर, लहर उमग उछाह ॥
भ्रमर मनोरथ परतहै, प्रेम सलील अथाह ॥

चौ०-प्रेम सलील अथाह तुरत कुल मर्याद अरार ढहाईजी ॥
लोक सकुच तरु तोर बहाये धीरज नाव न आईजी ॥
रहे थकित पल पथिक डराई इक टक धार लखाईजी ॥
मिली श्याम सोइ सिंधु अपारा सोसखियन लखिपाईजी ॥ १ ॥
कहत सखी सब आपुसमाई दे दे सैन बताईजी ॥
देखोरी प्यारी उन माई इक टक दीठ लगाईजी ॥
कालिह हमें कैसे निदरींहै बात याद सोइ आईजी ॥
देखहु अब देखतहै कैसी वे सब बात भुलाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुन्दर पियको रूप लखि, सुधि बुधि गई भुलाय ॥
इक टक हेरत श्यामतन, कहा बसी मन आय ॥

चौबोला–कहा बसी मन आय गई सुधि देखतही सुखदाईजी ॥
चित्र पूतरीसी ह्वै रहि है देह दशा विसराईजी ॥
नागर नवल किसोर मनोहर उत वे रहेलुभाईजी ॥
प्यारी मुख दृगलाय रहे हरि नैन नहीं मटकाईजी ॥ १ ॥
औरै भाव भई सखि प्यारी बढ्यो प्रेम तरुआईजी ॥
गईतासुजर सप्तपताला पहुँच्यो शिखरहि जाईजी ॥
वचन पत्र अवलोकन शाखा छांह अभिलाषा छाईजी ॥
गुण बुधि सुमन सुगंधि निकाई लगे आनंद सुहाईजी ॥ २ ॥

दोहा–पूरण आसन बनहिं को, फल श्री नन्दकुमार ॥
अरस परस दोऊ निरखि, तन मन धन रहेवार ॥

चौबोला–तन मन धन रहे वार तबहिंइक सखी कह्यो मुसकाईजी
प्यारी देखे कुँवर कन्हाई कहति मैं देखे नाईजी ॥
येही हैं सुन्दर सुखदाई जिनकी होत बडाईजी ॥
हमें कहतही मोहिं दिखावो देखिलेहु ठहराईजी ॥ ॥ १ ॥
बहुत लालसाही मन माई ताहीते हरि आयेजी ॥

पूरी आश दरश तुम पाये हमहीं बोल पठायेजी ॥
राखो चीन्ह इन्हैं अवनीके ये सबके मनभायेजी ॥
भले शकुन आई तुम यमुना भये सो तुम मन चायेजी ॥ २ ॥
दोहा–अब कछु हमको देहुगी, मिले तुम्हें ब्रजराज ॥
सखियनके सुनि वचनवर, तब उपजी कछु लाज ॥
चौबोला–तब उपजी कछु लाज कहतियहबातकछूइनजानीजी
मैं हरि तन लखि रूप लुभानी सोये देखि मुसकानीजी ॥
काल्हि कही इन सों मैं वैसे आजबनी यह आनीजी ॥
इन आगे मोबातनशानी अब करिहैं विन पानीजी ॥ १ ॥
मोही पर मेरी चतुराई परी उलट सकुचाईजी ॥
कहत सखिनसों ज्वाब न आवै तब मन हरिको ध्याईजी ॥
अहो श्याम सुन्दर सुखराशी मैं तुम हाथ बिकाईजी ॥
अब सहाय सुन्दर हरि कीजै लीजै लाज रखाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जाते मेरी पतिरहै, सो मोहिं देहु जनाय ॥
ऐसे हरिको सुमिर मन, तब इक बुद्धि उपाइ ॥
चौबोला–तब इक बुद्धि उपाइ प्यारीके यह आई मनमाईजी ॥
कीनो अति मनमाहिं हुलासा देहौं सखिन जनाईजी ॥
सखिन कह्यो अब घर चल प्यारी कहा अबेर लगाईजी ॥
ऐसे कहि कहि सब पछिताईं कबकी न्हानें आईजी ॥ १ ॥
कियो दरश तुम श्याम सुन्दरको चल राधा घर माईजी ॥
चीन्हे रहो बहुरि तुम मिलियो यह कहि सब मुसकाईजी ॥
चली सदन तब नवल किसोरी अपर सखी समुदाईजी ॥
उरमें धरि ब्रजनाथ नेम मन मुखते बोलति नाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कहो प्यारी कैसे हरी, बूझति सखि इक आय ॥
भाये तेरे मन कछू, हैं सुन्दर कै नाय ॥

चौबोला–हैं सुन्दर कै नाय कहो फिर हमसों बात लुकाईजी ॥
कैमनकी अब बात जनैहो बूझति हम तुम पाईजी ॥
हम बरने जैसेरी प्यारी हैं हरि तैसे कि नाईजी ॥
कहति मनहिं वृषभानु दुलारी ये सब ख्याल न आईजी ॥ १ ॥
बातन बातन करत उघारो सब मनमें यह चावैजी ॥
मोको बातन मांझ भुलावै मोते चतुर कहावैजी ॥
ऐसे इनसों वचन बखानो इनपै ज्वाब न आवैजी ॥
मेरे शिर समरत्थ कन्हाई ये मोको कहा पावैजी ॥ २ ॥

दोहा–प्यारी पियके गर्बमें, अंग अंग सुख पाय ॥
मंद मंद तब हंसगति, चलत ठठक रहजाय ॥

चौबोला–चलत ठठक रहजाय चरण नख छोलति भूमिसुहाईजी
चितवत नहीं नेक कहुँ सूधे काहू तन अनखाईजी ॥
रही गर्व पिय श्याम सुन्दरके गर्बीली गरबाईजी ॥
क्यों प्यारी बोलत नहिं हमसों सखिन कह्यो मुसकाईजी ॥१॥
कियो मौन व्रत आज बहुरि तुम कै हमसों अनखाईजी ॥
कै कछु बात कही नहिं जाई कै मन हरो कन्हाईजी ॥
कबहूं जान पहिंचान न तेरी देख रही दृग लाईजी ॥
सांची बात कहो अब प्यारी परचो सोच कहा आईजी ॥ २ ॥

दोहा–कहा निहारति श्याम तन, इकटक नैन लगाय ॥
सखियनके सुनि वचन बैंर, तब बोली सुखपाय ॥

चौ०-तब बोली सुखपाय कहति कहा सखि तुम मोसों आईजी
मोसों कहति श्याम तुम देखे तुम कहा देखे नाईजी ॥
तुम तो बाहर जाकर देखे मैंतो रही जल माईजी ॥
तुमहीं हरिको रूप बखानो कहो मोहिं समुझाईजी ॥ १ ॥

१ अहंकार। २ नेत्र। ३ बात। ४ श्रेष्ठ।

कैसे वरन भेष हैं कैसे सब अँग देहु बताईजी ॥
तब इक सखी कह्यो मुसकाई ऐसे लखे कन्हाईजी ॥
छंद बंद हम जानति नाईं सांच सबन मन भाईजी ॥
देखे हम नँद नंदन जैसे तैसेहिं देत बताईजी ॥ २ ॥
दोहा—श्याम शुभग तन पीतपट, चटकीलो द्युतिकारि ॥
सोभित घनपर दामिनी, जनु चपलई विसारि ॥
चौबो०-जनु चपलई विसारि मुरलिध्वनि गर्जत घन छबिछाईजी
परमानन्द जलहिं मनु बरसत चितवत हरि मुसकाईजी ॥
विविध सुमन दलकी उर माला इन्द्र धनुष छबि पाईजी ॥
मुक्तावली बीच मनु राजत बाल मराल सुहाईजी ॥ १ ॥
अंग अंग छबि रूप मनोहर खडे कदमकी छाईजी ॥
उपजत है अँखियन अनुरागा देखत कुँवर कन्हाईजी ॥
लोचन सुभग नये छबिछाजे पुतरी श्याम सुहाईजी ॥
मनहुँ युगल अलिभाग निवारे पिवत सुमन रस आईजी ॥ २ ॥
दोहा—रदहीरा अरु अधर बिंब, शुकनासा शुभकारि ॥
भ्रुकुटि धनुष अरु तिलक शर, मदन करत रखवारि ॥
चौबोला-मदन करत रखवारि शीशपर मोर चन्द्रसुखदाईजी ॥
काम शरन मन पक्ष लगाई गडत युवति मन पाईजी ॥
निकसत बहुरि निकासे नाईं उरही रहत समाईजी ॥
वारिजबदन मनोहर बानी बोलत सुधा मिलाईजी ॥ १ ॥
कुंडल झलक कपोल छबी अरु श्रमसीकरके दागाजी ॥
मानहुँ मनसिज मकर मिले दोउ क्रीडत सुधातडागाजी ॥
ऐसे सोभाके उदधि हरि भरे रूप रसरागाजी ॥
सो अवलोकत हरि बदन छबि धनि अँखियनके भागाजी ॥ २ ॥
दोहा—अंग अंग सुन्दर छबी, देखे कुँवर कन्हाइ ॥

कछु छल हम जानत नहीं, लखेसो बरने आइ ॥
चौबोला–लखे सो बरने आइ सांचही झूंठ करै जो कोईजी ॥
यह हम जानति सब मन माई सोवह झूंठो होईजी ॥
हमइतनिनमें नाहिं दुराऊ कहति यथारथ जोईजी ॥
यामाहिं कोऊ झूंठी मानें ताकी जाने सोईजी ॥ १ ॥
हमतो श्याम निहारे ऐसे तुम कैसे लख पाईजी ॥
अपनीसीगति सबकी जानूं यह मोहिं साँच न आईजी ॥
जिनको वार पार कछु नाहीं सो किम परत लखाईजी ॥
धनि धनि तो ये नैन तुम्हारे जो तुम लखे कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–मैं लखि इक अंगहि रही, दृगन नीर भरि आय ॥
कुंडल झलक कपोलछबि, रहीचकित लखिताय ॥
चौबोला–रही चकित लखिताय मूंदरही नैनन कछु लखि पाईजी
पहिंचाने नहिं नेक कन्हाई भरयो नैनजल आईजी ॥
मैं तबते अपने मनमाई यहै रही पछिताईजी ॥
देखनको छबि श्याम सुन्दरकी चहियत नैन निकाईजी ॥ १ ॥
उमँग चलत तापर सलिलही अति छबि अँखिया दोईजी ॥
सखी श्यामके रूप शुभगको कैसे दरशन होईजी ॥
द्वै लोचन तुमरे द्वै मेरे मोहिं लखात न कोईजी ॥
तुम प्रति अंग विलोकन कीनो मैं नीके नहिं जोईजी ॥ २ ॥
दोहा–भोजनको दुख पात कोउ, खटरसकाउ नभाय ॥
जो बोवै सोई लुनै, अपने भाग्य निकाय ॥
चौबोला--अपने भाग्य निकाय जैसेही रंक तनकधन पाईजी ॥
होत निहाल आपने भाये रहत मगन मन माईजी ॥
मोहिं तुम्हें अंतर है भारी धनि तुम लखे कन्हाईजी ॥
तुम हरिकी संगिन ब्रजनारी ताते दरश दियो आईजी ॥ १ ॥

आपहिं निंदति हमें बड़ाई कहा कहति सखि प्यारीजी ॥
आपन भई रंक¹हरि धनको हमें कहति धनवारीजी ॥
हम हरिकी संगनि सब ग्वारी आपन निर्मल² न्यारीजी ॥
धनि धनि धनि वृषभानु दुलारी धृक धृक बुद्धि हमारीजी॥२॥

दोहा–धनि धनि तेरे मात पितु, धन्य भक्ति धनिहेत ॥
तैं पहिचाने श्यामको, हमसब ग्वारि अचेत ॥

चौबोला–हम सब ग्वारि अचेत धन्य तू धनि वृषभानुकिशोरीजी
हर्षि कहत सब गोप कुमारी अचल रहो यह जोरीजी ॥
जैसो तैं हरि रूप बखान्यो है तैसो सुन गोरीजी ॥
देखनको हरि रूप उजेरी आंखिं चाहिये तोरीजी ॥ १ ॥
तैं जु कही लोचन³ भरे सो गये हरि दृगन समाईजी ॥
अति पुनीत स्थल शुभजानी कियो बास तहाँ आईजी ॥
वास कियो हरितो दृगमाई और बात कछु नाईजी ॥
ऐसे श्याम संग ब्रजबाला गावत गुण सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तहाँ श्याम आये पुनी, नटवरभेषवनाय ॥
मुरली अधर सुहावही, कल⁴ ध्वनि मधुर बजाय ॥

चौबो०-कलध्वनि मधुरबजाय करत रही जो मनध्यानकन्हाईजी
सोई अंतर्यामी जानी दिये दरश तहाँ आईजी ॥
भावाधीन सकत रहनाई गये तिरछे मगमाईजी ॥
तरुतमालतर तरुण कन्हाई ठाढे⁵ भये सुखदाईजी ॥ १ ॥
थकित भई सब ब्रजकी बाला देखि रहीं गोपालैजी ॥
रतन जटित पग पाँवरिसोहै नूपुर मंद रसालैजी ॥
चरण कमल दल निकटहिमानो बैठे बाल मराल⁶ैजी ॥
जनु मणि व्योम⁷ प्रकाश कियो है उदित चंदनखलालैजी ॥२॥

१ दरिद्री । २ उज्ज्वल । ३ नेत्र । ४ सुंदर । ५ खडाऊं । ६ हंस । ७ अकास ।

दोहा—विरहताप ब्रजतिय हरण, सुर नर मुनि सुखदाइ ॥
मनहुँ काम शत छबि किये, युवतिनके मन भाइ ॥
चौबोला—युवतिनके मन भाइ जंघ छबि युगल अनूपसुहाईजी
रंभा खंभनहूँ विपरीता अति छबि वरनि नजाईजी ॥
कंचन दंड एक लपटायो एकरहे भूलाईजी ॥
तनुत्रिभंगकी लटक सुहाई लखि युवती सुखपाईजी ॥ १ ॥
ब्रजयुवती हरिपद मनलावै निरखति छबि मनभाईजी ॥
कुलिशांकुशध्वज चिह्न निकाई निरखतिइकटकलाईजी ॥
मनहूँ सुखमाकरत विहारा पंकज अरुण सुहाईजी ॥
कटिकेहरि जिमि परम अनूपम सो छबि कहत न आईजी॥२॥
दोहा—तापर सोहै मेखला, जटित मणिनकी माल ॥
बैठे पंकति जोरि मनु, बालक सहित मराल ॥
चौबोला—बालक सहित मराल मदनको कीधो सदनसुहायोजी
बांधी बन्दनवारि बनाई ब्रजतिय लखि सुखपायोजी ॥
नैनन पलक परन नहिं देही निरख रही टकलायोजी ॥
नाभि गंभीरं सोहत मनु जैसे मदन तडाग बँधायोजी ॥ १ ॥
जनु शृंगारको बाग रोमावलि तटपर परम सुहाईजी ॥
सोभा नाभि गँभीर कि अति छबि ब्रज तिय लखि हरषाईजी ॥
मन नहिं सकत निकासि पऱ्यो दह अतिशय गहरे माईजी ॥
उदर उदार कहत नहिं आवै रोमावलि छबि छाईजी ॥ २ ॥
दोहा—रही अटकि छबि निरखि सब, परख रही मन लाय ॥
कोउ कहति शर कामको, कोउ कह कही न जाय ॥
चौ०—कोउ कह कही न जाय मनहुँ अलि बालक पांति बनाईजी ॥
जुरबैठे सब एकहि भांती सोभित छबि अधिकाईजी ॥
नीरद नील कोऊ कह सूक्षम धूम धार छबि छाईजी ॥

मर्कत गिरि उरते प्रगटाई कहति यह रबिकी जाईजी ॥ १ ॥
जाति नाभि ह्रद अगम अपारा उदर भूमि सोइ धारीजी ॥
दुहुँ दिश फेण स्वाति सुत माला उपजत लहर सुखारीजी ॥
सोभा तर न सकत ब्रजनारी रही विचार विचारीजी ॥
उर मुक्तनकी माल बिराजै कौस्तुभ मणि विचभारीजी ॥ २ ॥
दोहा–शशिहि घेरि बैठे जनुः, निर्मल नभ उडराय ॥
भृगु पदरेखा श्याम उर, मनु शशि मेघ समाय ॥
चौ०-मनु शशि मेघ समाय नाना रंग सुमन माल उर छाईजी॥
प्रफुलित ह्वैजनु छविकी बेली मनु तरु चढी सुहाईजी ॥
कंबु कंठ मणि कंठहि सोहै छवि बरनी नहिं जाईजी ॥
हरि उर भर सोभा निहारि सब ब्रजतिय रही लुभाईजी ॥
वृषभ कंध भुज दंडहिं मानो गजहिं सुंडि लटकारीजी ॥
कर पल्लवन मुद्रिका सोहै बाहु विभूषण धारीजी ॥
जनु शृंगार विटपकी डारी फूल रही छवि भारीजी ॥
हरि मुख निरखत गोप कुमारी डारति तन मन वारीजी ॥ २ ॥
दोहा–कहति परस्पर सुन सखी, देखहु मुख छवि आइ ॥
चिबुक चारु अरु अधर अरुण, पान रेख छविछाइ॥
चौबोला–पानरेख छविछाइ हँसन दुति मंदहिं दशन निकाईजी॥
उपमा कापैजात बताई अति छवि कहत न आईजी ॥
अनुपम छवि चितलेत चुराई सब सखियन मन भाईजी ॥
मानहुँ मुकुर नीलमणि कीने गोलकपोल सुहाईजी ॥ १ ॥
बाजत मुरली करकी फेरन मधुरे सुर सुखदाईजी ॥
चंचल नयन चपल गति हेरन अति छवि बरनि न जाईजी ॥
मणि कुंडल डोलन प्रतिबिंबन मुकुर कपोलन छाईजी ॥
सो छबिकापै जात कही लखि तियबिन मोल विकाईजी ॥२॥

दोहा–सुभग नासिका चपल दृग, कुटिल भ्रुकुटिकी रेख ॥
जनु युग खंजन बीच शुक, उड न सकत धनु देख ॥
चौबो०-उड़ न सकत धनु देख अमित छबि घुंघरारेकच श्यामैजी
कोटि काम सोभा हरण हरि शीश मुकुट अभिरामैजी ॥
दुहुँकर अधर मुरलिका बाजै रूप सुधानिधिकामैजी ॥
मानहुँयुगल कमल पटमाई भरत सुधा शशिधामैंजी ॥ १ ॥
हरि मुख निरखतनैन लुभाने तृप्त न कोऊ होवैजी ॥
श्याम सुभगतनु चित्रत चंदन ब्रजबनिता सब जोवैजी ॥
कनक बरन पट पीत विराजै देखि सखिनमन मोवैजी ॥
निर्मलगगन शरदघन माला तापर दामिनि सोवैजी ॥ २ ॥
दोहा–अंग अंग सुन्दर छबी, निरखति ब्रजकी बाल ॥
मुकुट लटक लखि कोउरही, कोउ लखि चंदन भाल॥
चौ०–कोउ लखि चंदन भाल अलक कोउ निरख रही चित लाईजी
कोउ लखि भ्रुकुटी सुरत बिसारी अति छबि चंचल ताईजी ॥
कोउ लोचन छबि लखि ललचानी कोउ चितवन उर झाईजी ॥
कोऊ कुंडल झलक लुभानी लखिकपोल सुख पाईजी ॥ १ ॥
कोउ नासा कोउ अधर निकाई कोउ रद लाख सुख चीनैजी ॥
कोउ बोलन कोउ मंद हँसनि पर कोउ मुरली ध्वनि लीनैजी ॥
कोउ मुरली पर ग्रीव कोऊ रही लटकन पर आधीनैजी ॥
चारु चिबुक अरु ग्रीव उरहि लखि भइ युवती परवीनैजी ॥ २ ॥
दोहा–थकीं निरखिजहँ सो तहाँ, हरि मुख सोभा सीर ॥
कोउ सुन्दर उरबाहु पर, लख सखिभई अधीर ॥
चौ०-लखि सखि भई अधीर निरख थकि भूषण लाज अपारीजी
कोउ कटि कोउ पट पीत निहारी जंघ गुल्फ बलिहारीजी ॥
युगल कमल पद नखकी छबिपर बिहारन तन मन वारीजी ॥

हरिप्रति अंग निरख ब्रजनारी तनुकी सुरत बिसारीजी ॥ १ ॥
शशि मुख लखि जनु कुमुदनि फूली अति आनँद रह्यो छाईजी ॥
किधौं चकोर रहे टक लाई पीवत शीतलताईजी ॥
कैरवि कुंडल छबिहि निहारी बिकसत कमल निकाईजी ॥
कै चकई गण मन सुखपाई निरखति राति हरषाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कैधौं नव घन तन छबी, भइ चातक सब बाम ॥
कैमुरली ध्वनि सुनि मृगी, लखति युवतियम श्याम ॥

चौ०-लखति युवतियम श्याम हरी छबि अरुझन मन अरुझानीजी
सुरझनसकति युवति बितताानी सब हरि रूप समानीजी ॥
रूपराशि सुखराशि कन्हाई प्रेमराशि सुखदानीजी ॥
छबिसागर सुखकी अवधि हरि गुणमंदिर रसखानीजी ॥ १ ॥
मोहि लियो मन सकल तियनको रसिक नरेश कन्हाइजी ॥
प्यारी २ नामहिं कहि कहि मुरली मधुर बजाइजी ॥
गये सदन आनंद कन्हाई अनुपम छबि दरशाईजी ॥
रहीं ठगीसी गोपकुमारी लेगये चित्त चुराईजी ॥

दोहा–धन्य धन्य राधा कुँवरि, कहति सकल मिलवाम ॥
वड़भागिन तोसीनहीं, तेरेही वश श्याम ॥

चौबोला–तेरेही वश श्याम धन्य तू धनि तोको हरि चावैजी ॥
धनि जोरी धनि प्रीति ललामा धनि तू हरि मनभावैजी ॥
एक प्राण द्वै देह तुम्हारी न्यारे होन न पावैजी ॥
तोको देखि श्याम सुखपावै तेरोई गुण गावैजी ॥ १ ॥
तेरी प्रीतिं साँच हरिं जानी तेरे वश गिरिधारीजी ॥
मन वच क्रम निर्मल तू प्यारी धृक धृक बुद्धि हमारीजी ॥
जैसे घट पूरण नहिं डोलै होत अवधि डुलभारीजी ॥
राख्यो परखि हृदय हरि हीरा परम सुघर तू नारीजी ॥ २ ॥

दोहा—सुनि सुनि वाणी सखिनकी, प्यारी मनअनुराग॥
पुलकि रोम गद्गद हियो, समुझि आपनेभाग॥
चौबोला—समुझि आपने भाग लाडिलीमनमनअतिहरषाईजी॥
प्रीति प्रगट चाहती कियो कछु वचन कह्यो नहिं जाईजी॥
बाहर दुरत प्रकाश नहीं यह हरि उररहे समाईजी॥
सुनहु सखी तुम करत बडाई सुनि सुनिमैं सकुचाईजी॥ १॥
हरिको भले परखि पहिचान्यो कहति मोहिं तुम आईजी॥
कैसे हरि पहिचाने जाई यहै सोच मनमाईजी॥
नैनदिये छबि अगम अगाधा पलकहोत दुखदाईजी॥
क्षणहीं में भर आवत पानी हरि किमि जाने जाईजी॥ २॥
दोहा—बिन पहिचाने कौन विधि, करों श्याम सों प्रीति॥
नहिं वह रूप न भाव वह, क्षण क्षण औरै रीति॥
चौबोला—क्षणक्षण औरै रीति जानलई है हरि अतिसुखदाईजी॥
कहो करो द्वै लोचन तेरी पहिचाने नहिं जाईजी॥
बड़ो कूर विधना यह आली समुझी लखत कन्हाईजी॥
करपद उर ग्रीवा कटि दीनी मुख रद नाक बनाईजी॥ १॥
भाल शिखर नख केश बनाये अधर अरु जीव सुहाईजी॥
रोम रोम प्रति नैन नदीने अंग छबि खूब बनाईजी॥
जो ब्रज दीनों जन्म हमारो देखन कुँवर कन्हाईजी॥
तो कत नैन दिये शठ दोई विधिते निठुर कोउ नाईजी॥२॥
दोहा—विधनामैं पाऊं कहूं, औरै सृष्टि चलाय॥
रोम रोम प्रति नैन करि, पलकपरन नहिंपाय॥
चौबोला—पलक परन नहिं पाय तबहिं कछु होवे मनकीचाईजी
होय मनोरथ पूरण मेरो निरखों कुँवर कन्हाईजी॥

१ स्नेह। २ अथाह। ३ हाथ। ४ दाँत। ५ बाल।

हरि स्वरूप सखि जान न जाई वह छबि नैन समाईजी ॥
मैं पचिहारि रही बहुतेरो नेक न देखन पाईजी ॥ १ ॥
दुरत दुराये कौन विधी सखि अब तुमसों यह बातेजी ॥
देखे बिन नँदनन्द सखीरी धीरज धरत न गातेजी ॥
इन नैननके संग लग्यो यह उड़्यो फिरत दिन रातेजी ॥
आक रुई जिमि बात बशहि सखी क्षण नहिं मन ठहरातेजी ॥
दोहा—जबते हरि मूरति लखी, तबते रहि पछिताय ॥
संग रहौं दरशन करौं, पुनि पुनि यह मनचाय ॥
चौबोला—पुनि पुनि यह मनचाय सखीरी मोमनमें अब आईजी॥
निकट जाय हरि छबिहि निहारौं सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
तब प्रतिबिंब मेरोई आई होत मोहिं दुखदाईजी ॥
मेरे मन हरि मुरति समाई बिन देखे न सुहाईजी ॥ १ ॥
सखी दोषनहिं काहू केरो यह सब श्याम करावैजी ॥
नीके दरशन कबहुँ न देही नइ नइ छबि दरशावैजी ॥
चपलाहू तेचपल घनेरी दशन दमक छबि छावैजी ॥
कबहूँ अंगन मुकुर बनावै कोटि अनंग लजावैजी ॥ २ ॥
दोहा—मगन दरश लखि लाडिली, पुनि पुनि पुलकित गात ॥
तृप्त न मानति देखिछबि, कहति लखे नहिं जात ॥
चौ०—कहति लखे नहिं जात सखिन तब यह निश्चय करि पाईजी ॥
रोम रोम याके रमे हरि सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
कहति धन्य प्यारी बड़भागी तैं जाने सुखदाईजी ॥
तूहै नवल नवल हरिवेऊ भरे रूप गुण माईजी ॥ १ ॥
तू हरिकी अर्धंगिन राधा यह मोहिं परत लखाईजी ॥
मिले तोहिं करि कृपा कन्हाई दीने दुःख मिटाईजी ॥
कहैं बने यह बात नकाची साँची देहु सुनाईजी ॥

छाँडि देहु अब यह चतुराई कहा मिले तोहिं कन्हाईजी ॥२॥

दोहा–खरक मिले कै कुंजबन, कै दधिवेचति जहाँइ ॥
कै जब उरग डसी तबै, कैसे प्रीति लगाइ ॥

चौबोला–कैसे प्रीति लगाइ बात यह सखियन दई सुनाईजी ॥
बोली परम नागरी वानी मैं यह जान न पाईजी ॥
सुनहु सखी मैं सांच वखानों कहाँ मिले कुँवर कन्हाईजी ॥
दधि बेचत कै खरक मँझारी गृह बन मुहिं सुधि नाईजी॥१॥
आजकि काल्ह कहौ कहा आली कियो बास उरमाईजी ॥
नैननते क्षण टरतनहीं हैं नीके लखे नजाईजी ॥
यह अचरजकी बात सखीरी कहा कहों तुम पाईजी ॥
मिलहिं मोहिं जब कुँवर कन्हाई याते कौन भलाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मैं यमुना भरने गई, औंचक देखे श्याम ॥
तबते मनमेरोहरचो, करिकै उरमें धाम ॥

चौबोला–करिकै उरमें धाम मोहिं तन चितै रहे मुसकाईजी ॥
कहा कहों सखि नैन निकाई वह छबि कहत न आईजी ॥
उन मुसकान मोहनी लाई मैं लखि दशा भुलाईजी ॥
सिथिल अंग भये तबहीते मैं उन हाथ विकाईजी ॥ १ ॥
सूधो मारग गई भुलाई ज्योंत्यों करि घर आईजी ॥
तादिनते अँखिया यह मेरी रहीं श्याम सँगजाईजी ॥
बंसी बजीजाय बनमाई वह छबि विसरत नाईजी ॥
वह चितवन कछु जानिन जाई नैन न माहिं समाईजी ॥ २ ॥

दोहा–नहिं जानति हरि कहा कियो, मंद मधुर मुसिकाय ॥
मन समुझति रीझति नयन, मुख कछु कह्यो नजाय॥

चौबो०-मुख कछु कह्यो नजाय कहा कहुँ तबते कछु न सुहाईजी
अवलोकन हरि विधु बदन सखी अमल परचो दृग आईजी ॥

निकसे सखी एक दिन आई हमरे द्वार कन्हाईजी ॥
मैं ठाढीही अजिर अकेली देखि छवी सुख पाईजी ॥ १ ॥
सुभग भ्रुकुटि बिच बंक मरोरै चंचल नैन चलायोजी ॥
फेरत कमल कमल करमाई लखि छबि मदन लजायोजी ॥
मोहित लाग भये तहँ ठाढे कछुक भाव दरशायोजी ॥
पीताम्बर निज शीश फिरायो लेकर भाव लगायोजी ॥ २ ॥
दोहा–मैं मुखते बोली नहीं, गुरुजनको डरमान ॥
आये तेरे प्रेमकर, वैसेहि दीने जान ॥
चौबोला–वैसेहि दीने जान तूतो अति चतुर हतीरी नारीजी ॥
सेवा कछूकरी नहिं प्यारी कहा जिय माहिं विचारीजी ॥
गुप्त भाव तोसों हरि कीनों घर आये बनवारीजी ॥
उन पीताम्बर शीश फिरायो कहा मौन रही धारीजी ॥ १ ॥
तैं कछु उत्तर तिन्हें न दीनों आये घरहि कन्हाईजी ॥
कहा करौं गुरु जनरी आली भये मोहिं दुखदाईजी ॥
सकुचरही तिनकी सकुचानि मैं मुख कछु कहन न पाईजी ॥
इतनो कियो सयान सखीमैं वेदी सों कर लाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सन्मुख करि करि आरसी, हितकर उरसों लाइ ॥
अन्तर्यामी श्याम वे, जान लई चतुराइ ॥
चौबोला–जान लई चतुराइ आपहँसि निजशिर पेचलगाईजी ॥
रहे हस्त हिरदे परधारी चितै रहे मोमाईजी ॥
मोते सखि न कछू बन आई मेरो कहा वसाईजी ॥
नयो नेह उत गुरुजन घेरो रही देखि मन लाईजी ॥ १ ॥
दियो कमल उर आसन हरिको मन आनंद अपारीजी ॥
उमगि कलसकुच प्रगट भरेरी मैं मन लाजति भारीजी ॥
टूट कंचुकी बन्द गयेरी समुझी करनी सारीजी ॥ २ ॥

दोहा-सोमैं मंगल मानि मन, ऐसी मति भइ आइ ॥
अति सुख मानि गये हरी, तबते कछु न सुहाइ ॥
चौबोला-तबते कछु न सुहाइ कहति सखी सुनरी राधा प्यारीजी
सेवा मान लई हरि तेरी जिनकर सोच विचारीजी ॥
नीके कीन्हे भाव सकलतैं तू अति नागरि नारीजी ॥
उन लीन्हें सब भाव जानकै वे अति चतुर मुरारीजी ॥ १ ॥
भावहिको सन्मान चाहिये गुरुजन सबन मझारीजी ॥
गये श्यामहित मान लाडिली अब चाहति कहा प्यारीजी ॥
हम यह बात भलेकर पाई तेरेहि वश गिरिधारीजी ॥
तैं बेंदी उन पेच सँवारे उन तुम तुम उन ज़ुहारीजी ॥ २ ॥
दोहा-मिली आरसी में उन्हें, उन उर धरि करलाय ॥
एक प्राण द्वैदेह तुम, भेद न कोऊ पाय ॥
चौबोला-भेद न कोऊ पाय कहौ किन है मोहन सुखदाईजी ॥
अँखियां रहत दरशकी प्यासी वह मूरति मन भाईजी ॥
कमलनैन कर वेणु सुहाई निकसत जब इत आईजी ॥
ना जानिये सखी तिहिं काला सबतन रहत लुभाईजी ॥ १ ॥
सुरत शब्द प्रतिरोम समाई देखनकी मन माईजी ॥
चितै रहत चित्रत ज्यों नैना समुझत बैनानाईजी ॥
कै दुख सुख कै संभ्रम अपनो सांच कि यह स्वपनाईजी ॥
कहा करौं गुरु जन डर भारी मैं उन हाथ बिकाईजी ॥ २ ॥
दोहा-जबते दीनो श्याम मुहि, द्वारहि दरशन आय ॥
तबतेमन अपनो कियो, अब मुहिं कछु न सुहाय ॥
चौबो०-अब मुहिं कछु न सुहाय भावते आये हरि सुखदाईजी ॥
मैं कछु सेवा कर न सकीरी गुरुजन को डर पाईजी ॥
यहै चूक जिय जानहिं मेरो मन हर लियो कन्हाईजी ॥

पाऊँ फेरि कवन विधि आली अब मैं रहि पछिताईजी ॥ १ ॥
जबते प्रीति श्याम सों कीनी तबते नींद न आईजी ॥
फिरत सदा चित चक्र चढ्योसो रहतसोच हिये माईजी ॥
मिलहिं कवन विधि कुँवर कन्हाई यहै विचार रहाईजी ॥
पशु वेदन ज्यों आपहि सहिये कहिये कासों जाईजी ॥२ ॥
दोहा–तू प्यारी हरि रँगरची, तोते चतुर न कोउ ॥
सांच कहत अबतोहिं हम, भये एक तुम दोउ ॥
चौबोला–भये एक तुम दोउ लाड़िली अब बाकी कछु नाईजी
कहौं बात मैं रेखा खांची यामें फेर न राईजी ॥
तैं उनको मन प्रथम चुरायो तब तोहिं हरि अपनाईजी ॥
नन्दनँदन वर तू पटरानी अबकाहे पछिताईजी ॥ १ ॥
तोसी और कौन बड़भागी तैं हरिको वशकीनैजी ॥
विलसौ श्याम संग सुखमानी पाये फलसोइ दीनैजी ॥
श्याम करी सखि मोहिं बावरी मन कर लियो अधीनैजी ॥
वंसी ज्यों बाजी पलक यह अटके मोहगमीनैजी ॥ २ ॥
दोहा–मन मेरो २ नहीं, अब मोहिं कछु न सुहाय ॥
रूप ठगोरी डारि शिर,मिल्यो श्याम अपनाय ॥
चौबोला–मिल्यो श्याम अपनाय तोहिंमैंबारबारसमुझाईजी ॥
तेरे मन यह बात न आई कही सो तोहिं सुनाईजी ॥
अपनीसी बुधि जानत मेरी मैं इतनी कहा पाईजी ॥
देखतही हरि रूप लुभानी सुधि बुधि सब विसराईजी ॥ १ ॥
गद्गद वचन श्याम रस पागी प्यारी मन सुखमानीजी ॥
मन हर लियो छैल दधिदानी यहै कहति मुख बानीजी ॥
तब इक सखी सखी सों बोली तू कत होत अयानीजी ॥
गुप्त बात इन प्रगट न कीनी पुनि पुनि मन निदरानीजी ॥२॥

दोहा–हमसों प्रगट न करत सो, रहत श्याम सँगमाहिं ॥
ओट किये हम सों रहत, कहत बात मुख नाहिं ॥
चौबोला–कहत बात मुख नाहिं भये वश याहीके सुखदाताजी ॥
वे खोटे उनते यह खोंटी कीनी जोट विधाताजी ॥
कहत सखी तू यह कहारी निपट गँवारी बाताजी ॥
को प्यारी सम और दूसरी ताके वश बल भ्राताजी ॥ १ ॥
यह सब ब्रजमें अधिक शिरोमणि रूप शील गुण धामाजी ॥
धन्य न याते और नजाके दृढ व्रत हरि अभिरामाजी ॥
प्रीति गुप्तही कीहै नीकी कहा जानों तुम बाताजी ॥
क्यों खोटी जो हरिकी प्यारी जाके वश घनश्यामाजी ॥ २ ॥
दोहा–कोटि मदन मोहै हरी, सो याको मुख जोइ ॥
जैसे वे तैसी यह, यामें भेद न कोइ ॥
चौ०-यामें भेद न कोइ सुन्दर यह जोरी अति छबि भारीजी ॥
नागर नवल नवलके नागर श्यामा श्याम मुरारीजी ॥
एक प्राण द्वै तनु इन धारे लीला करन विचारीजी ॥
सोवत जागत जान हमारे येनहिं हरिते न्यारीजी ॥ १ ॥
पूरब नेह नयो यह नाईं समुझ सखी मनमाईजी ॥
इनसों भाव प्रीति करलीजै मेरे मन यह आईजी ॥
बिनाप्रीति ये जाने नजाई प्रीति करो मन लाईजी ॥
ज्योंजन इनसों प्रीति नमाने जगमें जिवत बृथाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सखी वचन सुन सखिनके, भयो हिये अति चैन ॥
धन्य धन्य ताको सबै, कहति सप्रेम सुबैन ॥
चौ०-कहति सप्रेम सुबैन धन्य सखी तू हमते बडिज्ञानीजी ॥
कहति बात कछु औरहि सों यह हम सब निपट अयानीजी ॥
येब्रज आय गुप्त प्रगटाने हम अब ये सब जानीजी ॥

श्यामा श्याम एकहैं एरी यह निश्चयकर मानीजी ॥ १ ॥
ये दोउ एक दूसरी तूरी तेरी प्रीति पुरानीजी ॥
तेरी इनसों प्रीति तबैते प्रीति पुरातन जानीजी ॥
धनि धनि श्याम धन्य तू श्यामा सहज रूप गुण खानीजी ॥
सहज एक दोऊहैं देही श्याम राधिका रानीजी ॥ २ ॥

लावनी।

देखि दोउनकी प्रीति विसाला भईं विवस सब ब्रजबाला ॥
बसे हियेमें दिवस निश भानुसुता अरु नँदलाला ॥
टेक–सोवतते मानहुँ सब जागीं रंगी श्यामके रँग माई ॥
दूर गईं सब दुविधा मनकी बसी प्रीति हिरदे आई ॥
लाज संक मर्यादा लोपी भई युगल रस वश माई ॥
अटके नैना रूप रस वश भईं तनकी सुधि नाईं ॥
और कछू सों मन नहिं लावें रटत युगल रस ब्रजबाला
बसे हियेमें० ॥ १ ॥
नागर नवल श्याम श्यामाके प्रेम मगन सब ब्रजनारी ॥
नैन नासिका श्रवण रसना अंग प्रति दोउन धारी ॥
उठत बैठत चलत सोवत जागत निशि बासर नारी ॥
बिसरत नाहीं एक पलक मनते राधा श्रीगिरिधारी ॥
युगल प्रेम रस सकल लीन भईं गईं सदन निज निज
बाला ॥ बसे हियेमें० ॥ २ ॥
जैसे जल अरु मीन एकहू घरी बिछुर सकती नाईं ॥
बिना निहारे न परत कल रहे श्याम उरमें छाईं ॥
गुरुजन त्रास दिखावत भारी सो न कछू मनमें ल्याईं॥
गृहकारजकी सुरत बिसारी सास ननद मारन धाईं॥

वे कछु कहैं करै कछु औरहि देख रहे गुरुजन हाला ॥
बसे हियेमें० ॥ ३ ॥
कहैं यदपि तुम माता जैसी तैसी तुमको सिखराई ॥
सुधि बुधि अपनी कहाहिराई कहा तुमरे मनमें आई ॥
कहांलगि कोऊ तुम्हें समुझावै वहु विधि तुमको समुझाई ॥
निडर भईहौ यमुनते तबते अब तुम घर आई ॥
विहारन सकल सखिनके मनमें दीखत गुरुजन जंजाला।
बसे हियेमें दिवस निशि भानुसुता अरु नँदलाला ॥ बसे हियेमें० ॥ ४ ॥

दोहा—तुम राधाको सँग करो, यह सब उन्हें सुहाय ॥
बड़े महरकी सुता वह, घर घर यह कहवाय ॥
चौबोला—घर घर यह कहवाय ऐसेही तुमहूं नाम धरावौजी ॥
सब गोपनपै यह कहवावो कहा यामें तुम पावौजी ॥
उनको सब उपहास करति हो तुम हरि सँग किम जावौजी ॥
ऐसे चलो होय नहिं हासी जिन ब्रज लोग हँसावौजी ॥ १ ॥
हम अहीर ब्रजपुरके बासी करत लोक कुलकानीजी ॥
फूंकि फूंकि धरणी पग धरिये लेहु सीख यह मानीजी ॥
सुनत बचन युवती गुरुजनके रही मौन मन आनीजी ॥
हरि राधा उपहास कि महिमा नाहिंन कोऊ जानीजी ॥ २ ॥
दोहा—जैसी मति जाके हिये, करत तैसिते बात ॥
रविको तेज न मानहीं, सुख उलूकही रात॥
चौबो०—सुख उलूकही रात विषहिको कीट विषहि रुचिमानेजी॥
कहा स्वाद रस स्वादहि जाने देख्यो नाहिं कछु तानेजी ॥
ये अहीर इनको प्रिय गोधन और न कछु मन आनेजी ॥

१ अभय। २ पुत्री। ३ हँसी। ४ पृथ्वी। ५ घूघू पक्षी। ६ कीड़ा।

जिनके गुण मुनि गर्ग बखाने ये महिमा कहा जानेजी ॥ १ ॥
धनि धनि राधा कुँवरि सयानी मिली श्याम सों प्यारीजी ॥
श्याम कामके पूरनहारे पुरिहैं आश तिहारीजी ॥
यह रस लीला ब्रज विस्तारी धनि श्यामा बनवारीजी ॥
करत श्याम श्यामा गुणगाना ऐसे गोपकुमारीजी ॥ २ ॥

दोहा—रोम रोम हरिरम रहे, रही सदन निजजाय ॥
नेकहु मन लागत नहीं, हरि बिन क्षण न सुहाय ॥

चौ०—हरि बिनक्षण न सुहाय मनहिं मन गुरुजन परखि जराईजी
इन विमुखनको संग न कीजे यह मन माहिं उपाईजी ॥
कौन भाँति करि इनसों छूटों निरखों कुँवर कन्हाईजी ॥
कैसेहु हरि बिन रहो न जाई बार बार अकुलाईजी ॥ १ ॥
धृक लज्जा धन धाम सबहि धृक मात पिता सुत भाईजी ॥
धृक जीवन है बहुरि दिननको विन श्री कुँवर कन्हाईजी ॥
विहारन प्रभु दरशन विन तिनको पलक कलप समजाईजी ॥
मन हर लियो श्याम प्यारीको सदन न नेक सुहाईजी ॥ २ ॥

अथ बाटके मिलनेकी लीला ॥

दोहा—भानकुँवरि श्रीराधिका, कृष्ण प्रेम रसछाइ ॥
तन घर मन हरि पासही, दुरत न प्रेम दुराइं ॥

चौबोला—दुरत न प्रेम दुराइ यमुन जल आपहि भरन सिधाईजी
दृगन श्याम दरशनकी आशा मनहिं विचारत जाईजी ॥
चितको चोर अबहिं जो पाऊं तो संताप नशाईजी ॥
राखों बाँधि हृदय सों लाई भुजकी दाम बनाईजी ॥ १ ॥
जैसे लियो चोर चित मेरो उनको लेहुँ छिनाईजी ॥
छांडों नाहिं करै जो कोटी यह मन माहिं उपाईजी ॥

इतते प्यारी यमुना जावे उत आवत सुखदाईजी ॥
नील जलजतन सोभित आछे नटवर भेष सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा—दूरहिते जाने हरी, जीवन प्राण मुरारि ॥
रही मनोहर वदन लखि, कोटि काम बलिहारि ॥
चौ०—कोटि काम बलिहारि पुलकतन भइ आनँद मन प्यारीजी॥
बोली गद्गद वचन मुखहिते तनु विह्वल न सँभारीजी ॥
चित चोरे कहां जात कन्हाई मैं तुम्हें ढूंढत हारीजी ॥
कहां सीखे यह बात मुरारी अहो छैल गिरिधारीजी ॥ १ ॥
जानत जैसे माखन चोरी तब बातें कछु ओरीजी ॥
बालकहते कान्ह तब तुमहूं हमहुँ हती जब भोरीजी ॥
मुख पहिचान जान तब देती देखति यशुमति बोरीजी ॥
गोरस काज कानि नहिं तोरी बसे बास इक ठोरीजी ॥ २ ॥
दोहा—अब भये कुशल किसोर हरि, हम सब भइ तरुणाइ॥
बरजोरी अब करत तुम, चोरतहो चितआइ ॥
चौबोला—चोरतहो चितआइ कन्हाई सुनहु श्याम रँगभीनेजी ॥
नख शिख अंग चोर यह तुम्हरो हमरो मन धनछीनेजी ॥
भुजा पकरि ठाढे हरि कीने जात कहां मन लीनेजी ॥
तुमको हम नीके कर चीने बनि हैं अब मन दीनेजी ॥ १ ॥
ब्रज में ढीठ भये तुम डोलत बोलत सूधे नाईजी ॥
जानलई तुम्हरी चतुराई सुनहु श्याम सुखदाईजी ॥
बिना दिये मग जान न पैहो मेरे वशपरे आईजी ॥
प्यारीयों झगरत पिय पाई देह दशा विसराईजी ॥ २ ॥
दोहा—बकसि नागरी चूक यह, कहो मोहिं समुझाय ॥
चूक परी हमते बड़ी, चित ले गये चुराय ॥
चौबोला—चित लेगये चुराय लाडिली देवहु छांड़ि डराईजी ॥

तबयों कहति पीयसों प्यारी सुनहू कुँवर कन्हाईजी ॥
देखे विना तुमहिं दुख पाऊं कहों कौनसों जाईजी ॥
गुप्त रहन मोसों तुम भाष्यो सो आयसुमैं पाईजी ॥ १ ॥
नहिं सुहात तुम बिन दिन राती प्राणनाथ सुखदाईजी ॥
तुमते विमुख जननके माई मोपै रह्यो न जाईजी ॥
मात पिता अति त्रास दिखावें निन्दत मोहिं सुनाईजी ॥
भवन मोहिं माटी सों लागत रहत सोच मन माईजी ॥ २ ॥

लावनी।

निश दिन मेरे यह सोच रहत मन माई ॥
तुम विमुख जननके माहिं रह्यो नाहिं जाई ॥
टेक–दुख कहां लगि कहूं गिनाय सुनहु सुखकारी ॥
मोपर अब कीजै कृपा पात दुख भारी ॥
विनती सुन लीजै नाथ अहो गिरिधारी ॥
निज चरणन ते पल एक करो जिन न्यारी ॥
सब कीजे अब दुख दूर अहो सुखदाई ॥
तुम विमुख जननके माहिं रह्यो नाहिं जाई ॥ १ ॥
यह मनतो तुम सों लग्यो और नाहिं चावे ॥
बिन देखे गिरिधर लाल नकछू सुहावे ॥
नाहिं दीसत जब नँदलाल नहीं सुख पावे ॥
कहांलों राखों कुलकानि कही नाहिं जावे ॥
क्योंजीवे जंबुक त्रास सिंह शरणाई।तुमविमुखजनन०२
सुनि सुनि हरि वचन सिहात कहत सो प्यारी ॥
हरषित उर लई लगाय हर्यो दुख भारी ॥
बोले प्यारीसों अति हरषित बनवारी ॥

१ आज्ञा। २ प्रतिकूल। ३ घर। ४ सियार।

यह लीला सब मैं तुम हितही विस्तारी ॥
कतदुख पावतहो प्रियाकहामनआई।तुमविमुखजन०३
तुम बिहार स्थल वृन्दावन अति सुखदाई ॥
हम तुम सँग तब तहँ मिले सघन बनमाई ॥
दीजो मोको कछु सैन ऐहों सुनिधाई ॥
संकेत दोउन उर माहिं आवत कोउ नाई ॥
अब जाहु गेह प्यारी सों कहत कन्हाई ॥
तुम विमुख जननके माहिं रह्यो नहिं जाई ॥ ४ ॥

दोहा—ब्रज यमुना मग लखत दोउ, प्रेम सकोच बढ़ाइ ॥
बिछुरत बनत न रहतही, चितवत अति चहुँघाइ ॥

चौबोला-चितवत अति चहुँघाइ तबहिं कछु युवती ब्रजत आईजी
कछु यमुनाते ब्रजतन आवत दोउ दिश आत लखाईजी ॥
आवत जानि सखिन दोउ दिशते राधा मनहिं लजाईजी ॥
चले तुरत हँसि कुँवर कन्हाई ग्वालन टेर सुनाईजी ॥ १ ॥
रहे कहां तब ते सब ग्वाला टेर कह्यो दधि दानीजी ॥
गये भाव करि कुँवर कन्हाई लियो नागरी मानीजी ॥
कहिहौं यही सखिनसों बानी यह अपने मन ठानीजी ॥
देखी मोहिं संग इन हरिके अबहिं बूझि हैं जानीजी ॥ २ ॥

दोहा—मन मन सोचाति लाडिली, जानाति इनको रंग ॥
उन युवतिन मोहन लखे, देखे राधा संग ॥

चौबोला—देखे राधासंग कहति सब आपुसमें ब्रजनारीजी ॥
देखहु घात करति सखि प्यारी कहा याने मन धारीजी ॥
बात करति मिलसंग विहारी हमहिं देखि दिये टारीजी ॥
सांची येकहु नाहिं जनै है कहि है बात विचारीजी ॥ १ ॥
इत उतते आ बूझति नारी कहां जात तू प्यारीजी ॥

कहां गये पछितात कहारी अबहिं हते बनवारीजी ॥
कहा दुराव करति तू प्यारी हम लखि लिये मुरारीजी ॥
सांची बात कहो तुम हमसों कहा बूझत गिरिधारीजी ॥ २ ॥
दोहा–चोर हरी मन लेगये, सो पायो तैं प्यारि ॥
अपनो मनले श्यामसों, हमें देखिदियेटारि ॥
चौबोला–हमें देखिदिये टारि सदा तुम करत रहीचतुराईजी ॥
अबतो आय परी फँदमाई अब हमरे वश आईजी ॥
कहत रही जब तब तुम हमसों मोसँग लखो कन्हाईजी ॥
वेसर मेरी छीन लीजियो तब कहियो मनभाईजी ॥ १ ॥
वेसरदेहो कै तुम नाई अब हम लेहिं छिनाईजी ॥
और कछू हमसों अबहूं तुम करिहो कै चतुराईजी ॥
तब हँसि कह्यो नागरी प्यारी तुम सब मिलवो राईजी ॥
ऐसेहि लेहो वेसर मेरी बडी चतुर बनि आईजी ॥ २ ॥
दोहा–यही कहन तुम मोहिं अब, आई हो सब धाय ॥
पीताम्बर दिखराय मुहिं, बेसरलेहु छिनाय ॥
चौबोला–वेसरलेहु छिनाय पीताम्बर वेसर ये संग दोऊजी ॥
ब्रजमें जाय प्रगट करदीजै जो होनी सोहोऊजी ॥
तारी एक बजत कर दोऊ यह जानत सबकोऊजी ॥
सुनि राधा हम तोसोंहारी तोसरकी नहिं कोऊजी ॥ १ ॥
धन्य धन्य तेरी महतारी जाके तू अवतारीजी ॥
तेरे चरित कहा कोउ जाने वश कीने बनवारीजी ॥
अवहीं टार पठायो तिनको हम देखत सब नारीजी ॥
कहत न बनत हमें कछु तुमसों तापर निंदरत प्यारीजी ॥२॥
दोहा–चतुराई अरुकपटरचि, विधना तोहिं बनाहिं ॥
इतनी बुद्धि नहिं श्याममें, जितनी है तोमाहिं ॥

चौबोला–जितनी है तोमाहिं कही तब राधा कहत सुनाईजी ॥
श्याम भले अरु तुमहुँ भली हो राज्यकरो घरजाईजी ॥
वेसर छोरति हो सखि मेरी विनकाजै उठधाईजी ॥
दौरि परी मोपर सबही तुम ज्ञान तुम्हारो पाईजी ॥ १ ॥
जो तुम हती सुजान सखीरी धरती दोउ इक ठारीजी ॥
कहु प्यारी सांची तुम हमसों कछुतो कह्यो बनवारीजी ॥
हाहा बात कहो सोइ प्यारी तुमको सौंह हमारीजी ॥
गये उतै ग्वालनको टेरत तो ढिगते गिरिधारीजी ॥ २ ॥

दोहा–कहा कह्यो तोसों हरिः, क्यों ठाढी मग आय ॥
सहज होय हमसों कहो, उरते सोच मिटाय ॥

चौबोला-उरते सोच मिटाय कहन लगी मैं यमुना तन आईजी ॥
ब्रजते आवत तुमहिं लखीरी रही देखि तुम माईजी ॥
मैं देखतहीरी तुम धाई आये हरि सुखदाईजी ॥
उन पूछ्यो मोहिं ग्वाल कहांरी मैं बोली कछु नाईजी ॥१॥
मैं सुनि सन्मुख दीठ न लाई हाँ नाँ कह्यो कछु नाईजी ॥
ग्वालन टेरत गये कन्हाई तुम बेसरको धाईजी ॥
सुनि यह बात युवति सकुचाई कछुतौ सांच लखाईजी ॥
ग्वालन टेरत गये कन्हाई यहतौ हम सुन पाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तब हँसिकै सखियन कह्यो, सुन लाडिली सुजान ॥
हम मानी तेरी कही, तू माति रिस जिय आन ॥

चौ०-तू मति रिस जिय आन लाडिली तू निर्मल अति प्यारीजी
झूठहि करत चवाव तिहारो ब्रज घर घर सव नारीजी ॥
अब चलिहो यमुनाके धामा हम सँग चलहिं तिहारीजी ॥
नाम लियो बेसरको एरी चूक परी यह भारीजी ॥ १ ॥
जानतिहो मोहीं तुम जैसी हौ तुम निपट गँवारीजी ॥

झूंठहि धाई दोष लगावन अब दुलरावति सारीजी ॥
क्षणक बुद्धि तुमरी धों कैसी लरतहि तुरत दुलारीजी ॥
गई यमुनते गृहको प्यारी हँसाति चली ब्रजनारीजी ॥ २ ॥
दोहा—कृष्ण प्रीति प्रगट न करी, सखिन सबन वहकाइ ॥
बसत श्याम श्यामा मनहिं, श्यामा श्याम मनमाइ॥
चौबोला--श्यामा श्याम मनमाइ भेद यह जानत नाहिं सो काईजी
अति आनंद गये गृह दोऊ घर मन लागत नाईजी ॥
कैसेहूकारि दिवस बितायो निशा विरहरसमाईजी ॥
अति आतुर दोउन मन माई नेकहु नींद न आईजी ॥ १ ॥
विरह नदी सलिल निशितमहीं पैरतथके निहारीजी ॥
बूड्यो मणि तमचर कह्यो सो मिल्यो पार भिनसारीजी ॥
सुनि तमचरकी टेर मगन मन अति आनँद दोउ भारीजी ॥
लगी चटपटी दुहुन मिलनकी तुरतहि उठे सवारीजी ॥ २ ॥

अथ संकेतके मिलनकी लीला ॥

दोहा—श्याम उठत जननी लखे, रही मुख कमल निहार ॥
बूझति यशुमति जाउँ बलि, कहा तुम उठे सवार ॥
चौबोला—कहा तुम उठे सवार तुरतही जलभर दीनी झारीजी॥
अति आतुर हरि करी मुखारी मनहिं बसी प्रिया प्यारीजी ॥
मगन ध्यान वृषभानुसुताके विवस भये बनवारीजी ॥
उतवृषभानु सुता सुकुमारी उठि वह भाव विचारीजी ॥ १ ॥
ग्रीवासों मोतीलर तोरी आंचर बांधि दुराईजी ॥
यहै व्याज अपने मनकीनो जैहों बनके माईजी ॥
आंगन गई भवन फिर आई गई बहुरि अँगनाईजी ॥
जातबनेन रह्यो नहिं जाई फिरत भवन बिततांईजी ॥ २ ॥

---

१ दिन। २ रात। ३ शीघ्र। ४ पानी। ५ मुर्गा।

दोहा—गये बनधाम बुलाय हरि, सोई धारेउ बात ॥
मात कह्योरी राधिका, उठी प्रात कित जात ॥
चौ०-उठी प्रात कित जात आज तू डोलति कहा बितताईजी ॥
मुखते कछू वचन नहिं बोलत कहा भोर उठि आईजी ॥
अति नागरि मोती लर तोरी राखी प्रथम दुराईजी ॥
ताही मिसि करिके सकुचाई बोलति नाहिं डराईजी ॥ १ ॥
लखी ग्रीव भूषण बिन प्यारी पुनि पुनि चितई माईजी ॥
खोई कहुँ मोती लरि याने बात जानि मन पाईजी ॥
कंठ लरीतैं कहां गँवाई कहति मात रिसहाईजी ॥
बड़े मोलकी है मोती लर सो तैं कितहि हिराईजी ॥ २ ॥
दोहा—बनवाई तोहित महर, मैं तोहि दइ पहराय ॥
कल्हहि तेरे गर लखी, कहांतैं दई गमाय ॥
चौ-कहांतैं दई गमाय सोचति कहा दे किन बेग बताईजी ॥
सुनि राधा जननीकी बानी हृदय रही हरषाईजी ॥
मनहिं हँसत ऊपर भय मानी कहति भली बुधि आईजी ॥
यामिसि जान श्याम पै ह्वैहै देहैं खोज पठाईजी ॥ १ ॥
कहति मात सों तब भयमानी कहां गिरी सुधिनाईजी ॥
काल्ह सखिन सँग यमुनान्हाई तहाँ धौं तिनहिं चुराईजी ॥
कैधों गिरी कबहुँ जलमाई सो कछु जान न पाईजी ॥
काल्हहिते सोचति मैं भारी कहत न तोहिं डराईजी ॥ २ ॥
दोहा—नेक नींद नाहिं निशिपरी, तेरी सों सुनिमात ॥
याही डरते आज मैं, उठी बड़े परभात ॥
चौबोला—उठी बड़े परभात सुनतही जननी मन पछितावैजी ॥
कृष्ण राधिकाके चरित्र गुण पार न कोऊ पावैजी ॥
मैं तोहिं वरजत हार रही री यों जननी समुझावैजी ॥

काऊकी संका तोहिं नाई नदी बनहिं किमजावैजी ॥ १ ॥
बहुत तात तोहिं लाड़लड़ाई तुई अनोखीजाईजी ॥
बरजाति मैंजु करत तू सोई कहातेरे मन आईजी ॥
एक एक नग परम सुहायो मणिन जटित वनवाईजी ॥
जाके हाथ परीको देहै घर बैठे निधि पाईजी ॥ २ ॥

दोहा-हियो उमँगि आवत तबै, रीतो गरो निहारि ॥
कहति मात तू कहत किन, कहां दईतैं डारि ॥

चौबोला-कहां दई तैं डारि मात यों प्यारी पै रिसहाईजी ॥
कहा करो जो खोय गईरी तूकाहे पछिताईजी ॥
देत नहीं किन और निकारी और बहुत घर मोईजी ॥
लैहों और मँगाय बाबा सों कहि हौं अबहीं जाईजी ॥ १ ॥
करिहै कहा सेति जो राखे धरे कवनहित गोईजी ॥
देनिकासि पहिराय रिमाई इतने हित क्यों रोईजी ॥
सुनि राधा तेरो नाहींरी अब पतियारो माइजी ॥
चौकी हार हमेल कछू मैं नहिं पहिराऊं तोईजी ॥ २ ॥

दोहा-करी आज तैं लाडिली, लाखटकाकी हानि ॥
जब लगि वह ल्यावै नहीं, तब लगि देहुँ न आनि ॥

चौबोला-तब लगि देहुँ न आन जबहिंलो घरनाहिं बैठन पाईजी॥
जलजलरीहि खोजले आवै तब ऐयो घरमाईजी ॥
जाधौं देखि कहूं जो पावै तबहीं तोहि भलाईजी ॥
यमुना गई संग तब कोई बूझि देखि तिन जाईजी ॥ १ ॥
कौन कौनको तोहिं बताऊं कहा लगि नामगिनाईजी ॥
चन्द्रावलि ललितादिकनारी हतीं तहां समुदाईजी ॥
देखो जाय यमुन तट हेरी जहां राखि मैं न्हाईजी ॥
युवती एक रही टकलाई बूझि देखि हौं ताईजी ॥ २ ॥

दोहा—जै है कहां मोती लरी, उनहीं लई चुराय ॥
लगि है आज अवेर मुहि, ढूंढहुँ घर घरजाय ॥
चौबोला—ढूंढहुँ घर घर जाय ऐसे कहि जननीको वहकाईजी ॥
चली तुरत वृषभानु किशोरी अति आनँद मन माईजी ॥
निधरक चली सदन ते प्यारी मनमें बसे कन्हाईजी ॥
कैसे हरिसो देहुँ जनाई यों मन सोचति जाईजी ॥ १ ॥
बार बार सुन्दर सुखदाई जोवत राह कन्हाईजी ॥
प्यारी मुख जिमि शशि उदयकी नैन चकोर नचाईजी ॥
क्षण में घर द्वारे क्षण माई भरे बिरहरसमाईजी ॥
लगी चटपटी प्रेम मिलनकी फिर फिर आवत जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—भूख लगी मोको अती, कहा करत री माइ ॥
मातरसोई करत तहँ, लखि लखि जात कन्हाइ ॥
चौ०लखिलखि जात कन्हाइ यशोमति कह्यो तात बलि जाईजी
अब विलंब नहिं बैठहु मोहन जेवहु अब तुम आईजी ॥
सखा संग सब लेहु बुलाई बोलि लेहु बलि भाईजी ॥
दाऊजी जेवनको आवो टेरत कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
मोको अबहिं भूख नहिं मोहन जेवहु तुमहीं भाईजी ॥
सखन संग ले तब नँदलाला जेवन बैठे आईजी ॥
षटरस व्यंजन सरस सँवारे परसति रोहिणि माईजी ॥
आपुनि कौर उठाय सखनको आयसुदई कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—ताही क्षण श्रीराधिका, कोकिल वचन सुनाइ ॥
पिछवारे नँदसदनके, ललिताको गुहराइ ॥
चौबोला—ललिताको गुहराइ जात मैं वृन्दावन मग माईजी ॥
आवहु वेग तुमहुँ संग हेली सो यह सुनत कन्हाईजी ॥
बिन जेयेहि उठे मनमोहन करते कौर गिराईजी ॥

छांडे सखा सकल जेवतही चले वनहिं अतुराईजी॥ १ ॥
चौंक परे सब सखासंगके देखरही दोउ माईजी॥
कहति मात गोपाल आज तुम जात कहाँ अतुराईजी॥
अबहीं ग्वाल गयो कहि मोई बनमें गाय बियाईजी॥
मैं जेवन बैठ्यो बिसराई सो सुधि मोहिं अब आईजी॥ २ ॥
दोहा–तुम जेवहु लखि आतमैं, करीश्याम चतुराइ॥
गाय बियानी बनहिं में, यह कहि चले कन्हाइ॥
चौबोला–यह कहि चले कन्हाइ सखा सब हँसत मनहिंमनमाईजी
नहीं गाय बछरा ह्वां नाहीं बात श्यामकी पाईजी॥
है प्यारी रानी ह्वां राधा हमते कहा दुराईजी॥
जननी नहीं कछू यह जानी बार बार पछिताईजी॥ १ ॥
शाज्यकरो यह गाय बियाई भूखे गये कन्हाईजी॥
गईसैनं दे वन श्रीराधा पहुँचे तहां सुखदाईजी॥
देखत हरषभये मन दोऊ आनँद उर न समाईजी॥
मिले धाय गहि अंकममाला सो सुख वरनि नजाईजी॥
दोहा–नवल कुंज नव नागरी, नव नागर नँदनन्द॥
प्रेमसिंधु मर्याद तजि, मिले उमँगि आनंद॥
चौबोला–मिले उमँगिआनंदनिरख छबि कोटिक मदनैलजाईजी
विलसत विविध विलास मनोहर युगल रूप सुखदाईजी॥
शोभित कुंज कुटी छबि धामा राधा कुँवर कन्हाईजी॥
सो छबि बरन सके छबिको है चितवत नैन दुराईजी॥ १ ॥
रीझे श्याम नागरी छबिपर प्यारी लखत कन्हाईजी॥
अरस परस दोउ रूप निहारे देहदशा विसराईजी॥
बैठे कुंजधाम सुखदाई कोमलसेजसुहाईजी॥

१ सब। २ छिपाई। ३ कामदेव।

बहत समीर सुखद पुरवाई हरित भूमि छबि छाईजी ॥ २ ॥
दोहा–लटकत चहुँ दिश कुसुम द्रुम, फूलि रही तरुडारि ॥
आये मेघ उलटि तहाँ, परत बूंद श्रमहारि ॥
चौबोला–परत बूंद श्रमहारि सुरंग रंग भीजाति चूनरि सारीजी॥
मन सकुचत लखि रसिक बिहारी भावत मन हरि प्यारीजी ॥
हँसि हँसि करत प्रेमकी बातें प्यारी अरु बनवारीजी ॥
भीजेरस रँग प्रेम सुखद जल श्रीराधा गिरिधारीजी ॥ १ ॥
भीजे अम्वर कुंज गेह युग हरि प्यारी सँग दोऊजी ॥
यह अचरजकी बात कहेको सांच न मानत कोऊजी ॥ २ ॥
रमत द्रुमन तर गोपसुता संग पारब्रह्महै सोऊजी ॥
यह विधि करि बिलास बनमाई मगन भये मन दोऊजी ॥ २ ॥
दोहा–इहि विधि बिलस बिलास बन, कह्यो श्याम सुखदाइ॥
अब गृह जावहु लाडिली, भई सांझ नियराइ ॥
चौ॰-भई सांझ नियराइ मात पितु करिहैं कहुँ दुचिताईजी ॥
यह रस रीति गुप्त की नीकी प्रगट करो जिनकाईजी ॥
तुमरो बोल सुनत उठधायो करते कौर गिराईजी ॥
मेरे प्राण वसत तुम माई इक क्षण विसरत नाईजी ॥ १ ॥
सुनि सुनि बातें पियकी प्यारी रही मनहिं हरषाईजी ॥
अतिसनेह बोली सकुचाई सुनहु श्याम सुखदाईजी ॥
कहा करों पगजात न घरको मन अटक्यो तुम माईजी ॥
दृग तुमको देखत सुखपावैं गुरुजन नाहिं सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सर्वहानि हम सहत हैं, लखि तुमरी मुसकानि ॥
वशीकरण यामें वसत, बिबिस करत मन आनि ॥
चौ॰-बिबिस करत मन आनि ऐसी विधि प्रगट सनेह जनाईजी॥
भये परम आनन्द सरसरस सो सुख बरनि न जाईजी ॥

श्याम लई उरलाय प्रिया घर हँसिकर बोध पठाईजी ॥
सुन्दर घन सुखके सदन हरि चले आप सुखपाईजी ॥ १ ॥
करति मात अवसेर विसाला पहुँचे सदन कन्हाईजी ॥
लीने धाय लाय उर मैया कहति लाल बलि जाईजी ॥
करते कौर डारि उठ भागे सुरत गायकी आईजी ॥
ताते प्रीति अधिक उर आनी लोही गाय बियाईजी ॥ २ ॥

दोहा—भ्रमत थक्यो वृन्दाविपिन, वह न हमारी गाय ॥
बंसीबट यमुना निकट, ढूँढ्यो सब बनजाय ॥

चौबोला-ढूंढ्यो सब बनजाय हते कोउ सखा संग तहँ नाईजी ॥
फिरयो अकेलो बनके माई युवति एक तहँ पाईजी ॥
सो पहुँजाय गई घर मोहीं सुनि यशुमति पछिताईजी ॥
धोये पदले तातो पानी तुरताहि भोजन ल्याईजी ॥ १ ॥
कीनो भोजन अति रुचि करि हरि रोहिणि बीरा ल्याईजी ॥
निरखि मुखाबिंद सुखलीनो बार बार बलि जाईजी ॥
लीला सागर कुँवर कन्हाई भक्तनके सुखदाईजी ॥
नँदनंदन सुन्दर सुखसागर विहारन लेत बलाईजी ॥ २ ॥

दोहा—इत श्रीकीरतिनंदनी, रूपराशि गुणखान ॥
चली श्याम सुख देभवन, नागरि नवल सुजान ॥

चौबोला—नागरि नवल सुजान जल जसरी लई खोलि करमाईज़ी
सखी मिली इक बूझति मगमें प्यारी कहा ते आईजी ॥
गई हती यह काज बतायो कह्यो ताहि समुझाईजी ॥
ऐसी निडर भई कहा राधा यों सखि कहति सुनाईजी ॥ १ ॥
ब्रज घर घर तू फिरत अकेली संग सखीकोउनाईजी ॥
ऐसी तैं करनी यह कीनी मोको सँग न बुलाईजी ॥
बीत्यो दिवस निसा नियराई तबते तू अब आईजी ॥

देखों मोहिं बताय जलजसरी कहां तोहिं पुनि पाईजी ॥ २ ॥
दोहा–चतुर सखी मन लखि लई, मिलवत झूंठी बात ॥
गई हती बन हरि निकट, विलस श्याम सँग आत ॥
चौ०–विलस श्याम सँग आत जानसखी प्यारी कहत सुनाईजी॥
कैसे जाय कहां ते पाई किन यह लरी दुराईजी ॥
ब्रज युवतिन सबहिन मैं जानू दे किन नाम बताईजी ॥
क्यों नहिं नाम लेत तू ताको बात तिहारी पाईजी ॥ १ ॥
चोर तुम्हारे कुँवर कन्हाई तिन सों तू मिल आईजी ॥
रसबश कीने श्याम लाड़िली बातें कहत बनाईजी ॥
कहैं देत रस रंग भरी छबि अंग अंग पर छाईजी ॥
कहां हार कहां ग्वालिन प्यारी कहां जाय तू ल्याईजी॥२॥
दोहा–अटपटि बात बनायके, कहा बहकावति मोहिं ॥
जबते तैं हरि संग लियो, तबते जानति तोहिं ॥
चौबोला-तबते जानति तोहिं सुनतही प्यारी वचन सुनावेजी ॥
इन बातन कछु पावत हैरी कहा तेरे मन आवेजी ॥
देखति मोहिं अकेली जबहीं नइ नइ बात उपावेजी ॥
बिन देखेही झूंठ लगावे नाहक वैर बढ़ावेजी ॥ १ ॥
जोर कहतिकै देखी मोहीं बूझति सौंह दिवाईजी ॥
जब जानी प्यारी बिरुझाई चतुर सखी मुसकाईजी ॥
तब हँसि कह्यो जाहु घर प्यारी जिनमोपै रिसहाईजी ॥
चली भवन वृषभानु किशोरी सोचति तहँ घर माईजी ॥२॥
दोहा–सोचती करति मन अती, राधा दई पठाय ॥
प्रात गई आई नहीं, भई सांझ नियराय ॥
चौबोला–भई सांझ नियराय हारहित ताको त्रास दिखाईजी ॥
ताते रूष रही कहुँ जाई अबलों घर नहिं आईजी ॥

है है धौं काके घर माई कहां अब ढूंढूं जाईजी ॥
सुता¹सनेह अधिक अकुलाई बार बार पछिताईजी ॥ १ ॥
सुनि हैं बात महर कहुँ अबहीं मोपर अति रिसहाईजी ॥
सोचाति जननी विकलभई अति धीर धरत मननाईजी ॥
उरडराति श्री कुँवरि राधिका ताही क्षण घर आईजी ॥
देखतही उठधाय मात अति हरषि लई उरलाईजी ॥ २ ॥
दोहा—सोच मिट्यो धीरज भयो, सुता मात उरलाइ ॥
लैरी मैया हार यह, जाकारण रिसहाइ ॥
चौबोला—जाकारण रिसहाइ सुनतही कीरति मुखतन जोईजी॥
मनहीं मन अतिशय पछितानी पोच करी इन मोईजी ॥
अति प्रवीण³ राधिका पियारी चरित न जानतकोईजी ॥
अगम अगोचर⁴ लीलाधारी ब्रज वनितन बशसोईजी ॥ १ ॥
जाको शिव सनकादिक ध्यावैं सो ब्रज लीला धारीजी ॥
हरिकी कृपा अगोचर सारी निगम⁵ते अगमन भारीजी ॥
राजा रंक पुरुष कहानारी प्रीति विविस गिरिधारीजी ॥
देवकि उदर⁶ प्रीति वशआये भक्तनके हितकारीजी ॥ २ ॥
दोहा—प्रीति बिवस यशुमति महरि, पयप्यायो उरलाइ ॥
नंदसुवन भये प्रीति वश, बन बन धेनु चराइ ॥
चौबोला—बन बन धेनु चराइ प्रीति बश घर घर दही चुरायोजी
प्रीति विवस ऊखल बँधवाये प्रीतहिगिरिहि उठायोजी ॥
प्रीति विबस लीला वहु कीनी नटवर भेष बनायोजी ॥
प्रीति विवस गोपिन संग कामी प्रीति विबस ब्रज आयोजी॥१॥
तीन भुवन विख्यात प्रीतिके वशही कुँवर कन्हाईजी ॥
नंद महरको तात कहो कोउ विना प्रीति नहिं पाईजी ॥

१ पुत्री। २ हृदय। ३ चतुर। ४ अलख। ५ वेद। ६ पेट।

प्रीति करो मनलाय विहारन प्रभु पद ध्यान लगाईजी ॥
प्रभु रीझत हैं सदा प्रीति सों कहत वेद श्रुति गाईजी ॥ २ ॥

अथ प्यारीजीके घर मिलनकी लीला।

दोहा–प्यारी वश हरि इमि भये, तजत एक क्षण नाहिं ॥
संगहि फिरत जिमि देहके, जहाँ जात तहँ छाहिं ॥

चौ०-जहाँ जात तहँ छांहिं प्रियाके सँगही रहत कन्हाईजी ॥
वदन कमल रस रूप लुभाने जैसे अलिमडराईजी ॥
वंचन निादरस मृग ज्यों गीधे नैन बंक शरखाईजी ॥
कबहूं श्याम यमुन तट जावे बिन देखे न सुहाईजी ॥ १ ॥
कबहूं जाय कदम चढि हेरत चहुँ दिश कुँवर कन्हाईजी ॥
गृहवन कहूं लगत मन नाहीं मिलन चहत चितमाईजी ॥
तब वृषभानु पुरा तन आये मुरली मधुर बजाईजी ॥
प्यारी प्रगट श्याम गति देखी मनई माहिं सिहाईजी ॥ २ ॥

दोहा–गुण सागर रस रूप निधि, अति अनुराग बढ़ाय ॥
शशि चकोर अंबुज अली, अरस परस दोउ चाय ॥

चौ०–अरसपरसदो उचाय सखिन सँग प्यारी यमुन सिधाईजी ॥
देखे नँदनन्दन तहां ठाढे भरी प्रेमरसमाईजी ॥
सखियन संग जानि श्रीराधा मन डरपी सकुचाईजी ॥
श्याम परेहैं फंद मदनके कौन कहै समुझाईजी ॥ १ ॥
सखियनके संकोच वदनते हरि सों बोलन पावैजी ॥
हृदय भयो अति सोच श्याम तनु देखि मनहिं पछितावैजी ॥
सखियन सों मिलि बात बनावै हरिको भाव जनावैजी ॥
सहज अलक निरवारनकीने लखि हरि तन मुसकावैजी ॥ २ ॥

दोहा–यमुनाते आवति सखी, ताहि कह्योरी बाम ॥
मेरे घर तू आइयो, हर्ष भये सुनि श्याम ॥
चौबोला–हर्ष भये सुनि श्याम लाडिली दियो सोभाव जनाईजी॥
श्याम सुजान जान सोइ लीनो गये भवन हरषाईजी ॥
प्यारीचली सखिनके संगमें बात सखिनसों पाईजी ॥
भाव कछू इन हरि सों कीनो आपुसमें बतराईजी ॥ १ ॥
हरि तन लखि मुख सो करलायो पुनि ये कछु मुसकाईजी ॥
सदन बुलाय सखीको टेरी गये श्याम हरषाईजी ॥
ये अति चतुर करी चतुराई और भाव कछुनाईजी ॥
आजरैन मिलि हैं ये दोऊ यह हम बात लखाईजी ॥ २ ॥
दोहा–ले यमुना ते जल तुरत, सखिन संग घरआइ ॥
भावदियो निशि आयहैं, मेरे कुँवर कन्हाइ ॥
चौबोला–मेरे कुँवर कन्हाइ आय हैं भूषण वसन सजावैजी ॥
सहज रूपकी खान राधिका अरु शृंगार बनावैजी ॥
कोकरसके बखान लाडिली त्रिभुवन पति मन भावैजी ॥
वेणी रचि निज पाणि सँवारी अंग शृंगार सुहावैजी ॥ १ ॥
कियो भाल बिन्दुकानीको मोतिन माँग भराईजी ॥
लोचन अंजन रेख सँवारी श्रवण नखन छवि छाईजी ॥
नासा नथ सोभित अधरन पर नाग बेल अरुणाईजी ॥
सुभग अंग सब नौसतसाजे वसन सुगंध सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–मन जोवति मग श्यामको, ऐहैं आज कन्हाइ ॥
आवन पै हैं कै नहीं, कै आवत मगमाइ ॥
चौबोला–कै आवत मगमाइ कैधौं तात मात भय पाईजी ॥
कै आवत मेरे घर डरिहै यों सोचति मनमाईजी ॥
कैकहुँ खेलन में चितलावै आवेंगे कै नाईजी ॥

कबहूँ रचि रचि सेज सँवारे मन अति हरष बढाईजी ॥ १ ॥
मेरे घर आवै कहुँ अबही सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
डारों सुभग पावडो धामहिं अति अनुराग भराईजी ॥
यों अभिलाषा करत ताहि क्षण प्रगटे जन सुखदाईजी ॥
कोकहि सकै बखान भयो जो सुख दोउन मन माईजी ॥ २ ॥

दोहा–वह छबि कापैजात कहि, वहै प्रेम सकुचानि ॥
वह रस झिझकन अंगकी, वहै मधुर मुसकानि ॥

चौबोला–वहै मधुर मुसकानि वहै छबि बांकी परम सुहावैजी॥
वह रस प्रेम सुभग दुहुँ घांको सोछबि बरनि नजावैजी ॥
वह सुख युगल रूपको कहत में शिव बिधिपै नाहिं आवैजी ॥
वेद भेद पावत नाहिं जाको कौन कवी सो गावैजी ॥ १ ॥
श्यामा श्याम सेजपर सोहैं अरस परस बलिहारीजी ॥
कोटि काम रति सम नहिं सोऊ गुणसागर दोउ भारीजी ॥
युगल परस्पर अंग सँवारे प्रेम विवस पिय प्यारीजी ॥
अलक सुधारत श्रीगिरिधारी पाग सँवारत प्यारीजी ॥ २ ॥

दोहा–रस बिलास आनंद सुख, अति अनुराग बढाय ॥
आलिंगन चुंबन सरस, करत दोउ सुखपाय ॥

चौ०-करत दोउ सुख पाय इह विधि निशि त्रय याम बिताईजी॥
हास विलास विविध रस रीती करत दोउ मन भाईजी ॥
अति रस मत्त युगल अलसाने पुनि पौढे लपटाईजी ॥
बीती रात भोर नियराई उडुगण ज्योति हिराईजी ॥ १ ॥
भई दीप छबि छीन आपही गये कुसुम कुम्हिलाईजी ॥
बिकसे सरस सरोज बहत सम शीतल पवन सुहाईजी ॥
सरस वचन बोली तब प्यारी जागहु कुँवर कन्हाईजी ॥
प्राची दिशि पीरी परि आई भयो प्रात सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—शशि मलीन छूटे अली, कुमुदिन गइ सकुचाय ॥
बोले तमचर जहँ तहां, रही चिरइ चहचाय ॥
चौबोला—रही चिरइ चह चाय प्राण पति उठहु श्रीगिरिधारीजी
है ब्रज घर घर घेर हमारो लखति रहत ब्रजनारीजी ॥
जागहिं जिन गुरुजन डर भारी सुनत उठे बनवारीजी ॥
चले सदन अपने अतुराई निकसत देखे नारीजी ॥ १ ॥
यह उनकी मन साद पुराई दीनो दरश कन्हाईजी ॥
पीतवसन कटि नैन विसाला शीश मुकुट छविछाईजी ॥
अंग अंग छवि बरनि न जाई श्याम बरन सुखदाईजी ॥
निकसगये घर कुँवर कन्हाई देखत रही लुभाईजी ॥ २ ॥
दोहा—बार बार यह लाडिली, मनहीं मन पछितात ॥
गये श्याम आलस भरे, नेकु न सोये रात ॥
चौबोला—नेकु न सोये रात गये हरि लखे सखिन कहुँ नाईजी ॥
मैं राख्यो है गोय अबैलों सखियन नाहिं जनाईजी ॥
देख्यो जाय पवँरिहै प्यारी जहँ तहँ सखी लखाईजी ॥
सकुचि गई चिन्ता उपजाई बार बार पछिताईजी ॥ १ ॥
हरिसों प्रीति गुप्तही कीनी आज प्रगट ह्वै आईजी ॥
निकसत सखिन आज मोघरते देखे हरि सुखदाईजी ॥
नितही नित बूझति ये मोसों म इनसों सतराईजी ॥
करि हैं मोसों बहुत परेखो देखे प्रगट कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—भलो दाँव इनको मिल्यो, अब न छिपायोजाइ ॥
अबहिं आय ये बूझि हैं, कहाकरिहौं चतुराइ ॥
चौबोला—कहाकरिहौं चतुराइ राखनहारि गुप्तहि प्रीतिबताईजी॥
प्रगट करों तो होय अनीती पर्यो सोच अति आईजी ॥
सोच पर्यो कछु बात न आवै विनती प्रभुहि सुनाईजी ॥

प्राणनाथ हरि होउ सहाई मेरी पति रह जाईजी ॥ १ ॥
दीजै नाथ बुद्धि अब सोई सखियनके मनभावैजी ॥
ऐसे सोचति कुँवरि राधिका कबहुँक हरिहि मनावैजी ॥
कबहूँ सुख प्रभुको मन समुझत प्रेममगन ह्वै जावैजी ॥
भयो बोध उर हरि सुमिरतही सो मनमाहिं उपावैजी ॥ २ ॥

दोहा–मन मन हरषी नागरी, कहिहौं सखि यनजान ॥
परम चतुर श्री राधिका, रच्यो बोध उर आन ॥

चौ०-रच्यो बोध उर आन अनँदमन हरष पुलकतनुआयोजी ॥
सोच मोह उरते विसरायो मन अति हरष बढायोजी ॥
जोवे सुन्दर कुँवर कन्हाई सखियन दरश दिखायोजी ॥
उनसों सोई रूप बखानूं यह विचार ठहरायोजी ॥ १ ॥
बैठी सदंन[1] लाडिली प्यारी श्याम सनेह सुहाईजी ॥
कहति सखी देखैं चल राधा आपुस में बतराईजी ॥
देखें चलो वदन छबि कैसी निधरकके भय पाईजी ॥
आज रैनि[2] हरिसों रतिमानी कहिं हैं कहा सुनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–गई जहाँ श्रीराधिका, सब मिलके ब्रजनारि ॥
देख रही बोली नहीं, रही मौन सो धारि ॥

चौबोला–रही मौन सोधारि बात कछू बोली मुखते नाईजी ॥
सखियनको नैननकी सैनन निकट बोल बैठाईजी ॥
चतुर सखी सबहिन यह निजं[3] निज जान लई मन माईजी ॥
देखतही बोली नहिं हमसों इन कछु बात उपाईजी ॥ १ ॥
अपनो भेद कछू नहिं कहिहै कहाधौं बात बनावेजी ॥
अपनी जांघ बल चीर चुरावे प्रगट कही नहिं जावेजी ॥
निधरक भई श्याम सँग पाई यह काऊ न पत्यावेजी ॥

१ घर। २ रात। ३ अपन।

कहैं कहा धों बात सँवारी भ्रुकुटी त्योरलखावेजी ॥ २ ॥
दोहा—राखति तुमहूं गर्व मन, बोलति किन कोउ आय ॥
सुनहुँ अहो श्रीराधिका, कहति सखी मुसकाय ॥
चौबोला—कहति सखी मुसकाय मूंद मुख कहा बैठीरी प्यारीजी॥
कापर रिस करि मौन गही है लहहू भान दुलारीजी ॥
हम सों कहत नहीं सो ऐरी हम तो सखी तिहारीजी ॥
कै देवनको ध्यान धरयो कै परयो सुभाव यहै कारीजी ॥
जब जब हम आवति घर तेरे मिलन तोहिं सबनारीजी ॥
तब तब हमसों बोलति नाहीं यहै धरणतैं धारीजी ॥
हमतो राखति नाहिं दुराऊ तुम राखति क्यों प्यारीजी ॥
ज्वाबदेत आवत नहिं तुमसों ऐसो सोच कहा भारीजी ॥ २ ॥
दोहा—कछु दिनते तेरी प्रकृति, अरी परी यह कौन ॥
निठुर भई हमसों रहति, जब तब साधतमौन ॥
चौबोला—जब तब साधत मौन हृदयकी बात कहति हो नाईजी
प्यारी सों ब्रजनारि सकल मिल ऐसे कहि मुसकाईजी ॥
मनहीं मन जानति सब प्यारी हँसी करत समुदाईजी ॥
परम प्रवीन सकल गुणखानी बोली मधुर सुनाईजी ॥ १ ॥
सुनहु सखी बूझत कहा मोसों कहा मैं कहूँ बुझाईजी ॥
आज प्रात इक चरित नयोरी जात इते लखि पाईजी ॥
नेकहि देखन पाइ तबहिंते मोमनरह्यो लुभाईजी ॥
कै घनश्याम कै श्याम कन्हाई रह्यो सोच मनमाईजी ॥ २ ॥
दोहा—पीत वसनकै दामिनी, शीश मुकुट कै व्याल ॥
बकपंक्ती कै गज मुकत, इन्द्रधनुषकै माल ॥
चौबोला—इन्द्रधनुष कै माल मधुर ध्वनि गरजन परम सुहाईजी
कैधों पगमें नूपुरकी ध्वनि यह मैं जानति नाईजी ॥

देखे आज श्याम तबहींते यह धोखो मनमाईजी ॥
कहा करों हरिकी चपलाई गये रूप दरशाईजी ॥ १ ॥
भरी श्याम रस कुँवरि सयानी निधरक बात बनावैजी ॥
सखी कहति सब आपुसमाई याको भेद न आवैजी ॥
प्रगट करनको हम सब आई यह आपहि प्रगटावैजी ॥
हम देखे जिहिं भाँति कन्हाई इन देखे सतभावैजी ॥ २ ॥

दोहा—यह सूधी हमहीं कुटिल, दोष देति सब बाम ॥
जो चाहो पति आपनी, बहुरि लेहु जिननाम ॥

चौबोला—बहुरि लेहु जिननाम सखी तुम यासोंजीतो चावौजी॥
मनते गर्व करो जिन रीतो यासों जिन बतरावोजी ॥
यह हरिकी प्यारी पटरानी याकी बुधि नहिं पावोजी ॥
हम याकी दासी समनाहीं समुझि मनहिं रहजावोजी ॥ १ ॥
याकी स्तुति कहा बखाने इन जाने गिरिधारीजी ॥
तब हँसि कह्यो सखी सुन प्यारी तैं जो लखे बनवारीजी ॥
गये कान्ह वे मेघ नकारे जो तुम प्रात निहारीजी ॥
मोर मुकुट शिर व्यास नहोई मानहु बात हमारीजी ॥ २ ॥

दोहा—कटि पटपीत न दामिनी, कहति एक ब्रजबाल ॥
बक पाती नहिं इन्द्र धनु, मुक्तमाल बनमाल ॥

चौबो०—मुक्तमाल बनमाल नूपुर ध्वनि जलधर गरजन नाईजी ॥
मत राखो धोखो मन माई देखे प्रात कन्हाईजी ॥
धनि धनि ब्रजकी नारि हरी छबि लखत रहति मन भाईजी ॥
मोहिं होत धोखो जब तबहीं लखत रूप सुखदाईजी ॥ १ ॥
तुम देखति हरि गात कवन विधि सकल दृगन ठहराईजी ॥
मैं बहु यत्नकरे पचिहारी मोपै लखे न जाईजी ॥
तुम दरशन पावतरी कैसे वैसोहिं देहु बताईजी ॥

तुम देखत कैसे ठहराई अति छबि चपल कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–हृदय रूप राखति किमी, सांच कहो समुझाइ ॥
रहत सदा अभिलाष मन, मो पै लखे न जाइ ॥
चौबोला-मोपै लखे न जाइ कहति हो धनि वृषभानु दुलारीजी
धनि तुम पिता धन्य महतारी धन्य धन्य तुम प्यारीजी ॥
धनि सो दिवस रैनि सो बारा धन्य घरी अवतारीजी ॥
तेरे चरित कहा कोउ जाने वश कीने गिरिधारीजी ॥ १ ॥
एक सुभाव धन्य तुम दोऊ तुमको कोउअ न पावेजी ॥
तोहिं श्याम हम कहा दिखावैं तुम हरि हरि तुम भावेजी ॥
वे तोमें तू उनमें प्यारी कहा हमहिं सिखरावेजी ॥
एक जीव द्वै देह तुम्हारी हमको प्रगट लखावेजी ॥ २ ॥
दोहा–उनकी पटतर तैं लई, तो पटतर उन माहिं ॥
गूंगो स्वाद न कहि सकै, जानत मन कहा नाहिं ॥
चौ०-जानत मन कहा नाहिं बसी उर तेरे उरहि कन्हाईजी ॥
अरस परस जिमि देखिये प्यारी दर्पण दर्पण छाईजी ॥
तुम दोउ निर्मल गात लाडिली कही कौन पै जाईजी ॥
तू उनके रँग माहिं रंगी है वे तेरे रँग माईजी ॥ १ ॥
तुम छबि पीत बसन उन केरे तैं नीलांबर धारीजी ॥
घनभीतरदामनी विराजै दामिन घन चहुँधारीजी ॥
नँदनंदन वृषभानुकिसोरी जोरी अति शुभकारीजी ॥
सुनि सुनि सखियनके मुखबानी बोली राधा प्यारीजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनि ललिता सांची कहों, मैं बूझति सकुचाइ ॥
मोसों कछुयक प्रीति मन, राखत कुँवरकन्हाइ ॥
चौबोला–राखत कुँवर कन्हाइ तू हरिके मनकी जानतिसारीजी
सुन राधा इतरात कहारी तोते और न प्यारीजी ॥

रहत पवन[1] पंखा वश जैसे तेरे वश गिरिधारीजी ॥
वशहि भये तेरे बनवारी तजत न इक क्षणन्यारीजी ॥ १ ॥
ज्यों चकोर शशिके वशमाई ज्यों शरीर वशछाईजी ॥
नाद विवस मृगदेखिये जैसे हरि तेरे वश माईजी ॥
मिलीखरकतू हरिसों जाई जबते गाय दुहाईजी ॥
तबते वशहिं भये हरि तेरे नेकहु न्यारे नाईजी ॥ २ ॥

अथ गर्वव्याज विरहलीला।

दोहा—नेकहु तुम न्यारे नहीं, वरनों कहा सनेह ॥
वे दक्षिण तुम बाम अँग, हो तुम एकहि देह ॥
हो तुम एकहि देह सुनी तब ललिताके मुख वानीजी ॥
मैं ऐसी जियमें यह जानी अति आनँद उर आनीजी ॥
होराधा आधा अंग हरिकी और न मोहिं समानीजी[2] ॥
अनत जात देखोंतौ लरिहों यह अपने मनठानीजी ॥ १ ॥
ऐसे गर्व कियो मन प्यारी गई घरन सब नारीजी ॥
गर्ब विभंजन[3] जन सुखकारी आये तब बनवारीजी ॥
हरि अंतर्यामी अविनाशी जानि गर्भ भरि प्यारीजी ॥
उझकि झांकि प्यारी तन हेरचो लखि मुख फेरचो प्यारीजी॥ २ ॥
दोहा—अहो कान्ह मानत नहीं, उझकि लखत घर माइ ॥
घर घेरौ छांडत नहीं, देखत युवतिन आइ ॥
चौबो०-देखत युवतिन आइ कैसे कोऊ रहत घरनमें नारीजी ॥
तुम आवत मानत डर नाई कहति श्यामसों प्यारीजी ॥
प्राणनाथ तन नाहिं निहारी प्रेम गर्ब मन धारीजी ॥
बैठ रही अभिमान जनाई आये द्वार मुरारीजी ॥ १ ॥
हृदय श्याम मुख धामके माई राख्यो गर्व बसाईजी ॥

१ हवा। २ तुल्य। ३ नाशक।

ठौर तहां पायो नहिं तबहीं रहे श्याम सकुचाईजी ॥
जहांरहत अभिमान मनहिंमें तहां बास मम नाईजी ॥
आप लगे पछितान हरी लखि सो राधा उरमाईजी ॥ २ ॥
दोहा—तुरत गवनकर तहांते, गये श्याम सुखदाइ ॥
प्यारी बैठी सदनमें, दियो दरश हरि नाइ ॥
दियो दरश हरि नाइ चकित भई तब प्यारी मन माईजी ॥
यहां श्याम आये क्यों नाई भयो सोच अधिकाईजी ॥
आपुन द्वार आय पुनि देख्यो तहां लखे हरिनाईजी ॥
झाँकतही फिर गये कन्हाई प्यारी मन पछिताईजी ॥ १ ॥
मोते चूकपरी अतिभारी तब हरि मोहिं विसारीजी ॥
एक तो बैठ रही गरबाई द्वितिय रोष उरभारीजी ॥
मेरी बुद्धि जानि कै हीनी तजी मोहिं गिरिधारीजी ॥
वे बहुनायक कुंजविहारी मोसी कोटिक नारीजी ॥ २ ॥
दोहा—कोल्यावै कासो कहूं, को हरि आन मिलाइ ॥
भई विरह व्याकुल अती, वदन गयो कुम्हलाइ ॥
चौ०—वदन गयो कुम्हलाइ कवन विधि मिलहिं मोहिं बलबीरैजी
नैनसरोजन सों जलडारै नेकहु धरत न धीरैजी ॥
भई विकल अति नागरि मनमें विरह व्यथाकी पीरैजी ॥
खान पान कछु मनहिं न आवै सुधि बुधितजी शरीरैजी ॥ १ ॥
भये सुखद सबही दुखदाई घर बाहर न सुहाईजी ॥
विहारनमन प्रभुके मिलनेको रह्यो सोच उरछाईजी ॥
राधा सदन सखी पुनि आई देखि दशा पछिताईजी ॥
नीर विहीन मीन जिमि दीने व्याकुल सखिन लखाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कर गहि गहि बूझति सखी, कहा भयो तोहिं आय ॥
विवस भई ऐसी कहा, हमको देहु सुनाय ॥

चौबोला-हमको देहु सुनाय हमहिं तू तब तो नीक लखाईजी॥
क्यों मुरझाय गईरी अबहीं कहा व्यथा भइ आईजी॥
बहुरि लखे धौं कतहुँ कन्हाई तोहिं ठगोरी लाईजी॥
जान्यो हरि आये अनुरागी कान्ह नाम सुन पाईजी॥ १॥
आतुर सखी कंठ लपटाई कह्यो चूक परि भारीजी॥
अब अपराध क्षमो रिस त्यागी करुणामय गिरिधारीजी॥
चकित भईं सब ब्रजकी नारी राधे रही निहारीजी॥
शीतल जल सों मुख पखरायो कह्यो सखी सुनि प्यारीजी॥२॥

दोहा-आज भई कैसी दशा, हमहिं कहो समुझाय॥
भयो अलिनके वचन सुनि, कछुकचेत उरआय॥

चौबोला-कछुकचेत उरआय सखिनको जानि गई सकुचाईजी
काहे तू ऐसी भइ प्यारी गयो वदन कुम्हिलाईजी॥
बार बार बूझति सब आली कहु प्यारी समुझाईजी॥
बोली तब सखियन सों प्यारी तुमसों कहा दुराईजी॥ १॥
उनमोहिं तजी कुटिल मति जानी मैं हरि हाथ बिकानीजी॥
अपनी कथा श्यामकी करनी कहो सो प्रगट बखानीजी॥
बैठीही मैं सदन अकेली आये हरि सुखदानीजी॥
आदर करि नहिं भवन बुलाये रही गर्व उर आनीजी॥ २॥

दोहा-मैं आदर कीनों नहीं, रही गर्व उर आनि॥
अन्तर्यामी वे हरी, मो मनकी लइ जानि॥

चौबोला-मोमनकी लई जानि सखी मैं रही गर्व उरधारीजी॥
कमलनैन वे गर्वप्रहारी गये हरि मोहिं बिसारीजी॥
अहंकार यह फल मोहिं दीनों विरह विकल करडारीजी॥
अब मन रहत नहीं विन देखे श्यामसुन्दर बनवारीजी॥ १॥
चित न रहत कितनों समुझाऊ कैसे दरशन पाईजी॥

भयो भवन वन मोकों आली विन श्री कुँवर कन्हाईजी ॥
अब हरि मिलें सो करहु उपाई लागत तुम्हरे पाईजी ॥
विन मनमोहन कुँवर कन्हाई भये सुखद दुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–गिरि कन्यापति तिलकँकर, दाहत अनॅल समान ॥
शिवसुत वाहन भखनको, भयो हलाँहल पान ॥
चौबोला–भयो हलाहल पान सखी मुहि बिन श्रीनन्दकुमाराजी
भयो इन्द्रआयुधँसम आली जलॅधि सुतासुत हाराजी ॥
शाखाँमृगरिपु भये बसनबर मलयॅज मनहुँ अँगाराजी ॥
भयो काम मोको अब वैरी सखि यह हाल हमाराजी ॥ १ ॥
अब सुभाव रहिहौं हरि साथा मिलहीं मोहिं कन्हाईजी ॥
सुनि राधा करनी यह तेरी हमसों बात दुराईजी ॥
अबहीते ऐसे ढंग ठाने उनको जानति नाईजी ॥
एकहि बार मिली तू धाई सबमर्याद वहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–मूंड चढायो तैं उन्हें, हमहिं नभेद जनाइ ॥
भवन विपिन डोलन लगी, हरिके संगतूजाइ ॥
चौबोला–हरिके संग तू जाइ निजकर अपनी कानि गमाईजी ॥
परवश परि कौने सुख पायो सोच देख मनमाईजी ॥
मेरो कह्यो अजहुँ मन प्यारी मानोगी कै नाईजी ॥
धीरज धरुँकत मरत वृथाई तूकर मान सवाईजी ॥ १ ॥
वात आपनी अपने करहे देखहु सोच विचारीजी ॥
भई कहा ऐसी विबस तू ऐरी एकहि बारीजी ॥
पुरुष भँवर जिमि जानि लाडिली बहु सुमनन हितकारीजी ॥
बिना कियेरी मान पिय निज कौन किये वश प्यारीजी ॥ २ ॥
दोहा–कहति सखी तू बात यह, कंप होत सुनि गात ॥

१ चन्द्र । २ अग्नि । ३ विष । ४ वज्र । ५ समुद्र । ६ मोती । ७ बंदर । चंदन।

मान कियो मैं श्यामसों, ताते यह दुख पात ॥
चौबोला–ताते यह दुख पात भूलि अब मान करों मैं नाईजी ॥
श्याम मिलहिं तो पाँयन परिहौं यह मेरे मन भाईजी ॥
विनती करि करि उनहिं सुनाऊं निज अपराध क्षमाईजी ॥
यामें दोष नहीं सखि हरिको यह दूषण मोमाईजी ॥ १ ॥
वे मोहन मेरे घर आये मैं मन गर्व बढ़ायोजी ॥
मेरे गर्वते कहा सरचोरी सुख हित ज्यों दुख पायोजी ॥
जाते हानि आपनी होई सो नाहिं करन बतायोजी ॥
मान बिना नाहिं प्रीति रहैरी सखियन वचन सुनायोजी ॥ २ ॥
दोहा–भई फिरत चेरी जिमी; धाय मिली तू जाय ॥
उन्हें भेद दियो आपनों, हमसों बात दुराय ॥
चौबोला–हमसों बात दुराय बिनाभय प्रीति न होवे प्यारीजी ॥
हम जो कहति सो तोय लाडिली मानहु बात हमारीजी ॥
मान करनको मोहिं सखी तुम सिखवत बारंबारीजी ॥
मन नहिं मेरे हाथ अली अब रहै मौनको धारीजी ॥ १ ॥
श्याम गुणन अभिलाषा करिकै उमँग भरत दिन रातैजी ॥
मानसजौं कैसेरी आली मन नाहिं मानत बातैजी ॥
मनमोसों अब वाम भयोरी हरिके संग उठ जातैजी ॥
मुदित मूढ अपमान नमानै आपुन हिताहि जनातैजी ॥ २ ॥
दोहा–इन्द्री सब स्वारथ लगीं, गई मनहिं सँग धाय ॥
घर फूटै कैसे बनै, करिये कहा उपाय ॥
चौबोला–करिये कहा उपाय कोऊ अब मेरे सँगमें नाईजी ॥
रही अकेली मैं तनमें अब मेरो नाहिं बसाईजी ॥
तापर भयो काम अब बैरी विरहा अग्नि जराईजी ॥
इतनेपर तुम मान करावति कहति कहा तुम आईजी ॥ १ ॥

मैंतो चूक आपनी मानी को हरि आनि मिलावैजी ॥
अब कैसेहू मान न करिहौं यह मेरे मन आवैजी ॥
सोई हितु जो आनि मिलावै मोहिं नँदनन्दन भावैजी ॥
फिरति रहों सँगही सँग लागी जो अब मोहिं हरि पावैजी ॥२॥

दोहा—ऐसे कहि तब लाडिली, भई विरह उर आय ॥
देखि दशा सहि नाहिं सकी, अली उठी अकुलाय ॥

चौबोला—अली उठी अकुलाय सबन मिल यहै बात ठहराईजी ॥
हम राधाकी प्रीय सखीहैं रचिये वेग उपाईजी ॥
ऐसी चूक परी कहा याते कहैं श्याम सों जाईजी ॥
झुरि झुरि पीरी परी अली यह दजि याहि मिलाईजी ॥ १ ॥
मतिहि होय व्याकुल सुकुमारी सखिन कह्यो सुनि प्यारीजी ॥
नेकु धीर धरि तोहिं मिलावै हम ल्यावै बनवारीजी ॥
तरक बात बहुभाषि सुनाई पोंछि वदन बैठारीजी ॥
बार बार मुख कान्ह उचारै नेकहु धीर न धारीजी ॥ २ ॥

दोहा—सावधान करि राधिका, दौरिगई अतुराइ ॥
लखि हरि मुख ललिता हँसी, इतलखि हँसे कन्हाइ ॥

चौबोला-इत लखि हँसे कन्हाइ कहत हरि ललितासों मुसकाईजी।
बूझत चितवन नैन चुराई कहा आज इत आईजी ॥
अति आतुर आई कत धाई वदन गयो कुम्हिलाईजी ॥
बोली ललिता तब मुसकाई सुनहू चतुर कन्हाईजी ॥ १ ॥
आज एक अचरज लखि पायो अति विचित्र सुखदाईजी ॥
अतिही अद्भुत रचना जाकी वरनत बनत नताईजी ॥
रीझोगे लखि कुँवर कन्हाई मैं लखि रही लुभाईजी ॥
चलहु लखहु शोभा अति सुन्दर तुमहिं बुलावन आईजी ॥२॥

दोहा—देखि परम सुखपाय हो, जो मानो मो बात ॥

हेम बरन इक बागहै, शोभा कहिय न जात ॥

चौबो०-शोभा कहिय न जात अनूपम लखहु लाल गिरिधारीजी
युगल कमल छबितापर राजत राजहंस शुभकारीजी ॥
द्वै कदली द्रुम तापरसोहै विन दल फल उलटारीजी ॥
तापर मृगपति करत विहारा तापर सरवर भारीजी ॥ १ ॥
है गिरिवर सरवर पर तापर रह कपोत शुभकारीजी ॥
निकट सनाल कमल द्वै फूले लटकितदुहुँदिश डारीजी ॥
फूल्यो पुनि कपोत पर नीको कमल एक छबिभारीजी ॥
तापर एक अमी फल लाग्यो कीर कहत बलिहारीजी ॥ २ ॥

दोहा—तहां वसत इक कोकिला, सो छबि कही न जात ॥
द्वै खंजन तहां राजहीं, तिनपर धनुष सुहात ॥

चौबोला-तिनपर धनुष सुहात धनुषपर द्वै शिशुनागिन बारीजी।
मणि धरि एक नागिनीकारी शोभित अति छबिभारीजी ॥
घटत नेह जल कछु कुम्हिलायो ऐसो बाग बिहारीजी ॥
शोभा देखि सफल दृगकीजै चल सीचहु बनवारीजी ॥ १ ॥
बनी ललित सब अंग पियारी देखहु मनहिं विचारीजी ॥
सुनहु श्याम सुन्दर सुखराशी नवल छैल गिरिधारीजी ॥
तुम्हें मिलनको अति व्याकुलहै नवल बाम सुकुमारीजी ॥
कियो प्रेम करमान लाडिली कहा भयो बनवारीजी ॥ २ ॥

दोहा—प्यारी जीवन जीयकी, अति सुन्दरी सुजान ॥
बरनों अब श्रीराधिका, सुनों नंदके कान ॥

चौ०-सुनों नंदके कान्ह प्रथम रुचि बैनी अति छबिछाईजी ॥
ललित पीठ पाछे अति सुन्दर सोछबि कहत नआईजी ॥
अहिनी मनहुँ कुटिल गति त्यागी शशि मुख सुधा चुराईजी ॥
रेखा अरुण सिंदूर लगाई अति छबि शीश सुहाईजी ॥ १ ॥

तिमिर समूह विदार उजेरी मनहुँ किरण रवि छाईजी ॥
शोभित कुटिल भ्रुंकुटि अति नीकी सो छेबि कहिय नजाईजी॥
केसर आड ललाट सुभग मनु रूपकी बाढ बँधाईजी ॥
चपल नैन विन नाक सुहाई अधरनपर अरुणाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मनु युग खंजन देखि छबि, बिम्बाफल इक आय ॥
अति मन प्रीति बढ़ायकै, रहत समीप लुभाय ॥

चौ०-रहत समीप लुभाय दशन छवि चिम्बुक अति शुभकारीजी
सुभग अंग सब भूषण सोहै रतन जटित छवि भारीजी ॥
कलस सुखनकी सीर लाडिली अति कोमल सुकुमारीजी ॥
व्याकुल अधिक शरीर भयोहै तुम बिन श्रीगिरिधारीजी ॥ १ ॥
भरि भरि लोचन लेत लाडिली श्याम श्याम रटलाईजी ॥
चलहु हरहु यह पीर कन्हाई मैं लखि आई धाईजी ॥
प्यारी विकल सुनत बनवारी उठे तुरत अतुराईजी ॥
प्रेम विबस तब सँग ललिताके चले श्याम सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–प्यारी ढिग आये हरी, देखत कुँवर कन्हाइ ॥
परी विकल तनु सुधि नहीं, रहे मनहिं पछिताइ ॥

चौबोला–रहे मनहिं पछिताइ निजकर नीलांबर दियो टारीजी॥
लीनों सन्मुख वदन सुधारी कियो चेत तब प्यारीजी ॥
सन्मुख दृष्टि परत सकुचाई लइ अंकम बनवारीजी ॥
विकल देखि अँखियाँ भरि आई हरि जनके हितकारीजी ॥१॥
युगल परस्पर लखि सकुचाये रहे विरह मुरझाईजी ॥
कंचन वेलि तमाल सुहाई मानहुँ सुधासिचाईजी ॥
हर्ष दुहूँ दिश फूल लग्योसो फलपरमानँद आईजी ॥
मुर्छेन विरह तुरत विसराई लखति सखी हरषाईजी ॥

१ भौंह। २ शोभा। ३ माथा। ४ ओष्ठ। ५ अमृत।

दोहा–वह चितवन वह हँसि मिलन, वह शोभासुखभार ॥
भई विवस ललिता निरखि, इकटक रही निहार ॥
चौबोला–इकटक रही निहार परस्पर देख देख हर्षावैजी ॥
परन नदेत निमेष तृप्त मन होन न दोऊ पावैजी ॥
ललिता कहत सखिन सों बानी हरवै कहि बतरावैजी ॥
देखि सखी राधा अतुरानी कैसी प्रीति जनावैजी ॥ १ ॥
मिले श्याम मन धीरन लेही देखि रही टकलाईजी ॥
तृषावंत जिमि अचवत नीरा सो पुनि धीरज पाईजी ॥
टारत दृग इत उत कहुँ नाहीं लखत छवी अतुराईजी ॥
जिमि चकोर चंदहि टकलावै सो याकी शरनाईजी ॥ २ ॥
दोहा–होम अग्नि घृत देखिये, सो गति याकी जान ॥
यदपि श्याम श्यामा दोऊ, छवि निरखत मनमान ॥
चौबोला–छवि निरखत मनमान परस्पर हाव भाव मनलावैजी॥
विविध विलास वदन छवि सोहै निरखत मदन लजावैजी ॥
विरह विकल मति तदपि भ्रमावै मन प्रतीत नहिं आवैजी ॥
तृषावंत जिमि देखतनीरा ताहि प्यास अधिकावैजी ॥ १ ॥
चितवत चकित रहत चितमाहीं स्वप्न कि सत्य बतावैजी ॥
देखहु अनदेखे ठहरावै यह संशय मन आवैजी ॥
कबहूँ कहति कौनमैं को हरि यह मन माहिं उपावैजी ॥
भावत यह सुख कहति कौनको लखत चकित रहजावैजी॥२॥
दोहा–समुझि परत नहिं प्रेमकी, निपट अटपटी बात ॥
उरझ सुरझ उरझात पुनि, उरझतही सुरझात ॥
चौबोला–उरझतही सुरझात उतहि हरि रूप इते दृग प्यारीजी॥
लखि सखि मनहुँ करत है रारी यह छवि आनँदकारीजी ॥
अति अहंकार भरे भट दोऊ नेकु न मानत हारीजी ॥

अंग अंग शोभित अति सुन्दर भूषण जाल अपारीजी ॥ १ ॥
अति उदार छबि हरिकी लोभी प्यारीके दृगभारीजी ॥
ललिता संग सखिनको लीने दंपति रही निहारीजी ॥
लखि यह मिलन सखी अनुरागी कहति धन्य पिय प्यारीजी ॥
धनि धनि प्रीति नहीं रुचिथोरी धनि जोरी शुभकारीजी ॥२॥

अथ परस्परअभिलाष लीला।

दोहा—धन्य मिलन धनि यह लखन, धनि धनि धनि अनुराग॥
धनि सुख लूटत परस्पर, धनि धनि भाग सुहाग ॥

चौ०-धनि धनि भाग सुहाग हरषि मुख कहति सकल ब्रजनारीजी
युगल रूप उर राखि राखिचली एकहि थल प्रियप्यारीजी ॥
शोभित श्याम राधिका जोरी अरसपरस बलिहारीजी ॥
हरि रीझे प्यारी छबि देखी भये विवस बनवारीजी ॥ १ ॥
कबहुँ पीतपट डारत वारी कबहुँक मुरली वारीजी ॥
कबहुँकमाल मुक्तकी वारै कबहुँक रहत निहारीजी ॥
कबहुँ सिहात देखि हरि मनमें और न यासम नारीजी ॥
रूप सुधानैनन पुट दीजै नहिं कीजै क्षण न्यारीजी ॥ २ ॥

दोहा—कबहुँ श्याम मुख निरखिकै, रहत मनहिं सकुचाय ॥
कोटि काम जाके बसहिं, सो हरि रूप लुभाय ॥

चौबोला—सो हरि रूप लुभाय नानागति हावभाव मन लाईजी॥
चपल नैन दीरघ अनियारे खंजन वार बहाईजी ॥
प्यारीके अंग माहिं श्यामके लोचन नहिं ठहराईजी ॥
भये श्याम प्यारी वश जैसे गुडी डोर वश माईजी ॥ १ ॥
इकटक नैन अंग छबि जोवे निरखत रूप कन्हाईजी ॥
उठे उठत हैं बैठे बैठत टरत एक क्षण नाईजी ॥

चले चलत सँग तुरत बामके ज्यों तनके वश छाईजी ॥
रही सुरत कछु नाहिं श्यामको देह दशा विसराईजी ॥ २ ॥
दोहा—प्यारीहीके रूपकी, अभिलाषा मन माहिं ॥
मगन श्याम रस बामके, निज तनुकी सुधि नाहिं ॥
चौ०-निज तनुकी सुधि नाहीं पुनि पुनि मन अभिलाष बढाईजी।
राधा रूप देखि सुख पावे मगन प्रेमरस माईजी ॥
मांग लेत भूषण प्रिय पाहीं अपने अंगसजाईजी ॥
सजितरवर कुंडलहि उतारे वेसर नाक सुहाईजी ॥ १ ॥
बेनी गूंथ मांग पुनि कीनी शीशफूल शिर लाईजी ॥
शोभित है प्यारीको जैसी बेंदी भाल लगाईजी ॥
प्यारी दृगते अंजन लीनों निज दृग रेख बनाईजी ॥
जैसे भूषण वसन प्रियाके लीने अपुन सजाईजी ॥ २ ॥
दोहा—प्यारीको पियकी छबी, अतिशय कर मनभाइ ॥
हाहा कारि मुख वचन यों, कहति सुनो सुखदाइ ॥
कहति सुनो सुखदाइ मुकुट पीताम्बर देहु कन्हाईजी ॥
मैं पिय तुमरो रूप बनाऊं यह मेरे मन आईजी ॥
हँसतहि हँसत मांग सब लीनों पियको रूप बनाईजी ॥
गोरे कान्ह सांवरी राधा दोउ मन साद पुराईजी ॥ १ ॥
कबहूं मुरली लेत नागरी अधर धराति मुसकाईजी ॥
मंद मंद पूरति सुर सुन्दर रिझवत पियहिं बजाईजी ॥
कबहुँ बजावत श्याम परस्पर रहत अधर सों लाईजी ॥
पूरत है मन काम सकल हरि युगल रूप सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—हरिको अपने रूप लखि, हरिस्वरूप निजधारि ॥
यह अभिलाष मन करी, कहति सुनो बनवारि ॥
चौबो०-कहति सुनो बनवारि मान कारि बैठो तुम सुखदाईजी ॥

तुमहिं मनाऊं पाँयन परिकै यह मेरे मन भाईजी॥
मोको यह अभिलाष विशेषी देखोंगी सुख पाईजी॥
सुनत श्याम तब मन मुसकाई बैठे मान रुखाईजी॥ १॥
तब प्यारी मन अति अनुरागी हरिसों मान छुड़ावेजी॥
कहति मान तजि प्राणपियारी बार बार समुझावेजी॥
मोते चूक परी यह भारी कहतहि कहा रिसावेजी॥
कहा प्रकृती परी सयानी वृथा मान क्यों ल्यावैजी॥ २॥

दोहा–बहुविधि विनय सुनाय पुनि, चरणन शीश नवाय॥
मानतजतहो क्यों नहीं, कहा बसी मन आय॥

चौबोला–कहा बसी मन आय लाडिली क्यों बैठी गरबाईजी॥
श्याम कियो हठ जानि मनहिंमें यह विचार ठहराईजी॥
प्यारीके उर माहिं विरहरस नेकु देहुँ उपजाईजी॥
नहिं बोलत मानतहै नाहीं बैठ रहे निठुराईजी॥ १॥
बार बार नख भूमि करोवै हँसत न बोलत नाईजी॥
लखि यह चरित हँसति तब प्यारी चकित रही मनमाईजी॥
कहति सुनहु पिय अब हँसि बोलो तजहु मान सुखदाईजी॥
कोटि चन्द्र छबि बदन दिखावो दीजै खेल मिटाईजी॥ २॥

दोहा–सूधे नहिं चितवत हरी, हँसति प्रिया सुखपाइ॥
वदन विलोकत अति मगन, लखि तिया रूप कन्हाइ॥

चौ०-लखि तिय रूप कन्हाइ मगन मन भई विरह रस प्यारीजी॥
अपनो रूप पुरुषको देखी अति मन आनँद भारीजी॥
मैं नारी वे पुरुष बिहारी कै मैं पुरुष वे नारीजी॥
भई विकल संभ्रमता भारी तनुकी सुरत विसारीजी॥ १॥
निरखत श्याम विरहकी शोभा बोलत नाहिं कन्हाईजी॥
कबहुँ कहति अब मान करो जिन नीके लागत नाईजी॥

कबहुँ अंक[1] भरि उरसों लावत फिर पर पांय मनाईजी ॥
कबहुं दोऊ कर जोरि मनावै कबहुँ निरख रह जाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कबहूँ पाछे ह्वैरहति, कबहुँक आगे जाय ॥
कबहुं उठति बैठति कबहुं, कबहुँक लेतबलाय ॥
चौबोला–कबहुँकलेत बलायविरहरस भरिगयो हियेअपारीजी॥
कबहुं कहति है पीय श्यामसों कबहुं कहति है प्यारीजी ॥
धीरज धरत न हीय निकटही भई विरह वशभारीजी ॥
भई विरह व्याकुल जब बाला तबहिं हँसे बनवारीजी ॥ १ ॥
लई तुरत उर लाय श्याम कहि ख्यालहि में अकुलाईजी ॥
तुमहीं मानकरन मुहिं भाष्यो धीरज राख्यो नाईजी ॥
मैंतो तुमको भाव बतायो तुम काहे डर पाईजी ॥
देखि विरहव्याकुल मुरझाई पुनि पुनि अंकमलाईजी ॥ २ ॥
दोहा–अमिय[2] वचन शीतल करी, विरहतापदियोखोय ॥
मिट्यो विरह हरषित भई, रही श्याम तनु जोय ॥
चौ०-रही श्याम तनुजोय कहतिं पिय भलो यह मानदिखायोजी
मेरे मन अभिलाष पुरायो लखि मुहि आनँद आयोजी ॥
त्रियको रूप श्याम छबि देखी अतिमन हरष बढ़ायोजी ॥
दंपति[3] हरष मनहिं मनकीनों कुंज चलन मन भायोजी ॥ १ ॥
प्यारी देख्यो मुकुर[4] आपनिज नटवर रूप लखाईजी ॥
हँसतहि हँसत मेट सब अपनो लीनो रूप बनाईजी ॥
युगल नागरी रूपबने दोउ चले कुंज वनमाईजी ॥
इक गोरी इक वरण साँवरी शोभा परम सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–अति विचित्र भूषण वसन, अंग अंग छबिजाल ॥
शोभा अवधि विलास निधि, श्रीराधा नँदलाल ॥

---

१ छाती। २ अमृत। ३ श्रीकृष्ण-राधा। ४ दर्पण।

चौबोला–श्रीराधा नँदलाल जात चले ब्रज बीथिन समुहाईजी॥
लखिनहिं सकत नारि नर दोऊ अति छबि कहत न आईजी॥
नँदनन्दनतिय छबि अति सुन्दर राधा संग सुहाईजी॥
बार बार पियरूप निहारी प्यारी मन सुखपाईजी॥ १॥
कहति सखी देखे जिन कोई बूझत कहा बताईजी॥
तीन भुवन शोभा सुखकी निधि किहिं विधि रहत छिपाईजी॥
पगनूपुर बिछिया छबिछाजै गजगति चलन सुहाईजी॥
श्याम गौर सुन्दर सुखजोरी उपमा बरनि न जाईजी॥ २॥

दोहा–भुजा कंठधरि परस्पर, चले युगल बनजात॥
या छबिको उपमा नहीं, निरखत मदन लजात॥

चौबोला–निरखत मदन लजात उतहिते चंद्रावलि सखिआईजी
दूरहिते लखि रही निहारी इकटक नैन लगाईजी॥
एक राधिका दूसरिकोहै पहिचानति मैं नाईजी॥
ब्रज युवतिन इक इक करि जानू ये धौं नई कोउ आईजी॥
और गामते यह कोउ नारी आईहै ब्रज माईजी॥
अतिही श्याम सलोनी सुन्दर अबलौं देखी नाईजी॥
चन्द्रावलि आवत उत देखी राधा मन सकुचाईजी॥
रही श्याम मुख जोय लाड़िली फेरति ब्रजहि कन्हाईजी॥ २॥

दोहा–करते कर छूटत नहीं, रही प्रेम वश आय॥
उत आवत देखी सखी, मन मन गई लजाय॥

चौबोला–मन मन गई लजाय राधिका इत हरि नेह लुभाईजी॥
उत चन्द्रावलि इन रँगराची भरी हरी रस माईजी॥
कहति निकट देखोधौं जाई कहूँ कहांते आईजी॥
देख श्याम मुख छबि मुसकाई जानि लई चतुराईजी॥ १॥
इनते निधरक और न कोई कैसी बुद्धि रचाईजी॥

निजकर इन्हें विधाता जानै भरे दोऊ चतुराईजी ॥
और कहा इनको कोउ जानैं मैं पहिचानति नाईजी ॥
सकुच छांडि अब इनहिं जनाऊँ जानति क्यों निदराईजी ॥२॥
दोहा–जो इनको टोकों नहीं, जीत मनहिं मन जाइ ॥
प्रगट करों इनके गुणन, करी इन्हें चतुराइ ॥
चौ०-करी इन्हें चतुराइ बहुरि यह बाम रूप कब धारीजी ॥
आज प्रगट कहि लाज लजाऊँ कहन लगी सुन प्यारीजी ॥
कहि राधा यह कौन तिहारे संग सांवरी नारीजी ॥
नहिं देखी इनको कबहूँ हम अति सुन्दरि सुकुमारीजी ॥ १ ॥
को है इनको नाथ कहो किन कौन गोपकी जाईजी ॥
भलो बन्यो है साथ जैसि तुम तैसि मिली यह आईजी ॥
मथुराते यह आजहिं आई इनसों प्रीति सवाईजी ॥
दधि बेचन गइ तहाँ एक दिन ललिताके सँग माईजी ॥ २ ॥
दोहा–उनहींके सँग हम मिली, तबहीं भई चिन्हारि ॥
वहि सनेह यह जानि मन, आई है सुकुमारि ॥
चौ०-आई है सुकुमारि गेहते इतहीको चलि आईजी ॥
येऊ आय मिली मग मांई रही दोऊ बतराईजी ॥
सुनि राधा यह सहज सुहाई शील रूप अधिकाईजी ॥
इनको ब्रज में क्यों न बुलावो निकटहि देहु बसाईजी ॥१॥
कै वृषभानु पुरा कै गोकुल सहित कुटुंम बुलावोजी ॥
तुमहो नवल नवल हैं येऊ दोऊ मिल हरिहि रिझावोजी ॥
हमहूंको अब इनहिं मिलावो नीके वदन दिखावोजी ॥
हमहिं देखि सकुचत कत प्यारी कत घूंघट छिटकावोजी ॥२॥
दोहा–ऐसे कहि चंद्रावली, गह्यो श्याम करजाय ॥
यह कहुँ अबलों नहिं सुनी, तियसों तिय सकुचाय ॥

चौबोला–तियसों तिय सकुचाय पियारी कहा लाज रहिधारीजी
घूंघट पट हातो कर दीनो दीनो वदन उघारीजी ॥
अपने दृगन सफल करि माने मुख छबि रही निहारीजी ॥
चितवत क्यों नाहिं वदन उघारी कहाति बारही वारीजी ॥ १ ॥
कहानाम मुख वचन कहो किन मथुरा बास तुम्हारोजी ॥
कियो राधिका यह उपकारो दुर्लभ दरश तिहारोजी ॥
कह सकुचत हमसों तुम प्यारी मानों वचन हमारोजी ॥
गहि चिबुक बूझति चंद्रावलि कछु मुख वचन उचारोजी॥ २ ॥
दोहा–दे चुटकी बोली सखी, इत चितवहु तुम वाम ॥
नैन नैन जोरत नहीं, रहे लजाये श्याम ॥
चौबोला–रहे लजाये श्याम देखि चंद्रावलि मन मुसकाईजी ॥
हँसि बोली राधा सों वाणी धनि तुम प्रीति लगाईजी ॥
ऐसी सखी मिली यह तुमको तबहिं हमें विसराईजी ॥
इनसों प्रीति करी तुम तबते चतुर भई अधिकाईजी ॥ १ ॥
हमसों कबहूँ नाहिं जनाई अबलों कहांलकोईजी ॥
एकहि इन्है विधाता कीनी तीनलोक निधि सोईजी ॥
रहो कुशल येऊ अरु तुमहूँ क्यों न प्रीति दृढहोईजी ॥
जानेहो चले जाहु वनहिं तुम आपस्वारथी दोईजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनि चंद्रावलिके वचन, दंपति कियो विचार ॥
हर्षि मिले उरलायकहि, यासों नाहिं उबार ॥
चौबोला–यासों नाहिं उबार हरषिमन चले कुंज समुहाईजी ॥
उभय वाम बिच कुँवर कन्हाई सो छबि कहत न आईजी ॥
वाम भाग प्यारीको लीने दक्षिण सखी सुहाईजी ॥
द्वैदामिनि बिच नवघन[3] मानो निरखत मदन लजाईजी ॥ १ ॥

१ मुख। २ आंखैं। ३ बादल।

कैधौं कंचन बेल सुहावन मनुतमाल लपटाईजी ॥
सुमन पुंज अलिगुंज सुहाई गये कुंजबन माईजी ॥
नाना वरण कुसुम तरु सुन्दर अति विचित्र छबि छाईजी ॥
वहत समीर त्रिविध सुखदाई पावन भूमि सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कुंज पुंज छबि देखि शुभ, सहचरि सहित सुहाय ॥
विलसत विविध विलास लखि, कोटिक मदन लजाय॥
चौ०-कोटिक मदन लजाय शोभित शुभ गौर श्याम छबिछाईजी
निरखत छबिहि सखी तृणतोरी आनँद उर न समाईजी ॥
सने रसिक दोउ रसरसकाई बसे निशा बन माईजी ॥
तैसोइ विपिन सुहावन सुन्दर तैसिय पवन सुहाईजी ॥ १ ॥
तैसिय निर्मल सुभग चाँदनी तैसिय सुख छबिछाईजी ॥
तैसोइ कुंज निवास तेसोई यमुना पुलिन सुहाईजी ॥
सकल सुखनकी राशि युगल छबि रँग भीने सुखदाईजी ॥
बनहिं धाम सुख रैन विहाई उठे प्रात अलसाईजी ॥ २ ॥
दोहा—उठे प्रात सुन्दर सुखद, अति छबि बरनि न जात ॥
बैठे रंग भीने युगल, अलसाने दोउ गात ॥
चौबोला—अलसाने दोउ गात परस्पर अंगन भुजा लगाईजी ॥
अरस परस दोउ रूप निहारे रीझत अति मनमाईजी ॥
अरुण नैन शोभित अति सुन्दर सो छबि कहत न आईजी ॥
लटपटी पाग रसमसी भौं हैं कुंडलकी झलकाईजी ॥
त्रिया बदन छबि श्याम निहारी अति मन आनँद भारीजी ॥
उरझीलट मुक्तन निरवारत अरस परस बलिहारीजी ॥
आलस नैन सुरत रस पागे निश जागे पिय प्यारीजी ॥
नख शिख सुन्दर पिय अरु प्यारी मदन रती दोउ वारीजी ॥ २ ॥
दोहा—युगल बिहारी कुंजते, चले परमसुख पात ॥

छबि निरखत अति हर्षि मन, विहारन बलि बलि जात
चौ०-विहारन बलि बलि जात सुन्दर राधा कुँवर कन्हाईजी ॥
जीते सुन्दर रति पति कामा चले धाम[1] हरषाईजी ॥
सुन्दर अवलोकन[2] मृदु[3] बोलन सुन्दर चाल सुहाईजी ॥
सुन्दर सुखके धाम मनोहर उपमा कहत न आईजी ॥ १ ॥
लीला ललित श्याम सुन्दरकी अति विचित्र अभिरामाजी ॥
जो सुख दुर्लभ शिव सनकादहि सो बिलसत ब्रजबामाजी ॥
सहचरी[4] सहित बिलस रस सुन्दर गये युगल ब्रजधामाजी ॥
श्याम हृदयमें बसत पियारी बसत प्रिया उर श्यामाजी॥ २ ॥

अथ शृंगारवर्णन लीला ।

दोहा-अंग शृंगाराति लाडिली, बैठ भवन निजधाम ॥
रतिरण जीते पीय सों, बांटति मनहुँ इनाम ॥
चौ०-बांटाति मनहुँ इनाम वसन नव दिये अंग पहराईजी ॥
बाजूबंद भुजनको दीने श्रवण तरुवनबकसाईजी ॥
कर कंकण दीने उरहारा बेसर नाक निकाईजी ॥
अंजन दृगन दियो अति हित करि बेंदी भाल लगाईजी ॥ १ ॥
रची मांग सम भाग ताहि मधि रेख सिंदूर लगाईजी ॥
जिमि यमदूत जानि हरि बेमुख बांधति कुचन बनाईजी ॥
दियो हरषि बीरा अधरनको अधिक अरुणता आईजी ॥
श्रीवृषभानु कुँवरि छबि छाई राजति सदन सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा-चंद्रवदन अरु मृगनयन, भ्रुकुटी कुटिल कलंक ॥
अलक झलक सुन्दर जनु, शोभित रजनी[5] अंक ॥
चौ०-शोभित रजनी अंक दशन मनु कुंदकली छबि छाईजी ॥
तिल प्रसून[6] नासा शुभकारी अधर अनूप सुहाईजी ॥

१ घर। २ देखन। ३ कोमल। ४ सखी। ५ रात्रि। ६ फूल।

शोभित तिल चिबुकपर सुन्दर सो छवि कहत न आईजी ॥
लजत कपोत कंठ लखि दरषित पीक लीक झलकाईजी ॥१॥
बाहु मृनाल लाल छविछाई पाणि सरोज सुहाईजी ॥
कुच युग चक्रबाक जनु नीके रोमावलि तट छाईजी ॥
त्रिबली तरल तरंग सुहाई नाभि मनोहरताईजी ॥
कृष कटि किंकिणि युत अति सुन्दर सो छवि वरनि न जाईजी

दोहा–रंभ खंभ युग अति छवी, पग नूपुर छवि भार ॥
लजत कामगज चलन लखि, पायलकी झनकार ॥

चौबोला-पायलकीझनकार चलनगति अति छवि परमसुहाईजी
बरनेको पद पंकज शोभा हरि मन भ्रमर लुभाईजी ॥
निगम नेति नित गावत जाको सो राधा वश माईजी ॥
ज्यों चकोर चंदा वश त्योंहीं प्यारी वशहि कन्हाईजी ॥ १ ॥
देखे विन क्षण रह्यो नजाई प्रेम विवस बनवारीजी ॥
उझकि झरोखाझांके आई अंग शृंगारति प्यारीजी ॥
भूषण वसन अंग अंग शोभा रुचि रुचि सकल शृंगारीजी ॥
ले दर्पण देखति छवि प्यारी श्री वृषभानु दुलारीजी ॥ २ ॥

दोहा–रहे श्याम इकटक निरखि, दीठ झरोखालाय ॥
देखत प्यारीकी छविहि, उरआनंद बढ़ाय ॥

चौबोला-उर आनंद बढ़ाय लखत हरि प्यारी छविगिरिधारीजी ॥
इक कर दर्पण इक कर अचरा कजरा दुहुँन समारीजी ॥
कबहुँ शीशके फूल सँवारे कबहूँ अलक निरवारीजी ॥
कबहूं आड रचति केसरकी वेसर कबहुं निडारीजी ॥ १ ॥
कबहूं रचति सुमन सों वेणी मुक्तनमाल सुधारीजी ॥
कबहूँ रिस करि भौंह सकोरे रहि निज नैन निहारीजी ॥
इकटक दर्पण ओर निहारै नेकु बदन नहिं टारीजी ॥

भई विवस प्रतिबिम्ब निहारी लखि अपनी छबि प्यारीजी ॥२॥

दोहा–अति आनँद भोरी भई, नेकु देह सुधि नाहिं ॥
यह आई कहांते बधू, कहति मनहिं मन माहिं ॥

चौ०-कहति मनहिं मन माहिं सुन्दरी कहांते यह चलि आईजी॥
करते मुकुर दूर नहिं टारै कछु मन माहिं रिसाईजी ॥
कहूँ श्याम देखे जो याही तुरत होय वश माईजी ॥
मेरे कहा चलै या आगे जो मोहन मन भाईजी ॥ १ ॥
अति सुन्दर बरनारि सुहावनि कौन लोकते आईजी ॥
कोऊ गोप कुमारि रूपकी ऐसी ब्रजमें नाईजी ॥
कैधौं आई आपहि सुन्दरि कै कोउ ल्यायो याईजी ॥
सो वैरीहै मेरो अतिशय जो ल्यायो ब्रजमाईजी ॥ २ ॥

दोहा–इन शोभा हरिकी सुनी, आई सो मन जान ॥
जैसी सुन्दरि यह बधू, तैसेइ सुन्दर कान्ह ॥

चौ०-तैसेइ सुन्दर कान्ह मनहिंमन बार बार पछिताईजी ॥
पूँछति प्रतिबिम्बहि सकुचाई कहो कहांते आईजी ॥
नाम कहाहै सुन्दरि तेरो इहां कौन तोहिं ल्याईजी ॥
कौन ग्राम है तेरो प्यारी कहो सो मोहिं सुनाईजी ॥ १ ॥
मति सकुचो कहि सौंह दिवाई बोलति क्यों तू नाईजी ॥
हम तुम दिनन एक हैं गोरी तुम न कमीं अधिकाईजी ॥
इहां अकेली तू क्यों आई काउअसंग न ल्याईजी ॥
सुन्यों नहीं अन्याव इहांको यह कहि ताहि डराईजी ॥ २ ॥

दोहा–बरजोरी हरि करत हैं, भूषणलेत छिनाय ॥
जो तू अपनी पतिचहै, लौटिघरहि को जाय ॥

चौ०–लौटि घरहि को जाय कहो तोहिं मानचहै मतिमाकोजी॥
आई है तू आजहि ब्रजमें तू उनको कहा जानैजी ॥

मनभाई जो करत सबनसों ऐसो ढीठ न आनैजी ॥
त्रिभुवनमें ऐसो कोउ नाईं जैसो ब्रजमें कान्हैजी ॥ १ ॥
नेकु नहीं काऊ डर माने कंसहु ते न डराईजी ॥
उनके गुणनीके मैं जानूं कहों तोहिं समुझाईजी ॥
हम जावति मथुरा दधि वेचन घेरलई मगमाईजी ॥
तोरे हार दिये बगराई गोरस लियो छिनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–हम अनेक तू एक है, वेगि जाहु गृह वाम ॥
प्यारीकी वाणी सुनत, हँसत मनाहिं मन श्याम ॥

चौ०-हँसत मनाहिं मन श्याम चकित भयेसुनतवचनसुखदाईजी
जानि दूसरी तिय प्रियपारी जात न ढिंग सकुचाईजी ॥
पुनि पुनि दृग ठहराय निहारे अति मनहरष बढ़ाईजी ॥
देखत मुकुर प्रिया करमाई लखत हरी मन लाईजी ॥ १ ॥
प्यारीके रस वश गिरिधारी देखि छबी हरषावेजी ॥
सुनि सुनि वचन हृदय सुख मानत आनँद उर न समावेजी ॥
धनि प्यारीके वचन मनोहर सुनत श्याम सुख पावेजी ॥
धनि धनि राधा रूप धन्य हरि इकटक नैन लगावेजी ॥ २ ॥

दोहा–धनि धनि वह प्रतिबिंब है, धनि छबि मुकुर निहारि ॥
धनि धनि भ्रम धनि प्रेम वह, धनि धनि तनमन वारि॥

चौबोला–धनि धनि तन मन वारि धन्यश्री राधा हरिमन भावेजी
रमा सहित विलास नित सुख पुर वैकुंठ भुलावेजी ॥
मिलन विछुरन सुख विरहरस क्षणहिं प्रती उपजावेजी ॥
ब्रजविलास सुख रास हरीको नित्यनयो श्रुति गावेजी ॥ १ ॥
नवल प्रीति नितनव सुख शोभा नितनव रूप अपारीजी ॥
नितनव रस बिलसत नवलायुग मोहन राधा प्यारीजी ॥
करत रसीली बात लाडिली प्रतिबिंबहि सुकुमारीजी ॥

सुनि सुनि अति हरषात कन्हाई बिहारन जन हितकारीजी ॥२॥
दोहा—भई विवस तनु सुधि नहीं, रहि प्रतिबिम्ब निहार ॥
क्यों सुंदरि बोलत नहीं, बूझति बारहिबार ॥
चौबोला—बूझति बारहिबार सयानी बोलत क्यों तू नाईजी ॥
हँसे हँसाति हेरतते हेरै मौहन मौहतनाईजी ॥
करति परस्पर हमसों हाँसी दे किन नाम बताईजी ॥
मैं तुमको नीके करजानी भरी परम चतुराईजी ॥ १ ॥
अति सुन्दर है रूप तिहारो लखि मन रहत लुभाईजी ॥
शोभित वेसर नाक मनोहर अधरन पर अरुणाईजी ॥
दशन दमक दामिनी लजाई चिबुक अति छविछाईजी ॥
काहे ऐसे मुखकी वाणी हमें सुनावति नाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कौन तात को मात है, हो तुम काकी नारि ॥
कैरसके रिसमें भरी, सन्मुख रही निहारि ॥
चौ०—सन्मुख रही निहारि कछुकरिस कछु मनमें भय पाईजी॥
नेकहु धीर न धरत नागरी कहति मनहिं मन झाईजी ॥
अति गरबीली बाम सुन्दरी यह तो बोलति नाईजी ॥
देखतही याके वश ह्वैहै वे हरि कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
भई सौति यह आय हमारी करिहै वश बनवारीजी ॥
यो वियोग उपजाय हिये में शोचरही मन प्यारीजी ॥
रही दीठ दर्पणहीं लाई नेकु न इत उत टारीजी ॥
उरमें भयो विरह दुख भारी लखि रीझे गिरिधारीजी ॥ २ ॥
दोहा—चले श्याम प्यारी निकट, लखि छवि रहे लुभाय ॥
मूँदे लोचन कमल कर, औचक पाछे आय ॥
चौबोला-औचक पाछे आय कन्हाई रहे दृगन कर लाईजी ॥
चकित भई प्यारी मन माहीं आये जानि कन्हाईजी ॥

डरत रही मनमें मैं जाको मिले आय हरि ताईजी ॥
तब कछु सुरति भई मन माई वह तोहीपर छाईजी ॥ १ ॥
सकुच दुराव करति पिय पाही मन मन दोउ मुसकाईजी ॥
जान बूझिकै पिय घनश्यामहिं सखियन टेर सुनाईजी ॥
श्याम पिया लोचन करलाई बेनी कर परसाईजी ॥
शोभा कहा कहै कबि कोऊ बनत न बरन बताईजी ॥ २ ॥

दोहा–अति आनँद राजत दोऊ, उपमाको नहिं और ॥
मर्कत मणि कुंदन किधौं, लिये घनतड़ित अंकोर ॥

चौ०-लिये घन तड़ित अंकोरकी शोभा निजसुख तनुधर आईजी
उपमा बरनि न जात युगल छबि विहारनके मन भाईजी ॥
कोमल कर तिय नैन कन्हाई रहे मूंदि सुखदाईजी ॥
अतिहि विसाल चपल अनियारे नहिं समात कर माईजी ॥१॥
खिन खोलत खिन ढकत कन्हाई प्यारी मन मुसकाईजी ॥
जिमि मणिधर मणि प्रगट करत पुनि फणतर लेत छिपाईजी॥
श्याम अँगुरियन अंतर माई नैन दुरे दरशाईजी ॥
मर्कत मणि पिंजरामें मानों युग खंजन रहे आईजी ॥ २ ॥

दोहा–करकपोल तरुअन छबी, शोभा सहज सुहाय॥
मनु युग कमल मिले शशिहि, अतिही मन सुखपाय॥

चौबोला–अतिही मन सुखपाय नागरी कुँवरि राधिका प्यारीजी
नागर नवल सुजान कन्हाई लखि उपमा सब हारीजी ॥
अपने करन पकरि कर पियके लीने नैन उघारीजी ॥
कीने सन्मुख आनि श्यामको पाणि पकरिकै प्यारीजी ॥ १ ॥
मैं जुरही सखियनके धोखे भले भले जु कन्हाईजी ॥
भले आय औचक बिनजाने मूंदे लोचन आईजी ॥
कैसे दौरि पैठ गृह आये नेकहु जान न पाईजी ॥

तुम हौ तिय मनहरण कन्हाई तुम गति जानि न जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—तब हरि मन अति हर्षकरि, लई प्रिया उरलाय ॥
मुकुरकथा मुख भाषि सब, दीनी श्याम सुनाय ॥
चौबोला—दीनी श्याम सुनाय नागरी सुनतहि कछु मुसकाईजी॥
चितै नयन कछु मनहिं लजाई कहती सुनहु कन्हाईजी ॥
मैं तो अपने मन्दिर माई सहज लखति परछांईजी ॥
तुम्हरी महिमा पिय को जानै अति सुन्दर सुखदाईजी ॥ १ ॥
हँसत चले तब कुँवर कन्हाई भक्तनके सुखदाईजी ॥
हरषि गये उत नँदकेलाला इत प्यारी हरषाईजी ॥
जब प्रतिबिंब सुरति जिय आवै तबहिं सकुचि रह जाईजी ॥
तिहिं अंतर सखियन सँगल्याई चन्द्रावलि तहँ आईजी ॥ २ ॥
दोहा—लखि प्यारी आदर कियो, बैठारी हितमान ॥
सादर सन्मानी सबै, दिये हर्षि कर पान ॥
चौबोला—दिये हर्षिकर पान करन सुख चाहत पिय सँममाईजी॥
गदगद मुखते बैन बारही बार कहति सुख पाईजी ॥
झलक प्रेम जल नैनन छायो आनँद उर न समाईजी ॥
कहति सखी सुनि राधा गोरी आज कहा हरषाईजी ॥ १ ॥
इतनो आदर कबहुँ न पायो हम तेरे नित आईजी ॥
पायो आज परचो कछु तेरो कै मिले तोहिं कन्हाईजी ॥
उमँग्यो प्रेम हरष उरमाई हमें कहति क्यों नाईजी ॥
सुनि सखियनके वचन सयानी कहति प्रिया हरषाईजी ॥ २ ॥
दोहा—आये मेरे आज हरि, महिमा कही नजाइ ॥
सुनो सखी तुमसों कहों, याविधि मिले कन्हाइ॥
चौ०-याविधि मिले कन्हाइ सखी मैं अपनो अंग शृँगारीजी ॥

१ दर्पण । २ परछाहीं ।

लिये मुकुरकर वदन निहारी तब आये गिरिधारीजी ॥
पाछे आय भये हरि ठाढे अतिहिं चतुर बनवारीजी ॥
ताहि कहत सखि आवत लाजै भयो मोहिं भ्रम भारीजी ॥१॥
लखि अपनो प्रतिबिंब भुलानी आन तीय कोउ जानीजी ॥
पाछेते हरि आय अचानक मूंदे दृग सुखदानीजी ॥
भई चौंकि चकृत जबहीं मैं तबहिं सुरत उर आनीजी ॥
लागी देन उरहनो तुमको हरिहि जानि सकुचानीजी ॥ २ ॥

दोहा—हिय हरषीं सब गोपिका, सुनि राधा मुख बात ॥
कहत धन्य तू लाडिली, पुलकि प्रफुल्लित गात ॥

चौ०-पुलकि प्रफुल्लित गात हराषि मन कहति सकल मुसकाईजी।
श्याम संग सुख लूटतहैरी अब यह छूटत नाईजी ॥
श्याम भये तेरे अनुरागी तू उनके मन भाईजी ॥
तेरो अंतर हित पहिचाँने प्रीति विवस सुखदाईजी ॥ १ ॥
क्षण नहिं रहत तोहिं बिन देखे तेरे घर हरि आयेजी ॥
चतुर रूप गुण तुम दोउ नीके सबहिनके मन भायेजी ॥
आज श्याम मेरे घर आये बड़े भाग्यकर पायेजी ॥
देख दरश नैनन सुख पायो करिहौं आनँद बधायेजी ॥ २ ॥

दोहा—यह तुम्हरो उपकार अलि, आनि मिलाये धाम ॥
उन मेरे अपराध सब, क्षमा कियो घनश्याम ॥

चौबोला—क्षमा कियो घनश्याम सखी अब दशा भई यह मोरीजी
नंद नँदन पिय नैन समाये मोहिं न भावत ओरीजी ॥
सुनि यह राधाकी मुख बानी कहति हराषि सब गोरीजी ॥
नंद नँदन वृषभानु किशोरी चिरजीवहु यह जोरीजी ॥ १ ॥
प्रेम भरे शोभित छबि आछे भरे आनंद अपाराजी ॥
युगल माधुरी भरे सकल रस सकल सुखनके साराजी ॥

रूप रसिक गुणनिधि अति दोऊ करत अनेक विहाराजी ॥
विहारन हरिजनकें सुखदाई राधानंद कुमाराजी ॥ २ ॥

अथ नयनअनुराग लीला।

दोहा–भरी हरी अनुरागमें, सब मिल ब्रजकीनारि ॥
लोक वेद कुलकानि सब, दीनी सबै विसारि ॥

चौबोला–दीनी सबनविसारि सुनतनाहिं कोऊ कहतकहारीजी॥
सास ननदगारी देहारी सो न सुनत ब्रजनारीजी ॥
सुत पति नेह जगत यह छोरचो लोकरीति सब डारीजी ॥
जिमि अहितजत कंचुकी सो पुनि बहुरि न ताहिनिहारीजी ॥
जैसे नदी समुद्रहि जावै तृणन धार ठहरावैजी ॥
जैसे सुभट खेतचढि धावै सती बहुरि नहिं आवैजी ॥
जैसे भजै नन्द नन्दनको नेकु न मन डरल्यावैजी ॥
तैसेहि प्रेम विवस गिरिधारी युवतिनको मनचावैजी ॥ २ ॥

दोहा–ब्रज वनिता मनमें बसत, बिन देखे न सुहाइ ॥
सखिन सहित बैठी प्रिया, आये तहां कन्हाइ ॥

चौबोला–आये तहां कन्हाइ भीर लखि सकुचरहे नँदलालाजी॥
ताते निकट गये हरि नाईं ढिग बैठी ब्रजबालाजी ॥
ताही मग निकसे सुखदाई नटवर रूप विसालाजी ॥
शीश मुकुट श्रवणन कुंडल छबि उर चटकीली मालाजी ॥१॥
पीत बसन कटि काछनि सोहै तनु द्युति श्याम तमालाजी ॥
बंक विलोकनि मृदु हँसनि छबि चलत चटकनी चालाजी ॥
रसिक नवल नागर छयल हरि अंग अंग छबि लाजाजी ॥
औचक देखि श्याम ब्रजबाला भई चकित बेहालाजी ॥ २ ॥
दोहा–जात चलत ब्रज खोरि हरि, कोटि काम छबिजाल ॥

फिर फिर हेरत तियन तन, फेरत कमल सनाल ॥
चौ०-फेरत कमल सनाल तिलक मृग मद शोभा अति पाईजी ॥
शोभित सुभग अलक घुँघराकी सो छवि परम सुहाईजी ॥
मृदु मुसकाय मरोरत भौंहैं नैनन सैन चलाईजी ॥
निरखत ब्रज युवती बिधि कानी दुख सुख मन अकुलाईजी ॥१॥
गये कल्पतरु छांह कन्हाई रूप ठगोरी लाईजी ॥
लागीं कहन परस्पर बाणी मन अनुराग बढ़ाईजी ॥
सुनहु सखी यह कुँवर कन्हाई लेतरहि मनहिं चुराईजी ॥
क्षण क्षण प्रति छबि और बतावै शोभा कहत न आईजी ॥२॥
दोहा–मनहिं बिको हरि हाथ सखी, हम कछु भेद न पाइ ॥
नैननि सांटी नैनसों, कियो मोल से नाइ ॥
चौ०-कियो मोलसे नाइ आपही मृदु मुसकन धन पायेजी ॥
परी रही हों बीचहिमें मैं नैना बड़ी बलायेजी ॥
अब रुचिमान लई मनहीं मन भयो श्यामको जायेजी ॥
फिरत नहीं इतहीको फेरो मैं पचिहारि बुलायेजी ॥ १ ॥
अब मनहित हरिही सों कीनो भेद कह्यो सब जाईजी ॥
मनतो गयो नैनहैं मेरे तिन हरि लिये बुलाईजी ॥
यह वहां रहत करत अब जोई सोई कहत कन्हाईजी ॥
जितहि चलत हरि तितही जाई सन्मुख रहत सदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–रहे न काऊ कामके, भये श्यामके जाय ॥
मान अपमान न मानहीं, रहत सदा सुखपाय ॥
चौ०--रहत सदा सुख पाय जगत उपहास सहत हैं भारीजी ॥
कह्यो न मानत मेरो आली लाज संक सब डारीजी ॥
लोक लाज कुलकानि नशाई बात न सुनत हमारीजी ॥
कहँ लगि कहों सुनत कछु नाहीं कहि कहि मैं पचिहारीजी ॥१॥

ललित त्रिभंग छबीपर अटके मोसों तोरि सगाईजी ॥
हरि अब तिनको छोरत नाहीं बैठ रहत तिनमाईजी ॥
राखे बाँधि अलककी डोरी भाजजाय कहुँ नाईजी ॥
अब यह लोचन[1] नाहिं हमारे भये श्यामके जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बसे श्याम रसरूपये, श्याम बसे इन माहिं ॥
नैननहींको दोष यह, दोष श्यामको नाहिं ॥

चौबोला—दोष श्यामको नाहिं लखी इन तनक मंद मुसकानीजी
हठ करि भये गुलाम श्यामके कीनी जो मन मानीजी ॥
बोली अपर एक ब्रजनारी सुनहु सखी मम बानीजी ॥
लखत जबहिं ये कुँवर कन्हाई उठ धावत हित जानीजी ॥ १ ॥
मेरो हटक्यो नेकु नमाने लखत छबी ललचाईजी ॥
ज्यों खग छूटत फंद वधिकतें उडत वेग अधिकाईजी ॥
जाय सघन बन मांझ समावे फिरत न बहुरि डराईजी ॥
त्यों दृग मोते छूटपराने हरि छबि बन रहे जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—वह छबि निरखत हरषि उर, अब वे इतहि न आत ॥
यदपि सुधा[2] छबि पिवत वे, तदपि नाहिं अघात ॥

चौबोला—तदपि नाहिं अघात न जानी कहा इनके मनभाईजी ॥
देख श्याम तनु छबि अधिकाई रहे तहाँ ललचाईजी ॥
लेत न बनै तजो नहिं जाई लखि निज सुधि विसराईजी ॥
रहे विचारहिं मांझ भुलाई लेत न तज इत आईजी ॥ १ ॥
नैनन चोर सदन हरि मुखकी छबि धन चोरी जावेजी ॥
तजत बनत नहिं एकहु तामें लेत न एकहु आवेजी ॥
गये छबि चोरन हरिके मुखकी चोरतमें न बनावेजी ॥
हरि चितवन बांधे इन धरिके अब नहिं छूटन पावेजी ॥ २ ॥

---

१ आंखैं । २ अमृत ।

दोहा–निदरि गये सो फलमिल्यो, अब वहां रहे बँधाय ॥
नाहिं मान्यों हमरो कह्यो, अब कहा चलतबसाय ॥
चौ०-अब कहा चलत बसाय कहति इक औरहि गोप कुमारीजी
सखि ये नैन किधौं वटपारी इन सब बात विगारीजी ॥
कपट नेह हमसों करि भारी करि गुरुजन ते न्यारीजी ॥
श्याम दरशलाडू करदीनो सब कीनी हम सारीजी ॥ १ ॥
प्रेम ठगोरी शिरपर छाई संगहि संग लगाईजी ॥
विरह फांसि गरडारि हमारे रही देह सुधि नाईजी ॥
कुललज्जा संपदा हमारी सो सब लई छिनाईजी ॥
लगन गांठ दृग छूटत नाहीं परी मोह बनमाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सुमिर नैन गुण मनहिं मन, नेह जीवनहिं जाइ ॥
कासों कहिये बात यह, भये नैन दुखदाइ ॥
चौबोला–भये नैन दुखदाइ हमाहिं सखी दियोविरहदुखभारीजी
आपसदा दरशन सुखलेहीं करी मोहि इन न्यारीजी ॥
इहि विधि निदरति सकल दृगनको भरी प्रेम ब्रजनारीजी ॥
होवति मगन विरह रस सुख मैं नैननि श्याम निहारीजी ॥१ ॥
यही भजन यह ध्यान श्याम गुण रूप कथा हरिकेरेजी ॥
नाहिं जानति कछु आन सुन्दरी निशिदिन सांझसवेरेजी ॥
कोऊ कहति नैन खग मेरे फँसे फंद हरिकेरेजी ॥
छवि कण लखि ढिग गये गये फंद चितवनके उरझेरैजी॥ २ ॥
दोहा–हरि छविपर अटके नयन, अति विलाप विवसाय ॥
सदा रहत सन्मुख बने, दुख सुख सब बिसराय ॥
चौ०-दुख सुख सब बिसराय जगतमें स्याने अतिहि कहाईजी ॥
वह छवि हेतु गये अतुराई जानि लोभ मनमाईजी ॥
सोतो कछू हाथ नहिं आयो आप बँधाये जाईजी ॥

हार जीत ये नैनन जानै मान पमानहुँ नाईजी ॥ १ ॥
परे रहत शोभाके द्वारे नेकहु लाज न आईजी ॥
जाकी बान परी सखि जैसी तैसी ताहि सुहाईजी ॥
लोभैके वश जिमि मृग मीनै आपहि आवत धाईजी ॥
रूप लालची नैन सखी ये भये श्याम वश जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—लोक लाज कुलकानि तजि, अति मन हर्ष बढाय ॥
मिले त्रिवेणी द्वै नयन, श्याम सिंधुमें जाय ॥

चौबोला--श्याम सिंधु में जाय सखी अब ये दृग धाय समायेजी ॥
मन वच क्रम उरसे अनुरागे रहत सदा सुख पायेजी ॥
भूल गये मग दहिने बांये हरिके सन्मुख आयेजी ॥
ज्यों मणि देखि उरग सुख पाये ज्यों चकोर शशिचायेजी ॥ १ ॥
जोधन पाय रंक सुख पावै सो लक्षण इनकेरेजी ॥
अब ये नैन फिरत नहिं फेरे कीने यत्न घनेरेजी ॥
देखे सुभग श्याम इन जबते ये न रहे सखि मेरेजी ॥
येशिशुकी जब अरन अरेरी मैं घूंघट पट हेरेजी ॥ २ ॥

दोहा—मानहुँ प्रतिपाले इनहिं, संग लगे उठधाय ॥
मृदु मुसकनरस पायके, मतिगति दई हिराय ॥

चौबोला—मति गति दई हिराय निमिषबल धीर न उरमें पायेजी॥
अति हठ परे ननेक विचारैं इनके मन हरि भायेजी ॥
लाज लकुट उरमें डरपाये वे नहिं डरत डरायेजी ॥
फिरे न मैं बहुभाँति बुलाये गये हरिके फुसलायेजी ॥ १ ॥
अब हम उन बिन तलफतभारी मरत शोच वश माईजी ॥
ग्रथ खोटो सखिभयो आपनो दोष पारखहि नाईजी ॥
प्रेम विवस त्रिय वृन्द दृगनको ऐसे दोष लगाईजी ॥
तबहिं छैल ब्रजचन्द नन्दके वाँसुरि टेर सुनाईजी ॥ २ ॥

अथ मुरली लीला ॥

दोहा–नैननकी बातैं करैं, कृष्ण प्रेम रह्योछाय ॥
परी टेर श्रवणन तबै, हरिकी मुरली आय ॥

चौबोला–हरिकी मुरली आय सुनत भई चकित सबै मनमाईजी
परी आय मनुशीश ठगोरी रही देह सुधिनाईजी ॥
ह्वैगई मानहु चित्र लिखीसी अँखियन सुधि बिसराईजी ॥
इकटकरही पलक विसराई दुख सुख वरनि न जाईजी ॥ १ ॥
देह दशा सब तुरत भुलानी विवस भई ब्रजनारीजी ॥
कबहूँ मुरली नाद सुनत सब कबहुँक रहत विचारीजी ॥
कछुक संभारि धीरज उर धारी कहति परस्पर सारीजी ॥
वे वैरिन यह सौति हमारी अँखियनते यह प्यारीजी ॥ २ ॥

दोहा–कितते आई ब्रजहि यह, भई कठिन दुख दाय ॥
आवतही ऐसी भई, किये श्याम वश आय ॥

चौबोला–किये श्याम वशआय जारसको हमतप कीनोंसारीजी।
सोरस मुरली लेत सखी अब वशकीने गिरिधारीजी ॥
गावत मीठी तान मुरलि सँग अधर धरे बनवारीजी ॥
याही के वश भये श्याम अब या सम और न प्यारीजी॥ १ ॥
नई सौति हरिके मनभाई यह नभली ब्रज आईजी ॥
नेक अधरते करत न न्यारी याके वशहि कन्हाईजी ॥
मधुर वचन सुनि रीझ रँगे हरि याहीके रँग माईजी ॥
करपल्लवन ताहि बैठारी तापर ग्रीव लगाईजी ॥ २ ॥

दोहा–क्षण क्षण प्यावत अधर रस, अति अनुराग बढ़ाय ॥
देखहु याकी अधिकता, पीयत हमहिं जनाय ॥

चौबोला–पीयत हमहिं जनाय ढाठभई आवतहीब्रज माईजी ॥

परी रहत बनमें धौं कैसी आवतही इतराईजी ॥
आवत इन हमरो धन लीनों अबकहा करिहै माईजी ॥
मैं जो कहत सुनोरी गोरी मेरे मन यह आईजी ॥ १ ॥
कछु दिनमें यह हमहि न गिनि है यह मुहिं परत लखाईजी ॥
मुरली दूरि कराये बनिहै ये हमको दुखदाईजी ॥
फिरि हैं याके संगहि लागी लोक लाज बिसराईजी ॥
जब जब श्याम बजै हैं याही मोहन मुखहि लगाईजी ॥ २ ॥

दोहा—यह जानति टोना कछू, करि हैं नाना रंग ॥
देखहु हरि कैसे भये, या मुरलीके संग ॥

चौबोला—या मुरलीके संग सखी अब कैसे भये कन्हाईजी ॥
यह सुनि कहत एक ब्रजनारी कहा कहति तू आईजी ॥
जाके वश नँद नन्दन ऐसे दूर होत अब नाईजी ॥
एक पांय ठाढे ता आगे अंग त्रिभंग बनाईजी ॥ १ ॥
कर पल्लवन पलोटत पाईं अधरनसेज सुहावेजी ॥
कबहुँक मिल गावत हरितासों सुनत अधिक सुख आवेजी ॥
मुरली मोहनको अति भावे वाके गुणको पावेजी ॥
जानत राग रागिनी जेते हरिके सँग मिल गावेजी ॥ २ ॥

दोहा—नाना विधि गावत सुरन, तानतरंग उपाय ॥
जैसे रीझत साँवरो, तैसिय भांति रिझाय ॥

चौ०-तैसिय भांति रिझाय ताहिते मुरली हरिमन भावेजी ॥
राखत है मुखही सों लागी अधर सुधारस प्यावेजी ॥
मधुर मधुर कल वचन सुनावे हरिको मनहिं चुरावेजी ॥
ऐसोको अब हरिके करते मुरली दूर करावैजी ॥ १ ॥
अब मुरली छूटत नहिं आली किये श्याम वश आईजी ॥
प्रगट कियो सब मैं मुरलीधर अपनो नाम कन्हाईजी ॥

मुरली लूटत अधरन को रस हरिको करि वश माईजी ॥
निठुर भई बोलत हम सबते उर डर मानति नाईजी ॥ २ ॥
दोहा—निठुर वचन हम सों कहत, हरिको मन उचटात ॥
लोक लाज कुलकानितजि, हमको निलजकरात ॥
चौबोला—हमको निलज करात ऐसे ढँग मुरलीके लख पाईजी॥
हमते निठुर किये वनमाली मधुरे वचन सुनाईजी ॥
यहतो निठुर काठकी जाई प्रगट किये गुण आईजी ॥
अपनो स्वारथ जान श्याम सँग कपट रागिनी गाईजी ॥ १ ॥
मुरली निठुर किये वनमाली हरि हमको विसराईजी ॥
वनकी व्याधि कहा ये आई ऐसे तिय पछिताईजी ॥
कहा भयो मोहन मुखलागी अपनी प्रकृति[1] न जाईजी ॥
एक सखी बूझत भइ ऐसे मुरली कहां ते आईजी ॥ २ ॥
दोहा—कहां रहत मुरली सखी, काकी है यह जाइ[2] ॥
कौन जात याकी अली, कैसे इत यह आइ ॥
चौबोला—कैसे इत यह आइ कौनसे मात पिताकी जाईजी ॥
बोली अपर[3] एक ब्रजनारी तुम यह बात न पाईजी ॥
मुरलीको कुल धर्म सखी तुम सुन्यो अबहिंलों नाईजी ॥
याकी जात कर्म सब तुम अब सुनों मैं तुमहिं सुनाईजी ॥ २ ॥
मैं जानति याके गुण आली कहों तुमहिं समुझाईजी ॥
सुन कानन सुख पैहो तुमहूँ जहँते मुरली आईजी ॥
बनमें रहत बांस कुल जाई यहतो जाति सुहाईजी ॥
जलधर[4] पिता धरणि महतारी तिनके गुणहुँ सुनाईजी ॥ २ ॥
दोहा—बनहूँते न्यारे बसै, निपटहि जहां उजार ॥
मात पिता अरु मुरलिया, भरे गुणन आपार ॥

१ स्वभाव । २ उत्पन्नकी । ३ दूसरी । ४ मेघ ।

चौबोला–भरे गुणन आपार न जानी कौने फलहि कन्हाईजी ॥
कृपा करी यापर बनवारी सो कछु जानि न जाईजी ॥
प्रथम कहौं मेघनके कर्मा अरु कुल धर्म बताईजी ॥
गिरि वन सर सरिता सब ठाई वे बरसत जग माईजी ॥ १ ॥
एक बूँदको मरत पियासा चातक ध्यान लगाईजी ॥
धरणी सबहीको उपजावै आप कुमारि कहाईजी ॥
उपजतहै पुनि तृण षट जामें सो कछु क्षोह न राईजी ॥
अब आगे गुण प्रगट बखानों जाकुल मुरली जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तिनहींते प्रगटत अनल, ऐसी याकी झार ॥
प्रगट भई जा वंशमें, करत जारतिहिं छार ॥

चौबोला–करत जार तिहिं छार मुरली यह ऐसे गुणकी आईजी
याते निठुर और को आली निजकुल आइ दहाईजी ॥
याकी जाति श्याम नहिं चीनी बिन जाने अपनाईजी ॥
कहिये चलो श्याम सों जाई तजिहैं सुनत कन्हाईजी ॥ १ ॥
श्यामहिं कहा भलो तुम जानों कंहा सखि बात सुनाईजी ॥
निज कुल जारत बिलम नलाई तासों कौन भलाईजी ॥
जाको हम षट ऋतुतप कीनो सो फल मुरलीपाईजी ॥
विमुख तुरत उत्तम फल पाई सन्मुख विमुख कहाईजी ॥ २ ॥

दोहा–घरके बन बनके घरहि, कीने श्याम सुजान ॥
चीन्हे कपटी श्यामको, परी हमें अवजान ॥

चौबोला–परी हमें अवजान सखीरी श्याम कपट की खानैजी ॥
एक अंगकी प्रीति हमारी वे बहु तरुणि न मानैजी ॥
ज्यों चकोर दाहित माने चंद्र न मन कछु जानैजी ॥
जलके तीर मीन तनु त्यागै जल न दया उर आनैजी ॥ १ ॥
ज्योंपतंग उड ज्योति जरेरी ज्योतिहि दया न आईजी ॥

चातक एक मेघको जाने मेघ न प्रीति जनाईजी ॥
इन सबहिनते निठुर कन्हाई तैसि मिली यह आईजी ॥
अब मुरली अरु श्याम कि आली जोरी बनी बनाईजी ॥ २ ॥
दोहा–काहिन प्रीति बढावही, ये अहीर वह बैन ॥
जैसे ये तैसी वह, दोउअनको मनयेन ॥
चौबोला–दोउअनको मनयेन मुरलिया हरिहीसों मनलावेजी॥
हरिको मन मुरलीसों मान्यो दोउ मिल प्रीति जनावेजी ॥
निठुर निठुर मिल बात बनावें यातेहि धेनु चरावेजी ॥
वाहीकी वंसी अति प्यारी वाकिहि लकुट सुहावेजी ॥ १ ॥
हमसों वैर सदा हरि कीनो बन में रोक रखाईजी ॥
भेदहि भेद हरयो मन हमरो सब कुलकानि मिटाईजी ॥
बहुरि बोल अँखियनको लीनी अब मुरली मन भाईजी ॥
सुनसजनी बिन काज खिजौंरी विधि सों नाहिं बसाईजी ॥२॥
दोहा–कर्म करै सो को करे, करहिं ये सब करतार ॥
हम तप करि इतनो पची, घर कुलते दइटार ॥
चौबोला–घर कुलते दइटार लकरिया बनकी हरिमन मानीजी
श्याम अधर शिर छत्र धराये सो अब भइ पटरानीजी ॥
भये नृपति हरि मुरली रानी और न नारि सुहानीजी ॥
बनते आनि सुहागिन कीनी जाति पांति नाहिं जानीजी ॥१॥
पूरब कठिन कियो तप भारी कर हरिसों अनुरागाजी ॥
बैठि अधर रस लेत मुरलिया पूरब फल यह लागाजी ॥
जो तप करि तायो तन अपनो सो मेटति अब दागाजी ॥
अब गर्जति अधरन चढ़ि हरिके धनि मुरलीको भागाजी ॥२॥
दोहा–हरिको परसतही सकल, दीने कलंक बहाय ॥
ऐसो सुख लूटन लगी, कौन सुकृत फलपाय ॥

चौबोला--कौन सुकृत फलपाय मुरलिया ऐसी हरि मन भाईजी
तनु कठोर मन जड रसहीनी अंतर सारहु नाईजी ॥
लघुता अंग न कछु गरबाई बांस वंश निकाईजी ॥
छिद्र विशाल सुभगतनु छाये हरिकर माहिं सुहाईजी ॥ १ ॥
विधिते प्रबल भई यह मुरली हरि मुख आसन चायोजी ॥
उलटि दई हरिकी मर्यादा वेद नाद जब गायोजी ॥
जड चेनन चेतन जड थिर चर चर सो थिर ठहरायोजी ॥
एक बार श्रीपति सिखरायो ज्ञान विधाता पायोजी ॥ २ ॥

दोहा—लगे रहतहैं कानहीं, यासों कुँवर कन्हाइ ॥
और कौन यासों प्रबल, किये सकल वश आइ ॥

चौबोला—किये सकल वश आइ औरको ऐसी ताहि बताईजी ॥
भई श्याम सँग मुरली जैसी तीन लोक कोउ नाईजी ॥
सुर नर मुनि शशि खग मृग जेते सलिल समीर सुहाईजी ॥
भये सकल वश या मुरलीके ध्वनि सुनि धीर न आईजी ॥ १ ॥
रही विश्व परजीत बांसुरी मोहन मुखहि लगाईजी ॥
मेटि सकल श्रुति नीति रीति इन अपनी चाल चलाईजी ॥
सखि मुरली को दोष नदेहो सोच देख मनमाईजी ॥
सो श्रम और कौन पैहोई जोइ मुरली कर आईजी ॥ २ ॥

दोहा—कियो कठिन व्रत श्याम हित, दुखसुखसमकर मानि॥
हरि याकी दृढ़ता लखी, तबबन ते गृह आनि ॥

चौबोला—तबबनते गृहआनि सखी तुम मुरलीको नहिंजानीजी
जब याकी करतूत सुनोंगी कहिहो धन्य बखानीजी ॥
बनमें रही एक पगठाढी अति मन दृढता ठानीजी ॥
शीत उष्ण बरषा सहलीनी रही धीर उर आनीजी ॥ १ ॥
कसकी नहीं नेक जब काटी शाखापत्र छटाईजी ॥

राखी डारि घाममें आनी झुरि झुरि देह सुखाईजी ॥
ताय सुलाख परखि हरि लीनी जब हरिके मनभाईजी ॥
मुरली सही इती कठिनाई तब पाई ठकुराईजी ॥ २ ॥

दोहा–तप फलभोगत मुरलिया वृथा करत तुम आर ॥
निज गुण रिझये श्याम उन, गुणियन गुणी पियार ॥

चौबोला-गुणियनगुणी पियार परस्पर गुणिन गुणी मन चावैजी॥
जोकरनी मुरली करआई सो तुम ते न वन्यावैजी ॥
अति श्रमकरि हरिको वश कीने अब याको को पावैजी ॥
परम पुनीत प्रीति हरि देखी मुरली हरि मन भावैजी ॥ १ ॥
देखहुरी याकी अधिकाई कहां लगि करें बड़ाईजी ॥
जबहीं श्याम अधर सों परसे तब यह नाद सुनाईजी ॥
अति आनन्द सबन उपजावै तान तरंग उपाईजी ॥
जियत श्याम अधरामृत पाई छूटतही मुरझाईजी ॥ २ ॥

दोहा–जाको जीव अधर रस, क्योंन करै हरि हेत ॥
मुरली हरि हित तप कियो, सोफल अब यह लेत ॥

चौ–सोफल अब यह लेत मुरलिया जब लगि हरि नहिं पायोजी
सहे कष्ट बोली नहिं वाणी निश दिन ध्यान लगायोजी ॥
जब मोहन वश करि इन पायो तब अधिकार जनायोजी ॥
तब हरिसों बांछित फल पायो अधरामृत मन भायोजी ॥ १ ॥
या सम और चतुर को आली कीने वशहि कन्हाईजी ॥
क्यों नहिं त्रिभुवनको मनमोहै जो हरिके मन भाईजी ॥
मुरलीकी सर मतहि करोरी कहत तुम्हें समुझाईजी ॥
सुनि ताको यश कान तुम हुँ सब धनि धनि कहिहो बाईजी॥२॥

दोहा–अमर भई अब मुरलिया, अधरामृत करि पान ॥
शारदादि यश गावहीं, तिहुँ पुर होत बखान ॥

चौबो०-तिहुँ पुर होत बखान हमहुँ सब मिल तप कीनो भारीजी॥
ताको फल हमको हरि दीनो निलज करी सब नारीजी॥
लीने भूषण बसन चुराई धरे कदमकी डारीजी॥
तब अम्बरदे धन्य बखानी हम सुख मान्यो सारीजी॥ १॥
मुरली सों बिन काज खिजोरी अपने भाग्य निकाईजी॥
करो हेतु मुरली सों लरो जिन जीतोगी तुम नाईजी॥
मुरली हमते तप अधिकाई ताके वशहि कन्हाईजी॥
तनक आश दरशनकी हैरी सोऊ करते जाईजी॥ २॥

दोहा—बहु तरुणी रमणीय हरि, येउ मिली इक आय॥
तुम मुरली सों जिन खिजो, राखहु प्रेम जनाय॥

चौबोला—राखहु प्रेम जनाय प्रेमहीं मानत मोहन प्यारौजी॥
वे सुजान सब जान रहैंगे तुम जिन उरते टारौजी॥
सब तजि भज्यो जन्मते ताई अब जिन वाहि विसारौजी॥
मुरली सों कहा काज हमारो जीवहु नन्ददुलारौजी॥ १॥
हमहित कीनो श्यामसुन्दर सों मेटिलोक कुलकानीजी॥
ताही सों हित चहिये आली जासों है पहिचानीजी॥
हमको है यह आश हरी अंतर्यामी सुखदानीजी॥
करिहैं नाहिं निराश हमारे उर अंतरकी जानीजी॥ २॥

दोहा—कहा भयो सखि बाँसुरी, रही श्याम ढिगआइ॥
अपने करानि सुलाख हरि, राखी कुँवर कन्हाइ॥

चौबोला—राखी कुँवर कन्हाइ गुणहिंके काज तनक दुखपाईजी॥
दे अधरामृत तुरत जिवाई अब न गिनत यह काईजी॥
हमते अधिक कियो उननाई शोच देख मनमाईजी॥
वर्षै पाँच सातकी जबते तबते प्रीति लगाईजी॥ १॥
पुनि षटऋतु तप सों मन लायो विरहानलतन ताईजी॥

कैसे ये सब फल न फलेंगे मिलि हैं क्यों न कन्हाईजी ॥
तब यों कह्यो एक ब्रजनारी मुरली हरि मुखलाईजी ॥
जो अवगुण होतो या माई तो हरि छुवते नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुनो सखी लायक यह, सुनत श्रवण सुखहोय ॥
जैसी है यह मुरलिया, तैसी और न कोय ॥

चौबोला–तैसी और न कोय सखीरी यासों मिले कन्हाईजी ॥
काहि न प्रीति करै हरि ऐसी त्रिभुवनमें कोउ नाईजी ॥
इक युवती अरु गुणन भरीरी बोलति मधुर सुहाईजी ॥
श्रवण सुधा प्यावत हरि याको रहत अधर सों लाईजी ॥ १ ॥
देहु बजावन बाँसुरि आली हरिबरजो जिन कोईजी ॥
रसकीने रस होत सखीरी विरह विरसते होईजी ॥
आप भलो तो जगत भलोरी नातर भलो न कोईजी ॥
मुरली लगी श्यामके मुखरी हमसों सन्मुख सोईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुनहुं कानदे कहति कहा, राधा राधा गाइ ॥
तुम हरिसों न्यारी नहीं, तुमहिं न विसरि कन्हाइ ॥

चौ०-तुमहिं न विसरि कन्हाइ जबहि जब मुरली श्याम बजाईजी
तब तब नाम तिहारो गावत विसरत इक क्षण नाईजी ॥
मुरली भई सौति जो तो हरि तेरी टहल कराईजी ॥
तू अर्धंगिन वह है दासी मेरे मन यह भाईजी ॥ १ ॥
तुम प्यारी हरि हरि तुम प्यारे मुरली कहत बखानीजी ॥
हरषीं सकल सुनत यह बानी ये ऐसी नहिं जानीजी ॥
याको शील अबै हम जानी वृथा वैर हम मानीजी ॥
करत सकल ब्रजनारि बड़ाई मुरली अधिक सयानीजी ॥ २ ॥

लावनी।

यों करत सकल ब्रजनारि बड़ाई मुरलीकी सुखपाई ॥

टेक–धनि धनियाको वह वंश बास जामें यह मुरली जाई ॥
धनि धनि याके मृदु बोल याचिके ल्याये कुँवर कन्हाई॥
येहै बंसी अनमोल ओपमा बरनतमें नहिं आई ॥
धनि धनि है याको धन्य धन्य यह मुरली हरि मनभाई॥
कहि महिमा याकी भारी, निजमुख श्री भानुदुलारी;
सुनि हरषीं सब ब्रजनारी ॥ मुरली श्री मुरलीधर केरी
उपमा कहिय न जाई॥यो करत सकल ब्रजनारि०॥१॥
जाको यश परमपुनीत सकल गंधर्वजनन मिलगुणगावै
वेदहु नहिं पावत भेद शेषहू सुनि मन अति हरषावै ॥
सब नाद विवस होजात भुवन त्रयदेव दनुज सुख पावै॥
सुनि श्रवणनको सुखहोत ललित वाणीअति परम सुहावै
जब हरि मुख याहि बजावै, सुनताहि सबको सुखआवै;
तब मति गति सब विसरावै॥शिवसनकादि समाधि भूलि
रहे ब्रह्मादिक ललचाई।यों करत सकल ब्रजनारि०॥२॥
है योग माया जो जान कृष्णकी मुरली सो सुखदाई ॥
हरिकी श्वासाके वचन बोलती लागत परम सुहाई ॥
गुणको करसके बखान मुरलिया जब नंदनन्दबजाई ॥
सुनि ब्रजललना सुखलेत मगन मन आनँद उरनसमाई
सखियन मुरली सुनि पाई, सब तनुकी दशा भुलाई;
सुधि बुधि सबहिन विसराई ॥ मानहुं लिखी चित्रकीनाई
जकि थकि रहीं तहाँई॥योंकरत सकल ब्रजनारि०॥३॥
कबहूं मानति सब दुःख सूखहू मान लेति मनमाई ॥
सब कहति कबहुं कछु और कबहुं सबमिलकर करतिबडाई
ऐसे सब मिल ब्रजनारि परस्पर कहि कहि अतिसुखपाई
जब ले करमें सुखदेन मुरलिया सुन्दर कुँवर कन्हाई॥

अधरन पर राखि बजावै, बहु राग रागिनी गावै;
गति अमित भाँति उपजावै॥मगन जल थल जीव जहां
तहां सुनि धुनि सब रहे आई॥ यों करत सकल ब्रज
नारि बडाई मुरलीकी सुखपाई॥ ४॥

दोहा–ब्रह्मानंद[1] जासों कहैं, सो पासंगहु नाहिं॥
सुनि ध्वनि जल थल मगन सब, जहां सो तहां तिहि ठाहिं

चौ०-जहां सो तहां तिहि ठाहिं सकल जन ज्ञान गुमान भुलावैजी
लोक वेद मर्याद पतिव्रत सो न कछू मन भावैजी॥
तबहिंलों मन चपल बुद्धि रहत सकल थिर चावैजी॥
सुनत मुरली श्रवणन हरिकी लखत इक टक लावैजी॥ १॥
धनि धनि तिनके भाग जगत[2]में धनि धनिते नर नारीजी॥
जिनके मनमें बसी बांसुरी विहारन तिनपर वारीजी॥
युगल किशोर चरण चित आशा राखत दास विहारीजी॥
करहु हिये मम बास जान जन मुरलीधर गिरिधारीजी॥ २॥

अथ रासलीला।

दोहा–वन्दों युगल[3] किशोर पद, श्रीराधा घनश्याम॥
सुर नर मुनि वंदित सदा, बसत वृन्दावन धाम॥

चौ०-बसत वृन्दावन धाम युगल पद पुनि पुनि शीश नवाऊँजी
नन्द नँदन वृषभानु नन्दनी युगल चरण चितलाऊँजी॥
रूप राशि आनंद निधानं मंगलप्रद बलिजाऊँजी॥
बहुर रासपति पद शिरनाऊँ रास चरित अब गाऊँजी॥ १॥
वेदव्यास जो रास बखान्यो कियो सो ब्रजहि कन्हाईजी॥
सो गंधर्व व्याह विधि जान्यो अति हरषे मनमाईजी॥
ब्रज गोपिन हरि हित तप कीनो होय पती मन लाईजी॥

१ आनंद। २ संसार। ३ दोनों कृष्ण–राधिका।

नंद नँदन तिनको वरदीनों बसन हरे तब तहांईजी ॥ २ ॥
दोहा–शरद रैन शुभ लग्न धरि, करिहौं तुम मन भाइ ॥
सो जब शरद सुखद ऋतुः, आई परम सुहाइ ॥
चौबोला–आई परम सुहाइ जान हरि भक्तनके सुखदाईजी ॥
गावत विरद विदत श्रुति चारी तब हरिके मन आईजी ॥
गये श्याम वृन्दावनमें जहां रहत बसंत सदाईजी ॥
श्रीवृन्दावन धाम सुखदकी शोभा बरनि न जाईजी ॥ १ ॥
बरन सकै सो कवी कवन विधि इतनी बुधि कहां पाईजी ॥
भूमि लता द्रुम गुल्म तृण यह सब चैतन्य सुहाईजी ॥
सुन्दर श्याम विहार लखन हित जडस्वरूप धर आईजी ॥
ब्रह्मादिक रजछूवन पावै श्रीमुख महिमा गाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जाकी महिमा निज कही, संकर्षण प्रति श्याम ॥
चिन्तामणि मय भूमि सब, श्रीवृन्दाबन धाम ॥
चौबोला–श्रीवृन्दावन धाम भूमि सब मंगलकी मेंतारीजी ॥
कृष्ण चरण पंकज रमणीसों भक्तनको सुखकारीजी ॥
फिरत श्याम जहँ नागे पाँयन चरण चिह्न तिहि ठांरीजी ॥
पावन हूँकी पावनकारी विहारन प्रभुकी प्यारीजी ॥ १ ॥
वरन वरन वट विटप सुहाये जातन बर न बतायेजी ॥
सदा सुमन फल संयुत सोहैं सुगंध स्वाद मन भायेजी ॥
जगमगात नग ज्योति लजाये नव दल परम सुहायेजी ॥
विपुल कांति शोभित बहुरंगा अति विचित्र छबि छायेजी॥२॥
दोहा–कोटि सूर्य शशि सम नहीं, परमप्रकाश सुहाइ ॥
पत्र पत्र प्रति हरि छवी, निरखत मदन लजाइ ॥
चौ०-निरखत मदन लजाय परमछवि शोभित अति अभिरामाजी
वृन्दावन तरु वेलि सुभग सब नख शिख छविकी धामाजी ॥

बैकुंठादिक श्यामसुन्दरके और सकल शुभधामाजी ॥
ताते अति सुन्दर सुखदाई यह विहार विश्रामाजी ॥ १ ॥
विपुल कुंज मंजुल छबि छाई काम सँवारत ताईजी ॥
बहत समीर धीर सुखदाई शीतल परम सुहाईजी ॥
चित्र विचित्र विहंग मृग नाना डोलत वनके माईजी ॥
गूँजत भृंग लुब्ध मकरंदा अति छवि बरनि न जाईजी ॥ १ ॥

दोहा—तँसिय यमुना सुखद अति, पुलिन पुनित छबिदेत ॥
झलकत रेती अति मनों, परम कांतिको खेत ॥

चौबोला—परमकांतिको खेत रेत अति झलकनपरमसुहाईजी ॥
फूले बनज विपुल बहु रंगा बरन बरन छबि छाईजी ॥
गूंज करत मधु माते भृंगा लखि मन रहत लुभाईजी ॥
श्रीवृंदावन छबि समुदाई कापै बरनी जाईजी ॥ १ ॥
वन अनूप अद्वैत बखाना पटतरको कोउ नाईजी ॥
है स्थूल बपुष प्रभु केरी ऐसी परत लखाईजी ॥
गोपी जन इन्द्री गण तामें हैं चैतन्य कन्हाईजी ॥
नित्य धाम ताहीते गायो यह पटतर मन भाईजी ॥ २ ॥

दोहा—सुखनिधि रसनिधि रूप निधि, वृंदा विपिन उदार ॥
शारद नारद शेष शिव, वर्णत विधि श्रुतिचार ॥

चौबोला-वर्णत विधि श्रुति चार तासुयश अरु कोसकै बखानीजी
वृंदावन सम और दूसरो सुखद न कोऊ आनीजी ॥
सुख पावत मोहन तहँ अति मन सकल विश्व सुखदानीजी ॥
तहँ वितिस्ति इक शंख मणीमय वेद कहत यह बानीजी ॥१॥
तापर अद्भुत कमल तासुदल षोडश चक्र समानीजी ॥
योजन पंच तासु परमाना रासस्थान बखानीजी ॥
मध्य करणिका अति रमणीया बैठे तहाँ सुखदानीजी ॥

शोभा अमित[1] कहति श्रुति ताते गिरा[2] कहत सकुचानीजी॥२॥
दोहा—कोमल श्यामल अंग लखि, कोटिक कामलजाय॥
अंग अंग भूषण छबी, नटवर भेष बनाय॥
चौबोला—नटवर भेष बनाय शीशपर शिखी[3] शिखंड सुहायेजी॥
बिच बिच मुक्ता[4] मणिन गुंथाये अति छबि कहत न आयेजी॥
जलजमाल[5] बनमाल सुहाई कुंडल अति छबि छायेजी॥
कटि पटपीत काछनी काछे ललित शृंगार बनायेजी॥ १॥
मणिन जटित नूपुर अति नीके चरण कमल छबि छाईजी॥
रवि शशि आदिक द्युतिधर जेते नख उपमा नाहिं पाईजी॥
अति अद्भुत लावण्य निधि श्री वृंदावन सुखदाईजी॥
निगम नेति किमि बरनियेताई रसिक नवल कन्हाईजी॥ २॥
दोहा—ब्रह्म पूरणानन्द हरि, जेहिं गावत श्रुतिचार॥
वृंदावन रसरास पति, सो पूरण अवतार॥
चौबोला—सो पूरण अवतार धाम बन देखि श्याम सुखदाईजी॥
तैसिय शरद रैन अति सुन्दर लखि मन रहत लुभाईजी॥
प्रफुलित कुमुदिन वन चहुँ पासा ललित मालती छाईजी॥
तैसोइ पूरण शशि छबि छायो यमुना पुलिन सुहाईजी॥ १॥
तैसिय जग मग ज्योति द्रुमनकी सुमन सुगंध सुहाईजी॥
लखि बन सुख समुदाय कन्हाई हरषरास रुचि आईजी॥
ललित योगमाया सो मुरली तब कर लई कन्हाईजी॥
नाद ब्रह्मकी उत्पतिजासों निगम अगम उपजाईजी॥ २॥
दोहा—विश्वविमोहन मंत्रसी, हरि मुख लसति सुहाइ॥
सकल गुणनमें आगरी, रागरंग उपजाइ॥
चौबोला—राग रंग उपजाइ ताहि हरि अधरनराखि बजाईजी॥

१ अपरिमाण। २ वाणी। ३ मोरपक्ष। ४ मोती। ५ कमलके फूलोंकी माला।

त्रिभुवन मन मोहन ध्वनिलाई किये सकल वशमाईजी ॥
धरणि पताल जीव सब मोहे नभ सुरगण समुदाईजी ॥
चकित चंद मृग मारग भूले अमृत अमी बरसाईजी ॥ १ ॥
शिव विरंचि सनकादि मुनी सब ब्रह्म समाधि भुलाईजी ॥
भये नाद मुरली मगन तब चकित श्रवण रहे लाईजी ॥
सीद्धरु चारण अरु गंधर्वा रहे ध्यान विसराईजी ॥
सुनि मुरली मोहनकी सबके तन सुधिराहिय न राईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुनि मुरली नंदनन्दकी, तन सुधि रही नमूल ॥
रह्यो प्रवाह जलनदिनको, पवन गवन गईभूल ॥

चौबोला–पवन गवन गईभूल मोरसब नाचतअतिछाबिछावैजी
थकित विलोकत मृग सब ठाढे मुरली ध्वनि मनभावैजी ॥
रहीं धेनु तृण गणि मुखवत्सहु दूधपिवन नहिं पावैजी ॥
रहे थकित सुनि ध्वनि अहि जहां तहां इतउतकहुंनहिंजावैजी १
तरुवेली सब चंचल पाता नव अंकुर दल आयेजी ॥
नाग सकल सोवत ते जागे शेषनाग अकुलायेजी ॥
जड चेतन गति भइ विपरीता सुनि मुरली सुख पायेजी ॥
जो नरनारि तिहूँ पुर मांई तनुसुधि सब विसरायेजी ॥ २ ॥

दोहा–मुरलीकी ध्वनि सुनतही, चकित भई सबनारि ॥
सब सुधि भूली देहकी, जे ब्रज गोप कुमारि ॥

चौ०–जे ब्रज गोप कुमारि मुरलिया सुनि अरु सबनरनारिजी ॥
यथा भाव सबहिनको दरशी भये विवश सबभारीजी ॥
यारसकी तेई अधिकारिणि नँदनंदनकी प्यारीजी ॥
सुनतहि वौरीसी भई सब तनकी सुरत विसारीजी ॥ १ ॥
मुरलीकी ध्वनि कानपरी सो लगि मातु शीश ठगोरीजी ॥
रह्यो न उरमें धीर सबहिके बाजी कहि उठ दोरीजी ॥

सुनि मुरली ब्रजकी तरुणिन तब सब अकुलानी गोरीजी ॥
षटदश सहस गोपिकाते सब सुनि मुरलीभई भोरीजी ॥ २ ॥
दोहो-गृह कारज विसराय सब, चितलानी ब्रजनारि ॥
कोऊ धरणि अकाशकोउ, रहीं सकल निहारि॥
चौबोला-रहीं सकल निहारि कोउ निज मनहीं माहिं उपाईजी
लैलै तिनके नाम बजाई सबहिन श्याम बुलाईजी ॥
रहि न सकीं ध्वनि सुनि अकुलाई जो जैसे उठधाईजी ॥
चलीं सकल गृह काज तज्यो अरु लोक लाज विसराईजी ॥१॥
कोऊ दूध उफनतो तजि कोउ दधि न जमावन पाईजी ॥
कोऊ करत रसोंई तजि कोउ पतिहि जिमावत धाईजी ॥
बालक गोद संभार न लीनो दूध पिवत तजि आईजी ॥
उलटे भूषण वसन साजि सब सो तिनको सुधि नाईजी ॥ २ ॥
दोहा-नूपुर धारे भुजन सों, किंकिणि लइ गरडार ॥
बांधे बाजूबंद पग, करन लपेटति हार ॥
चौबोला-करन लपेटतिहार शीशके फूल श्रवण सों धारीजी ॥
करणफूलले शीश सँवारे सो कछु नाहिं विचारीजी ॥
चलीं सकल सुनतहि मुरली ध्वनि भ्रमते ब्रजकी नारीजी ॥
अंजन करि दृग एक रह्यो इक बिन अंजनहिं सुधारीजी ॥१॥
भई बिवस ध्वनि सुनि मुरलीकी रही न सुधि तनु माईजी ॥
मुरली सों हरि टेर बुलाई प्रीति विवस उठ धाईजी ॥
मुरली ध्वनि मारग गहि लीनों और न कछु भय लाईजी ॥
प्रेम स्वरूप सकल ब्रज नारी पंच भूतमें नाईजी ॥ २ ॥
दोहा-रोकि रहे पति मात पितु, सुनति नहीं कोउ सोइ ॥
चलीं ध्यान धरि श्याम उर, गृह बन रुकी न कोइ॥
चौबोला-गृह बन रुकी न कोइ कोउ जो कर्म प्रारब्ध बसाईजी॥

राखी रोक पतिहि गृह माईं जानदई सोनाईजी ॥
भयो विरह दुख अतिही कोटिन जन्म कर्म फल ताईजी ॥
पुनि धरि ध्यान हरिहि उर लाई कोटि स्वर्ग फल पाईजी॥१ ॥
यों करि भोग त्याग तनु बाला मिली श्यामसों जाईजी ॥
इहि विधि बन सब चलीं किशोरी लोक लाज विसराईजी ॥
जरत भवन तजियतहै जैसे अति आतुर उठ धाईजी ॥
झुंडन चलीं श्यामपै बाला निज तनु सुरत भुलाईजी ॥ २ ॥
दोहा–गृह गुरुजन तजि लाज तजि, ब्रज सुन्दरि समुदाय॥
मुरली ध्वनि सुनि रंगिली, मिलीं श्याम बन जाय ॥
चौ०-मिलीं श्याम बन जाय सकल तहां सुन्दर कुँवर कन्हाईजी
नटवर बपु गोपाल अधरपर मुरली राखि बजाईजी ॥
सन्मुख सब ब्रजबाल देखि हरि रहे मनाहिं सुखपाईजी ॥
ब्रज युवती लखि कुँवर कन्हाई आनँद उर न समाईजी ॥ १ ॥
कनक वरन शशि मुख सब बाला पहुँची बन समुदाईजी ॥
भईं जाय सन्मुख सब ठाढीं अति छबि कहत नआईजी ॥
अटपट तनु शृंगार विलोकी रहे हरि मन सुख पाईजी ॥
अद्भुत रूप देखि सुख पायो मनहीं माहिं कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–अति आदर करि श्याम तब, कहत मंद मुसकाय ॥
कहो अहो तिय ब्रज कुशल, निशि काहे वन आइ ॥
चौ-निशि काहे बन आइ ऐसो तुम कहा काज मन लाईजी ॥
अर्धरात कछु डर नहिं कीनो याबनमें किमि आईजी ॥
यह कछु भली करी तुम नाहीं निज पति तजि बन धाईजी ॥
वेद पंथ निदरचो तुम भारी अजहुँ जाहु घर माईजी ॥ १ ॥
यह सुनिकै गुरुजन दुख पैहैं लरिहैं वे सब जोईजी ॥
बहुरो तुमको त्रास दिखैहैं सहिहौ पुनि तुम सोईजी ॥

निज पति तजि पर पतिहि भजैसो तिय कुलीन नहिं होईजी ॥
मरे नरक जीवतहु जगतमें भली कहत नहिं कोईजी ॥ २ ॥

दोहा–कहत वेद हमहूँ कहत, युवतिनको पति देव ॥
जो तुम चाहो सुख लह्यो, करहु तिनहिंकी सेव ॥

चौ०–करहु तिनहिंकी सेव और कछु मन धोखो जिन आनोजी॥
करहु सेव पतिकी अति हित करि पतिहि देव करि जानोजी ॥
तजिकै कपट करहु पतिसेवा वेद वचन परमानोजी ॥
बुद्धि कुबुद्धि कुरूप वियोगी कूर कुपूत अयानोजी ॥ १ ॥
ऐसेहू पतिको तिय त्यागे होत दोष अति भारीजी ॥
ताते मानहुँ बात हमारी जाहु घरन ब्रजनारीजी ॥
माता पिता तुम्हर धौं नाई ऐसे कहत मुरारीजी[1] ॥
कै तुमको यहां उनहिं पठाई कै यह बुद्धि तुम्हारीजी ॥ २ ॥

दोहा–कैधोंकहि आई उन्हैं, कैं वे जानत नाहिं ॥
नव यौवन सुकुमारि तुम, निशिवसिहो वनमाहिं ॥

चौबोला–निशि वसिहो वनमाहिं बात यह जो कोऊ सुनिपाईजी
हमें तुम्हें दूषण दोऊ दिश देहैं सब ब्रजमाईजी ॥
अब ऐसी करियो मति कबहूं जैसे अब उठधाईजी ॥
ऐसे सबसों कहत कन्हाई बार बार भरमाईजी ॥ १ ॥
निठुर वचन सुनि श्याम सुन्दरके युवति उठीं अकुलाईजी ॥
चकित भईं मन गुनतरहीं[2] सब कहत न सुख कछु आईजी ॥
जनु तुषार पर्‍यो कमलन पर वदन गये मुरझाईजी ॥
पाई निधि खोई पुनि जानो सोच रही शिर नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–चित्र पूतरीसी रहीं, विरह विकल सब वाम ॥
प्रेम विवस जान्यों नहीं, कपट खेल कियो श्याम ॥

---

१ मुरदैत्यकेशत्रु-श्रीकृष्ण । २ विचार ।

चौ०-कपट खेलकियोश्याम मनहिंमन हँसतश्यामसुखदानीजी॥
भई विरह व्याकुल ब्रजबाला रहीं सोच उरआनीजी ॥
सहि नहिं सकी दुसह यह पीरा बोलीं सकल सयानीजी ॥
सुनहु श्याम सुन्दर सुखदानी जिनहिं कहो यह बानीजी ॥ १ ॥
यह जिन कहो नाहिं तुम लायक अहो श्याम सुखदाईजी ॥
कोमल सुभग कमल मुखताते बातें कटुक सुनाईजी ॥
धर्म सिखावत हो अब हमको लैलै नाम बुलाईजी ॥
करहु हेतु जिहिं भांति बुलाई छांडि देहु चतुराईजी ॥ २ ॥

दोहा—कर्म धर्म जानत नहीं, हम सब ब्रजकी नारि ॥
चरण कमल अनुराग करि, लोक लाज दइडारि ॥

चौबोला--लोकलाज दइडारि तुम्हारे चरण कमल चितलाईजी॥
सकल धर्मसय चरण तिहारे वसत सो हम उरमाईजी ॥
कहवावत हो अंतर्यामी समुझत क्यों न कन्हाईजी ॥
सुनहु श्याम सुखधाम हरी अब तुमहिं उचित यह नाईजी॥१॥
मन हमरो अपनाय कन्हाई कहा बात यह ठानीजी ॥
पाप पुण्य कहा होय नाथ जो सो हम कछुय न मानीजी ॥
अधरामृतके लोभलागि हम तुमरे हाथ बिकानीजी ॥
सकल धर्मकी मोहनहारी तुमरी मुरली जानीजी ॥ २ ॥

दोहा—ऐसीको ब्रजमें तियः, जो न मोहिं सुनियाइ ॥
जैसी यह मुरली जिने, विधि मर्याद मिटाइ ॥

चौबोला—विधि मर्याद मिटाइ आपनी रीत प्रगट करियानेजी ॥
अब तो मृदुमुसकन मन मोहे पाप पुण्य नहिं जानेजी ॥
हम तो पति इक तुमको जाने धृक जो दूजो मानेजी ॥
तुम तजि हमें और प्रिय नाई मन नहिं मानत आनेजी ॥ १ ॥
कोटि करो अब भवन न जैहैं सुनहु श्याम सुखदाईजी ॥

जानत हो सब अन्तर्यामी मानत हो क्यों नाईंजी ॥
मन वच कर्म तुम्हारी दासी मृदु मुसकनमन भाईंजी ॥
जरत सकल विरहानल ज्वाला सींचहु अधर सुधाईंजी ॥ २ ॥

दोहा—दीन कृपानिधनाम तुम, करहु कृपा यह जानि ॥
हमते दीन न और कोउ, देहु दान मुसकानि ॥

चौबोला—देहु दान मुसकानि विरह दुख मेटहु कृपानिधानाजी॥
जो नहिं मानत बिनय हमारी तो तजिहैं यह प्रानाजी ॥
विरह विकल गोपिकन लखि हरि कृपासिंधु भगवानाजी ॥
उमँगि उठे दृग भारि लिये तब दीन वचन सुन कानाजी ॥१॥
धनि धनि धनि ब्रजबाल कहत हरि मनहीं मन नँदलालेजी ॥
बोले दुहुँ कर जोरि कृपानिध सदय हृदय गोपालेजी ॥
अपनी प्रभुता डारि कहत हरि धन्य धन्य ब्रजबालेजी ॥
तुम सन्मुख मैं विमुख तुम्हारो ऐसे कहत दयालेजी ॥ २ ॥

दोहा—मैं निर्दय बहु वचन कहे, तुम जिय एक न आनि ॥
मोकारण गृह कुटुंब तजि, छांडि दई कुलकानि ॥

चौ॰—छाँडि दई कुलकानि धन्य धनि धनि यहप्रीति तुम्हारीजी
मन वच क्रम मोसों अनुरागी धन्य धन्य ब्रजनारीजी ॥
यों कहि विहँसि श्याम बनवारी अंकम भर लइ सारीजी ॥
यदपि अकाम सदा सुखराशी तदपि भये हितकारीजी ॥१॥
एकहि बार युवति सब भेटी विरहाताप विसारीजी ॥
कह्यो सबनसों तब मनमोहन करहु रासमुखकारीजी ॥
कृपादृष्टि अवलोकत नैनन हँसि हँसिके गिरिधारीजी ॥
चहुँ दिश हर्ष भई सब ग्वारी मध्य श्याम बनवारीजी ॥ २ ॥

दोहा—बन विहार विहरत हरी, नवल नवलि बहुरंग ॥
हँसत करत बहुरस चरित, युवति वृन्द लियेसंग ॥

चौबोला–युवति वृन्द लिये संग गये तब यमुना तट सुखदाईजी
सोहाति अति कमनीय कोमलः उज्ज्वलरेत सुहाईजी ॥
करी परम रमणीय यमुन निज अपने पाणि बनाईजी ॥
वहतसमीर त्रिविध सुखदाई कुसुमधूरि छबि छाईजी ॥ १ ॥
उडत सुगंध लपट चहुँओरी गुंजत भँवरन वृन्दाजी ॥
कोटिकामसम नाहिं हरीसो बैठे तहां सुखकन्दाजी ॥
करत विलास हासरस लीला नवल छैल ब्रजचन्दाजी ॥
परिरंभन चुंबन कुचपरसन हिये हुलास अनन्दाजी ॥ २ ॥

दोहा–काम भाव सब गोपिकन, हरिसों प्रीति लगाइ ॥
सो इच्छा पूरण करी, करी सबन मन भाइ ॥

चौ०–करी सबन मन भाइ हरी तब यों रस प्रेम बढावैजी ॥
अति मन हरषि कन्हाइ बहुरि रस रास रंग उपजावैजी ॥
सुनि पिय वचन सकल अनुरागीं भूषण वसन सजावैजी ॥
लखि उलटे भूषण सकुचाई निरखि सकल मुसकावैजी ॥१ ॥
नव सत साज भई सब ठाढी अति आनँद मनमाईजी ॥
कोटि कलपतरु सम सुख रूपा बंसीबट छबि छाईजी ॥
तहां रच्यो रस रास कन्हाई सखिन सहित सुखदाईजी ॥
भई भूमि कपूर मय सब कुमकुम बरषि सिचाईजी ॥ २ ॥

दोहा–रचीरास मंडल विधिः, तहँ श्रीकुँवर कन्हाइ ॥
कापै वरनी जाय छबि, शारद कहत लजाइ ॥

चौबोला–शारद कहत लजाइ रासविधि वरनतमें नहिं आईजी
एक एक युवतिनके बिचबिच हरि निज छबि प्रगटाईजी ॥
मध्य जोरी रासनायक राधा कुँवर कन्हाईजी ॥
एक रूप अनेक वपुधरि सबन वीच छबि छाईजी ॥ १ ॥
प्रगट करी यह लीला हरि सो जानत कोऊ नाईंजी ॥

भई मंडल जोर ठाढी मुख छबि वरनि न जाईजी ॥
सहस बत्तीसहि उदित मानो घन दामिनि छबि छाईजी ॥
तेही अवसर नारिन सहितहिं आये सुर समुदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—हरषि हरषि बरषित सुमन, देखत चढ़े विमान ॥
कहत धन्य ब्रजनारिये, करत मुदित मन गान ॥
चौबोला—करत मुदित मन गान सुरनगण आनँद उर न समावैजी
निरखत ब्रज सुन्दर छबि छावे अति मन हरष बढावेजी ॥
नूपुर कंकण किंकिणि वाजे मुरली मधुर सुहावेजी ॥
सुर मंडल सारंग उपंगा ताल मृदंग बजावेजी ॥ १ ॥
तंत्र अनेक विविध गति साजे मिले एक सुर तालेजी ॥
निर्तत पिय संग चंचल बाला मनुघन दामिनि जालेजी ॥
बिच बिच श्याम बीच ब्रज गोरी सो छबि परम विसालेजी ॥
शुभगतमाल तरुण नँदलाला कनकलता ब्रजबालेजी ॥ २ ॥
दोहा—करसों कर जोरे सुभग, अति छबि परम विसाल ॥
मानहु वृंदावन हृदय, रास मंडलकी माल ॥
चौबोला—रास मंडलकी माल हरी ब्रजनारिन संग सुहावेजी ॥
कोटि काम रतिको मन मोहे सो पटतर नहिं पावेजी ॥
लटकन मुकुट लटक घूंघटकी मटक चलन छबि छावेजी ॥
जनु घन दामिनि निरख बरूथा नचत मोर हरषावेजी ॥ १ ॥
नाचत मानहु मोर यूथनः मुकुट लटक छबि छाईजी ॥
नचत गति ले नागरिन संग श्याम सुन्दर सुखदाईजी ॥
धरणि पग पटकत झटककर अरु भौंहैं मटक सुहाईजी ॥
गीव लाचनि हलनि कुंडल कर फेरन मन भाईजी ॥ २ ॥
दोहा—मुक्तमाल शुभ कंठ मणिं, अरु बनमाल सुहाइ ॥
बदन कमल अलकन छबी, कापै वरणी जाय ॥

चौबोला–कापै वरणी जाइ काछनी कटि पटपीत सुहायेजी ॥
मलय चित्रित बाहु भूषण श्याम तन मन भायेजी ॥
लखत छबि नँदलाल तियनकी विविध शृँगार बनायेजी ॥
सुभग पाटी मांग मुक्ता शीश फूल छबि छायेजी ॥ १ ॥
जटित माल जराउ बेंदी भौंहैं वंक निकाईजी ॥
ललित बेसर नाक अंजन नैनानि अति छबिछाईजी ॥
अधर दशन कपोल चिबुक भूषण कंठ सुहाईजी ॥
करत रास विलास अद्भुत हरत मन सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कबहुँ ललित गति ले चलत, नवल सुघर नँदनन्द ॥
निरखि हरषि तैसेइ चलत, नवल नागरी वृन्द ॥

चौबोला–नवल नागरी वृन्द बिचक्षण नूतन गति ले सारीजी॥
रीझरसिक घनश्याम कन्हाई तापर तन मन वारीजी ॥
निर्तत अरस परस पिय प्यारी बोलति सखि बलिहारीजी ॥
कोउ संगीत कलागुण धारी कोउ लावति सतकारीजी ॥ १ ॥
कोउ कल ध्वनि पियके गुण गावै कोउ नव भाव बतावैजी ॥
सुघर एकते एक प्रवीना ताल भेद गति गावैजी ॥
जब थेई ताथेई थेइ बोलै बिनहीं मोल बिकावैजी ॥
तान तरंग रंग उपजावै अति सुख रस बरसावैजी ॥ २ ॥

दोहा–कोउ मुरलीकर छीनलै, आप बजावति बाम ॥
कोउ पिय संग मिल गावही, काउ बुलावत श्याम ॥

चौ०-काउ बुलावत श्याम तजत पुनि मुख चुंबन कर ताईजी॥
काउअ श्याम लेत भुज भरिकै सो छवि बरनि न जाईजी ॥
रमत रास पिव संग छबीली रही प्रेम रस छाईजी ॥
रास रस पिय संग करत सब रंगी रंग रस माईजी ॥ १ ॥
निरखत देव सुमन बरसावैं अति हरषित मनमाईजी ॥

धन्य धन्य ब्रज धनि ब्रजबाला धनि धनि विपिन सुहाईजी ॥
करत रास विलास पूरण ब्रह्म तहां निज आईजी ॥
शंभु अज सनकादि नारद मुदित रहे गुण गाईजी ॥ २ ॥
दोहा–निरखत श्यामा श्याम छबि; ब्रह्म सुखहि विसराय ॥
देव नारि विसारि पति, करत सकल मन चाय ॥
चौबोला–करत सकल मन चाय विधाता हम न भई ब्रज माईजी॥
कहा भयो जो उरध बसी अरु अमर पदवी पाईजी ॥
निरखि सुख सब ब्रज तियनको सुर नर नारि सिहाईजी ॥
करत सुख ब्रज नारि हरि सँग तीन लोक सो नाईजी ॥ १ ॥
कहति यह वरदेहु विधना विनवत बारहि बारीजी ॥
होयँ दासी ब्रज तियनकी कृष्ण पद हितकारीजी ॥
धनि धनि कहत सुमन बरसावैं मुदित सकल सुरनारीजी ॥
धनि मोहन धनि राधाप्यारी धनि ब्रजगोप कुमारीजी ॥ २ ॥
दोहा–धनि सुन्दरता धन्य सुख, धनि धनि रास विलास ॥
सुर ललना बिथकी कहत, धनि वृन्दावन वास ॥
चौबोला–धनि वृन्दावन वास धन्य धनि धनिये ब्रजकी नारीजी
रमत रास रस गोप कुमारी नन्द नँदनकी प्यारीजी ॥
हाव भाव करि पियहि रिझावे करत गान अति भारीजी ॥
सहज वचन जिनके मन भाये राग रागिनी सारीजी ॥ १ ॥
सहज रूप निधि नवल किशोरी निर्तत अति छवि छाईजी ॥
पग महि पटक भुजन लटकाई फंदा अनुप बनाईजी ॥
निरखि लेत उपजत छवि भारी रीझत कुँवर कन्हाईजी ॥
वेनी छूटि अलक बनराई लट वेसर उर झाईजी ॥ २ ॥
दोहा–श्रम जल विन्दू वदनपर, मनहुँ सुधा शशि छाइ ॥
फिरत सबनके सँगहि सँग, अति वश होत कन्हाइ ॥

चौबोला–अति वश होत कन्हाइ एकही रूप सबन दरशायोजी॥
नारि नारि प्रति रूप प्रगट कियो काउअ सो न जनायोजी॥
अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायो कियो सबन मन भायोजी॥
रूप प्रेम गुण परम उजागरि निर्त थकी श्रम पायोजी॥ १॥
निर्तत थकित भई सब तरुणी भरी रूप गुण माईजी॥
देखत श्याम नागरिनको तब लेत उमगि उर लाईजी॥
टूटे हार गिरत सो उरते हरिको देत जनाईजी॥
लेत बीचही तिन्हें हरी गहि मही परन नहिं पाईजी॥ २॥

दोहा–श्रम जल पोंछत पीत पट,अति हित कुँवर कन्हाइ॥
वेसरसों उरझीलटें, कर कमलन सुरझाय॥

चौ०-कर कमलन सुरझाय देखि हरि विहवल ब्रजकी नारीजी॥
कहि २ वचन मृदू हरि सब सों करन श्रमहिं निवारीजी॥
ऐसी विधि ब्रजकी नारिनको देत सुखहि गिरिधारीजी॥
देखे पति स्वाधीन मनहिं सब भई गर्विता सारीजी॥ १॥
परम प्रेमकी खानि सुन्दरी रूप गुणन अधिकाईजी॥
क्यों न करैं अभिमान जान मन निज वश त्रिभुवन राईजी॥
हम सम अरु युवती कोउ नाई कहत भई मन माईजी॥
अब गिरिधर हम वश करि पाये करिहैं हम मन भाईजी॥२॥

दोहा–अब गिरिधर हम वश किये,कहहि मनहिं मन बाम॥
कहैं जो हम सोई करहिं, वशहि भये घनश्याम॥

चौबोला–वशहि भये घनश्याम हरी अब न्यारे ह्वै हैं नाईजी॥
रहिहैं सदा समीप हमारे सुन्दर कुँवर कन्हाईजी॥
जो हम करिहैं सो हरि करि हैं यह गोपिन मन आईजी॥
सदा हमारे संग विचरिहैं करिहैं मनकी भाईजी॥ १॥
कोउ पिय अंग भुजनको दीने कहति वचन गरबाईजी॥

सुनो श्याम मैं अति श्रम पायो अब नहिं गायो जाईजी ॥
एक कहति ममपाँय पिराने नृत्य न होत कन्हाईजी ॥
एक कंठ भुजमें खिसयानी लटकि कहति कछु नाईजी ॥ २ ॥

दोहा—किये भाव बहुगर्वके, ऐसे सब ब्रजनारि ॥
अंतर्यामी देखि सब, जान लिये बनवारि ॥

चौबोला—जानलिये बनवारि गर्व मन देखि रहे मुसकाईजी ॥
मैं अवगति मोको नहिं जाने यों मन कहत कन्हाईजी ॥
करत सदा भक्तन मन भाई गर्व न नेक सुहाईजी ॥
सो युवतिनके मनमें जान्यो दूर करन मन आईजी ॥ १ ॥
प्रेम अभूषण कनक समाना मलिन गर्विता आईजी ॥
विरह अग्नितापे बिनताई निर्मल होय सो नाईजी ॥
ले वृषभानु कुमारि संग हरि यह विचार ठहराईजी ॥
विहारन प्रभु तजि सखियन ह्वै गये अन्तर्ध्यान कन्हाईजी ॥२॥

अथ अन्तर्ध्यान लीला ॥

दोहा—प्रेम बढावनहित हरी, अन्तर रहे दुराय ॥
गोपिन हरि देखे नहीं, चकित भई समुदाय ॥

चौ०-चकित भई समुदाय कहति इक कित गये कुँवर कन्हाईजी
उठीं सकल जहां तहां अकुलाई भई विकल छिनमाईजी ॥
पाय महाधन मनहुँ गमायो भेद कछू नहिं पाईजी ॥
खोजति जहां तहां दृष्टि पसारे अति आतुर चहुँ धाईजी ॥१॥
तब सब जान लई यह हरिको लेगई राधा प्यारीजी ॥
कछु हरषित कछु रिस उरमाई देन लगीं रस गारीजी ॥
करत सदा दुविधा ये हम सों भरे कपट दोउभारीजी ॥
जान कहां हमते बनपैहैं खोजहिं कुंजन सारीजी ॥ २ ॥

१ सब । २ चौकन्ना । ३ दुःखित ।

दोहा–चलीं बनहिं ढूंढन सकल, जहां तहां फिरत अधीर॥
चरण चिह्न खोजति कोऊ, बन कोउ यमुनातीर॥
चौबोला-बन कोउ यमुनातीर लखति सब विरहातुर ब्रजबालैजी
भई विकल पावत कहुँ नाई खोजति सब नँदलालैजी॥
नेक दुरे बन कुँवर कन्हाई यदपि कियो यह ख्यालैजी॥
बिन देखे मोहन युवती सब तदपि भई बेहालैजी॥ १॥
पलकांतर विधिको दिन तिनको बन अंतर दुखभारीजी॥
भई विरह व्याकुल चित जबहीं हरि पद चिह्न निहारीजी॥
कुलिश कमल ध्वज अंकुश जामें निरखि रहीं ब्रजनारीजी॥
निकट चिह्न प्यारी चरणनके अरुण कमल शुभकारीजी॥ २॥
दोहा–लगीं करन वन्दन रजहि, याचत शिव विधिताय॥
कछुक धीर उर में भयो, खोजति तिहिं मगजाय॥
चौबोला–खोजति तिहिं मग जाय सखी सब ढूंढरहीं बनजाईजी॥
कुँवर कान्ह प्यारी सँगलीन्हे फिरत कुंज बनमाईजी॥
कबहुँ कुसुम वनमाल बनाई प्यारी उर पहराईजी॥
कबहूं सुमन सँवारत वेणी सुभग परम छवि छाईजी॥ १॥
कबहुँ सरोज सुगंध सुंघावै करि करि नाना भावैजी॥
नागर मन अभिलाष बढावैं लखि नागरि सुखपावैजी॥
कंठ कंठ मिल दोउ भुज जोरैं घन दामिनि छवि छावैजी॥
अति वश भये श्याम प्यारीके जित जावै तितधावैजी॥ २॥
दोहा–पतिहित लखि अनुकूल अति, हराषि लाडिली हीय॥
ताते उपज्यो गर्व मन, मैं अति प्यारीपीय॥
चौबोला–मैं अति प्यारी पीय लाडिली मनहीं मन गरबाईजी॥
एक प्राण कहिये द्वै देही तहां गर्व कहां पाईजी॥
देह धरेको भाव जु येही यामें संशय नाईजी॥

तब प्यारीके मन यह आई मेरे वशहि कन्हाईजी ॥ १ ॥
मेरे हित बाँसुरी बजाई सब ब्रजनारि बुलाईजी ॥
मेरे हित रसरास उपायो सब तजि मुहि सँगलाईजी ॥
मोसम सुन्दर चतुर उजागर और नारि कोउ नाईजी ॥
ऐसे गुणति मनहिं मन चलत न ठठकि रही मगमाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बाँह गहत नँदलालकी, बैठि जात मगमाइ ॥
कहति अहो मोहन पिय, मेरे पाँय पिराइ ॥

चौबोला—मेरे पाँय पिराइ चलन तुम कहत हो जहां कन्हाईजी ॥
मोपै पग न चल्यो नहिं जाई नृत्य करत श्रम पाईजी ॥
ताते पग नहिंजात उठायो सुनहु श्याम सुखदाईजी ॥
ऐसे वचन कहति हँसि पिय सों कंधेलेहु चढ़ाईजी ॥ १ ॥
गर्व भरे मुख वचन सुने तब रहे श्याम मुसुकाईजी ॥
अंतर्ध्यान भये हरि तबहीं गर्व जहां मैं नाईजी ॥
तुरतहि विकल भई अति प्यारी देखत दुरे कन्हाईजी ॥
कितहि गये हरि भजि सुखदाई चकित भईमनमाईजी ॥

लावनी।

तब चकित भई मनमाहिं लाडिली प्यारी ॥
भूलीं सब तनकी दिशा सोच अति भारी ॥

टेक—मैं कीनों मन अभिमान बात यह ठानी ॥
तबहीं मोकों तजिगये श्याम सुखदानी ॥
वेहैं पिय परम सुजान मनहिं की जानी ॥
निज करनीको मन समुझि अधिक पछितानी ॥
रहि विरह बिकल अकुलाय रोवति सुकुमारी ॥
भूलीं सब तनकी दिशा सोच अतिभारी ॥ १ ॥

नैनन सलिल रहि डारि भिजत तन सारी ॥
अरु पिय पिय बारमबारहि कहत पुकारी ॥
हाहा मम नाथ न करो अनाथ मुरारी ॥
दीजै अब दरशन आय वेग गिरिधारी ॥
यह चूक परी बोली नहिं वचन सँभारी॥भूलींसब०२॥
यह दूषण चित निज धरो अहो सुखदाई ॥
अब क्षमा करो यह चूक लेहु अपनाई ॥
सुन खग मृग अरु द्रुम वेलि रोवत अकुलाई ॥
बन ढूंढति सब ब्रजनारि चली तहां आई ॥
लखि शशि मुख मानों घनतेदामिनिन्यारी।भूलींसब०३
दूरेते तिन लखि लई राधिका प्यारी ॥
देखी अति व्याकुल चित्त विरह दुखभारी ॥
जित तितते धाई शीघ्र सकल ब्रजनारी ॥
उरलाई हित करि सब मिल ताहि निहारी ॥
कहा भयो तोहिंरी बूझति बारहि बारी ॥
भूलींसब तनकी दिशा सोच अति भारी ॥ ४ ॥

दोहा—बारबार बूझति सबै, कहाँ गये गोपाल ॥
मुखते वचन न आवही, मुर्छे परीं वेहाल ॥

चौबोला—मुर्छे परी वेहाल देखि सब ब्रजनारी पछि ताईजी ॥
बैठारी अंकम गहि प्यारी बूझति सब अकुलाईजी ॥
कहि राधा बोलति क्यों नाई काहे तू मुरझाईजी ॥
कहां गये तजि तोहिं कन्हाई कैसे तू इत आईजी ॥ १ ॥
कोउ अंचरते पोंछति पलकैं काउन अलक सँवारीजी ॥
नैन नीर कछु सुधि नाहिं देही अति व्याकुल सुकुमारीजी ॥
चलिहैं तोहिं तहाँले प्यारी जहाँ श्याम गिरिधारीजी ॥

विरह मोहनिद्राते जागी सुनत नाम बनवारीजी ॥ २ ॥
दोहा—जान्यो मन आये हरी, धाय मिलो अब श्याम ॥
नैन उघारे मिलनको, तहाँ देखि ब्रजवाम ॥
चौबोला-तहाँ देखि ब्रजवाम अधिकही उठी बहुरि बिलखाईजी॥
कहति मोहिं त्यागी नँदनंदन तुमहिं न मिले कन्हाईजी ॥
नहिं उनकी महिमा कछु जानी करि मन गर्व भुलाईजी ॥
बोली पियसों मंदमती मैं अति अभिमान बढ़ाईजी ॥ १ ॥
लीजै कंध चढाय मोहिं पिय मोपै चल्यो नजाईजी ॥
वे पिय परम सुजान कह्यो मुहि चढहु कंध तुम आईजी ॥
ह्वै गये अंतर्ध्यान कन्हाई तबते रहि पछिताईजी ॥
गये श्याम धों कित बनमांई दृष्टि परे कहुँ नाईजी ॥ २ ॥
दोहा—भई विरह व्याकुल अती, रहीं नैन जल डारि ॥
कहति मोहिं त्यागी अली, याबनमें बनवारि ॥
चौबोला—यावनमें बनवारि तजी मुहिं कहति सखिन सों प्यारीजी
मुरछि परी पुनि धरणि मझारी श्याम विरह दुखभारीजी ॥
देखि दशा व्याकुल सब नारी कहति निठुर बनवारीजी ॥
त्रिया पुरुष सों मान ज़ुकरहीं पुरुष न उर कछु धारीजी ॥ २ ॥
देखहु श्याम तजी हम कैसे कहा मन माहिं विचारीजी ॥
मिलि हैं श्याम धीर धर प्यारी कहति सकल ब्रजनारीजी ॥
चलीं आप खोजन सब बनमें तनकी सुरत विसारीजी ॥
अहो रास पति कुंज बिहारी टेरति घोष कुमारीजी ॥ २ ॥
दोहा—जात प्राण तजितन अबै, तुम विन मोहनलाल ॥
कहाँ दुरे पिय भाजिकै, कहति सकल ब्रजबाल॥
चौ०-कहति सकल ब्रजबाल क्षमो अब प्रभु यह चूक हमारीजी
मिलहु कृपा करि वेग मुरारी देहु दरश सुखकारीजी ॥

क्षण क्षण कल्प समान विहाई तुम बिन श्रीगिरिधारीजी ॥
जरत सकल बिन तुमहिं निहारे विरह अग्नि ब्रजनारीजी ॥ १॥
मंद मधुर मुसकान सुधारस बरषि बुझावहु आईजी ॥
गावत तुमको वेद पुराना सकल विश्व सुखदाईजी ॥
हम दासी प्रभु तुम चरणनकी तुम्हरे हाथ विकाईजी ॥
गरल अनल जलते रख लीनी जहँ तहँ करी सहाईजी ॥ २ ॥

दोहा–निठुर होत हो कत हरिः, जरत विरह ब्रजबाल ॥
कत डोलत उघरे चरण, या बन में नँदलाल ॥

चौबोला–या बनमें नँदलाल गडहिं कहुं कुशकंटकहिं कन्हाईजी
ते कंटक शालत हैं जियमें तुम पद हम उरमाईजी ॥
सुख देके दुख देत मुरारी कहा नाथ जिय आईजी ॥
ऐसे कहति सकल बन डोले अलबल वचन सुनाईजी ॥ १ ॥
जड़ चेतन जानति कछु नाई अतिहिं गई अकुलाईजी ॥
बूझति बन विटपन सों धाई तुमहुँ लखे सुखदाईजी ॥
अहो कदमहीं अंब तमाला हमें हरि देहु बताईजी ॥
अहो जुही मालती माई लखे कहुं जात कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–चंपा श्रीफल रंभ तुम, देखे कुँवर कन्हाइ ॥
हे दाड़िम जामुन कहो, कहां श्याम सुखदाइ ॥

चौ०-कहां श्याम सुखदाइ कहो किन कहां सुखराशि कन्हाईजी
हे पलाश हम दासि तुम्हारी दीजे श्याम बताईजी ॥
हे पीपर हर पीर हमारी हे मन्दार सुहाईजी ॥
सुन्दर घन तन श्याम सलोने कहो कहां सुखदाईजी ॥ १ ॥
हे चंदन तुम हो उपकारी पिय घन श्याम बतावोजी ॥
हे अवनी चितचोर हमारे तुम जिन राखि छिपावोजी ॥
तुम ते दूर कहूं हरिनाई क्यों नहिं आनि मिलावोजी ॥

कहो कुंद मुकुंद कहां है नैनन हमहिं दिखावोजी ॥ २ ॥
दोहा–हे बट नट नागर हरी, कहां सो देहु बताय ॥
मानेंगी उपकार हम, बूझति हाहाखाय ॥
चौबोला–बूझति हाहाखाय देखियत दृष्टि तिहारी भारीजी ॥
लखे कहूँ तुम जात मुरारी कमलनैन गिरिधारीजी ॥
हे दुखदमन परम सुखकारी गति सर्वत्र तुम्हारीजी ॥
जहाँ होय बल वीर विहारी कहिये व्यथा हमारीजी ॥ १ ॥
हे तुलसी तुम तो सब जानो कहां श्याम सुखकारीजी ॥
क्यों नहिं हरि सों प्रगट बखानो दुख पावत ब्रजनारीजी ॥
तुम तो सदा श्यामकी प्यारी कहो किन दशा हमारीजी ॥
बोलत नहिं तरु कहति इनहुंको ले गये मन बनवारीजी ॥२॥
दोहा–इहि विधि वन घन ढूंढ सब, ब्रजतिय विरह उदास ॥
इत उतते आईं पुनिः, कुँवरि राधिका पास ॥
चौबोला–कुँवरि राधिका पास बैठ सब भईं विरह आधीनेजी ॥
अति व्याकुल तरफत परीं सब मनहुँ नीर विन मीनेजी ॥
श्याम विरह दुख भयो अतिहिं तब भईं सब मनहिं मलीनेजी
व्याकुल कहति सकल ब्रजनारी श्याम दरश नहिं दीनेजी॥१॥
श्याम विना कैसे सुख पावें कहा करें कित जाईजी ॥
जहाँ रसिकपिय रास रच्यो तहाँ बहुरि यमुन तट आईजी ॥
बैठीं सब राधा ढिंग बामा रहीं श्याम गुण गाईजी ॥
दृष्टि बन्द करि नटवर जैसे सबके ढिंग सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–हरि सबकी लीला लखें, युवतिन नाहिं लखाय ॥
देखि देखि सुखपात हरि, मन मन प्रीति बढ़ाय ॥
चौ०-मन मन प्रीति बढ़ाय करत हरि चरित विचित्र बिहारीजी॥
सदा श्याम भक्तन दुखहारी हरि जनके हितकारीजी ॥

विरह अग्नि तनगर्व जरायो निर्मल प्रेम भइ नारीजी ॥
गोपीजन सब हरिकी प्यारी नेक न हरिते न्यारीजी ॥ ३ ॥
कहति श्याम ब्रँज प्रगटे तबते देत सबन सुख भारीजी ॥
तिनमें हम सब उनकी दासी हमहिं तजी बनवारीजी ॥
व्याधहुते करनी कठिन यह हमते करी मुरारीजी ॥
नैन वजाय बुलाय सबन अब बधंत मृगीलों नारीजी ॥ २ ॥

दोहा—यह मन गीध्यो माधुरी, मरति मसोसा खाय ॥
मोहन मुख देखे विना, कीजै कौन उपाय ॥

चौबोला—कीजै कौन उपाय हमारे मनहिं बसे बनवारीजी ॥
तब अति बालक हते मुरारी बालखेल किये भारीजी ॥
खेलतमें बहु असुर सँहारे दिये विघ्न सब टारीजी ॥
अद्भुत चरित मनोहर कीनों लीनो नख गिरिधारीजी ॥ १ ॥
हलधर सखन संग मुरलीधर चारन धेन पधारेजी ॥
तब हमको वीतत दिन जैसे जानत मनहिं हमारेजी ॥
कुंडल मुकुट केश घुँघुरारे शोभित दृग अनियारेजी ॥
वेन बजावत मधुर रसाला पीत वसन तन धारेजी ॥ २ ॥

दोहा—गौअन पाछे सखन सँग, सांझ समय जब आत ॥
चंदन चित्रित अंग लखि, जन्म सुफल करि पात ॥

चौ-जन्म सुफल करि पात ऐसी विध कथति सकल ब्रजनारीजी॥
समुझि सुमिर गुण कहत श्यामके रूप कथा विस्तारीजी ॥
उपजी उर अति प्रीति अनूपा तनुकी सुरति विसारीजी ॥
नहिं जानति हमको कित आई ह्वै गइ तन मयसारीजी ॥ १ ॥
भृंगीकीट समान लखावै मगन ध्यान रस माईजी ॥
भई आपही कृश तनु नारी सब सयान विसराईजी ॥

१ वधिक। २ मारत। ३ काजरको सान धरे। ४ दुर्बल।

लागीं करन चरित सब हरिके रह्यो प्रेम उरछाईजी ॥
ये लीला उनहींको सोहै तनकी सुरत भुलाईजी ॥ २ ॥
दोहा–एक भई दधि चोर इक, पकरि भुजाले आइ ॥
एक यशोमति वपुधरे, बांधति ऊखललाइ ॥
चौबो०–बांधाति ऊखल लाइ एक अंबर करगिरिहि उठावैजी ॥
गाय गोप कहि सबन बुलावै लोचन एक मुँदावैजी ॥
मैं करिहौं दावानल मोचन ऐसे वचन सुनावैजी ॥
यमलाअर्जुन तरु इक भंजै एक बकाहि नशावैजी ॥ १ ॥
इक भइगाय एक गोपाला वैसेहि वचन सुनावैजी ॥
कारी धोरी धूमरि कहि कहि हटकत फिरत बुलावैजी ॥
एक वस्त्रको नाग बनावै तापर नृत्य सुहावैजी ॥
एक त्रिभंग ह्वै वेन बजावै दधिको दान चुकावैजी ॥ २ ॥
दोहा–अंतरनेकु रह्यो नहीं, भईं श्याम ब्रज वाम ॥
तब अंतर नहिं करसके, भये निरंतर श्याम ॥
चौबोला–भये निरंतरश्याम तिनाहिं माधि प्रगटभयेतिहिंकालैजी
गोपीजन बल्लभ सुखदायक सुन्दर नैन विसालैजी ॥
प्रेम मगन तब अति आतुर उर लई कुँवरि नंदलालैजी ॥
देखि प्रगट दरशन गोपालै मिली धाय ब्रजबालैजी ॥ १ ॥
ज्यों धनराशि परीकहुँ पावै लोभी लूट न धावैजी ॥
एक मिलत ग्रीवादे वांहीं हरिको उरसों लावैजी ॥
कोऊ परी चरणपर आई कोऊ अंग लपटावैजी ॥
कोऊ गहि उर पंकज लावै विरहाताप नशावैजी ॥ २ ॥
दोहा–कोउ लटकी भुज सों रही, जनुतरुवेलि सुहाइ ॥
कोउ निहारति मुख छबी, कोउ चरण उरलाइ ॥
चौबोला-कोउ चरण उरलाइ कोऊदृग भरिकै कहति मुरारीजी॥

एक पीत पट छोर रही धरि कोउ मुखरही निहारीजी ॥
जनु बन घन घेरयो बहुदामिन मिलि हरिसों यों नारीजी ॥
कृपा दृष्टि सब ओर निहारे युवतिनको गिरिधारीजी ॥ १ ॥
बैठे तहाँ पुनि हरि हरषाई चहूं ओर ब्रजनारीजी ॥
सबके सन्मुख राजहिं सुन्दर छबि सागर बनवारीजी ॥
यह सब हँसत कियो मैं ख्याला बोले विहँसि मुरारीजी ॥
प्यारी कत बेहाल भई तुम मुहि प्राणहुँते प्यारीजी ॥ २ ॥

दोहा–सकुची सुन पिय सुख वचन, मनहीं मन हरषाय ॥
कहि कहि कोमल वचन हरि, डारयो दुख विसराय ॥

चौ०-डारयो दुख विसराय अतिहि आनंद सबन उपजायोजी
सुफल मनोरथ सबको कीनो कियो सबन मन भायोजी ॥
पूरण करी साध हरि सबकी जो जाने मन चायोजी ॥
भये कान्ह प्रीतम अनुकूले मिल सबहिंन सुख पायोजी ॥१॥
तब हरिसों सब नवल किशोरी पूँछति कहो कन्हाईजी ॥
प्रेम प्रीतिकी रीति सुहाई हमहिं कहो समुझाईजी ॥
एक जो प्रीति परस्पर कहिये एक एक दिश लाईजी ॥
ताको कहा कहत जगमाई दोउअन मानत नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–उत्तम प्रीति जो कहत सब, कहो सोइ समुझाइ ॥
हम अबला जानत नहीं, पूछति तुम्हें कन्हाइ ॥

चौबो०-पूछति तुम्हें कन्हाइ कहन लगीं हरिसों सब ब्रजबालाजी
सुनि गोपिनके वचन रसाला भये प्रसन्न कृपालाजी ॥
यदपि जगत गुरु अजित सनातन करुणासिंधु दयालाजी ॥
हारे तदपि प्रेम बश मोहन अपने मुख नँदलालाजी ॥ १ ॥
सुनहुँ प्राणवल्लभ प्रिया तुम कहत भये सुखदाईजी ॥
निपुण प्रेमके पंथ मझारी तुम समान कोउ नाईजी ॥

तदापि तुम पूछतिहो जैसे कहों तुमहिं समुझाईजी ॥
एक जो प्रीति पररुपर होई स्वारथ हेतु बताईजी ॥ २ ॥
दोहा–आपुसमें हित करत जिमि, पशू पशूपर प्यार ॥
सो वह प्रीति कनिष्ठहै, जासु बँधत संसार ॥
चौबोला–जासु बँधत संसार दूसरी प्रीति एक दिश लावैजी ॥
करत धर्म अधिकारी जोई सोई प्रीति निभावैजी ॥
रक्षतहै सुतके हित जैसे मात पिता चित लावैजी ॥
सोवह मध्यम प्रीति कहावै उत्तम गति जनपावैजी ॥ १ ॥
जोये दोउअनको नहिं मानैं गुण दूषण नहिं लावैजी ॥
तिन्हें कृतज्ञ कहत सब कोई पुनि अज्ञान कहावैजी ॥
उत्तम प्रीति जानिये सोई अनायास उपजावैजी ॥
दुहुँ दिशि हठि करि प्रीति बढ़ावै नहिं निमित्त कछु आवैजी ॥२॥
दोहा–उत्तम प्रीति सोई कही, अंतर नेकु न होइ ॥
मैं ऋणिया तुमरो सही, करी प्रीति तुम सोइ ॥
चौबोला–करी प्रीति तुम सोइ कोटि उपकार करो तुम पाईजी ॥
हे प्रिया ब्रजसुन्दरी मैं उऋण तुमते नाईजी ॥
तुमने यह करनी करी जो सो कापै बन आईजी ॥
लोक वेद मर्यादा मम हित तृण सम तोरि बहाईजी ॥१॥
अब यह दोष कियो मैं तुमते दूरकरो सो प्यारीजी ॥
कियो परमसुखमें यह अंतर दियो विरह दुखभारीजी ॥
ऐसे प्रेमाधीन भये हरि कहि कहि वचन विहारीजी ॥
दूरकरी तब सब युवतिनके मनते गाँस मुरारीजी ॥ २ ॥

अथ महामंगल रासलीला।

दोहा–विहारन प्रभुके वचन सुन, बाढ़्यो परमानन्द ॥
प्यारी पिय नँदलालकी, परम मुदित तिय वृन्द ॥

चौबोला–परममुदित तियवृन्द पीय मुखरसवाणीसुनपाईजी॥
गोपीजन सब मन हरषाई आनँद उर न समाईजी॥
हँसि हँसि बहुरि लाल उरलाई दियो संदेह मिटाईजी॥
देखि सबनकी प्रीति श्याम पुनि रास रुची उपजाईजी॥ १॥
वैसोइ सुख सबको उपजायो वही भाव भइ गोरीजी॥
यह जान्यो सबहिन तबहींते करत रास यहि ठौरीजी॥
अंतर्ध्यान चरित सब भूली भइ आनंद किशोरीजी॥
बिच बिच श्याम बीच बिचगोरी रासमंडल विधिजोरीजी॥२॥

दोहा–वैसेइ मधि हरि राधिका, वैसिहि प्रीति सुहाइ॥
वैसिहि बाजत मुरलिया, थकित भयो उड़राइ॥

चौबोला–थकित भयो उड़राइ वैसेई सुरविमान नभ आवैजी॥
वैसेइसुर मुनि गंधर्व मोहे निरखत ब्रज सुख पावैजी॥
वैसेइ खग मृग नवद्रुम वेली यमुना तट छवि छावैजी॥
वही रासरस शोभित सुन्दर त्रिविध पवन सुहावैजी॥ १॥
करत वैसोइ रास रस पुनि युवती अति छवि छाईजी॥
गौर अंग सब वैसै किशोरी मुख छवि शशिहि सुहाईजी॥
जोरे पंकज पाणि बाहू मृणाल मंडल लाईजी॥
मध्य सबके श्याम श्यामा रूपराशि सुखदाईजी॥ २॥

दोहा–शीश मुकुट भूषण वसन, अति छवि परम सुहाइ॥
अंग अंग निरखत रती, कोटिन मदन लजाइ॥

चौबोला–कोटिन मदन लजाइ बजत चरणन नूपुरछबिछाईजी
बीन ताल मृदंग डपंगा चंग साज सजाईजी॥
भरे प्रेम आनंद परस्पर निरखत छवि हरषाईजी॥
नवल नागरी ब्रज वधू सब नागर नवल कन्हाईजी॥ १॥

१ अत्यानन्दित। २चन्द्र। ३ आकाश। ४ अवस्था। ५ कामदेव। ६ बिछिया।

रहे निरखि सुर भूलि जुरे सब सुन्दरि सहित विराजेजी ॥
पुनि पुनि बरषत फूल सुखन सब कहत धन्य ब्रज आजेजी ॥
करि दिग विजय नृपतिवर जैसे हरि मुख मुरली बाजेजी ॥
बैठी पाणि सिंहासन गाजै अधर छत्र शिर साजेजी ॥ २ ॥
दोहा–अधर छत्र शोभित सुभग, चँवर चिकुर छबिभार ॥
सन्मुख आदर सहित सब, दूरहि करत जुहार ॥
चौबोला-दूरहि करत जुहार रहे मधु पिक वंदी गुण गाईजी ॥
मागध मदन प्रशंसि सुनावे अति मन हरष बढाईजी ॥
मानमहीपति बल मथि मानो ल्याये युवतिन काईजी ॥
विनहिं पनचको दण्ड भेद कियो ब्रह मंड सुर जाईजी ॥ १ ॥
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी जय जय रहे सुनाईजी ॥
नारि पुरुष जड़ जंगमजे सब किये सकल वश माईजी ॥
थक्यो पवन जल अनल सिरानी विधि कृत सकल मिटाईजी ॥
निज ठकुरायन रेखा बांची भये वशहिं अधिकाईजी ॥ २ ॥
दोहा–रच्यो राजसूयज्ञ रस, रास विपिन शुभधाम ॥
तहाँ अधिकारी सांवरो, मोहन सुन्दर श्याम ॥
चौबोला–मोहन सुन्दर श्याम प्रेमरस सबको दान चुकावेजी ॥
बढ्यो माधुरी हेत लोग सब परमानँद सुख पावेजी ॥
बाजत मधुर मधुर सुर मुरली गोपीजन सब गावेजी ॥
राग रागिनी प्रगट दिखावे रूप अनूप सुहावेजी ॥ १ ॥
अति प्रवीन पियको मन मोहै नृत्यति सोभा पावेजी ॥
नाचत कबहुँ श्याम अरु श्यामा लखि युवती हरषावेजी ॥
ले गति चलत परस्पर सो छबि को कवि वरन बतावेजी ॥
होड़ा होड़ी रंग बढ़ावे तडप लेत छबि छावेजी ॥ २ ॥
दोहा–उरझी बेसर सों लटः, अरु मन बैन न बैन ॥

पीत वसन वन माल सटि, उरझे नैनन नैन ॥
चौबोला–उरझे नैनन नैन नचतहारि युगल चपल शुभकारीजी ॥
प्रेम उरझ उरझे पिय प्यारी अति मन आनँदभारीजी ॥
उरझी गोपीजन लखि शोभा कहत नहीं निरबारीजी ॥
अति रस रंग बढ्यो सुखभारी थेइ थेइ बोलति सारीजी ॥ १ ॥
मगन सकल रस सिंधुनिहारें रीझ रीझ बलि जाईजी ॥
मगन सब रस रास सुख निधि तन मन वारि वहाईजी ॥
हिय हुलास नाहिं जाय कही द्युति युगल रूप छबिछाईजी ॥
कियो जु तप पति हेत बारह मास सो पति पाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कियो मंत्र तब व्याहको, गावति मंगलचार ॥
ललित कुंजबितान शुभ, लतानिमंडलभार ॥
चौबोला–लतानिमंडल भार बहू रंग वंदनवार सुहाईजी ॥
चारु सुमन छबि अति अधिकाई निरख सकल सुखपाईजी ॥
यमुना पुलिनरची शुभवेदी अति विचित्र मनभाईजी ॥
बरन सकै छबि को कबि जाकी शोभातिहुँ पुर छाईजी ॥ १ ॥
तहाँ श्रीनँदनन्द लाडिलो श्री वृषभानु दुलारीजी ॥
दूलह दुलहिन राजहिं सुन्दर सोभा अमित अपारीजी ॥
भरी परम उत्साह सुन्दरी ललितादिक ब्रजनारीजी ॥
लागीं करन विवाह विविध सब प्रीति रीति उरधारीजी ॥ २ ॥
दोहा–मोर मुकुट रचि मोर करि, सो शिरधर बनवारि ॥
तन घन श्याम अरु पीतपट, घन दामिन बलिहारि ॥
चौबोला-घन दामिन बलिहारि माल बन हारि गरमाहिं सुहाईजी ॥
निरखत इन्द्र धनुष द्युति लाजे अति छबि बरनि न जाईजी ॥
ललित अंग तन भूषण जाला कुंडलकी झलकाईजी ॥
सकल कलागुण रूप निधाना त्रिभुवनके सुखदाईजी ॥ १ ॥

जाके मन्मथ सैन बराती फूले विटप सुहावेजी ॥
करिकोलाहल पिक शुक बोले नचत मोर छबिछावैजी ॥
नभ सुरगण दुंदुभी बजावै गंधर्वजन सब गावैजी ॥
ब्रजतिय करति सकल मनभाये सुरन सुमन बरसावैजी ॥ २ ॥
दोहा—शुभग सँवारी लाडिली, सारी सुरंग सजाय ॥
नख शिख भूषण मुखछबी,लखि शशिरह्यो लजाय ॥
चौ-०लखि शशि रह्यो लजाय शुभघरीमानिसकलब्रजनारीजी॥
शरद निशा पून्यो विमल शशि निरखि प्रफुल्लित भारीजी ॥
मधुर वचन कहिकै कियो हँसि पाणिग्रहण बनवारीजी ॥
पढत नभ विधि वेद वाणी जै जै सुरन उचारीजी ॥ १ ॥
तब आलिन हँसि गांठि जोरी प्रेम गांठि हिय पारीजी ॥
सहस सोरह संग सखियन फिराति भांवरी सारीजी ॥
पूरण सदा भई सबके उर बाढ्यो आनँद भारीजी ॥
दूलह श्रीमोहन नँदलाला दुलहिन राधाप्यारीजी ॥ २ ॥
दोहा—निरखि देव बरषैं सुमन, हरष न हिये समात ॥
वृन्दाबन रस रास सुख, लखि सब धूम सिहात ॥
चौबोला—लखि सब धूम सिहात परस्पर सुर गण अति हर्षाईजी॥
यह सुख हमसों दूर कहत क्यों लगहिं धूरि उड़ि आईजी ॥
नवनागर बर नवल किशोरी युवतिन मध्य सुहाईजी ॥
शोभा अमित पारको पावै अति छवि बरनि न जाईजी ॥ १ ॥
दूलह श्याम दुलहनी राधा रूप सिंधु दोउ भारीजी ॥
रंग भीनी रंग भीने दोऊ राधा श्याम मुरारीजी ॥
निरखि युगल छवि होय सुखारी रंग भीनी ब्रजनारीजी ॥
भरी प्रीति रस गारी गावैं सुख पावैं पिय प्यारीजी ॥ २ ॥
दोहा—बार बार दंपति गुणन, गावति सब ब्रजनारि ॥

उपजावति सब मोह उर, हास विलास अपार ॥
चौ०-हास विलास अपार बजत नभ दुंदुभि अति छबि छाईजी॥
निरत कला रंभादिक साजैं छवि वरनी नाहिं जाईजी ॥
हंस मोर पिक चातक बोलैं डोलत मृग ढिंग आईजी ॥
वारति तिय भूषण हर्षाई देत मृगन पहराईजी ॥ १ ॥
एक सखी वृषभानु रूप धरि एक नंद बनिआईजी ॥
अतिहित मिले महर दोउ विनती श्रीवृषभानु सुनाईजी ॥
तब वृषभानु जोरकर विनयो सुनहु महर नँदराईजी ॥
हम भये अब सकल सनाथा कृपा तुम्हारी पाईजी ॥ २ ॥
दोहा-बडे पुण्यते तुम सगे, मिले हमें नँदराइ ॥
सकल जनन शिर मुकुट मणि, सुन्दर कुँवर कन्हाइ॥
चौ०-सुन्दर कुँवर कन्हाइ सुनहु हम तुम समान कोउ नाईजी ॥
तुम गेह मंजन हेत कन्या दई तुमहिं नँदराईजी ॥
भानुपुरके लोग जे सब तुम्हरे दास सदाईजी ॥
गहे चरण वृषभानु नंदके बहुविधि विनय सुनाईजी ॥ १ ॥
अति आनंद भरे अनुरागे तब बोले नँदराईजी ॥
सुनहु महर वृषभानुजु धनि धनि तुम समान कोउ नाईजी ॥
तुमसे समुद्रनसों सुनो संबंध न मांगे पाईजी ॥
सुन्दर निर्मल यश तुम्हारो लोकनमें रह्यो छाईजी ॥ २ ॥
दोहा-नेह तुम्हारो श्याम सों, प्रीति पुरातन जानि ॥
करी कृपा कन्या दई, रूप गुणनकी खानि ॥
चौबोला-रूप गुणनकी खानि कामना पूरण भई हमारीजी ॥
अब हम भये बड़े सब भाँतिः यह सब कृपा तुमारीजी ॥
नागर नवल किशोर हरष मन मन मन हरषित प्यारीजी ॥
लखि रसरीति सखिनकी सारी उपजत प्रेम अपारीजी ॥ १ ॥

विलसत अति आनंद सकल मिल रस विलास ब्रजनारीजी ॥
कोकहिसकै सुहाग सुखहि भये प्रीति विवश बनवारीजी ॥
त्रिभुवन पति दूलह करि पाये भइ प्रसन्न मन सारीजी ॥
व्याहरीतिं सब करि ब्रजनारी गावति यशोदहि गारीजी ॥ २ ॥

दोहा—कर कंकण छोरन विधिः, रचि रचि गाँठि लगाय ॥
छोरहु कंकण श्याम अब, कहति सखी हरषाय ॥

चौबोला-कहति सखी हरषाय तुम्हें सब कहत चतुर गिरिधारीजी
यह न होय धरिबो गिरिको कर कहति सकल ब्रजनारीजी ॥
कै छोरो कै दोउ कर जोरो सुनो श्याम बनवारीजी ॥
दुलहिनके परि पाँय निहोरो छोरहु वेग[1] मुरारीजी ॥ १ ॥
बड़े कहावत हो ब्रजनाथा कंपत हाथ कन्हाईजी ॥
छोरहु वेग कि पठवहु अपनी यशुमति मात बुलाईजी ॥
दोउ परस्पर[2] कंकण छोरे प्रेम प्रीति उरमाईजी ॥
पचिहारे[3] कंकण नाहिं छूटत निरखि सखी हरषाईजी ॥ २ ॥

दोहा—छोरहिं कंकण आप दोउ, जिनकोउ करो सहाय ॥
दुलहिन छोरहिं वेगके, ले वृषभानु बुलाय ॥

चौबोला--ले वृषभानु बुलाय कहति सब हँसि हँसिके ब्रजबालैजी
कमल कमल परसों तब जानो पानि लाडिलीलालैजी ॥
लखि कवि कुलहि लगत हैं साँचे रोम कटीली नालैजी ॥
दुलहिन श्रीराधा कुँवरि तहां दूलह नँदको लालैजी ॥ १ ॥
रहो सदा अविचल यह जोरी सन्तनके सुखदाईजी ॥
यह रसरास चरित हरि कीनो युवतिन हेत कन्हाईजी ॥
ब्रजतिय सुख हित[4] करी श्याम निश मासषँटहि छविछाईजी ॥
श्रीभागवत कहो शुकभाषी वेद श्रुतिनमें गाईजी ॥ २ ॥

१ शीघ्र। २ आपसमें। ३ थक गये। ४ छः महीना।

दोहा–वेद बतावत साखि कहि, शेष सहस मुखगाय ॥
शिव ब्रह्मा सनकादि मुनि, शारदादि रटलाय ॥
चौबोला–शारदादि रटलाय गावत सब संत सदा सुखदाईजी ॥
सोरहसहस गोपे सुकुमारी तिन संग कुँवर कन्हाईजी ॥
कियो रास रस रहस अगाधा सबकी आश पुराईजी ॥
नैन सैन मुख वचन प्रकाशा हाव भाव अधिकाईजी ॥ १ ॥
भुजभरि मिलन अधर रसचाखन नृत्य गान छविछाईजी ॥
क्षण क्षण बढ़त अधिक रसरीती इह विधि रैन बिताईजी ॥
भयो समय ब्रह्मी शुभकाला रास रमत श्रम पाईजी ॥
सोहत संग सकल ब्रजबाला यमुना गये कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सँग शोभित ब्रजनारि सब, गये यमुन नँदलाल ॥
शरदरैन रसरास करि, भई मगन ब्रजबाल ॥
चौबोला--भई मगन ब्रजबाल रहीं सब मनहीं मन हरषावैजी ॥
जिमि मदमत्त गजहि लिये यूथा करणिन सँग छवि छावैजी ॥
बन घन सरित फिरत हरि क्रीडत निडर न कछु भय आवैजी ॥
तिमि नँन्दलाल जननहितकारी रसनिधि परम सुहावैजी ॥१॥
प्रेमानंद भई ब्रजनारी वेद मर्याद मिटाईजी ॥
वृन्दावन यमुना तट करि सब रहसकेलि सुखपाईजी ॥
विहारन गुण ब्रजनारिनके सब गावत सुर हरषाईजी ॥
धनि वृन्दावन धन्य रास धनि श्यामा कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–वृन्दावन सुख एक पल, नहिं सुरपुर समतूल ॥
सुरगण मन आनँद भरे, कहि कहि बरषैं फूल ॥
चौबोला-कहि कहि बरषैं फूल यमुन जल क्रीडत नवल विहारीजी
सोरहसहस संग ब्रजनारी तिन मधि मोहन प्यारीजी ॥
दंपति गौर साँवरी जोरी राधा श्याम मुरारीजी ॥

कोउ कटि लौं ग्रीवा लौं कोऊ जलमें ठाढीं सारीजी ॥ १ ॥
अति अपार छबि पार न पावै कवि उपमा किमि गावैजी ॥
छिरकत पाणि परस्पर सो है पियको मनहिं चुरावैजी ॥
सलिल सिथल सोहत नँदनंदन भाल तिलक छविछावैजी ॥
पंच रंग भयो यमुन जल जाते छबि मय लहारि सुहावैजी ॥ २ ॥
दोहा—लिये संग घनश्यामको, करति विहार अपारि ॥
नाना विधि जलकेलिकरै, रूप छटासीनारि ॥
चौबोला—रूप छटासी नारि एकही एक अंगभारि लाईजी ॥
हास विलास कराति विधि नाना सो छबि वरनि नजाईजी ॥
एकनलै अथाह जलडारे लखि सुख व्याकुलताईजी ॥
इक भाजत इक पाछे धावै एक पकरि ले आईजी ॥ १ ॥
कंठ लगाय लेत पियताई अति प्रसन्न ब्रजबामाजी ॥
सो सुख कवि सों कह्यो न जाई अति विचित्र अभिरामाजी ॥
करत केलि यमुना जल में हरि ब्रजललना सँग श्यामाजी ॥
निशि श्रम मेटि आलस सब खोयो भये सुखी सुखधामाजी॥२॥
दोहा—अबिगतिकी गति को कहै, अलख लखी नहिं जाय ॥
सो भोगी ब्रजतियनको, योगी सकत न पाय ॥
चौबोला—योगी सकत न पाय हरीसो भक्तनके हितकारीजी ॥
जल बिहार विहरत सुखपाई रास रंग मन भारीजी ॥
युवती मंडल करि कर जोरें माधि श्यामा बनवारीजी ॥
वही भाव मन में उपजावें निरखत श्याम मुरारीजी ॥ १ ॥
विहराति नारि हँसत नंद नंदन गहि अंकम हरि लावेजी ॥
प्यारी श्याम अंजली डारे लखि छवि तिय हरषावेजी ॥
जलक्रीडा सुख करत कन्हाई सुरन सुमन बरषावेजी ॥
लीलासागर परम अपारा कवि किहिं विधि कर गावेजी ॥ २ ॥

दोहा–करि जलकेली तियन सँग, आये तट बलवीर ॥
भीजे पट लपटे तनहिं, लटपट चूवत नीर ॥
चौबोला–लटपट चूवत नीर यमुन तट ठाढे कुँवर कन्हाईजी ॥
पुलनि पवित्र परम छबिछाई निरखि हँसे सुखदाईजी ॥
तब इक तरुको हरि मन मोहन आयसु दइ हरषाईजी ॥
तिन अभिराम वसनवर भूषण दिये विविध वरषाईजी ॥ १ ॥
निज निज रुचि लैलै सब नारिन जो जाके मन भावेजी ॥
उर आनंद न जात कही छबि नवल शृंगार बनावेजी ॥
करि शृँगार तन नवल किशोरी हरिके सन्मुख आवेजी ॥
निरखि श्याम छबि मन हरषावे विदा करत सकुचावेजी ॥२॥
दोहा–जाहु सदन अब सब तिया, हँसि बोले नँदलाल ॥
अति आदर दै दै सबन, घर पठई ब्रजबाल ॥
चौबोला–घर पठई ब्रजबाल चलीं तब वृन्दावन तें सारीजी ॥
निशि सुख टरत न उरते टारी भईं आनँद मन भारीजी ॥
भांवरि दे आईं संग हरिके मगन भईं ब्रज नारीजी ॥
मनके सुफल मनोरथ कीने पति पाये बनवारीजी ॥ १ ॥
गईं सदन सब हरष बढ़ाये गुरु जन सोवत पायेजी ॥
जग स्वामी हरि यह मति ठानी ब्रज युवतिन मनभायेजी ॥
प्रातकाल सब ब्रजजन जागे निज निज काज सिधायेजी ॥
नंदधाम गये नँदकेलाला यह कोउ जान न पायेजी ॥ २ ॥
दोहा–काउ न जान्यो ख्याल यह, गये धाम बनवारि ॥
करी श्याम लीला रहस्य संतनको सुखकारि ॥
चौ०-संतनको सुखकारि करी हरि लीला परम सुहाईजी ॥
सुर मुनिजनकी आनँदकारी भक्तनको सुखदाईजी ॥
ज्ञान ध्यान श्रुति मति पर पूरण परम सार छबिछाईजी ॥

मंत्र यंत्र व्रत फल बहुनाना ध्यानधरैं जनपाईजी ॥ १ ॥
धन्य श्री शुकदेव यह रस श्री भागवत सुनावैजी ॥
निगम[1] नेति अगाध श्रीगुरु कृपाबिना नहिं चावैजी ॥
भावहि करि नित हरिको ध्यावै भावहि यह रस पावैजी ॥
सीखै सुनै प्रीति मनलावै स्वरुचि करि यह गावैजी ॥ २ ॥

दोहा—यह लीला हरिकी शुभग, प्रेम सहित जे गाइ ॥
ऋद्धि सिद्धि सब कहाकहों, भक्ति अनूपमपाइ ॥

चौबोला—भक्ति अनूपम पाइ प्रेम दृढ युगलरूप चितलावैजी ॥
अचल निवास करैं शुभ ते जन वृन्दावन निज पावैजी ॥
यहै आशा राखि उरमें विहारन विनय सुनावैजी ॥
कृपाकीजै श्याम श्यामा चरण शरण मन चावैजी ॥ १ ॥
चरित ललित नँदलाल किये सब रास विलास सुहावैजी ॥
इतनो कहा विवेक[2] चरित सब कापै वरनत आवैजी ॥
जिमि पिपीलिका[3] सिंधु अगाधा निकसि पार किमिजावैजी ॥
कृपापाय सतगुरुकी कछु यक दास विहारी गावैजी ॥ २ ॥

अथ मानचरित्र लीला।

दोहा—करत चरित लीला विविध, नित प्रति श्यामा श्याम॥
निर्विकार[4] निर्गुण हरी, भक्तनके सुखधाम ॥

चौबोला—भक्तनके सुखधाम धामानित वृन्दावनछबि छायोजी॥
नित्य रास रस वेद वखानत भक्तनके मनभायोजी ॥
भक्तन हेत विविध तनधारैं करत भक्तमन चायोजी ॥
सदा भक्तवत्सल कृष्णकृपाला भक्तन हित ब्रज आयोजी ॥१॥
युवतिन प्रति निज रूप बनाये रासशरद निशिठानीजी ॥
कीनो सुफल मनोरथ सबको पति हित करि सबजानीजी ॥

१ वेद। २ ज्ञान। ३ चींटी। ४ विकारोंसे रहित।

सदा भक्त बांछित फलदानी तब कृपालु मनआनीजी ॥
कीनो इन मन गर्वरासमें हरयो ह्वै अंतर्ध्यानीजी ॥ २ ॥
दोहा—रही साध इनके मनहिं, श्याम पनायो नाहिं ॥
करों साध पूरण सोई, कहत श्याम मनमाहिं ॥
चौबोला—कहत श्याम मन माहिं रचों इक मानचरित्र उपाईजी॥
पांयन परि परि सबन मनाऊँ यह हरिके मनआईजी ॥
करिविभेद रसरीताहिमें अब देहुँ मान उपजाईजी ॥
इनके मुख खंडित वचन अब कहवाऊं सुखदाईजी ॥ १ ॥
परम विचक्षण रसिक शिरोमणि सकल गुणनके धामाजी ॥
एक प्रेम वश रहत सदा हरि नवरस सागर श्यामाजी ॥
श्रीराधा मनमोहन प्यारी नव नागरि अभिरामाजी ॥
मगन रास रस फिरत कन्हाई कुंज भवन बन ग्रामाजी ॥ २ ॥
दोहा—करति भवन शृंगार प्रिया, तहाँ आये नँदलाल ॥
देखि प्रिया पियको हँसी, लई अंक हरिबाल ॥
चौबोला—लई अंक हरिबाल देखि रहे प्यारी छबि गिरिधारीजी
जात कमल मुखपर बलिहारी अति मन आनँद भारीजी ॥
इहि अंतर पियके उरमाई निज परछांह निहारीजी ॥
अति सनेह उपज्यो भ्रम भारी झिझकि भई प्रिया न्यारीजी॥ १
और नारि पियके उर जानी कहति मनहिं मन प्यारीजी ॥
राखत सदा हियेमें याही यह मुहिं आज दिखारीजी ॥
कियो मान यह भ्रम उपजायो कहति वचन रिस भारीजी ॥
ऊपरकी पिय प्रीति हमारी जानी बात तुम्हारीजी ॥ २ ॥
दोहा—उरहि बसाई याहि तुम, यह अति प्यारी पीय ॥
धनि धनि याको भाग्य है, बसति तुम्हारे हीय ॥
चौबोला—बसति तुम्हारे हीय याहिं सों राखहु पिय हितमानीजी

हमसों मुखकी बात बनावत अब हम सब यह जानीजी ॥
भली करी पिय मोहिं दिखाई मैं कछु रिस नहिं आनीजी ॥
अब उरते न्यारी जिन कीजै यह प्यारी सुखदानीजी ॥ १ ॥
ऐसे कहि मुसकाय किशोरी कछु रिस उर में मानीजी ॥
चकित श्याम सुनि प्रियकी वाणी यह कह कहति सयानीजी ॥
सांच कहति कैधों करि हांसी कतरिस जियमें आनीजी ॥
समुझी नहीं कहा जियमानी झझकि उठी भ्रम जानीजी ॥ २ ॥

दोहा—मम ढिंग बैठति क्यों नहीं, गहन लगे भुजश्याम ॥
मोहिं छुवो जिन कान्ह अब, गहो हिये सोइ बाम ॥

चौ०-गहो हिये सोइ बाम भये अब तुमहीं चतुर विहारीजी ॥
हम दासी अरु ये पटरानी रहे याहि उर धारीजी ॥
हमसों ऐसी बात बनाई हिये बसाई प्यारीजी ॥
लखि लखि प्रिया वदन सुखकारी हँसत श्याम बनवारीजी॥१॥
तो बिन उर को बसत किशोरी हँसि बोले बनवारीजी ॥
कहति कहा भामिन भइ भोरी तोते अरु को प्यारीजी ॥
तू मम श्रवण नैन मुख बानी जीवन प्राण अधारीजी ॥
वृथा क्रोध कत जियमें आनत मानति नाहिं हमारीजी ॥ २ ॥

दोहा—सुनो श्याम हिरदे वसत, सो छिपये न छिपाय ॥
ज्यों शीशीके माहिं जल, परगट परत लखाइ ॥

चौबोला—परगट परत लखाइ श्याम अब बातें कहा बनावोजी ॥
जैहैं कहुँ अनखाय उरहिते तब पाछे पछितावोजी ॥
वह नागरि तुम नागर दोऊ अति हित करि सुखपावोजी ॥
भली करी लै सौति दिखाई अबजिन मोहिं खिजावोजी ॥ १ ॥
जाहु चले अब मैं सुखपायो मानकियो यों प्यारीजी ॥
रही मौन निठुराय देनलगी वाहि मनहिं मन गारीजी ॥

बोलत नाहिं मनाहिं भयपाये सोच रहे बनवारीजी ॥
क्यों प्यारी ऐसी रिसहाई वृथा कहाजिय धारीजी ॥ २ ॥
दोहा—विनहिंकाज कत रिस करै, मानतिहो क्यों नाइ ॥
मेरे उरपर लाडिली, ही तेरी परछाँइ ॥
चौबोला—ही तेरी परछाँइ सुन्दरी सोलखि कत भरमाईजी ॥
यह सुनि कुँवरि राधिका प्यारी बोली अति रिसहाईजी ॥
जाहुचले बोलों नहिं तुमसों बातें कहत बनाईजी ॥
यह कहि अधिक भई रिस माई देखत कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
भये विरह व्याकुल बनवारी सोच रहें मनमाईजी ॥
गयो सरोज वदन कुम्हिलाई एक सखी तहाँ आईजी ॥
सो हरिसों बूझत भइ ऐसे मोहिं कहौ समुझाईजी ॥
तुम्हरी दशा आज भइ कैसी बैठे कहा गमाईजी ॥
दोहा—अति व्याकुल देखत तुम्हें, क्यों तन रहे भुलाय ॥
ऐसो सोच परचो कहा, रह्यो वदन कुम्हिलाय ॥
चौबोला—रह्यो वदन कुम्हिलाय सुनी तब बोले कुँवर कन्हाईजी
विरह विकल कहि जात न वाणी रहे अतिहि अकुलाईजी ॥
मान कियो वृषभानु किशोरी कह्यो न मैं कछु ताईजी ॥
लखि मेरे उर निज परछाई बैठी रूस वृथाईजी ॥ १ ॥
मैं कहिकै बहु विधि समुझाई को अब ताहि मनावैजी ॥
विन समुझे इतनो हठ कीनो अब मुहिं मदन सतावैजी ॥
ऐसे कहि सोचत नँदलाला नैन नीर भर आवैजी ॥
विरह विकलता पिय जिय जानी सखि मुख वचन सुनावैजी ॥२॥
दोहा—कह्यो धीर धरिये हरिः, चलहु कुंज बन धाम ॥
मैं प्यारी लै आयहों, तो कहियो मम नाम ॥
चौ०—तो कहियो मम नाम तुमहिं मैं आनि मिलाऊँ प्यारीजी ॥

गई लिवाय बनहिं हरिको तहां बैठारे बनवारीजी ॥
मैं ले आवत राधा प्यारी सुनहु लाल गिरिधारीजी ॥
कहा मान करिहै सुकुमारी मो आगेकी बारीजी ॥ १ ॥
ऐसे कही श्यामसों आली प्यारी ढिग अब जाऊँजी ॥
श्रीवृषभानु कुँवरि ल्याऊँ तो आज कहा मैं पाऊँजी ॥
चपल चली मन रचत सयानी नई इक बात बताऊंजी ॥
देखहिंधौं कहा कहि है मोसों अबही मान छुडाऊंजी ॥ २ ॥
दोहा—बैठी हरि सों मान करि, कहा लई उरधार ॥
गई सखी जहां राधिका, मन मन करति विचार ॥
चौबोला—मन मन करति विचार सखी तब प्यारीके ढिंगआईजी
मुख देखतही दूती जानी समुझि लई मन माईजी ॥
सहजहि बोल ताहि ढिंग लीनी सहजहि बात सुनाईजी ॥
सहजहि सखी कह्यो प्यारी सों चल वन श्याम बुलाईजी॥१॥
सुनत कह्यो प्यारी अनखाई क्यों मुहि श्याम बुलाईजी ॥
मैं अब श्याम भले करि चीने याई हित तू आईजी ॥
कहा कहों तोसोंरी आली भले वे कुँवर कन्हाईजी ॥
उनकी महिमा कहत न आवै नई नारि मन भाईजी ॥ २ ॥
दोहा—अब तासों अतिहित करै, लीनी उरहि बसाइ ॥
सुख विलसत दोऊ तहां, तोहिं को टारि पठाइ ॥
चौबोला—तोहिं को टारि पठाइ सखीरी कहा कहति तू आईजी
आज कहा कछु कलह भईरी क्यों राधा रिसहाईजी ॥
तबहीं आज अनमनी बैठी मैं कछु बात न पाईजी ॥
मोसों नाहिं कछु श्याम कह्योरी सहजहि लेन पठाईजी ॥ १ ॥
कहा धों परी पुकार तहाँ अब देखहु नैनन जाईजी ॥
लैलै तेरो नाम सकल मिल कहहु सुनाय सुनाईजी ॥

कौन कौन को गँथरी प्यारी तैंधौ लियो छिंडाईजी ॥
डारि देहु जाको जो लीनों तेरे कहा कछु नाईजी ॥ २ ॥

दोहा—शोर लगायो उन सबन, तबहिं बुलाई तोय ॥
हरि तेरी दिशते लरे, तू उनपर रिस होय ॥

चौबोला-तू उनपर रिस होय लाड़िली भली बात यह नाईजी ॥
मैं काको धन लियो छिपाई यह कहा बात उपाईजी ॥
काहेको हरि झगरत मोपै इती मया कहा आईजी ॥
जैसे हैं तैसे हरि जाने महिमा कहिय न जाईजी ॥ १ ॥
मैं उनपै अब जाउँ न सपने कहा कहति तू आईजी ॥
हौं कहा तोहिं मनावन आई कर तू मान सवाईजी ॥
कहा करत बातें यों ऐठी तो क्यों परधन ल्याईजी ॥
देति जवाब सबन किन जाई मोपै कहा सतराईजी ॥

दोहा—बारबार कहा कहतरी, तू मोको डरपाय ॥
मैं नहिं काऊको लियो, झूंठहि दोष लगाय ॥

चौबोला-झूंठहि दोष लगाय लरतको कौन पुकार लगाईजी ॥
कहै न तिनको नाम सांच तब मैं वदिहों मन माईजी ॥
श्याम निकट बैठे सब हैंरी चल देखति क्यों नाईजी ॥
एक एक कारि तोहिं गिनाऊं कहां लगि नाम बताईजी ॥ १ ॥
नभ जल धरणि बनहुँते आये नाम कहे नहिं जाईजी ॥
तोतू कत बन चलत डराई जो नहिं गथहिं छिंडाईजी ॥
भली कहत अलि लगत अनैसी कहा वान परी आईजी ॥
श्याम बिना को न्याव करैरी तिनसों करत लराईजी ॥ २ ॥

दोहा—कोटि करौ मिलिहौ पुनिः, ह्वैहो एकहि जाइ ॥
वे अरु तुम न्यारे नहीं, चलमुहिं लेन पठाइ ॥

चौ०-चल मुहिंलेन पठाइ मानकही उठतोहिं श्यामबुलाईजी ॥

श्रवण लागि कहि मोहिं सुनाई तबहिं बुलावन आईजी ॥
वे सब हरि पै जाय पुकारे जिनको तू धन ल्याईजी ॥
अलि लखिं अलक कहत छबि मेरी इन्दु वदन बलिजाईजी १॥
मृगन मीन छबि दृगन चुराई खंजन देत दुहाईजी ॥
शुककी छबि नासाहरिलीनी सो वह रह्यो दिखाईजी ॥
बैनन करी कोकिला हीनी बोल सकत सो नाईजी ॥
अधर बिंब दाडिम दशन छबि कंठ कपोत सुहाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सरल तरोना तरणि दुति, लीनी सकल छिनाय ॥
चक्रवाक कुच युग छबिः;कटि हरि लखत लजाय ॥

चौ०-कटि हरि लखत लजाय रंभ छबि लीनी जंघ चुराईजी ॥
गज मराल गति लखत लजाये सन्मुख सकत न आईजी ॥
चरण पाणि पंकजकी शोभा लई देति क्यों नाईजी ॥
ये सब हरिसों करत लराई तैं जु करी अधिकाईजी ॥ १ ॥
अति अनीति लखिं कुँवर कन्हाई तबहीं तोहिं बुलाईजी ॥
पठई मोहिं लेन तोहिं आई प्रति उत्तर करि जाईजी ॥
इहां रही कहा बैठि मचलके जो नहिं वस्तु चुराईजी ॥
सुनि पियके गुण तिय हँसि दीनी कछु सकुची मनमाईजी॥२॥

दोहा–चतुर सखी तब तीयकी; लीनी जियकी जान ॥
हँसि बोलीरी राधिका, कहा परी तोहिं बान ॥

चौ०-कहा परी तोहिं बान लाडिली लखि निज छांह डराईजी ॥
तादिन करत शृँगार किशोरी लखि दर्पण भरमाईजी ॥
सो हरि मेटि तुरत तब दीनो मूँदे लोचन आईजी ॥
आज देखि पिय उर निज छाई कियो हठ कुँवरि वृथाईजी ॥ १ ॥
यह सुनि समुझि मनहिं सकुचाई सहिचारि कंठ लगाईजी ॥
रस करि तुरत मान विसरायो सुनि बनश्याम बुलाईजी ॥

हँसिकै कह्यो सखीसों प्यारी तू कहि हरिसों जाईजी ॥
मैं अंग भूषण बसन सँवारी आवत जहां सुखदाईजी ॥
दोहा–यह सुनि हरषी दूतिका, गई जहां घनश्याम ॥
आति व्याकुल तनु सुधि नहीं, विह्वल कीनो काम ॥
चौबोला–विह्वल कीनो काम हरीको सुधि बुधि नाहिं शरीरैजी॥
क्यों हूं सुख पावत नाहीं मन बैठत उठत अधीरैजी ॥
श्री राधा राधा रट लावत बढ़त विरहकी पीरैजी ॥
विन देखे प्यारी बनवारी अति व्याकुल बलबीरैजी ॥ १ ॥
कहूं माल कहुँ मुरली डारी विरह विकल गिरिधारीजी ॥
कहूं मुकुट कहुँ पीत पिछौरी तनुकी सुरत विसारीजी ॥
कबहुं मूंदि दृग ध्यान लगावै गावत प्यारी प्यारीजी ॥
कबहूं बैठि द्रुमनकी छाईं लोटत तहां बनवारीजी ॥ २ ॥
दोहा–ठाढे द्रुमकी डार धरि, जोवत मग घनश्याम ॥
देखि दशा तब दूतिका, हरिसों बोली बाम ॥
चौबोला–हरिसों बोली बाम काहिको अब कदरात विहारीजी॥
मैं ल्याई वृषभानु दुलारी तुम्हरी जीवन प्यारीजी ॥
विरह विषाद दूरि करडारो नेकु धीर रहो धारीजी ॥
सुनि प्यारीको नाम कन्हाई कछु तनु सुरत सँभारीजी ॥ १ ॥
मिले दूतिकासों उठि धाई कहन लगे सुखदाईजी ॥
कहां प्रिया कहि अति अकुलाये नैन नीर[1] भरे आईजी ॥
तब हँसि कह्यो दूतिका ग्वारी आवत प्रिया कन्हाईजी ॥
मैंजु प्रतिज्ञा[2] तुमते कीनी सो विधि आजरखाईजी ॥ २ ॥
दोहा–अब अपने मन हरषिकरि, दूरकरो संदेहु ॥
आवति है वृषभानुजा, भुज भरि अंकमलेहु ॥

---

१ पानी। २ प्रण।

चौबोला–भुजभरि अंकमलेहु दूतिका हरिसों कहत सयानीजी॥
नहीं कुँवरि राधा सी तिहुँपुर मुख सोभाकी खानीजी॥
बडभागिन तुम वश भये जाके तुम सम धन्य न आनीजी॥
सुनत सिहाय दूतिका वानी हरिजनके सुखदानीजी॥ १॥
पुलकित अंग धीरनहिं धारे जोवत मग सुखदाईजी॥
निजकर सुमन सुगंधि लगाये कुंजभवनके माईजी॥
अति कोमल तनजान पियारी रचि रचि सेज बनाईजी॥
जो द्रुम लता लटकि तन लागे सो ऊपर उरझाईजी॥ २॥

दोहा–प्रेम प्रीति रस वश सदा, जगस्वामी बनवारि॥
करत चरित नाना विधी, हँसी देखिकै ग्वारि॥

चौबोला–हँसी देखिकै ग्वारि श्यामको देखे आतुरताईजी॥
जान प्रेम वश हरि सुखदाई गई बहुरि अतुराईजी॥
करि शृंगार राजति जहाँ प्यारी तहाँ दूतिका आईजी॥
सहज रूपकी राशि किशोरी भूषण अधिकसुहाईजी॥ १॥
निरखि मदन तिय कोटि लजाई अंग अंग छबि भारीजी॥
त्रिभुवन छबि मनु विधिहि बटोरी कीनी राधा प्यारीजी॥
देखि रूप मन मगन सखी तब बोली वचन सँभारीजी॥
धन्य धन्य वृषभानु दुलारी तुम गुण रूप अपारीजी॥ २॥

दोहा–तिहुँपुर सुन्दरि नागरी, तो समान नहिं तीय॥
तू मोहन मनभावती, वसत सदा पियजीय॥

चौबोला-वसत सदा पियजीय वेगि अब चलहु जहाँ सुखदाईजी॥
लागि रही पियकी इत आशा अति मन आतुरताईजी॥
गावत तुम गुण कुँवर कन्हाई जपत नाम मन लाईजी॥
तुम तन परस पवन जो जाई परिरंभत उठ ताईजी॥ १॥
धरत ध्यान दृग मूंदि निरंतर तेरे गुण मन भावेजी॥

रमी श्याम तन तू मन जाते राधा रमण कहावेजी ॥
सुनि सहचरिके मुखकी बाणी पुलकि अंग सुख पावेजी ॥
चलीं प्रेम पियको उर जानी गजगति चलन सुहावैजी ॥ २ ॥
दोहा—मुखशशि कनकलता दुती, मृग छबि नैन सुहाइ ॥
भूषण वसन अनेक नव, अंग अंग छबि छाइ ॥
चौबोला—अंग अंग छबि छाइ सुगंधी शुभग मनोहर ताईजी ॥
भँवर भीर चहुँ ओर लुभाये गूंजत अजि छबि छाईजी ॥
हँसि हँसि कहत सखी सों बातें सो छबि कहत न आईजी ॥
झरत सुमन जनु रूप लताते चलीं मिलन पिय पाईजी ॥ १ ॥
ऐसे करत प्रकाश पियारी धरत चरण गति मंदैजी ॥
अति मन परम हुलास किशोरी गई जहाँ ब्रज चंदैजी ॥
परम प्रेम मिले दोउ हरषित श्रीराधा नँद नँदेजी ॥
गुण आगर नागर नवल युग छबि सागर सुख कंदेजी ॥ २ ॥
दोहा—वेद भेद जानत नहीं, जो प्रभु अपरंपार ॥
बरणि पारको पावही, सो ब्रज करत विहार ॥
चौ॰—सो ब्रज करत विहार हरीको पार कोउ नहिं पावेजी ॥
कुंजन मंजु सुफल छबि छाई गूंजत भँवर सुहावेजी ॥
रुचि रुचि सुमनन सेज बनाई अति छबि बरनि न जावेजी ॥
फूले खग गण करत किलोलें जहाँ तहाँ शब्द सुनावेजी ॥१॥
तनमन फूले पिय अरु प्यारी सो छबि कहत न आईजी ॥
सहचरि सहित मनोहर जोरी राजत अति छबि छाईजी ॥
हास विलास करत सुख पाई हाव भाव उपजाईजी ॥
सखी कह्यो तबके अब नीके सुनत हँसी सकुचाईजी ॥ २ ॥
दोहा—नैन कोर पियतन लख्यो, हँसे देखि सुखदाइ ॥
यह छबि निरखति सहचरी, वार वार बलि जाइ ॥

चौबोला–बार बार बलिजाइ अचल रहो जोरी यह सुखदाईजी ॥
धनि राधा धनि कुँवर कन्हाई महिमा बरनि न जाईजी ॥
धन्य मान रसकेलि सुहाई धन्य कुंज जन भाईजी ॥
धन्य लता द्रुम सुमन सुहावन धन्य भूमि छवि छाईजी ॥ १ ॥
धन्य सखी धनि सब ब्रजवासी तुम सम धन्य न काईजी ॥
तुमसों अतिहित करि सुखराशी विहरत संग कन्हाईजी ॥
गये श्याम श्यामा सदन निज सखी सहित सुख पाईजी ॥
मानचरित रसकेलि कियो हरि विहारन बलि बलि जाईजी ॥

दोहा–जेसुभाव गावहिं सुनहिं, मानचरित्र अनूप ॥
राधा कृष्ण प्रतापते, ते न परैं भवकूप ॥

चौबोला–ते न परैं भव कूप हरीको मानचरित जो गावैजी ॥
सुखसागर भक्तन हितकारी नाना चरित उपावैजी ॥
जाको शिव अज ध्यान लगावैं सनकादिक मुनि ध्यावैजी ॥
गावत अहिपति नारद शारद ताको पार न आवैजी ॥ १ ॥
अखिल अनीह अकाम अभोगी योग समाधि न पाईजी ॥
युवतिन प्रेम भक्त सब कामी अन्तर्यामि कन्हाईजी ॥
बहु नायक ह्वै करत विहारा ब्रज पुर घर घर माईजी ॥
काहु रुठावै काहु मनावै रसलीला उपजाईजी ॥ २ ॥

दोहा–अवध बदत हरिकाहु सों, जात काहुके धाम ॥
सांझ कहत आवन जहां, जात प्रात तहाँ श्याम ॥

चौ०-जात प्रात तहाँ श्याम सखी सब जानाति पतिहि कन्हाईजी
कोउ आदरहीं कोउ अपमाने कोउ कछु कहत सुनाईजी ॥
खंडित वचन सुनत सुखपाई यह लीला मन भाईजी ॥
ब्रजबनितनके संग करत हरि रसलीला सुखदाईजी ॥ १ ॥
अखिल कामके पूरण करता भरे प्रेम रसमाईजी ॥

कोटि काम कमनीय मनोहर अतिसुन्दर सुखदाईजी ॥
रमणी मन रमणीय विहारी नागर नवल कन्हाईजी ॥
ब्रज वीथिन नँद नंदन ठाढे अंग अंग छबि छाईजी ॥ २ ॥
दोहा–आई ललिता ताहि मग, रोकि लई नँदलाल ॥
देखि छवी घनश्यामकी, बोली हरिसों बाल ॥
चौबोला–बोली हरिसों बाल काहिको रोकत हो मगमाईजी ॥
जाहु चले जितहो हित माने लरिहै सो सुनपाईजी ॥
झूंठहिं इतो सनेह जनावो ऊपर लोग दिखाईजी ॥
कबहूं हमरे धाम न आवो सुनि बोले सुखदाईजी ॥ १ ॥
हरि हँसि कह्यो आज निशि ऐहैं अन्त कहूं नहिं जाईजी ॥
ऐसे कहि मधुरे मुसकाई छाँडी मग सुखदाईजी ॥
ललिता गई सदन यह जानी ऐहैं आज कन्हाईजी ॥
सांझहिते हरि पंथ निहारै रुचि रुचि सेज विछाईजी ॥ २ ॥
दोहा–साजे तनु भूषण बसन, नवल शृंगार बनाय ॥
अंजन आँजों दृगनसों, सुमन सुगंध मँगाय ॥
चौबो–सुमन सुगंध मँगाय माल कर निज रुचि आप बनाईजी ॥
कबहूँ ठाढी होत दुवारे कबहुँक गगन लखाईजी ॥
कहति श्याम आये क्यों नाई अर्धनिशा ह्वै आईजी ॥
गये आशदे मोहिं पुनी उन धारी कहा मनमाईजी ॥ १ ॥
वे बहुनायक श्याम कन्हाई अनतहि कहूँ लुभायेजी ॥
मन मन शोचति बाम धाम मम कारण कहा नहिं आयेजी ॥
कैधों कछू ख्याल चित दीनों कैं सोये अलसायेजी ॥
कैधों मात पिता डरकीनों कै आवत सकुचायेजी ॥ २ ॥
दोहा–ऐसे सोचत निश गई, नहिं आये घनश्याम ॥
तमचरकी वाणी सुनी, दुखित भई तव बाम ॥

चौबोला—दुखित भई तब बाम मारि मन बैठ रही घर माईजी ॥
कछुक सोच उर कछु रिस धारी धीर धरत मननाईजी ॥
हरि निश बसे सखी शीलाके सुन्दर श्याम कन्हाईजी ॥
सुख सोवत तहां रैन गँवाई तब ललिता सुधिआईजी ॥ १ ॥
चले सहज शीलासों कहिकै जिय सकोच गिरिधारीजी ॥
आये ललिता सदन विहारी चितै रही मुख ग्वारीजी ॥
अधर दीप सुत रेख सुहाई पीक नैन दुति कारीजी ॥
शोभित ललित कपोलन सुन्दर अंजन सों छवि भारीजी ॥ २ ॥

दोहा—तुरत मुकुर लैकर उठी, सन्मुख आनि दिखाय ॥
कहति देखि निज वदन पुनि, तब कहुँ लाल सिधाय॥

चौबोला—तब कहुँ लाल सिधाय कहां यह ऐसे रंग बनायेजी ॥
कहां आज निश जागे मोहन प्रात होत इत आयेजी ॥
पीक पलक अंजन अधरनपर देखि श्याम सकुचायेजी ॥
रहे निचौहे नैनन करि मुख वचन कहत सरमायेजी ॥ १ ॥
ज्यों ज्यों हठ तब करत नागरी त्यों त्यों सकुचत श्यामैंजी ॥
हाहा मुख इत फेरहु मोहन देखहु छवि अभिरामैंजी ॥
सकुचत कहा बोलके सांचे अब आये मम धामैंजी ॥
धनि तुम जहां रैन सुख दीनो धन्य धन्य वह वामैंजी ॥ २ ॥

दोहा—तुम जिन आनहु विलग मन, मैं मानति आनंद ॥
क्यों दर्पण देखत नहीं, सूधे मुख ब्रजचंद ॥

चौबोला—सूधे मुख ब्रज चंद कन्हाई क्यों नहिं मुकुर निहारौजी
ठाढे कत बैठत क्यों नाई कहा जिय माहिं विचारोजी ॥
ऐसी कहा चूक परि मोते कहो न दोष हमारोजी ॥
रहे मूक ह्वै कहा ठगेसे कछु मुख वचन निकारोजी ॥ १ ॥
उत्तर मोंहिं देत क्यों नाईं मैं कहा बकति वृथाईजी ॥

तब चितये दृगकोर कन्हाई भावाधीन जनाईजी ॥
ग्वालि प्रवीन जान सब लीनो तुरत रोष विसराईजी ॥
भले श्याम ऐसेहू आये लीने कंठ लगाईजी ॥ २ ॥

दोहा–निश आलस जाने हरी, अति सनेह करि बाम ॥
अंग सुगंध लगाय तब, तुरत न्हवाये श्याम ॥

चौबोला–तुरत न्हवाये श्याम वसन अरु भूषण नव पहरायेजी
रुचि भोजन करवाय श्यामको बीरा पान खवायेजी ॥
सुफल मनोरथ किये नागरी रस वश करि मन भायेजी ॥
दास विहारीको प्रभु ठाकुर सुर मुनि पार न पायेजी ॥ १ ॥
सो गोपीवल्लभ भये आई प्रीति विवश गिरिधारीजी ॥
कहत सोंह करि रसिक विहारी तुम प्राणनते प्यारीजी ॥
सदा वसत तुम मोमन माई इक क्षण होत न न्यारीजी ॥
ऐसे कहि अति प्रीति जनावै चतुर श्याम बनवारीजी ॥ २ ॥

दोहा–यहै भाव युवतीन सों, भाषत सुखके धाम ॥
सबहिनके मनकी रुची, राखत श्रीघनश्याम ॥

चौबोला-राखत श्रीघनश्याम गोपिका अति मन आनँद भारीजी
सब गोपी हरिसों अनुरागीं कुल मर्यादा डारीजी ॥
विन देखे रसभाव बढ़ावै देखत होय सुखारीजी ॥
ब्रह्म सनातन जग सुखकारी यह लीला विस्तारीजी ॥ १ ॥
ललिताको सुख दे सुखसागर चले सदन नँदलालैजी ॥
उतते मग आवति चंद्रावलि देखे उन गोपालैजी ॥
बने अति चारु कमलदल लोचन चितवन सुभग विसालैजी ॥
खोरि साँकरी भइ भटभेरी लखि मुसकाई बालैजी ॥ २ ॥

दोहा–हमहिं विसारी लाल अब, कहां रहत हो श्याम ॥
ऐसे कहि चंद्रावली, हँसि बोले सुखधाम ॥

चौबोला–हँसि बोले सुखधाम प्रिया तुम कैसे जात विसारीजी॥
आज आय सुख लेहैं निशि हम तुम्हरे धाम पियारीजी ॥
चली सदन मुसकाय सुन्दरी अति मन हर्षित ग्वारीजी ॥
लखि सुखपायो श्याम मुदित निज भवन गये बनवारीजी ॥१॥
चंद्रावली मगन मनमाईं कहती काउअ नाईजी ॥
भये अस्त रवि निशि नियराई लखि उडुगण हरषाईजी ॥
हरि सुखमाके भवन सिधाये चंद्रावलि विसराईजी ॥
सूने घर देखी सो ग्वारी तहां गये सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुखमा देखत श्यामको, हरषभई मन ग्वारि ॥
अति आदर हरिको कियो, बैठारे बनवारि ॥

चौबोला–बैठारे बनवारि नागरी रस वश किये कन्हाईजी ॥
हाव भाव मोहे गिरिधारी रहे श्याम सुख पाईजी ॥
चंद्रावलिकी सुरति भुलाई भये प्रेमवश माईजी ॥
इत चंद्रावलि सेज सँवारे पुनि पुनि पंथलखाईजी ॥ १ ॥
कबहुँ भवन कबहूं अँगनाई कबहुँ द्वार टक लाईजी ॥
कबहूं सोच करत मनमाईं आवहिं गे कै नाईजी ॥
कबहूं आलस कछु जियजानी धोवति नैन निकाईजी ॥
कबहूं कहत हरि ऐहैं मेरे अति मन हरष बढ़ाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कबहुँ विरह व्याकुल जरत, रही अतिहि अकुलाय ॥
बहु रमणी रमणीय पिय, कहति कबहुँ हरषाय ॥

चौ॰-कहति कबहुँ हरषाय अनत कहुँ बसे जाय सुखदानीजी
अवँधि बदी मोसों निशि ऐहैं कहा पुनि जियमें आनीजी ॥
ऐसेहिं ऐसे रैन विहानी सुनि बायसकी बानीजी ॥
भई काम दुख बाम जानके श्याम कपटकी खानीजी ॥ १ ॥

१ आनंद । २ सूर्य । ३ नियत समय । ४ कौआ ।

कहति बाम निज मनके माई बात श्यामकी चीनीनी ॥
श्याम नाम खोटे सब अलि अरु कोकिल श्याम प्रवीनीजी ॥
श्माम जलधि अहि श्याम विशेषी तिनकी करनी लीनीजी ॥
जानि परी मोहन यह मोसों प्रीति कपटकी कीनीजी ॥ २ ॥
दोहा—ऐसे मन अति क्रोध करि, भई विरह वश बाम ॥
बसे रैन सुखमासदन, मोहन सुन्दर श्याम ॥
चौबोला—मोहन सुन्दर श्याम प्रात उठि चले तहाँ अतुरायेजी॥
आलस भरे नैन रँग राते चंद्रावलि गृह आयेजी ॥
ठाढे अजिर रहे सकुचाई तब ग्वालिन लख पायेजी ॥
मन्दिर ते रिस भरी गुवारी नख शिख रूप लखायेजी ॥ १ ॥
मन मन कहति कुटिल अति गिरिधर बसे निसा कहुँ जाईजी॥
प्रात होत आये मेरे घर यह कहि अतिहिं रिसाईजी ॥
कियो मान मनमें अति प्यारी ठाढे अजिर कन्हाईजी ॥
और नारिके चिह्न विलोकी बढ़त रोष अधिकाईजी ॥ २ ॥
दोहा—तब बोली करि मानतिय, कहा काम ममधाम ॥
ताहीके घर जाइये, बसे जहाँ निशि श्याम ॥
चौबोला-बसे जहाँ निशि श्याम तहाँ तुम जावहु कुँवर कन्हाईजी
प्रात दिखावन मोहिं इतहिं अब आये रंग बनाईजी ॥
भले बने हो लाल आज छबि मैं लखि अति सुख पाईजी ॥
अधर दीप सुत रेख सुहाई पीक पलक छबि छाईजी ॥ १ ॥
लटपटी पाग महावर लाये आलस नैन सुहायेजी ॥
चंदन भाल मिल्यो कहुँ वंदन यह छबि अधिक बनायेजी ॥
जान्यो नागरि रंग भरे हो मोहिं दिखावन आयेजी ॥
सोंह करनको इत उठधाये जाउ तहीं मन भायेजी ॥ २ ॥
दोहा—हँसि बोले नँदलाल तब, तुम तजि प्यारि नकोय ॥

वसत सदा मनमाहिं तुम, इक क्षण न्यारि न होय ॥
चौबोला-इक क्षण न्यारि न होय कहतहो झूँठी बात बनाईजी ॥
चीन्हेंहो गुण राशि कन्हाई कहां सीखे चतुराईजी ॥
यह कहि गई भवनमें भामिन लखि रीझे सुखदाईजी ॥
सन्मुख जाय भये तहां ठाढे द्वारकपाट लगाईजी ॥ १ ॥
पौढ़ि रही तिय जाय सेजपर बदन मूंदि अनखाईजी ॥
हरि तन पुनि चितई नहिं सुन्दरि मन अति प्रेम बढ़ाईजी ॥
जो चाहै सोई हरि करहीं प्रभुगाति जानि न जाईजी ॥
पौढी जहाँ मानकर नागरि तहँ पौढ़े सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा-जो देखैं तौ संग हरि, चली बहुरि झहराइ ॥
निकरि अजिर ठाढी भई, तहांपुनि गये कन्हाइ ॥
चौबोला-तहां पुनि गये कन्हाइ नैनकी सैनन विनय सुनाईजी ॥
चकित भई देखत तब ग्वारी भीतर भवन सिधाईजी ॥
जब अंकम भरलई मुरारी तब सब रोष भुलाईजी ॥
चेटक करि वशकरी नागरी मान छुड़ाय रिझाईजी ॥ १ ॥
तियको सुख दीनो सुख पायो गये निज भवन कन्हाईजी ॥
चंद्रावलि बैठी तिहिं ठाई सखि दश पांचक आईजी ॥
औरे वदन और अंग सोभा निरखि रही टकलाईजी ॥
कहति आज कहा हरष बढ़ायो लूट कहूं कछु ल्याईजी ॥ २ ॥
दोहा-क्यों अंग सीथल मरगजी, यह छबि कहिय न जाइ ॥
हम जाने तोहिं हरि मिले, राखति बात दुराइ ॥
चौ०-राखति बात दुराइ चंद्रावलि करति कहा चतुराईजी ॥
भीजी श्याम सनेह सखिन सों ज्वाब देत कछु नाईजी ॥
वह लीला विसरत क्षण नाहीं रह्यो ध्यान उर छाईजी ॥
ज्यों गूंगो गुड खाय स्वाद कछु मुखते कह्यो न जाईजी ॥ १ ॥

तब बोली बूझति कहा आली मन मोहन सुखदाईजी ॥
है लीला अद्भुत सब जाकी बात कही नहिं जाईजी ॥
हाहा कहि चंद्रावलि हमसों हरि गुण कहो सुनाईजी ॥
कै तोहिं मिले यमुनके तीरे कै मिले सदन[1] कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तब चंद्रावलि हरष मन, हरि गुण कहे सुनाय ॥
सुनि हरिके सुन्दर चरित, रही सकल सुखपाय ॥

चौबोला–रहीं सकल सुख पाय प्रेम वश भईं सो सब ब्रजनारीजी॥
चंद्रावलि धनि धन्य हरी गुण कहति सबन सुखकारीजी ॥
नँदनंदन सब लायक हैंरी सुन्दर श्याम मुरारी[2]जी ॥
काहूके निशि वसे काहुको प्रातहि देत दिखारीजी ॥ १ ॥
काहूको मन आय चुरावैं काहूसों मन लावैजी ॥
काहूके जागत सिगरी निश काहुअ रिस उपजावैजी ॥
सब गोपी हरिके मनभावैं तैसेइ चरित उपावैजी ॥
यह लीला आनँदकी राशी सबरस सार सुहावैजी ॥ २ ॥

दोहा–भक्तन हित हरि करतहैं; गाय तरत संसार ॥
ब्रज युवतिनके संगहरि, घर घर करत विहार ॥

चौबोला–घर घर करत विहार हरीसों भक्तनके हितकारीजी ॥
विहारन सुयश श्रीगिरिधरको गावत वेद अपारीजी ॥
श्रीराधा वृषभानु दुलारी नन्दनँदनपिय प्यारीजी ॥
नन्दसुवन कहुँ अनतन जावै यह मनमाहिं विचारीजी ॥ १ ॥
नन्दभवन कै मेरे गेहा रहैं सदा मन लायेजी ॥
श्याम वसे काऊ नारीके प्रात होत तहाँ आयेजी ॥
चिह्न राति रंग अंग लखाये नैन अरुण[3] अलसायेजी ॥
प्यारी देखि रंग काउ तियको ऐसे वचन सुनायेजी ॥ २ ॥

१ घर। २ मुरदैत्यके शत्रु श्रीकृष्ण। ३ लाल।

दोहा-तब हँसि बोली राधिका, लखि हरि रूप अगाध ॥
तन धारो उपकाररहित, पुरवन सबकी साध ॥
चौबोला-पुरवन सबकी साध कहो सुख दियोकौनकोजाईजी॥
धनि धनि यह उपकार जुकीनों धन्यबात मैं पाईजी ॥
धन्य मोहिं यह दरश दिखायो धनि जहाँ प्रीति लगाईजी ॥
क्यों नहिं कहियत प्रगट बखानी राखत कहा दुराईजी ॥ १ ॥
अद्भुत छबि अभिराम आज मोहिं भली यहआयदिखाईजी ॥
उर कुच कुंकुमदाग कपोलन पीकलीक छबि छाईजी ॥
रँगी महावर पागमनोहर सोभा कहिय न जाईजी ॥
क्यों उठि भोर इहां तुम आये आवत लाज न आईजी ॥ २ ॥
दोहा-तुमहुँ भले अरु वह भली, दोउ मिल भलो मनाय ॥
इतनो हित जासों कियो, अब कत छोरत ताय ॥
चौबोला-अब कत छोरत ताय जाहुताहिं वे सुनिकै दुखपाईजी ॥
बहुरो तुमते मन न मिलैहौं तब रहिहो पछिताईजी ॥
तिनहीं को सुखदीजै मोहन निश विलसे जहाँ जाईजी ॥
तिय सन्मुख नहिं लखत कन्हाई रहे मनहिं सकुचाईजी ॥१॥
कबहुँ चरण नख भूमि उखारैं नैनन कोर लखावैजी ॥
खंडित वचन सुनत हरषाई प्रगट त्रिसत सकुचावैजी ॥
पियको सुख प्यारी नहिं जाने अधिक रोष मन ल्यावैजी ॥
जाहु जाहु पिय कहति सदनते कहति सोई मन आवैजी ॥ २ ॥
दोहा-तुम जानतहो निज मनहिं, हमहिं चतुर ब्रज माहिं ॥
अरु ये ब्रजके लोग सब, सो कछु जानत नाहिं ॥
चौबोला-सो कछु जानत नाहिं लाल तुम हम अयान ठहराईजी॥
रैन वसत कहुँ भोर हमारे आवत लाज न आईजी ॥
तबहिं श्याम सुन्दर मृदुवाणी बोले अति सकुचाईजी ॥

कौने लख्यो कह्यो किन आई झूँठी बात बनाईजी ॥ १ ॥
ये सब झूँठी बात वनावैं खोटी सब ब्रजनारीजी ॥
सौंह करों जो कहौ लाडिली तुमते और न प्यारीजी ॥
कत वचनन कहि दाहत हीयो बोलै रहो मुरारीजी ॥
ये सब झूँठी ब्रजकी नारी सांचे तुमहिं विहारीजी ॥ २ ॥

दोहा–सौंह करतहौ लाल अब, जानपरी चतुराइ ॥
लोक वेद मर्याद तजि, लाज छुड़ावन चाइ ॥

चौबोला–लाज छुड़ावन चाइ पियसों ऐसे झगरति प्यारीजी ॥
आई तहां और ब्रजनारी देख रही सब ग्वारीजी ॥
तिन्हें कह्यो सैननमें प्यारी देखहु छविहि निहारीजी ॥
युवति विलोकति छबि अधिकाई मौन रहे बनवारीजी ॥ १ ॥
कहति सखी यह छबि कहां पाई कहो न कुँवर कन्हाईजी ॥
कहति प्रिया करें सोंह लखोरी अंग चिह्न छबिछाईजी ॥
दरशन देन प्रात इत आवत वसत निशा कहुँ जाईजी ॥
कृपा करो अब वेग सिधारो जहां तुम प्रीति लगाईजी ॥ २ ॥

अथ मध्यम मानलीला ।

दोहा–जाहु जाहु कहि क्रोध करि, इहां न तुम्हरो काज ॥
लखि प्यारी अति क्रोध मन, सोच रहे ब्रजराज ॥

चौबोला-सोच रहे ब्रजराज लाडिली देखी रोष कन्हाईजी ॥
अरु सखियनकी भीर देखि तब गये द्वार सुखदाईजी ॥
भरे विरह आनंद मगन रस सोच रहे उरमाईजी ॥
डरत मनहिं मन डर प्यारीके जाय सकत कहुँ नाईजी ॥ १ ॥
जबहीं श्याम गये द्वारे तन प्यारे रिस अधिकाईजी ॥
कहति सखिन सों देखहु तुम पुनि दोष देति मुहि आईजी ॥

ऐसे श्याम गुणनके आगर चोरत चितहि कन्हाईजी ॥
जान देहु अब इहां न आवै ऐसे कहि रिसहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–इहां काज उनको नहीं, ऐसे सखिन सुनाइ ॥
जाउ तुमहुँ अपने सदन, यों कहि भवन सिधाइ ॥
चौबोला–यों कहि भवन सिधाई नख शिख रोष भईपियप्यारीजी
जोबन रूप गर्व उरधारी चली घरन ब्रजनारीजी ॥
गई सखी वह दशा निहारी देखे द्वार विहारीजी ॥
कहति सुनो मोहन पिय तुमसों प्रियारोष भइभारीजी ॥१॥
प्यारी रोष कियो अति तुमपर हम सब घरन पठाईजी ॥
अटपट रूप दिखाय तुमहि यह कहाकीनी चतुराईजी ॥
तुम्हरे आवत अतिहिरिसाई भीतर भवन सिधाईजी ॥
भये चकित अति गये झुराई सुनतहि कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तब सखियन हरिसों कह्यो, चतुर कहावतनाम ॥
करत फिरत ऐसे गुणन, अब कच्यात कत श्याम ॥
चौबो०–अब कच्यात कत श्याम लाडिली तुमहीं जानरिसाईजी
अटपट रूप दिखाय कहूँते आये रंग बनाईजी ॥
प्रथम विचार कियो तुमनाईं अब पछितात कन्हाईजी ॥
यह सुनि धीर कियो सुखदाई युवती एक बुलाईजी ॥ १ ॥
तासों कहि सब बात जनाई दूती ठान पठाईजी ॥
वेगि मेट जियमान सयानी यह तोहिं कह्यो कन्हाईजी ॥
ऐसे मन मन कहत दूतिका श्रीराधा ढिंग आईजी ॥
प्यारी मान ठानकर बैठी उर अति रोष बढाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सौति शाल शालतहिये, रह्यो सोच उरछाइ ॥
नाहिं बोलत हेरत नहीं, नेकु न अंग हिलाइ ॥
चौबोला–नेकु न अंग हिलाइ दूतिका बात कछू नहिं पावेजी ॥

विना भीत कहां चित्र बनावे कछु मुख वचन न आवेजी ॥
अति आतुर मुहिं श्याम पठाई ऐसे मन पछितावेजी ॥
यह इत उत कहुँ नाहिं निहारे कहा कहुँ कहिय न जावेजी॥१॥
यह विचार ठहराय मनहिं मन कहति दूतिका नारीजी ॥
मान कियो वृषभानुदुलारी कहा जियमाहिं विचारीजी ॥
उनकी बात आज मैं चीन्हें कहत सखी सों प्यारीजी ॥
ऐसेमें उनको नहिं जाने गुणन भरे गिरिधारीजी ॥ २ ॥

लावनी।

अब कैसे उनसों मन मानें डोलत ब्रज घर घर जावे ॥
लाज न आवे भोर भये दरश देन इतको धावे ॥
टेक–जित चाहो तित फिरो कन्हाई मैं अपने मन यह आनी॥
इहाँ न आवे राज करो ब्रजमें वे हरि सुखदानी ॥
दूती सुनि प्यारीकी बानी भीतर प्रेम भरी जानी ॥
कहति दूतिका अबहिमैं यमुनाते ल्यावति पानी ॥
सखि इक कह्यो आजु भइ ऐसे को अब इनकोसमुझावै॥
लाज न आवै भोर भये दरश देन इतको धावै ॥ १ ॥
तब मैं रहि न सकी घर माई सुनत तुरत इतको धाई ॥
भली प्रकृति श्यामकी परी नहीं यह दुखदाई ॥
अब द्वारेते हरि न टरैरी पर घर जात न सों खाई ॥
मन पछितावे भूल असो कबहूँ करिहों नाईं ॥
अब ससुझे अरु हम समुझावें परघर जान नहीं पावे ॥
लाज न आवै भोर भये दरश देन इतको धावै ॥ २ ॥
यहै कहन तोसों मैं आई तू जिन मान तजै प्यारी ॥
परत लखाई कहूँ अब जात नहीं वे वनवारी ॥

जब दूती यों बात बखानी जाने द्वारे गिरिधारी ॥
उमगतहीयो मिलनको ऊपर रोष रही धारी ॥
काहेको हरि द्वार खरेरी क्यों नाहिं अपने घर जावै ॥
लाज न आवै भोर भये दरश देन इतको धावै ॥ ३ ॥
लई तीयके जान हियेकी चतुर दूतिका मन भाई ॥
गई श्यामपै कहति कछु बात और औरै लाई ॥
काहि मनाऊँ सुनहु कन्हाई नेकुमरम मैं नाहिं पाई ॥
दीठ न जोरै लाड़िली सूधे मुख बोलत नाईं ॥
विहारन मैं कहि कहि समुझाई वह न कछू मनमें ल्यावै
लाज न आवै भोर भये दरश देन इतको धावै ॥ ४ ॥

दोहा—नेकु नहीं उत्तर कहै, मुखते करै न बात ॥
रही मौन गहि लाडिली, अति रिस कंपत गात ॥

चौबोला—अति रिस कंपत गात कहीमैं सो तो सुनहु कन्हाईजी
भई बूंद वारुदकी नाईं रह्यो नैन जल छाईजी ॥
नहीं डरत बैठी मुख मोरे तिरछी भौंह तनाईजी ॥
ऐसी है यह दीठ तुम्हारी तासों नाहिं बसाईजी ॥ १ ॥
सुनहु रसिक बर हरि सुखदाई आपहि लेहु मनाईजी ॥
यह सुनि विरह भरे बनवारी मुरछि परे सुधि नाईजी ॥
यों कत विकल होत बलिहारी लीने सखी उठाईजी ॥
धीर धरो सुख पावत हो जू नागर नवल कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—नेक वात गहि पायहो, तुमहिं मिलैहों लाल ॥
धीरज दे वन श्यामको, दूती गई उताल ॥

चौबोला—दूती गई उताल जाय कह्यो सुनहु राधिका रानीजी ॥
प्यारे श्याम वेहाल लाडिली मुख नहिं बोलत वाणीजी ॥
तेरे विरह भये अति व्याकुल नैनन डारत पानीजी ॥

कहा कहूँ न सँभार कछू तन चलि सुख देहु सयानीजी ॥ १ ॥
और नहीं कोऊ तो रसकी तू हरिके मन भावैजी ॥
तेरे रस वश कुँवर कन्हाई तेरे विरह कुम्हिलावैजी ॥
तेरे चितवन के चेरेरी तेरोइ रूप लखावैजी ॥
तेरे रंग वसन तन धारे तोरँग तिलक लगावैजी ॥ २ ॥

दोहा–चन्द्रवदन तेरो लख्यो, मोहन श्याम सुजान ॥
मोरचन्द्र शिर मुकुट करि, धरचो ताहिते कान्ह ॥

चौबो०-धरचो ताहिते कान्ह राधिका अति अनुराग मुरारीजी
कर विचार नीकेमें हेरचो मानहु बात हमारीजी ॥
जो जाको नीके कर जाने सो ताको हितकारीजी ॥
यहै प्रीतिकी रीति पियारी बोल लेहु गिरिधारीजी ॥ १ ॥
तू कहां गई कहन कहा आई तोहिंको श्याम पठाईजी ॥
मानत कौन कही अब तेरी जान लई चतुराईजी ॥
जिन्हे परी यह बान तिनहिं सों मिलहिं कौन अब जाईजी ॥
मन में राखत आन कहत कछु आनहिं बात बनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बहु नायक पूरे गुणन, ह्वैं वे कपट निधान ॥
जिन बावन ह्वै बलि छल्यो, सो जग करत बखान ॥

चौबोला–सो जग करत बखान हरीकी महिमा कही न जावेजी ॥
देख विचार हिये अपनेरी मान किये कहा पावेजी ॥
जाके गुण गण सुर मुनि मोहे सो तेरे गुण गावेजी ॥
सनकादिक जेहि ध्यान लगावे सो तो दरश न चावेजी ॥ १ ॥
शिव विधि जाके द्वार खरेरी सोतो द्वार सुहावेजी ॥
जाके पद कमलाकर लीने सो हरि तो पद ध्यावेजी ॥
अति आतुर नँदलाल हियेरी शीश छिये सोंह खावेजी ॥
सुनि प्यारी अति हठ नाहिं कीजे वृथा क्रोध जिन ल्यावेजी॥२॥

दोहा—यह जोबन वरषा सलिल, गर्व नकीजै बाम ॥
सब सुख हरिके सँगकिये, अबकत बिछुरतश्याम ॥

चौबोला-अबकतबिछुरतश्याम लाडिली जीवनप्राण हमारोजी
कृष्ण विमुखकै कालजियेरी क्यों मनमें न विचारोजी ॥
भामिन मान कह्यो कर मेरो पूरव सुकृत तुम्हारोजी ॥
भीजहु हरिके रस रँग माई सुन्दर रूप निहारोजी ॥ १ ॥
तू अति परम सुजान सयानी हरिसों मान न कीजैजी ॥
उठति बैसके दिनरी प्यारी वृथा जान नहिं दीजैजी ॥
मैं जु कहत तेरे हित केरी हरि संग हिलमिलरीजैजी ॥
परे द्वार तेरे गिरिधारी बोलि भवन में लीजैजी ॥ २ ॥

दोहा—सोई चतुर सुलक्षणी, वसतपीय जिय माहिं ॥
योवन गुण दुति पीय हित, तो समान कोउ नाहिं ॥

चौबोला—तो समान कोउ नाहिं राधिकातूअतिपियकी प्यारीजी
तेरे हित मोहन बनवारी बोल लई ब्रजनारीजी ॥
कियो बुलाय रास नन्दलाला वृन्दावनहि मझारीजी ॥
तूतन श्याम प्राणरी प्यारी परछांई हम सारीजी ॥ १ ॥
तेरे रूप समान ब्रजहिमें और तीय कोउ नाईजी ॥
कहाभयो री वे बहुनायक सुन्दर श्याम कन्हाईजी ॥
शशिहि कहाडर कुमुदनीको जो तू मन गरवाईजी ॥
ऐसे जबदूती समुझाई तब बोली मुसुकाईजी ॥ २ ॥

दोहा—वेधति ऐसे वचन शर, वकति बादही आय ॥
उतकी इत इतकी उतहि, मिलवत बातबनाय ॥

चौबोला—मिलवत बात बनाय सखी तू इतउत आवै जावैजी ॥
जो चहिहैं तो आपुहि ऐहैं हाहाकरि सौंह खावैजी ॥

प्रीति रीति कछु जानत नाईं कहत सोई मन आवैजी ॥
जब प्यारी ऐसे कहि वाणी तब सखि वचन सुनावैजी ॥ १ ॥
मानति नाहिं लाडिली प्यारी कहति सखी मुसकाईजी ॥
श्याम मिलाऊं आनि तोहिं अब मनत न मेरी मनाईजी ॥
मैं जानी तब मानिहो प्यारी श्याम मनावै आईजी ॥
अरी मान वे बहुते तेरे विरह विकल सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–जबलगि मैं जाऊं वहां, ऐसेहि रहियो वाम ॥
यह छवि हरिः दिखायहों, लखि सुख पैहैं श्याम ॥

चौबोला–लखि सुख पैहैं श्याम यह कहि चली श्याम पैआईजी
कहति सुनो मोहन पिय प्यारी मैं बहुभाँति मनाईजी ॥
मानति नाहिं मनाई प्यारी कहाधरी जियमाईजी ॥
हाहा करि मैं बहु समुझाई सुनत अधिक रिसहाईजी ॥ १ ॥
आपहि चलिये लेहु मनाई और उपायहि नाईजी ॥
वहै वयार जैसिये जबहीं पीठ आडिये ताईजी ॥
मोसीं जो पठवहु तुम कोटिन मनत न प्यारि मनाईजी ॥
होंतो कहति तुम्हारे हितकी वाकें चितकी पाईजी ॥ २ ॥

दोहा–चले बनत है लाल अब, और यत्न नाहिं कोइ ॥
काछकाछिये जो हरी नाचनाचिये सोइ ॥

चौबोला–नाचनाचिये सोइ श्याम अब सुनहुश्री ब्रजराजैजी ॥
बड़े कहिगये बात यहै हरि आपकाज महाकाजैजी ॥
विनती करि हरि मिलहु तीयसों तजहु श्याम उरलाजैजी ॥
चलहु वेगि प्यारी ढिंग मोहन देखत सब दुखभाजैजी ॥ १ ॥
सखी संग तब नवल विहारी गये भवन जहाँ प्यारीजी ॥
आगे भये सकुचके ठाढे हृदय प्रेम अति भारीजी ॥
चित्र लिखेसे मुख नहिं बोलें नेक न हलत मुरारीजी ॥

यदपि लाजगाढे अति जियके तदपि सयान विसारीजी ॥ २ ॥
दोहा–प्यारी जान्यो पियलखी, मोते डरे कन्हाइ ॥
अति आनँद मनमें भयो, चुपहि रही मुसकाइ ॥
चौबोला–चुपहि रही मुसकाइ कहति मन देउँ मान उचटाईजी
आदर करि पियको बैठाऊं यह प्यारी मन आईजी ॥
मोसों श्याम बहुत सकुचे अब जात न धाम पराईजी ॥
सहचरि कह्यो देखरी प्यारी कबते ठढे कन्हाईजी ॥ १ ॥
मान मनाई प्यारी पियके तू पियमन अति भाईजी ॥
प्राणहितनाहिं रूसबो कैसे भयो सुन्यों कहुँ नाईजी ॥
करि आदर बैठार पीयको हँसिले कंठ लगाईजी ॥
घर आये मिल लीजे प्यारी ऐसी कत सकुचाईजी ॥ २ ॥
दोहा–मनमें ऐसी कहा धरी, है तू नागरि बाम ॥
तू मुखते बोलति नहीं, वे ठाढे हैं श्याम ॥
चौबोला--वे ठाढेहैं श्याम सुनतही कहति प्रिया मुख बानीजी॥
अबकी चूक नहीं मैं मानी पुनि रहियो अब जानीजी ॥
मेरी सोंह करोमो आगे तब बोले सुखदानीजी ॥
कह्यो सोंह करि मोहन तबहीं जात न धाम बिरानीजी ॥ १ ॥
नंद भवनते अबहीं आयो देखी तुम रिस भारीजी ॥
अबलोंकी करनी जिन खोलो तब हँसि बोली प्यारीजी ॥
अब जु कालिहते अनत सिधारो तुम जानो गिरिधारीजी ॥
तब हरि हँसि कर शिर परराखे सोंह करी बनवारीजी ॥ २ ॥
दोहा–सोंह करी नँदलाल अब, कहति प्रिया मुखभाखि ॥
सखी आज ते बात यह, तू अब रहियो साखि ॥
चौबोला–तू अब रहियो साखि सखी सों कहत राधिका रानीजी
आई तहां और ब्रजनारी आदर सब सनमानीजी ॥

हँसे श्याम श्यामा मुसकानी सोंह करी सब जानीजी ॥
दिये पान हरिको तब प्यारी लिये श्याम सुखदानीजी ॥ १ ॥
भरी प्रेम आनंद सखिनसों कहत लाडिली प्यारीजी ॥
तुमहूं सब मिल कहो साह अब भये श्याम बनवारीजी ॥
लखि लखि सखी सिहात युगल छबि राधा अरु गिरिधारीजी॥
बसे श्याम तहां रात प्रात उठ चले सदन सुखकारीजी ॥ २ ॥

दोहा–चले धाम निज श्याम तहां, लखे द्वार नँदराइ ॥
सकुच फिरे घरजात गये, प्रमुदा सदन कन्हाइ ॥

चौबोला-प्रमुदा सदन कन्हाइ गये हरि लखि प्रमुदा सुखपाईजी
कहति लाल यह ख्याल तुम्हारे कित मग गये भुलाईजी ॥
कहां हुते गवने कितमाई दरशहु देतहो नाईजी ॥
फिरत कहां हो लाल भुलाने रहे हमें बिसराईजी ॥ १ ॥
कहो कहा हो कछू डरेसे आलस अंग सुहायेजी ॥
बसे कहूं निशि तिय संग जागे नैन अरुण छबि छायेजी ॥
रसमसे गात शृँगार बनाये डगमगात इत आयेजी ॥
अंग अंग शोभाके सागर धनि धनि दरश दिखायेजी ॥ २ ॥

दोहा–बिहँसि चले कहि श्याम तब, तरक करी तुम बात ॥
समुझी सब हम आय हैं, आज तुम्हारे रात ॥

चौबोला–आज तुम्हारे रात आय हैं सुनि हरषीं तब नारीजी ॥
पुलक गात आनँद उरभारी ऐ हैं आज मुरारीजी ॥
सांझ परे मेरे घर ऐहैं यह मनरही बिचारीजी ॥
प्रातहिते मन हरष बढ़ायो नोसत साज सँवारीजी ॥ १ ॥
बार बार दर्पण मुख देखे भूषण बसन सजाईजी ॥
मांग सुधारत दधिसुत श्रेणी वेणी अहि छबि छाईजी ॥
धनपति पुरको नाम सुधारे दृगन दीप सुतलाईजी ॥

हीरावलि उर परले धारे श्याम मिलन मन माईजी ॥ २ ॥
दोहा–रचि रचि सेजसजात तब, नाना सुमन लगाय ॥
केसर चन्दन अरगजा, विविध सुगंध मिलाय ॥
चौबोला–विविध सुगंध मिलाय नागरी निजकरसेजबनाईजी ॥
बहुनायक नंदसुवन अनत कहुँ गये याहि विसराईजी ॥
वासर ऐसे करत विहानो निसायाम इक आईजी ॥
श्याम न आयें कहा धों जानी शोच विरह अकुलाईजी ॥ १ ॥
अजहुँ नहीं आये मनभावन कहति मनहिं मन नारीजी ॥
गये सांझहीको कहि आवत नहिं आये गिरिधारीजी ॥
किधों परे कहुँ फंद पराये कै आवत बनवारीजी ॥
वैवहु रमणी रमण विहारी कै मम सुरत विसारीजी ॥ २ ॥
दोहा–कुमुदाके घर हरि रहे, बढ़्यो अधिक उर हेत ॥
भीजे दोऊ प्रेम रस, अरस परस सुख लेत ॥
चौ०-अरस परस सुख लेत श्याम सँग मुदित वाम सुख पाईजी ॥
क्षण सम वीतत रात याहि वहां युग सम रैन विताईजी ॥
वैसे वहां याहि यह रीती ऐसेहि भोर है आईजी ॥
मनहीं मन युवती पछिताई करी श्याम कुटिलाईजी ॥ १ ॥
गयो मदन दुख बदन झुराई रही बैठ घरमाईजी ॥
आई तहाँ सहज इक आली देखि विकल पछिताईजी ॥
लोचन कमल भरे जल डाहे मनमारे मुरझाईजी ॥
कहा भयो तोकोरी आली बूझति सों ढिग जाईजी ॥ २ ॥
दोहा–विकल होत मेरो तनहिं, ऐसे देखत तोहिं ॥
कहा भईरी बातसो, कहत नहीं किन मोहिं ॥
चौबोला-कहत नहीं किन मोहिं भई सोइ कहो न बात सयानीजी॥
तब बोली मधुरे तिय बाणी पोंछ नैनको पानीजी ॥

कहा कहों तोसोंरी आली जो हरि मोसों ठानीजी ॥
गये मोहिं कहि आवन मोहन पुनि उन कहा जिय आनीजी॥१॥
मोसों अवधि वदी उन माई रहे अनत कहुँ जाईजी ॥
कियो नहीं मेरे घर आवन तबते मैं पछिताईजी ॥
ऐसे गुण हरिकेरी आली कपट निधान कन्हाईजी ॥
मोसों कपट कियो उन आई झूँठी बात बनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मेरी सों कहियो उन्हें, तोहिं मिले जो आज ॥
वचननके सांचे वड़े, गहो कछू उर लाज ॥

चौबोला–गहो कछू उर लाज कन्हाई यह कहियो समुझाईजी ॥
उन्हें कछू मैं गई बुलावन आये आप कन्हाईजी ॥
मोपै कृपा आय यह कीनी कहो तोहिंसों माईजी ॥
काल्ह कहूँ जागे तिय गोहन[1] जातहुते घर माईजी ॥ १ ॥
देखे नन्द द्वारही ठाढे सकुच[2] फिरे इत माईजी ॥
डग मग पग दृग[3] नींद भरेरी पुनि पुनि लेत जम्हाईजी ॥
जब मैं कहो कहांते आये तब वे रहे मुसकाईजी ॥
उत्तर मोहिं दियो कछु नाहिं करी श्याम चतुराईजी ॥ २ ॥

दोहा–ऐहैं तुमरे धाम निश, यों कहि मोहिं सुनाहिं ॥
मैं जोवत[4] मग निश गई, मोघर आये नाहिं ॥

चौबोला–मोघर आये नाहिं कहतही आये द्वार विहारीजी ॥
भीतरते लखि हरिको ग्वारी भई रोष मन भारीजी ॥
देखतही रिसमें झहरानी कहति सुनो बनवारीजी ॥
धन्य धन्य यह घरी आज मम आये धाम मुरारीजी ॥ १ ॥
मुरि बैठी रिस गात नागरी ऐसे कहि गहि मौनैजी ॥
आये मोहिं खिजावन उठ इत धरत जरेपर लोनैजी ॥

१ घर-पास । २ लज्जित । ३ आँखें । ४ देखत ।

चतुर नारि संग जागे सब निश आये हैं करि गौनैजी ॥
फिरत कहा कोऊ बहि ऐसे इनसों मिलि है कौनैजी ॥ २ ॥

दोहा–कृपा करहिं नँदलाल अब, जिन आवहु मम धाम ॥
उतहिं जाहु सुख पात जहाँ, जाहु जाहु तहँ श्याम ॥

चौबोला–जाहु जाहु तहँ श्याम कही खिज देखे बहुरि कन्हाईजी
जागे कहुँ निशि संग बासके चिह्न सोई लखि पाईजी ॥
कहुँ चन्दन कहुँ बंदन रेखा कहूँ पीक छबि छाईजी ॥
लखि स्वरूप हरि तन मुसकाई कियो मान अधिकाईजी ॥१॥
मन मन सोचत कुँवर कन्हाई परे तीय फँद आईजी ॥
मेरो नाम सुनतहीं अैंटी देखत मोहिं रिसाईजी ॥
तबहीं श्याम करी चतुराई सैनन सखी बुलाईजी ॥
सोकहि चली जात घर माई तू बैठी अनखाईजी ॥ २ ॥

दोहा–अनतहि हरि ठाढे भये, तहाँ सखी चलिआय ॥
निरखि बदन मोहन हँसे, सखी कह्यो मुसकाय ॥

चौबोला-सखी कह्यो मुसकाइ लाल तुम कहा कियो यह आईजी॥
तब हरि कह्यो सखी तू जाघर मैं अब लेहुँ मनाईजी ॥
यह सुनि विहँसि चली कहि आली लेहु मनाय कन्हाईजी ॥
रसिक शिरोमणि कुँवर कन्हाई विद्यामणि सुखदाईजी ॥ १ ॥
आपहु गये तहाँ ते मोहन तियको दरश दिखाईजी ॥
फिर चितई द्वारे तन गोरी तहाँ देख्यो कोउ नाईजी ॥
भयो सोच अधिकी उरमाईं लखे न द्वार कन्हाईजी ॥
जब जानी फिर गये श्याम तब रही बाम पछिताईजी ॥ २ ॥

दोहा–भई विरह व्याकुल सखी, रही सोच मनमाहिं ॥
मिथ्यो मान उर अति दुखी, भली करी मैं नाहिं ॥

चौबोला-भली करीमैं नाहिं कहति पन मोहिं कहा मति आईजी
आवतही हरि सों झहराई घर आये सुखदाईजी ॥
भीतरलों आवन नहिं दीने भयो क्रोध दुखदाईजी ॥
ज्योंत्यों करि मेरे घर आये मैं देखत रिसहाईजी ॥ १ ॥
बार बार ऐसे पछिताई रही मसोसा खाईजी ॥
श्याम गये निहचै जब जानी यमुना न्हान सिधाईजी ॥
अति व्याकुल मन कछु न सुहाई संग सखीन बुलाईजी ॥
पहुँची यमुना तुरतहि न्हाई चली बहुरि अतुराईजी ॥ २ ॥

दोहा-मारगमें ठाढे भये, बाल स्वरूप बनाय ॥
पांच बरसके बन हरी, कहत सखी सों आय ॥

चौ०-कहत सखी सों आय मगहिमें और नहीं तहाँ कोईजी ॥
कहां जात हैरी तू नारी श्याम बुलाई तोईजी ॥
बनहिं बुलाई कुँवर कन्हाई लेन पठायो मोईजी ॥
सुनत वचन चकृत भइ नारी रही बाल मुख जोईजी ॥ १ ॥
अति आनंद भयो उरमाई सुनतहि नाम कन्हाईजी ॥
विहारन प्रभुकी अद्भुत लीला अगम चरितको पाईजी ॥
करगहि लियो चली हरषाई बालकको गृह ल्याईजी ॥
कहत श्याम बनधाम बुलाई लेन पठायो याईजी ॥ २ ॥

दोहा-पूछों यासों भेद सब, कहा कह्यो घनश्याम ॥
अति आनँद उरमें भयो, भीतर लेगई बाम ॥

चौबोला-भीतर ले गई बाम तहाँ हरि कीनों चरित कन्हाईजी ॥
भये तरुण सुन्दर तिहिं काला भुज गहि हँसि उर लाईजी ॥
चकित भई नागरि सकुचाई छांड़ि देहु सुखदाईजी ॥
ऐसे चरित करत धनि धनि पिय यहि विधि नारि मनाईजी॥१॥
सुख दे गये सदन सुखदाई हरष भई मन ग्वारीजी ॥

रेन विरहतन ताप निवारी अति आनँद मन भारीजी ॥
यशुमति ढिंग बालक जिम बोले कहत चरित बनवारीजी ॥
निज गृह श्याम गये गिरिधारी विहारन तन मन वारीजी ॥२॥

अथ गुरुमानलीला।

दोहा–सुन्दर श्रीहरिकी कथा, अति विचित्र सुखखान ॥
कहत सुनत गावत गुणत, हर्षित संत सुजान ॥
चौबोला–हर्षित संत सुजान गुणन भरे ब्रजनायक सुखदाईजी
गये और गोपी गृह मोहन सुन्दर श्याम कन्हाईजी ॥
चली न्हान वृषभानु किशोरी सँग ब्रजनारि सुहाईजी ॥
जाके घर निश बसे कन्हाई ताहिं बुलावन आईजी ॥ १ ॥
ठाढी भई द्वारपर आई उत निकसे बनवारीजी ॥
औचक[1] मिले न जानत कोऊ रहे चकित दोउ भारीजी ॥
न्हान जानकी सुरत बिसारी फिरी सदनको प्यारीजी ॥
भई विकल तन अति रिस बाढ़ी रही निरखि सब नारीजी॥२॥
दोहा–रहगये ठाढे श्याम तहाँ, भये सोच वश आय ॥
जब देखे व्याकुल हरी, रही सखी समुझाय ॥
चौ०-रही सखी समुझाय उलटि भई सबही हरिकी घाईजी ॥
देके बांह प्रिया जहाँ ल्याई देखी बाम कन्हाईजी ॥
रिस हीके रस मगन किशोरी बैठी मान दृढ़ाईजी ॥
भई श्याम देखत माति भोरी चकित रहे अकुलाईजी ॥ १ ॥
सखियन कियो विचार सकल मिल व्याकुल लखि बनवारीजी
अब ये दोऊ मिलहिं जेहि विधि करिये सो उपचारीजी ॥
को सुनिहै कासों कहैं जाई अति अचेत रिस प्यारीजी ॥
परी रुठावन वान इन्हैं अब इतये धीरन धारीजी ॥ २ ॥

---

१ अचानक।

दोहा–प्यारी ढिंग आलीगई, ठाढे पौंरि कन्हाइ ॥
कहति मान कीनों कहा, न्हान जात फिर आइ ॥
चौबोला–न्हानजात फिर आइ लाडिलीकहा जियमांहिंविचारीजी
तोहिं लखतहीरी सुखदाई अतिहि डरे बनवारीजी ॥
मुराछि परे धरणी अकुलाई तनुकी सुरति विसारीजी ॥
नेकहु चैन रह्यो नहिं हरिको भये विकल अति भारीजी ॥ १ ॥
बहुनायक वे तू नहिं जाने तिनसों कहा रिसावैजी ॥
बाँह गहो हरिको ढिंग लावे वे अपराध क्षमावैजी ॥
गहत बाँह तुमहीं किन जाई मोसों कहा गहावैजी ॥
काल्ह सोंह मोसों उनकीनी आजहि परघर जावैजी ॥ २ ॥
दोहा–देखिचुकी उनके गुणन, निज नैनन सुखपाय ॥
तिन्हे मिलावत मोहिं अब, बाँह गहावत आय ॥
चौबोला–बाँह गहावत आय सखी सुन साँची तोहिं सुनाऊंजी॥
अब जोलों जीवन जिऊंरी हरिको नाहिं पत्याऊंजी ॥
सहूं विरहके शूल रिआली विरहताप जर जाऊंजी ॥
उनके पंथ न पीऊँ पानी हरिसों प्रीति न लाऊँजी ॥ १ ॥
मृगमद भूलि न अंग चढाऊँ अंजन दृग नहिं लाईजी ॥
हस्त वलै पट नील न धारौं नैनन घन न लखाईजी ॥
सुनौं न श्रवणन अलि पिक वाणी नीले तनन छुवाईजी ॥
सुनत प्रियाकी बात सुहाई ठाढे पौंरि कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–हरिसों मान न कीजिये, सुन वृषभानु कुमारि ॥
नवल तुमहुँ नवलहि हरी, यह जीवन दिन चारि ॥
चौबोला–यह जीवन दिन चारि राधिका गर्व न कीजै प्यारीजी॥
क्षण क्षण ज्यों करको जल छीजै जात न लागै वारीजी ॥
नंद नँदन पिय सुख सुखकारी निश दिन रहो निहारीजी ॥

हतो प्रेम धन येतो प्यारी सो तू कहां विसारीजी ॥ १ ॥
कहति हती रूसों नहिं कबहूँ तादिन तू यह मोईजी ॥
करिहैं हँसी प्रेमकी सोई सुघर नारि सुनि कोईजी ॥
मान कियो जो भावते प्यारी सो न भाववो होईजी ॥
उरते रिस वश प्रेम कहाँरी अंत भावतो सोईजी ॥ २ ॥

दोहा–पिय सनेह जो गाइये, लाख कह्यो किन कोय ॥
लियो प्रेम परच्यो जिनहिं, चतुर नारिहै सोय ॥

चौबोला–चतुर नारि है सोय लाडिली सुन वृषभानु दुलारीजी॥
तुम वे एक न दोय पियारी जलहि तरंग न न्यारीजी ॥
रस रूसबो ओसकन जैसो सो नहिं रहत सदारीजी ॥
तजि अभिमान मिलहिं पिय प्यारी मानहु बात हमारीजी॥१॥
चुप न रहत कहा कहति मनावन आई बात बनावनजी ॥
वहुत सखी घरआई याते पिछली सुरत दिवावनजी ॥
मोसों बात कहत हो काकी वे तुमरे मन भावनजी ॥
को उनकी यहां बात चलावे तुम पुनीत वे पावनजी ॥ २ ॥

दोहा–अबहूं कछु बाकी रही, जाहु घरन ब्रजनारि ॥
मोहिं मनावन आइहो, यह कहि रिस भइभारि ॥

चौ०-यह कहि रिस भइ भारि राधिका सखी श्याम ढिग आईजी
कह्यो जाय हरि सों हरषाई कहां भूले चतुराईजी ॥
मान तजत नहिं कुँवर किशोरी थाकी सकल मनाईजी ॥
वेग यत्न कछु कीजिये मोहन रचिये आप उपाईजी ॥ १ ॥
रच्यो दूतिका रूप तुरतही सुन्दर श्याम कन्हाईजी ॥
करातिय स्वांग अनूप गये जहां बैठी मान दृढ़ाईजी ॥
बैठे निकट सखी मिसजाई करत बात मनभाईजी ॥
बन घन श्याम धाम तू प्यारी बैठ रही रिसहाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मैं उतही अबही गई, तू न तहाँ लखिपाइ ॥
हरिकी दशा निहार तब, इतही को चलिआइ ॥
चौबोला–इतहीको चलि आइ लाडिली देखे कुँवर कन्हाईजी ॥
इकले ठढे गहे द्रुमडारी अति आरत मनमांईजी ॥
तेरोइनाम रटत मुखराधा और कछू सुधि नाईंजी ॥
चलतू होय नेकढिंग ठाडी देखहु नैन न जाईजी ॥ १ ॥
कुंजभवन ठाढे दोउ देखो राधा अरु गिरिधारीजी ॥
तब मैं नैन सफल करिलेखों मानहु अरज हमारीजी ॥
अब हरि कहत दंड मुहिं दीजै जोचाहो सो प्यारीजी ॥
हठतजि हाहा कुँवरि किशोरी अति दुःखित बनवारीजी ॥ २ ॥
दोहा–तुम कारणरी राधिका, पांय परत मम श्याम ॥
करि अपराध हरिके क्षमा, दे सुख चलि बनधाम ॥
चौबोला–दे सुख चलि बनधाम किशोरी मैं लागततुमपाईजी ॥
उन्हें जानि मोसों करि सोई जो तुमरे मनमांईजी ॥
क्षण क्षण परसत चरण करनते क्षण क्षणलेत बलाईजी ॥
कहत मान अब तजहु लाडिली पुनि पुनि हाहाखाईजी ॥ १ ॥
चरित ललित नँदलाल हरीके लखि लखि सखी सिहाईजी ॥
भरी प्रेम आनंद मगनरस मनहीं मन हरषाईजी ॥
तब चितयो प्यारी नैनन भर कछु हरि अंग लखाईजी ॥
श्याम अजहुँये गुण नहिं छांड़त लावत हो चतुराईजी ॥ २ ॥
दोहा–इन छंदन मानो नहीं, जानति तुम्हें कन्हाइ ॥
रसबादिन मोको करी, वे सब देहु भुलाइ ॥
चौबोला–वे सब देहु भुलाइ श्याम अब जान लई चतुराईजी॥
यह कहि बहुरि भई रिसहाई रहे श्याम सकुचाईजी ॥
फिर पोढी दै पीठ श्यामको हृदय दुखित अधिकाईजी ॥

रिस वश धरत नहीं मन धारे विरह पीर अति छाईजी ॥ १ ॥
जित्ते जिते मुख फेरत प्यारी तितहिं जात सुखदाईजी ॥
जोइ जोइ बात प्रिया मन भावे सोइ सोइ कहत कन्हाईजी ॥
करि हारे छलछंद हरी सब छूव न पावत छाईजी ॥
हठ नाहिं छांडत कुँवरि किशोरी सोचत हरि मन माईजी ॥२॥

दोहा—विरह विवश प्यारी निकट, देखि श्यामको दीन ॥
तब समझावन सब लगीं, सखियां परम प्रवीन ॥

चौबो०-सखियां परम प्रवीन कहति सब लखिरी नवल विहारीजी
कबके हाहा करत कन्हाई पाँयन परत मुरारीजी ॥
तेरे भय तेरी मन मोहन रूप तीयको धारीजी ॥
मधुर मधुर वचनन सुखकारी तोहिं मनावत प्यारीजी ॥
हाहा करि अरु पाँयन लागे और कहा कियो चाईजी ॥
लखि हरि खड़े मिलन मुरझाये लै आदर बैठाईजी ॥
वेतो बनके भवँर विहारी तोसि बोलि अरुनाईजी ॥
करि सनमान विहँसि अब हरिको कहाधरी निठुराईजी ॥ २ ॥

दोहा—मान किये कहा पावही, आदर कारि कहा खोय ॥
होत कहा घूंघट तजे, बोले ते कहा होय ॥

चौबोला-बोले ते कहा होय तिहारे ऐसी कहा जिय आईजी ॥
प्रीतमछाँडि राखिये वैरी यह तोहिं कौन सिखाईजी ॥
निज वश मदन गुपालहि जानी ऐसी कहा इतराईजी ॥
भली कहत तोहिं लगत अनैसी कहा कोऊ समुझाईजी ॥ १ ॥
जो नहिं मानति श्याम मनाये मानहिं करि रह जैहेजी ॥
जब दहि है रतिनाथ तोहिं तब तू पुनि मन पछितैहैजी ॥
मान प्रिया हम कहति सकल मिल ऐसेको पुनिकैहैजी ॥
तीन भुवनको ठाकुर प्यारी सो निज वश कब ऐहैजी ॥ २ ॥

दोहा-यह जोवनरी राधिका, धन सपनेको जान ॥
ऐसो समय न पाय हो, पीय मनायो मान ॥
चौबोला--पीय मनायो मान किशोरी सुनि पाछे पछिताईजी॥
अब ये दिन रूसनके नाई सोच देखि मनमाईजी ॥
गरजत गगन भयो घन घेरो ऋतु पावसकी आईजी ॥
बोलत दादुर चातक मोरा चलत पवन पुरवाईजी ॥ १ ॥
बरषत मेघ भूमि हित लागी नारि पीय मन चाईजी ॥
जे बेली ग्रीषम ऋतु दहाई हुलसि तरुन लपटाईजी ॥
सरिता उमगित सिंधु समाई मिलत सुरसरी जाईजी ॥
भयो समय यह दिवस चारको करि सुख सँग सुखदाईजी ॥२॥
दोहा-सुनि सखियनके वचन बर, श्रीवृषभानु कुमारि ॥
उमगि प्रेम अति सुख भयो, ऊपर रिस रहिधारि ॥
चौ०-ऊपर रिस रहि धारि रिसहि करि कह्यो राधिकारानीजी ॥
रस करि हाथ विकाने जाके तहाँ जाहु सुखदानीजी ॥
मुख सों मेरो भलो मनावत रहत अनत मन मानीजी ॥
विरद तुम्हारो लजत कन्हाई सांच बखानत बानीजी ॥ १ ॥
गहे रहत मन आन तियनके विहँसि कह्यो यों प्यारीजी ॥
विरह ताप तनको सब खोयो हरष भये बनवारीजी ॥
प्यारी मुख विहँसित तब देखी हरषि उठी सब नारीजी ॥
तब बोले हरि दोउ कर जोरी श्रीवृषभानु दुलारीजी ॥ २ ॥
दोहा-तूही हित चित प्राण धन, सदारटतमैं तोय ॥
पोषण तेरे वचन मम, तो सम और न कोय ॥
चौबोला-तो सम और न कोय लाडिली मैं तुम्हरी बलिजाऊंजी
तुम मम तिलक तुही आभूषण तुम देखत सुखपाऊंजी ॥

१ बाना। २ हाथ।

तेरोई गुण निशदिन गाऊं अब यह विनय सुनाऊंजी ॥
तजहु मान अब दोउ करजोरो चरणन शीश नवाऊंजी ॥ १ ॥
यह सुनि कछु प्यारी मुसकानी तब बोली ब्रजनारीजी ॥
सुनहु श्याम तुमहो रससागर रूपशील सुखकारीजी ॥
तुमते प्रिया नेक नहिं न्यारी एकहि देह तुम्हारीजी ॥
प्यारी मैं तुम २ मैं प्यारी दरपनछांह निहारीजी ॥ २ ॥

दोहा—रस में परै बिरस तहाँ, होत अतिहिकाठिनाइ ॥
अबके देत मनाय हम, परसहु चरण कन्हाइ ॥

चौबोला-परसहु चरण कन्हाइ श्याम तुम अब जोरुठावोप्यारीजी
राम राम तो बहुरि हमारी तुम जानों गिरिधारीजी ॥
तब परसे प्यारी पद हरषित परम प्रीतिं बनवारीजी ॥
छूट्यो मान हरषभइ प्यारी मिट्यो विरह दुखभारीजी ॥ १ ॥
प्रेम कसौटी कासि पियप्यारी उर आनंद बढायेजी ॥
मिली पिया उठि श्याम सुन्दरसों अवगुण सब विसरायेजी ॥
हरषि उठे दोउ प्रीतम प्यारी निरखि सखिन सुख पायेजी ॥
तब सखियन दोउ उबटि न्हवाये रुचिर शृँगार बनायेजी ॥ २ ॥

दोहा—नाना विधि व्यंजन किये, मधुर मिष्ट मनभाय ॥
दोउ अन अतिहित प्रेम करि, एकहि थार जिमाय ॥

चौ०—एकहि थार जिमाय दोऊ तब अचवनकर दिय प्यारीजी॥
लै वीरा अपने कर राधा दीयो विहँसि विहारीजी ॥
तबहिं सफल जीवन करजान्यो परम हरषि बनवारीजी ॥
मिलि बैठे दोउ प्रीतम प्यारी आरति सखिन उतारीजी ॥ १ ॥
अरस परस दोउ रहे निहारी मन अति आनँद भारीजी ॥
पाये वश करि कुंजविहारी तब बोली हँसि प्यारीजी ॥
सुनहु श्याम बरषाऋतु आई रचहु हिंडोल मुरारीजी ॥

सब मिल झूलहिं संग तुम्हारे यह मन साध हमारीजी ॥ २ ॥

दोहा–सुनत वचन मुख तीयके, रहे श्याम सुख पाय ॥
राजत दोऊ अति मगन, ऐसे मान छुडाय ॥

चौ०-ऐसे मान छुडाय जनन हित कियो यह चरित मुरारीजी॥
निगम नेति अपार गुणन निधि सुखसागर गिरिधारीजी ॥
प्रेम सहित गावे जो हरिको मानचरित सुखकारीजी ॥
आदर मान करहिं सो तिनको श्याम सुन्दर बनवारीजी॥ १ ॥
राधा रसिक श्याम सुन्दरको मानचरित जो गावेजी ॥
भक्त जननको अति सुखकारी मन वाञ्छित फल पावेजी ॥
सुफल जन्म है तास अनूदिन गावत सुनत सुहावेजी ॥
जिनपर कृपा विहारन प्रभुकी तिनको यह रस भावेजी ॥ २ ॥

अथ हिंडोरावर्णन लीला।

दोहा–भक्तन हित लीला करैं, भक्तनके सुखदाइ ॥
सदा भक्त वश सांवरो, करत भक्त मन भाय ॥

चौबोला–करत भक्त मन भाइ भक्त हित नाना चरित उपाईजी॥
प्रेम भक्ति दृढ़ ब्रजकी बाला तिनके वशहि कन्हाईजी ॥
जोई सुख सखियन मनभावै करत सोई सुखदाईजी ॥
समैं समैंके सुखद विहारा करत श्याम ब्रजमाईजी ॥ १ ॥
ग्रीष्म गत पावस ऋतु आई अति शुभ परम सुहाईजी ॥
श्री राधा मनकी रुचिजानी हरिजनके सुखदाईजी ॥
तब हिंडोल लीला मन आनी सुन्दर श्याम कन्हाईजी ॥
गये श्याम वृन्दावन में तहाँ यमुना तट छवि छाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सखिन सहित श्रीराधिका, अरु श्रीनन्द किसोर ॥
अति आनंद चहुँ ओर छवि, घुमड़िरहे घनघोर ॥

चौबोला–घुमडिरहे घनघोर दामिनी दमक रही घनमाईजी ॥
गरजत मधुर श्रवण सुखदाई वहत समीरसुहाईजी ॥
नाना रंगन खिले फूल फल अति छबि बरनि न जाईजी ॥
गजमुक्तनके लगे झूमका मणिन जटित छबि छाईजी ॥ १ ॥
कनक बरन मय भूमि सुहाई छबि हिंडोर अति छाईजी ॥
तापर रसिक छबीले दोऊ उपमा को कोउ नाईजी ॥
नन्द नन्दन ब्रजभानुकिशोरी गौर श्याम सुखदाईजी ॥
मोर मुकुट पीतांबर सोहै सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–निरखत छबि नभ सुरसकल, नारिन सहितसिहाय ॥
चढे उमगि आनंद उर, सो छबि कही न जाय ॥
चौ०-सोछबि कही नजाय विराजत अति छबि युगलविहारीजी॥
प्यारी अंग वैजनीसारी चहुँदिस चारु किनारीजी ॥
युगल अंग भूषण छबि छाये रुचिर शृँगार सुधारीजी ॥
उर रत्नके हार विराजैं सुमन माल शुभकारीजी ॥ १ ॥
उत कुंडल इत तरवनकी दुति लखि छबि रवी लजावैजी ॥
सखि गण सब तृण तोरि निहारै तन मन वारिबहावैजी ॥
पिय प्यारीको हर्षि झुलावै ऊँचे सुख मिल गावैजी ॥
ताल मृदंग बांसुरी वीना बाजत सरस सुहावैजी ॥ २ ॥
दोहा–यह सुख सुनि ब्रजसुन्दरी, अपर सकल नव बाल॥
वृन्दावन झूलत युगल, राधा अरु नँदलाल ॥
चौबोला-राधा अरु नँदलाल झूलन सुनि चली सकल अतुराईजी
नव सत साज शृंगार सजाये गृह कारज तजि धाईजी ॥
मनमोहनके रस वश प्यारी चली मनहिं सुख पाईजी ॥
चुनिकरि पहरि चूनरी सारी अरुण किनारि सुहाईजी ॥ १ ॥
यूथ यूथ मिलि हरिपै आवैं तिन पिय निकट बुलावैजी ॥

आदर वचन सप्रेम सुनावै सबकी साध पुरावैजी ॥
एक न लेत निकट वैठाई एक न पींग चढावैजी ॥
गावति एक मल्हार सुहाई एकन एक बुलावैजी ॥ २ ॥
दोहा–युवति वृंद चहुँओर छवि, भूषण भीर अपारि ॥
बसन सुगंध नव बहु रंगन, सोभित सब ब्रजनारि॥
चौ०-शोभित सब ब्रज नारि हरी मुख लखि सब मनहिं सिहाईजी
उमगि मनो छवि सिंधु तरंगा आनँद उर न समाईजी ॥
देत चाव भरि जब झकझोरा अति मन हरष बढ़ाईजी ॥
होत अधिक छवि बढत निहोरा सो छवि बरनि न जाईजी॥१॥
ऊँचे सिलत द्रुमनसों जाई छुवत सुमन करलाईजी ॥
ज्यों ज्यों पींग बढत अति भारी त्यों त्यों प्रिया डराईजी ॥
राखि राखि कहति तब प्यारी सखियन सौंह दिवाईजी ॥
जब नाहिं सकत सँभारि तनहिं तब प्रीतमसों लपटाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तब हिंडोल राखति पकरि, हँसत परस्पर बाल ॥
पिय प्यारी अति रस भरे, करत चरित्र रसाल ॥
चौबोला–करत चरित्र रसाल एक उतरत एक चढत सुहावैजी ॥
सबके मनकी रुचि हरि राखत मधुरे वचन सुनावैजी ॥
कबहुँ अकेले झूलत मोहन सब युवती मिल गावैजी ॥
कबहूँ युवतिन देत चढ़ाई आपुन श्याम झुलावैजी ॥ १ ॥
कबहूं मुरली मन्द बजावै गावत कबहुँ विहारीजी ॥
बिच बिच देत कोकिला टेरी झुकिहि रहे घन भारीजी ॥
परत फुहारा मन्द श्रमहारी बहत पवन सुखकारीजी ॥
चातक पिय पिय रटत पुकारी राधा रटत मुरारीजी ॥ २ ॥
दोहा–ऐसे गोपिनसों हरी, करत केलि आनन्द ॥
हर्षि सुरन बरषत सुमन, कहि जै जै ब्रजचन्द ॥

चौ०-कहि जै जै ब्रजचन्द धन्य ब्रज सुरगण कहत सिहाईजी ॥
हमको द्रुम न किये विधि ब्रजमें यह सबके मनमाईजी ॥
भक्तन हित प्रभु अज सनातन ब्रह्म धरयो तनु आईजी ॥
करत ब्रजहिमें नित्य हरीसो कापै बरन्यो जाईजी ॥ १ ॥
नित लीला आनन्द ब्रजहिमें नित नव मंगल बधाईजी ॥
धनि धनि जिनके चितहि रहत नित राधा कुँवर कन्हाईजी ॥
हरिके चरित रसाल अनूपम जे सप्रेम सुन गाईजी ॥
विहारन तिनके निकट रहत हरि सदा भक्त सुखदाईजी ॥

अथ फागुनवर्णन लीला ।

दोहा-जै जै नित्यानन्द हरि, भक्तनके हितकार ॥
ब्रह्म रूप प्रभु अवतरे, नित नव करत विहार ॥
चौ०-नित नव करत विहार नित्य नव गिरिधर नंद कुमाराजी॥
नित्य रूप राधा ब्रज बामा नित नव रास विहाराजी ॥
नित्य मान खंडन व्यवहारा नित्य प्रेम अति भाराजी ॥
नित्यकुंज सुख नित्य हिंडोरा नित सुखसिंधु अपाराजी ॥ १ ॥
नित्य नवल हित हरि संग जोरी नित नव छवि दरशाईजी ॥
नित वृन्दावन घन सुखदाई रहत वसंत सदाईजी ॥
सदा सुमन नव पल्लव डारी मारुत मन्द सुहाईजी ॥
सदा मधुप मदमाते डोलैं कोकिल टेर सुनाईजी ॥ २ ॥
दोहा-सुनि सुनि नारि हृदय सुखी, मन अति हरष बढ़ाइ॥
बार बार कहि पिय सुनो, ऋतु वसंत अब आय ॥
चौ०-ऋतु वसंत अब आय पिया तुम सुनहु लाल गिरिधारीजी
फागुचरित तुम सँग सब खेलैं यह मन साध हमारीजी ॥
यों वनिता हरिसों हरषित कहि सुनो पिया सुखकारीजी ॥

देखहु वन शोभा अति सुन्दर आज बनी छबि भारीजी ॥ १ ॥
मानहुँ मदन बसंत मिले दोउ खेलत फाग सुहावैजी ॥
यह रस अधिक बन्यो मनमोहन लखि सबके मन भावैजी ॥
द्रुमन मध्य केसू तरु फूले अतिहि प्रकाश दिखावैजी ॥
मानहुँ निज निज सब मिल सुन्दर हरषि होलिकालावैजी॥२॥
दोहा–कुंज कुंज कोकिल सुखद, बोलति विमल सुप्यारि ॥
चढीं अटा गावति जनुः, निलज भईं ब्रजनारि ॥
चौ०-निलज भईं ब्रजनारि गारि जनु गृह पतियनको गावैजी ॥
जहां तहां करत कुलाहल भारी नाना खग सुख पावैजी ॥
मनहुं परस्पर नर अरु नारी गारी गाय सुनावैजी ॥
प्रफुलित लता विलोकत जिततित अलिसुमनन पर धावैजी॥१॥
मतवारे लपटे है धाई मानहु गणिका पाईजी ॥
पुहुप पराग अबीर बनाई लिये समीर सुहाईजी ॥
मनहुँ धाय अंगन परसाई करछोडत मन भाईजी ॥
नव पल्लव दल सुमन सुहाये विटपन छबि पर छाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जनु ठाढे रतिराज सँग, अति छबि कही न जाय ॥
बरन बरन बहु रँग भरे, फागुन साज सजाय ॥
चौबोला–फागुन साज सजाय दुंदुभी भवँर गुंज सोइ बाजैजी॥
रची मंडली मदन सुहावन जहँ तहँ छबि भरसाजैजी ॥
कहां लगि बरन बखानिये शोभा वृन्दा विपिन समाजैजी ॥
क्रीडत अति आनन्द भरे सब कान्ह तुम्हारे राजैजी ॥ १ ॥
रचहु फाग सुख अब नँदलाला सखियन विनय सुनाईजी ॥
सुनि गोपिनके वचन रसाला रची फाग सुखदाईजी ॥
सजहु समाज जाय तुम प्यारी विहँसित कह्यो कन्हाईजी ॥
हमहूं सखन संगलै आवैं रचहिं फाग ब्रजमाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मुदित भई ब्रजबाल सुनि, गये सदन नँदलाल ॥
सखा बुलाये श्याम तब, सुनि धाये सब ग्वाल ॥
चौबोला-सुनि धाये सब ग्वाल सखा तब सब मिल हरिपै आवैजी
आयो फागुन मास सुहावन सखन श्याम समुझावैजी ॥
भैया हो अब खेलो होरी ब्रजमें फाग रचावैजी ॥
यह सुनि ग्वाल बाल अनुरागे होरी साज सजावैजी ॥ १ ॥
कंचन कलस अनेक सुहाये केसर रंग भरायेजी ॥
अतर अरगजा विविध विधाना[1] सहित सुगंध सजायेजी ॥
पीत अरुण बर वसन बनाये नवसुगंध मन भायेजी ॥
अंग अंग भूषण अति सुन्दर विविध नगन छवि छायेजी ॥ २ ॥
दोहा–नैनसैन शोभा हरण, बनी मंडली ग्वाल ॥
उसकाये बाहैं झगा, फेंटन भरे गुलाल ॥
चौबोला–फेंटन भरे गुलाल पान मुख कर कंचन पिचकारीजी॥
फेंटा पीत श्याम शिर सोहै तुर्राकी छवि न्यारीजी ॥
तापर मोरचन्द्रकाराजे कोटि चन्द्र बलिहारीजी ॥
केसर खौर महा शुभकारी बीच तिलक छवि भारीजी ॥ १ ॥
भौंहैं कुटिल[2] नैन रतनारे[3] कुंडल झलक सुहायेजी ॥
चारु[4]कपोल मनोहर नासा मंद हँसनि छवि छायेजी ॥
अधर अरुण चिबुक छवि सीवा कंठकपोत[5] लजायेजी ॥
झगाझीन रंगपीत सुहाये अति छवि अँग लपटायेजी ॥ २ ॥
दोहा–घेर दार संजाफ छवि, जरी किनार लगाइ ॥
झमकिरही छवि उमँगि भरि, सो छवि कही नजाइ ॥
चौबोला-सो छवि कही न जाइ चरण शुभ पनहीं अधिक सुहाईजी
कंचन मणिमय मोहन मनकी करचूडा छवि छाईजी ॥

---

१ प्रकार। २ टेढी। ३ अरुण। ४ सुंदर। ५ कबूतर।

लसत अँगुरियन मांझ अँगूठी नाना रत्न जड़ाईजी ॥
बाहु बिजौटा जटित मणिनके सो छबि अति अधिकाईजी ॥१॥
कटि परपट पीरो कसिलीनो कनक किनारि लगाईजी ॥
तापरखोसे सुभग मुरलिया मुक्तहार उरमाईजी ॥
माल गुलाब सुमनकी सुन्दर तापर ललित सुहाईजी ॥
चितवन हँसन रसाल सुहावन बन्यो छैल कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बन्यो रँगीलो यूथ सब, मधिनायक नँदलाल ॥
खेलत होरी श्याम ब्रज, उड़त अबीर गुलाल ॥

चौबोला—उड़त अबीर गुलाल ताल अरु मृदंग बजत सुहावैजी
डफ मुहचंग बीन सहनाई नाना गतिन बजावैजी ॥
और नगारनकी कल जोरी मुरली टेर सुनावैजी ॥
कोउ नाचे कोउ भाव बतावै सब मिल होरी गावैजी ॥ १ ॥
ब्रज वीथिन वीथिन सब डोले नर नारी कोउ पावैजी ॥
हो हो होरी मुख ते बोले तिनको गारी गावैजी ॥
भरि भरि पिचकारी रँग मारे अबिर गुलाल उड़ावैजी ॥
बोलत होरी वचन सुहावै करत सोई मन भावैजी ॥ २ ॥

दोहा—गोरसके माते फिरैं, घरन घरन विचजाय ॥
जो कोउ भाजिरहत घरहि, ताहि गहत सब धाय ॥

चौबोला—ताहि गहत सबधाय अटन चढि देखि रहीं ब्रजनारीजी
छज्जनते छूटत पिचकारी बरसतरंग अपारीजी ॥
गावत होरी गीत परस्पर देत दिवावत गारीजी ॥
भरि भरि अविर गुलालन झोरी डारति सब मिल ग्वारीजी॥ १ ॥
इत हरिके सब सखा संगके उतते मिलि ब्रजनारीजी ॥
मुदित गुलाल उड़ावहिं दुहुँदिश मारत रंग पिचकारीजी ॥
होत कुलाहल आनँद अति छबि रंगे महल अटारीजी ॥

अबिर गुलाल कुंकुमाकीचहि ब्रज वीथिन भयो भारीजी ॥२॥
दोहा–करत फाग कौतुक हरी, सोहत सँग सब ग्वाल ॥
भीज रहे केसर रँगन नख शिख भरे गुलाल ॥
चौ०–नख शिख भरे गुलाल आनंद मन मुदित सखा सब गावैजी
गुणी जननके बाल नचावै वरषानेको जावैजी ॥
यह सुधि कुँवरि राधिका पाई सखियन सबन बुलावैजी ॥
नवसत साज सजा सब आतुर सुनत तुरत चलि आवैजी ॥१॥
बरन बरन बर वसन सुहाये भाल बिंदुकारोरीजी ॥
मुखतमोल सुखकी छबि भारी होरी सुनि सब दोरीजी ॥
आई प्रिया निकट सब गोपी हँसि हँसि कहत किशोरीजी ॥
चलहु श्याम सँग खेलहिं होरी सुनत मगन भई गोरीजी ॥२॥
दोहा–ललितादिक सब नागरी, सब मिल सज्यो समाज ॥
तिन में श्रीकीरति कुँवरि, सबहिनकी शिरताज ॥
चौ०-सबहिनकी शिरताज रूपकी आगर गुणन सुहाईजी ॥
राजत भरी हुलास नागरी मन मोहन मन भाईजी ॥
रही छाय छबि पुंज निकाई नख शिख सुन्दरताईजी ॥
भूषण जाल लाल नगकेरे अंग अंग छबि छाईजी ॥ १ ॥
मुख छबि बरन सकै सो कोहै जाहि लखत बनवारीजी ॥
लसति नवलतन सुन्दर सारी केसरिया जरतारीजी ॥
गुल गचको लहँगा चटकीलो घेरदार छबि भारीजी ॥
कंकण किंकिणि शोभित सुन्दर नूपुरकी छबि न्यारीजी ॥ २॥
दोहा–राजति अति आनँद भरी, होरी साज सजाय ॥
रंग गुलाल सब सँग लिये, युवतिन यूथ बनाय ॥
चौबोला–युवतिन यूथ बनाये मृगमद केसर मेल मिलाईजी ॥
मथि मथि लीने कलस भराई हाथन में लै आईजी ॥

चली श्याम घन पै चपलासी गई जहां सुखदाईजी ॥
उतते संग सखा सब लीने आये कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
दुहुँ दिश गोल भयो रुपि ठाढ़ो लखि हरषे नँदलालेजी ॥
भरि भरि पिचकारी अति आनँद धाये सब मिल ग्वालेजी ॥
नवलासी लैलै करमाई सिमटि चलीं सब वालेजी ॥
मारत रंग लैलै पिचकारी डारत अबिर गुलालेजी ॥ २ ॥

दोहा—करत न कोऊ कानि मन, अबिर गुलाल उड़ाय ॥
मन भाई मुखते कहत, होरी वचन सुनाय ॥

चौबोला—होरी वचन सुनाय केसर रंग लैलै कर पिचकारीजी ॥
तकि तकि मारत पिय अरु प्यारी अति मन हरषित भारीजी
दुहुँ दिश चपल झराझर झेरी उडत गुलाल अपारीजी ॥
अबिर गुलाल घटा घन छाई खेलत फाग मुरारीजी ॥ १ ॥
लगि लगि रहे चीर अंगनसों पहिचाने नहिं जावेजी ॥
रही गुलाल झलकि छबि छाई सो छबि कहत न आवेजी ॥
शशि सरोज दोऊ सकुचावे कवि उपमा कहा गावेजी ॥
लैलै नाम सुनावत गारी सुनि दुहुँ दिश सुख पावेजी ॥ २ ॥

दोहा—ताल पखावज ढोल तुरि, और बजावत बीन ॥
कहि कहि होरी मारहीं, ग्वालिन परम प्रवीन ॥

चौबोला-ग्वालिन परम प्रवीन नवल सब चपलासी ब्रजनारीजी
एक अबीर डारि मुख भागे इक मारति पिचकारीजी ॥
मच्यो खेल रंगरस अतिभारी कहति सखिनसों प्यारीजी ॥
छल बलकर कछु भेदहिं आली पकरहु अब बनवारीजी ॥१॥
आंख आंज मुख मांडहिं हरिको करि छांडो मन मानीजी ॥
ऐसे ये नहिं मानि हैं मोहन हैं लंगर सुखदानीजी ॥
लेहिं दाँव आपनों सो अब सब वसन चुराये आनीजी ॥

तब इक तिय हलधर बपुकाछो परत नहीं पैचानीजी ॥ २ ॥
दोहा–निकसी जित ठाढे हरी, ओढिनीलपट बाम ॥
जानि भ्रात बलरामको, चलेलेन तब श्याम ॥
चौ०-चलेलेन तब श्याम गये जहाँ ताके ढिंग नँदलालाजी ॥
धरे धाय औचक तिन तबही लीने अंकम मालाजी ॥
आईं धाय और सब नारी पकरि लिये गोपालाजी ॥
ढीठो बहुत दई तुम लाला कहति सकल ब्रजबालाजी ॥ १ ॥
सो फल तुम्हें आज सब देहैं कहत श्याम सों ग्वारीजी ॥
ठाढे दूर कहत सब ग्वाला पकरे गये मुरारीजी ॥
पिय मुख निरखि सकुच अति वाढ़ी हँसति राधिकाप्यारीजी ॥
किनहूँ लियो पीत पटकाहू काजर दृगन सुधारीजी ॥ २ ॥
दोहा–काहुन वेनी शीश गुंथि, मुख गुलाल लपटाय ॥
कोऊ लावति अरगजा, कोऊ रँग ढरकाय ॥
चौबोला–कोऊ रँग ढरकाय गयेहरि तबही छूटि पराईजी ॥
आय मिले निज सखनमझारी रही नारि पछिताईजी ॥
करमींजत पछितात कहति सब निज निज वचन सुनाईजी ॥
भली बनीही घात आज यह दाँवलेन नहिं पाईजी ॥ १ ॥
गये आजु तुम भजि नँदलाला कालिह भाजि नहिं पावोजी ॥
कर राखी जैसी तुम हमसों सो हमलैहैं दावोजी ॥
पीतांबर अपनो यह लीजै कैकोउ ग्वाल पठावोजी ॥
अब हम नहीं पकरि हैं काऊ कै आपहि लै जावोजी ॥ २ ॥
दोहा–हँसत सखा दैतारि सब, वेनी छोरत जाय ॥
कहत जाहु अब श्यामफिर, पीतांबरलै आय ॥
चौबोला–पीतांबर लै आय बहुरि अब जावहु कुँवर कन्हाईजी ॥
पीतांबर गहनेदे छूटे भाजतही बन आईजी ॥

तबहिं कह्यो हरि नंददुहाई अबहीं लेत मँगाईजी ॥
तब इक सखा भेष युवती करि दीनो श्याम पठाईजी ॥ १ ॥
गयो सुमिलि युवतिनमें जाई हँसतजाय तिनमांईजी ॥
कहत देउ पट धरें दुराई अबनहिं पावें कन्हाईजी ॥
अब यह पट हरिको जबदेहैं अपनों दाँव बनाईजी ॥
ऐसे कहि पटलियो सखिन सों चल्यो भाजं हरि पाईजी ॥ २ ॥

दोहा–फेरयो करसों श्याम लै, चकित भईं लखिताइ ॥
भईं चकित ब्रजबाल सब, लखि हरिकी चतुराइ ॥

चौ०–लखिहरिकी चतुराइ सखी सब आपुसमोबतराईजी ॥
भली बनी ही घात आज अब धिरवत वचन सुनाईजी ॥
गये आज वचकरि चतुराई अब नहिं बचहु कन्हाईजी ॥
अबतो लाग लगी है हमसों जबलगि दाँव न पाईजी ॥ १ ॥
तब कहियो हमसों ब्रजनारी छांड़हिं तुमहिं नचाईजी ॥
कहत श्याम अब भये सयाने तुमते नाहिं डराईजी ॥
जान लियो मैं कपट तिहारो हमरो कहा कर पाईजी ॥
अबहीं ग्वालन देहुँ लगाई छांडहुँ विनय कराईजी ॥ २ ॥

दोहा–जिनकी सखी कहात तुम, तिनकी कानि रखात ॥
यह सुनि सब सखियन कह्यो, कहा कही हरिबात ॥

चौबोला–कहा कही हरिबात तुम्हें अब नंद कि सोंह कन्हाईजी
जो नहिं विनय करावहु सुनि हरि लीने सखा बुलाईजी ॥
उत सब युवति होइ इकठोरी लैलैकर रँग धाईजी ॥
दिये सखनको मार हटाई भाज चले सुखदाईजी ॥ १ ॥
भाजे भाजे कहत सखी सब तारी दे ब्रजबालैजी ॥
जो तुम जाये नन्द महरके ठाढे रहो गोपालैजी ॥

---

१ युबावस्थाको प्राप्त–तिय। २ उत्पन्न किये।

फिरे वहुरि घनश्याम सखिन तन बोल लिये सब ग्वालैजी ॥
सिथल करी ब्रज बाम श्याम तकि मारत अबिर गुलालैजी॥२॥

लावनी।

खेलत हैं दोऊ फाग श्याम अरु प्यारी ॥
सँगलीने गोपी ग्वाल प्रेम उर भारी ॥

टेक–दोउ भरे परम अनुराग कबहुँ कछु गावै ॥
कबहूं हरि मुखरस वादहि वचन सुनावै ॥
कबहूं ले नानारंग अंग बरषावै ॥
मारत है अबिरहि ताकि गुलाल उड़ावे ॥
दोउ रहे परस्पर अति आनंद निहारी ॥सँगलीने०॥१॥
नभ देखि रहे सुर सकल मगन सुख पायो ॥
जय जय कहि बरषित सुमन सबन यश गायो ॥
ललिता आई सब बीच यों वचन सुनायो ॥
आये तुम औचक श्याम जान नहिं पायो ॥
अब भई सांझ यह आज अहो बनवारी ॥सँगलीने०॥२॥
ऐहैं सजिकै नँद गांव कालिह वहां प्यारी ॥
देखेंगी तुम मन सादहि सुनो हमारी ॥
यह वचन सुनतही भये मगन गिरिधारी ॥
बदी अवध खेलकी प्रात जान सुखकारी ॥
चले सदन सखा ले संगहि श्याम मुरारी॥संगलीने०॥३॥
घर हँसत खेलत संग सखा आये घनश्यामा ॥
चली हँसत प्रिया संग सखी गई निजधामा ॥
सब श्माम विलासहि आनत उर ब्रज बामा ॥
तजि लोक लाज मन वसे कृष्ण अभिरामा ॥

सुख पावत मन अति गावत दास विहारी ॥
सँग लीने गोपी ग्वाल प्रेम उर भारी ॥ ४ ॥
दोहा–कुँवरि राधिका लाड़िली, उठी प्रात सुखपाय ॥
लीनी सखी बुलाय सब, तिन्हें कहति समुझाय॥
चौ०–तिन्हें कहति समुझाय किशोरी हँसिहँसि वचन सुनावैजी
नन्द गाँव चलि खेलहिं होरी यह विचार ठहरावैजी ॥
मिल मोहन सों यह सुखलीजै सुनत सकल हरषावैजी ॥
फगवा नन्द महर सों ल्यावै चलहु वेगि नँद गावैजी ॥ १ ॥
सामा सकल खेलकी लीनी रंग गुलाल भरावैजी ॥
भांति अनेक अरगजा कीने विविध सुगंध मिलावैजी ॥
भरि भरि भाजन कलस सुहाये अमित कहत नहिं आवैजी ॥
ले काँवरन अनेक सजाये नन्द गाँव सब जावैजी ॥ २ ॥
दोहा–सजि सजि सब नव नागरी, जाति राधिका संग ॥
रूप राशि गुण आगरी, अति छबि गोरे अंग ॥
चौबोला–अति छबि गोरे अंग कुंकुमा उबटि कनकतन नारीजी
एक वेश सुन्दर सब राजे निरखि मदन तिय हारीजी ॥
नवसत साज शृंगार बनाये अंग अंग सब ग्वारीजी ॥
चंद्रावलि ललितादिक सारी अमित गोप सुकुमारीजी ॥ १ ॥
प्यारी सकल श्याम सुन्दरकी कोकविवरन बतावैजी ॥
उपमाको त्रिभुवन न कोई शोभा कहत न आवैजी ॥
सुमन सुगंधन गूथी वेणी लटकत अति छबि छावैजी ॥
मोतिन मांग बनी अति नीकी केसर आड़ सुहावैजी ॥ २ ॥
दोहा–कुटिल भौंह अलके सुभग, मनमोहन मन भाइ ॥
खंजन नैनन लखि मृग लजे, अंजन रेख सुहाइ ॥
चौ०-अंजन रेख सुहाइ श्रवण विच तरवन रवि छबि पाईजी ॥

नकवेसर लटकन नग मोती शोभा अति दरशाईजी ॥
दर्शन कुंद विम्बा अधरन छवि चिबुक चारु सुहाईजी ॥
कंठ कपोत हार मोतिनके उर बिच अति छवि छाईजी ॥ १ ॥
जनु युग गिरि विच सुर सरिधारा कुच चकवा युग आयेजी ॥
बैठे मानहुँ दुहुँतट शोभित शशि मुख लखत लुभायेजी ॥
कर कंकण चूरी गज दंती मणिन जटित छवि छायेजी ॥
नाभि हृदय छवि कहा कवि वरनें कटि मृगराज लजायेजी ॥२॥

दोहा—चरणन नूपुर छवि बनी, अरु बिछियन झनकारि ॥
चाल मराल सुहावही, चलीं सकल ब्रजनारि ॥

चौ०-चली सकल ब्रजनारि कुसुम रँग लहँगापीत रँग सारीजी ॥
चमकत चहुँ दिशि लाल किनारी अति शोभा शुभ कारीजी ॥
नख शिख छवि शोभा अति सुन्दर बनी छवीली नारीजी ॥
राजत अति अभिराम तिनहिंमें कुँवरि राधिका प्यारीजी॥१॥
छड़ी सुमन पीरेकी सुन्दर सबके हाथ सुहावेजी ॥
होरी हरिके संग खेलनको नन्द गांव सब जावेजी ॥
प्रेम प्रीतिके रस वश प्यारी नन्द नँदन मन भावेजी ॥
गावहिं कोकिल कंठ निहोरी बाजे मधुर बजावेजी ॥ २ ॥

दोहा—करत कौतुहल केलि अति, अबिर गुलाल उड़ाइ ॥
घेरि लियो मिल नन्द गृह, बसत जहाँ सुखदाइ ॥

चौ०—बसत जहाँ सुखदाइ ठडी तहाँ रूप लतासी नारीजी ॥
गावत फाग नन्दकी पौरी सुनि निकसे गिरिधारीजी ॥
हलधर ग्वाल गुपाल बुलाये सखिन सहित उत प्यारीजी ॥
खेलत फाग परस्पर दुहुँ दिश मच्यो खेल अति भारीजी ॥
मृगमद कुंकम चन्दन घोरे लैलै रंग सब धावेजी ॥

---

१ दांत। २ दो। ३ कस्तूरी।

गोपी ग्वाल भरे झकझोरी अबिर गुलाल उड़ावेजी ॥
उड़त गुलाल घटा घन छाई केसर कीच सुहावेजी ॥
गान सुनत गुण गंधर्व लाजे बाजे मधुर बजावेजी ॥ २ ॥

दोहा—हो हो होरी कहत सब, भरे परम आनंद ॥
सखिन संग उत लाड़िली, इते सखा नँदनंद ॥

चौबोला—इते सखा नँननद श्यामको पकरनको सब दौरीजी ॥
गहन चहतही श्यामसुन्दरको पकरि लिये बलि जोरीजी ॥
अति निसंक सब ब्रजकी गोरी तामें अवसर होरीजी ॥
भरि भरि केसर रंग कमोरी लै हलधर शिर ढोरीजी ॥ १ ॥
ललिता गहि दृग काजरलायो अबिर गुलाल उड़ायोजी ॥
लेहु रोहिणी मात बुलाई ऐसे वचन सुनायोजी ॥
हास विलास विविध विध गायो बलि कहुँ जान न पायोजी ॥
छांड़ दिये बलराम सखिन तब ले फगवा मन भायोजी ॥ २ ॥

दोहा—हँसत श्याम बलराम लखि, आये आंख अँजाय ॥
हरि बलि सों ऐसे कहत, युवतिन पकरे धाय ॥

चौबोला—युवतिन पकरे धाय सिमिटसब सखाछुँडावनआयेजी॥
युवतिन सों छूटन नाहिं पाये सबको मार हटायेजी ॥
श्यामहिंजीत यूथ में ल्याई भये सबन मनभायेजी ॥
रस लपटन नँद नन्द कन्हाई आपुन आय गहायेजी ॥ १ ॥
हँसत हँसत ब्रजनारि श्याम को प्यारीके ढिंग लाईजी ॥
कहिये श्याम बनी अब कैसी ढीठो बहुत मचाईजी ॥
वसन हरे तब आप हमारे यमुनाके तट आईजी ॥
लेहैं दाँव आपनो सो अब हमहूँ वसन छुडाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कान्ह कह्यो करिहो कहा, कहा कहाति डरपाय ॥
सुनत वचन मुख श्यामके, ग्वालिन रही लुभाय ॥

चौबोला–ग्वालिन रही लुभाय श्यामको लखतिरूपसुखपाईजी
मुरली छोर बजावन लागी एक रंग भरलाईजी ॥
एकन लियो पीत पट छोरी एक कहति कछु आईजी ॥
हरिके हाथ गहे चन्द्रावलि काजर दियो लगाईजी ॥ १ ॥
एकचिबुक गहि वदन उठावै एक गुलालउड़ावैजी ॥
घेर रहीं हरिको सब बाला कहति सोई मनभावैजी ॥
काहू वेनी गूंथ सँवारी मोतिन माँग भरावैजी ॥
कोउ पहरावति लहँगासारी अँगिया सुभग सजावैजी ॥ २ ॥

दोहा–निरखि निरखि हरिको प्रिया, मनहीं मन मुसकाइ ॥
वसन अभूषण सजिरहे, पहिंचाने नहिं जाइ ॥

चौबो०–पहिंचाने नहिं जाइ श्यामको प्यारीके ढिग ल्याईजी ॥
निरखि वदन प्यारी हँसिदीनी श्याम हँसे सकुचाईजी ॥
गहि प्यारी निज पाणि हरीको बीरादियो खवाईजी ॥
सखियां करति किलोल दुहुँनकी गांठि जोर दइ आईजी ॥ १ ॥
युग युग रहो अडोल ब्रजहिमें यह जोरी शुभकारीजी ॥
लीने मध्य श्याम बनवारी मगन भई ब्रजनारीजी ॥
पिय प्यारी मुखकी छबि जोहै अरस परस बलिहारीजी ॥
त्रिभुवन छबि पटतर नाहिं कोऊ श्यामा श्याम मुरारीजी ॥२॥

दोहा–नैनन सैन मिलाय कोउ, युगल निरख सुखपाय ॥
गावति गारी महरको, डफ करताल बजाय ॥

चौबोला-डफ करताल बजाय ग्वाल कोउ निकटनआवनपाईजी
भरि भरि मूठी गुलाल उड़ावै रही घटा छबिछाईजी ॥
फूली मानहुँ सांझ सुहाई अति छबि वरनि नजाईजी ॥
तब ललिताको यशुमति माई भीतर बोल पठाईजी ॥ १ ॥
हँसिके महरि बहुत सन्मानी विनती करि समुझाईजी ॥

आजभई भोजनकी विरियां लखहु राधिका धांईजी ॥
वहुरि खेलियो होत सकारे खान पान करो आईजी ॥
ल्यावहु अब लाडिली लिवाई कीरति सौंह दिवाईजी ॥ २ ॥

दोहा—तब यशुमति पै राधिकहिं, ललिता चली लिवाय ॥
सकुच जानि मन श्याम अति, छूटे हाहाखाय ॥

चौबोला—छूटे हाहाखाय लखत सब ग्वाल सखा समुदाईजी ॥
बन्यो आज मोहन अतिसुन्दर बलिको लियो बुलाईजी ॥
कहत सखा सब दे दे सौंहें नँद पै चलहु कन्हाईजी ॥
चले भुजा गहि तहाँ लिवाई छबि वरणी नहिं जाईजी ॥ १ ॥
उत युवतिनके चितहि चुरावैं चले श्याम सुखदाईजी ॥
अति छवि देखि हँसे नँदराई सुनि जननी तहाँ आईजी ॥
निरखि हरषि लीने उरलाई आनँद उर न समाईजी ॥
किन यह कीनों हाल कन्हाई पुनि पुनि लेत बलाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहति यशोमति श्याम सों, ये ऐसी ब्रजनारि ॥
सकुच हँसे नँदलाल तब, दियो सो भेषउतारि ॥

चौबोला-दियो सो भेष उतारि मुकुट शिर कटि पटपीतसुहाईजी
युवतिन सहित कुँवारि श्रीराधा नंद महर गृह आईजी ॥
भूषण बसन नवीन मँगाये दिये बसन पहराईजी ॥
अति सनेह वृषभानु दुलारी अपने हाथ सजाईजी ॥ १ ॥
वारति राई नोन यशोमति निरखत रूप सिहानीजी ॥
विविध भांति मेवा अति सुन्दर और मिठाई आनीजी ॥
सादर सबकी गोद भराये हरषि नन्दकी रानीजी ॥
रुचि भोजन करवाय सबनको अति आदर सनमानीजी ॥ २ ॥

दोहा—होरीको आनंद अति, रह्यो नंद गृह छाय ॥
फगुवा कहो सो दीजिये, कहति यशोमति माय ॥

चौबोला-कहति यशोमति माय सुनतही सखियन कह्यो सुनाईजी
फगुवामें मोहन हम ले हैं देखे बिन न सुहाईजी ॥
चिरजीवहु बलराम कन्हाई बढो वंश नँदराईजी ॥
यह अशीश सब हों मिल दीजै जिनते सुख ब्रज माईजी॥ १ ॥
अति आनंद मगन ब्रजवासी नाना विधि सुख पायेजी ॥
अष्ट सिद्धि नवनिध सबदासी ब्रज घर घर छबि छायेजी ॥
गोपी ग्वाल भये अनुकूला यमुना न्हान सिधायेजी ॥
जहां बरविटप विविध रँग फूले गुंजत भँवर सुहायेजी ॥ २ ॥

दोहा—फूल डोल हरि रचितहाँ, देत सबंन सुखकान्ह ॥
गावत गोपी ग्वाल सब, लगे यमुन जल न्हान ॥

चौ॰ -लगे यमुन जल न्हान निरखि सुर सुमन माल बरषायेजी॥
ब्रजजन पूरण काम कन्हाई करत खेल मन भायेजी ॥
लूट सुख रस फागको सब निज निज सदन सिधायेजी ॥
बलि मोहन सुन्दर छबि छाये सखन सहित घर आयेजी ॥ १ ॥
कियो जु फाग विहार हरी सो सादर पार न पावैजी ॥
लीला सिंधु अपार मनोहर विहारन जन किमि गावैजी ॥
चरित ललित सुन्दर सुखदाई हरिजनके मन भावैजी ॥
गावत सुनत सुजान हरीयश विहारन जन बलि जावैजी ॥ २ ॥

अथ सुदर्शनशापमोचन लीला ॥

दोहा—ब्रह्म पूरणानंद हरि, कीने विविध विहार ॥
शिव विधि नारद शारदादि,लहत न कोऊ पार ॥

चौबोला—लहत न कोऊ पार किये हरि रहस्य चरित सुखदाईजी
ब्रज युवतिन मिल रस शृंगारा सो छबि वरनि न जाईजी ॥
साध नहीं काहू मन राखी करी सबन मन भाईजी ॥

ब्रजविलास रसकेलि बड़ाई विविध मुनीजन गाईजी ॥ १ ॥
जो कछु करहिं सोई सब लायक विहारन श्रीबनवारीजी ॥
सखा संग सबको सुखदीनो करी सुखद ब्रजनारीजी ॥
महर नंद पितु मात कहाये तिन हित नर तनु धारीजी ॥
बालकेलि रस करि विधिनाना दियो वसन सुखकारीजी ॥ २ ॥

दोहा–ब्रजजन राखे धार गिरि, मुदित भये सब ग्वाल ॥
कीने चरित अनेक ब्रज, भक्तन हित नँदलाल ॥

चौबोला–भक्तन हित नँदलाल लेतहैं युग युग प्रभु अवताराजी॥
असुर मार थापत सुरन हरि हरत भूमि भव भाराजी ॥
अति पुनीत पावन करन यश गावत संत अपाराजी ॥
करता हरता आप हरीसो पूरि रह्यो संसाराजी ॥ १ ॥
नंद हृदय यह मति उपजाई भक्तनके हितकारीजी ॥
चलिये आज सरस्वति तीरा पूजहिं शिव तप धारीजी ॥
लिये संग बलि मोहन दोऊ गोपी ग्वाल अपारीजी ॥
करत कुलाहल आनँद भारी पहुँचे तहाँ नर नारीजी ॥ २ ॥

दोहा–सरित पुनीत निहारि सब, कियो तहां स्नान ॥
अति आनन्द मगन मन, महिदेवन दियो दान ॥

चौबोला–महिदेवन दियो दान देखि देवस्थल अति सुखदाईजी
शारद पूजे शंभु भवानी अति प्रसन्न नँदराईजी ॥
पूजा करत सांझ है आई पूजत लोग लुगाईजी ॥
खान पान करि सहित हुलासा सोये सब सुख पाईजी ॥ १ ॥
सोये हरि हलधर सुखराशी सोवत सकल सुहायाजी ॥
आधी निशि अजगर इक आयो नंद चरण लपटायाजी ॥
उठे पुकार चौंक नँदराई सुनि ब्रजबासी धायाजी ॥
अजगर देखि डरे सब कोऊ छूटत नाहिं छुड़ायाजी ॥ २ ॥

दोहा–हारे यत्न अनेक करि, सर्प न छोड़त पाय ॥
कृष्ण कृष्ण करि नंद तब, गुहराये अकुलाय ॥
चौबोला–गुहराये अकुलाय नंद तब अति व्याकुल भय पाईजी॥
तब व्रजबासी तुरतहि धाये ल्याये श्याम जगाईजी ॥
कह्यो महा इक व्याल नंदकें रह्यो चरण लपटाईजी ॥
सुनत उठे आतुर गोपाला लख्यो निकट सो जाईजी ॥ १ ॥
परस्यो ताहि कमल पद पावन भक्तनके हितकारीजी ॥
छुवत चरण तब लई जँभाई दिव्य देह तिन धारीजी ॥
लाग्यो हाथ जोर गुण गावन जै जै जन दुख हारीजी ॥
जै जै जै व्रज गोप विहारी सुन्दर श्याम मुरारीजी ॥ २ ॥
दोहा–ऋषी अंगिरा शाप मोहिं, दियो सो बड़े दयाल ॥
अती अनुग्रह उन करी, कीनों मोहिं निहाल ॥
चौबोला–कीनों मोहिं निहाल ताहिते हरिको दरशन पायोजी॥
जन्म जन्मको पाप नशायो प्रभु पदतन परसायोजी ॥
ऐसे विनती प्रभुहि सुनाई आयसु पा शिरनायोजी ॥
बहुरि नंदको शीश नवायो लखि नँद अचरज आयोजी ॥ १ ॥
तुमतो दिव्य रूप कोउ देवा पूँछो नँद तबताईजी ॥
सर्व शरीर धरचो क्यों आई सो सब कहो बुझाईजी ॥
नंद वचन सुन मन सुखपायो तब निज कथा सुनाईजी ॥
सुन्दर विद्याधर जु रूपमें मोते अरु कोउ नाईजी ॥ २ ॥
दोहा–होय सहायक श्यामको, होइ सुदर्शननाम ॥
गयो धरें अभिमान मन, इक दिन ऋषिके धाम ॥
चौबोला–इक दिन ऋषिके धाम गयो मैं रूप द्रव्य गर्वाईजी ॥
कियो न तिन्हें प्रणाम मूढमति ऐसी मोमन भाईजी ॥
जानि मोहिं जड अति अभिमानी ऋषिके मन यह आईजी ॥

जाय होउ शठ अजगर देहा दियो शाप ऋषिराईजी ॥ १ ॥
अजगर भयो तुरत मैं तबहीं देखि मोहि ऋषि राईजी ॥
भये बहुरि ऋषि राय दयाला तब यह कह्यो सुनाईजी ॥
कृष्ण दरशहैहैं जब तोईं परसि चरण सुखदाईजी ॥
बहुरि आपनो तन तब पैहै सो परस्यो पद आईजी ॥ २ ॥
दोहा–तेपदरज पावन करन, शिव ब्रह्मा नहिं पाइ ॥
जेरज मुनी प्रतापते, मेरे तन परसाइ ॥
चौबोला–मेरे तन परसाइ कहांलगि ऋषिकी करों बड़ाईजी ॥
संत समान नकोउ उपकारी दीनदयालु सदाईजी ॥
ऐसे विद्याधर सुखपाई अपनी कथा सुनाईजी ॥
बहुरि काल चरणन शिरनाई गयो लोक हरषाईजी ॥ १ ॥
नंदादिक आनंद भरे सब महिमा देखि अपारीजी ॥
कहत परस्पर कृष्ण गुणन तब गई बीत निशि सारीजी ॥
प्रात होत आनंद मगन सब घर आये नरनारीजी ॥
संग श्याम बलराम सुहाये जन विहारन बलिहारीजी ॥ २ ॥

अथ शंखचूडबध लीला ।

दोहा–ग्वाले बाल बलराम सँग, इक दिन कुँवर कन्हाइ ॥
दिवश अंतनिशिके समय, उडुगणकी छबि छाइ ॥
चौबोला-उडुगणकी छबि छाइप्रफुल्लित मालतिपरमसुहाईजी ॥
कुमुद सुगंध पवन मन मोहै भँवर गुंजमन भाईजी ॥
चले तहाँ देखन बन शोभा सो छबि कहत न आईजी ॥
ग्वालन मिल गावत दोउ भाई कबहुँक वेणु बजाईजी ॥ १ ॥
चली सुनत बंसीकी टेरैं गोपी गण बनमाईजी ॥
मगन भई लखि छबि अधिकाई तन मन बसे कन्हाईजी ॥

पहुँची श्री वृंदावन जाई राजत जहँ सुखदाईजी ॥
गोपी ग्वाल साथ सुखकारी विहरत दोऊ भाईजी ॥ २ ॥
दोहा–रूपराशि छबिनिधि दोऊ, सुन्दर सुभग शरीर ॥
मृदु मुसकन मोहत मनहिं, बैठे यमुना तीर ॥
चौबोला–बैठे यमुना तीर सन्मुख गोपीजन समुदाईजी ॥
पाछे सखा वृंद सब सोहैं सो छबि परम सुहाईजी ॥
करत गान मिलि मुदित सकल जन भरे प्रेमरस माईजी ॥
भये मगन उनमत्त जिमी सब रही देह सुधि नाईजी ॥ १ ॥
बाजत ताल मृदंग बीन अरु मुरली मधुर बजावैजी ॥
छाय रह्यो रस रंग परस्पर तान तरंग उड़ावैजी ॥
प्रेम मगन सब घोस कुमारी हरि छबि लखि सुख पावैजी ॥
को हम कहां नहीं कछु जाने हरिके रूप लुभावैजी ॥ २ ॥
दोहा–श्रवणन मुरली ध्वनि बसी, चंद्र वदन ब्रजनारि ॥
गृह बनकी कछु सुधि नहीं, हरि मुखरही निहारि ॥
चौबो०-हरि मुख रही निहारि सखिनके प्रभु स्वरूप मन भायोजी
तहां यक्ष औचक इक आयो शंखचूड तिहि गायोजी ॥
सो वह धनद अग्रुन अभिमानी प्रभु प्रताप नहिं पायोजी ॥
देखतही बलराम कन्हाई सब गोपिन अगुवायोजी ॥ १ ॥
उत्तर दिशिले चलो सखिनको घेरत ग्वाल जिमि गाईजी ॥
तब गोपिन हरि देखे नाईं भयो चेत तन माईजी ॥
कहां जात हम काके साथा भईं विकल अकुलाईजी ॥
कृष्ण कृष्ण तब टेरन लागीं महा दुखित भय पाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनत श्रवण आरत वचन, उठि आतुर दोउ भाइ ॥
अति समीप गोपीनके, तुरताहि पहुँचे जाइ ॥
चौबोला–तुरताहि पहुँचे जाइ डरोमति तिनसों कहत कन्हाईजी

मैं आयो हों धाय मारयाहि अबहीं लेत छुड़ाईजी ॥
शंखचूड फिरके तब देख्यो लखे काल दोउ भाईजी ॥
युवतिन छांड जीवले भाग्यो त्रसित भयो मन माईजी ॥ १ ॥
गोपिन पास राखि बलभाई आगे चले कन्हाईजी ॥
अतिही निकट धाय कै दीनो मुक्काशीश चलाईजी ॥
भयो प्राण बिन अधम अन्याई उत्तम गति तिन पाईजी ॥
हुती एक मणि ताके शीशहि सो ल्याये सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–दीनी सो बलरामको, देख मगन ब्रजनार ॥
गोपी ग्वालन सहित दोउ, कीनों बहुरि विहार ॥

चौबोला–कीनो बहुरि विहार दुःख सो दीनों तुरत मिटाईजी ॥
परमानन्द सबन उपजायो अति हरषित मन माईजी ॥
करत विविध विधि हास विलासा गृह आये सुख पाईजी ॥
नव किसोर सुन्दर सुखदाई ब्रज जीवन दोउ भाईजी ॥ १ ॥
देखि देखि हरिके चरितनको परमपुनीत उदारीजी ॥
निशि दिन सब आनंद मगन मन ब्रजवासी नरनारीजी ॥
हरन सकल भय भीर दुष्टदल हरिजनके हितकारीजी ॥
नन्द नँदन बलवीर छवीपर बलि बलि दास विहारीजी ॥ २ ॥

अथ वृषभासुर वध लीला ।

दोहा–नन्द नँदन संतन सुखद, कमल नैन छबिछाइ ॥
मुरली मुकुट धरे हरी, निरखत मदन लजाइ ॥

चौबोला–निरखत मदन लजाइ नित्य नव सुख ब्रजमें उपजावेजी
सुर नर मुनि हरिको यश गावे लखि ब्रजजन सुख पावेजी ॥
सुनि सुनि कृष्ण अगम गुण गाहा कंस असुर उर दहावेजी ॥
हितको हित जैसोको तैसो जैसो जाको भावेजी ॥ १ ॥

हित अनाहित यह प्रभुकी लीला सदा श्याम सुखदाईजी ॥
रीझ रीझ हरिको जो ध्यावे परम अभयपद पाईजी ॥
रहे कंस उरध्यान सदाई इक पल विसरत नाईजी ॥
शत्रु भाव सोचत दिन राती मारनकी मन माईजी ॥ २ ॥
दोहा–अरिष्ट नाम इक असुर सो, लीनों नृपति बुलाय ॥
तासों कहि समुझाय सब, दीनों ब्रजहिं पठाय ॥
चौबोला–दीनो ब्रजहि पठाय असुरको मारन काज कन्हाईजी ॥
चल्यो असुर मन गर्व बढ़ाई पेरित काल नियराईजी ॥
नृपको शीशनवाय बहुरि यों कह्यो अरिष्ट सुनाईजी ॥
कितिक काज महाराज यह अब मैं करि आवत जाईजी ॥ १ ॥
इतनेको सोचत कहा हो तुम असुरनके राईजी ॥
बालक नँद अहीरके दोऊ पलमें मारों जाईजी ॥
वृषभ रूप सोइ असुर बनायो आयो ब्रज समुहाईजी ॥
महाकठिन दोउ सींग विसाला गिरि सम देह बनाईजी ॥ २ ॥
दोहा–खोदत भूमी सींगसों, खुरन उड़ावत छार ॥
दृग आरक्त अरु फेन मुख, पूंछ उठाय डकार ॥
चौबोला–पूंछ उठाय डकार तरुनसों कबहूं रगरत आईजी ॥
इत उत खोजत फिरत कन्हाई जहां तहां गाय डगाईजी ॥
बार बार गर्जत अति भारी डरपत लोग लुगाईजी ॥
बिडरीं गाय गोप सब भागे हरिको टेरत जाईजी ॥ १ ॥
काल रूप वृषभ इक आयो हरिसों कह्यो सुनाईजी ॥
वृषभ न होय असुर पहिचान्यो प्रभु सर्वज्ञ कन्हाईजी ॥
माति डरपौ चिंता कछु नाहीं विहँसि कह्यो सुखदाईजी ॥
चले असुर सन्मुख मनमोहन गोप ग्वाल सँग धाईजी ॥ २ ॥

---

१ निडर। २ राजा-कंस। ३ बैल। ४ पर्वत। ५ धूरि। ६ लाल।

दोहा–आगे ह्वै हरि हांकदै, तासों कह्यो सुनाय ॥
रे शठ कत तन तरु घसत, फिरत विडारत गाय ॥
चौबोला–फिरत विडारत गाय असुरसों ऐसे कहत कन्हाईजी ॥
नौ तन उपज्यो कंध जो तोई अबहीं देहुँ मिटाईजी ॥
कहां फिरत इत उत तू धावत मो सन्मुख लर आईजी ॥
वृषभासुर सुनि हरिकी वाणी रह्यो मन गर्व बढ़ाईजी ॥ १ ॥
याही बालकके वध काजे भूपति मोहिं पठायोजी ॥
भले शकुनमैं ब्रजमें आयो आवतही लखि पायोजी ॥
अबहीं याहि पलकमें मारों याही कारण आयोजी ॥
ऐसे अपने जियमें जानी हरिके सन्मुख धायोजी ॥ २ ॥
दोहा–टूट परयो तब श्याम पै, गहे शींग हरि धाय ॥
वह आवत हरिकी दिशी, हरि तिहिं देत हटाय ॥
चौबोला–हरि तिहिं देत हटाय पाछेते पेलदियो बनवारीजी ॥
बहुरो वृषभासुर बल कीनो भयो क्रोध मन भारीजी ॥
ऐसे लरत असुर जब थाक्यो दीनो धरणि पछारीजी ॥
परयो असुर पर्वत सम मुखते चली रुधिरकी धारीजी ॥ १ ॥
असुर मारि उत्तम गति दीनी लखि नभ सुरहरषायाजी ॥
जैजै कहि सब स्तुति गावै हरषि सुमन झरलायाजी ॥
चकित भये सब ग्वाल परस्पर आपुसमें बतरायाजी ॥
हम जान्यो कोउ वृषभ यहहै असुर रूप धर आयाजी ॥ २ ॥
दोहा–मुदित कहत नरनारि सब, दुष्टदलन गोपाल ॥
विहारन श्री नंदलाड़िलो, भक्तनकोरछपाल ॥
चौबोला–भक्तनको रछपाल असुरको मारयो हरितिहिं कालैजी
भयो कंस तब बहुत दुखारी सुने श्यामके हालैजी ॥
आये ऋषि नारदतिहिं काला कह्यो सुनो भूपालैजी ॥

जिन मारे सब असुर तुम्हारे ते न नन्दके लालेजी ॥ १ ॥
हैं वसुदेव पुत्र वे दोऊ निश्चय मोहिं लखाईजी ॥
कन्या लै जो तुमहिं दिखाई सो वह यशुमति जाईजी ॥
भयो कछू यह छल सुनि राजा करता गतिको पाईजी ॥
पहलो पुत्र भयो हो जब मैं कह्यो तोहिं समुझाईजी ॥ २ ॥

दोहा–अपनो सोतैं बहु कियो, विधि कृत लख्यो न जाय॥
करहु यत्न अब वेगि कहि, गये स्वर्ग ऋषिराय ॥

चौबोला–गये स्वर्ग ऋषिराय कंस सोइ सुनी मुनीकी बानीजी ॥
भयो सोच वश मूढ अज्ञानी यत्न करन मन ठानीजी ॥
प्रथम देवकी अरु वसुदेऊ बोल लिये यह जानीजी ॥
राखे बहुरि बन्दिके माईं बहुत बुरो मन मानीजी ॥ १ ॥
कैसें मारों कहा करों अब निश दिन यह मन माईजी ॥
शाल रहे नृपके उर दोऊ हलधर कुँवर कन्हाईजी ॥
मनहीं मन सोचत अति भारी अब धौं पठऊं काईजी ॥
असुर गये जे सबहि मरे अरु काहु न मार्यो ताईजी ॥ २ ॥

अथ केशीवध लीला।

दोहा–असुरन माहिं बड़ो बली, केशी असुरहि जान ॥
कंसताहि तब बोलकहि, अतिआदरसन्मान ॥

चौ०-अति आदर सन्मान कंसनृप लियो निकट बैठाईजी ॥
कहत कंस केशी सुन मोसों कहूंतोहिं समुझाईजी ॥
मेरी आन सकल ब्रजमाईं मोसमान कोउ नाईजी ॥
ये सेवक मेरे नाहिं ऐसे जैसे मैं मनचाईजी ॥ १ ॥
तोसों कहूँ बात मैं जोई करि आवहु सो जाईजी ॥
ताते मोहिं यही पछितायो केशी अरज सुनाईजी ॥

ऐसो कहा कठिन प्रभुकाजै रहे तुम सोच अनाईजी ॥
और कौन दूजो तुम लायक तुम असुरनके राईजी ॥ २ ॥
दोहा—आयसु कहा सो दीजिये, मैं करि आवत जाय ॥
यह सुनि नृपहरषित भयो, केशी बहुत सिराय ॥
चौबोला—केशी बहुत सिराय कहत नृप ब्रज अब पठऊंकाईजी॥
करि आवै बिन प्राण नन्दके बालक दोऊ जाईजी ॥
आगे गये असुर सब तिनसों बन्यो काज कछु नाईजी ॥
यह सुनि आवत लाज असुर सब मारे बाल कन्हाईजी ॥ १ ॥
बड़ो वीरमैं तोको जानत यह मुहि निश्चय आवैजी ॥
ताकारण ब्रज तोहिं पठाऊं तू कछु काज बनावैजी ॥
मारि आव नँद बालक दोऊ छल बल करि कछु दावैजी ॥
कै लै आव बांधि दोउ भाई जीवन रहन न पावैजी ॥ २ ॥
दोहा—नृपकी आयसु पायके, चल्यो असुर गर्बाइ ॥
देखौंधों मैं ताय अब, कंस डरत है जाइ ॥
चौबोला—कंस डरत है जाइ देखिहौं को प्रगट्यो बलकारीजी ॥
अश्वरूप ह्वै ब्रजमें आयो गर्जत चहुँ दिश भारीजी ॥
झारत ग्रीव पूंछ विकराला वेगवंत वपुधारीजी ॥
भये विकल सब अति भय पाये भाज चले नर नारीजी ॥ १ ॥
अश्व एक आयो ब्रजमाई कहत श्यामसों ग्वालैजी ॥
कैधौं बहुरि असुर कोउ आयो अति भयानि विकरालैजी ॥
ब्रज आयो केशी असुर सोई जान लियो नँदलालैजी ॥
तब हरि ताके सन्मुख हर्षित चले कंसके कालैजी ॥ २ ॥
दोहा—कटि कसि बांध्यो पीत पट, शीश मुकुट वनमाल ॥
असुर विमोहन सुर सुखद, उर भुज नैन विसाल ॥
चौ०-उर भुज नैन विसाल हरिःके सन्मुख केशी धायोजी ॥

अति बल दोऊ चरण उठाये प्रभुपर चपल चलायोजी ॥
गहे बीचही हरि अविनाशी लखि ब्रजजन भय पायोजी ॥
छूट न असुर बहुत बल कीनों पाछे ठेल गिरायोजी ॥ १ ॥
गिरो धरणिपर मुर्छित भारी उठ्यो बहुरि रिसहाईजी ॥
पुनि पुनि चरण चपेट चलाई दाँव घातकर धाईजी ॥
अतिहि वेग हरि जात बचाई करत युद्ध सुखदाईजी ॥
देखत सुर मुनि चढ़े अकासा कछु दुख कछु हरषाईजी ॥ २ ॥

दोहा–चकृत गोपी गोप सब, चितवत अति भयपाय ॥
चाहत हरिको वदन गहि, पुनि धायो मुखबाय ॥

पुनि धायो मुखबाय हरी मन तब इक बुद्धि ऊपाईजी ॥
दियो हाथ ताके मुख नाईं हरि जनके सुखदाईजी ॥
वृक्ष समान भयो मुख माईं दाब सक्यो सो नाईजी ॥
एक हाथ ताके मुख दीनो एक केश गहे धाईजी ॥ १ ॥
पटक्यो ताहि फिराय कन्हाई भयो शब्द अति भारीजी ॥
धरक्यो उर सुनि कंस नृपतिको हन्यो असुर बनवारीजी ॥
देखत सुरगण भये सुखारी बरसे सुमन अपारीजी ॥
ब्रजवासिनको प्राण उबारचो कहत धन्य गिरिधारीजी ॥ २ ॥

दोहा–लिये यशोमति लाय उर, पुनि पुनि लेत बलाय ॥
बहुत दान विप्रन दियो, अति हर्षित नँदराय ॥

चौबो०–अति हर्षित नँदराय श्यामको लीने कंठ लगाईजी ॥
मुख चुंबत लखि छबि सुखपावै आनँद उर न समाईजी ॥
केशी मार श्याम घर आये घर घर बटी बधाईजी ॥
नन्द नँदनकी करत बड़ाई सब ब्रज लोग लुगाईजी ॥ १ ॥
धन्य धन्य ब्रजमें हरि प्रगटे भक्तनके हित आईजी ॥
सुखसागर शोभा अवधि प्रभु बलनिधि त्रिभुवनराईजी ॥

चिरजीवहु जोरी सुखदाई बल मोहन दोउ भाईजी ॥
विहारन प्रभुको सब ब्रजबासी देत अशीश मनाईजी ॥ २ ॥

अथ व्योमासुर वध लीला ॥

दोहा—गये संग गायन बनहिं, दूजे दिन ब्रजनाथ ॥
शोभित संग बलराम अरु, ग्वाल बाल सब साथ ॥
चौबोला—ग्वाल बाल सब साथ गईं सब गाय बनहिं बगराईजी ॥
जहाँ तहाँ चरण लगी सुख पाई सो छबि परम सुहाईजी ॥
चोर मिहिचनी खेलन लागे ग्वालन संग कन्हाईजी ॥
भये मगन तन सुधि कछु नाईं दुरतब नहिंमें जाईजी ॥ १ ॥
तबहिं कंस केशी वध सुनकै बार बार पछितायोजी ॥
व्योमासुर इक अति बलवाना ताको कंस बुलायोजी ॥
पठयो ताको तब ब्रजमाईं मारन श्याम सिखायोजी ॥
गोपभेष धरसो ब्रजआयो ढूँढत हरि बन पायोजी ॥ २ ॥
दोहा—ताको कोउ जान्यो नहीं, मिल्यो सखनमें आय ॥
व्योमासुर इक बुधि रची, बालक लेहुँ चुराय ॥
चौबोला—बालक लेहुँ चुराय इकेलो जब हरिको कर पाईजी ॥
तब मारों कै गहि लै जाऊँ यह ताके मन आईजी ॥
दुरन[1] जात बालक वन जहँ तहँ असुर संग तहां जाईजी ॥
आवहिं एक एकही लैकै पर्वत माहिं दुराईजी ॥ १ ॥
जब यों बहु बालक हरलीने रहि गये थोरे ग्वालैजी ॥
व्योमासुर ने कपट कियो सो तब जान्यो नँदलालैजी ॥
धरयो धाय[2] तब कुँवर कन्हाई भक्तनके रक्षिपालैजी ॥
तुरत असुर ले भूपर[3]पटक्यो गयो स्वर्ग ततकालैजी ॥ २ ॥

१ छिपने । २ दौड़कर । ३ धरतीपर ।

दोहा–असुर मारके श्याम तब, बालक शोधन जात ॥
ऋषि नारद आये तहां, देखि हरिहि हर्षात ॥
चौबोला–देखि हरिहि हर्षात ऋषीके भयो प्रेम उर भारीजी ॥
बीन बजाय लगे यश गावन जै जै श्रीगिरिधारीजी ॥
आदि पुरुष प्रभु अंतर्यामी अलख अनीह अपारीजी ॥
कोजाने प्रभु रूप तुम्हारो जगकरता असुरारीजी ॥ १ ॥
युग युग प्रभु यह रीति तुम्हारी भक्तन हित अवतारीजी ॥
धरणी भार पाप भयो भारी सुरन सहीत पुकारीजी ॥
त्राहि त्राहि श्रीपाति दैत्यारी राखहु शरण उबारीजी ॥
शशि अरु सूर्य भये सब साखी राज अनीती धारीजी ॥ २ ॥
दोहा–क्षीरसिंधु अहि फणु प्रभु, श्रवणन परी पुकार ॥
तब जान्यो सुर संत सब, दुखित दनुजके भार ॥
चौ०-दुखित दनुजके भार सिंधु मधि वाणी प्रगट सुनाईजी ॥
कहो भूमि अवतार लेन हरि सो ब्रज प्रगटे आईजी ॥
जगत्राता दाता अभयपद श्रीपाति त्रिभुवनराईजी ॥
मथुरा जन्महिं गोकुल आये सोवत जननी पाईजी ॥ १ ॥
पयपीवतही बकी विनाशी सुनतहि कंस दुखायाजी ॥
इह अंतर जे दनुज पठाये ते प्रभु तुरत नशायाजी ॥
नन्द यशोदा बालक जानें गोपिन काम सुहायाजी ॥
धन्य धन्य ये ब्रजके वासी जिन हित हरि ब्रज आयाजी ॥ २ ॥
दोहा–मन बुधि बानी रहित हो, निगमहुँ अगम न पाइ ॥
युवतिन संग विहरत बनहिं, कमल नैन सुखदाइ ॥
चौबोला–कमल नैन सुखदाइ सुभग तन नील जलज बनवारीजी
मोर मुकुट कुंडल अभिरामा सोभित अति छबि भारीजी ॥
मुरलीधर पीताम्बर धारी बनमाला शुभकारीजी ॥

बसहु रूप यह मम उर मोहन गिरिधर कुंज विहारीजी ॥ १ ॥
यह अवतार जबहिं प्रभु लीनो आयसु सुर सब पाईजी ॥
दैत्य दहन संतन सुखकारी मारहु कंस कन्हाईजी ॥
जब यह गाथा गाय श्यामको नारद कह्यो सुनाईजी ॥
तब बोले हरि कृपानिधाना सुधा वचन मुसकाईजी ॥ २ ॥

दोहा–करौ सुरनको काज यह, जाहु वेगि मुनिराय ॥
नृप आयसु ते मधुपुरी, पठवहु मोहिं बुलाय ॥

चौबोला–पठवहु मोहिं बुलाय ऋषीको आयसु दई कन्हाईजी ॥
तब प्रणाम प्रभुको ऋषि कीनी अति हरषित मन माईजी ॥
हरषि चले मुनि नृपके पासा मन कछु बुद्धि उपाईजी ॥
यहै बात हलधर समुझाई जो ऋषि गये सुनाईजी ॥ १ ॥
जन्मेहो भूभार उतारन अखिल लोकके राईजी ॥
परम पुरुष अविगति अविनाशी हरि अद्वैत सदाईजी ॥
सिंधुरूप जनहित सुखकारी त्रिभुवन पति सुखदाईजी ॥
संकर्षण जब ऐसे भाष्यो सुनत श्याम हरषाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तब हँसि बोले भ्रातसों, सुनों बात बलराम ॥
कहवाऊं निज प्रगटही, कंसनिकंदन नाम ॥

चौबोला–कंसनिकंदन नाम केशगहि देहों यमुनबहाईजी ॥
ऐसे बलि समुझाय शोधि सब ल्याये ग्वाल कन्हाईजी ॥
भये मुदित सब देखि गुवाला मारचो असुर सो ताईजी ॥
धन्यधन्य सब प्रभुनि सुनावैं लीने हमहिं बचाईजी ॥ १ ॥
गाय गोप हलधर सहित सब रहे परम सुख पाईजी ॥
सांझ सभै बनते चले तब ब्रजको कुँवर कन्हाईजी ॥
आये नंद अवास विहारन पुनि पुनि लेत बलाईजी ॥
गये कंसके पास मधुपुरी मन सोचत ऋषिराईजी ॥ २ ॥

दोहा–कारि मन बदन उदास मुनि, गये कंसके पाहि ॥
अति आदर कारि कंस नृप, लीने ढिग बैठाहि ॥
चौबोला–लीने ढिंग बैठाहि कह्यो मुनि क्यों मुखरह्यो झुराईजी
कहा चिंता मन बढी तुम्हारे कहो मोहिं समुझाईजी ॥
नारद कह्यो सुनो हो राई करहू वेगि उपाईजी ॥
देख्यो नन्द सुवनमैं जैसो त्रिभुवनमें कोउ नाईजी ॥ १ ॥
करत कहा रजधानी ऐसी कहा तुम्हें बुधिआईजी ॥
हम सब हितकी कहैं तुम्हारे दिन दिन होत सवाईजी ॥
तब बोल्यो नृप गर्व बढ़ाई कहा कहौ ऋषिराईजी ॥
यदपि कहत हो तुम हितकेरी तदपि मोसम नांईजी ॥ २ ॥
दोहा–कोटि दनुज मो सम बली, रहत सदा ममपास ॥
तिनको देखत सकल सुर,करत रहत मनत्रास ॥
चौ०-करत रहत मन त्रास सकल सुर जीत सकत कोउनाईजी॥
कोटि कोटि तिनके सँग योधा एक एक अधिकाईजी ॥
तिनके बल कहा कहूँ बखानी देखत काल डराईजी ॥
कोटि असुरकी भीर रहत खरी नित प्रति द्वारसदाईजी ॥ १ ॥
महा मत्तगज एक कुबलिया ऐसो त्रिभवन नाईजी ॥
ऐसे सुभट अनेक नाम कहि कहां लगि तुमहिं गिनाईजी ॥
कहा ग्वालके बालक दोऊ प्रगटे हैं ब्रजमाईजी ॥
प्रजालोक ब्रजके सब मेरे सेवा करत सदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–बालक सुनि लज्जालगत, ताते मन सकुचाइ ॥
भली करी तुम बात यह, दीनी मोहिंबुझाइ ॥
चौबोला–दीनी मोहिं बुझाइ अबहिमैं मनकी खुटकमिटाऊंजी॥
सुनहु और नारद मुनि मोसों मनकी बात सुनाऊंजी ॥
उनपर सेना कहा चढाऊँ नन्दहि सहित बुलाऊँजी ॥

डारों गजके चरण खुदाई औरहि प्रजा बसाऊँजी ॥ १ ॥
ऐसे कह्यो कंस तब मुनिवर कहत सुनो नृपराईजी ॥
अब तुम अपनो गर्व सँवारो वेगहि मारो ताईजी ॥
त्रिभुवन में को बलहि तुम्हारे यह कहि गये ऋषिराईजी ॥
कंस आपने जिय यह आनी मथुरा लेहुँ बुलाईजी ॥ २ ॥

दोहा—यहै सोच उरमें बस्यो, नहिं विचार कछु और ॥
कैसे तिन्हें बुलाइये, करत मनहिं मन दौर ॥

चौबोला—करत मनहिंमन दौर आपही मैं ब्रजपर चढिजाईजी ॥
पुनि सकुचत है जीय हरीके जानत गुण मनमाईजी ॥
जन्महिंते वे हैं असुरारी प्रथमहिं बकी नशाईजी ॥
कागासुर गयो गर्व बढ़ाई गिरो इतहिं फिर आईजी ॥ १ ॥
शकटा तृणा क्षणहिंमें मारे ख्यालहि असुर नशाईजी ॥
गये प्रतिज्ञा करि करि जोई फिर आयो कोउ नाईंजी ॥
अब उनको इहां सहज बुलाऊँ काउअ लेन पठाईजी ॥
जाय नन्दसों कहै सुनाई श्याम राम दोउ भाईजी ॥

दोहा-सुनि सुनि इनके रूप गुण, अति नृपके मन भाय ॥
देखनको अब मधुपुरी, भोरहि इन्हें बुलाय ॥

चौबोला—भोरहि इन्हें बुलाय ऐसे करि जब ऐहैं दोउ भाईजी ॥
बहुरो जीवत जान न पावै यह मनमें ठहराईजी ॥
तब आतुर अक्रूर बुलायो सुनत डरचो मन माईंजी ॥
किहिं कारण नृप वेगि बुलायो तुरत चल्यो उठधाईजी ॥ १ ॥
आतुर गयो पवँरि परधाई भीतर खबर कराईजी ॥
सुनतहि बोलि महलमें लीनो सुफलकसुत भय पाईजी ॥
कछु भय कछु उर धीर धरचो मन गयो नृपति समुहाईजी ॥
सोचतजिय उरलेत उसासा डरपत अति मन माईंजी ॥ २ ॥

दोहा-अनबोल्यो सन्मुख रह्यो, हाथ जोर शिरनाय ॥
हरषि वचन कहि कंस तब, लीनो ढिंग बैठाय ॥
चौबोला-लीनो ढिंग बैठाय आपही और तहां कोउ नाईजी ॥
बोल्यो नृप सुफलकसुत पाई कहों तोहिं समुझाईजी ॥
कहि जुगये नारद मुनि वाणी सो सब प्रगट जनाईजी ॥
सुन अक्रूर कहतमैं तोसों श्याम राम दोउ भाईजी ॥ १ ॥
जिहिं तिहिं विधि उनको मैं मारों यह मेरे मन आवैजी ॥
सो कछु दोष हृदय नहिं धारो, ऐसे वचन सुनावैजी ॥
पठऊं काहि सोई ब्रजजावै नन्दहि यों समुझावैजी ॥
बल मोहन देखनके काजै तुमहीं सहित बुलावैजी ॥ २ ॥
दोहा-सुने रूप गुण दुहुँनके, अतिशय अगम अगाध ॥
है नृपके उर ताहिते, देखनकी मन साध ॥
चौबोला-देखनकी मन साध दुहुँनको याही काज बुलावैजी ॥
काली पीठ कमलले आये तबते अति मन भावैजी ॥
सोबकशीश इन्हें अबदेहैं ऐसे नँदहि सुनावैजी ॥
यह कहिकै उनको ले आवै भेद नकोऊपावैजी ॥ १ ॥
ऐसे कहि जब कंस सुनायो सुफलकसुत यह जानीजी ॥
आपहि अपनो काल बुलावै मरन काल बुधि आनीजी ॥
कहत जु कछु मैं और याहि अब यह कबहूं नहिं मानीजी ॥
मारेगो यहि ठौर मोहिं यह जो कहिहौं कछु वाणीजी ॥ २ ॥
दोहा-काल याहि आयो निकट, कह्यो मानिहै नाहिं ॥
सुफलकसुत बोल्यो हरषि, यह विचार मनमाहिं॥
चौबोला-यह विचार मन माहिं कह्यो तुम नीक बात यहठानीजी
धन्य धन्य नारदमुनि ज्ञानी उन यह सत्यबखानीजी ॥
बडे शत्रु वे हमको दोऊ उपजे नँद घर आनीजी ॥

कीजे नृपति वेगि यह काजे अरुको आप समानीजी ॥ १ ॥
मुखते आयसु जो करि पाऊं व्रज कोउ देहुँ पठाईजी ॥
सुफलक सुत ऐसे कहि वाणी सुनि नृप मन हरषाईजी ॥
फिरि फिरि कहत हिये गर्वाई अब मारों दोउ भाईजी ॥
तब अक्रूर विदा घर कीनों रह्यो सोच मन छाईजी ॥ २ ॥

दोहा–परयो सजग आलस जिये, पलक लगी झपकाइ ॥
लगीं करन सेवा चरण, रानिन सब तहँ आय ॥

चौ०-रानिन सब तहँ आइ नृपतिने सपने लखे कन्हाईजी ॥
काल समान देख दोउ भाई झिझकि उठो भय पाईजी ॥
देख्यो जागि तहाँ कोउ नाईं चकित भयो मन माईजी ॥
बूझन लगीं सबै अकुलाई कहा झिझके नृपराईजी ॥ १ ॥
महाराज झिझके कहा हो सपने आज सकाईजी ॥
कहिये काको सोच तुम्हारे मनमें रह्यो समाईजी ॥
सहजहि रानिन सों कह्यो कछु जियमें अति सकुचाईजी ॥
मनहिं शंक उर लगी धकधकी भेद न कह्यो जनाईजी ॥

दोहा–श्याम राम भय तजत नहिं, डरमें रह्यो समाय ॥
सावधान प्रतिपालकरि, योधा लिये बुलाय ॥

चौ०-योधा लिये बुलाय मनहिं अति सोच न प्रगट जनावैजी ॥
जाग्यो आप संग सब नारी याम युगहि सम जावैजी ॥
बैठत कबहुँ उठत अकुलाई कबहूँ आंगन आवैजी ॥
घरयालीसों पूँछि पठावै निशिकी खबर मँगावैजी ॥ १ ॥
सोचत सब प्रातहि कहा करिहैं क्रोध भयो नृपराईजी ॥
रही घरी निशि कछु यक बाकी युग समान क्षण जाईजी ॥
कहत व्रजहि धौं काहि पठाऊँ नँदके सुवन मँगाईजी ॥
अक्रूरहि अब देहुँ पठाई ल्यावहि ठगि दोउ भाईजी ॥ २ ॥

दोहा—देख्यो सुपनो नन्द इत, हरि कहुँ गये हिराहि ॥
ग्वाल वाल रोवत सकल, कहत श्याम ब्रज नाहिं ॥
चौबोला—कहत श्याम ब्रज नाहिं संगही खेलत रहे कन्हाईजी ॥
निठुर होय कहुँ अंत सिधारे दुखित ग्वाल मनमाईजी ॥
दूत एक आयो सो अपने सँग लेगयो लिवाईजी ॥
है गये वाईके दोउ भाई ब्रजबासिन विसराईजी ॥ १ ॥
मुरछितपरे नन्द तब धरणी सुनतहि अति अकुलाईजी ॥
श्याम विरह व्याकुल अति देखी विवस यशोमति माईजी ॥
व्याकुल ब्रजवासी नर नारी पशु पंछी मुरझाईजी ॥
रोवत परे धरणि दुख पावत तब जागे नँदराईजी ॥ २ ॥
दोहा—धक धकात उर नन्दके, रह्यो नैन जल छाय ॥
लखि सुत मन धीरज भयो, रहे अंग परसाय ॥
चौबोला—रहे अंग परसाय यशोदहि ससकत नन्द लखायोजी॥
कहा भरमे पूँछत नंदरानी नन्द न भेद जनायोजी ॥
श्यामहिं लखि धीरज उर आयो रवि ऊगन नाहिं पायोजी ॥
सुफलक सुत उत कंस बुलायो सुनत दूत उठि धायोजी ॥१॥
सोवत ते अक्रूर जगायो बोलत कंस सुनायोजी ॥
समझि मंत्र निशि चल्यो उदासा द्वारहि ठाढो पायोजी ॥
देखत दूरहिते शिरनायो आदर निकट बुलायोजी ॥
शिरोपाव नृप तुरत मँगायो अक्रूरहि पहरायोजी ॥ २ ॥
दोहा—बहुत कृपा करि वचन कहि, तुम अति प्यारे मोय ॥
ल्यावहु बालकनंदके, तुम सम और न कोय ॥
चौबोला—तुम सम और न कोय सुनत दुख ऊपर मन हरषाईजी॥
असुर त्रास जियमाहिं पर्‍यो तब वचन कह्यो नाहिं जाईजी ॥
जाहु वेग नृप कह्यो ब्रजहि अब दीनो रथहि चढ़ाईजी ॥

अब विलंब नहिं कीजिये शीघ्रहि ले आवहु दोउ भाईजी ॥१॥
तब अक्रूर कह्यो कर जोरी सुनहु अरज नृपराईजी ॥
बल मोहन प्रातहि दोउ भाई जात चरावन गाईजी ॥
जो उनको घर मैं नहिं पाऊं ताते अरज सुनाईजी ॥
आज नन्दगृह बसिहौं जाई भोर होत लै आईजी ॥ २ ॥

अथ अक्रूर ब्रजगमन लीला।

दोहा–ऐसे जब अक्रूर कहि, कंस मान लइ बात ॥
शीशनवा तब रथ चढ्यो, सुफलक सुत ब्रज जात ॥
चौबोला–सुफलक सुत ब्रजजात कंस नृप लीने मल्ल बुलाईजी ॥
चाणूरादि सकल चलि आये कहा आयसु नृपराईजी ॥
तिनसों कह्यो सुनो सब वीरा रहत नंद ब्रज माईजी ॥
कहियत बली तासु सुत नामहि कह बलिराम कन्हाईजी ॥
बहुत असुर मारे उन मेरे हैं वे शत्रु हमाराजी ॥
नंद महरके वे दोउ बालक कहियत बलहि अपाराजी ॥
ताकारण मैं तुमहि बुलाये सजग रहो अब साराजी ॥
उनको मति जानो तुम बारे महाकठिन बल भाराजी ॥ २ ॥
दोहा–उनहिं बुलाये मधुपुरी, दियो अक्रूर पठाय ॥
रंगभूमि ताते रच्यो, चित्र विचित्र बनाय ॥
चौबोला–चित्र विचित्र बनाय तहां सब सावधान रहो जाईजी ॥
ऊँचो एक मचान रचो तहां सुन्दर और बनाईजी ॥
जहां असुर परधान सकल मिल बैठो मोढिंग आईजी ॥
सावधान करि सब बैठाये योधा सकल बुलाईजी ॥ १ ॥
और पौरिके बाहर राखो गजहि कुबलिया ल्याईजी ॥
राखो द्वार तीसरे जाई कठिन धनूष धराईजी ॥

बहु भट तहां रहो रखवारी अति बलि शस्त्र सजाईजी ॥
ऐसे सजग रहो सब कोऊ जब आवैं दोउ भाईजी ॥ २ ॥
दोहा—प्रथमहिं उनसों यह कह्यो, आवहु धनुष उठाय ॥
जब वे नाहिं उठाइहैं, घेर लेहु सब धाय ॥
चौबोला—घेर लेहु सब धाय तहां तुम मार लेहु दोउ भाईजी ॥
भीतर लौं आवन जिन दीजै जो कदापि वच जाईजी ॥
तो गजपै आवन नहिं पावैं डारो चरण खुँदाईजी ॥
तुमको राखत अबहिं जताई छलकर जात बचाईजी ॥ १ ॥
तो सब मल्ल मारि उन लेहू रंगभूमि नहिं आवैजी ॥
मोससीप आवन मति दीजौ ऐसे सबन जनावैजी ॥
सजग रहो इह भांति सबनको ठौरहि ठौर सजावैजी ॥
जिहिं तिहिं विधि मारो दोउ भाई यहै बात मन भावैजी ॥ २ ॥
दोहा—ऐसे आयसु दे सबन, गयो सदन नृपराय ॥
सुनहु कथा अक्रूरकी, चल्यो ब्रजहि समुहाय ॥
चौ०-चल्यो ब्रजहि समुहाय सुफलकसुत मन मन सोचत जाईजी
हैं नृप कंस बडो हत्यारो पठयो लेन कन्हाईजी ॥
कैसे आनदेहुँमैं जाई मारेगो दोउ भाईजी ॥
नगर निकस रथ कीनो ठाढो रह्यो सोच मन माईजी ॥ १ ॥
गज मुष्टिक चाणूर सुमिरि मन रह्यो नैन जल छाईजी ॥
अति बालक बलराम कन्हाई कहा करों कछु न बसाईजी ॥
मुहिं मारो चाहे बन्द करावो यह विचार ठहराईजी ॥
पुनि पुनि कृष्ण हृदयमें ल्यावै चलत फिरत नाहिं आईजी॥२॥
दोहा—प्रभु कृपालु सर्वज्ञ हरि, सुमिर हृदय यह आइ ॥
मनहिं कहत अक्रूर वे श्रीपति त्रिभुवनराइ ॥
चौबोला-श्रीपति त्रिभुवन राइ उत्पती पालन अरु संहाराजी ॥

भूमि भार टारन अवतारा प्रभु गुण रूप अपाराजी ॥
धन्य कंस मुहिं लेन पठायो कीनो यह उपकाराजी ॥
जाय रूप वह देखहुँ नैनन सुन्दर नन्दकुमाराजी ॥ १ ॥
तब रथ हाँकि चल्यो सुफलकसुत यह विचार मनभायाजी ॥
भयो शकुन शुभ अतिशयभारी मृग गण दाहिने आयाजी ॥
दाहिने देखि मृगनकी माला सुफलक सुत हरषायाजी ॥
कहत आज इन शकुन न जाई मिलि हो त्रिभुवन रायाजी॥२॥

दोहा–मोर मुकुट कुंडल ललित, अरु बनमाल सुहाय ॥
कटि कछनी पट पीत छबि, चन्दन खौर लगाय ॥

चौबोला-चन्दन खौर लगाये नटवर भेष किये सुखदाईजी ॥
ह्वै हैं गैयनके सँग ठाढे ग्वालन मध्य कन्हाईजी ॥
सो दरशन लखि होंय सनाथा परिहौं चरणन धाईजी ॥
जे शुभ चरण पितामह ध्यावैं महिमा वेदन गाईजी ॥ १ ॥
जिन चरणन कमलारति मानी पलक ओट नाहिं चावैजी ॥
शंभु धरचो जिनको शिर पाणी निशि दिन ध्यान लगावैजी ॥
सनकादिक नारद यशगावै योगीजन सब ध्यावैजी ॥
बलि जिनकी मर्याद न पाई महिमा कहत न आवैजी ॥ २ ॥

दोहा–शिला शाप मोचन करन, हरन भक्त उरपीर ॥
जाय देखहों ते चरण, सकल सुखनकी सीर ॥

चौ०-सकल सुखनकी सीर अंकित कुलिश अंकुश ध्वजह्वैहैजी॥
गोप बालकन संग कन्हाई गोचारत बन पैहैंजी ॥
परिहो जाय चरणपर जबहीं भुजभर मोहिं उठैहैंजी ॥
परसत उर मन अति सुख पाई आनँद उर न समै हैंजी ॥ १ ॥
देखत दरश परमसुख ह्वैहैं दृगन प्रेमजल ऐहैंजी ॥
कुशल पूछि हैं मोहिं कन्हाई वचन कहे नाहिं जैहैंजी ॥

बार बार वाणी मृदु कैहैं सुनत श्रवण सुख पैहैंजी ॥
यों अक्रूर ध्यान में अटक्यो पंथ गवन सुधिनेंहैंजी ॥ २ ॥
दोहा–हरि अनुराग उर में भरचो, रही देह सुधि नाहिं ॥
को मैं कितको जात हों, जानत नहिं मन माहिं ॥
चौबो०-जानत नहिं मन माहिं सांझ भइ गोकुल पहुँचन पायोजी।
रथ बाहनकी सुरत भुलानी कित मुहिं कौन पटायोजी ॥
भयो हरष उर प्रेम विसाला जित तित हरिहि लखायोजी ॥
हरि अन्तर्यामी भक्तन वश वेदनमें यश गायोजी ॥ १ ॥
भक्तवत्सल है जिनको नामा भक्त भाव कोउ ध्याईजी ॥
मिलत तिन्हें नहिं बिलम लगावै भक्तनके सुखदाईजी ॥
वृंदावन ग्वालन सँगमाईं चारत धेनु कन्हाईजी ॥
चले हरषि हलधर सहित हरि भक्त हेतु मन आईजी ॥ २ ॥
दोहा–हेरी गावत हरषि हरि, यमुन पार करि गाय ॥
लागे गोदोहन करन, ग्वालन सँग सुख पाय ॥
चौ०-ग्वालन सँग सुखपाय भक्त हित यह हरि सुखउपजायोजी
तहाँ दरश सुफलकसुत पायो रहि न सक्यो अकुलायोजी ॥
उतर परचो भूपर अति व्याकुल भयो सकल मनभायोजी ॥
दौरि श्याम चरणन शिरनायो आनँद उर न समायोजी ॥ १ ॥
हृदय उमँगि आनंद अपारा मगन प्रेम जलछायोजी ॥
कृपासिंधु करि कृपा उठायो भक्तजान उरलायोजी ॥
भयो सुख सो सोई जाने विहारन कहत न आयोजी ॥
जो अक्रूर चरित मन कीनों सोई दरश दिखायोजी ॥ २ ॥
दोहा–मधुर वचन सुन्दर सुखद, पूँछत हरि हँसि बात ॥
तब बोल्यो अक्रूर सँभरि, कुशल दरश लखिनाथ ॥
चौबोला–कुशल दरश लखिनाथ दैत्य दल भक्तनके सुखदाईजी

भेदहि भेद कंसकी वाणी सुफलक सुत प्रगटाईजी ॥
सुनत वचन मुख सुफलक सुतके मुसके कुँवर कन्हाईजी ॥
फरकि भुजा भू भार उतारन टारन असुर निकाईजी ॥ १ ॥
परमप्रीति अति सुफलक सुतसों मिले राम पुनि आयेजी ॥
वासुदेव सुत दोउ निरखिं तब आनँद उर न समायेजी ॥
कहि कहि उठत यहै नँदलाला हमको कंस बुलायेजी ॥
लेनेको अक्रूर पठाये काल्हहि भोर मँगायेजी ॥ २ ॥

दोहा—चकित भये सुनि ग्वाल सब, कहा कहत बलबीर ॥
भये प्रेमवश सकल तब, भरे दृगनमें नीर ॥

चौबोला—भरे दृगनमें नीर सबन जब देखि श्याम सुखदाईजी ॥
तब बोले हरि करी सयानी जिन डरपहु कोउ भाईजी ॥
चलहु काल्हि देखहिं नृप कंसहि अरु चिंता कछु नाईजी ॥
यह कहि चले सकल ब्रजबालन कछु डर कछु हर्षाईजी ॥ १ ॥
अति कोमल बलराम कन्हाई लिये अक्रूर उठाईजी ॥
लसत दोउ सुफलक सुत कनियां सुमनहुँते हरुवाईजी ॥
ग्वालन सबन लियो रथ डोरी पहुँचे सब ब्रज जाईजी ॥
लखि जहँ तहँ ब्रजलोग चकाने देखि डरे नँदराईजी ॥ २ ॥

लावनी ।

निशि स्वप्न जानि मन माहिं नन्द भय पायो ॥
देख्यो निज नैनन दूत कंसको आयो ॥

टेक—सब नन्द और उपनन्द लेन जब आये ॥
तब नर नारिनके वृन्द सुनत उठ धाये ॥
दोउ राम श्याम लिये गोद अक्रूर लखाये ॥

देखत तब सब मन माहिं कछुक हरषाये॥
अतिकर आदर सन्मान सबन शिरनायो॥
देख्यो निज नैनन दूत कंसको आयो॥
सब मिल पूंछी कुशलात घरहि ले आये॥
व्यंजन कर नाना भांति भोजन करवाये॥
मिल अक्रूरहि दोउ भ्रात अधिक मनलाये॥
मानहुँ कीनो प्रतिपाल इनहिं दुलराये॥
अक्रूरहि सँग सब लखत दुहुँन मिलखायो॥
देख्यो निज नैनन दूत कंसको आयो॥ २॥
उठ अचये दीने पान पलँग बैठाये॥
कहा कृपाकरी कह नन्द कहो किम आये॥
अक्रूर कह्यो दोउ भ्रात नृपति बुलवाये॥
तुमको कह्यो आवैं संग यो वचन सुनाये॥
तुम्हें लेन काज नृपराजाहि मोहिं पठायो॥
देख्यो निज नैनन दूत कंसको आयो॥ ३॥
सुनि सुनि इनके गुण रूप नृपति हरषाये॥
देखनकी है अभिलाष बहुत मनभाये॥
लै चलो इन्हें अब प्रातहि वेग बुलाये॥
यों सुफलकसुत मुख सुनतहि नन्द डराये॥
यह बानी सुनि ब्रज लोग सबन दुख पायो॥
देख्यो निज नैनन दूत कंसको आयो॥ ४॥
दोहा—चकित नन्द यशुमति चकित, मनहीं मन अकुलात॥
हरि हलधरको सैन दे, सबहि बुलावत जात॥
चौबोला—सबहि बुलावत जात काहुतन हेरत नाहिं दोउ भाईजी॥
योग वियोग नहीं कछु जाके माया रचित कन्हाईजी॥

अविगति¹ अविनाशी² पुरुष प्रभु आनँद एक सदाईजी ॥
कीनो चहैं भूमि सुरकाजे भक्तनके सुखदाईजी ॥ १ ॥
ताते नहिं काऊ तन हेरत बोलत नाहिं कन्हाईजी ॥
जनु पहिचान कबहुँ की नाईं डरपत लोग लुगाईजी ॥
कहत हरी सुफलकसुत³ सो यों बोले हम नृपराईजी ॥
हुती साध हमरे मन माईं बोलत नृप क्यों नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–हँसि हँसि ऐसे कहत हरि, सुनि सब मन अकुलात॥
भये नेह तजि दूर प्रभु, हरि कछु मन नहिं ल्यात॥

चौ०-हरि कछु मन नहिं ल्यात नारि सब आपुसमें बतराईजी ॥
कहति परस्पर तिय अकुलाई आयो यह दुखदाईजी ॥
महाक्रूर अक्रूर नामको जैहैं श्याम लिवाईजी ॥
कैसे प्राण रहैंगे आली जान कहत सुखदाईजी ॥ १ ॥
विलखि वचन शोचत सब ठाढ़ी मानहुं चित्रलिखाईजी ॥
ठौर ठौर ऐसी दशा भई वचन कहे नहिं जाईजी ॥
बढ़ी व्यथा हरिके बिछुरनकी रह्यो नैन जल छाईजी ॥
भली भांति देखन नृपपैहैं हम तुम्हरे सँग माईजी ॥ २ ॥

दोहा–पूछत एकहि एकसों, फिरत विकल सब ग्वाल ॥
मन मलीन व्याकुल सबै, चलन कहत नँदलाल ॥

चौ०-चलन कहत नँदलाला सखा जब रहे सकल बिलखाईजी॥
ब्रजके लोग विकल सब देखे तब अक्रूर सुनाईजी ॥
चिंता मतहि करो मनमाईं इनको कछु डर नाईजी ॥
भंजन धनुष यज्ञके काजै बोले हैं नृपराईजी ॥ १ ॥
व्याकुल महरि यशोमति धाई परी चरणमें आईजी ॥
सुफलक सुत हम दास तुम्हारी ऐसे विनय सुनाईजी ॥

---

१ जिनकी गति समझी न जाय। २ नाशरहित। ३ अक्रूर।

संतत धाम परम उपकारीतुम्हरी सुनी बड़ाईजी ॥
बडे दुखन सों ये प्रतिप्याले राम इयाम दोउ भाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कहा धनुष ये तोरहीं, मल्लनको कहा जान ॥
राजसभादेखी कहां, कबकी नृप पहिचान ॥
चौबोला–कबकी नृप पहिचान भूप अब बोलेहैं दोउभाईजी ॥
राज अंश उनको सब दीनो और देहुँ अधिकाईजी ॥
मैं कहा करों सुतनको देकै जावहु नँद लिवाईजी ॥
हे अक्रूर कहत क्यों नाईं कहाकरिहैं येजाईजी ॥ १ ॥
कहा धनुष ये देखिहैं अबहीं बालक अति अज्ञानाजी ॥
कियो नृपाति कछु कपट यहसो परत मोहिं यों जानाजी ॥
देहुँ नहीं मैं जान मधुपुरी मोनिधनी धन कान्हाजी ॥
को जीवे नँद नन्द बिना अब लेहु कंस बरु प्राणाजी ॥ २ ॥
दोहा–कहत यशोमति बिलखि यों, हरिसों अति दुखपाय ॥
मोहन मम छोहन अब, दई लाल बिसराय ॥
चौबोला–दई लाल बिसराय यशोमाति हरिसों कहत सुनाईजी॥
मथुराजाहु नमैं बलिहारी दुखित जान निजमाईजी ॥
ये अक्रूर क्रूर कृत रचिकै आयो रथहि सजाईजी ॥
तिरछी भई करमगति आई बिधना कहा बनाईजी ॥ १ ॥
मोसों मात महरसों ताता कहत रहत दोउ भाईजी ॥
कैसे रहिहैं प्राण हमारे यह सुख जान कन्हाईजी ॥
मथुरा में कहा काज तिहारो ऐसी कहा जिय आईजी ॥
निरखि रूप यशुमति अकुलाई परी धरणि मुरझाईजी ॥ २ ॥
दोहा–काहि अब लेवे प्राण हरि, तजत निठुर ह्वै कान्ह ॥
क्यों आये अक्रूर यहां, लेवन मेरे प्राण ॥
चौबोला–लेवन मेरे प्राण सुफलकसुत ऐसी मन न बिचारोजी ॥

दोउकर जोर करों मैं विनती मेरी ओर निहारोजी ॥
नाम अक्रूर गुण क्रूर तुम्हारो दीननको कित मारोजी ॥
करिहो सूनो भवन हमारो कछु तो दया उर धारोजी ॥ १ ॥
रोवत वदन रोहिणी मैया ब्रजजीवन दोउ भाईजी ॥
भये निठुर अक्रूरहि मिलके घरहूँ आवत नाईजी ॥
कहा करों कासों कहूं अब को राखे गहिबाईजी ॥
ऐसे दुखित भई महतारी शोच रही मन माईजी ॥ २ ॥

दोहा–जहाँ तहाँ विलखी कहैं, अति व्याकुल ब्रजवाम ॥
धृक जुर हैं सखि प्राणतनु चलन चहत घनश्याम॥

चौ०-चलन चहत घनश्याम परस्पर कहति सकल ब्रज नारीजी
कहां वह सुख हरिको सँग सजनी शरद रैनि उजियारीजी ॥
हरिमुख शशि छबि आनँदकारी लखि दृग रहे सुखारीजी ॥
पियत अधर रस मनहिं अघाई हरि गरबहियाँ डारीजी ॥ १ ॥
जग उपहास सह्यो जिहिं लागी कुल मर्यादा डारीजी ॥
करी कठिन विधि कर्म कुचाली छूट्यो चहत मुरारीजी ॥
कहूं सखी फिर कबहूं ऐसे मिलि हैं श्रीबनवारीजी ॥
कहिहैं बहुरि बात हरि हँसि अब लागत निठुर विहारीजी ॥२॥

दोहा–निशि दिन कर उर वज्र सम, अब सहिहैं दुख प्रान ॥
एक कहतरी सुन सखी; अब नाहिं जैं हैं कान्ह ॥

चौबोला–अब नहिं जैंहै कान्ह यशोमति पै सखि जान न पाईजी
कहा करिहैं अक्रूर हमारो फिर जैहैं पछिताईजी ॥
मोहिं जिय विश्वास सखी हरि हमें तजि जैहैं नाईजी ॥
छांड़ि यशोमति पास लेहिंगे कहा मधुपुरी जाईजी ॥ १ ॥
सुन ताकी वाणी सब नारी धरचो तनक मन धीरैजी ॥
जो रंग राची श्याम सुन्दरके सो जाने यह पीरैजी ॥

करत नन्द उपनन्द विचारै अरु तहँ सकल अहीरैजी ॥
को जाने कहा नृप मनमाई अति बालक बलबीरैजी ॥ २ ॥
दोहा—नृप आयसु सो नामिटै, अति बालक दोउ भाइ ॥
भये सकल व्याकुल तहां, शोच रहे नँदराइ ॥
चौ०-शोच रहे नँदराइ तबै इक बोल्यो गोप पुरानोजी ॥
कहन लग्यो परताप हरीको उरमें राखिसहानोजी ॥
कहताकि मो मनमें यह आवै करो कहत सो कान्होजी ॥
इनको बालककर मति जानो कहे गर्ग परमानोजी ॥ १ ॥
ये करता हरता सबहीके तब कहि गर्ग सुनायोजी ॥
निज गिरि करधर ब्रजहि बचायो पुनि बैकुंठ बतायोजी ॥
जाहि गयो सुरपति[1] शिरनाई नाग नाथ लेआयोजी ॥
वरुण धाम देखी प्रभुताई सो तुमहीं लखि पायोजी ॥ २ ॥
दोहा—कितिक धनुष हरि तोरि हैं, कहा कंस भूपाल[2] ॥
जो करिहैं कछु कपट तो, सब समरथ गोपाल ॥
चौ०-सब समरथ गोपाल हरी अरु हलधर दोऊ भाईजी ॥
हरषे सुनत अहीर समुझि सब हरिप्रताप मनमाईजी ॥
सब लायक[3] बलबीर धीर कछु भयो हृदयमें आईजी ॥
कहति यशोमाति अति अकुलाई रहहू कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
क्यों बलराम कहत तुम नाहीं तुम विन मैं मरजाईजी ॥
कहत राम सुनि यशुमति माई बारो नाहिं कन्हाईजी ॥
मतिहि कंस भय व्याकुल होवे हरिको कछु डर नाईजी ॥
प्रथमहिं बकी कपट कर आई विष कुच सों लपटाईजी ॥ २ ॥
दोहा—चारहि दिनके तब हरी, तो देखतहिं नशाइ ॥
शकट तृणावर्त वत्स बक, अघ, केसी, दुखदाइ ॥

१ इंद्र । २ राजा । ३ योग्य ।

चौ०-अघ केसी दुखदाय एकही पलमें दिये नशाईजी ॥
विष जलते सब सखा उबारे गिरिको लियो उठाईजी ॥
हरि सन बली और कोउ नाईं मति डरपै मनमाईजी ॥
हम बालक कहा तुमहिं सिखावैं शीघ्रहि ऐहैं जाईजी ॥ १ ॥
सुने चरित हरिके तब जननी हृदय रही विलखाईजी ॥
जो कछु करैं सो सत्य प्रभू अब मन मन रही पछिताईजी ॥
मैं ले जैहों संग हरीको कह्यो नन्द समुझाईजी ॥
लै ऐहों तुरतहि बहुरि यहां धनुषयज्ञ दिखराईजी ॥ २ ॥

अथ मथुरागमन लीला।

दोहा–ऐसेहिं बीती रात सब, भयो प्रात तब आय ॥
लीने गोप बुलाय सब, कह्यो महर नँदराय ॥

चौबोला–कह्यो महर नँदराय दधिहि घृत लेवहु भारभराईजी॥
नृपति भेट हित धरहु सँजोई चलहु सकल सँगभाईजी ॥
ग्वाल सखा सुनि कह अकुलाई मधुपुरी जात कन्हाईजी ॥
परचो शोर ब्रज घर घर माईं हरिसुखदेखन धाईजी ॥ १ ॥
सजत ग्वाल चलवेको साजैं दुहत न कोऊ गाईंजी ॥
जोतहु तात तुरत रथ अबहों कह्यो श्याम सुखदाईजी ॥
सुफलक सुत आयसु जब पाई, तब रथ लियो पलनाईजी ॥
अक्रूरहि तजि नेकहु न्यारे, होत न दोऊभाईजी ॥ २ ॥

दोहा–देखि यशोमति दुखित अति, परी धरणि मुरझाय ॥
अकुलानी व्याकुल परी, अतिहि रही बिलखाय ॥

चौ-०अतिहि रही बिलखायकहन लगी मोहितजतसुखदाईजी ॥
जातकिये सूनो ब्रज प्यारे कहा तुम्हारे मनभाईजी ॥
यह अक्रूर ठगोरी लाई मोहे बाल कन्हाईजी ॥

हे अक्रूर हरे मो बालक तुम्हें बूझिये नाईजी ॥ १ ॥
विरध समयकी लई लकुटिया मेरो श्याम विहारीजी ॥
लाभ कछू यामें तुम पायो देखहु मनहिं विचारीजी ॥
क्रूर भये इत आय तुमहिं अब दियो धर्म डर डारीजी ॥
चलत जान चितवत ब्रजनारी व्याकुल सुरत विसारीजी ॥२॥

दोहा—चित्रपूतरीसी रही, भई सखी सब दीन ॥
श्याम विरह व्याकुल अतिः, नीर हीन जिमि मीन ॥

चौबो०-नीरहीन जिमिमीन दुखित अति वदन गयो कुम्हिलाईजी
मानो हीम परसि सो तुरतहि गये कमल मुरझाईजी ॥
कहत परस्पर वचन अधीरा रह्यो दृगन जल छाईजी ॥
लिये जात अक्रूर हमारो जीवन प्राण कन्हाईजी ॥ १ ॥
करहु सखी कछु यत्न सँवारी जात चले सुखदानीजी ॥
गयो दूर रथ रह्यो न जैहै पुनि रहियो पछितानीजी ॥
परिहरिये यश आश जीयकी लाज पंचकी कानीजी ॥
करिये विनती श्यामसुन्दर सों सखि समयो पहिचानीजी ॥२॥

दोहा—पाँयन पर हरि राखिये, होनी होय सो होय ॥
समय चूक उर शालि हैं, नातर मरिहैं रोय ॥

चौबोला-नातर मरिहैं रोय कहाति अंतर्यामी बनवारीजी ॥
विरह विकल गोपी जन जानी हरिजनके सुखकारीजी ॥
चितये नैन कमलदल लोचन सोच विमोचन हारीजी ॥
मृदु मुसकान ठगोरी डारी श्याम ठगी ब्रजनारी जी ॥ १ ॥
रहगई चितवत वचन न आयो चढ़े रथहि सुखदाईजी ॥
हरिको नाम सुमिर मनमांई चढ़े अक्रूरहु आईजी ॥
देखि यशोमति टेर लगाई पुत्र पुत्र कहि धाईजी ॥
बिछुरत लाल भेट मुहि देहू चितवहु इतहि कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–राखहु जननी बोधि करि, मैं बलिजात कन्हाइ ॥
बहुरो चढो विमान हरि, कहति यशोमति माइ ॥
चौबोला-कहति यशोमति माइ जन्मको लेहों सुखहि निहारीजी॥
बहुरो ब्रजमें होत अँधेरो जात चले बनवारीजी ॥
ऐसे कहि ग्वालनको फेरे घेरहुगाय तुम्हारीजी ॥
विलखत विकल राम महतारी अति व्याकुल ब्रजनारीजी ॥१॥
देखि दुखित ब्रजलोग हरी सब और यशोमति माईजी ॥
तब हरि कहि सुखदियो सबनको बहुरि मिलूंगो आईजी ॥
तब चितये मथुरा तन मोहन धरणी हित सुखदाईजी ॥
कह्यो दृगन सनकारि हाँकरथ अक्रूरहि मुसकाईजी ॥ २ ॥
दोहा–बार बार यशुमति कहैं, राखहु कोउ गोपाल ॥
सुफलकसुत वैरी भयो, हरे आय मम बाल ॥
चौ०–हरे आय मम बाल कंस बर हरहु द्रव्य सब गाईजी ॥
कै करि मोहिं बंदि में डारो रहै श्याम घर माईजी ॥
खेलहिं मो नैननके आगे मेरो बाल कन्हाईजी ॥
यह कहि महि लोटत अकुलाई दुखित यशोदा माईजी ॥ १ ॥
रहगइ प्रेम वियोगन ठाढी गोपीजन मुरझाईजी ॥
जिमि कुमुदिन गण नीर विहीनी रवि प्रकाश कुम्हिलाईजी ॥
बहुरों मिलन कठिन जियजानी श्याम विमुख दुख पाईजी ॥
बल बुध थकित श्रवत जल लोचन संग चलनं मन चाईजी ॥
दोहा–खेड़ेलों मिल सब गईं, अतिहि दुखित बेहाल ॥
ब्रजताजि हरि मथुरापुरी, कियो गमन गोपाल ॥
चौबोला–कियो गमन गोपाल लिये मधु अक्रूरहि चले जाईजी॥
माखी जिमि सब दई विडारी रहीं सकल पछिताईजी ॥
जब लागि धूरि दृष्टि में आई देख रही टकलाईजी ॥

भये ओट जब दीसत नाईं मुर्छे परी विलखाईजी ॥ १ ॥
कहति गयो रथ दूर सखी अब धूर न परत लखाईजी ॥
मनहर लेगयो श्याम सलोनो कहा करैं ब्रज माईजी ॥
लखन चहत पाछेई लोचन परत न आगे पाईजी ॥
भईं न पवन संग उड़ि जाती विकल विरहरस छाईजी ॥ २ ॥

दोहा—रजहूनहिं मुहिं विधि करी, रहती पदलपटाइ ॥
भईं न लकरी रथहुकी, जाती संग कन्हाइ ॥

चौबोला—जाती संग कन्हाइ आज सखी बिछुरे हरि सुखदाईजी॥
तो परतीत दृगनकी नाशी गये न संग कन्हाईजी ॥
कृष्ण भयो नहिं भये अभागे लोभी रूप कन्हाईजी ॥
सो करनी कछु इन नाहिं कीनी वृथा मीन छबि पाईजी ॥ १ ॥
धनि धनि मीन प्रीति पथ सांची काचे नैन हमारेजी ॥
अब ये सहत जीय यह सोचत उमगि उमगि जलडारैजी ॥
हरि बिन अब लखिये ब्रजसूनो सहिहैं अति दुख भारैजी ॥
काऊ चलत गह्यो रथनाई रहि गईं करत विचारै जी ॥ २ ॥

दोहा—वृथा लाजकरि जगतकी, दीनोंकाज बिगारि ॥
समय चूक अब सबसहो, दुसह विरह दुखभारि ॥

चौबोला-दुसह विरह दुखभारि सहो यों ब्रजतिय मन पछिताईजी
देखि यशोदहि दीन सकल मिल नन्दधाम में ल्याईजी ॥
हरि विन सुख संपति सब सपनो ब्रजजन रहे दुख पाईजी ॥२॥
रहे प्राण इहि आश श्याम कहि बहुरि मिलोंगो आईजी ॥ १॥
खग मृग विकल जहाँ तहाँ बोले गैया वत्स रँभावेजी ॥
ब्रजकी दशा कहत नहिं आवे तरु वेली कुम्हिलावेजी ॥
ब्रजवासिनको धीरज देके नन्द गोप तब जावेजी ॥
ग्वाल सखा हरिके सुखदाई दरशन लगि सब धावैजी ॥ २ ॥

दोहा–उत अक्रूर सोचत भयो, भलो काज कियो नाहिं ॥
अति कोमल भैया दोऊ कहत मनहिं मन माहिं ॥
चौ०–कहत मनहिं मन माहिं बलहि अरु मोहन ये दोउ भाईजी
अति कोमल नव नन्दपियारे जननी रही दुख पाईजी ॥
व्याकुल सबै घोषकी नारी मैं नृपपहिं लेजाईजी ॥
मो देखत मारैगो इनको धृक मुहिं यह बुधि आईजी ॥ १ ॥
जाहुँ लिवाय इन्हें ब्रज फेरी सुफलकसुत मन आईजी ॥
कंस आज मारै बरु मोही लेजैहों हरि नाईजी ॥
इहि अंतर यमुना नियराई ठाढो कियो रथ तहाँईजी ॥
अन्तर्यामी हरि भगवाना भक्त हृदयकी पाईजी ॥ २ ॥
दोहा–भूखलगी तब हरि कह्यो, हमें कलेऊ देहु ॥
करि यमुना स्नान पुनि, तात तुमहुँ कछु लेहु ॥
चौबोला–तात तुमहुँ कछु लेहु सुनतही मधुर वचन सुखदाईजी
सुफलकसुत तब दियो निकारी मेवा और मिठाईजी ॥
भोजन करत तहाँ दोउ भाई सो छबि कहत न आईजी ॥
आप स्नान करन मन कीनो पैठि यमुनके माईजी ॥ १ ॥
जबहीं शिश नीरमें डारचो अचरज एक लखाईजी ॥
राम कृष्ण रथ पर दोउ भाई जलभीतर छबि छाईजी ॥
चकित भयो जलते शिरकाढ्यो देख्यो रथ तिहिं ठाईजी ॥
बहुरौ बूड़ि सलिलमें पेख्यो वैसोई रथ दरशाईजी ॥ २ ॥
दोहा–क्षण जलमें क्षण प्रगटही, रह्यो अक्रूर निहारि ॥
पुनि पुनि संभ्रम बुद्धि करि, मन मन रह्यो विचारि ॥
चौ०-मन मन रह्यो विचारि जाग्रत यह किधौं स्वप्न मुहिं आयाजी
कैधौं मोमाति में भ्रमहोई कै यह रथकी छायाजी ॥
कैधों यह हरिकी कछु माया सो कछु भेद न पायाजी ॥

भयो विकल मति थित कछु नाईं पुनि देखत अतुरायाजी॥ १ ॥
जब अक्रूर बहुत अकुलायो रही देह सुधि नाईंजी ॥
निज स्वरूप तहँ श्याम दिखायो लखत भयो जल माईंजी ॥
सकल देव ठाढे हरि पाई रहे चरण चित लाईंजी ॥
नमित कंधकर संपुट कीने देवन स्तुति गाईंजी ॥ २ ॥
दोहा—शेष सहस फणि मणिन युत, जगमग ज्योति अनूप ॥
श्वेत वरण पट नील युत, राजत हलधर रूप ॥
चौबोला-राजत हलधर रूप पीत पट नील जलजतनु श्यामाजी॥
चारु अरुण पंकज दल नैना चितवन छविकी धामाजी ॥
चारु तिलक बरभाल विराजै कुटिल भौंह अभिरामाजी ॥
चारु तिलक नासा अति सुन्दर सोभित सुभग ललामाजी ॥१॥
चारु कपोल अधर अरुणाई चारु दशन छवि छाईंजी ॥
सुन्दर श्रवण चिबुक दरग्रीवा सोछवि वरणि न जाईंजी ॥
उदर विसाल श्रीचिह्न विराजै रोमावली सुहाईंजी ॥
नाभि गंभीर सुभग कटि सुन्दर भुज छवि अति अधिकाईंजी॥२॥
दोहा—जंघ गुलफ सुन्दर छविः, पद नख शशि छविछाइ ॥
नख शिख अनुपम रूप हरि, दिव्याभरण सुहाइ ॥
चौ०—दिव्याभरण सुहाइ मुकुट कुंडल सोभित छवि भारीजी
मुक्तमाल वनमाल रसाला पीतांबर रहे धारीजी ॥
कौस्तुभमणि अँग अति छविराजै अँगुरिन मुँदरी न्यारी जी ॥
शंख चक्र गदा पद्म बिराजै छुद्रिघंटि दुति कारीजी ॥ १ ॥
मणिन जटित नूपुर शुभकारी सो छवि कहिय न जाईंजी ॥
नंद सुनंदादिक सब जेते दिव्य पार्षद आईंजी ॥
कर जोरे ठाढे सब ते ते परिचर्या के माईंजी ॥
भक्तन सहित सुरासर जेते सब ठाढ़े तिहिं ठाईंजी ॥ २ ॥

दोहा–माया निज माया सहित, ठाढी जोरे हाथ॥
अंबरीष प्रहलाद बलि, भक्त भक्त सब साथ॥
चौ०-भक्त भक्त सब साथ शिव अज सहित सुरन सब आयेजी॥
सनकादिक नारद मुनि ज्ञानी कर जोरे छबि छायेजी॥
विश्वकर्म धर्म यम काला चंद्र कुवेर सुहायेजी॥
वंदन करत चरण धर माथा वेदनमें यश गायेजी॥१॥
कृष्ण प्रभाव प्रगट सब देख्यो सुफलकसुत जलमाईजी॥
जान्यो कृष्ण ब्रह्म अविनाशी चिंता सकल नशाईजी॥
मोहिं कृपाकरि दरशन दीनो करि प्रणाम शिरनाईजी॥
स्तुति करन लग्यो तिहिं ठाईं अति आनँद मनमाईजी॥२॥

लावनी।

सकल विश्व तुमहीं विस्तारो विश्वरूप तुम्हरो नामी॥
अन्तर्यामी नारायण सकल विश्वके तुम स्वामी॥
टेक–निर्गुण निर्विकार अविनाशी लीला सगुण गुणाकारी॥
आदि कारण सबहिके तुम सकल विश्व यह विस्तारी॥
नाग नर सुर असुर अग जग यह लीला तुम्हरीसारी॥
जाहिं जिहीं विध करो प्रभू तुम माया तुम्हरी अतिभारी
योग यज्ञ अनेक कर्मन रटत तुम्हें श्रीपति स्वामी॥
अन्तर्यामी नारायण सकल विश्वके तुम स्वामी॥१॥
जैसो जाको भाव तैसोई तुम्हहींते सो फल पावै॥
अतिहि अगाधा अपारी पारनहीं तुम्हरो आवै॥
शंभु शेष गणेश विधना नेति नेति तुमहीं गावै॥
भक्तन हित हरि धारि नरतन विविध भांति लीलाभावै॥
मच्छ कच्छ वाराहवपुतुम धरचोरूप जगके स्वामी॥

अन्तर्यामी नारायण सकल विश्वके तुमस्वामी ॥ २ ॥
होय नरहरि भक्त प्रणकरि सुरहितबपुबावनकीनो ॥
भृगुवंश मणि अभिरामतनुधर मान क्षत्रिनकोहरलीनो
राम रूप निपात रावण राज्यविभीषणकोदीनो ॥
कंस अरी अरु यदुवंश भूषण कृष्ण वपुछविरंगभीनो ॥
बोध कलंकि दशहि निजरूपा म्लेच्छहारि परगटनामी
अन्तर्यामी नारायण सकल विश्वके तुमस्वामी ॥ ३ ॥
तव गुण रूप अनंत कृपाला मैं अजान जानत नाईं ॥
यों स्तूती सुफलकसुत करै जोर पद शिरनाई ॥
तबहिं श्यामसुन्दर सुखदाई अन्तरहित भयेतिहिंठाईं ॥
निकरयो जलते तबै अक्रूर मनहिं में अकुलाई ॥
लखी कृष्णकी तब प्रभुताई जाने विहारन सुखधामी ॥
अन्तर्यामी नारायण सकल विश्वके तुमस्वामी ॥ ४ ॥

दोहा—चढ्यो अक्रूर अति हर्ष मन, आनँद उर न समाइ ॥
भूल्यो जप तप नेम व्रत, वचन कहे नहिं जाइ ॥

चौबोला-वचन कहे नहिं जाय मगन बल राम श्याम रसमाईजी ॥
कहत मनाहिं मन ये अविनाशी पूरण ब्रह्म सदाईजी ॥
हरण करण समरथ भगवाना इन समान कोउ नाईजी ॥
करिहैं हरि कंसहि निरवंशा यह निश्चय मन आईजी ॥ १ ॥
चल्यो हाँकरथ तब हरषाई नँद उपनन्द मिले आईजी ॥
हरि अक्रूरहि बूझत जाहीं करि सयान मुसकाईजी ॥
कही तात तुम अब हरषाने प्रथम गये मुरझाईजी ॥
कहो सांच हमसों सो बानी तब अक्रूर सुनाईजी ॥ २ ॥

दोहा—धन्य धन्य प्रभु श्रीपती, गुणन अगाध अनंत ॥
निगम नेति जिहिं गावहीं, शेष न पावत अंत ॥

चौबोला–शेष न पावत अंत नाथमैं कहां लगि करों बडाईजी ॥
करिकैं कृपा जानि निजदासा दियो दरश जलमाईजी ॥
कहा मोहिं बूझतहो स्वामी तुम त्रिभुवनके राईजी ॥
करता हरता आप जगतके सकल लोक सुखदाईजी ॥ १ ॥
कहा कंस कहा मल्ल कुबलिया संशय सकल नशाई ॥
अब करिहौ निर्वंश कंसको यह मेरे मनभाईजी ॥
सुनि मोहन सुफलकसुत वाणी भये प्रसन्न सुखदाईजी ॥
जातचले रथ पर दोउ भाई सन्मुख मधुपुरी आईजी ॥ २ ॥

दोहा–तरण किरण महलन छबिः, जग मग ज्योतिलखात ॥
अक्रूरहि बूझत हरिः, यहै मधुपुरी तात ॥

चौबोला–यहै मधुपुरी तात श्रवणन सुनत रहतहे जाईजी ॥
देखों आज दृगनमें ताई छबि अनूप सुखदाईजी ॥
कंचन कोट कंगूरा मानहुँ बैठे मदन सुहाईजी ॥
बन उपबन पुरके चहुँ पाई मेरे मन अतिभाईजी ॥ १ ॥
लखि लखि हरि मथुराकी सोभा पुलकित मन सुख पाईजी ॥
यहँ जन्मे जिय में करजाने ताते अति हरषाईजी ॥
बाजत नौबति नृपति दुवारा होत शब्द छबि छाईजी ॥
नगर शोर सुनि रुचि उपजावै अति आनँद मनमाईजी ॥ २ ॥

दोहा–ध्वज पताक तोरन कलस, जहँ तहँ ललित वितान॥
मुक्ता झालर झलमलै, को करिसकै वखान ॥

चौ०-को करिसकै वखान श्याम जिहिं निरखि निरखि हरषाईजी
ललित लाल निजकर पल्लवसों बलहि दिखावत जाईजी ॥
भई आज मधुपुरी सनाथा यों अक्रूर सुनाईजी ॥
पति आगम सोहति तिय जैसे तुमहिं विलोकि रहाईजी॥ १ ॥
कसी कोट कटि किंकिणि मानों उपबन बसन रँगायेजी ॥

मंदिर चित्र विचित्र सु जानो भूषण अंग सुहायेजी ॥
जहँ तहँ विविध बाजने बाजैं सो नूपुर ध्वनिलायेजी ॥
धामनध्वजा विराजत हैं इमि जिमि अंचल फहरायेजी ॥ २ ॥
दोहा—कनककलश सोहत जनुः प्रगट कुचन छबिछाइ ॥
उच्चअटन षटऋतु मनहु, आनँद उमँगि भराय ॥
चौबोला—आनँद उमँगि भराई मोखा द्वार दरीची द्वारीजी ॥
लागे विद्रुम कुलिश किंवारा अति छबि आनँदकारीजी ॥
मनहुँ तुम्हारे दरशन लागी नैननरही निहारीजी ॥
मुक्ताझालर खिरकिनराजै हँसति मनहुँ सुकुमारीजी ॥ १ ॥
सोहत मनहुँ श्रवण शुभकारी जहँ तहँ वापी कूपैजी ॥
जनु तुम पंथ निहारत भूली जगमग ज्योति अनूपैजी ॥
नीके रही निहार तिहारो पुरी परम रुचि रूपैजी ॥
असुर कंसको जितिये स्वामी होउ इहांके भूपैजी ॥ २ ॥
दोहा—ललित वचन अक्रूरके, सुनि विहँसे नँदलाल ॥
जाय निकट मथुरा पुरी, पहुँच्यो रथ तत्काल ॥
चौबोला—पहुँच्यो रथ तत्काल नगरके निकट पहूँचे जाईजी ॥
सुफलकसुवन सहित दोउ भाई गौर श्याम सुखदाईजी ॥
कोटिन काम निरखि छबिलाजै कंस दूत लखि धाईजी ॥
समाचार कहि नृपहि सुनाये आये हैं दोउ भाईजी ॥ १ ॥
सुनतहि नाम उठ्यो अकुलाई तुरतहि खड्ग उठायेजी ॥
रंगभूमिके महलन आयो गज मुष्टिक बुलवायेजी ॥
और सुभट सब बोल पठाये तिनसों कहि समुझायेजी ॥
ठांवहिं ठांव रहो सब कोऊ बहुतक ढिग बैठायेजी ॥ २ ॥
दोहा—धनुष पास बहुतक सुभट, राखे तहाँ सजाय ॥
आये कहँलगि देखियो, पूँछत दूत पठाय ॥

चौबोला–पूँछत दूत पठाय कंस सब सैना दई सजाईजी ॥
द्वारे विविधि बाजनेबाजैं डरत मनहिं नृपराईजी ॥
सूखत अधर वदन कुम्हिलायो हृदय रह्यो भयपाईजी ॥
नन्द महरके सुत सुनि आवत मारनकी मनमाईजी ॥ १ ॥
पर्यो शोर मथुरा पुरि माईं आवत नन्दकुमारैजी ॥
सुनि धाये सब नर अरु नारी गृहको काज विसारेजी ॥
कोऊ धावन कोउ अटनपर लाज साज डर डारेजी ॥
कोउ धावत कोउ फिरत गलिनमें कोऊ खरी दुवारेजी ॥ २ ॥

दोहा–कियो प्रवेश हरि नग्रमें, असुर निकंदन राइ ॥
इँन्दु वदन रथपर दोऊ, गौर श्याम सुखदाइ ॥

चौबो०-गौर श्याम सुखदाइ मुकुट अरु कुंडल आति छबिछाई जी
कुंडल एक राम श्रुति राजै सो छबि बरणि न जाईजी ॥
नील पीत बर वसन निकाई अरु वनमाल सुहाईजी ॥
निरखि सकल पुरजन अनुरागे जावत रथ सँग धाईजी ॥ १ ॥
युगल रूप लखि होय सुखारी इकटक रही निहारीजी ॥
चढ़ीं अटारिन देखहिं गोरी कारि आँनद मन भारीजी ॥
आति आरत दरशनकी प्यासी सुनि सुनि गुण सब नारीजी ॥
शशि आनन मृदु वेस किसोरी लखि चकोर भई सारीजी॥२॥

दोहा–पुलकि गात आँनद भरी, कहाति परस्पर वैन ॥
राम श्याम येही सखी, सुनत रही दिन रैन ॥

चौबोला–सुनत रही दिन रैन सखी हम इनकी बहुत बडाईजी॥
नन्द गोपके ये सखि ढोटा गौर श्याम दोउ भाईजी ॥
मणि कंचनके शिखर दोउये कीधों हंस सुहाईजी ॥
प्रगटे हैं सुखदेन ब्रजहिमें कै त्रिभुवनके राईजी ॥ १ ॥

१ अनेक प्रकारके । २ ओष्ठ । ३ चंद्र । ४ पुत्र ।

धनि धनि गोकुल गांव सखी धनि राम श्याम सुखकारीजी ॥
प्रगट प्रीति पाली जिन इनसों धनि धनि ब्रजकी नारीजी ॥
सुनत हुती पुरुषारथ जिनके देखहु नैन निहारीजी ॥
अतिहि अनूप भेष नट सोहै कोटि मदन बलिहारीजी ॥ २ ॥

दोहा–पूर्व जन्म सुकृत[1] किये, सो फल पायो आय ॥
युगल रूप अभिराम छबि, निरखे नैन निकाय[3] ॥

चौबोला–निरखे नैन निकाय प्रथमहीं इनहीं बकी नशाईजी ॥
शकट तृणा वत्सासुर मारे बका अघा दुखदाईजी ॥
इन्द्र कोप कियो ब्रज ऊपर लीनो गिरिहि उठाईजी ॥
केशी मार बहाय दियो इन काली द्वीप पठाईजी ॥ १ ॥
धेनुक और प्रलंबा दोऊ सो मारे बल भाईजी ॥
अब अक्रूर पठै नृपराई लीने इनहिं बुलाईजी ॥
रंगभूमिरचि कियो अखारो कहा धों नृपमन माईजी ॥
जननी[4] धीर धरेधौं कैसे दीने बाल पठाईजी ॥ २ ॥

दोहा–देहिं अशीश मनाहिं विधि, न्हात न उखरहु बारि ॥
लेति बलैया वारिके, आंचर यह कहि नारि ॥

चौ०-आंचर यह कहि नारि कहाति सब पुनि पुनि पुरकी वामैजी
करिहै इनसों कपट नृपति तो जैहै ताको नामैजी ॥
देखि दरश इनकोरी आली सफल भये मन कामैजी ॥
देत अशीश सुनाय सकल मिल कुशल जाहु निज धामैजी॥ १॥
एक कहतिमैं सुन्यों सो आली तुमको देत सुनाईजी ॥
ये वसुदेव कुँवर सखि दोऊ लोगन मुख सुन पाईजी ॥
कंस त्रास कारि मात पठाये राखे नन्द दुराईजी ॥
अति हितकरि यशुमति पय प्याये तिनके बाल कन्हाईजी ॥२॥

---

१ पुण्य । २ आनंद मद । ३ समूह । ४ महतारी ।

दोहा—गौर अंग हारन प्रलंब, कुंडल श्रुति इक बाम ॥
तेहि रोहिणी सुवन अलि, महाबली अभिराम॥
चौबोला-महाबली अभिराम तबहि बलरामहिं नाम धरायाजी ॥
श्याम सुभग तनु उर वनमाला शीश मुकुट छबि छायाजी ॥
जिन्हें हेतु करि सब ब्रजबामा इन सँग नेंह निभायाजी ॥
जिनके चरण छुवत बड़ शापी सुगति सुदरशन पायाजी ॥ १॥
अमित प्रभाव कृष्ण सब गावैं सुमिरतही सुख आवेजी ॥
कहत देवकी सुत सब इनसों कंसहु मन भय ल्यावेजी ॥
आये हैं अक्रूर संग अब मात पिता सुख पावेजी ॥
रंगभूमिरिपुजीत अली ये यदुकुल सुबस बसावेजी ॥ २ ॥
दोहा—अति प्रिय बानी तासुकी, सुनत मुदित पुरनारि ॥
विधिसों ऐसो होय सब, मांगति गोद पसारि ॥
चौबोला-मांगति गोद पसारि देत सुख सबहिन यों सुख दाईजी॥
उतरे जाय बाग इक पावन सहित नंद दोउ भाईजी ॥
तब सुफलकसुत सों हरि भाष्यो कहहु तात तुम जाईजी ॥
आये श्याम राम दोउ भाई कंसहि देहु जनाईजी ॥ १ ॥
बहुरि नृपति जब हमहिं बुलैं हैं तब हमहूं तहाँ आईजी ॥
तब अक्रूर जोरि युग पाणी विनती हरिहि सुनाईजी ॥
मुहि न्यारो क्यों करत गुसाईं राखहु चरणन माईंजी ॥
निज सेवक अपनो करि मानो कंस दूत मैं नाईंजी ॥ २ ॥
दोहा—अब पावन हरि कीजिये, चलि मेरो निजधाम ॥
ऐहौं तुम्हरे एक दिन, हँसि बोले घनश्याम ॥
चौबोला—हँसि बोले घनश्याम ऐसे कहि दिये अक्रूर पठाईजी ॥
विदा होय चले सुफलकसुत गये जहां नृपराईजी ॥
रथते उतरतही दोउ भाई लीने ग्वाल बुलाईजी ॥

गये यमुन तट नगर निवासा सखन सहित सुखदाईजी ॥ १ ॥
बाल वैस शोभित दोउ भाई बालहि सखा सुहावैजी ॥
गौर श्याम शोभा लखि सुन्दर कोटि मदन बलिजावैजी ॥
अतिहि पवित्र चरित्र हरीके सो विहारन को पावैजी ॥
अमित गुणनकी खान दुष्टदल भक्तनके मनभावैजी ॥ २ ॥

अथ रजकवधलीला।

दोहा—नृपति रजक धोवै वसन, आवत लखि नँदलाल ॥
हँसत कहत मन गर्व ये, कंसराय उर शाल ॥
चौ०-कंसराय उर शाल रजक यों आपुसमें बतरावैजी ॥
बहुत अचकरी करि ये आये लघु लघु वैस लखावैजी ॥
जो कोउ दनुज जात इन पाई तो ये तुरत नशावैजी ॥
अति खोंटो जिहि नाम कन्हाई अब नृप याहि मरावैजी ॥ १ ॥
है बलभद्र महा अतिखोटो सोऊ बली बतायाजी ॥
ताऊको मारेगो राजा याही काज बुलायाजी ॥
प्रभु अंतर्यामी सोइ जानी जो वे सब बतरायाजी ॥
ग्वालन सहित गये तिन पाई हरि मुख वचन सुनायाजी॥ २ ॥
दोहा—कह्यो वसन कछु हम चहैं, पुनि तुम देहैं आय ॥
तिनहिं पहर हम नृपति पै, आवत तहँलोंजाय ॥
चौबोला—आवत तहँ लोंजाय नृपति सो जो पहरावन पाईजी ॥
तामें ते कछु तुमको देहैं ऐसे कहत कन्हाईजी ॥
कै पहिलेही लेहो हमसों कहो सोइ समझाईजी ॥
हँस्यो सुनतही हरि मुख वाणी कह्यो वचन गरबाईजी ॥ १ ॥
होय रहेहो बालिके बकरा माँगत वसन निकाईजी ॥
ह्वै आवहु तुम नृपति द्वार लों राखत घरिहि बनाईजी ॥

जो भावे सोई तब दीजो जब लीजो पट आईजी ॥
अहिर जात कामरी उढैया बन बन चारत गाईजी ॥ २ ॥
दोहा–नटको भेष बनायकै, चले नृपतिके पास ॥
नृपति वसन पहरन चहै, पहरावनिकर आस ॥
चौबोला–पहरावनिकर आश आश तुम जीवनकी अब चावौजी
खोवत चहत अबहिं पुनि सोऊ अब जीवत नाहिं जावौजी ॥
यह सुनि श्याम कह्यो पट देहू तुमहिं भलाई पावौजी ॥
हम माँगत हैं सहजहि तुमसों तुम काहे सतरावौजी ॥ १ ॥
सहज बातको रिस नाहिं कीजै ऐसे कह्यो कन्हाईजी ॥
ये नृप बसन नहीं तुम जाने बोल्यो रजकरिसाईजी ॥
अबहीं सुनत क्षणकमें मारै नन्दहि बन्दि रखाईजी ॥
जाहु चले ह्यां ते अब नीके कैमारो इहि ठाईजी ॥ २ ॥
दोहा–करत अचकरी मोहिं सों, नियरायो कहा काल ॥
कंस दुहाई कहत हों, दुहुँन मारिहों हाल ॥
चौबोला–दुहुँन मारिहों हाल सुनतही कियो श्याम सो ख्यालैजी
पकरि भुजा पटक्यो तत्कालै जनहित दीनदयालैजी ॥
तुरत गयो तनु त्यागि स्वर्गको कीनो रजक निहालैजी ॥
जन्म मरण ते रहगयो सोऊ ऐसो गुण गोपालैजी ॥ १ ॥
संगी ताके सबहि रजक सो लखिकै गये पराईजी ॥
श्याम प्रथमही वसन नृपतिके लीने सबन लुटाईजी ॥
रजक मार सब वसन लिये हारि दिये ग्वाल पहराईजी ॥
विविध रंग बहुभांति नवीने जो जाकी रुचि आईजी ॥ २ ॥
दोहा–चले तहां ते हर्षि सब, मिल्यो दराजि इक आइ ॥
प्रभुहि देखि अति हरष मन, रह्यो चरण शिरनाय ॥
चौबोला–रह्यो चरण शिरनाय जोर कर हरिसों विनय सुनाईजी

घाट बाढ जे वसन हुते ते दीने सुभग सजाईजी ॥
ताकी कृतहि मान प्रभु लीनो अभयदान दियो ताईजी ॥
पुनि इकमाली हतो सुदामा गये तहां सुखदाईजी ॥ १ ॥
तुरत आय तिन पद शिरनायो युगल निरखि सुखपायेजी ॥
आदर सहित सदनमें आने चरण धोय बैठायेजी ॥
नृपति हेतु जे हार बनाये प्रेम सहित पहरायेजी ॥
हाथ जोर बहु विनय सुनाई जै जै कहियशगायेजी ॥ २ ॥

दोहा–मोपै बहुत कृपाकरी, दीनबंधु भगवान ॥
सुनि सप्रेम ताके वचन, रीझे श्याम सुजान ॥

चौबोला–रीझे श्याम सुजान भक्तिको दियो दान हरिताईजी ॥
बहुरि चले आगे अति हर्षित सखन सहित दोउ भाईजी ॥
तहां पंथमें कुबजा दासी लै चंदन मिलि आईजी ॥
निरखि श्याम छबितन सुधि भूली बोली अति हरषाईजी ॥१॥
हो प्रभु दीनबंधु सुखदाई तुमहित चंदन ल्याईजी ॥
चरचों अंग तुम्हारे चंदन यह मेरे मन माईजी ॥
नृपके उर चंदन नित लाऊं कुबजा नाम कहाईजी ॥
मो जियको संताप नशायो प्रगट दरश दियो आईजी ॥ २ ॥

दोहा–अब ये मलयज लीजिये, कृपासिंधु सुखधाम ॥
पूरण कीजै नाथ मम, सफल मनोरथ काम ॥

चौबोला–सफल मनोरथ काम सुनतही अंतर्यामि कन्हाईजी ॥
भावभक्त कुबिजा पहिचानी हरिजनके सुखदाईजी ॥
भावाहिके वश त्रिभुवनराई कुब्जा निकट बुलाईजी ॥
रही श्याम छबि निरखि लुभाई पूजे हित दोउ भाईजी ॥ १ ॥
हेतु बहुत इन हमसों राख्यो बलि सों कहत कन्हाईजी ॥

१ वस्त्र। २ चंदन। ३ कामना।

हमहूं हेतु करैं कछु यासों सूधी देहुँ बनाईजी ॥
पग राख्यो पग पीठ छुवायो धरचो शीश करमाईजी ॥
नेक उठाय चिबुक गहि लीनी भई रूप अधिकाईजी ॥ २ ॥

दोहा–जाहि बनाई आप हरि, को करिसकै बखान ॥
कुबजा मन आनंद अति, भई रूप गुणखान ॥

चौबो०–भई रूप गुणखान सुन्दरी अति हरषित मनमाईजी ॥
महाकुरूप कूबरी तैसी अब लखि रतिहि लजाईजी ॥
मिले मोहिं मोहन पति जानो यह कुबजा मन ल्याईजी ॥
पुनि पुनि कमल चरण शिरनाई बहु विधि विनय सुनाईजी॥१॥
कीनी मम अति कृपा कृपाला सदन चलहु सुखदाईजी ॥
अपने चरण कमल तहँ धरिये करहु सफल मनसाईजी ॥
कंस देखि ऐहौं तुम धामा ऐसे कह्यो कन्हाईजी ॥
चले धनुष देखन दोउ भाई कुबजा सदन पठाईजी ॥ २ ॥

दोहा–ग्वाल सखा सब सुभग सँग, सजी सैन मनु काम ॥
चढ़ीं अटारिन सो छवी, निरखत हरिकी बाम ॥

चौबोला-निरखत हरिकी बाम अनूपम इन्दु बदन छवि छाईजी॥
जनु पुर उदधि तरंग अपारा सोछवि वरनि नजाईजी ॥
भई सुन्दरी कुविजा दासी कहः सब लोग लुगाईजी ॥
अंग सुधार रूप वर दीने चेटक कियो कन्हाईजी ॥ १ ॥
रजक मार सब बसन लुटाये कुबजा सुभग बनाईजी ॥
बाल भाव ये मोहत मनहीं प्रगटे देव कोउ आईजी ॥
पुरुषारथ इनके सुखदाई निशि दिन हम सुन पाईजी ॥
तैसेइ देखे नैन विहारन सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–गये धनुषशाला दोऊ, देखि चकित भट भीर ॥
आतुर शस्त्र सँभारि सब, निरखि रहे दोउ वीर ॥

चौबोला–निरखि रहे दोउ वीर धनुष ढिग ठढे असुर समुदाईजी॥
अति बल बीर धीर रण गाढे बोले सुनहु कन्हाईजी॥
सुनियत अति बल भुजा तिहारी धनुष चढ़ावहु आईजी॥
कहा करत हमसों ये हांसी बोले हरि मुसकाईजी॥ १॥
कहां धनुष अति गर्व कठोरा हम बालक दोउ भाईजी॥
शूरवीर ठाढे सब जेते ये कोउ डंड चढाईजी॥
खेलन कहौ खेल कछु हमसों सो हम तुमहिं दिखाईजी॥
ऐसे श्याम हँसत इत तिनसों उत सुफलक सुत जाईजी॥ २॥

दोहा–समाचार अक्रूर सब, कहे नृपतिसों जाय॥
आये हैं भैया दोऊ, सहित महर नँदराय॥

चौबोला–सहित महर नँदराय कह्यो पुनि घर अक्रूर सिधायाजी
रजक जाय तिहिं काल पुकारे सुनहू श्रीनृपरायाजी॥
मारे बिन दूषणहिं हमें दो बालक नँदके आयाजी॥
लिये बसन सब लूटि तिहारे ग्वालनको पहरायाजी॥ १॥
सुनताहि उठ्यो रिसाय भूप तब बोल्यो सबन बुलाईजी॥
देखो ये अति ढीठ नंदके प्रथम करी यह आईजी॥
अब मारों अवश्य दोउभाई सब ब्रज देहुँ लुटाईजी॥
नंदहि देहुँ वंदिमें आनी गये अहीर इतराईजी॥ २॥

दोहा–मैंजु बुलाये प्रीति कर, मारयो रजकहि आय॥
असुर जाय गहि ल्याहु अब, देखहु जान न पाय॥

चौबोला–देखहु जान न पाय नन्दके बालक वे दोउ भाईजी॥
ऐसे कंस कहत रिसहाई दूतन खबर जनाईजी॥
कुबजासों चंदन हरि लीनों दियो रूप अति ताईजी॥
धनुष निकट पहुँचे दोउ भाई यह सुनि गयो झुराईजी॥ १॥
बहुरि धीरधर असुर पठाये कह्यो श्यामसों जाईजी॥

पहले तोरि धनुष गोपाला बहुरो भूप बुलाईजी ॥
सुनि असुरनके वचन कृपाला बोले मन मुसकाईजी ॥
याहीको नृप हमाहिं बुलाये कियो वैर यह पाईजी ॥ २ ॥

दोहा—गहन लगे जब असुर सब, हरिको बालक जानि ॥
तबहिं श्यामसुन्दर सुखद, कछु इक उर रिस आनि ॥

चौ०-कछु इक रिस उर आन पाणि गहि तुरतहि असुर पछारेजी।
तुरतहि लियो उठाय धनुषको तोरि टूक करडारेजी ॥
तबहिं क्रोध करि उठ सब योधा मारहि मार पुकारेजी ॥
नन्दसुवन रणवीर धीर हरि असुर सकल संहारेजी ॥ १ ॥
एकहि झटक एकही पटकत एक जहाँ तहँ धावैजी ॥
ताल चटकत चमकि झटकत लखत नट छबि छावैजी ॥
एकहि पकरि फिराय पटकत भाजि सो नृपपै जावैजी ॥ २ ॥

दोहा—ख्यालहि मारे असुर सब, तोर धनुष नँदलाल ॥
चले सामने पवाँरि तकि, जहाँ कुबलिया ख्याल ॥

चौ०-जहाँ कुबलिया ख्याल चले तहँ अति हर्षित दोउभाईजी॥
ब्रह्मादिक सुरसिद्ध मुनीशा देखत नभ समुदाईजी ॥
विहारन प्रभुपर अति मन हरषित सुरन सुमन झरिलाईजी ॥
रंगभूमि हरि हलधर आये संग सखा छबि छाईजी ॥ १ ॥
रवि शशि उडुगण उदित सुहाये निज निज छबि दरशावैजी ॥
देख्यो द्विरद द्वारपर ठाढो मानहुँ गिरि चल आवैजी ॥
कंध केसरी गर्वप्रहारी बलि तन लखि मुसकावैजी ॥
ताक्षणकी छबि कहत न आवै कटि सों पट लपटावैजी ॥ २ ॥

दोहा—श्याम सुभगतन छबि बनी, पाग सँभारत जात ॥
मधुपुरकी युवती सकल, कहति परस्पर बात ॥

चौबोला—कहति परस्पर बात लखहु सखी अंग अंग छबिछाईजी

रूपराशि मनहरण कन्हाई अति छबि वरणि न जाईजी ॥
कोटि मदन छबि विधि लुन लीनी तब यह मुरति बनाईजी ॥
धनि ब्रजतिय इनके सँग लागी निशदिन प्रेम लगाईजी ॥ १ ॥
होयँ हमारे सुकृत आजतौ देखैं नैन भराईजी ॥
जैसे तोरयो धनुष हरीने तैसे गजहि नशाईजी ॥
अति कोमल नँदलाल निहारी सुरन मनावत जाईजी ॥
मात पिताके पुण्य ते आली बचहु कुशल दोउ भाईजी ॥ २ ॥

दोहा—देखि कुबलिया द्वारपर, तब बलि कहो पुकारि ॥
सुनहु महावत गजहि तुम, लेहु द्वारते टारि ॥

चौबोला—लेहु द्वारते टारि हमें अब जान देहु नृप पाईजी ॥
नातर ह्वैहै गजको नाशा कहत तोहिं समुझाईजी ॥
कहे देत नहिं दोष हमारो वारो नाहिं कन्हाईजी ॥
त्रिभुवनपति दुष्टन संहारी धरणी भार नशाईजी ॥ १ ॥
सुनत बोल गजपाल रिसायो जानत हमहुँ बड़ाईजी ॥
त्रिभुवन पति अब गाय चरावैं अटके गजसों आईजी ॥
वादत बड़े शूरकी नाईं जैहै प्राण क्षण माईजी ॥
तोरयो धनुष मनहिं गरवायो जानत गजको नाईंजी ॥ २ ॥

दोहा—दशसहस्र गजको बली, ऐरापति भयमान ॥
जब यासों लरिलेहु तब, भीतर पैहो जान ॥

चौबोला—भीतर पैहो जान ऐसे कहि लै अंकुश करमाईजी ॥
गज गजपाल सामुहे कीनो तब बलिको रिस आईजी ॥
सुनरे मूढ कुजात बात तू मुख सँभारि कहि नाईजी ॥
गज समेत पटकों अब तोहीं काल निकट नियराईजी ॥ १ ॥
यह सुनि गज गजपाल चलायो झटकि सूँडगज धायोजी ॥
लीनो लपकि सूँडके माईं सो सबहिन लखिपायोजी ॥

जब बलराम कोप करिभारी मूका एक लगायोजी ॥
तब समेटकर कूक लगाई सब मद रंध्र सुकायोजी ॥ २ ॥
दोहा—तुरत उचकि न्यारे भये, लखत असुर समुदाइ ॥
हँसत भ्रात दोऊ खडे, महावत रह्यो लजाइ ॥
चौ०-महावत रह्यो लजाइ थकित भयो हाथी जब तिहिठांईजी॥
तब मनमें गजपाल डरायो इनसों नाहिं बसाईजी ॥
जो ये बालक वधे न जाई मुहिं मारै नृपराईजी ॥
अंकुश मसक शीशपर लायो चाहत गजहि चलाईजी ॥ १ ॥
बहुरि गयंदहि तातो कीनों भयो क्रोध मनमाईजी ॥
गंडस्थल मद अंबु चुचायो चाहत अबहिं नशाईजी ॥
पवन वेगते आतुर आयो पर्‍यो दुहुँनपर धाईजी ॥
महाकोपगहि श्याम रह्यो तब दशन धरणि सों लाईजी ॥२॥
दोहा—डरष उठे तिहिं काल सब, सुर मुनि पुर नरनारि ॥
दुहूं दशनविच है कढे, बल निधि प्रभु दैतारि ॥
चौबोला—बलनिधि प्रभु दैतारि उठे हरि गजके संग मुरारीजी॥
देखि चरित सब श्यामसुन्दरके तुरतहि भये सुखारीजी ॥
ख्यालहिं हांक दई हरि सुनि गज कियो कोप मन भारीजी ॥
झटकि सूंड बहुरो गज धायो आयो जित बनवारीजी ॥१ ॥
रहे उदर तर दबकि मुरारी देखत गज तहां नाईजी ॥
पाछे प्रगटि बहुरि हरि टेर्‍यो आगेते बल भाईजी ॥
चकित भये देखत सब कोऊ रहे दोउ गजहि खिलाईजी ॥
चहुँघां फिरत चक्रकी नाई सूंड पूंछ छूजाईजी ॥ २ ॥
दोहा—नेक न अवसर पात गज, चहुँदिशि हरि फिरजात ॥
गजरिस विकल भयो अतिः, इन्हें न कछु रिस गात ॥
चौबो०-इन्हें न कछु रिस गात करत मन घात न कछु बनिआईजी

जों बालक बछरन सँग खेलै पूंछ पकारि करमाईजी ॥
भजत मारिकै मुष्ट गँभीरै इत उतते दोउ भाईजी ॥
कबहुँ उदरतरह्वै कढिजाई नेक छुवन नाहिं पाईजी ॥ १ ॥
नील पीतपट कटि फहरावै चपल नैन छबिछाईजी ॥
खेलत गज सँग चंचल दोऊ अति छवि बरनि न जाईजी ॥
मनहुँ श्याम सुन्दर गजके सँग निर्तत मदन सुहाईजी ॥
खैंचत कबहुँ पूंछ हरि गहिकर कबहूं देत हटाईजी ॥ २ ॥

दोहा—देखि द्विरद पुर नारि नर, विधिहि मनावत जाइ ॥
वेगहि मारैं श्याम गज, तो हम लखि सुखपाइ ॥

चौबोला-तो हम लखि सुखपाइ महावत अंकुश बहुरि लगायाजी
तब हरि गहि गज पूंछै पटक्यो नेकहलन नाहिं पायाजी ॥
लीने खैंच मृणाल दोउरद सुरन सुमन बरषायाजी ॥
विहारन जन लखि अति मन हरषे असुर न सकल डरायाजी॥१॥
हँसतहि मारचो द्विरद कुबलिया महाप्रबल घनश्यामाजी ॥
सखन सहीत मुदित तहँ ठाढे छबि निरखत पुरबामाजी ॥
जहँ तहँ कहत यहै सब कोऊ मारचो गज बलरामाजी ॥
चिरजीवहु दोउ भ्रात विहारन जनहित सुखके धामाजी ॥ २ ॥

अथ मल्लयुद्ध लीला।

दोहा—चले हरी जहँ मल्लसब, द्विरद दन्त धरि कंध ॥
गौर श्याम सुन्दर सुखद, अति छबि श्रीनँदनंद ॥

चौबोला-अति छबि श्रीनँदनंद कमल मुख शोभा परम सुहाईजी
छबि अपार बलनिधि गंभीरा संग सखा छबि छाईजी ॥
सुनत कंस जिमि नव खग पिंजर रह्यो अतिहि अकुलाईजी ॥
भाजनको मन माहिं विचारो सक्यो न भाज लजाईजी ॥ १ ॥

गये रंगभूमी मनमोहन यथा भाव दरशायाजी ॥
उठे संकि सब मल्ल अहीरै लखि बल सकल डरायाजी ॥
दुष्टर दैत्य हुते तहँ जेते रूप भयान लखायाजी ॥
कंस समीप भूप जे तिनको राज वंशि मन भायाजी ॥ २ ॥

दोहा–साध सिद्ध देखहिं शुभग, इष्ट देव सुखधाम ॥
देखे सुरगण मगन मन, जनहित पूरण काम ॥

चौबोला–जनहित पूरण काम हरी देवनके देव मुरारीजी ॥
ग्वाल बाल देखत सब ऐसे सँग खेले बनवारीजी ॥
महलन ते देखैं सब हरिको सकल सुन्दरी नारीजी ॥
कोटि काम शोभा हरण प्रभु नवकिशोर शुभकारीजी ॥ १ ॥
देखत अति विपरीत कंस नृप नँदको कुँवर कन्हाईजी ॥
कंप उठ्यो भयभीत कंसको प्रगट काल दरशाईजी ॥
अबलहि अबल बलहि बलवाना सर्वभाव सुखदाईजी ॥
ललितहि ललित साधुको साधू छलन छली गुण माईजी॥२॥

दोहा–जो जन जैसे ध्यावही, तैसोइ दरश दिखाइ ॥
कहत परस्पर देखि सब, येही कुँवर कन्हाइ ॥

चौबोला–येही कुँवर कन्हाई ढोटा नन्द महरके जायेजी ॥
रजक[1] मारि नृप वसन लुटाये कुबजा अंग बनायेजी ॥
धनुष तोरि हाथी इन मारयो असुर समूह नशायेजी ॥
धरे कंध गजदन्त विराजैं बालक संग सुहायेजी ॥ १ ॥
जिनके वश सब भूमि अकाशा लखत असुर समुदाईजी[2] ॥
लीने घेरि कंस भय मानी तब चाणूर सुनाईजी ॥
सुनतहुते बहुनाम तिहारो आवहु इतहि कन्हाईजी ॥
हारि जीति काहू नहिं जानी सब तुम बलहि बताईजी ॥ २ ॥

---
१ धोबी । २ सम्पूर्ण ।

दोहा-कहा नाम हमरो सुन्यो, हँसि बोले घनश्याम ॥
हम बालक भोरे अबहिं, हमें खेलसों काम ॥
चौबोला-हमें खेलसों काम बात यह कहा तुमरे मनआईजी ॥
यह अपुगति व्यवहार कहां तुम हम बालक दोउ भाईजी ॥
जान देहु हमको नृपपाईं कतरोकत मग माईजी ॥
नृप हमको करहेतु बुलाये यह तुम कहा सुनाईजी ॥ १ ॥
तुमको बालक कहिये कैसे मल्लन वचन सुनायाजी ॥
किये कर्म व्रजमें तुम जैसे लखे न कहुँ सुन पायाजी ॥
गिरि गोवर्द्धन करपै धारयो काली द्वीप पठायाजी ॥
कैयक असुर बीरबल भारे खेलहि सकल नशायाजी ॥ २ ॥
दोहा-सो बल अब हम देखिहैं, तबहीं पैहोजान ॥
देखि कंस भैया दोऊ, लग्यो अतिहि अकुलान ॥
चौ०-लग्यो अतिहि अकुलानयुँ कहि कहि बारहि बार पठावैजी॥
क्योंरे सकुच करत मन माईं क्यों नहिं शत्रु नशावैजी ॥
मल्लनको बहुत्रास दिखावै जो न वधे ये जावैजी ॥
करों सकुल तो नाश तुम्हारो नाम रहन नहिं पावैजी ॥ १ ॥
नृप सँदेश सुनि मल्लडराने कियो कोप नृपराजैजी ॥
रहे सकल सकुचाय मनहिंमन कहत परस्पर लाजैजी ॥
नोन नृपतिको मान सकल मिल नन्द सुवनसों आजैजी ॥
लरिभिरिये कै मारिये ताको करैं कंसको काजैजी ॥ २ ॥
दोहा-अब विलंब नहिं कीजिये, लेहु सुयश नृपपास ॥
बोलउठे तब मल्लसब, कछुक क्रोध कछु त्रास ॥
चौबोला-कछुकक्रोध कछुत्रास हमहिं सों लरत श्यामक्योंनाईजी
घाट न कछु हमते बलमाईं लरहु आज दोउ भाईजी ॥
पशुपालक तुम कुँवर कन्हाई जीते पशुहि खिलाईजी ॥

अबलगि नाहिं मल्ल कोउ भेटे अबतो परे फँदआईजी ॥ १ ॥
मल्लयुद्ध तुमसों हम करिहैं नृपको काज बनावैजी ॥
ऐसे कहि कहि प्रभुहि सुनावैं लै रज अंग चढ़ावैजी ॥
ठोंकैं ताल गाज जों गरजैं लरिहैं अब यह चावैजी ॥
डारहु मार उभै सुकुमारा आपुसमें बतरावैजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनि सुनि हरि हलधर दोऊ, बोले पुनि मुसकाइ ॥
सुनिये हो अब मल्ल सब, यह तुमरे मन आइ ॥
चौबोला–यह तुमरे मन आइ नृपति पै जान देहो हमेंनाईजी ॥
बड़ो सुयश हमसों लरि लेहो तुमरे मन यह भाईजी ॥
निपट खोज अब परे हमारे कहा तुमरे मन माईजी ॥
हम कहा कहैं करो तुम जोई सो तुम्हरे मनआईजी ॥ १ ॥
जबहिं श्याम ऐसे कहि वाणी विलखि उठीं सब नारीजी ॥
देखोरी ये मल्ल उभय भैयन चाहत हैं मारीजी ॥
बांचै कैसेहूँ दई अब अति कोमल छबि भारीजी ॥
क्यों जननी पठये इनको इहां कहत नैन जलडारीजी ॥ २ ॥
दोहा–लोभ लागि पठये इहां, निठुरहि जाति अहीर ॥
कियो कहा अज्ञान उन, अति बालक दोउवीर ॥
चौबोला–अति बालक दोउ वीर होतधौं कैसी अबइह ठाईंजी ॥
करत कंस अब बात अनैसी कहा नृपके मनमाईंजी ॥
कहत सबै हमको यह भावै करहू विधिहि सहाईजी ॥
तोरयो धनुष हन्यो गज जैसे तैसेहि मल्ल नशाईजी ॥ १ ॥
जोर जोरकर विधिके आगे आंचर छोर मनायोजी ॥
तब चाणूर कृष्ण पै आये हरि कटि पट लपटायोजी ॥
भुज भुज जोरि भये तहाँ ठाढे तकि तकि दाँवचलायोजी ॥
ऐसेइ मुष्टिक अरु बलरामा भिरे युद्ध ठहरायोजी ॥ २ ॥

दोहा–लरत वीर दोऊ तहाँ, देखत सुर समुदाइ ॥
कटि कछनी अरु पीत पट, अति छबि परम सुहाइ ॥
चौबोला–अति छबि परम सुहाइसु चंदन चित्रित सो छबिछाईजी
वृषभ कंध उर बाहु विसाला छबि बरनी नहिं जाईजी ॥
शिरसों शिर भुजसों भुज जोरे दृष्टि सों दृष्टि मिलाईजी ॥
चरण चरण सों लपट झपटिके लटकि झपट झटकाईजी ॥ १ ॥
छूटि जात लपटात बहुरितन घात गहन नहिं पाईजी ॥
तिन्हें मल्ल चाहत गहन सो शिव विधि पै न गहाईजी ॥
श्याम सहज मल्लन सों खेलें पकरि पकरि छट काईजी ॥
भये प्रथम कोमल तनु मोहन सिथिलरूप सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तब चाणूर अपने जिये, रह्यो गर्व उर आनि ॥
हरिके बलको तुच्छही, लियो मनहिं मन जानि ॥
चौबोला–लियो मनहिं मन जानि हरीके मुष्टी एक लगाईजी ॥
तुरतहि कियो वज्र सम तनु हरि फूल समान लखाईजी ॥
तिन मारयो अपने जियजान्यो भयो हरष मनमाईजी ॥
कहन लग्यो मुरि अहिर पछारयो हँसतहि लख्यो कन्हाईजी १॥
परयो सोच प्राणनते भारी हरिकी महिमा पाईजी ॥
निश्चयमौत आपनी जानी दई हांक सुखदाईजी ॥
जनु गजको मृगराज पुकारयो सुनि गयो दाँव भुलाईजी ॥
थर थराय चाणूर डरायो धरयो धाय कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–पटक्यो महि गहि चरण तब, हरि चाणूर फिराय ॥
भयो शब्द आघात सुनि, रह्यो कंस भय पाय ॥
चौबोला–रह्यो कंस भय पाय निरखि पुर नर नारी सुखपायोजी
अति आनन्द भये नभ सुरगण मन मनहरष बढ़ायोजी ॥
पकरि तबहिं बलराम मुष्टिकहि तुरतहि मार गिरायोजी ॥

कहत धन्य धनि लखहिं सबै नभ सुरनर जयति सुनायोजी ॥१॥
औरहु जे अति मल्ल आदिसब जुरे हते इकठौरैजी ॥
ते तब नन्दसुवन सब मारे लपटि झपटि झकझोरैजी ॥
जब मारे हरि मल्ल सबहि तब परचो कटक में सोरैजी ॥
जिमि तारागण रविः उदै सब छिपे असुर चहुँ ओरैजी ॥ २ ॥

अथ कंसासुरवधलीला ।

दोहा–रंगभूमि राजत खरे, सखन सहित दोउवीर ॥
विहारनको प्रभु नन्दसुत, हरण भक्त भय पीर ॥
चौबोला–हरण भक्त भय पीर जबहिं हरि लिये मल्ल सबमारीजी
चले असुर तब सब जियहारी देखि बली बनवारीजी ॥
लखत कंस अति भयो दुखारी देत सबनको गारीजी ॥
कहत गये कितरे सब योधा कियो क्रोध मन भारीजी ॥ १ ॥
डारहु मारि नन्दसुत दोऊ ऐसे सबन सुनावैजी ॥
तनक छोहरा अहिरन केरे मेरे मल्ल नशावैजी ॥
डर नाहिं करत चले इत आवैं देखहु जान न पावैजी ॥
असुर वीर अपनी सर जेते लैलै नाम पठावैजी ॥ २ ॥
दोहा–द्वारपाल सों कहत नृप, लेहु कपाट लगाय ॥
नृप भय माने असुर सब, चले शस्त्र लै धाय ॥
चौबोला-चले शस्त्र लै धाय देखि सब विकल भये नरनारीजी ॥
मन मन देत कंसको गारी कहत कठिन भई भारीजी ॥
बचहु श्याम सोइ करहु विधाता लखे असुर गिरिधारीजी ॥
भिरे हांक दै दै दोउ वीरा असुरन ओर निहारीजी ॥ १ ॥
मानहुँ गजगण निरखि केहरी तिनके ऊपर धायेजी ॥
सुनत शब्द गंभीर हरीको असुर समूह डरायेजी ॥

लपकि गहि माहि पटकि जहाँ तहाँ सकल दनुज नशायेजी ॥
गौर श्याम शोभित अति सुन्दर असुरन बीच सुहायेजी ॥२॥
दोहा—जात नहीं बरणी छबी, पटकत इत उत धाय ॥
भूमी भार अपार हरि, असुरन करहि नशाय ॥
चौबोला—असुरन करहि नशाय खलभलो परयो नग्रके माईजी
पुनि पुनि मंत्रिन बोल पठावे कहत कंस नृपराईजी ॥
जियत जायँ नहिं बंधु दोऊ ये सोई करहु उपाईजी ॥
ब्रज में कोऊ रहन न पावे मारहु नन्द बुलाईजी ॥ १ ॥
पुनि वसुदेव देवकी मारो जीवत छोरो नाईजी ॥
बहुरो उग्रसेनको मारो पिता दोष नहिं ल्याईजी ॥
ऐसे पुनि पुनि वचन उचारे लिये खड्ग कर माईजी ॥
क्षण बैठत क्षण उठत अधीरा हने असुर दोउ भाईजी ॥ २ ॥
दोहा—आति बल ढोटा नन्दके, लखे कोप नृप ओरि ॥
गये मचान मचकि दोऊ, बाज झपट जिमि दौरि ॥
चौ०-बाज झपट जिमि दौरि ह्वै गयो चकित नृपति तिहिं ठाईजी
आयो काल निकट पहँचान्यो रह्यो सोच मन माईजी ॥
रहि गयो लिये खड्ग कर माईं मारसक्यो सो नाईजी ॥
तबहीं श्याम लात इक मारी गिरयो मुकुट महि जाईजी ॥१॥
दीनो ठेलि मंचते भूपर कूदे आप कन्हाईजी ॥
तहाँ चतुर्भुज रूप दिखायो सो स्वरूप दियो ताईजी ॥
निज स्वरूप दे स्वर्ग पठायो भक्तनके सुखदाईजी ॥
मारयो कंस कहत सब वाणी जय जय ध्वनि सुरगाईजी ॥ २ ॥
दोहा—जय जय ध्वनि सुर करत नभ, सुमनन झरी लगाइ ॥
कहत कंस मारयो हरी, तीन भुवन सुन पाइ ॥
चौबो०—तीन भुवन सुन पाइ स्तुती ब्रह्मादिक सुर गाईजी ॥

भूमि सुर उपकार हित हरि प्रगटे त्रिभुवन राईजी ॥
धन्य गज धनि मल्ल मारे धन्य कंस नशाईजी ॥
परसितन अनुपम लई गति महिमा वरणि न जाईजी ॥ १ ॥
धन्य अखिल ब्रह्मांड नायक जन हित तनुधर आयेजी ॥
धन्य धन्य प्रभु ब्रजवासिनको प्रेम विवस करि पायेजी ॥
करि स्तुति पुनि पुनि मन हरषित सुरन सुमन बरषायेजी ॥
मुदित बजावत दुन्दुभि सब मिल जय जय कहि यश गायेजी॥२

दोहा–अति प्रफुल्लित[1] सबको हियो, मथुरा पुर नर नारि ॥
विकसत हरि शशि मुख निरखि, मनहुँ कुमुद[2] बनचारि

चौ०मनहुँ कुमुद बनचारि कंसको मारयो तब गिरिधारीजी ॥
भ्राता अष्टतासु बलवाना कियो क्रोध मन भारीजी ॥
करि करि कोप युद्धको धाये दिये हलधर ते मारीजी ॥
बहुरि केश गहि कंस मुरारी दियो यमुन में डारीजी ॥ १ ॥
कीनों कछुक तहाँ विश्रामा हरि जनके सुखदाईजी ॥
भयो विश्राम घाट तिहि नामा महिमा परम सुहाईजी ॥
सुनि पति मरन कंसकी नारी भ्रातन सकल लुगाईजी ॥
रुदन करत करि विविध विलापा सुमिर रूप नृपराईजी ॥

दोहा–भयो दुसहि तिनको अती, मरन चहत पति साथ ॥
करुणामय कोमल सुखद, गये तहाँ दोउ भ्रात ॥

चौबोला–गये तहाँ दोउ भ्रात सबन तब करि प्रबोध[3] सुखदाईजी॥
रहीं मरनते सुनि प्रभु वाणी बहुत भांति समुझाईजी ॥
आये महल द्वार दोउ भाई उग्रसेन सुन पाईजी ॥
सुनतहि तुरत चल्यो उठ धाई परयो चरणमें आईजी ॥ १ ॥
त्राहि[4] त्राहि कर वचन सुनायो रह्यो चरण शिरनाईजी ॥

१ फूलत। २ पंकज। ३ ज्ञान। ४ रक्षा।

क्षमा करहु करुणानिध स्वामी प्रभु त्रिभुवनके राईजी ॥
मारे असुर कंस सब भ्राता उचित करी सुखदाईजी ॥
खलन दलन हित यह अवतारा लीनों आय कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कीजै अब पालन प्रजा, दीनबंधु सुख साज ॥
सिंहासन वर बैठ प्रभु, करहु मधुपुरी राज ॥
चौबोला—करहु मधुपुरी राज सुने जब दीन वचन सुखदाईजी ॥
तबहीं उग्रसेन को मोहन लीनो हरषि उठाईजी ॥
पुनि पुनि कहि बहु विधि सन्मान्यो लीनो हृदय लगाईजी ॥
पुनि करजोर कह्यो श्रीमुखसों सुनहु श्री नृपराईजी ॥ १ ॥
यदुवंशिनको शाप ताहिते राज्य उचित हमें नाईजी ॥
करहु देव तुम राज्य दूर सब संशय देहु मिटाईजी ॥
हम करिहैं सब काज राजको तुमरी आयसु पाईजी ॥
जो नहिं मानें आन तुम्हारी देहिं दंड हम ताईजी ॥ २ ॥
दोहा—और सोच नहिं कीजिये, जियमें कछु अरु लाज ॥
प्रजा लोग सुख दीजिये, नीत सहित करराज ॥
चौबोला—नीति सहित करराज यादवः जिते कंस भय पाईजी॥
गृह तजि तजि भजिगये प्रवासा तिनको लेहु बुलाईजी ॥
सबको मथुरा मांझ वसावो रहैं सदा सुख माईजी ॥
विप्र धेनु सुर पूजन कीजै इनकी करहु सहाईजी ॥ १ ॥
यों प्रभु उग्रसेन समुझाये सिंहासन बैठाईजी ॥
निजकर चमर लिये दोउ भाई शिरपर छत्र रखाईजी ॥
राखत जनकी सदा बड़ाई प्रभु भक्तन सुखदाईजी ॥
वर्षि सुमन सुर कहत सुखारे जै जै त्रिभुवनराईजी ॥ २ ॥
दोहा—उग्रसेन कियो भूप हरि, सिंहासन बैठाय ॥
लखि मथुरा नर नारि सब, रहे सकल सुखपाय ॥

चौ०-रहे सकल सुख पाय कहत धनि अति मन हर्ष बढाईजी॥
अब करिहैं पितु मात सुखारी प्रभु त्रिभुवनके राईजी॥
यहै बात सब घर घर माईं इन समान कोउ नाईजी॥
धनि धनि मात पिता दिन राती जन्मे जब सुखदाईजी॥ १॥
कंसहि सहित असुर सब मारे रानिन मरत बचाईजी॥
कीनो उग्रसेनको राजा निजकर चमर ढुराईजी॥
यदुकुल सुथिर भयो अब सारो सुरन सुमन झरिलाईजी॥
अब सुख पैहैं मात पिता सुनि तिनको दुःख नशाईजी॥ २॥

दोहा-हम फल लीनों जन्म जग, हरि मुख छबिहि निहारि॥
जीवहु युग युग भ्रात दोउ, कहत सकल नर नारि॥

चौ०-कहत सकल नर नारि भूमिको भार हर्यो नँदलालाजी॥
कंस हत्यो नृप उग्रसेन कियो भक्तनके प्रतिपालाजी॥
कहाँ हमारे मात पिता तब बोले दीनदयालाजी॥
उग्रसेन अक्रूर चले संग हरिके वंदीशालाजी॥ १॥
उत वसुदेव स्वप्न निशि आयो रहे अतिहि हर्षाईजी॥
कहत देवकीसों समुझाई राम कृष्ण दोउ भाईजी॥
आये आज जनु मधुपुरीमाँइ लीने नृपति बुलाईजी॥
असुर सैन हति कंसमार कियो उग्रसेन नृपराईजी॥ २॥

दोहा-सुनितिय नैन न नीर भरि, कहत कहा पिय आय॥
सुनिहै दूत कोऊ यहां, कैहै नृपसों जाय॥

चौबोला-कैहै नृपसोंजाय हमहिं कारि पाप जन्म जगआयेजी॥
सो फल हमहिं विधाता दीनो कर्म लिखे सोइ पायेजी॥
वधे सात देखत हम आगे रह्यो इक ब्रजहि भगायेजी॥
तापर वंदि किये हम दोऊ धृक जो वशहि परायेजी॥ १॥
होउ कंसको वंश निमूलो कहति अतिहि दुखपाईजी॥

कह वसुदेव रोवै मति नारी वे दुखहरण कन्हाईजी॥
गर्वप्रहारी दीनदयाला जनके सदा सहाईजी॥
ह्वैहैं प्रगट कबहुँ सुखदाई हरि त्रिभुवनके राईजी॥ २॥
दोहा–अब जिन होहु अधीरतिय, धरहु धीर सुखपाय॥
आयु तुलानी कंसकी, देखत जाय बिलाय॥
चौबोला–देखत जाय बिलाय कंस नृप तूजिन होय दुखाईजी॥
मानहु प्रिया कह्यो अब मेरो स्वप्न वृथा नाहिं जाईजी॥
मिलिहै तोय सुवन अब तेरो आज कालिहमें आईजी॥
इहि अन्तर द्वारे हरि आये लगे कपाट लखाईजी॥ १॥
करुणा करि हरि तिन्हें निहारे खुलिगये वज्रकिवारैजी॥
लखि वसुदेव कहत मन दोऊ आवत काके वारैजी॥
जन्म समय जो दरशन दीनों सो हरि रूप दिखारैजी॥
मिले धाय पितु मात कह्यो तब हमहैं सुवन तुम्हारैजी॥ २॥
दोहा–रोवति मधुर निरखि सुत, सुनाहिं कंस भय पात॥
मारचो कंस अरु असुर सब, कह्यो कृष्ण सुनमात॥
चौबोला–कह्यो कृष्ण सुन मात पछारे मल्ल सुभट सबमारेजी॥
द्विरद कुबलिया दंत उखारे और असुर संहारेजी॥
यह कहि करि पितुमात सुखारे तोरि बंध पग डारेजी॥
तब जननी निश्चय करजानी रोयकंठ लपटारेजी॥ १॥
बारहि बार कहत उरलाये मैं नाहिं गोद खिलायेजी॥
द्वादश वर्ष कहां रहे प्यारे जननी लेत बलायेजी॥
सुन जननीके वचन कृपाला करुणानिध यदुरायेजी॥
भये प्रेम वश दुखित लखे तब बोले अति सकुचायेजी॥ २॥
दोहा–मति करि मात विषाद चित, लिख्योन मेट्योजाइ॥
तुम मनकी अभिलाष सब, अबपुरवैं दोउ भाइ॥

चौबोला-अब पुरवैं दोउ भाइ ऐसेहरि मात पिता समुझायाजी
पुत्र जन्म जगमें सुखकारी तुम हमते दुख पायाजी ॥
मात पिता जाके दुख पावैं सो सुत वृथा कहायोजी ॥
सो अब दोष न मनमें दीजै हो तब नाहिं वसायाजी ॥ १ ॥
स्वर्ग पताल जातनाहिं डरिहैं करिहैं तुम मनभाईजी ॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि लै आवैं मथुरा देहिं वसाईजी ॥
सुनि प्रभु वचन मात सुखपायो लीने कंठ लगाईजी ॥
अति आनन्द भयो मनमाईं शारद सकहि न गाईजी ॥ २ ॥

अथ वसुदेवगृह उत्सवलीला ।

दोहा-तब वसुदेव अति हर्षि मन, पुलकित अंग अपारि ॥
पूरव पुण्य सुकृत फल्यो, पायो सुत दैत्यारि ॥
चौबो०-पायो सुत दैत्यारि हर्षि मन तुरतहि विप्र बुलायेजी ॥
प्रथमहिं संकलपी हतीं सो दई लक्ष ते गायेजी ॥
और दियो बहु दान द्विजनको बंदीजन सुन आयेजी ॥
अति उछाह वसुदेव सबनको दिये द्रव्य मनचायेजी ॥ १ ॥
तब देवकी कह्यो पति पाई रही परम हर्षाईजी ॥
प्रगटे आज सुवन मम धामा करहु अनंद बधाईजी ॥
सुनि वसुदेव बहुत सुख पायो दुंदुभि द्वार बजाईजी ॥
यदुवंशी सिगरे जुरआये ध्वज पताक बँधवाईजी ॥ २ ॥
दोहा-रोपे कदली खंभ शुभ, वन्दन माल बँधाय ॥
लखि हरि जन्म अनंद छबि, निधि सिधि प्रगटी आय॥
चौबोला-निधि सिधि प्रगटी आय द्वारपर कंचन कलस भरायेजी
गजमुक्तनके चौक पुराये मंदिर सुगँध सिंचायेजी ॥
सुनि सब मथुरा पुरकी नारी आनँद मंगल गायेजी ॥

घर घर मंगल सबहिन साजे बाजे द्वार बजायेजी ॥ १ ॥
नवसंत[1] साज सजीं सब नारी सजि सजि मंगल थारीजी ॥
श्रीवसुदेव धामको आवैं गावत मंगलचारीजी ॥
जाति पांतिके लोग सकल मिल बंधू अरु हितकारीजी ॥
निज निज योग भेटले आये अति मन हरषित भारीजी ॥ २ ॥

दोहा–नट नागर गावतँ गुणी, भई भवन अति भीर ॥
मानहु सुख आये सकल, धरि धरि मनुज शरीर ॥

चौबो०-धारि धरि मनुज शरीर सकल सुख गृह वसुदेवक आयेजी
तब जननी मन अति सुख पायो दोउ सुत उबट न्हवायेजी ॥
निजकर अंग अंगोछाति जननी तनु दुति लखि सुख पायेजी ॥
केसर मलैय[2] मिलय रुचिकारी चंदन भाल लगायेजी ॥ १ ॥
राजकुँवर बर पहरत जैसे भूषण वसन सजायेजी ॥
क्रीट मुकुट माथे धर दीनों मणिन जटित अधिकायेजी ॥
कलँगी ललित जड़ाव जड़ाई तुर्रा मध्य सुहायेजी ॥
गज मुक्तनके कुंडल कानन आति विसाल छबि छायेजी ॥२॥

दोहा–उर विसाल सोहत सुभग, कंठ पदिकके हार ॥
पंचरत्न अंगद बने, भुजपर छवी अपार ॥

चौबोला-भुजपर छवी अपार चूराकर नवर तनन न निकाईजी ॥
पाणि पल्लवन छाप सुहाई सो छबि बरणि न जाईजी ॥
किंकिणि कलित ललित रवकारी कटिकेहरिपर[3] छाईजी ॥
चूरा चाँरु[4] मनोहर राजे चरण कमल सुखदाईजी ॥ १ ॥
नील पीत बर वसन नवीने दोऊ सुतन सुहायेजी ॥
चारु अलक मुख शशि झलक छबि निरखि मात सुख पायेजी॥
हुते श्यामके साथ सखा सो बहुरि देवकी मायेजी ॥

१ सोलहो शृंगार। २ चंदन। ३ सिंह। ४ सुंदर।

जानि कृष्ण प्रीतम तब ग्वालन निजकर सब पहरायेजी ॥
दोहा–चकित निहारत ग्वाल सब, कहन सकत कछुनाहिं॥
येतो जाये देवकी, कहत मनहिं मनमाहिं ॥
चौ०-कहत मनहिंमन माहिं झूंठही यशुमति सुवन कन्हाईजी ॥
करत सोच मनहीं मनमाई ब्रज चलिहैंकै नाईजी ॥
तब दोउ कुँवर चौक बैठारे लीने विप्र बुलाईजी ॥
विधिवत पूजि तिलक रवाये विप्रनदान दिवाईजी ॥ १ ॥
बहुरि आरती मात उतारी लखि नभ सुर यश गायेजी ॥
पुनि सब सखन सहित दोउ भाई निजकर मात जिमायेजी ॥
इहि विधि मार कंस पितु माता तिनके बन्दि छुड़ायेजी ॥
नर नारी हरषित मधुपुरके घर घर आनँद छायेजी ॥ २ ॥
दोहा–परम सुयश यह पलहिमें, गयो त्रिभुवनके माँहि ॥
जीव जल थल नाग सुर, हरष भये सब ठाँहि ॥
चौबोला–हरष भये सबठाँहि कंसको हतन सुने अरु गावैजी ॥
ते न भवबंधन परहिं फिर पाप समूह नशावैजी ॥
मिटहिदारिद दोष दुर्मती विपति निकट ना आवैजी ॥
सकल मन वांछित लहैं फल भक्ति अविचल पावैजी ॥ १ ॥
कठिन शूल संकट हरनयश मंगल करन सुहाईजी ॥
राम कृष्णके चरित अनूपम हरिजन सुन अरु गाईजी ॥
हरिकी कथा अनूदिन गावै सुन्दर नर तनु पाईजी ॥
विहारन सुयश सुभग प्रभुजीको सदा सकल सुखदाईजी ॥ २॥

अथ कुबिजागृहप्रवेश लीला।

दोहा–श्रीयदुकुल शिर मुकुट मणि, भक्तनके सुखदाइ ॥
करी सुखारी मात तब, कुबिजाकी सुधि आइ ॥

चौ०-कुबिजाकी सुधि आइ भवन तजि सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
चले वसन कुबिजाके धामा करी कृपा सुखदाईजी ॥
भाव भजन कुबिजा भइ प्यारी सांच भाव जहाँ पाईजी ॥
नारि पुरुष कछु नाहीं भेदा विवस होत तिहिं जाईजी ॥ १ ॥
सो हित मान लियो यदुराई प्रथम मिली मग आईजी ॥
चंदन चरचि तनक तन दीनो कोटि यज्ञ फल पाईजी ॥
अति अकुलीन कंसकी दासी हरि परसत छबि छाईजी ॥
आये हरि कुबिजाके धामा भक्त बछल कहहाईजी ॥ २ ॥

दोहा-तब कुबिजा आनँद भरी, हरिको आवत जान ॥
डारि पाटंबर पांवडे, विधिवतकर सनमान ॥

चौ०-विधिवतकर सन्मान अतिहि आनंद लिये निज धामाजी॥
पूरब पुण्य पुंज सब जागे मगन भई मन बामाजी ॥
टेढीते सूधी करदीनी दियो रूप अभिरामाजी ॥
दासीते रानी भई सुन्दर पूरे सब मन कामाजी ॥ १ ॥
को करि सकै प्रकाश प्रभूके गुण विचित्र सुखकारीजी ॥
भयो रहै दासनको दासै सदा एक चित धारीजी ॥
राजा हरि कुबजा पटरानी कहत सकल नर नारीजी ॥
घर घर कहत सकल पुरवासी कियो कहा तप भारीजी ॥ १ ॥

दोहा-तनक अंग चंदन दियो, भई विदित जगमाहिं ॥
महिमा कहत न आवही, पटतरको कोउ नाहिं ॥

चौ०-पटतरको कोउ नाहिं भूलि कोउ कुबिजा कहत बखानीजी
ताहि रिसाय उठत सब कोऊ सोतो भइ पटरानीजी ॥
दासी कहत डरत सब कोऊ अति भय यह मन जानीजी ॥
डारहि मारि सुने जो रानी करत त्रास सब प्रानीजी ॥ १ ॥
जापर कृपाकरैं यदुराई ताहि न यह अधिकाईजी ॥

सदा सदा हरिकी यह रीती भाव भक्त मन छाईजी ॥
धनि धनि कुबजा हरिकी रानी धनि धनि चंदन लाईजी ॥
धनि धनि भवन जहाँ हरि आये धन्य कृष्ण मन भाईजी ॥२॥

दोहा–बसे श्याम कुबिजा सदन, तहँकर कछु विश्राम ॥
पुनि आये वसुदेव गृह, जन मन पूरण काम ॥

चौबोला–जन मन पूरण काम सदा हरि भक्तनके सुखदाईजी॥
ब्रज बासिनकी सुरत करी तब सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
मनमें कियो विचार कन्हाई अब चलिये नंद पाईजी ॥
लै वसुदेव संग दोउ भाई गये जहां नृपराईजी ॥ १ ॥
लिये अक्रूर उद्धवहि बुलाई यादव जुरे सब आईजी ॥
समहित ब्रजबासी सब आये ऐसे कहत कन्हाईजी ॥
नन्दादिक सब गोप जितेका रह्यो न कोउ ब्रजमाईजी ॥
हैं सूने मंदिर सब केरे तजे वत्स अरु गाईजी ॥ २ ॥

दोहा–ह्वै हैं यशुमति मात दुखि, जिन पाले दोउ भाइ ॥
सकुचतहां अपने मनहिं, उनसों ऊऋण नाइ ॥

चौबोला–उनसों ऊऋण नाई नहीं जो पलटो देहों जाईजी ॥
सुनि हरि वचन परम सुखदाई चले जहां नँदराईजी ॥
सुनी नन्द गोपन यह बाता मारचो कंस कन्हाईजी ॥
प्रजा भाव सब रहे सकाने सांच न मन कछु आईजी ॥ १ ॥
मनहीं मन सोचत नँदराई नहिं आये दोउ भाईजी ॥
ब्रजते आये भोरहि तिनको यामतीन ह्वै आईजी ॥
बल मोहन दोऊ भैया बिन अब कैसे ब्रजजाईजी ॥
कबधौं नैनन देखों तिनको अति व्याकुल मनमाईजी ॥ २ ॥

अथ नन्द विदालीला।

दोहा–उग्रसेन वसुदेव सँग, आये तब दोउ भाइ ॥
देखि नन्द उठ धाय मिल, लीने कंठ लगाय॥

चौबोला–लीने कंठ लगाइ मनहिं मन कहत महर नँदराईजी॥
अब चलिहैं ब्रजको यह जानी अति आनँद मनमाईजी॥
लखि वसुदेव बहुत सुख पायो मिले नन्दसों जाईजी॥
उग्रसेन तब नन्द जुहारे लिये आदर बैठाईजी॥ १॥
नृप वसुदेव उधव सुफलकसुत यादव सकल सुहाईजी॥
नन्दहि मिले निकट बैठाये मिलि बैठे दोउ भाईजी॥
और गोप ठाढे सब देखे औरहि रूप कन्हाईजी॥
नन्द मनहिं मन अति अकुलावत चलत वेग क्यों नाईजी॥२॥

दोहा–सबहीके मनमें बसी, हरि अब प्रीति घटाइ॥
बोल सकत नहिं प्रेम वश, कहत मनहिं मनमाइ॥

चौ०-कहत मनहिं मन माइ नन्द तब कह्यो मुख वचन कन्हाईजी
बहुत कियो प्रतिपाल हमारो मुखते कह्यो न जाईजी॥
सुनि कहा कहत अहो गोपाला झझकि उठे नंदराईजी॥
किन कीन्हो प्रतिपाल कन्हाई यह तुम काय सुनाईजी॥ १॥
मति मोसों ऐसे कहो मोहन चमकत जिय नँदराईजी॥
डारि सकत नहिं नैननते जल गहभरहिय भर आईजी॥
तब हरि मधुर कह्यो नंदजीसों तुमसों कहत लजाईजी॥
कही गर्ग तुमसों जो वाणी सो तुम सांच न पाईजी॥ २॥

दोहा–पुत्र हेतु हमसों कियो, दियो अधिक सुख चैन॥
हँसत खेलत ब्रज जात यह, लखे नहीं दिन रैन॥

चौबोला–लखे नहीं दिन रैन सुखहिमें ये सब दिवस वितायाजी॥
तुम हमको सुख दीने सो सुख मुखते कहत न आयाजी॥
तुम सम मात पिता नहिं हमरे हम तुम सुवन कहायाजी॥
बिछुरन मिलन मोह माया जग विधि परपंच बनायाजी॥ १॥
ह्वै हैं दुखित यशोमति मैया ताते तुमहि पठाईजी॥

यशुमतिसों विनती मम कहियो तुम्हरो सुवन सदाईजी ॥
मेरी सुरत न उरते टारो तुमते न्यारे नाईंजी ॥
हरि यों नन्दहि वचन सुनाई बहुरि रहे सकुचाईजी ॥ २ ॥
दोहा—निठुर वचन सुनि श्यामके, भये विकल अति नन्द ॥
उमँगि नीर नैनन चल्यो, परिगये दुखके फंद ॥
चौबोला—परिगये दुखके फंद दुखित सब गोप सखा समुदाईजी ॥
यह सब चरित किये सुफलक सुत कहत मनहिं मन माईजी ॥
कहत न ऐसे कबहु कन्हाई परे चरण नद धाईजी ॥
हों मोहन तजि चरण न जैहों कहा लेहों ब्रज जाईजी ॥ १ ॥
मधुबन तुमहिं छांडि जो जाऊं यशोदहि कहा कहुँ जाईजी ॥
तुम विन काहि गोद कर लैहैं सुनतहि ऐहैं धाईजी ॥
पंथ निहारत ह्वैहै मैया चलहू ब्रजहि कन्हाईजी ॥
सद माखन मथि कीनों ह्वै है तुम विन काहि खवाईजी ॥ २ ॥
दोहा—विन देखे कैसे जियें, होत निठुर कत श्याम ॥
नहिं जान्यो परताप यह, हो तुम सुखके धाम ॥
चौबो०-हो तुम सुखके धाम बारही बरष भूल रहे भारेजी ॥
अब प्रगटे वसुदेव कुमारा गर्ग वचन निरधारेजी ॥
कत हम काज महारिपु मारे दारिद दुख कत टारेजी ॥
डारि न दियो कमल कर गिरिवर दब मरते हम सारेजी ॥ १॥
कहैं नन्द यों विकल अधीरा सोच रहे मन माईंजी ॥
भई कठिन बिछुरनकी पीरा वचन कहे नहिं जाईजी ॥
देखि प्रीति नँदकी वसुदेऊ मनहीं माह सिहाईजी ॥
सकुच रहे तब प्रेम विवस सब सुखन कहत कछु नाईजी ॥२॥
दोहा—मानहु पन्नगके डसे, व्याकुल सबै अहीर ॥
ठाढे काढे चित्रसे, हरि मुख लखत अधीर ॥

चौ०-हरि मुख लखत अधीर नन्दको हलधर यों समुझावेजी ॥
करि कछु काज बहुरि ब्रज आवें तुम विन कहँ सुख पावेजी ॥
कह्यो गर्ग तुमसों सब कारण हरि भूभार नशावेजी ॥
मात पिता हमरे नहिं कोऊ तुमरेइ सुवन कहावेजी ॥ १ ॥
हमें तुम्हें सुत पितुको नातो अंतर होन न पावेजी ॥
बहुत कियो प्रतिपाल हमारो उरते ध्यान न जावेजी ॥
जननि अकेली व्याकुल ह्वै है तुम गये धीरज आवेजी ॥
व्याकुल सुनत नंद यह वाणी पुनि कर जोर सुनावेजी ॥ २ ॥

दोहा—ब्रजमें मिल फिर आहु हरि, अब सँग चलहु कन्हाइ॥
कंस मार सुरकाज कियो, उग्रसेन नृपराइ ॥

चौबोला—उग्रसेन नृपराइ भई सब यदुकुलके मन चाईजी ॥
तदपि यशोमति विन गिरिधारी तुम्हरी टेक न पाईजी ॥
ऐसे कहि अति विकल भये जब रहे नन्द गहि पाईजी ॥
भई क्षीण दुतिहीन मती तब नैनन नीरै बहाईजी ॥ १ ॥
नहीं विरह संयोग हरीके माया रहित मुकुंदैजी ॥
सब घटवासी एक रसहि प्रभु ब्रह्म पूरणा नंदैजी ॥
देखि विरह व्याकुल नँद उपनँद और सखनको वृंदैजी ॥
विछुरत तजत चहत हैं प्राणै रच्यो चरित ब्रजचंदैजी ॥ २ ॥

दोहा—हरि माया दुस्तर अती, रहत जगत भरमाय ॥
तिन कछु द्वन्द्व कियो तबै, बोले हरि नँदपाय ॥

चौ०-बोले हरि नँद पाय तात तुम कतहि रहे पछिताईजी ॥
ब्रज अरु मथुरा अंतर कितनो दूर न कहुँ हम जाईजी ॥
कर विचार देखो मन माईं तुम्हरे निकट सदाईजी ॥
हैं ब्रजके नर नारि दुखारी ताते तुमहिं पठाईजी ॥ १ ॥

---

१ पुत्र। २ पानी। ३ कठिन। ४ बीच।

ऐसे बोध कियो ब्रजनाथा तब नँद विनय सुनाईजी ॥
जो प्रभु तुमको ऐसे भाई तो मम कहा बसाईजी ॥
जैहों ब्रज प्रभु कहे तुम्हारे वचन न टारे जाईजी ॥
बहुत करी तुम मम प्रभुताई नीचते ऊंच चढाईजी ॥ २ ॥

दोहा—परम गँवार अरु ग्वाल हरि, हौं प्रभु मैं पशुपाल ॥
भये धन्य सब जगतमें, तुम प्रताप गोपाल ॥

चौबोला—तुम प्रताप गोपाल गये सब पाप संताप नशाईजी ॥
भरी साखि चौदहौ भुवन सब सुर मुनि वेदन गाईजी ॥
ऐसे कहि नंदराय परे पुनि हरिके चरणन माईजी ॥
कहो जान सनमान नन्दको लीन्हो श्याम उठाईजी ॥ १ ॥
आगे बहुत संपदा राखी यों वसुदेव सुनाईजी ॥
कियो जो हम प्रति तुम उपकारा मुखते कहत न आईजी ॥
बालक ये अपनेही जानो यहँ वहँ भेद न राईजी ॥
सुनि सुनि नंद महर पछितावै तनुकी सुरत भुलाईजी ॥ २ ॥

दोहा—उरध श्वास भरि दृगन जल, वचन कहे नाहिं जाइ ॥
सो कछु संपति लेय नँद, विनती बहुरि सुनाइ ॥

चौबोला—विनती बहुरि सुनाइ श्याम सों कह्यो महर नँदराईजी
ब्रज पर कृपा होय नहिं थोरी माँगत यह तुम पाईजी ॥
तब सब गोप नृपति पहिं आये कियो बोध नृपराईजी ॥
गोप सखा बोधे हरि सबही दीने ब्रजहि पठाईजी ॥ १ ॥
चले सकल ब्रज सोचत मन मन हारे मनहुँ जुवारीजी ॥
काहू सुधि काहू सुधि नाहीं मन सब अधिक दुखारीजी ॥
लटपट चरण परत मगमाईं तनु सुधि सबन विसारीजी ॥
ब्रज तन जात विलोकत मधुबन विरह व्यथा भई भारीजी॥२॥

दोहा—भये विरह वारिधमगन, अति अचेत अकुलाय ॥

श्याम राम तजि मधुपुरी, आये ब्रजनियराय ॥
चौबोला–आये ब्रजनियराय गये उत गृह जनके सुखदाईजी ॥
ब्रजबासिनको नेह कन्हाई पुनि पुनि बरनत जाईजी ॥
बार बार नँद मन पछितावै चूक परी सेवकाईजी ॥
किये कर्म हम परम असाधू कहँ लगि कहिये गाईजी ॥ १ ॥
कोमल पद बन अति कठिनाई हरि पै गाय चराईजी ॥
रंचक दधिके काज रिसाई बांधे ऊखल लाईजी ॥
इन्द्रकोप ब्रज लोग बचाये वरुण लोक गये धाईजी ॥
करि दीने आगे दोउ भाई तन धन नृप भयपाईजी ॥ २ ॥
दोहा–ऐसे निज करनी समुझि, परे धरणि मुरझाय ॥
व्याकुल बल मोहन बिना, इत जोवति मगमाय ॥
चौ०-इत जोवति मग माय यशोमति सोचत अति मन माईजी ॥
आवत देखि गोप ब्रज ओरी अतिहि हृदय हरषाईजी ॥
मानहु धेनु वत्स हित लागी उठि दौरी अतुराईजी ॥
कनियां लेवेको मन चाई आये जनु दोउ भाईजी ॥ १ ॥
धाई अति हरषित हिये आतुर सुनत रोहिणी माईजी ॥
ब्रजातिय अतिहिय भरी हुलासा दरश आश सब आईजी ॥
तिहिं क्षण अति आनंद विहारन ब्रजबासी समुदाईजी ॥
अति संकोच वश नंद विकल तहां सो दुख बरणि न जाईजी॥२॥

अथ ब्रजकी विरह लीला ।

लावनी ।

मन मोहन सों मिलने हित नंद पै आई ॥
तहां राम श्याम दोउ नाहिं देखि मुरझाई ॥
टेक–बूझति नंद सों अकुलाय यशोमति माई ॥

कहां हैं मेरे घनश्याम राम दोउ भाई ॥
व्याकुल भये सुनतहि नंद कह्यो नहिं जाई ॥
नैननभरि डारत नीरहि नारि नवाई ॥
सब देखत ब्रजकी नारिहि गई झुराई ॥
तहँ राम श्याम दोउ नाहिं देखि मुरझाई ॥ १ ॥
जान्यो अब आन बनी विधि सो सुधि आई ॥
जो ब्रजबासिनको प्रथमहिं गर्ग सुनाई ॥
व्याकुल सब विन ब्रजनाथ रहे पछिताई ॥
हम कौन दोष प्रभु तजि यों टेरलगाई ॥
बिलखति अति यशुमति नंद सों कहत रिसाई ॥
तहां राम श्याम दोउ नाहिं देखि मुरझाई ॥ २ ॥
धृक धृकहि महर कहा कियो यो वचन सुनायो ॥
मथुरातजि सुत ब्रज-पग किहिं भांति चलायो ॥
फाटी नाहिं छाती विदा होत तजि धायो ॥
कैसे रहे तनुमें प्राण इहां लों आयो ॥
दशरथकी कथा न सुनि जब रथ लख्यो नाई ॥
तहां राम श्याम दोउ नाहिं देखि मुरझाई ॥ ३ ॥
रहिहों ह्वै हरिकी धायहि मथुरामाई ॥
अब ब्रज अपनो नंदलीजै ठोक बजाई ॥
यह सुनतहि धरणी परे नंद मुरझाई ॥
सब देखत व्याकुल ब्रजके लोग लुगाई ॥
कहां छांडे यशुमति टेर कहाति दोउ भाई ॥
तहां राम श्याम दोउ नाहिं देखि मुरझाई ॥ ४ ॥

दोहा—हमरो जीवन प्राण धन, लियो वसुदेव छिनाय ॥
सुफलक सुत वैरी भयो, लेगयो हरि ब्रज आय ॥

चौबोला–लेगयो हरि ब्रज आय श्यामके संग जाननहिं पाईजी ॥
सिखये इन लोगनके लागी बैठरही घरमाईजी ॥
हरिके संग जावती जो मैं छांडति नाहिं कन्हाईजी ॥
ऐसे रोवत करत विलाप[1] दुखित यशोमति माईजी ॥ १ ॥
हरि बिन सब नर नारि उदासी गृह वन कछु न सुहाईजी ॥
मनहुँ मसान भूमि घर खाई लागत मन कहुँ नाईजी ॥
पूछत नंदहि यशुमति माई कहो कहा कह्यो कन्हाईजी ॥
हरि कछु मोहिं सँदेशो दीनों विदा किये जब आईजी ॥ २ ॥

दोहा–तुम कछु विनती नहिं करी, हरिसों शीश नवाय ॥
मैं अपनो सों बहु कियो, वे प्रभु त्रिभुवन राय ॥

चौबोला-वे प्रभु त्रिभुवन राय करैं सो जो उनके मन चाईजी ॥
कहिकै तोहिं प्रणाम बहुरि तब ऐसे कह्यो कन्हाईजी ॥
करिकै कछु सुर[2] काज बहुरि ब्रज मिलिहों तुमसों आईजी ॥
दुखी होन पावे नहिं मैया यों बोले बलि भाईजी ॥ १ ॥
धीरज देहु तात तुम जाई पुनि मिलिहैं हम आईजी ॥
पठयो मोहिं तोहिं हितलागी वचन तजे नहिं जाईजी ॥
सुनि सँदेश यशुमति दुख पायो रही चरण मनलाईजी ॥
एक पलक विछुरे हरि नाईं मिलन आश मनमाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कहत ग्वाल सब घरन घर, किये श्याम सो ख्याल ॥
नाहिं निबहै जान्यो तबै, हन्यों रजक[3] ततकाल ॥

चौ०-हन्यो रजक ततकाल कंसको चन्दन हरि अँग लायाजी॥
रूप अनूप कुबरिया दीनों धनुषहि तोरि बहायाजी ॥
फिर दोउ भाइन गजको मारयो तब रंगभूमि सिधायाजी ॥
असुर अनेक युद्ध करि मारे मल्लन मार गिरायाजी ॥ १ ॥

---

१ दुःख। २ देवता। ३ धोबी।

कहतहुते ब्रजमें हरि जैसे तैसे कंस नशायोजी ॥
केश पकारि महि तुरत गिरायो यमुना माहिं बहायोजी ॥
उग्रसेनको राजतिलक दियो निजकर चमर ढुरायोजी ॥
मथुरा नर नारी आनंदे सब मन अति सुख पायोजी ॥ २ ॥

दोहा–देवकी अरु वसुदेवसों, पुनि भेंटे हरि जाय ॥
तात मात तब भ्रात दोउ, कह्यो परम सुख पाय ॥

चौबो०-कह्यो परम सुख पाय हरीको भयो उत्सव तहां भारीजी॥
दियो दान बहु विप्र हँकारी नाना द्रव्य अपारीजी ॥
हरिको भूषण वसन सजाये मंगल गायो नारीजी ॥
बहु सम्पति वसुदेव लुटाई घर घर मंगलचारीजी ॥ १ ॥
वासुदेव सब नाम सुनावैं अब न गोपाल कहावैजी ॥
यदुकुल कमल सकल जगनायक विरद वान गुण गावैजी ॥
भये कृष्ण मथुराके राजा आहिरन देखि लजावैजी ॥
पुनि ग्वालन यह बात सुनाई कुबजा सदन सिधावैजी ॥ २ ॥

दोहा–भये जासु वश अति प्रभुः, रहे अधिक हित मानि ॥
मधुपुरिके राजा हरी, कुविजा भइ पटरानि ॥

चौ०-कुबिजा भइ पटरानि बात यह सुनी सकल ब्रजनारीजी ॥
गईं विरह तनु ताप सिराई सौति शाल भयो भारीजी ॥
मिटी श्याम आवनकी आशा भईं दुखित सब ग्वारीजी ॥
रहीं सोच बैठी कोउ ठाढी हगन बहत जल धारीजी ॥ १ ॥
ब्रज तिय सुनि कुविजाकी बातें जुरी सकल मिलि आईंजी ॥
लागीं कहन परस्पर वाणी मन दुख मुख हर्षाईंजी ॥
कुविजा दासी कंसरायकी कीनी नारि कन्हाईजी ॥
आपुन पति वह वाम नाम यह कियो विदित जगमाईंजी॥ १ ॥

दोहा–लै चंदन मगमें मिली, ताते अति मन भाय ॥

भली बुरी चीन्हीं नहीं, दई बड़ाई ताय ॥
दई बड़ाई ताइ कहत वह सोई करत कन्हाईजी ॥
निशि दिन वाके गुणहिं बखाने विसरत इक क्षण नाईजी ॥
अब नहिं सखी श्याम ब्रज आवैं नारि अनोखी पाईजी ॥
श्याम सदाके ऐसेइ माई कह्यो कछु रोष जनाईजी ॥ १ ॥
जब अक्रूर लेन ब्रज आयो कानी लागि सुनाईजी ॥
नई कूबरी नारि बताई तबहिं गये सँग धाईजी ॥
बोली और एक तिन माई कुबिजा देखि कन्हाईजी ॥
दधि वेचन जब जात तहांरी तब हमहूँ लखिपाईजी ॥ २ ॥
दोहा-अँग टेढी अरु मालिनी, हँसत जाहि सब कोइ ॥
बसति नृपतिके महल ढिग, करी सुन्दरी सोइ ॥
चौबोला-करी सुन्दरी सोइ श्याम अरु कुबिजा कह सबकोईजी
कोटि बार दाहौ अनल अरु कोटि कसो किन सोईजी ॥
तो कहुँ पीतर ते री आली कैसेहुँ सोनो होईजी ॥
हमें होत सुनि हँसी श्यामने दई लाज सब खोईजी ॥ १ ॥
जाय कूबरी काज मधुपुरी मारचो कंस कन्हाईजी ॥
बोली और सखी तिन माई तुम अलि बात न पाईजी ॥
कुबजा सदा श्याम को प्यारी तब ऐसी मन भाईजी ॥
राखी तहां तिहीं कर दासी अवगति हरि गुणराईजी ॥ २ ॥
दोहा-रूप रत्न धरि कूबमें, राख्यो गुप्त दुराय ॥
जैसे मोती सीपमें, परगट नाहिं लखाय ॥
चौबोला-परगट नाहिं लखाय मार नृप लई ताहि अबजाईजी ॥
अब ताके गुण प्रगट बखाने कीनी प्रीति कन्हाईजी ॥
ब्रज बनिता त्यागी अब ताते बात श्यामकी पाईजी ॥
वेदिन हरि अब विसर गयेरी कहति सखी इक आईजी ॥ १ ॥

लिये फिरतही तब सब कनियां निरखिनिरखिहरषानीजी ॥
घर घर डोलत माखन खाते उरहन देत लजानीजी ॥
बहुरि भये तब कछुक सयाने बहुत अचकरी ठानीजी ॥
जो जो गुण हमसों उनठाने हम तामें सुख मानीजी ॥ २ ॥

दोहा–देव मनावत दिन गये, बड़े होनकी आस ॥
बड़े भये तब यह कियो, वसे कूबरी पास ॥

चौबोला–वसे कूबरा पास यशोमति रहि गइ लाडलडाईजी ॥
भये देवका पुत्र जाय अब ताहूको विसराईजी ॥
सुनो सखी अब कह्यो हमारो अब पतियारो[1] नाईजी ॥
जो जन जगमें कृताहि नमानें निज स्वारथ मनमाईजी ॥
ज्यों भौंरा कलगूंज सुहाई वसत सुमन[2] हितलाईजी ॥
रसहि चाखि पुनि हित नाहिं मानें तजत तुरत उठधाईजी ॥
पालत कांग[3] पिकहि[4] हितमाने निजकुल मिलत सो जाईजी ॥
सोहि भई हमहीं अरु नंदहि कहिये कासों माईजी ॥ २ ॥

दोहा–बैठत आसन नृपतिके, मुरली लखत लजाइ ॥
मोरपंख देखत नहीं, नामलेत ब्रजनाइ ॥

चौबोला–नामलेत ब्रजनाइ चित्रहू देखिपरै जो गाईजी ॥
तोलजाय इत उत मुखफेरै लखै न वत्स सुहाईजी ॥
सुरत करत ग्वालनकी नाईं हमरे नाम चपाईजी ॥
जिनकी प्रकृति परी यह आई लखत न पीर पराईजी ॥ १ ॥
भयो नयो अब राज वहांरी भये नये पितु मातैजी ॥
नई नारि कुबिजा हरि कीनी नयो नेह नयो नातैजी ॥
कुंजकेलि रसरास विहारा विसरे ब्रजकी बातैजी ॥
हमें दियो दुख दिन दिन दूनो गये आपनी घातैजी ॥ २ ॥

---

१ विश्वास। २ फूल। ३ कौवा। ४ कोकिल।

दोहा–करैं परेखोकौनको, जाति न पांति कन्हाइ ॥
मानें दुख तिनसों कहा, सोच देखि मन माइ ॥
चौबोला–सोच देखि मन माइ नहीं अब गोपीनाथ कन्हाईजी ॥
नहीं ग्वाल नाहिं नँदकेलाला कहत कोऊ तहाँ नाईजी ॥
यदुकुल दीप भाल बर गावत वासुदेव कहाईजी ॥
मोरपच्छ माथेपर नाईं नहीं गुंज उर माईजी ॥ १ ॥
वासुरली सँग गई सगाई गृह बन प्रीति घटाईजी ॥
दिन दशनेह करो किन काजै उन सब प्रीति भुलाईजी ॥
सबहि अयान भई तिहिं काला मुरली ध्वनि सुनि पाईजी ॥
कहत एक सुनरी ब्रजबाला अब ब्रजनाहिं सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तब ब्रज पर कृपाहुती, राखो कर गिरि कान्ह ॥
बहुरो यह अचरज कियो, दावानल मुखपान ॥
चौबोला–दावानल मुख पान समुझि अब सकुच जीयरहजाईजी
भयो वज्रते कठिन हियो यह फट्यो सो बिछुरत नाईजी ॥
अबलागे दिन जान सखी सुन बिन श्री कुँवर कन्हाईजी ॥
रहत नविन देखे वह मूरति प्राण देहके माईजी ॥ ३ ॥
जब विधि बालक वत्स चुराये लीने और बनाईजी ॥
जनु वैसेही कुँवर कन्हाई विरहा सृष्टि चलाईजी ॥
भई विरह वश सब ब्रजबाला गावत गुण सुखदाईजी ॥
व्यापी दशइँ अवस्थातनमें भयो कठिन दुख आईजी ॥ २ ॥
दोहा–विन देखे कैसे जियें, सुन्दर श्री बलवीर ॥
ज्यों चकोर विन चँद दुखी, जिमि वारिज विननीर ॥
चौ०-जिमि वारिज विन नीर विवरन तिमि खंजनग्रीषमपाईजी
जैसे दुखी भ्रमर विनकुंजन और न कछु मनभाईजी ॥
श्याम सिंधुते बिछुर परेरी तरफतमीन सुहाईजी ॥

भरत ढरत पुनि पुनि अकुलाई धीर धरत दृग नांईजी ॥ १ ॥
गृह बन कछु न सुहात निहारे विन श्रीकुँवर कन्हाईजी ॥
विरह व्यथा जारत तन लागत तपत चन्द्र अधिकाईजी ॥
विना श्वासकी देह सखीजिमि और रूप ह्वै जाईजी ॥
तिमि लागत ब्रज गेह भयानक कीनों हरि सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–यहि विरियां आवत हरी, वनते धेनु चराय ॥
दूरहिते सुन्दर सुखद, करगहि वेणु बजाय ॥
चौबो०–करगहि वेणु बजाय कबहुँ सखी वे हरि कुँवर कन्हाईजी
गावत ऊंचे सुरन रसाला सो छवि बरनि न जाईजी ॥
कबहुँक लै लै नाम सुनावें धोरी धूमरि गाईजी ॥
देत दृगन सुख बनते आवत मोहन रूप दिखाईजी ॥ १ ॥
बहुरौं कबहुँ देखिये वैसे बोली इक तिन माईजी ॥
बैठे ग्वाल बालकन साथे बांटत खात कन्हाईजी ॥
इक दिन दधि चोरत मम धामा वह छबि लखि सुखदाईजी ॥
वे भाजे मम लखि परछाईं धाय गही मैं बाईजी ॥ २ ॥
दोहा–लै कनियां मुख पोंछतब, रही परम हरषाय ॥
रहे लागि छाती हरी, सो सुख कह्यो न जाय ॥
चौबो०–सो सुख कह्यो न जाय सुमिर अब वे गुण गण मन माईजी
हरि बिन रहत अधम तनु प्राणा निकसत ये क्यों नाईजी ॥
मन मोहनके खेल सखीरी कहां लगि कहिये गाईजी ॥
ज्यों दीपकबिन तेल श्याम बिन गोकुल हमहिं लखाईजी॥१॥
सुमिर सुमिर गुण श्यामसुन्दरके रहत नैन जल छाईजी ॥
भये सकल बिन कान्ह हमें अब कहिये काहि सुनाईजी ॥
एक प्रलाप करत तिन माई कहै कोउ हरिसों जाईजी ॥
लेहु आप निज गायन घेरी फिरत ग्वालते नाईजी ॥ २ ॥

दोहा-तुम विन नाहिं पतियात कोउ, विडुरि फिरत सब गाइ॥
अपने जानि समारिये, विसरहु मतिहि कन्हाइ ॥
चौबो०-विसरहु मतिहि कन्हाइ विलखत सकल वत्स अरुगाईजी
नेक सुनावहु वेणु रसाला अपने मुख सुखदाईजी ॥
बूडत विरह सिंधुमें नारी काढि लेहु गहि बाईंजी ॥
कोऊ कहत कहै कोउ जाई वसहु बहुरि ब्रज माईजी ॥
नाहिं जगाय अब बनाहिं पठावैं गैयां नाहिं चरावैंजी ॥
माखन खात बरजि हैं नाहीं यशुमति पै नहिं जावैंजी ॥
चोरी प्रगट करैं नहिं काऊ अवगुणता नजनावैंजी ॥
नहिं दांवेरी यशोदहिदेहैं अब नहिं हाथ बँधावैंजी ॥ २ ॥
दोहा-मांगत दान न बरजि हैं, हठ नाहिं करिहैं मान ॥
आयदरश अब दीजिये, रहत न तुम विनप्रान ॥
चौबोला-रहत न तुमबिन प्रान ऐसे कहि ल्यावहिं फेरमनाईजी
तौ नँद नंद गुपाल सांवरो वसहिं बहुरि ब्रजआईजी ॥
एक कहति अब हरि क्यों आवै नृपतजि ग्वाल कहाईजी ॥
ह्वां गजरथ चढि चलत कन्हाई ह्यां क्यों चारत गाईजी ॥ १ ॥
वहां पटंबर पहिर दिखावै इहां कमर क्यों भावैजी ॥
अब उन यशुमति मात विसारी हमरी कौन चलावैजी ॥
बोली अपर सखी विलखाई अब हरि निठुर लखावैजी ॥
करी प्रीति हमसों हरि ऐसी नीर मीन[3] महिं चावैजी ॥ २ ॥
दोहा-तरफतमीन ढिंग नीरके, नीरहि दया न आत ॥
बीतीअवधिनाहिं सुधिलई, चलत कही यहबात ॥
चौबोला-चलत कही यह बात कंसही जीत मिलौंगो आईजी ॥
हारे दृग उतही मग जोवत डारत जल विलखाईजी ॥

१ तितिर बितिर । २ रस्सी । ३ मछली ।

जैसो दिन निशि तैसी जाई नींद परत पल नाईजी ॥
मन्द समीर चन्द्र इनतेरी जरत सेज अधिकाईजी ॥ १ ॥
सपनेहूं तो देखिये आली दृगन नींद नहिं आईजी ॥
क्यों हूँ लहत चैन मन नाई कीने विविध उपाईजी ॥
सुन सखि हों तोसों कहुँ सांची बोली इक तिनमाईजी ॥
जबते बिछुरे श्याम आज मैं लखे स्वप्न सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—आये जनु मम धाम हँसि, गहि भुज नंद किसोर ॥
कहा कहूँ बैरन भई, रही नींद नहिं और ॥

चौ-०रही नींद नहिं और चकइ जिमि लखी आप निज छाईजी
पति हित जानि हरषि मनमाई निठुर बायु जब आईजी ॥
दियो पवन तब सलिल डुलाई लखि चकई पछिताईजी ॥
मेरी दशा भई जब जागी देख्यो ढिग कोउ नाईजी ॥ १ ॥
देखहुँ कहा अधिक अकुलाई तब मोहिं काम जराईजी ॥
कहा कहौं किहिं दोष लगाऊँ जानि चूक पछिताईजी ॥
बिछुरतही नहिं तज्यो शरीरा अब यह पीर लखाईजी ॥
महादुखित अब अंग हमारे रहत नैन जल छाईजी ॥ २ ॥

दोहा—चहत रूप लखे श्यामको, अतिहि रहे भरमाइ ॥
रसना हरिके नाम विन, भाषन चह अरुनाइ ॥

चौबोला—भाषनचह अरुनाइ जबहिंते बिछुरे हरि सुखरासेजी ॥
तबतें भये सबै दुखदाई खान पान बनवासेजी ॥
वेई निश वेइ दिवस वेई सब वेई ऋतु वेइ मासेजी ॥
बदले सबै स्वभाव जनुः अब बिन हरि मदन विलासेजी ॥ १ ॥
अब या ब्रजमें एरी आली चली औरही चालेजी ॥
भये दुखद जे सुखदहते सब विमुख भये गोपालेजी ॥
गृह कंदरा सेज भइ शूली शशिहि तप्त विकरालेजी ॥

मलयज मनहुँ अग्नि सम तूली लगत अंग जनु ज्वालेन ॥२॥

दोहा-फूली डारी सकल बन, अरुण सुमन भरभार ॥
झरत देखियत सुमन सब, मानहु परत अँगार ॥

चौबोला-मानहुँ परत अँगार हरी विन लागत फूल दुखारेजी ॥
तब इन तरुन अमृत फल लागे सो अब विषकी झारेजी ॥
त्रिविध समीर तीरसम लागत कोकिल शब्द अँगारेजी ॥
तप्त तेल सम बारिद चातक जारत अंग हमारेजी ॥ १ ॥
सुन सखि चातक दोष न दीजै याकी हम बलि जावैंजी ॥
जैसे पिय पिय हम रटलावें तैसेही वहगावैंजी ॥
आप सुधारस पी सुख पावै विरहिन टेर जनावैजी ॥
जो ये खग नहिं करत सहाई तो दुख अधिक सतावैजी ॥ २ ॥

दोहा-या पक्षी सम औरको, सुन सखि सुकृत समाज ॥
सफल जन्महै तासुको, जो आवै परकाज ॥

चौबोला-जो आवै परकाज कहत यों मगन श्याम रस नारीजी॥
सोवत जागत निशि दिन सारी नाहिं विसरत बनवारीजी ॥
पथिक जात मधुवन तन हेरचो तिहिं घेरचो सब ग्वारीजी ॥
कहत पाँय हम परैं तिहारे सुनहू बात हमारीजी ॥ १ ॥
उतहैं वसत कृष्ण ब्रजनाथा कहियो तिनसों जाईजी ॥
तुम जु इन्द्रको यज्ञ नशायो गिरिधर ब्रजहि बचाईजी ॥
सो अब वह बिरहा ह्वै आयो चाहत ब्रजहि बहाईजी ॥
बरषत निश दिन दृग घन कारे उर विच धार लगाईजी ॥ २ ॥

दोहा-व्यथा प्रवाह बढ्यो अतिः बुडत विरह ब्रजनारि ॥
चितवत मग तुमरोहरिः, लीजै आय उबारि ॥

चौबोला-लीजै आय उबारि दरश अब देहु नाथ अभिरामाजी
जैसे मीन सलिलते न्यारी तरफत तुम बिन वामाजी ॥

एक बार ब्रजमें फिर आवो गोपिन हित घनश्यामाजी ॥
तुम विन ब्रज सब ऐसो लागत जिमि दीपक विन धामाजी ॥१॥
अब वह कृपा भई कहा मोहन मिलते वेणु बजाईजी ॥
जात प्राण तन तजि गोपिनके पुनि कहा करिहो आईजी ॥
सुनहु पथिक तोहिं राम दोहाई कहियो यह समुझाईजी ॥
तुम विन राधेके तनु आई सब विपरीत बनाईजी ॥ २ ॥

दोहा—वदन छपाकर छविहुती, सो सब लई छिपाय ॥
कलंक निसानी रहि गई, देखहु हरि निज आय ॥

चौबोला—देखहु हरि निज आय कमल पखुरीसे नैन सुहाईजी॥
सो अब मनहु रंग निचुरेसे रहत अधिक मुरझाईजी ॥
आंचलगे कंचन तिमि तनुहीं विरहानलते ताईजी ॥
कदली दल सी पीठ सुहाई सो मनु उलटि बनाईजी ॥ १ ॥
सुखकी संपति सकल नशाई कोकिल कलन सुहाईजी ॥
अब सब साध मानकी नाशी दरश आश मनमाईजी ॥
चातक पिक मृग अलि इनते तब देखतही अनखाईजी ॥
अब तिनसों पूछतहैं धाई तुम पद ध्यान लगाईजी ॥ २ ॥

दोहा—ललितादिक सब सखिनसों, रहती गर्व बढाय ॥
अब तिनसों अकुलायकै, मिलत रोय उठ धाय ॥

चौ०-मिलत रोय उठ धाय सुधि बुधिः तनुकी सकल नशाईजी॥
गयहु सकल आनन्द हृदयमें रह्यो विरह दुख छाईजी ॥
होन चहत दशई दशा अब वेगि मिलौ तिहिं आईजी ॥
कहत सँदेशे श्याम सुन्दरसों निज निज हेत जनाईजी ॥ १ ॥
पथिकहि चलन देत नाहिं कोऊ ताहि सांझ भइ आवैजी ॥
विरह विकल सब ब्रजकी बाला हरि वियोग अकुलावैजी ॥
जिहिं तिहिं कहि उर व्यथा जनावै हरि बिन कछु न सुहावैजी ॥

जब पपिहा बोलत निश आई तब कोउ ताहि सुनावैजी ॥ २ ॥
दोहा–विरह जरी हौंतो परी, तू कत आय जरात ॥
रेखग पापी मूढमति, अबलन काहि सतात ॥
चौ०–अबलन काहि सतात पीय पिय कहि अधरात सुनाईजी॥
तू नहिं सुखित दुखित विन नीरा जान न पीर पराईजी ॥
करत कहा इतनो कठिनाई हरि बिन बोलत आईजी ॥
काहे अगिलो जन्म विगारत आरत उर उपजाईजी ॥ १ ॥
हैं सारंग हम तेरी चेरी कहति एक तिन माईजी ॥
ऊंचे टेर सुनावहु जाई पौढे जहँ सुखदाईजी ॥
गइ ग्रीषम ऋतु पावस आई सब मन चाव बढ़ाईजी ॥
तुम बिन ब्रजतिय डोलत ऐसे नाव विना करियाईजी ॥ २ ॥
दोहा–मानैंगे तेरो कह्यो, तेरे हित घनश्याम ॥
लेहु सुयश चातक बड़ो, ले आवहु सुखधाम ॥
चौबोला–ले आवहु सुखधाम कोऊ सखी ऐसे वचन सुनावैजी ॥
यह विहंग सुख देन सखीरी मेरे मन अति भावैजी ॥
पियके विरह भयो जरकारो निशि दिन पीरट लावैजी ॥
तज्यो सिंधुको जल कर खारो स्वाति बूंद मन चावेजी ॥ १ ॥
आप पीर पर पीरहि पावे पियको नाम सुनाईजी ॥
प्रेम बाण लाग्यो जिहिं होई व्यथा प्रेमकी पाईजी ॥
कोउ कहत कोकिलही टेरी ऐसे ताहि सिखाईजी ॥
फिर आवहि बारिक तहाँ जाई वसत जहाँ सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तू कुलीनरी कोकिला, मधुरे वचन सुनात ॥
तो सम उपकारी नहीं, जानत हम दुख पात ॥
चौ०-जानत हम दुखपात उपननः बैठि श्यामको टेरीजी ॥
कहियो अबलन मन्मथ घेरी ल्याहु श्यामको फेरीजी ॥

प्राण पलट जिमि मिलत नयेरी लेहु सुयशकी ढेरीजी ॥
है हैं विन मोलन हम चेरी गावहिं कीरति तेरीजी ॥ १ ॥
कोऊ ऐसे कहि उठत अब बरजहु बोलत मोरेजी ॥
रह्यो परत नाहिं सुनि सुनि टेरी विन श्रीनन्द किशोरेजी ॥
मोरहु सखि बैरी भये मारत वचनन करि शर जोरेजी ॥
ये बनते नटैं न मरैंरी हरि विन लगत कठोरेजी ॥ २ ॥

दोहा—मगन भई ब्रजनारि सब, भरी विरहरस माहिं ॥
निशि वासर हरिको रटत, इकक्षण न्यारी नाहिं ॥

चौबोला—इकक्षणन्यारी नाहिं हगनबिच हरिछबि रहीसमाईजी॥
रसना कृष्ण नाम रट लाई और कछू न सुहाईजी ॥
श्रवण रहे हरिको यश भरके मन हरिके गुण गाईजी ॥
बसी श्याम मूरति उरमाई विसरत इक पलनाईजी ॥ १ ॥
बैठत उठत चलत घर बाहर हरि स्नेह अनुरागीजी ॥
सोवत जागत दिन अरु राती प्रीति कृष्ण सों लागीजी ॥
सकल अंग हरिके रस पागी हरि मय भई सभागीजी ॥
धनि सो प्रीति कृष्णसों लागी धन्य सुरति रसपागीजी ॥ २ ॥

दोहा—धन्य जोई सुख जानिये, प्रभुके संग विहारि ॥
धनिधनि सो दुखमानिये,हरिके विरहदुखारि ॥

चौबोला—हरिके विरह दुखारि परेखो धनिसो हरिको जोईजी ॥
धन्यसरेखो हरिको होई याते धन्य न कोईजी ॥
जप तप धन्य जो हरि हित जोई ज्ञान ध्यान धनि सोईजी ॥
सब विधि धन्य जिने हरि आशा धनिसो हरिजन होईजी ॥१॥
नन्द यशोमति गोपी जन सब निशि बासर हरि ध्यावैजी ॥
विहारन प्रभु मिलनेकी आशा क्षण क्षण सब मन चावैजी ॥
विसरे सब व्यवहार और मन दूजो कछु न सुहावैजी ॥

अंध लकुटिया धारि एक सब हरि मूरति चितलावैजी ॥ २ ॥

अथ श्रीकृष्णजीकी यज्ञोपवीतलीला।

दोहा–जबते हरि मथुरा बसे, रहत सकल सुख पाय ॥
निरखि निरखि दोऊ सुतन, मगन देवकी माय ॥
चौबोला–मगन देवकी माय परमानंद मुदित दोउ भाईजी ॥
सुखी सकल यादव गण जेते अरु सब लोग लुगाईजी ॥
देत सबन सुख हरि सुखदाई वसुदेव मन यह आईजी ॥
बोले जे कुल मध्य प्रधाना करि आदर बैठाईजी ॥ १ ॥
तिनसों कहि यह बात सुनाई राम कृष्ण दोउ भाईजी ॥
ग्वालन मध्य रहे ब्रजजाई यदुकुल रीत न पाईजी ॥
हैं अबहीं कुल धर्म अयाने ताते मोमन आईजी ॥
यज्ञोपवीत दुहुँनको दीजै यह विचार मन माईजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनत वचन हरषे सकल, बात सबन मनभाइ ॥
गर्ग आदि सब विप्रवर, लीने तुरत बुलाइ ॥
चौबोला–लीने तुरत बुलाइ ऋषी शुभ आसनपर बैठायेजी ॥
पूछि सुदिन शुभ लगन धराई सामा सकल सजायेजी ॥
सकल तीरथन सों जल आये तब दोउ भ्रात न्हवायेजी ॥
सकल वेद विधि मंत्र पढे अरु कर अभिषेक सुहायेजी ॥ १ ॥
दियो यज्ञ उपवीत दुहुँनको गर्ग मुनी हरषायोजी ॥
वेद श्वास जाको सब गावैं शेष पार नहिं पायोजी ॥
ताहि दियो उपदेश गायत्री मंत्रहि गर्ग सुनायोजी ॥
पूजे द्विज सब सहित विवेका दियो दान मन भायोजी ॥ २ ॥
दोहा–नर नारी आनँद भरे, गावत मंगलचार ॥
लखि कौतुक सुरगण सुखी, वरषत सुमनअपार ॥

चौबोला-वरषत सुमन अपार मगन मन दुंदुभि गगन बजावैजी॥
अति आनंद भयो सब काहू तात मात सुख पावैजी॥
पुनि इकदिन वसुदेव सुज्ञानी यह विचार ठहरावैजी॥
पंडित भलो कहूं जो पावें विद्या सुतन पढावेजी॥ १॥
संदीपन पंडित बड़ ज्ञानी यह कोउ बात चलाईजी॥
रहैं अवंतीपुरके माईं तासम अरु कोउ नाईजी॥
यह सुनि कृष्णा सकल गुणखानी पितुके मनकी पाईजी॥
ह्वैके नेम सहित दोउ भाई पढन चले यदुराईजी॥ २॥
दोहा–कर प्रणाम गुरुसों हरी, रहे कछुक दिन जाइ॥
वेद विहित सेवा करे, पढन लगे दोउ भाइ॥
चौ०-पढन लगे दोउ भाइ विद्या सब अलप कालमें पाईजी॥
लखि प्रभाव गुरु अति सुख पायो आनँद उर न समाईजी॥
जानि जगतपति कहत मनहिं मन ये त्रिभुवनके राईजी॥
तब हरि गुरुसों सहित सनेहा ऐसे विनय सुनाईजी॥ १॥
गुरू दक्षिणा जो कछु चैये सो आयसु अब कीजेजी॥
तब गुरु कह्यो विचार मनहिं मन कहा मांगो सो चीजेजी॥
तुम प्रभु करता हो जगहीके कहा तुम सों हरि लीजेजी॥
बूझि लेहुँ निज नारि प्रभू अब जो वह कह सो दीजेजी॥ २॥
दोहा–तब संदीपन तीय पै, आये अति सुखपाय॥
वचन कृष्ण मुखते कहे, सो सब दिये सुनाय॥
चौबोला–सो सब दिये सुनाय दक्षिणा देन कहत यदुराईजी॥
मांगें कहा वेहैं जगकरता सो बूझत तुम पाईजी॥
मरे हुते ताके सुत दोई सो मांगे उन आईजी॥
कृष्ण सकल जीवनके स्वामी जल थल हारि सब ठाईजी॥ १॥
गये बहुरि जनके सुखदाई उत्पति पालन कारीजी॥

आनदिये गुरुके सुत सोई भक्तनके दुखहारीजी ॥
भये सुखी द्विज अरु द्विज नारी मिट्यो सोकसुत भारीजी ॥
ह्वै प्रसन्न गुरुदई अशीशें कारि प्रणाम बनवारीजी ॥ २ ॥
दोहा–गुरु आयसुले तब पुनी, अति हरषित दोउ भ्रात ॥
आये मधुपुर जन सुखद, तात मात बलिजात ॥
चौबोला–तात मात बलिजात देखि सुख दंपति भये सुखारीजी
भयो मनोरथ सब मन भायो उर आनँद अति भारीजी ॥
उग्रसेन आयसु हरि करहीं राजकाज अधिकारीजी ॥
सुखी सकल हरि वदन निहारी पुरजन नर अरु नारीजी॥ १ ॥
ऊधो अरु अक्रूर सखा ये हरिके संग सुहाईजी ॥
मिलि बैठत खेलत हँसत हरि इनके सँग यदुराईजी ॥
ब्रजवासिनको ध्यान सदाई विहारन प्रभु मनमाईजी ॥
यदपि ब्रह्म सुखखान तदपि हरि भक्तवश्य सुखदाईजी ॥ २ ॥

अथ उद्धवजीकी विदालीला।

दोहा–श्री कृष्ण यदुनाथ के, ऊधो सखासज्ञानि ॥
प्रेम कथा जानत नहीं, एक ब्रह्मसुख मानि ॥
चौबोला–एक ब्रह्मसुख मानि हरीको त्रिगुण स्वरूप लखावैजी ॥
जब हरि ब्रजकी बात चलावैं तब ऊधो उचटावैजी ॥
भली बान याकी यह नाईं लखि हरिमन पछितावैजी ॥
रूप रेख जाके नहिं कोई सो स्वरूप यह ध्यावैजी ॥ १ ॥
निर्गुण कथा योगकी गावै तामें स्वाद न पावैजी ॥
ज्ञानगर्व में रहत उदासी एक ब्रह्ममन लावैजी ॥
बिछुर मिलन दुख सुख जे नाईं नहीं प्रेमतन आवैजी ॥
कनक कलश पानी बिन जैसे याको रूप सुहावैजी ॥ २ ॥

दोहा–ऊधो कछु मानत नहीं, कहूं प्रेमकी गाथ ॥
हंस और बायँस मनो, मिल्यो दुहुनको साथ ॥
चौ०–मिल्यो दुहुँनको साथ ऐसे हरि कहत मनहिं सुखदाईजी
ब्रजको ध्यान सदा उर मेरे प्रेम न याहि सुहाईजी ॥
कहां यशोमति महर नंदसे सुखदतात अरु माईजी ॥
कहां वह सुख ब्रज धाम कुंजको निशदिन विसरत नाईजी॥१॥
कहां सखनको संग कहां वह वृंदावन सुखकारीजी ॥
कहां वह प्रेम तरंग यमुन तट बंसीवट छबि भारीजी ॥
कहां नवल ब्रज गोप कुमारी कहां वृषभानु दुलारीजी ॥
कहां वह प्रीति रीति सुख संगा कहां वह रास विहारीजी ॥२॥
दोहा–कहां कुंज बनकेलि सुख, कहां मान सुखदाइ ॥
कहां लगि ब्रजके सुख कहों, लखि वैकुंठ भुलाइ ॥
चौ०–लखि वैकुंठ भुलावे यह रस कहि ये कासों जाईजी ॥
ऊधो सुनत प्रेमको भागे याको नाहिं सुहाईजी ॥
कैसे प्रेम होय यामाई कहे मानि है नाईजी ॥
याको ब्रज अब देहुँ पठाई तहाँ प्रेम यह पाईजी ॥ १ ॥
यहै बात यदुपति उर आनी यह कहि याहि पठाईजी ॥
कहो जाय तिन ज्ञान दृढावो दीजे प्रेम मिटाईजी ॥
कहि हैं हरि जानत मुहिं ज्ञाता सुनत तुरत यह जाईजी ॥
करि अभिमान तुरत ब्रज जैहै वहां साध ह्वै आईजी ॥ २ ॥
दोहा–ऐसे हरि बैठे करत, अपने उर अनुमान ॥
ऊधोके उरते करों, दूर ज्ञान अभिमान ॥
चौबोला-दूर ज्ञान अभिमान करों मन ऐसे कहत गुपालेजी ॥
ऊधोजी हरिके निकटही आय गये तिहिं कालेजी ॥

१ काग। २ लहर। ३ तरुणावस्था। ४ पास।

सखा सखा कहि अंकम भरिकै विहँसि मिले नँदलालेजी ॥
ऊधो सों ब्रज बात चलाई भुजगहि दीनदयालेजी ॥ १ ॥
ऊधो सुनो कहों तुम पाई ब्रज सुख विसरत नाईजी ॥
नेकहु नहीं यहां मन लागत उतहीको मन जाईजी ॥
यह मन होत वहीं पुनि जैये ग्वालनमें सुख पाईजी ॥
कहां वह यशुमति दै दै माखन अति हित लेत बलाईजी ॥ २ ॥

दोहा—वह राधाकी प्रीति अति, नेक न विसरी जाय ॥
गोप सखा वृंदा विपिन, बंसीबटकी छांय ॥

चौबोला—बंसीबटकी छांय तजी मुहि तबते कछु न सुहाईजी ॥
कहा कहों हरि यों अकुलाई कहि ऊधो मुसकाईजी ॥
जग व्यवहार सकल मिथ्याई सदा हेत थिर नाईजी ॥
मोसों सुनो बात यदुराई एक ब्रह्म सुखदाईजी ॥ १ ॥
विहँसि ज्ञानकी बातहि ऊधो जब ऐसे समुझाईजी ॥
तब यदुपति सुख पाय मनाहिं मन पुनि बोले हरषाईजी ॥
उद्धव कहि जो बात तुमाहिं यह सो मेरे मन भाईजी ॥
सखा और मेरो हितकारी तुम समान कोउ नाईजी ॥ २ ॥

दोहा—करि आवहु यह काज मम, ऊधो तुम ब्रज जाय ॥
पूरण ब्रह्म अलख अज, पिता न जाके माय ॥

चौ०-पिता न जाके माय रूप अरु रेख जाति कुल नाईजी ॥
व्याप रह्यो सब घट घट माई जल थल अरु सब ठाईजी ॥
हो ताके ज्ञाता तुम ज्ञानी गोपिन प्रीति सुहाईजी ॥
यह मति तिन्हें बोध करि आवो दीजे प्रेम मिटाईजी ॥
मेरे प्रेम विवश वे बाला सहत विरह दुखभारीजी ॥
सोच श्वास मारुत बलवाना काम अग्नितनु जारीजी ॥
भस्महोन पावत सो नाईं भीजत दृगजल धारीजी ॥

विरह व्यथा व्याकुल दिन राती ऐसे सब ब्रजनारीजी ॥ २ ॥
दोहा–मेटहु तिनको दाहु यह, सखा वेग तुमजाय ॥
पठऊं नारिनके निकट, आवहु ज्ञान दृढाय ॥
चौबोला–आवहु ज्ञान दृढाय सखा मम तुमज्ञाता अतिभारीजी
देहु ज्ञान तुम जाय तियनको साधनसीखै सारीजी ॥
ज्ञान योग उपदेश कियेते सुखपावैं वे नारीजी ॥
ब्रह्म अलख परचहिं वे सब अब डारहिं मोहिं विसारीजी ॥ १ ॥
ऊधो तुम सम हितू नकोई कहत तोहिं समुझाईजी ॥
कैसे हूँ मुहिं उन गोपिनसों ऊऋण कीजे जाईजी ॥
निशिदिन भक्ति करैं वे मेरी और न कछू सुहाईजी ॥
तन मन प्राण समर्पण कीने विरह विकल अधिकाईजी ॥ २ ॥
दोहा–मुक्ति तीन तिनको दई, एकहु लइ उन नाइ ॥
रही एक सायोजसो, ज्ञान विना नहिं पाइ ॥
चौबोला–ज्ञान विना नहिं पाइ सखा अब देवहु ज्ञान दृढ़ाईजी
जिहिं पावैं वे पद निरवानै गोपीजन समुदाईजी ॥
जो न करैं अंगीकृत तो मैं हों उनको ऋणयाईजी ॥
गाय चरावत उनकी रहिहों ब्रज तजि अंत न जाईजी ॥ १ ॥
यहै बात मोमन में आवै रहिहौं ब्रजके माईजी ॥
और नकछु मोपै बनिआवै यह मेरे मन भाईजी ॥
ऊधो जाउ वेगि उनको अब मोविन पलन सुहाईजी ॥
समाधान तिनको करि आवो करियो विलम नह्वांईजी ॥ २ ॥
दोहा–विलम नरहियो वहां तुम, ऊधो ब्रजमें जाय ॥
तुम विन हम अकुलाय हैं, करत श्याम चतुराय ॥
चौबोला–करत श्याम चतुराय तुम्हें कहा बारहि बार सिखाईजी
जैसे जल विन मीन जानियो तुम विन हम अकुलाईजी ॥

कही श्याम ऐसे जब वाणी तब ऊधो मन आईजी ॥
यदुपति योग सांच अब जान्यो रहे ज्ञान गरबाईजी ॥ १ ॥
बोल्यो अति अभिमान बढाई तुम आयसु यदुराईजी ॥
तुम पठवत गोपिनके पाई मैं क्यों करिहों नाईजी ॥
तुम्हरे कहे ब्रजहि मैं जैहों देहों ज्ञान सुनाईजी ॥
जो मानहीं ब्रह्म उपदेशे तो कहिहों समुझाईजी ॥ २ ॥

दोहा–दिन द्वै रहिहों जाय ब्रज, ब्रजवासिनके माँह ॥
सुख पैहों तिनको निरखि, पुनि गैहों पद आइ ॥

चौ०–पुनि गैहों पद आइ सुनतही विहँसि कह्यो सुखदाईजी ॥
जाहु उपंगसुत ब्रजको अबहीं देवहु ज्ञान दृढाईजी ॥
एक पंथ द्वै कारजकीजे दीजे खबरहु जाईजी ॥
जबते इत आये हम तबते ब्रज पठयो कोउ नाईजी ॥ १ ॥
नन्द यशोदहि खबर जनावो पुनि परतोषहु ग्वारीजी ॥
कहियो ज्ञान योग विस्तारी जिन सकुचौ लखि नारीजी ॥
वचन सुनत समुझहिं सुकुमारी हैं प्रवीन वे भारीजी ॥
ज्यों जल पाये मीन विरहते ह्वैहैं शीतल सारीजी ॥ २ ॥

दोहा–ऊधो को इहि काज हरि, पठवत थापि महंत ॥
ब्रज बनितनके दरशते, ह्वै आवेंगे संत ॥

चौबोला–ह्वै आवेंगे संत जानि मन पठवत कुँवर कन्हाईजी ॥
अपनोहीं रथ लियो मँगाई दियो तुरत पलनाईजी ॥
अपने भूषण वसन मँगाये दीने निज पहराईजी ॥
अपनो मुकुट आपनी माला उर विसाल छबि छाईजी ॥ १ ॥
ऊधो तब हरि रूप सुहाये भृगुपद चिह्न सो नाईजी ॥
लिख्यो पत्र तब श्री यदुराई नंदहि विनय बड़ाईजी ॥
पालागन दोऊ कर जोरी यशुमति चरणन माईजी ॥

बालक ग्वाल सखा समुदाई लिख्यो मिलन उरलाईजी ॥ २ ॥
दोहा—प्रीति सहित हरि सब लिखे, ब्रजके नर अरु नारि ॥
योग सकल गोपीन को, लिख पठयो बनवारि ॥
चौबोला—लिख पठयो बनवारि भाव यह काऊजान नपाईजी ॥
लेहु दृढ़ाय प्रीति ब्रजबाला यह हरिके मन आईजी ॥
लखि पाती ऊधो कर¹ दीनी मुखते और सुनाईजी ॥
नीके रहियो यशुमति मैया अब ऐहैं दोउभाईजी ॥ १ ॥
कहा कहों जादिनते मैया बिछुरचो तोते आईजी ॥
तादिनते अब यहां न कोई कहत न मोहिं कन्हाईजी ॥
अति दुख पायो मात तुमहिं अब कह्यो संदेश न जाईजी ॥
अबमोको निज तात कहत यहां वसुदेव देवकि माईजी ॥ २ ॥
दोहा—कहियो बाबा नंदसों, कहा मन लियो निठुराय ॥
दियो इतै पहुँचाय पुनि, लियो शोध नहिं आय ॥
चौबोला—लियो शोध नहिं आय बाबा सों यों कहियो समुझाईजी
पुनि जैयो बरषाने तहँ सब दीजै खबर जनाईजी ॥
ग्वाल बाल सब सखा हमारे रहत विरह दुख माईजी ॥
तिन्हें जाय मम दिशते भेटो मेटो सब दुख जाईजी ॥ १ ॥
ब्रजवासी जेते नर नारी खग मृग सब बनचारी²जी ॥
अरस परस कहियो कुशलाती जो जैसो हितकारीजी ॥
मित्र एक मम दरशन सो तुम लखि सुख पैहो भारीजी ॥
वृन्दावनमें रहत निरंतर³ होत न उर⁴ते न्यारीजी ॥ २ ॥
दोहा—सघन कुंज अरु लता तिन, मिलियो शीशनवाइ ॥
इहि विधि ऊधो सों हरि:, मनकी बात सुनाइ ॥
चौ०—मनकी बात सुनाइ ऊधो सों दियो प्रेम दरशाईजी ॥

१ हाथ । २ वनके जीव । ३ सदासर्वदा । ४ हृदय ।

ज्ञान गर्व दीनो उपजाई ऊधोके मन माईजी ॥
ब्रजकी प्रीति प्रगट यों हरिने ऊधोको समुझाईजी ॥
चले करन विपरीत ऊधो तिन ज्ञान सिखावन जाईजी ॥ ॥१॥
ऊधोको लखि जात ब्रजहि तब हलधर लियो बुलाईजी ॥
समुझत ब्रजकी बात मनहिंमन भरयो नैन जल आईजी ॥
कहा कहौं ऊधो मैं तुमसों यशुमति हेतु जनाईजी ॥
एक दिवस खेलत मम साथा झगरे श्रीयदुराईजी ॥ २ ॥

दोहा—तबहीं यशुमति दौरि मुहिं, लीनों गोद उठाय ॥
करसों ठेलयो श्यामको, दीनो दूर हटाय ॥

चौबोला—दीनों दूर हटाय बनहिंते आये तब नँदराईजी ॥
इन्हें गोदले मोहिं खिजायो ऐसे वचन सुनाईजी ॥
तोको छोह लगत नहिं राई यह नहनो तेरो भाईजी ॥
वह हित नाहिं विसरत है हमको कह्यो सँदेश नजाईजी ॥ १ ॥
कहियो तुम प्रणाम पुर जाई दोउ भैयन कुशलाईजी ॥
कहियो हम हैं तनय तुम्हारे मात पिता अरु नाईजी ॥
कारज कछुक और है हमको मिलिहैं तुमसों आईजी ॥
नहिं विसरत क्षण गोकुल तुम तजि हमें न सुखकोउ ठाईजी॥२॥

दोहा—तब देवकि वसुदेवने, सुन पाई यह बात ॥
ऊधो रथहि सजायके, ब्रजहि पठायो जात ॥

चौ०—ब्रजहि पठायो जात समुझिहित वसुदेव निज मन आईजी
लिख्यो सुपत्र नन्द यशुमतिको अतिहित विनय बड़ाईजी ॥
पालदिये तुम सुवन हमारे ऊऋण तुमते नाईजी ॥
राम कृष्ण तुमरे सुत जानो जिन सकुचो जियमाईजी ॥ १ ॥
बालपने में तुम प्रतिपारे कहँ लगि करों बड़ाईजी ॥
हम तो पाये वैस कुमारा कृपा तुम्हारी पाईजी ॥

हरिसों मिल किन जात इहांई मति कलपो मन माईजी ॥
श्याम राम तुमरो यशगावै निशिदिन विसरत नाईजी ॥ २ ॥
दोहा—लिखि पाती वसुदेव तब, दइ ऊधो करमाइ ॥
तुरत अंक भरि श्याम तब, दियो रथहि बैठाइ ॥
चौबोला--दियो रथहि बैठाइ जाहु कहि कीनो विदा मुरारीजी ॥
चल्यो उपँगसुत ब्रज पथ लीनो हरि आयसु शिरधारीजी ॥
ऊधो चले गर्व मन भारी कहा समुझेगी ग्वारीजी ॥
देखों धो ब्रज लोगन जाई हित मानत बनवारीजी ॥ १ ॥
चले उपँगसुत ब्रजको जावें मनहीं मन सुख पावेजी ॥
होत शकुन उत अति शुभकारी गोपिनके मन भावेजी ॥
पुनि पुनि भ्रमर श्रवण लग आई कछु दुख कछु हरषावेजी ॥
समुझि सो शकुन दरश अनुरागीं जहँ तहँ काग उड़ावेजी॥२॥

लावनी ।

कह वायस सों गोपी सब मन हरषाई ॥
तो उड़रे काग जो आवें कुँवर कन्हाई ॥
टेक—अंचरकी देहों पाग यों वचन सुनावे ॥
सुनि बायस तिनके वैन तुरत उड़जावे ॥
सो देख सखी सब आपुसमें बतरावे ॥
सखि आवे गोकुल श्याम कि कोउ पठावे ॥
फरकत हैंरी मम नैन और भुज बाई ॥
तो उडरे काग जो आवें कुँवर कन्हाई ॥ १ ॥
टूटत हैं कंचुकि बंद उमँग मन आवे ॥
अब विन बयारही अंबरहू फहरावे ॥
उठ उठ बैठत है काग कहे उड़जावे ॥

लगि लगिके श्रवणन जात भ्रमर मडरावे॥
यह होत शकुन शुभ आवत हरि सुखदाई॥
तो उडरेकाग जो आवैं कुँवर कन्हाई॥ २॥
फेरी विधिं भाग्यदशा अब शुभ घरि आई॥
हम सम बड़ भागिन और जो मिलै कन्हाई॥
अतिही बड़भागी नन्द यशोमति माई॥
दीजै अब सब दुखटारि रहो सुखपाई॥
अब मिलैं श्याम तो राखैं हृदय वसाई॥
तो उडरे काग जो आवैं कुँवर कन्हाई॥ ३॥
घर घर में शकुन मनात सकल ब्रजनारी॥
विहारन प्रभु दरशन आश सबन मन धारी॥
मथुरा तन इकटक लायहि रहत निहारी॥
सब यहै करत अभिलाष मिलहिं गिरिधारी॥
कब आवहिं सुन्दर श्याम कहति समुदाई॥
तो उडरे काग जो आवैं कुँवर कन्हाई॥ ४॥

अथ उद्धवजीकी ब्रज गमन लीला।

दोहा—मथुरा तजि उद्धवचले, गोकुलके समुहाइ॥
बैठे रथ शोभित जनुः, दूजे कुँवर कन्हाइ॥
चौबोला—दूजे कुँवर कन्हाइ मुकुट पीतांबर शुभग सुहाईजी॥
श्याम रूप शोभित अँग आछे शोभा कहत न आईजी॥
दूरहिते रथकी उजियारी लखि ब्रजतिय हरषाईजी॥
जान्यो आये कुँवर कन्हाई जहँ तहँ ते उठधाईजी॥ १॥
कहत परस्पर देखहु आली मधुबनते हरि आवैजी॥
एक कहति चल देख सखीरी तैसोइ रथ दरशावैजी॥

तैसोइ मुकुट मनोहर राजै शोभापरम सुहावैजी ॥
रथतन सब देखत अनुरागीं पीतांबर फहरावैजी ॥ २ ॥
दोहा–ज्यों ज्यों रथ आवत निकट, त्यों त्यों सब हरषाइ ॥
सुख व्याकुलता सब भरीं, आनँद उर न समाइ ॥
चौ०-आनँद उर न समाय जबहिं लगि रथ आवत नियराईजी॥
तब लगि मानहु कल्प विहाई धीर धरत मन नाईंजी ॥
आवत हैं नँदलाल कहत यह सब ब्रज घर घर माईंजी ॥
तरुण वृद्ध अरु बाल चले सब देखनको हर्षाईजी ॥ १ ॥
चले लेन आगे अति हर्षित नंद यशोदा माईजी ॥
भये परम आनंद तिहीं क्षण ब्रजजन लोग लुगाईजी ॥
जब कछु रथ आगे नियरायो तब सबके मन आईंजी ॥
श्याम अकेले रथके माईं हलधर दीसत नाईंजी ॥ २ ॥
दोहा–जो हलधर तिन सँग नहीं, तो नहिं कुँवर कन्हाइ ॥
इतनी कहत समीपही, पहुँच्यो रथ तहँ आइ ॥
चौबोला-पहुँच्यो रथ तहँ आइ ऊधोको निरखि नैन भरि आईजी
रहीं ठगीसी सब ब्रजनारी नूतन विरह सताईजी ॥
मनहुँ गई निधि केहूं पाई ले कर माहिं गवाईजी ॥
ह्वैगइ सपनेकी रजधानी जागत तहँ कछु नाईंजी ॥ १ ॥
जबहीं कह्यो श्याम तो नाईं सुनि यशुमति अकुलाईंजी ॥
परी धरणि मुरछित दुख पाई तनुकी सुधि कछुनाईंजी ॥
विकल परी यशुमति तिहिं ठाई ब्रजतिय तहां चलि आईंजी ॥
श्याम विना रथ लखि अकुलाई जहँ तहँ सब मुरझाईंजी ॥२ ॥
दोहा–रुदन करत व्याकुल परी, लीनी सबन उठाइ ॥
यशुदहि बोध करत यह, पठयो कुँवर कन्हाइ ॥

---

१ स्त्री। २ निकट। ३ नवीन।

चौबोला–पठयो कुँवर कन्हाइ भली भई सखा पठायो श्यामाजी
उठहु बूझिये हरि कुशलाई कहति महर सों बामाजी ॥
कुशल घरी यह आज मानिये कुशल श्याम बलरामाजी ॥
इनके कर ह्वै है लिख्यो हरि आवनको ब्रजधामाजी ॥ १ ॥
यह सुनि उठी कछुक सुख पाई ऊधो निकट लखायोजी ॥
हरिके रूप निरखि सुख पायो श्याम सखा सब गायोजी ॥
ऊधो निरखि कहत ब्रजनारी सुन्दर शील सुहायोजी ॥
ताहीते हरि याहि पठायो हरि सँदेशले आयोजी ॥ २ ॥

दोहा–नीके कहि हैं वचन यह, हम सुनिहैं सुखपाय ॥
ऐहैं अब हरि वेगही, कहिहैं यहै सुनाय ॥

चौबोला–कहिहैं यहै सुनाय चहूं दिश घेर लियो रथ जाईजी ॥
नंद गोप ब्रज लोग लुगाई चले घरहि लीवाईजी ॥
ऊधो रथते हरषि उतारे नंद द्वारपर आईजी ॥
धनि धनि तिन कहि आदरकीनो लीने घरके माईजी ॥ १ ॥
चरण धोय आसन बैठाये ऊधोको नँदराईजी ॥
बहु प्रकार भोजन करवाये व्यंजन विविध बनाईजी ॥
विविध भांति करके पहुनाई तब नंद बात चलाईजी ॥
ऊधो कहो कुशल दोउ भाई वसुदेव देवकि माईजी ॥ २ ॥

दोहा–करत हमारी सुध कबहुँ, कहु ऊधो बलवीर ॥
पुलकि गात गदगद वचन, पूछत नंदअहीर ॥

चौबोला–पूछत नंद अहीर कहा कहूं चूकपरी अनजानाजी ॥
जाने करि अहीर हमतिनको घर आये भगवानाजी ॥
प्रथम गर्ग मुनि कह्यो वखानी माया विवस भुलानाजी ॥
अब ऊधोबिछुरे गिरिधारी मरिहैं विन लखि कान्हाजी ॥ १ ॥
ऊधो हम ऐसी नहिं जानी कहति यशोमति रानीजी ॥

हरि हैं वासुदेव प्रगटाने मैं तिनको सुतमानीजी ॥
जासु विरंचि शिवध्यान लगावैं शेष न महिमा जानीजी ॥
सो बालक कर अतिहि अयानी बांधे ऊखल आनीजी ॥ २ ॥

दोहा–फाटत नाहिं भइ बज्रसम, छाती अतिहि कठोर ॥
समुझि हृदयपछितातअब, विन श्री नंदकिशोर ॥

चौबोला–बिन श्रीनंद किशोर ऊधो अब कैसे मनसमुझाऊंजी॥
वैसे भाग कबहुँ अब पैहों पुनि हरि गोद खिलाऊंजी ॥
जबते हरि मधुपुरी सिधारे तबते मैं पछिताऊंजी ॥
तलफत मीन नीर विन जैसे कैसे दरशन पाऊँजी ॥ १ ॥
देखत दुहत औरके लरिका प्रात खिरकके माईंजी ॥
उठत शूल ऊधो मन क्योंहूं प्राणहुँ निकसत नाईंजी ॥
ग्वाल सखा सँग जोरि चरावन को गैयन लैजाईंजी ॥
को आवै संध्या समय अब वनते गाय चराईंजी ॥ २ ॥

दोहा–आंचरसों रज झारकै, काहि लेहुँ उरलाय ॥
खूब मनोहर कमल मुख, काकी लेहुँ बलाय ॥

चौबोला–काकी लेहुँ बलाय सांच अब कहिये ऊधो राईंजी ॥
कैसे रहत श्याम ह्वां सूधे मोहिं कहो समुझाईंजी ॥
खात कौनके धाम कन्हाई दही मही नित जाईंजी ॥
भोजन करत कहां ब्रजनाथा कौन बालकन माईंजी ॥ १ ॥
खेलत हँसत कौनसों बोलैं कौन सखा सँग जावैजी ॥
काके माखन चोरैं जाई कौन उरहनो ल्यावैजी ॥
वनमें यमुना तीर कौन अब गोपिन रोक रखावैजी ॥
किनको दूध दही ढरकावै किनसों दान चुकावैजी ॥

दोहा–यशुमति इतनी बूझि मन, सुमिरत कुँअर कन्हाइ ॥
बिलखि कह्यो तब नंदयों, कहु ऊधो समुझाइ ॥

चौबोला–कहु ऊधो समुझाइ बहुरि कब ऐहैं ब्रज बनवारीजी॥
ब्रजवासिनकी ताप नशैहैं दरश दिखा शुभकारीजी॥
मोहिं तात यशुमति सों माता कहत रहे गिरिधारीजी॥
कहि गये चलती बार मुरारी मिलि हों पुनि इक वारीजी॥१॥
कारि हैं सो अपनो वचन हरि प्रति पालन जगताताजी॥
ऊधो कहौ कछू अब तुमसों कह्यो हरी सुखदाताजी॥
श्याम विरह ब्रजके नर नारी भये सकल कृष गाताजी॥
ऊधो हमको विन मन मोहन युग सम दिवस बिहाताजी॥२॥

दोहा–लखि ऊधो ब्रज रीत सब, रहे कछुक सकुचाय॥
नंद यशोमति वचन सुन, बोले मन हरषाय॥

चौबोला–बोले मन हरषाय कही दोउ भाइनकी कुशलाईजी॥
दई श्याम दीनी सो पाती नंद महर कर माईजी॥
हरिको कह्यो संदेश सुनायो और कह्यो बल भाईजी॥
पाती बाँच नंद उरलाई मिले मनु कुँवर कन्हाईजी॥१॥
लिखी श्यामके करकी पाती ले यशुमति उरलावैजी॥
दुसह विरहकी ताप नशावै सुनि संदेश सुख पावैजी॥
पुनि वसुदेव लिखी सो पाती ले नँद बाँच सुनावैजी॥
कहत श्याम अब भये पराये नैन नीर भर आवैजी॥२॥

दोहा–सुनी बात वसुदेवकी, लिखी सो यशुमति माय॥
यद्यपि हरि वसुदेव सुत, भये मधुपुरी जाय॥

चौबोला–भये मधुपुरी जाय उदर हरि देवकीके अवतारीजी॥
तद्यपि मोहिं धायके नाते मिल जाते इक बारीजी॥
ऊधो हम मन बहु समुझावें ब्रजके सब नरनारीजी॥
माखन हरि मुख योग देखि तब उठत शूल उर भारीजी॥१॥
तिन्हें बानि जाने बिन हरिको को वहां प्रात जगावैजी॥

रोटी अरु माखन बिन माँगे को करि प्रीति जिमावैजी ॥
है वसुदेव सदन सब योगा नवनिधि जो मन चावैजी ॥
हम पशुपाल ग्वाल ब्रजबासी दही मही धन भावैजी ॥
दोहा–राजसुखन हरि कोटि करि, मेरे यह जिय सोच ॥
माखन सचुनहिं पावहीं, ह्वै हैं करत संकोच ॥
चौबोला-ह्वै हैं करत संकोच बारइक आवहिं ब्रजहि कन्हाईजी॥
मन करि माखन भोग लगावैं ब्रजके घर घर माईजी ॥
सपत रहै गोकुलमें नाईं उलटि मधुपुरी जाईजी ॥
ऐसे कहि यशुमति विलखाई ऊधो पद शिरनाईजी ॥ १ ॥
तब ऊधो बोले धनि यशुमति धन्य महर नँदराईजी ॥
धन्य धन्य हैं भाग्य तुम्हारे जिनको प्रीय कन्हाईजी ॥
पूरण ब्रह्म कृष्ण सुखराशी व्यापक घट घट माईजी ॥
जैसे अग्नि काठके माईं पूररह्यो सब ठाईंजी ॥ २ ॥
दोहा–मति जानों सुत करि तिन्हें, वे सबके करतार ॥
तात मात तिन्हके नहीं; भक्तन हित अवतार ॥
चौबोला--भक्तन हित अवतार जाने नहिं हम हैं सब अज्ञानीजी
जन्म कर्म करिकै रहित हरि वे प्रभु पुरुष पुरानीजी ॥
हम सब अपने भ्रमहिं भुलाने नर समान हरि मानाजी ॥
ज्योंशिशु आप चक्र सम फिरही ताहि फिरत सब जानाजी ॥
रटहु जान प्रभु हरिको जाते मुक्त पदारथ पाईजी ॥
ऊधो जो तुम हमहिं सिखावत हम मन बहु समुझाईजी ॥
देखे विना रह्यो नहिं जाई वह मृदुरूप कन्हाईजी ॥
ऊधो कैसे जात बिसारे ब्रज जीवन सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जादिन नहिं जाते हरिः, बनको कुँवर कन्हाइ ॥
तादिन वनके जीव जे, खग मृग सब अकुलाइ ॥

चौबोला–खग मृग सब अकुलाइ निहारे विन नाहिं नेक सुहाईजी
रूपनिधान साँवरी मूरति सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
सो मृग तृण भारे उदर न खावै भये कृष श्याम विनाईजी ॥
जो मुरली ध्वनि सुनि खग मोहे सो मुख फल नहिं खाईजी॥१॥
जे बन सदा नवलते अब सब जीरण पात रहाईजी ॥
कोकिल कीर मोर भये व्याकुल डोलत वनके माईजी ॥
जिन्हें चराईं आप कन्हाई फिरत दुखारी गाईजी ॥
जहां जहां गोदोहन कीनो सूंघत तहँ तहँ जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–युग सम बीतत पल हमें, सब ब्रज विरह अधीर ॥
ऊधो मन मोहन विना, धरैं कौन विधि धीर ॥

चौबोला–धरैं कौन विधि धीर श्याम गुण कहत सुनत सुखदाईजी
बैठेहि बीत गई निश सारी ऊधो अरु नँदराईजी ॥
भरि भरि लोचन डारत पानी ठाढी यशुमति माईजी ॥
कहत श्यामकी पाती आई घर घर होत बधाईजी ॥ १ ॥
ऊधोको हरि ब्रजहि पठायो निपट समीप रहावेजी ॥
कंचन कलस दूब दधि रोरी नंद सदन ले आवेजी ॥
गोप सखा सब कृष्ण उपासी सुनत सकल उठ धावेजी ॥
ऊधोको हरि रूप निहारी नर नारी सुख पावेजी ॥ २ ॥

दोहा–ब्रज युवती पूजत सकल, विधिवत तिलक लगाय॥
जन्म सफल है आज हम, पुनि पुनि पद शिरनाय ॥

चौबोला-पुनि पुनि पद शिरनाय श्यामकी बूझत सब कुशलाईजी
नंद अवास भीर भइ भारी बैठे ऊधो राईजी ॥
ऊधो लखि ब्रज प्रेम थकेसे बोल सकत कछु नाईजी ॥
हकबकात चहुँ दिश सब ठाढे बूझत लोग लुगाईजी ॥ १ ॥
ऊधोकी लखिकै दशा सब ब्रज जन रहे अकुलाईजी ॥

क्यों ऊधो तुम कहत नहींहो कुशल रहैं दोउ भाईजी ॥
हमें सुने विन प्रीति हरीकी इक क्षण युग सम जाईजी ॥
ब्रजहि कृपाकरि सुन्दर श्यामा आवन कह्योकि नाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सब ब्रजवासिन सों कह्यो, तब ऊधो धरधीर ॥
सदा कुशल वे रहत हैं, हरि हलधर दोउ वीर ॥
चौबोला-हरि हलधर दोउ वीर तुम्हें लिख दीनों पत्र कन्हाईजी ॥
अरु श्रीमुख यह कह्यो सँदेशो कहतसो मैं तुम पाईजी ॥
करि समाधि अंतर मोहिं ध्यावो गोप सखा मैं नाईजी ॥
हौं अनादि अविगति अविनाशी व्यापक सब घट माईजी ॥१॥
निर्गुण ज्ञानविमुक्त नहोई कहत वेद यह गाईजी ॥
सगुण रूप तजि निर्गुण विचारो करि मनमें दृढताईजी ॥
मिलिहौ ब्रह्म सुखहि सब जाई मिटहिं ताप दुखदाईजी ॥
ऊधो कही जबहिं यह वाणी सुनि गोपी विलखाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तनक दूरही वस हरिः, भये और बलवीर ॥
रही विरहकी बात कहि, बूड़ी मनु विननीर ॥
चौबोला–बूड़ी मनु विननीर मिलनकी आशगई मन मानीजी॥
उपज्यो उर प्राति कठिन अंदेशो सुनत बात बिलखानीजी ॥
फैल गई जहँ तहँ यह बानी कहत सकल अकुलानीजी ॥
यह सब दोष लगेरी हमको कर्म रेखको जानीजी ॥ १ ॥
प्रेम सुधारससान सबनकों अबलिख ज्ञान पठायोजी ॥
इकतो अंग रह्यो अति झुरके विरहाअग्नि जरायोजी ॥
कोला हूते खेह करनको अब यह ऊधो आयोजी ॥
रूप राशि हरि सब सुखदानी सो हमरे मन भायोजी ॥ २ ॥
दोहा–ब्रजके जीवन मूल हरि, कैसे विसरे जात ॥
बिछुरे हम दुखपात सो,हिरदे माहिं बतात ॥

चौबोला–हिरदे माहिं बतात कहत यह चितवो मनके माईजी
वेहैं पूरण भरि सब ठाईं घट घट माहिं समाईजी ॥
निर्गुण निराकार[1] निर्भोगी योगी जन नहिं पाईजी ॥
सो करि कृपा आय यहां ऊधो बीथिन[2] माहिं बहाईजी ॥ १ ॥
अबलन कारण श्याम पठायो अगह गहावन आयोजी ॥
जोसमदृष्ट एक रस मोहन तो कत चितहि चुरायोजी ॥
ऊधो यह हित किनहिं लगायो जो हिय माहिं बतायोजी ॥
निश दिन नैन दरशहित जागत इक पलपलकनलायोजी ॥२॥
दोहा–अब ये लोचन चहुँदिशा, चितवत विरह अधीर ॥
विलखि विलखि व्याकुल भये,भरि भरि डारतनीर॥
चौबोला–भरिभरिडारत नीर दृगनको हरि विन कछुनसुहाईजी
ऐसेहू दुख प्रगटत नाईं श्यामहि कहत इहांईजी ॥
रहन देहु हमको ऐसेही अवधि आशके माईजी ॥
फिर चाहै नहिं पाइहो हमहीं डारे अगुण अथाईजी ॥ १ ॥
जो योगिनको भोग ऊधो तुम तियन सिखावन आयोजी ॥
हमतन भयो वियोग श्रवणते[3] सुनत अधिक दुख पायोजी ॥
एक कहति दूषण नहिं याको कुबजा याहि पठायोजी ॥
वाने जो कहि याहि सिखायो सो इन आय सुनायोजी ॥ २ ॥
दोहा–कुब्जा याहि सिखाइयो, दीनो इतहि पठाय ॥
कबहुँ न ऐसे हरि कहैं, कही जो इन ब्रज आय ॥
चौबोला–कही जो इन ब्रज आय बात यह ऐसि सुनेको माईजी॥
उठत शूल सुनि सही न जाई जो इन आय सुनाईजी ॥
कहत भोगतजि योग अराधो ऐसि न कहत कन्हाईजी ॥
ये सब विधवा[4]को व्यवहारा जप तप नेम सदाईजी ॥ १ ॥

---

१ आकार रहित। २ गली। ३ कान। ४ जिस्का पति मरगया।

युग युग जीवहु कुँवर कन्हाई हमरे शीश सुहावैजी ॥
अच्छत बसन भस्मको लावै को नइरीति चलावैजी ॥
हमरो योग नेम ब्रतये है प्रभु पद प्रीति निभावैजी ॥
ऊधो तुम्हें दोषको लावै कुबजा नाच नचावैजी ॥ २ ॥
दोहा–ब्रज युवतिनके वचन सुन, ऊधो रहे सकुचाय ॥
योग कथा कहि तियनसों, मनहीं मन पछिताय ॥
चौबोला–मनहीं मन पछिताय सुनतही रहि गयो शीश नवाईजी
प्रेम भरे सुनि वचन तियनके अति सुन्दर सुखदाईजी ॥
ये गुण हैं सब श्यामसुन्दरके तब जान्यो मन माईजी ॥
याही कारणके लिये हरि मुहिं पठयो इहि ठाईजी ॥ १ ॥
ऊधो सुनि गोपिनकी वाणी करी गुरू मन माईजी ॥
मन मनकर प्रणाम हरषाई बरषाने चले जाईजी ॥
श्रीवृषभानु कुँवरि हरि प्यारी अरु सब सखी सुहाईजी ॥
जिनके मन मोहन नँदलाला बात सबन सुनि पाईजी ॥ २ ॥
दोहा–मधुबनते आयो कोऊ, पठयो श्रीनँदलाल ॥
यूथ यूथ मिल सब चलीं, पिय सँदेश सुनि बाल ॥
चौबोला-पिय सँदेश सुनि बाल चलीं सब ऊधो मगमें पायोजी॥
रथ लखि कहत परस्पर नारी पुनि सुफलकसुत आयोजी ॥
ले गयो प्रथमहिं प्राण हमारो अब धौं कहा मन ध्यायोजी ॥
ऐसे सोच करत तिहिं क्षण तब ऊधो दरश दिखायोजी ॥ १ ॥
संगी सखा श्यामको चीन्हों रहीं चरण शिरनाईजी ॥
ऊधो लखि मन भये सुखारी आनँद उर न समाईजी ॥
तब ऊधो रथते उतरे अरु बैठे तरुकी छाईजी ॥
भई भीर सकल गोपिनकी अति आनँद मन माईजी ॥ २ ॥
दोहा–सुधि ल्याये ब्रजराजकी, अतिप्रिय ताको जान ॥

प्रेम सहित पूजे सबन, करिकै बहु सनमान ॥
चौबो०-करिकै बहु सन्मान जोरकर पुनि पुनि विनय सुनाईजी ॥
कहिये ऊधो निज कुशलाई वसुदेव देवकि माईजी ॥
कहो कुशल बलराम कुशल हैं सुफलकसुत कुबजाईजी ॥
बूझत श्याम कुशल अकुलाई नैन नीर भरि आईजी ॥ १ ॥
लखि गोपिनकी प्रीति ऊधो भये प्रेम मगन मन माईजी ॥
पुलकि गात अँखियन जल छायो गयो सब ज्ञान हिराईजी ॥
पुनि पुनि यहै कहत मन माई हरिको बुझिये नाईजी ॥
ब्रजनारिनको योग पठायो चितते प्रीति मिटाईजी ॥ २ ॥
दोहा-पुनि ऊधो धर धीर मन, शोधि नैनको नीर ॥
दीनी पाती श्यामकी, कह्यो कुशल दोउ वीर ॥
चौबोला-कह्यो कुशल दोउ वीर सुनतही गोपी सब हरषाईजी ॥
ले ले करन मिलत सब पाती कोउ दृग कोउ उर लाईजी ॥
काऊ लैकर शीश चढाई बूझति लिखी कन्हाईजी ॥
अति हित पाती श्याम सुन्दरकी सब मिल मिल सुख पाईजी १ ॥
बहुरि दई ऊधो करमाई दीजे बांच सुनाईजी ॥
ऊधो बांचत हरिकी पाती कहत सबन समुझाईजी ॥
लागे करन प्रबोध सखिनसों ज्ञान कथा सुखदाईजी ॥
मोको हरि तुम पास पठायो आतम ज्ञान सिखाईजी ॥ २ ॥
दोहा-जाते पाप नियरात नहिं,विषय सुदेहु विसारि ॥
आपहि नर नारी हरिः, आप गृही ब्रह्मचारि ॥
चौबोला-आप गृही ब्रह्मचारी आपहि पिता आपही माईजी ॥
आपहि आप और नहिं कोई पुत्र आपही भाईजी ॥
आपहि पंडित आपहि ज्ञानी रानि आप नृपराईजी ॥
आपहि स्वामी दास आपही आपहि हरि सब ठाईजी ॥ १ ॥

आपहि ग्वाल आपही गाई आप दुहावन जावैजी ॥
आपहि भ्रमर आपही फूलहि आपहि जगत उपाईजी ॥
आपहि आप निरंतर होई रंक आपही रावैजी ॥
जिमि बहुदीप जोति है एकहि तैसोहि ब्रह्म सुहावैजी ॥ २ ॥

दोहा–इहि विधि हरिको ध्यावहीं, ब्रह्म समाधि लगाय ॥
जरा मरण मिटजात भ्रम, ब्रह्मानंद सुखपाय ॥

चौबोला–ब्रह्मानंद सुखपाय सुनतही रहीं सबै शिरनाईजी ॥
माँगति मनहु सुधारस तिनको दीनो गरल पियाईजी ॥
हरि संदेश सुन दारुण तिय सब रहीं सकल मुरझाईजी ॥
बोलीं बहुरि सँभार जोरकर ऊधो सों दुखपाईजी ॥ १ ॥
भली आय कुशलात सुनाई ऊधो ब्रजहि मझारीजी ॥
कछु इकहती मिलनकी आशा सो तुम दूर विडारीजी ॥
श्याम विरह तन पल पल छीजे दुख पावत हम भारीजी ॥
बिन देखे वह मूरति प्यारी मुकुट पीतपट धारीजी ॥ २ ॥

दोहा–योग मुक्तिलै कहा करैं, ऊधो हम ब्रजबाल ॥
कोलिख पूजे भीत पर, छांडि श्री नंदलाल ॥

चौ०–छांडि श्री नंदलाल ऊधो हम तुमसों साँच बखानेजी ॥
हम अहीर गोरसके भोगी योग मुक्ति कहा जानेजी ॥
हमको भजनानंद पियारो प्रेम भक्ति मन मानेजी ॥
ब्रह्मा नंद सुख कहा विचारो ये दृग दरश लुभानेजी ॥ १ ॥
पुनि पुनि हमें वही सुधि आवै नव किशोर नँदलालाजी ॥
कोटि ज्योति ता ऊपर वारैं हम सब ब्रजकी बालाजी ॥
अधर अरुण मुरलीधर श्यामा लोचन कमल विशालाजी ॥
क्यों विसरत ऊधो हम उनको मोहन मदन गुपालाजी ॥ २ ॥

दोहा–रूपराशि आनँद भरयो, सजल मेघ तनु श्याम ॥

और न जानत ब्रह्म हम, मोही सब ब्रजबाम ॥
चौबोला--मोही सब ब्रज बाम सखिन तब ऐसे कह्यो बखानीजी
सुनि ऊधो गोपिनकी वाणी बोले साजि सयानीजी ॥
जब लगि हृदय ज्ञाननहिं तब लगि जलकी लीक समानीजी ॥
विन विवेक सुख पाव न कोई स्वप्नहिं सम विन जानीजी ॥ १ ॥
नैन मूंदि चितवो मनमाईं रूप रेख जिहिं नाईंजी ॥
हृदय कमलमें ज्योति विराजै अनहदनाद बजाईजी ॥
इडा पिंगला सुखमनानारी सहज शून्यके माईंजी ॥
नासा अग्र ब्रह्मको वासा ज्योति ध्यान तहां लाईजी ॥ २ ॥
दोहा—क्रम क्रम साध हुयोग तुम, भवसागर तरजाइ ॥
ऊधो हमें तजि नंद सुत, और न कछू सुहाइ ॥
चौबोला—और न कछू सुहाइ ब्रह्मको ज्ञानदेन तुम आयोजी ॥
हाथ पांव सुख नैन विहीना रूप नरेख बतायोजी ॥
तौ यशुदा करि काको जायो पलना काहि झुलायोजी ॥
कैसे ऊखल हाथ बँधायो चोरदही किन खायोजी ॥ १ ॥
कैसे गोद खिलायो हरिको तुतरे बैन बुलाईजी ॥
ऊधो कहो जाहि तुम ताको नैनन सूझतनाईंजी ॥
श्री वृन्दावन धाम सुखद तजि नटवर भेष कन्हाईंजी ॥
को खोजै आकाश हमारे सुन्न समाधि लगाईजी ॥ २ ॥
दोहा—मानहु हमरो वचन यह,जिन तुम होउ अयानि ॥
भजो ब्रह्मतजि मोह सब, ह्वै हो ब्रह्मसमानि ॥
चौबोला—ह्वै हो ब्रह्म समान आंधरी माया अति दुखदाईजी ॥
ज्ञान अनंत नैन सब बूझे मिलहिं ब्रह्ममें जाईजी ॥
मैं यह कहत कृष्णकी भाषी वेदन साखि बताईजी ॥

१ ज्ञान। २ नाक। २ जिसका अंतनहीं।

लगहि आगि जबको निज गृह तजि कोउ न धूरि उडाईजी ॥१॥
भक्ति विरोधी ज्ञान तुम्हारो सो हमको न सुहावैजी ॥
योग कहा सब ओढिं बिछावें दुसह वचन नाहिं भावैजी ॥
अबलन आनि सिखावत योगू यह अनरीति चलावैजी ॥
ऐसे कहि गोपी अनखानी मनहिं परेखो आवैजी ॥ २ ॥

दोहा–ताही क्षण तहँ भ्रमर इक, निकटहि निकरयो आय ॥
तासों कहि कहि बात सब, ऊधो प्रतिहि सुनाय ॥

चौबोला–ऊधो प्रतिहि सुनाय कहति सब जो जाके मन भावैजी
कोउ ऊधोसों कोउ आली प्रति नाना वचन सुनावैजी ॥
निज निज अपनी उकति बनावैं जो जैसी मनचावैजी ॥
ऊधो भूले ज्ञान आपये उत्तर कहत न आवैजी ॥ १ ॥
सुनत वचन नारिनके ऊधो रहे मौन सो धारीजी ॥
बोल उठी ऐसे इक ग्वारी आय सुनो री सारीजी ॥
आयो मधुप देन पदनीको लियो सुयश इनभारीजी ॥
तजन कहत भूषण पट गेहा सुत पति सब हितकारीजी ॥ २ ॥

दोहा–शीशजटा अरु भस्म तनु, निर्गुण हमें सिखात ॥
आयो छोह कर तियनपर, गृह तजि बनहिं बतात ॥

चौ०–गृह तजि बनहिं बतात सखी यह मधुपुरि वसत सुहायोजी
वे अक्रूर और ये ऊधो दोउ मिल जोट बनायोजी ॥
जानत भली गांसकी बाता इनहीं कंस मरायोजी ॥
इनके कुल ऐसी चलि आई सो सब प्रगट दिखायोजी ॥ १ ॥
अब करि कृपा ब्रजहि उठधायो कियो काज सो चीनोजी ॥
अबलनयोग सिखावन आयो यह हमपर यश कीनोजी ॥
ऐसे एक कहति अरु ग्वाली दोउ मन इक कर लीनोजी ॥
तब अक्रूर अबहि ये ऊधो ब्रज सूधो कर दीनोजी ॥ २ ॥

दोहा–वचन फांसि फँसि हरि हरन, उन लियो रथ बैठाय ॥
हरलीनों इन गोपिकन, हती ज्ञान शर आय ॥
चौबोला–हती ज्ञान शर आय सखी इक ऐसे कहत सुनाईजी ॥
चहुँ दिश दावा योग कठिन इन देखहु दीन्हो लाईजी ॥
चाहत कहा कियोधों अब ये बनी कठिन अति आईजी ॥
कहति एक मधुकर ये हम सब बात तुम्हारी पाईजी ॥ १ ॥
करी भली करनी सो जानी हमें योग ले आयोजी ॥
इक हरि विरह रही हम जरके तापर लोन लगायोजी ॥
दई श्याम तुमरे कर पाती सुनि अति हियो सिरायोजी ॥
बहे जात मांगत उतराई उलटो न्याव चलायोजी ॥ २ ॥

लावनी।

हम दुसह विरह दुख पातहि योग पठायो ॥
मधुकर जानी सब बात नेह बिसरायो ॥
टेक–यह मिल्यो बातको छोर योग अब ल्यायो ॥
तब अधर सुधारस प्यावहु लाड लडायो ॥
जनु कीनों शिशुको खेलहि प्रथम बनायो ॥
बहुरो सोइ रीती कारि हरि चलत मिटायो ॥
ज्यों कंचुकि अहि लपटात यों हित दरशायो ॥
मधुकर जानी सब बात नेह विसरायो ॥ १ ॥
बहुरो अहि सुरत न करी कंचुकी डारी ॥
ऐसेही हमको तजी श्याम बनवारी ॥
हरि करहु राज जहां जाउ तहां गिरिधारी ॥
वे लेहु अपन शिर भार कहति सब नारी ॥
अब न्हात न उखरहुबार यो वचन सुनायो ॥

मधुकर जानी सब बात नेह विसरायो ॥ १ ॥
वहु रंगी रह सुख माँहि सदा जहँ जाई ॥
चातक पतंग इकरंग मीन दुख पाई ॥
दुख सहत मनहिंके माहिं कहत नहिं काई ॥
मधुकर हम करिकै प्रीति रही पछिताई ॥
निबहेगी ऐसे जानि सबन मनलायो ॥
मधु कर जानी सब बात नेह विसरायो ॥ ३ ॥
मनहरचो श्याम मुसुकाय कहा धौं कीनों ॥
तब हँसि हँसिके हम सबहिन मिल मन दीनों ॥
अब कुबजाके गृह बसत सो सब हम चीनों ॥
हमसों छलकियो सो दाव कूबरीलीनों ॥
तनकहि उर चंदन धरि हरि वशकरि पायो ॥
मधुकर जानी सब बात नेह बिसरायो ॥ ४ ॥

दोहा–ऊधो नहिं जानी परै, भाग्यदशाकी वात ॥
विलपत ब्रजनारी सबै, कुब्जा हरि मनभात ॥

चौ०–कुबजा हरि मन भात असुरको खातबच्यो दियो डारीजी
अब कुलवधू कहावत सोई यह हरिकी गति न्यारीजी ॥
राजकुँवरि कोऊ हरि बरते सुन सुख पाती सारीजी ॥
कागी और मराल उजागर बन्यो साथ अतिभारीजी ॥ १ ॥
तजी लाज दोऊ अब खेलत बारहमासी फागाजी ॥
लौंडीकी डौंडी बाजी यह हांसी अरु अनुरागाजी ॥
आप भये वश में दासीके योग देन हमें लागाजी ॥
ऊधो यह अचरजकी बातें चतुर चचोरत आगाजी ॥ २ ॥

दोहा–ऊधो हरि यह काज करि, रह्यो त्रिभुवन यश छाइ ॥
आये ब्रज में असुरजे, मारे कुँवर कन्हाइ ॥

चौ०–मारे कुँवर कन्हाइ विष जल सबही ग्वाल जिवायेजी ॥
कालीनाग नाथ हरि तापर कमललादि लै आयेजी ॥
इन्द्रमान मलि ब्रजहि बचायो करपर गिरिहि उठायेजी ॥
जब विधि बालक वत्स चुराये तब हरि और बनायेजी ॥ १ ॥
धनुष तोरि गज प्रबल संहारयो मल्ल कंस लिये मारीजी ॥
कीनो उग्रसेनको राजा भये सुखी सुर भारीजी ॥
ऐसी कीरति करि सब नाशी दासी कीनी नारीजी ॥
कहां श्रीपति वे त्रिभुवन राई अखिल लोक सुखकारीजी ॥ २ ॥

दोहा–ब्रह्मा शिव इन्द्रादि सुर, करत निरंतर सेव ॥
कहां वह दासी कंसकी, हरि देवनके देव ॥

चौबोला–हरि देवनके देव दुहुँनको नीको बन्यो समाजाजी ॥
अब हरि ऐसे करिकै काजै मारत यदुकुल लाजाजी ॥
गावत है सब गीत जगत अब वा चेरीके काजाजी ॥
ऊधो यह अनुचित है भारी चेरीपति ब्रजराजाजी ॥ १ ॥
अजहूं चेरी तजैं हरीसों कहियो ऊधो जाईजी ॥
यह दुख कह्यो नजात कूबरी हमरी सौति कहाईजी ॥
ऊधो हरि रीझे धौं कैसे बोली अरु इक आईजी ॥
इक चेरी अरु कूबर पाछे नीकी लागत नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–जात हीन अरु कूबरी, करी सुहागिन ताय ॥
कहा सिद्धहो कूबमें, लिख किन हमें पठाय ॥

लिखकिन हमें पठाय कूबको हमहूं यत्न बनावेंजी ॥
चलिकै हम मोहनके आगे टेढी चाल दिखावेंजी ॥
कहैं श्याम सोई अब करिहैं लोक लाज विसरावेंजी ॥
तजैं निगोडी कुबिजा दासी गोकुल आनि बसावेंजी ॥ १ ॥
गोपीनाथ नाम क्यों धारयो जो हमको विसरावोजी ॥

जो नहिं काज हमारे आवो तो कलंक कत लावोजी ॥
जो पै प्रीति करी कुबिजासों तो ताके कहवावोजी ॥
करी प्रीति तब सुगमाहिं पाई अब किन ताहि निभावोजी ॥ २ ॥
दोहा–ज्यों गजको रद त्यों करी, हरि हमसों पहिचान ॥
दिखरावनको आनहीं, काज करनको आन ॥
चौ०--काज करनको आन एक सखी ऐसे वचन सुनावैजी ॥
छांडि छुहारा दाख विविध फल विष कीरा विष खावैजी ॥
यह दुख कहिये कासों जाई मनहिं समुझि रहजावेंजी ॥
ऊधो कहा कहि तुम्हें सुनावैं हरि विन हम दुख पावेंजी॥ १ ॥
कत आये यशुदाके धामा रहते मथुरा माईंजी ॥
कत गोवर्द्धन कर पर धारयो लीनो ब्रजहि बचाईजी ॥
बनमें कियो रासरस हरिने सो सुख वरणि न जाईजी ॥
करिकै ऐसी प्रीति कन्हाई लीनो मन निठुराईजी ॥ २ ॥
दोहा–जबते हरि ब्रजतजगये, तबते हम बेहाल ॥
घटे अहार विहार मन, मिलन आश गोपाल ॥
चौबोला-मिलन आश गोपालकि वीतत निशा गनत नभ तारेजी
दिवस तकत मग मधुवन तन अब देखि देखि दृग हारेजी ॥
रही नहीं सुधि बुधि मनमाई विरहानल तनु जारेजी ॥
सुमिर सुमिर हरिके गुण ग्रामा अब दुख पात अपारेजी ॥ १ ॥
कहँ लगि कहिये मधुप व्यथा निज निठुर भये बलवीराजी ॥
तापर ल्याये योग सुनतही भये दुखीत शरीराजी ॥
जिहिं व्यापै तनु जानत सोई कठिन विरहकी पीराजी ॥
सुनि सुनि वचन भयानक अलिं अब कैसे धारें धीराजी ॥ २ ॥

लावनी।

क्यों धारैं मन धीर मधुप हम अबला सब ब्रजकी नारी ॥

सुने भयानक वचन श्यामके दुख पावत मनमें सारी ॥
टेक–जे कच फूल फुलेल सँवारे निजकर ग्रंथे गिरिधारी ॥
भस्म सानिकै जटा बढावन लिखपठयो अब बनवारी॥
रत्न जटित ताटंक सुहाये पहिराये निज हितकारी ॥
तिनकाननको ऊधोजी अब गढिल्याये मुद्राभारी ॥
भालतिलक अंजन नकवेसर कहत तजहु अब सबनारी
सुने भयानक वचन श्यामके दुख पावत मनमेंसारी॥१
मृगमदमलय कुंकुमा केसर देहु सबन अब विसराई ॥
उर कंचुकी हारको तजिकै लीजै तन भस्मी लाई ॥
दई श्याम अतिहित भुज जिहिंगर अबसेली शृंगीआई॥
पहिरे जात न चीर सुभग सो लीजे भगोहो रँगवाई ॥
जामुख पान सुगंध खवाये मोहन निज करहित भारी॥
सुने भयानक वचन श्यामके दुख पावत मनमें सारी २
रस विवाद बहुतान तरंगा नाना विधि हरि सँगगाये ॥
मदन विलासा हास रस अधर सुधा हरि मुख प्याये ॥
तिनमुख मौन कौनविधि जीजैऊर्ध्व श्वासअबघूंटिआये
वेतो हरि हैं कठिन अति दाव घात उनके पाये ॥
मधुप तुम्हें ना चैये ऐसी जानलई बातें सारी ॥
सुने भयानक वचन श्यामके दुख पावत मनमें सारी३॥
तब बजाय मृदुवैन अर्ध निश बोल लई सब ब्रजनारी ॥
किये रास रस सुनावत कटुक वचन अब बनवारी ॥
मधुकर मधु माधोकी वानी माखी जिम हमलपटारी ॥
उड न सकीं तब कहैं किहिं सोचत अब मनमें सारी ॥
जिमि अहारवशमीन विचारी कंटकगिलत कठिनभारी
सुने भयानक वचन श्यामके दुख पावत मनमें सारी ४

दोहा–अटकत कुटिल सो कंठमें, बाढत दुख उरमाहिं ॥
मनहीं मन पछितात पुनि, काढ सकत कोउ नाहिं ॥
चौ०–काढ सकत कोउ नाहिं तैसही बधिक सुनाद बजावैजी ॥
मृग गण मोहि समीप बुलावै ताहि हतन मन चावैजी ॥
बहुरि करत शर धनुष संधाना तुरतहि मार गिरावैजी ॥
जिमि सनेह बल दीप प्रकाशै निशिको तिमिर नशावैजी॥ १ ॥
रूप लोभ रस प्रगट दिखावै क्षणमें देत जराईजी ॥
जिमि ठग मद मोदकहि खवावै पथिकहि प्रीति जनाईजी ॥
रस विश्वास बढाय हरतहै प्राण ग्रथहि लैजाईजी ॥
जिमि मृदु मुसकन मनहिं चुरायो खग जिमि हमहिं बुझाईजी२ ॥
दोहा–पाछे यह करनी करी, मोहन मदन गुपाल ॥
योग छुरी गरमें दई, कियो कपट नँदलाल ॥
चौबोला–कियो कपटनँदलाल हमहिंसों कपट प्रीति विस्तारीजी
बई विरह विष बेलि ब्रजहिमें रसकी ऊख उखारीजी ॥
कहिये कहा बखान मधुप अब जिन्हें बान यह पारीजी ॥
हारि जो हमरे प्राण श्यामके हम भावें नहिं सारीजी ॥ १ ॥
यह सुनि कह्यो और इक आली मधुपहि कहा सुनावैजी ॥
उनहींको संगी यह जानो दोउ तनु श्याम सुहावैजी ॥
वे मोहत मुरली ध्वनिजग यह गूंजत दल हरषावैजी ॥
वेनिश बसत प्रात कहुँ आने यह तजि सुमन सिधावैजी ॥२॥
दोहा–युगल चरण उनके बने, और भुजा शुभचारि ॥
इनके षटपद सोहहीं, दोऊ विपिन विहारि ॥
चौबोला–दोऊ विपिन विहारि श्याम तनु पीतांबर छविछाईजी
इनके पीत पंख दो आछे सुन्दर सुभग सुहाईजी ॥
वे माधो यह मधुप कहावत भेद नहीं कछु राईजी ॥

वेठाकुर ये सेवक दोऊ मिले एक गुण आईजी ॥ १ ॥
कहा प्रतीत कीजिये जिनकी याही प्रकृति सुहाईजी ॥
निरस जान भाजत पलमाईं दया धर्म कछु नाईंजी ॥
मन दे सरवश प्रथम चुरावै बहुरो काज न आईजी ॥
इनसों प्रीति करो मन जैसे भुसकी भीत उठाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कह्यो एक तिय सुन सखी, कारे सब इकसार ॥
इनसों प्रीति न कीजिये, कपटिनकी चटसार ॥

चौबोला-कपटिनकी चटसार जलद अहि देखो करि मनमाईंजी
भ्रमर काग कोयल कपटी यह सब कबियन मिल गाईंजी ॥
राखि पिटारे जो अहिकारो आति हित कारि पय प्याईजी ॥
कुल स्वभाव सों डसि भजि जाई यदपि लाज कछु नाईंजी॥१॥
जलद सलिल बरषत चहुँ घाईं भरत सरित सर माईंजी ॥
निश दिन ताहि पपीहा ध्यावे अतिशय प्रीति जनाईजी ॥
एक बूंदको पियतरसाई भ्रमर मालती चाईंजी ॥
जब रसहीन होत वा माईं तब तिहिं छांड़ि पराईंजी ॥ २ ॥

दोहा—सुनत कथा पिक कागकी, अंडन सेवकरात ॥
बड़े होत उड़जात ढिग, बैठत निज पितुमात ॥

चौबो०—बैठत निज पितु मात यहै सब कारे हरि पर वारीजी॥
सबकी उपमा अरु गुण पटतर कबिजन न्याय उचारीजी ॥
अलिहि काग पिक जलद अही सब ये कारे तनु भारीजी ॥
समुझी आज बात यह सारी कपट खानि गिरिधारीजी ॥ १ ॥
मृदु मुसकन विष डारि गये हरि जिमि भुजंग भजिजाईंजी ॥
जिमि कोकिल सुत कागतजे तिमि नंद यशोदा माईंजी ॥
जिमि अलि रस ले जात सुमनको तिमि हम तजी कन्हाईंजी ॥
चातकलौं हम रटत सकल अब घन लौं धारि निठुराईंजी ॥

दोहा–ऊधो सुनिये बात तुम, कहूं एक उपखान ॥
बाज्यो अब यह तांत सो, लियो राग पहिचान ॥
चौबोला-लियो राग पहिचान तुमहिंसे हरि आगे अधिकारीजी॥
क्यों नहिं दुख पावें ब्रजनारी जानी बात तिहारीजी ॥
कहत सुनत लागत अति मीठो गरलहुते कछु भारीजी ॥
पायो छोर कपटको निर्गुण लिख पठयो बनवारीजी ॥ १ ॥
योग जहां अधिकारहि पावै तहँ ये क्यों न बतायोजी ॥
राजकाज चलिये नहिं तुमसों ऐसे वचन सुनायोजी ॥
करिये पोष आपनी काया करी कृपा इत आयोजी ॥
जो तुमने हमरे हित आन्यो सो हम शीश चढायोजी ॥ २ ॥

लावनी।

सुनिकै सब ब्रज लोग अनंदे नर नारी सब सुख पायो ॥
अब सँभारि यह लीजै अपनो दीजै जिन यहँ पठवायो ॥
टेक–उनहींमें यह योग समै है इहां निरवैहैं नाहिं काई ॥
हम ब्रजवासी गुवारी योग सोग जानति नाई ॥
अंध आरसी बधिर ध्वानि अरु रोग ग्रसित तनु भोगाई॥
ऊधो तिनको न्याव है हमें योग कहासिखराई ॥
हमें योग जो योग सोई अब दीजै हमरे मनभायो ॥
अब सँभारि यह लीजै अपनो दीजै जिन यहँ पठवायो १
कहे न जाने रोग वैदसों कहा कहिये कहि समुझायो ॥
जाहु भले तुम दोऊ अपनो स्वारथ मनचायो ॥
निर्गुण ज्ञान कहां तुम पायो कौने तुम इहांपठवायो ॥
और कहो किन संदेशो जो हरिको ब्रजमेंल्यायो ॥
तब अक्रूर आय यह कीनों सब ब्रजको सुखलेधायो ॥

अब सँभारि यह लीजै अपनो दीजै जिन यहँ पठवायो२
अन्न छुड़ाय खवावत माटी तुम कीनो ऊधो आई ॥
ज्ञान कथा जो हती श्याम कत कियो रास बनके माईं ॥
मन हरलीनों बेनु बजाई अर्ध निशा सब बुलवाई ॥
लीला रसकी करी श्याम अब ज्ञान कथा यह कहांपाई ॥
तब समता क्यों नहिं उर धारी कंसहि मार यमुन बहायो
अब सँभारि यह लीजै अपनो दीजै जिन यहँ पठवायो ३
हुती कछू आशा सो खोई बूझि परीं बातें सारी ॥
सब पर पाटी पढे एकही एक एकते अति भारी ॥
हम बावरी चलीं नहिं त्योंहीं ज्यों चालत जग व्यवहारी॥
मनकी मनमें रही बात हम कहैं काहि मनकी प्यारी ॥
हम गुहार जितहीको चाली तितहीते कछु भय आयो॥
अब सँभारि यह लीजै अपनो दीजै जिन यहँ पठवायो ४

दोहा—जैसी तुम हमसों करी, जानतहै सब कोय ॥
पावोगे अपनो कियो, हम सहि लीनों सोय ॥

चौ०हम सहि लीनो सोय ऊधोजी पूँछत हम तुम पाईजी ॥
जो हरि हमको योग सिखावें तो कहियो तुम जाईजी ॥
करिकै कृपा आप ब्रज आवें परगट योग जनाईजी ॥
जो उपदेशी निकट नहीं तो श्रोता मनकि मिलाईजी ॥ १ ॥
मंत्र देन लागे विन कानन कहूं न यह सुनि पाईजी ॥
जब लगि युक्ति न सिद्ध बतावे साधक पै किम आईजी ॥
हम गोकुल वे मथुरा खेती होत संदेशन नाईजी ॥
करी श्याम माया यह इतनी और करै सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—दरशन प्रथम दिखायकै, करैं पवित्तर धाम ॥
योग जानि करैं नग्र तजि, सघन कुंज विश्राम ॥

चौ०-सघन कुंज विश्राम सुआसन मौन नेम मन लावेंजी ॥
जप तप संयम ब्रत व्यवहारा वनहींमें बनि आवेंजी ॥
योग अंग कहियत हैं जे सब साधन सिद्ध सधावेंजी ॥
तब प्रबोध कर माथ छुवावें होय सिद्ध फल पावेंजी ॥ १ ॥
तब तो खेले सोहैं करि करि अरु राख्यो कछु नाईंजी ॥
अब यह योग मिल्यो कहां ऊधो कहियो हरिसों जाईंजी ॥
जहँ स्वारथ तहँ सगुण हमहिंको निर्गुण ज्ञान सिखाईंजी ॥
लिख पठयो निर्बाण याहि हम चाटें सहत लगाईंजी ॥ २ ॥

लावनी।

बोली और एक रिस मानी मधुकर हमरी सुनिलीजै ॥
मुख देखेको न्याव न कीजै परमधुपी जातनदीजै ॥
टेक-बीचहि परे सत्य सो भाषे राव रंक कर इकसारी ॥
सूझ परतहै दिवस निश बात कहो हरिको प्यारी ॥
ब्रज युवतिनको योग सिखावत वृषभ छोरि सुरभीभारी
रेकृतघ्नि लंपट व्यभिचारी कहा यह लीला विस्तारी॥
हम जान्यो अलिहै रसभोगी या योगीको कहाकीजै ॥
मुख देखेको न्याव नकीजै परमधुपी जातनदीजै ॥१॥
जो भयभीत होय लखि माला कैसे छुवैं भुजंगभारी ॥
कहां यह अबला दिशा दिगंबर क्यों शठ बकलज्जाडारी
साध होय तो उत्तर दीजै कहा कहैं तोहिं कहिहारी ॥
भई बायसी देखि तोहिं डरपत हम सब ब्रजनारी ॥
प्रथमहिं यत्न आपनो कीजै तब पुनि औरन सिखदीजै ॥
मुख देखेको न्याव नकीजै परमधुपी जात नदीजै ॥२॥
कत श्रमकरि बकबकहि करतहै तुम्हरी बात सुनतनाईं

उठ किन जावै इहां ते बन कारो यो होजाई ॥
कहँ परमारथ कहां विरह यह देखिमूढकछुचित्तलाई॥
खवावतहो दही तुम राजरोग है कफताई ॥
बोली और एक कोउ नारी ऊधोजी अरु सुन लीजै ॥
मुख देखेको न्याव नकीजै परमधुपी जातनदीजै ॥३॥
प्रथमहिं ब्रजकी दशा विचारो योगसिद्ध पुनिसिखरावो
जा कारण तुम पठये माधो सो विचार जियमें लावो ॥
केतिक दूर विरह परमारथ देखि यथारथ समुझावो ॥
सदा रहतहो सन्तन पासा परम चतुर तुम कहवावो॥
जल बूड़त पुनि पुनि अकुलाई फेनपकरकर कहालीजै
मुख देखेको न्याव न कीजै परमधुपी जातन दीजै॥४॥
दोहा—सब विधि हरि सुखके सदन, सुन्दर कुँवर कन्हाइ ॥
ब्रजको जीवन नन्दसुत, कैसे विसरचो जाइ ॥
चौबोला—कैसे विसरचो जाइ योग अरु मुक्ति हमें प्रिय नाईंजी॥
याकी मुरली पर सब वारौं कोटि योग पलमाईंजी ॥
तुम निर्गुण गुण कीरति गाई कहँ लगि करौं बड़ाईजी ॥
अतिहि अगाध पार नहिं आवे मन बुधि कर्म सुहाईजी ॥ १ ॥
रूप रेख वपु वरण न जासों कैसे नेह निभाईजी ॥
बिनहीं तोय तरंग अली अरु विन चेतन चतुराईजी ॥
अबलों ब्रजमें हुती नहीं अब करी मधुप तुम आईजी ॥
अब मधुकर हरि विन क्षण हमको कल्प समान विहाईजी ॥२
दोहा—नहिं सुहात नँद नंद विन, कहो विविध विधि कोइ ॥
श्रक चंदन क्यों सुख लहै, अन्न क्षुधारत जोइ ॥
चौ०—अन्न क्षुधारत जोइ सखी इक ऐसे वचन सुनावैजी ॥
कत बेकाज बकत है आली कहा तेरे मन आवेजी ॥

कहिये तिहिं जो होय विवेकी यह निज टेक चलावेजी ॥
फटके भुसी हाथ कहा आवे क्यों बक मूंडपचावेजी ॥ १ ॥
तजि रसगेह नेह हरि पियको निर्गुण ज्ञान सिखाईजी ॥
ज्योति ज्योतिं खोजत तनु माईं लखत प्रगट कछु नाईंजी ॥
श्रवण सुनत जाकी मुरली ध्वनि शिव ब्रह्मा भरमाईजी ॥
सो प्रभु भुज ग्रीवापर डारी बन विचरे सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–रास विलास किये विविध हरि, नाचे संग कन्हाइ ॥
लोक लाज कुल कानि तजि, हम हरि हाथ विकाइ ॥
चौबोला–हम हरि हाथ विकाइ प्रेमको देत सुबाग कटाईजी ॥
बोवत योग जहरकी बेली मधुकर ब्रजके माईंजी ॥
चोपद होय ताहि समुझैये षटपद क्यों समुझाईजी ॥
छाछो दूध बराबर जाके कहा कहत या पाईजी ॥ १ ॥
हम विरहन विरहानल जारी और जराई कामाजी ॥
सुख तो तबहीं पावें हम सब फिर नाचें सँग श्यामाजी ॥
दृढ व्रत लीनो श्यामसुन्दर सों छांडि जगत घर ग्रामाजी ॥
मुक्तिहमें नाहिं चाहत चाहत सोई हरि सुखधामाजी ॥ २ ॥

लावनी ।

रेमधुप कुटिल कुविचारी सुनहु हमारी ॥
और न हम जानत कोय छांडि बनवारी ॥
टेक–हम सांच कहत हैं तोहिं सो तो मन आवे ॥
जो छांडि श्रीनँदलाल औरको ध्यावे ॥
मनु बसत सुरसरी तीर कूंप जल चावे ॥
को सुने तिहारी सीख यह कहा सुनावे ॥

१ ज्ञानी । २ देह । ३ भौंरा । ४ गंगा । ५ कुवाँ ।

तुम योग पोट आनी सो हमें न प्यारी ॥
और न हम जानत कोय छांडि बनवारी ॥ १ ॥
लेजाहु मुक्ति काशी तहँ मुक्तहि चाई ॥
हमें हरि दरशनकी भूख मुक्ति नाभाई ॥
पीवत नाहिं जबलों नीर जो मनाहिं अघाई ॥
तोदिखरायो तिंहि ओस प्यास किमजाई ॥
अब तजहु सोच मिलिहैं हारि यों कह सारी ॥
और न जानत हम कोय छांड़ि बनवारी ॥ २ ॥
हरि आवाहिं हमरे हेतु वे ब्रजहि कन्हाई ॥
हितकर हमरे दुख हरैं श्याम सुखदाई ॥
धारें पग ब्रज ब्रजराज सोकरहु उपाई ॥
हम प्रगट देखि मृदु रूप रहैं सुखमाई ॥
यह सांचो तुम्हरो योग कह्यो विस्तारी ॥
और न जानत हम कोय छांड़ि बनवारी ॥ ३ ॥
कह्यो गर्ग हमें सांचो सो नंददुलारो ॥
ब्रज जीवन प्राण अधार हमारो प्यारो ॥
नख शिख सब अंग बिसाल पीतपट वारो ॥
अब तजहु अली यह और उपाव तिहारो ॥
हमें है तिनहीं सों काज कहति सब नारी ॥
और न जानत हम कोय छांडि बनवारी ॥ ४ ॥

दोहा–जानत मधुकर प्रीति रस, अब कत होत अयान ॥
फिर आवत हो सब सुमन, बँधतकमलकिम आन ॥

चौ०-बँधत कमल किम आन कमलदल फोरि निकारि किनजाईजी
जे बल काठ फोरि घर करहू कमल देखि भरमाईजी ॥
रँगे श्याम रँगजे पहिलेते चढत और रँग नाईजी ॥

पारस परस लोह सो बहुरो किमि चुंबक लपटाईजी ॥ १ ॥
सुनी जिन्हें मुरली तिनको किम कीगरितान सुहाईजी ॥
बसे जासु उर सगुण कन्हाई तहां निर्गुण न समाईजी ॥
यह मन श्याम स्वरूप लुभानो योग चहत हम नाईजी ॥
सिंह सदा आमिष रुचिमाने तृण न भखें मरजाईजी ॥ २ ॥

दोहा—द्वै दृग रूप विराटके, कहियत एक समान ॥
ताहूमें हित चंद्रमा, नहिं चकोर हित भान ॥

चौबोला—नहिं चकोरहित भान सुलोचन भये अधीन कन्हाईजी
जल बिन डारें मीन दूधमें सुखपावत सोनाईजी ॥
नहिं मानत ये नैन हमारे देखे विन सुखदाईजी ॥
भये देखि छबि मीन नीर जिमि मुरली वश मृग आईजी ॥ १ ॥
वदन इन्दु छबि कुमुद चकोरा तन घनमोर सुहानेजी ॥
वहै रूप परगट जब देखैं जन्म सफल तब मानेजी ॥
विगर परे मन मधुप हमारे ज्ञान न हम मन आनेजी ॥
ललित त्रिभंग रूप रससाने खरे चकित जग जानेजी ॥ २ ॥

दोहा—श्वान पूंछ नहिं समरहै, करो यत्न पचिकोइ ॥
सुनै कौन निर्गुण मनहिं, गये श्याम सँगसोइ ॥

चौबोला—गये श्याम सँगसोइ एक मन एकहि रूप कन्हाईजी ॥
अटक्यो मन हरिसों अब हमरो तजत एक क्षण नाईजी ॥
जो होतो दूजो मन कोऊ ले धरती तहां याईजी ॥
ऊधो हरि हैं ईश हमारे कैसे विसरे जाईजी ॥ १ ॥
जिनके मन दशबीस तिन्हें यह योग दीजिये जाईजी ॥
कत डारतहो खीस आय तुम ऊधो ब्रजके माईजी ॥
गुणकर मोही श्याम हमारे को निर्गुण निरवाईजी ॥
किये जन्मके काज ऊधो अब तजिहैं नाहिं कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कहत सुगम तुम बात मधु, कहतहि कर कठिनाइ ॥
जानत चंदन सम अनल, सतीहोत सुखपाइ ॥
चौबोला–सती होत सुख पाइ तासुकी तपत और सियराईजी॥
कहै कौन पाछे पुनि आई दुखकी सुख सो पाईजी ॥
कुसुम लता सम खड्ग सुहाई जात सुभट रण माईजी ॥
को अब करै तासु निरवारा तजत प्राण सो जाईजी ॥ १ ॥
दुख सुख हानि लाभ नाजाने मनमोहन मन भावैजी ॥
प्रेम पंथ ऊधो अति सूधो निर्गुण इहँ नहिं चावैजी ॥
नेह नहोत पुरानो नित नव सरित प्रभाव सुहावैजी ॥
निरखहिं आनँद रूप छकी जल थल न मीन पग आवैजी ॥ २ ॥
दोहा–बूड रहतहै दिवस निश, मीन सिंधुके माहिं ॥
ऊधो यह अचरज लखो, नीर पियत सो नाहिं ॥
चौ०–नीर पियत सो नाहिं दिनहिं दिन बढ़त कमल जलपारीजी॥
हरि छवि दृगन लालसा भारी निरखैं कुंज विहारीजी ॥
वसे गुपाल हृदय अंबुज अलि निकसत नहिं पचिहारीजी ॥
योग कथा हमसों जिन भाषो ऊधो बारहि बारीजी ॥ १ ॥
ताकी जननी छार भजै अरु तजिकै कुँवर कन्हाईजी ॥
कोऊ कछू कहो किन हमसों हमरे मन यह भाईजी ॥
रहो प्रीति नँदलाल श्याम सों और जाहु सो जाईजी ॥
रहै प्राणतन प्रेमहिं खोई कौन काज पुनि आईजी ॥ २ ॥
दोहा–विना प्रेम शोभा नहीं, निशि गये शशि न सुहाइ ॥
विना प्रेम जग खग बहुः, चातकइक रट लाइ ॥
चौबोला–चातक इक रटलाइ प्रेम वश रहत मीन जल माईजी॥
नैन अछत देखहु जग वर्णत तजत नीर क्षण नाईजी ॥
हम ते प्रेम दियो नाहिं जाई दुहूभांति यश पाईजी ॥

मिलहिं श्याम तो अधिक भलाई नातर जगयशगाईजी ॥
वर्णहीन घट जात गँवारी गोकुलकी हम ग्वारीजी ॥
कहँ वे श्रीकमलाके नाथा बैठे पांति हमारीजी ॥
निगम ज्ञान मुनि ध्यान अतीता सो हमरे हितकारीजी ॥
तिन्हें संग ले रास विलासी मुक्ती कौन विचारीजी ॥ २ ॥

लावनी।

यह सुनि बोल उठी इक नारी मेरो बुरो न कोउ माने ॥
रसकी बातें रसिकहि जाने निरस कहा रस पहिचाने ॥
टेक–दादुर कमल बसत इक ठौरी पहिचानत आपुस माईं॥
अलि अनुरागी जानि आपनो आप बँधावत है आई ॥
जाने कहा सवाद बातको गूंगो बोल सकत नाईं॥
मानहु काढ्यो घास जानिये कियो प्रेम इनके पाईं ॥
धनि धनि ऊधो तुम बड़भागी हरिसों प्रेम नहीं माने॥
रसकी बातें रसिकहि जाने निरस कहा रस पहिचाने १
पुरइन बसत यथा जल माईं जलको दाग लग्यो नाईं ॥
गागर नेहा नीरमें जैसे अपरसरह आई ॥
पैरत नदी बूंद नाहिं लागी नेक रूप दृष्टि न पाई ॥
हम ब्रजनारी अयानी ज्यों गुडचींटी लपटाई ॥
ऊधो कासों लगन बखाने लागे बिन अब को जाने ॥
रसकी बातें रसिकहि जाने निरस कहा रस पहिचाने २
पशु वेदन ज्यों मनमन दहिये हृदयसोचनितअतिभारी
पीरलगनकी सबहिते यत्न रहित दुख सुख न्यारी ॥
मंत्र यंत्र उपचार न पावै वेद कहा कह विस्तारी ॥
घायल पीरा जानिये लग्यो घाव जातन पारी ॥

गजेकहुँ बंधत कमलके सूते रुकत न प्रेम कह्योमाने
रसकी बातें रसिकहि जाने निरस कहा रस पहिचाने ३
यद्यपि समुझाये बहुतेरे हमकरि मनाहिं कठिनताई ॥
तदपि न क्योंहूं भूलहिंऊधो श्यामसुन्दर छबिमनभाई
क्यों सुख पावें प्राण पलक नहिं लागत नींदनहींआई
लगे बरषही जान ऊधो अब बिन देखे वह सुखदाई ॥
तबषटमासरासके माई एक निमिषसम नाहिं जाने ॥
रसकी बातें रसिकहि जाने निरस कहारस पहिचाने ४

दोहा–अब औरै गति ब्रजहिमें, भइ बिन कुँवर कन्हाइ ॥
हमको ऊधो इक पलक, कल्प समान बिहाइ ॥

चौबोला–कल्प समान बिहाइ हरी सँग तब बनमें सुख पाईजी॥
अब ब्रजमें यह दशा हमारी अतिहि कठिन बनिआईजी ॥
ज्यों देवी उजार पुरमाई को पूजत तिहिं जाईजी ॥
कहत और जोबन अब ऐसे चित्र अँधेरे माईजी ॥ १ ॥
तब शशि अति सीरो[2] अब तातो भये सुखहि दुखदाईजी ॥
कत करि प्रीति गये मनभावन तासों हम दुख पाईजी ॥
फिरि फिरि यहै समुझि पछिताई आवन कह्यो कन्हाईजी ॥
याही आश प्राणन माईं बारिक मिलिहौं आईजी ॥ २ ॥

दोहा–अति कठोर हृदय भये, फटे नबिछुरत कान्ह ॥
भली हमाहिंते जलचरी[3], तजत नेह वश प्रान ॥

चौबोला–तजत नेह वश प्राण ऊधो प्रीति रीत नाहिं पाईजी ॥
तब ब्रजनाथ तजी दुख मानी छांड़ि गये सुखदाईजी ॥
ऊधो तुमसों चूक आपनी कहँ लगि कहैं सुनाईजी ॥
बसी दाहिने सूक सबै हम मानहुँ ब्रजके माईजी ॥ २ ॥

---

१ हाथी। २ ठंढा। ३ मछली।

मोहन मदन गुपाल लालसों ऊधो कहियो जाईजी ॥
एक बार ब्रजकी दशा तुम नैनन लखहु कन्हाईजी ॥
बोली और एक ब्रजबाला भली करी सुखदाईजी ॥
अब ब्रज कबहूं आवैं नाहीं मथुराहि रहे सदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–ऊधोजी यहँ ब्रजहिमें, चलि अब उलटी चाल ॥
देखतही दुख पावहीं, मोहन मदन गुपाल ॥

चौबोला–मोहन मदन गुपाल ऊधो अब कहियो इहाँ न आवैजी
चन्दन पवन सेज सब ताती शशि सूरजसम दहावेजी ॥
भूषण वसन अनल सम लागत गृह बन मन नहिं चावेजी ॥
जित तित मार द्रुमनकी डारी धनु शर ले सब धावेजी ॥ १ ॥
हम तो न्याय सहैं दुख एतो ब्रजकी ग्वारि कहावेंजी ॥
वे प्रभु भोग संयोग गुपाला क्यों इतनो दुख पावेंजी ॥
जान्यो सब परपंच तिहारो कहि संदेशकिन जावेजी ॥
जल मथ सुन्यो न माखन आवत बातन कहा भरमावेजी ॥२॥

दोहा–सगुणी निकटहि लखत तिन, निर्गुण ओट बतात ॥
प्रभु पूरण सबमें कहौ, सुनो हमारी बात ॥

चौबोला–सुनो हमारी बात आप किन आवागमन मिटावैजी ॥
यहां कौन वहां कौन ऊधोजी को आवै को जावैजी ॥
योगी योग समुद्रहि माईं खोजेहूना पावैंजी ॥
सो यशुदाके प्रेम विवस हरि निजकर आप बँधावैजी ॥ १ ॥
हम गुवाल गोकुलके बासी सब गोपाल उपासीजी ॥
राजा नन्द यशोदा रानी यह यमुना सुखराशीजी ॥
गिरिवर धारी मित्र हमारे तिन सँग रास विलासाजी ॥
यहां न योग विराग उपासी अष्ट सिद्ध नव निध दासीजी ॥२॥

दोहा–हम सब भूखी प्रेमकी, हमें न मुक्ति सुहाय ॥

लोग सयाने होंय तिन, उपदेशहु तुम जाय ॥
चौबोला–उपदेशहु तुम जाय ऐसेही हम अपनी रुचि मानीजी
रहिहैं विरह बाय बौरानी अब हम यह मन आनीजी ॥
निश दिन स्वपने सोवत जागत रटहिं श्याम सुखदानीजी ॥
बालचरित्र किशोरी लीला सकल सुखनकी खानीजी ॥ १ ॥
सुमिर सुमिर हरिके सुख सोई मरिहैं सब रट लाईजी ॥
ज्यों घट प्रथम अनल तनु तावै पुनि रस भरे सुखपाईजी ॥
कृष्ण प्रेमके पंथ चलैं तब को दुख सुखहि डराईजी ॥
ऊधो मीनहिं नीर विना जिमि और कछू न सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–एकसखी ऐसे कह्यो, अपनो काज बनाय ॥
दिनाचार येऊ करो, मिलहिं श्याम जो आय ॥
चौबोला–मिलहिं श्याम जो आय योगहू धरिये सब ब्रजनारीजी
जटा बनाय भस्म तनु साजैं मूँदहिं दृग मिल सारीजी ॥
शृंगी सेली अरु मृगछाला कंथा माला धारीजी ॥
धर धीरज सन्मुख शर सहिये भाजे नाहिं उबारीजी ॥ १ ॥
ऊधो तुम जो कह्यो सो कीनो कहति एक सखि आईजी ॥
नैन मूँदकै ध्यान लगायो इत उत मनहिं चलाईजी ॥
उरझ रह्यो नँदलाल प्रेम वश फँस्यो सो सुरझत नाईजी ॥
जो हरि मिल जाते तो योगहु लेती शीश चढाईजी ॥ २ ॥
दोहा–पहिले दीजै ले तिन्हैं, पठयो तुमहिं सिखाय ॥
लेहिं निवेरहु आप हरि, नहिं हमते निरबाय ॥
चौबोला–नाहिं हमते निरवाय योग यह तुमसों कियोवखानाजी
जान्यो गयो न पंच मुखहिंसों ब्रह्मरंध्रतजि प्रानाजी ॥
हमहिं दिखावहु ज्योतिं सोई अब हम उर जाको ध्यानाजी ॥
ऊधोकहा सिखावत हमहीं निपटहि छूछो ज्ञानाजी ॥ १ ॥

ऊधो जबते श्याम निहारे योगी नैन हमारेजी ॥
शिखा सीख गुरुजनकी त्यागी लाज जनेउ उतारेजी ॥
दशा दिगंबर[1] मन अनुरागे घूंघट वश न उघारेजी ॥
सजत समाध रूप टकलाये भये सिद्ध अति भारेजी ॥ २ ॥

दोहा—तामें करता विघ्नके, पचिहारे[2] पितु मात ॥
और योग जानत नहीं, सोई श्याम सुहात ॥

चौबोला—सोई श्याम सुहात हमारे वह मूरति मनभाईजी ॥
नहीं कृष्ण हमते कहुँ न्यारे राजत हम मन माईजी ॥
गयो कौन हमको तजि इहँते किनकी बात चलाईजी ॥
रजक मार किन धनुषहि तोरयो द्विरद पछारयो जाईजी ॥१॥
रंगभूमि किन मल्लपछारे कंसहि मार बहायोजी ॥
उग्रसेन किन वन्दि छुड़यो सो सब जग यश गायोजी ॥
को वसुदेव देवकी जायो किन तुम ब्रजहि पठायोजी ॥
कुंडल मुकुट गुंज उर राजे गोकुल श्याम सुहायोजी ॥ २ ॥

दोहा—को पूरण को अलख गति, को गुणरहित अपार ॥
करत वृथा बकवाद कत, इह ब्रज नन्दकुमार ॥

चौ०—इह ब्रज नन्दकुमार बनहिंमें जात चरावन गाईजी ॥
दिन उठ प्रात सहित बलरामा ग्वालनके सँग माईजी ॥
संध्या समय श्याम सुखदाई आवत वेनु बजाईजी ॥
ब्रज बस जन्म सफल कर लेखो जिन मथुरा मन लाईजी ॥१॥
ले हो कहा जाय प्रभु तामें परिहो विपता माईजी ॥
निरखहु गोकुल जाय कन्हाई माखन खात चुराईजी ॥
कैसे दान द्विजनं[3]को दीनो कर उत्सव नँदराईजी ॥
कैसे गोपीजन सुनि धाई पट भूषण पहराईजी ॥ २ ॥

---

१ दिशाही जिसके वस्त्र अर्थात् नंगा । २ थकगये । ३ ब्राह्मण ।

दोहा–गोप ग्वाल आये किमिः निर्तत भेष बनाइ ॥
कैसे दधिको कीच करि, सब ब्रजभई बधाइ ॥
चौबोला–सब ब्रजभई बधाई कैसे बाल विनोद उपायोजी ॥
कैसे गोवर्धन करलीनो डूबत ब्रजहिं बचायोजी ॥
कैसे दधिको दान चुकायो शरदरास उपजायोजी ॥
यह रस प्रेम कथा चित दीजै निरस कहा ले आयोजी ॥ १ ॥
निगम नेति निर्गुणको ध्यावो सुनिये ऊधो राईजी ॥
क्योंनहिं प्रगट दरश चितलावो निरखहु रूप कन्हाईजी ॥
भावतहै जो योग कृष्णको सो देखहु हम पाईजी ॥
ऊधो सबतन खेह कीजिये सुमति होय चित लाईजी ॥ २ ॥
दोहा–बैठो मनहिं बटोरिकै, सब अँग करिकैकान ॥
तो यह अरथ सुनावहीं, तजहु ज्ञान अभिमान ॥
चौबोला–तजहु ज्ञान अभिमान कहति इक ऐसेवचनसुनाईजी
रूंधे श्वास न शृंग बजावें जटा न भस्म लगाईजी ॥
नहीं वेद नहिं पढैं पुराना शम दम नेम न ध्याईजी ॥
हम श्रीगोकुलचंद्र अराध्यो प्रेम योग मन लाईजी ॥ १ ॥
मन क्रम वचन और ना जानें दुख सुख जग मिथ्याईजी ॥
अग्नि आंच गुरुजन बच सरसी मान अपमान न ल्याईजी ॥
उठत धूम उपहास विशेषी हनति तापतनु आईजी ॥
कर्म धर्म कामना नशाई विनवत पद सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–अंग माधुरी हृदय धरि, प्रीति समाधि लगाय ॥
निरख रहत हरिकी छबी, अति अनुराग बढाय ॥
चौबोला–अति अनुराग बढाय सरगुण रूप रंग रस भावेजी ॥
भ्रुकुटी नैन नैन लगि लागे निर्गुण हमें न सुहावेजी ॥
हँसन प्रकाश सुमुख कुंडल द्युति शशि सूरज छबि छावेजी ॥

मुरली अधर मधुर ध्वनि सोई शब्द अनाद बजाँवेजी ॥ १ ॥
बरषत रस रुचि मनहिं अचै अरु रह्यो परम सुखछाईजी ॥
अति अगाध सुख संग श्याम पद सोइ मोन सुखदाईजी ॥
मंत्र दियो रत ऐन हरीको भजन ध्यान मन माईंजी ॥
कौन सुने फीकोमतो अब गुरू करत हम नाईंजी ॥ २ ॥

लावनी।

लखि सब गोपिनको प्रेम ऊधो मन मगन भये अतिभारी॥
गये अपनो नेम विसारि जबहिं तब ब्रजकी रीति निहारी ॥
यों कहन लगे सुखपाय धन्य तुम धन्य धन्य ब्रजनारी ॥
जिनके सरबस नँदलाल रहत नाहिं एकहु निमिष विसारी ॥
मैं कहां लगि करों बडाई, मुखते कछु बरनि न जाई;
तुमहीं मुहिं भक्ति सिखाई ॥ तुम गुरू मैं दास तुम्हारो
करहु कृपा अब सारी ॥ लखि सब गोपिनको प्रेम० ॥ १॥
मैं दरश तुम्हारो कियो ताहिते भक्ति हरीकी पाई ॥
जान्यों नहिं तुम्हरो भाव तबहिं मैं कीनों और उपाई ॥
आये सिखरावन योग ऊधोजी सीखे भक्ती आई ॥
भये मगन प्रेमरसमाहिं लगे गुण गावन हरि सुखदाई ॥
कबहूं कुंजनमें जाई, लोटत पुनि पुनि रजमाई;
भेंटत विटपन सों धाई ॥ लेरज शीश चढाय
ऊधो मन भये आनंद अपारी॥लखि सब गोपिनको प्रेम०२
कबहूं गोपिनके चरण नवावत शीश बारहीं बारी ॥
पुनि जोरत कर शिरनाय कहत धनि ब्रजधनि गोपकुमारी॥
धनि धन्य ग्वाल धनि गाय धन्य धनि बन बन हरि इनचारी
धनि धनि वृन्दावन धाम धन्य धनि धन्य भूमि शुभकारी॥

ऐसे मन प्रेम लगायो, अति आनँद उर न समायो;
तनुकी सब सुरति भुलायो ॥ ऊधो मन आनंद भई
सुधि कही सो कृष्ण मुरारी॥लखि सब गोपिनको प्रेम०॥३॥
तब भई सुरति तनु माहिं धरी मन हरि मिलनेकी आशा ॥
आयो हौं कहि दिनदोय ब्रजहिमें बीत गये षटमासा ॥
यों उपज्यो उर अति शोच वेग मुहिं बोल्यो हरि सुखरासा ॥
अति मनहिं भयो संकोच भये उर हरिके वचन प्रकाशा ॥
मनहीं मन माहिं उपावै, अब जाउँ वेगि यह चावै;
मन और न कछू सुहावै ॥ ऐसे मनहिं विचार ऊधोजी
करि चलबेकी त्यारी ॥ लखि सब गोपिनको प्रेम० ॥ ४ ॥

दोहा–तब उपंगसुत तुरतही, लीनो रथ पलनाय ॥
बरषानेते मधुपुरी, चलबेको अतुराय ॥

चौबोला–चलबेको अतुराय ऊधो अब जात सबन सुन पाईजी॥
तब ब्रजनारि सकल अकुलाई ऊधोके ढिग आईजी ॥
ऊधोजी विनती करि सबसों हाथ जोर शिरनाईजी ॥
अब मुहिं देवि अनुग्रहकीजै द्योआयसु मैं जाईजी ॥ १ ॥
जिमि सेवक हरिको मैं तिमि अब तुम्हरो दास कहाईजी ॥
कृष्ण कहेते करी ढिठाई कह्यो जो मैं कछु आईजी ॥
सो अपराध क्षमा अब कीजै गोपी जन समुदाईजी ॥
होय प्रसन्न आशीश यह दीजै दया करैं सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–ऐसी विमल न बुद्धि मम, तुम गुण करों बखान ॥
करियो कबहूँ सुरति मम, निज जन अपनो जान॥

चौ०-निजजन अपनो जान कबहुँ तुम करियो सुरत हमारीजी ॥
सुनि ऊधोकी निर्मल वाणी भई विवस ब्रजनारीजी ॥
क्यों नहिं ऊधोजी कहते तुम ऐसे वचन विचारीजी ॥

अंत बडे सब भांति तुमहिं हो हम निदान जड़ ग्वारीजी ॥१॥
लघु दीरघताके भयेते होय नशील समानीजी ॥
भृगु कीनो अपमान श्रीपतिः लीन्हो भूषण जानीजी ॥
कहां गरलसे वचन हमारे सहे तुम हो अति ज्ञानीजी ॥
तुम हित कह्यो हमे सुखमानी तरन वेद विधि बानीजी ॥ २ ॥
दोहा—हम गँवारि समुझी नहीं, लीनी उलटी जान ॥
कटुक वचन तुम सों कहे, जोइ सोई मन मान ॥
चौबोला-जोइ सोई मनमान कही हम कहि अब अति पछितावैंजी
लोक वेद छोड़ो हम जैसे अब ताको फल पावैंजी ॥
श्याम दरश विन कछु न सुहावै बहु विधि मन समुझावैंजी ॥
दुर्लभ दरश तुम्हारो हमको महिमा कहँ लगि गावैंजी ॥ १ ॥
करिकै कृपा कीजिये सोई मिलहिं श्याम बनवारीजी ॥
समय पाय हरि आगे कहियो देखि चले अब सारीजी ॥
घोषबसतकी चूक हमारी मन न धरें गिरिधारीजी ॥
करहिं कृपा मन गुण न विचारी जानहिं दीन दुखारीजी ॥ २ ॥
दोहा—धरी सुरत सोइ वचनकी, आवन कह्यो ब्रजराज ॥
कहा कहैं कहियो यही, बाँह गहेकी लाज ॥
चौबोला—बांह गहेकी लाज प्रभू दीनन पति हरिको नामाजी ॥
हरि हैं लोचन प्यास हमारी दरश दिखाके श्यामाजी ॥
भई विरह सागर मगन सब ऐसे कहि ब्रजवामाजी ॥
ऊधो करी प्रणाम सबन तब आये नँदके धामाजी ॥ १ ॥
मांगी विदा जोरकर दोऊ धनि तुम वचन सुनायोजी ॥
पूरण ब्रह्म कृष्ण अविनाशी सो तुम गोद खिलायोजी ॥
धनि गोकुल धनि ब्रज जन जिनके प्रेम विवस हरि आयोजी॥
कृपा करी मुहिं कृष्ण पठायो दरश तुम्हारो पायोजी ॥ २ ॥

दोहा-अब मुहिं आयसु दीजिये, अति प्रसन्न सुख पाय ॥
और सँदेशो जो कहो, कहूँ कृष्ण सों जाय ॥
चौबोला-कहूं कृष्ण सों जाय ऊधोकी सुनी प्रेमकी बानीजी ॥
नन्द बबा अरु यशुमतिं माता जात ऊधो यह जानीजी ॥
उमँग्यो प्रेम हृदय अति भारी ठाढी यशुमति रानीजी ॥
उरवर श्याम विरहकी पीरा बहत दृगनते पानीजी ॥ १ ॥
यशुदाकी आशीश सुनाई कहियो हरिसों जाईजी ॥
कोटि युगनजीवो दोउ भाई कमल नैन सुखदाईजी ॥
तुम विन दुखित यशोदामाई कहियो यह समुझाईजी ॥
इतनी दया मातकी लीजे एकबार मिलें आईजी ॥ २ ॥

अथ उद्धवजीकी विदालीला ।

दोहा-नन्द दोहनी भरि दई, कह्यो नैन भरिनीर ॥
वा धौरीको दूध यह, भावत हो बलवीर ॥
चौबोला-भावतहो बलवीर मुरलिया दई यशोमति माईजी ॥
प्यारी ही अति श्याम सुन्दरकी ऊधो दीजो जाईजी ॥
ऊधोलै माथे धर लीनी बहु विधि विनय सुनाईजी ॥
चल्यो योगकी नाव बुड़ाई भयो गोप ब्रज आईजी ॥ १ ॥
जाय कृष्णको शीश नवायो प्रभु हित कंठ लगायेजी ॥
कहिये सखा कुशल सों आये ब्रजमें बहुदिन लायेजी ॥
नन्दबबा अरु यशुमति माई कहो कौन विधि पायेजी ॥
बसत प्राण मोहींमें जिनके कैसे दिवस बितायेजी ॥ २ ॥
दोहा-कहा दशा ब्रज तियनकी, राखत मोसों प्रीति ॥
पुलकि गात ऊधो भये, समुझत ब्रजकी रीति ॥
चौबोला-समुझत ब्रजकी रीति भूलगयो यदुपति नाम बड़ाईजी

कह्यो सुनो गोपाल गुसांई ब्रजगति कहत न आईजी ॥
ब्रजबासिनको दरश दिखायो मुहिंको तहां पठाईजी ॥
तादिन गयो तुम्हें शिरनाई पहुँचे गोकुल जाईजी ॥ १ ॥
दूरहिते रथ ध्वजा देखि अरु पीतांबर शुभकारीजी ॥
जान तुम्हें आवत अति हर्षित धाये नर अरु नारीजी ॥
रहे ठगेसे सब ब्रजबासी रथपर मोहिं निहारीजी ॥
परे धरणि मुर्छित अति व्याकुल चली दृगन जल धारीजी ॥२॥

दोहा—विरह घाव सुरजे सोई, गये बहुरि मनु फूट ॥
भये सकल व्याकुल अति, गई आश सब टूट ॥

चौबोला—गई आश सब टूट तुम्हारो पठयो जब मुहिं जानीजी॥
ले नँद सदन माहिं अतिहितसों करि आदर सनमानीजी ॥
बूझी कुशल सभ्रात तुम्हारी यशुमति अति अकुलानीजी ॥
तृषित चातकी लौं रट लाई कृष्ण कृष्ण जक बानीजी ॥ १ ॥
प्रभु प्रताप हम जान्यो नाईं बार बार पछिताईजी ॥
अब कसकत करनी वह मोहीं बाँधे ऊखल लाईजी ॥
परम अभागी नाहिंन मोहन ब्रज अब शून्य लखाईजी ॥
ठाढी रही ठगोरी लाई तजि गये कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—तजे प्राण दशरथ तबै, अपने सुतहित लागि ॥
अति कठोर मेरो हियो, देखत रही अभागि ॥

चौबोला—देखत रही अभागी अब जनु ऐसेही मरजाईजी ॥
बहुरि न श्यामहिं गोद खिलैहों ऐसे कहि अकुलाईजी ॥
यों तुम्हरे हित यशुमति माता अतिहि दुखित बिलखाईजी ॥
नन्दहु सुमिरत तुम गुण नामा सब निश कहत बिताईजी॥१॥
मैं उनको बोधे बहुतेरे तुम बिन कछु न सुहाईजी ॥
तिनकी दशा निहारि मोहिं तब युग सम रात लखाईजी ॥

गयो प्रात वृषभानु पुरामें नन्दहि कहि समुझाईजी ॥
धाम काज तजि बाम सकल तहँ सुनतहि आईं धाईजी ॥ २ ॥

लावनी।

मोहिं तुम्हारो निज जन जान्यो सनमान्यो सब ब्रजनारी ॥
लखि पट भूषण चिन्ह तुम्हारे भईं विवस सब सुकुमारी ॥
टेक–सिथिल अंग भरि आये नैना पूँछी सब मिल कुशलाई॥
कह्यो संदेशो तुम्हारो सुनत साँच मनमें आई ॥
बीती घरिक धीर उर जान्यो मेरी बात सुनीनाईं ॥
कछुक परेखो तुमहिं सों दूषण कुबिजाकोगाईं ॥
तिनकी बात नजात बखानी प्रेम पंथमें सब भारी ॥
लखि पट भूषण चिह्न तुम्हारे भईं विवस सुकुमारी॥१॥
वह रस रीत देख उनकेरी मेरी बात न मनभाई ॥
ग्रंथ युक्ति सब कथा सुनाई बहु विधि कहि मैं समुझाई ॥
कहिबे में न कछू सक राखी भई पवन ज्यों भुसमाई ॥
ज्ञानपंथ जो श्रीमुख बानी सो न कोऊ मनमेंल्याई ॥
कै इक कही बनाय अनेका उन दृढ व्रत एकै धारी ॥
लखि पट भूषण चिह्न तुम्हारेभईंविवश सब सुकुमारी२
मेटि वेद विधि नीति गही उन गहन एकही मनमाईं ॥
रहीं विश्व भरि जीति तुम्हारे गोप भेष भजि सुखदाई॥
जो विधि जाय सिखावाहे तिनको तो वे कबहुँ सुनतनाईं
वहां जाउ तो जानहुँ मैं सब तुम्हरी चतुराई ॥
क्षमा करो आयसु जो पाऊँ अपनी बात कहूँ सारी ॥
लखि पट भूषण चिह्न तुम्हारे भईं विवश सबसुकुमारी३
योग कथा कहि अबलन पाहीं होय इतो दुख क्योंनाईं॥

मैं निर्गुण गुण एक बखानी सोऊ पूरी नहिं आई ॥
वे सब उमँगे वारिध ज्योंई जामें थाह नकोउ पाई ॥
कह्यो एकमैं पहरेक माई वे कोटिक कहि क्षणमाई ॥
कौन कौनको उत्तर आवै सुनत नहीं बाते नारी ॥
लखि पट भूषण चिह्न तुम्हारे भई विवश सब सुकुमारी

दोहा–प्रेम प्रीति उनकी लखी, धरी रही मो बात ॥
रह्यो चकित मन जिमि हिरन, भूल चोकरी जात ॥

चौबोला–भूल चोकरी जात हरी मैं योग काहि सिखराईजी ॥
वेषटवेत्ता सकल सहजमैं बारह खडीहि पढाईजी ॥
अबलन वचन सुनतही मेरे अग्नि जिमी घृत पाईजी ॥
बहुत भांति कर मैं सब याची कह्यी कोऊ नाईजी ॥ १ ॥
यथा पपीहा घन मन लाई सगुण प्रेम दृढ जानाजी ॥
कहा निरोगहि वैद हरी तुम यह जानो अनुमानाजी ॥
श्याम राम अंबुज नयन न सों तिन्हें निरंतर ध्यानाजी ॥
अविलोकन उनको भजन जिन लागत फीको ज्ञानाजी ॥ २ ॥

लावनी।

मैं देख्यो रहि षट मास तहां निज जाई ॥
एकहिहै घरघररीति सकल ब्रजमाई ॥
टेक–ज्यों बाढत धन कुरुक्षेत्र दियो अधिकाई ॥
त्यों बढत प्रेम ब्रजवासिनको तुम माई ॥
परगट तुम्हरे गुणगात देह सुधि नाई ॥
कोउ कहत गये गोचारन कुँवर कन्हाई ॥
मारचो अघ बनमें जाय तहां सुखदाई ॥

१ समुद्र। २ छहौशास्त्रज्ञाना। ३ कमला।

एकहि है घर घर रीति सकल ब्रजमांई ॥ १ ॥
कोउ कहत इन्द्र चढि आयो गिरिहि उठावै ॥
एकहि है घर घर रीति सकल ब्रजमाई ॥
कोउ कहत यमुनते नाग नाथले आवै ॥
कोउ कह खेलत नँदलाल घरनमें जावे ॥
कोउ कहत जाय ग्वालन में धेनु दुहावे ॥
कोउ कहत कुटिल घनश्याम वसे कहुँ जाई ॥
एकहि है घर घर रीति सकल ब्रजमाई ॥ २ ॥
ब्रज लखी तियनकी रीत लगी मुहि प्यारी ॥
ऐहों मै कहि गयो बेगसो सुरत विसारी ॥
तब भई सुरत मधुपुरिकी मनहिं विचारी ॥
षट मास बीत गये मुहिया ब्रजहि मझारी ॥
तब उपज्यो उर अति सोच चल्यो उठधाई ॥
एकहि है घर घर रीति सकल ब्रज माई ॥ ३ ॥
अब कहां मोहिं सुख वह रस परम सुहायो ॥
जो कह्यो जात नाहिं बडभागी जन पाया ॥
सो बस्यो न कछु तिन माहिं वृथा जग आयो ॥
श्रुति शेष ब्रह्म नाहिं पात सो गोपिन गायो ॥
वह प्रीति रीति ब्रजजनकी भोमन भाई ॥
एकहि है घर घर रीति सकल ब्रज माई ॥ ४ ॥
दोहा—निरखत मूरति यदपि इहां, तदपि वहाँ मन धाय ॥
गुंजमाल अरु मुकुट शिर, मुरली मधुर बजाय ॥
चौबोला-मुरली मधुर बजाय सुभग तनु गोरज अति छबि छाईजी
तिरछी चितवन चारु हँसन मन सो छबि बरनि न जाईजी ॥
गोपी ग्वालन सों हरि बोलत डोलत ब्रजके माईजी ॥

तब वह सुख समुझत मन भावे इत लखि कहत न आईजी ॥१
तुमरी अकथ कथा तुम जानो अति शुभ कहिय न जावेजी ॥
मैं कहा जानो मूढ अयानो ब्रह्मादिक नाहिं पावेजी ॥
तुम प्रभु हो करुणाके आलय यह मुहि अचरज आवेजी ॥
होत कठोर कठिन मन काहे ब्रजबासिन तरसावेजी ॥
दोहा—निगम कहत वश भक्तके, पूरण सब सुखसाज ॥
करि सुदृष्टि ब्रज पेखिये, गहो विरदकी लाज ॥
चौबोला—गहो विरदकी लाज सकल ब्रज दरश तिहारो चावैजी॥
अतिहि दुखित तनु क्षीण भये सब तुम विन कछु न सुहावैजी॥
तुम तन मन धन लीन भये अब चातक लौं रट लावैजी ॥
कहों कहा गति प्रभु राधाकी विरह व्यथा दुख पावैजी ॥ १ ॥
भूषण विन अति क्षीण शरीरा रह्यो नैन जल छाईजी ॥
रहत बावरी ज्यों घरमाईं सुधि बुधि तनुकी नाईंजी ॥
कबहुँक नाम आपनो गावै कबहुँक कहत कन्हाईजी ॥
विवदिश अग्नि काठ कृमि जैसे तैसे विरह सताईजी ॥ २ ॥
दोहा—लहत न क्योंहू धीर मन, रहत मौन शिरनाय ॥
समुझावत समुझत नहीं, कोटि कहो कोउ आय ॥
चौबोला-कोटि कहो कोउ आय गृह जन देखि देखि दुखपावैजी
सूखी नलनी जिम विन पानी लखि लखि यत्न न आवैजी ॥
आशा अवधि प्राण तन जैसे तृणपर ओस सुहावैजी ॥
अचरज मोहिं बड़ा यह आवै प्रभु तुमको कहा भावैजी ॥ १ ॥
भक्तन हित तनु धारयो स्वामी करुणामय सुखदाईजी ॥
ब्रजजन मरत जियावहु तिनको दरशन दीजै जाईजी ॥
यह मुरली दे अतिहि विलखके कह्यो यशोमति माईजी ॥
एक बार हित नन्दमहरके दरश दिखावहु आईजी ॥ २ ॥

दोहा–आप चराई हेतु करि, जिन गैयनको श्याम ॥
विडरी कुंजनमें फिरत, बहुरि न आई धाम ॥
चौबोला–बहुर नआई धाम ऊधोके बैन सुनत सुखदाईजी ॥
उमँगे प्रेम भरे दोउ नैना ब्रजजनकी सुधि आईजी ॥
भये विवश जन प्रण प्रतिपाली लै मुरली उर लाईजी ॥
धरि ब्रज ध्यान रहे अरगाई सहज कृपालु सुहाईजी ॥ १ ॥
पुनि हा ब्रज कहि छांडि उसासा पोंछ दृगन पट पीराजी ॥
भले सखा शिख दे ब्रज आये ऐसे कहि बलवीराजी ॥
ब्रजभक्तन मम रूप अधारा मोबिन धरत न धीराजी ॥
मेरे मुक्ति बडी निध सो ये ब्रजजन जानत नीराजी ॥ २ ॥
दोहा–ताते जो जनके मनहिं, सोइ करत बन आत ॥
ममप्रण भक्ताधीन सोइ, ब्रजजन मोहिं सुहात ॥
चौबोला–ब्रजजन मोहिं सुहात ताहिते ब्रजमें रहत सदाईजी ॥
इन सम और हितू नहिं कोई तजत एक क्षण नाईजी ॥
सब समरथ प्रभु सब गुणसागर विहारन कुँवर कन्हाईजी ॥
मन करि हरि ब्रजमें रहे मिल ब्रजवासिनके माईजी ॥ १ ॥
तनक सुरन हित काज द्वारिका नाथ धरायो नामाजी ॥
नटवरवपु मुरली धरे हरि सदा बसत ब्रज श्यामाजी ॥
कोटि काम लावण्य निध प्रभु ब्रजजन पूरण कामाजी ॥
बसत सदा ब्रज कुँवर कन्हाई विहारन जन सुखधामाजी ॥ २ ॥
दोहा–कृष्ण प्रेम पूरण भरी, सब मिल गोपकुमारि ॥
कबहूं न्यारी श्यामते, होत नहीं ब्रजनारि ॥
होत नहीं ब्रजनारि श्यामके सब गोपी मन भावैजी ॥
नित्य नवल नित बनाहिं विहारा नित नव विविध उपावैजी ॥
नित्य धाम वृन्दावन पावन नित रस रास सुहावैजी ॥

शिव सनकादि शेष जिहिं ध्यावै सुर मुनि ध्यान लगावैजी॥१॥
ब्रज गोपिनकी महत बड़ाई एक समय विधि गाईजी॥
भृगु नारद आदिकजे भक्ता पूछी विनय सुनाईजी॥
वेद ऋचा सब ब्रज तिय जानो कह्यो विरंचि समुझाईजी॥
इन सम होत लक्ष्मी नाईं सत्य कहूँ तुम पाईजी॥२॥
दोहा–नहिं न्यारी क्षण कृष्णते, इन सम और न कोय॥
इनके भाव भजे कृष्ण कोउ, प्रीति रीत दृढ होय॥
चौ०–प्रीतिं रीतिं दृढ होय कृष्णको भजै जो कोउ मनलाईजी॥
नारि पुरुष कोऊ किन होई वेद ऋचा गति पाईजी॥
धारैं शीश चरण रज इनकी वृन्दाबनके माईंजी॥
सोऊ गति इनकी लैहैं जन यामें संशय नाईंजी॥१॥
महिमा श्रीब्रज गोपिन केरी यों विधि कही बुझाईजी॥
पावन बृहतपुराण माहिं सोइ वेद व्यासजी गाईजी॥
ताते भृगु आदिक नारद मुनि ब्रह्मादिक सुर राईजी॥
वृन्दावन रज बांछित रहहीं हरि भक्तन मन भाईजी॥२॥

लावनी।

ब्रजरज अति दुर्ल्लभ श्रुति भाषैं बडभागी जन जो पावे॥
चितधर सोई विमल रज ब्रजचरित्र विहारन गावै॥
टेक–कृष्ण चरित्र ब्रजवन निकुंजको सार सकल सुख सुकृतनको
सार ध्यान अरु विज्ञान ज्ञानको वेद शास्त्र पुराणनको॥
सार बहुरि अतिहास भजनको योग जाप बहु यज्ञनको
सार अमित सबसंत मतनको हरिपद यत्नप्रेम मनको॥
सार जन्म अरु सुगाति मुक्तिको गावहिं सो भक्तीपावें॥
चितधर सोई विमल रज ब्रजचरित्र विहारन गावें॥१॥

सार सकल रस रसिकाईको कहे सुने आनँद आवे ॥
सार सकलको परम सुहावे ब्रजचरित्र भक्तन भावे ॥
सहित सुभाव प्रीति जो ध्यावे ते गति गोपिनकी पावे॥
यह ब्रजलीला प्रीतिकर नर नारी कोऊ गावे ॥
सीखें सिखावैं पढें रुचिकर प्रेमानन्द मन उपजावे ॥
चित धरसोई विमल रज ब्रज चरित्र विहारनगावे॥२॥
धरिभाव भरता श्री कृष्ण सों उरहि कमलपदचितलाई
श्याम राधिका कृपा करै तब ब्रज गोपिनकी गतिपाई
पूरण सब मनकाम सकल सुख धाम सुहरिपद सुखदाई
दलन दारिद दोष दुख भव यमहिं कालको भयनाई॥
यह जान गावहिं सुजन हरि यश सोजन परमानंदपावे
चित धर सोई विमल रज ब्रज चरित्र विहारनगावे॥३॥
ब्रजचरित्र ब्रजराज कियो सो पार न कोऊ कहिपायो॥
भक्त भावकारि गावत हरिजन भजन भावमन मेंलायो ॥
श्री ब्रजवासी दास कह्यो सो ब्रजविलास जगमें छायो ॥
दास विहारी देखि अति मगन भयो मनमें भायो ॥
सो लीला लखि बहुरि विहारन चौबोला कहिकै ध्यावे ॥
चित धर सोई विमलरज ब्रजचरित्र विहारन गावे ॥४ ॥

दोहा—ब्रजचरित्र ब्रजराजको, को कहि पावै पार ॥
भजन भाव उर आनि सब, गावतमति अनुसार ॥
जिहि तिहि विधि हरि गाइये,कहत सकल श्रुति वेद ॥
उलटो सीधो कहो कोउ, सोनहिं होत निषेद ॥
विहारन को कछु है नहीं, कविताईको भान ॥
भजन भाव उरमें धर्यो, कियो नामको गान ॥
शुभा शुभ जिन देखियो, हरिजन संत सुजान ॥

कहियो सुनियो प्रीति करि, नाम हरीको जान ॥
हरिको नाम विचार मन, गायोकर विस्तार ॥
निज युक्ती यामें नहीं, ब्रजविलास अनुसार ॥
ब्रजविलास अनुसारले, कह्यो यथा मति गाय ॥
जन्म जन्म गाऊँ यहै, यहै रह्यो मन चाय ॥
सोवत जागत चलत में, निश दिन प्रभु पद ध्यान ॥
सब हरिजन करिकै कृपा, देहु यहै बरदान ॥
नहिं तप तीरथ दान बल, नहीं कर्म व्यवहार ॥
विहारन जनको सब विधी, राधा श्याम आधार ॥
धोखेहूँ कोऊ कहत, मुखते श्रीगोपाल ॥
विहारन ताके पग तरे, मेरे तनुकी खाल ॥
ब्रज चरित्रके माहिं सो, कहूं सकल विस्तारु ॥
एक सहस्र पंचशत, दोहा मनोहर चारु ॥
युगल सहस्र अरु ग्रह सत, द्वै मास दिन जान ॥
इतने याके माहिं सब, चौबोला परमान ॥
वेद शास्त्र पुराण सब, ब्रह्म मिलाकर देख ॥
इतनी जानो लावनी, और बारता एक ॥
सबको तुष्टपछंद करि, दश सहस्र अनुमान ॥
खंडित होन न पावही, लिखियो देखि सुजान ॥

इति श्रीब्रजचरित्र विहारीदासकृत संपूर्णम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना (मुंबई.)

जाहिरात ।

श्रीरामाश्वमेधभाषाटीका खुलापत्रा और केवलभाषा जिल्दबँधी ।

इसमें परब्रह्म परमेश्वर नररूपधारी खरारी कोशलपुरविहारी श्रीमन्महाराज रामचन्द्रजीके अश्वमेधयज्ञकी कथा सविस्तर अत्युत्तम ब्रजभाषामें वर्णित है, विशेषकर इसमें वीररसका उद्दीपन है, महाबली भरतपुत्र पुष्कल व शत्रुघ्नजीका ससैन्य अश्वरक्षामें नियुक्त हो दिग्विजकेअर्थ बड़े बड़े बली राजा महाराजा तथा राक्षस पिशाचोंको संग्राम भूमिमें अनुप मपराक्रम प्रगटकर जीतना और अन्तमें रामपुत्र लव कुशसे महाघनघोर संग्राम होना, जानकीजीका पाताल प्रवेश और यज्ञसमाप्तीका पूरा वृत्तान्त व और भी बहुत उत्तम परमपवित्र रामचरित्र वर्णितहै, सुंदर पुष्ट कागजपर, छपी है भाषाकी जिल्दभी अत्यन्त दृढ़ और सुंदर विलायती कपड़ेकी है कीमत सबके सुगमार्थ भाषाटीकाकी ४ रु. और केवल भाषाकी की० २ रु० है ।

जाहिरात।

ताजिकनीलकंठी भाषाटीका।

उक्त ग्रंथका भाषानुवाद तीनो तंत्र एकत्रित कर ज्योतिर्विद पं० महीधरजीने ऐसा कठिन ग्रंथ होनेपरभी ऐसी सरल टीका तथा गूढ़ाशयों का प्रकाश कियाहै कि जिसके द्वारा सामान्य श्रेणीके मनुष्यभी भलीभांति वर्ष जन्मपत्र फलादेश प्रश्नादि बता सक्तेहैं वैसेही शुद्धतापूर्वक टैपमें चक्र और उदाहरणों सहित उत्तम कागजमें छापी गई है जिसके देखनेसे चित्त प्रसन्न होजायगा और उत्तम विलायती कपड़ेकी जिल्द बाँधी गईहै, मूल्य केवल १॥ रु० मात्र है

शार्ङ्गधर वैद्यक दत्तराम चौबे कृतभाषाटीकासहित।

यह टीका आढमल्ली और गूढार्थ प्रकाशिका जो इस्की संस्कृतटीका हैं उनके अनुसार भाषाटीका करीगई है. यद्यपि इस ग्रंथकी टीका कई भिषग्वरोंने कीहैं परन्तु इस रीतिसे गूढ़ाशयोंकी टिप्पणी समन्वितकर विस्तार पूर्वक किसीने नहींकीहै तिसपरभी मूल्य केवल तीन ३ रु० रक्खाहै विलायती कपड़ेकी जिल्द बँधीहै और नया छपाहै।

पातंजलि–योगदर्शन तथा सांख्यदर्शन भाषानुवाद सहित।

देखो ! इसपातंजलि सूत्र मात्रका ऐसा बहुत और रुचिर भाषानुवाद किया गया है कि पढ़ते २ ग्रंथका आशय चित्तमें चुभ जाता है । मूल्य केवल योगदर्शनका १ रु० और सांख्यदर्शनका १॥ रु० है ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना–मुम्बई.

जाहिरात ।

श्रीमहाभारत सटीक मोटे अक्षरका ।

महर्षि श्रीवेदव्यास प्रणीत और पंचमवेद संज्ञा होनेसे विशेष प्रशंसा करना निरर्थक है ये वही पुस्तक गणपतकृष्णाजीके छापेकी है जो पूर्वकालमें ८० । ६० रुपयेको मिलताथा उसीको हमने सब लेकर ४० रुपयेमें देते हैं. टपाल महसूल ५ रु० अलग है; परंतु अब थोड़ी पुस्तकें रहगई हैं, महाभारतके प्रेमीलोगोंको शीघ्र लेना चाहिये कुछ कालके पीछे मूल्य अधिक होजायगा. ऐसा ग्रंथ उत्तम छपनेकी आशा कमती है—लीजिये. ट० खर्चा सहित मूल्य पैंतालीस ही ४५ रुपये हैं.

मिताक्षरा(धर्मशास्त्र)पद योजना तात्पर्य्यार्थ भाषाटीका ।

इस असारसंसारमें मर्यादा स्थितीके हेतु अनेक प्राचीन आचार्योंका मत लेकर "आचार" "व्यवहार" प्रायश्चित्त" नामक तीनभागोंमें महर्षि याज्ञवल्क्यजीने भारतवर्षके चतुर्वर्णोंके नीतिपूर्वक स्वधर्ममें तत्पर रहनेके हेतु रचनाकी. आचाराध्यायमें गर्भाधानसे लेकर मरण पर्यन्तके समस्त संस्कार, सबजातियोंकी उत्पत्ति, ब्राह्मणादि चतुर्वर्णोंके धर्माचरण, आठ प्रकारके विवाहोंके लक्षण, भक्ष्याभक्ष्य पदार्थोंका विवेक, दानलेनेदेनेकी विधि, श्राद्ध तथा नवग्रहोंकी शान्ति, राजाओंके धर्माचरण वर्णित हैं ।

शुकसागर अर्थात् श्रीमद्भागवत भाषा ।

इसमें शंका समाधान और अनेकानेक दृष्टांत इतिहास तथा उत्तमोत्तम दोहा चौपाई भजन कवित्त मिश्रित सुंदर वार्तिक प्राकृत भाषामें बड़े २ अक्षरोंमें छपी है. आजपर्य्यंत ऐसी उत्तम पुस्तक अन्यत्र कहीं नहीं छपी. कीमत डाक महसूल सहित १२ रु. १० आ० है. प्रतीकके लिये श्लोकांकभी डालेगये हैं ॥

जाहिरात.

भक्तमाला रामरसिकावली।

उपरोक्त ग्रंथ में सतयुग से कलियुग पर्यन्त चारों युगों के भगवद्भक्तों के जीवनचरित्र रोचक सरल दोहा चौपाई कवित्तादि छन्दों में श्रीमहाराजा साहब रीवांधिपति श्रीरघुराजसिंहदेव जू बहादुर जी ने रचे हैं, काव्य की रोचकता से बांचतेही हृदयमें भक्ति उत्पन्न होजाती है । ग्रंथ पृष्ठ ११५८ में पूर्त्ती है, जिल्द बँधी है। मूल्य केवल ४ रु० मात्र ॥

महाभारत सबलसिंह १८ पर्व।

महाशयो ! आजतक यह अमूल्य ग्रंथ जहाँ तहाँ छपा; परन्तु अपूर्ण होनेसे भारतकथाभिलाषियोंका अभीष्टप्रद न हुवा। अतएव हमने वर्षोंसे ढूँढ़ते २ बहुत बड़े परिश्रमसे संपूर्ण (१८) पर्व एकत्रितकर स्वच्छतापूर्वक सुन्दर अक्षरोंमें मुद्रित की है विलायती कपड़ेकी अच्छी जिल्द बंधीहै मूल्य केवल ३॥ रु० मात्र रक्खे हैं सर्व सामान्यकी सुगमताके लिये चार भागकर मू० एक एक रु०रक्खाहै.

और भी भाषाकाव्यकी नाना प्रकारकी प्राचीन नवीन पुस्तकें छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुत हैं।

पुस्तक मिलने का ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना

बम्बई.

शुद्धाशुद्धपत्र।

पृष्ठांक.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१९५	२३	सखित	सखिन
१९७	१६	कोकलाज	लोकलाज
२०७	११	सबन	बसन
२१०	१४	बगाईजी	बनाईजी
२१५	२१	वेद	देह
२४५	११	गिरिहि	गिरहि
२४६	४	वर	धर
२४६	६	राते	रीते
२४६	पृष्ठकी बारहवीं लाइन (अतिभय तनकीदशा भुलाने चले इंद्रके पाईजी)		
२५५	२२	पतियायेजी	पतिपायेजी
२५६	१६	जलराईजी	जलरायाजी
२५८	५	राजाजी	रासाजी
२७७	७	व्रंजमाई	व्रजमाई
२९०	२३	रूप	रूपहि
२९२	१४	खावैजी	स्यावैजी
२९३	२४	औ	और
२९८	१३	शशि	शीश
३०१	२३	ताही	तोही
३०६	१२	साईंजी	साईजी
३१४	१९	कत	कहत
३१४	१९	हम	म
३१५	१७	मैंने	मैं नै
३१५	१८	चतुरे	चतुरै
३१५	१९	पेहैंजी	पैहैंजी
३१९	८	सह	सहित
३२५	१८	मन	मनु
३२५	१८	पाईजी	आईजी
३३०	६	मरत	भरत
३३०	१७	लाख	लखि

शुद्धाशुद्धपत्र।

पृष्ठांक.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३४४	११	ब्रजत	ब्रजते
३४८	१	धारउ	धारेउर
३४९	१०	मोईजी	माईजी
३४९	१४	माइजी	मोइजी
३५७	१८	नखन	त्रवन
३६१	५	लहहू	कहहू
३७१	४	बिन	बिच
३७१	९	कलस	सकल
३८३	२४	मतिमाकोजी	मतिमानैकोजी
३९४	२५	ढाठ	ढीठ
३९७	२३	दाहित	चंदाहित
४०३	८	गंधर्वजननं	गंधर्वजन
४०८	६	सीद्धरु	सीद्ध
४२६	६	नैन	बैन
४३३	१३	सदा	साद
४४०	३	पनायो	मनायो
४४१	५	कह	कहा
४४३	२५	कहहु	कहत
४५८	२३	प्यारे	प्यारी
४७०	१	पन	मन
४८६	२५	अब सब वसन	अब वसन
४९६	५	वसन	सबन
४९६	५	सुखकारीजी	सुखभारीजी
४९७	२१	सहायक	सगायक
५५६	३	कहायोजी	कहायाजी
५५८	७	रवाये	करवाये
५७३	१७	कमर	कामर
५७३	२२	अवाध	अवधि
५९४	१६	अज्ञानीजी	अज्ञानाजी
५९४	१७	पुरानीजी	पुरानाजी
६१३	९	फर	कर
६३१	१	दुबारा होनेके कारण न पढ़ना चाहिये	

इति ॥

जाहिरात !

श्रीमहाभारत सटीक मोटे अक्षरका ।

महर्षि श्रीवेदव्यास प्रणीत और पंचमवेद संज्ञा होनेसे विशेष प्रशंसा करना निरर्थक है ये वही पुस्तक गणपतकृष्णाजीके छापेकी है जो पूर्वकालमें ८० । ६० रुपयेको मिलताथा उसीको हमने सब लेकर ४० रुपयेमें देते हैं. टपाल महसूल ५ रु० अलग है; परंतु अब थोड़ी पुस्तकें रहगई हैं, महाभारतके प्रेमीलोगोंको शीघ्र लेना चाहिये कुछ कालके पीछे मूल्य अधिक होजायगा. ऐसा ग्रंथ उत्तम छपनेकी आशा कमती है—लीजिये. ट० खर्चा सहित मूल्य पैंतालीस ही ४५ रुपये हैं.

मिताक्षरा(धर्मशास्त्र)पद योजना तात्पर्य्यार्थ भाषाटीका ।

इस असारसंसारमें मर्यादा स्थितीके हेतु अनेक प्राचीन आचार्योंका मत लेकर "आचार" "व्यवहार" प्रायश्चित्त" नामक तीनभागोंमें महर्षि याज्ञवल्क्यजीने भारतवर्षके चतुर्वर्णोंके नीतिपूर्वक स्वधर्ममें तत्पर रहनेके हेतु रचनाकी. आचाराध्यायमें गर्भाधानसे लेकर मरण पर्यन्तके समस्त संस्कार, सबजातियोंकी उत्पत्ति, ब्राह्मणादि चतुर्वर्णोंके धर्माचरण, आठ प्रकारके विवाहोंके लक्षण, भक्ष्याभक्ष्य पदार्थोंका विवेक, दानलेनेदेनेकी विधि, श्राद्ध तथा नवग्रहोंकी शान्ति, राजाओंके धर्माचरण वर्णित हैं ।

शुकसागर अर्थात् श्रीमद्भागवत भाषा ।

इसमें शंका समाधान और अनेकानेक दृष्टांत इतिहास तथा उत्तमोत्तम दोहा चौपाई भजन कबित्त मिश्रित सुंदर वार्त्तिक प्राकृत भाषामें बड़े २ अक्षरोंमें छपी है. आजपर्य्यंत ऐसी उत्तम पुस्तक अन्यत्र कहीं नहीं छपी. कीमत डाक महसूल सहित १२ रु. १० आ० है. मतीकके लिये श्लोकांकभी डालेगये हैं ॥

जाहिरात ।

श्रीरामाश्वमेधभाषाटीका खुलापत्रा और केवलभाषा जिल्दबँधी ।

इसमें परब्रह्म परमेश्वर नररूपधारी खरारी कोशलपुराविहारी श्रीमन्महाराज रामचन्द्रजीके अश्वमेधयज्ञकी कथा सविस्तर अत्युत्तम ब्रजभाषामें वर्णित है; विशेषकर इसमें वीररसका उद्दीपन है, महाबली भरतपुत्र पुष्कल व शत्रुघ्नजीका ससैन्य अश्वरक्षामें नियुक्त है, दिग्विजकेअर्थ बड़े बड़े बली राजा महाराजा तथा राक्षस पिशाचोंको संग्राम भूमिमें अनुपम पराक्रम प्रगटकर जीतना और अन्तमें रामपुत्र लव कुशसे महाघनघोर संग्राम होना, जानकीजीका पाताल प्रवेश और यज्ञसमाप्तीका पूरा वृत्तान्त व और भी बहुत उत्तम परमपवित्र रामचरित्र वर्णितहै, सुंदर पुष्ट कागजपर छपी है भाषाकी जिल्दभी अत्यन्त दृढ़ और सुंदर विलायत कपड़ेकी है कीमत सबके सुगमार्थ भाषाटीकाकी ४ रु. केवल भाषाकी की० २ रु० है ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना—खेतवाडी—मुम्बई.

LC FT. MEADE
0 019 243 179 7